धर्मसूत्राणि①

Table of Contents

१ 2

०१ 3

०१ 4

01 अथातः सामयाचारिकान्धर्मान्व्याख्यास्यामः 4

सूत्रम् 4

टिप्पनी 4

सूत्रम् 6

प्रस्तावः 6

टिप्पनी 6

सूत्रम् 7

प्रस्तावः 7

टिप्पनी 7

सूत्रम् 8

टिप्पनी 8

सूत्रम् 9

टिप्पनी 9

सूत्रम् 10

टिप्पनी 10

सूत्रम् 12

प्रस्तावः 12

टिप्पनी 12

सूत्रम् 12

प्रस्तावः 13

टिप्पनी 13

सूत्रम् 13

प्रस्तावः 14

टिप्पनी 14

सूत्रम् 14

प्रस्तावः	15
टिप्पनी	15
सूत्रम्	16
प्रस्तावः	16
टिप्पनी	16
सूत्रम्	17
प्रस्तावः	17
टिप्पनी	17
सूत्रम्	18
टिप्पनी	18
सूत्रम्	19
प्रस्तावः	19
टिप्पनी	19
सूत्रम्	20
टिप्पनी	20
सूत्रम्	21
प्रस्तावः	21
टिप्पनी	21
सूत्रम्	21
टिप्पनी	22
सूत्रम्	22
प्रस्तावः	22
टिप्पनी	23
सूत्रम्	23
टिप्पनी	23
सूत्रम्	24
टिप्पनी	24
सूत्रम्	25
टिप्पनी	25
सूत्रम्	26
सूत्रम्	26

सूत्रम् 27
सूत्रम् 27
सूत्रम् 28
सूत्रम् 29
प्रस्तावः 29
टिप्पनी 29
सूत्रम् 30
प्रस्तावः 30
टिप्पनी 30
सूत्रम् 31
टिप्पनी 31
सूत्रम् 31
टिप्पनी 32
सूत्रम् 32
टिप्पनी 32
सूत्रम् 33
टिप्पनी 33
सूत्रम् 34
टिप्पनी 34
सूत्रम् 35
टिप्पनी 35
सूत्रम् 35
टिप्पनी 36
सूत्रम् 36
टिप्पनी 36
०२ 43
01 प्रतिपूरुषं सङ्ख्याय संवत्सरान् 43
सूत्रम् 43
टिप्पनी 43
पावमान्यः 44
यजुष्-पवित्रम् 44

साम-पवित्रम्	45
ऋक्	45
साम - वामदेव्यम्।	45
सूत्रम्	47
प्रस्तावः	47
टिप्पनी	47
सूत्रम्	48
टिप्पनी	49
सूत्रम्	49
टिप्पनी	50
सूत्रम्	50
टिप्पनी	50
सूत्रम्	51
टिप्पनी	51
सूत्रम्	52
टिप्पनी	52
सूत्रम्	53
टिप्पनी	53
सूत्रम्	53
प्रस्तावः	53
टिप्पनी	54
सूत्रम्	54
प्रस्तावः	54
टिप्पनी	55
सूत्रम्	55
टिप्पनी	55
सूत्रम्	56
टिप्पनी	56
सूत्रम्	57
टिप्पनी	57
सूत्रम्	57

टिप्पनी	58
सूत्रम्	58
टिप्पनी	59
सूत्रम्	59
टिप्पनी	59
सूत्रम्	60
टिप्पनी	60
सूत्रम्	61
टिप्पनी	61
सूत्रम्	62
टिप्पनी	62
सूत्रम्	62
टिप्पनी	63
सूत्रम्	63
टिप्पनी	63
सूत्रम्	64
टिप्पनी	64
सूत्रम्	65
टिप्पनी	65
सूत्रम्	65
टिप्पनी	66
सूत्रम्	66
टिप्पनी	66
सूत्रम्	67
टिप्पनी	67
सूत्रम्	68
टिप्पनी	68
सूत्रम्	69
टिप्पनी	69
सूत्रम्	69
टिप्पनी	70

सूत्रम् 70
टिप्पनी 70
सूत्रम् 71
टिप्पनी 71
सूत्रम् 72
टिप्पनी 72
सूत्रम् 73
टिप्पनी 73
सूत्रम् 73
टिप्पनी 73
सूत्रम् 74
टिप्पनी 74
सूत्रम् 75
टिप्पनी 75
सूत्रम् 76
टिप्पनी 76
सूत्रम् 77
टिप्पनी 77
सूत्रम् 77
टिप्पनी 78
०३ 83
01 माञ्जिष्ठं राजन्यस्य 83
सूत्रम् 83
टिप्पनी 83
सूत्रम् 84
टिप्पनी 84
सूत्रम् 85
टिप्पनी 85
सूत्रम् 85
प्रस्तावः 86
टिप्पनी 86

सूत्रम्	86
टिप्पनी	87
सूत्रम्	87
टिप्पनी	87
सूत्रम्	88
टिप्पनी	88
सूत्रम्	89
टिप्पनी	89
सूत्रम्	89
प्रस्तावः	90
टिप्पनी	90
सूत्रम्	90
प्रस्तावः	91
टिप्पनी	91
सूत्रम्	91
टिप्पनी	92
सूत्रम्	92
टिप्पनी	92
सूत्रम्	93
टिप्पनी	93
सूत्रम्	94
टिप्पनी	94
सूत्रम्	94
टिप्पनी	95
सूत्रम्	95
टिप्पनी	95
सूत्रम्	96
टिप्पनी	96
सूत्रम्	97
टिप्पनी	97
सूत्रम्	97

टिप्पनी	98
सूत्रम्	98
टिप्पनी	98
सूत्रम्	99
टिप्पनी	99
सूत्रम्	100
टिप्पनी	100
सूत्रम्	100
टिप्पनी	100
सूत्रम्	101
टिप्पनी	101
सूत्रम्	102
टिप्पनी	102
सूत्रम्	103
प्रस्तावः	103
टिप्पनी	103
सूत्रम्	104
टिप्पनी	104
सूत्रम्	105
टिप्पनी	105
सूत्रम्	106
टिप्पनी	106
सूत्रम्	106
टिप्पनी	107
सूत्रम्	107
प्रस्तावः	107
टिप्पनी	108
सूत्रम्	108
टिप्पनी	108
सूत्रम्	109
टिप्पनी	109

सूत्रम् 110
टिप्पनी 110
सूत्रम् 110
टिप्पनी 111
सूत्रम् 111
टिप्पनी 111
सूत्रम् 112
टिप्पनी 112
सूत्रम् 113
टिप्पनी 113
सूत्रम् 114
टिप्पनी 114
सूत्रम् 114
टिप्पनी 114
सूत्रम् 115
टिप्पनी 115
सूत्रम् 116
टिप्पनी 116
सूत्रम् 117
प्रस्तावः 117
टिप्पनी 117
सूत्रम् 118
टिप्पनी 118
सूत्रम् 119
०४ 123
01 यदुच्छिष्टम् प्राश्नाति 123
सूत्रम् 123
टिप्पनी 123
सूत्रम् 124
टिप्पनी 124
सूत्रम् 125

टिप्पनी	125
सूत्रम्	125
टिप्पनी	126
सूत्रम्	126
टिप्पनी	126
सूत्रम्	127
प्रस्तावः	127
टिप्पनी	127
सूत्रम्	128
टिप्पनी	128
सूत्रम्	129
प्रस्तावः	129
टिप्पनी	129
सूत्रम्	130
प्रस्तावः	130
टिप्पनी	130
सूत्रम्	131
प्रस्तावः	131
टिप्पनी	131
सूत्रम्	132
टिप्पनी	132
सूत्रम्	133
टिप्पनी	133
सूत्रम्	133
टिप्पनी	133
सूत्रम्	134
टिप्पनी	134
सूत्रम्	135
टिप्पनी	135
सूत्रम्	136
टिप्पनी	136

सूत्रम् 137
टिप्पनी 137
सूत्रम् 137
टिप्पनी 138
सूत्रम् 138
टिप्पनी 138
सूत्रम् 139
टिप्पनी 139
सूत्रम् 140
टिप्पनी 140
सूत्रम् 141
टिप्पनी 141
सूत्रम् 142
टिप्पनी 142
सूत्रम् 142
टिप्पनी 143
सूत्रम् 143
टिप्पनी 143
सूत्रम् 144
टिप्पनी 144
सूत्रम् 145
टिप्पनी 145
सूत्रम् 146
टिप्पनी 146
सूत्रम् 146
टिप्पनी 147
इत्यापस्तम्बीये धर्मसूत्रे चतुर्थी कण्डिका ॥४॥ 147
०२ 151
०५ 152
01 नियमेषु तपःशब्दः 152
सूत्रम् 152

टिप्पनी	152
सूत्रम्	153
टिप्पनी	153
सूत्रम्	154
प्रस्तावः	154
टिप्पनी	154
सूत्रम्	155
टिप्पनी	155
सूत्रम्	156
प्रस्तावः	156
टिप्पनी	156
सूत्रम्	157
प्रस्तावः	157
टिप्पनी	157
सूत्रम्	158
प्रस्तावः	158
टिप्पनी	158
सूत्रम्	159
प्रस्तावः	159
टिप्पनी	159
सूत्रम्	160
टिप्पनी	160
सूत्रम्	161
टिप्पनी	161
सूत्रम्	162
टिप्पनी	162
सूत्रम्	162
टिप्पनी	163
सूत्रम्	163
टिप्पनी	163
सूत्रम्	164

टिप्पनी	164
सूत्रम्	165
प्रस्तावः	165
टिप्पनी	165
सूत्रम्	166
प्रस्तावः	166
टिप्पनी	166
सूत्रम्	167
टिप्पनी	167
सूत्रम्	168
टिप्पनी	168
सूत्रम्	169
टिप्पनी	169
सूत्रम्	170
टिप्पनी	170
सूत्रम्	171
प्रस्तावः	171
टिप्पनी	171
सूत्रम्	172
टिप्पनी	172
सूत्रम्	172
टिप्पनी	173
सूत्रम्	173
टिप्पनी	173
सूत्रम्	174
टिप्पनी	174
सूत्रम्	175
टिप्पनी	175
०६	179
01 सदा निशायाङ् गुरुं	179
सूत्रम्	179

टिप्पनी	179
सूत्रम्	180
टिप्पनी	180
सूत्रम्	181
टिप्पनी	181
सूत्रम्	181
टिप्पनी	182
सूत्रम्	182
टिप्पनी	182
सूत्रम्	183
टिप्पनी	183
सूत्रम्	184
टिप्पनी	184
सूत्रम्	184
टिप्पनी	185
सूत्रम्	185
टिप्पनी	185
सूत्रम्	186
टिप्पनी	186
सूत्रम्	187
टिप्पनी	187
सूत्रम्	187
टिप्पनी	188
सूत्रम्	188
टिप्पनी	188
सूत्रम्	189
टिप्पनी	189
सूत्रम्	190
टिप्पनी	190
सूत्रम्	191
टिप्पनी	191

सूत्रम्	191
टिप्पनी	191
सूत्रम्	192
टिप्पनी	192
सूत्रम्	193
टिप्पनी	193
सूत्रम्	194
टिप्पनी	194
सूत्रम्	194
टिप्पनी	195
सूत्रम्	195
टिप्पनी	195
सूत्रम्	196
टिप्पनी	196
सूत्रम्	197
टिप्पनी	197
सूत्रम्	197
टिप्पनी	198
सूत्रम्	198
टिप्पनी	198
सूत्रम्	199
टिप्पनी	199
सूत्रम्	200
टिप्पनी	200
सूत्रम्	201
टिप्पनी	201
सूत्रम्	201
टिप्पनी	202
सूत्रम्	202
टिप्पनी	202
सूत्रम्	203

टिप्पनी 203
सूत्रम् 204
टिप्पनी 204
सूत्रम् 205
टिप्पनी 205
सूत्रम् 205
टिप्पनी 206
सूत्रम् 206
टिप्पनी 206
सूत्रम् 207
टिप्पनी 207
सूत्रम् 208
टिप्पनी 208
०७ 212
01 उत्तिष्ठेत् तूष्णीं वा 212
सूत्रम् 212
टिप्पनी 212
सूत्रम् 213
टिप्पनी 213
सूत्रम् 214
टिप्पनी 214
सूत्रम् 214
टिप्पनी 215
सूत्रम् 215
टिप्पनी 215
सूत्रम् 216
टिप्पनी 216
सूत्रम् 217
टिप्पनी 217
सूत्रम् 218
टिप्पनी 218

सूत्रम्	218
टिप्पनी	219
सूत्रम्	219
टिप्पनी	219
सूत्रम्	220
टिप्पनी	220
सूत्रम्	221
टिप्पनी	221
सूत्रम्	222
टिप्पनी	222
सूत्रम्	223
टिप्पनी	223
सूत्रम्	223
टिप्पनी	224
सूत्रम्	224
टिप्पनी	224
सूत्रम्	225
टिप्पनी	225
सूत्रम्	226
टिप्पनी	226
सूत्रम्	226
टिप्पनी	227
सूत्रम्	227
प्रस्तावः	227
टिप्पनी	227
सूत्रम्	228
टिप्पनी	228
सूत्रम्	229
टिप्पनी	229
सूत्रम्	230
टिप्पनी	230

सूत्रम् 230
टिप्पनी 231
सूत्रम् 231
टिप्पनी 231
सूत्रम् 232
टिप्पनी 232
सूत्रम् 233
टिप्पनी 233
सूत्रम् 234
टिप्पनी 234
सूत्रम् 234
टिप्पनी 235
सूत्रम् 235
टिप्पनी 235
सूत्रम् 236
टिप्पनी 236
०८ 241
01 यथा ब्रह्मचारिणो वृत्तम् 241
सूत्रम् 241
टिप्पनी 241
सूत्रम् 242
टिप्पनी 242
सूत्रम् 243
टिप्पनी 243
सूत्रम् 244
टिप्पनी 244
सूत्रम् 244
प्रस्तावः 245
टिप्पनी 245
सूत्रम् 245
टिप्पनी 246

सूत्रम्	246
टिप्पनी	247
सूत्रम्	247
टिप्पनी	247
सूत्रम्	248
टिप्पनी	248
सूत्रम्	249
टिप्पनी	249
सूत्रम्	249
टिप्पनी	250
सूत्रम्	250
प्रस्तावः	250
टिप्पनी	251
सूत्रम्	251
टिप्पनी	251
सूत्रम्	252
टिप्पनी	252
सूत्रम्	253
टिप्पनी	253
सूत्रम्	254
टिप्पनी	254
सूत्रम्	255
प्रस्तावः	255
टिप्पनी	255
सूत्रम्	256
टिप्पनी	256
सूत्रम्	256
टिप्पनी	257
सूत्रम्	257
टिप्पनी	257
सूत्रम्	258

टिप्पनी 258
सूत्रम् 259
टिप्पनी 259
सूत्रम् 260
टिप्पनी 260
सूत्रम् 260
टिप्पनी 261
सूत्रम् 261
टिप्पनी 261
सूत्रम् 262
टिप्पनी 262
सूत्रम् 263
टिप्पनी 263
सूत्रम् 264
टिप्पनी 264
सूत्रम् 265
टिप्पनी 265
सूत्रम् 265
टिप्पनी 266
सूत्रम् 266
टिप्पनी 266
०३ 270
०९ 271
01 श्रावण्याम् पौर्णमास्यामध्यायमुपाकृत्य मासं 271
सूत्रम् 271
प्रस्तावः 271
टिप्पनी 271
सूत्रम् 272
टिप्पनी 272
सूत्रम् 273
टिप्पनी 273

सूत्रम्	274
टिप्पनी	274
सूत्रम्	275
टिप्पनी	275
सूत्रम्	275
टिप्पनी	276
सूत्रम्	276
टिप्पनी	276
सूत्रम्	277
टिप्पनी	277
सूत्रम्	278
टिप्पनी	278
सूत्रम्	279
टिप्पनी	279
सूत्रम्	279
टिप्पनी	280
सूत्रम्	280
टिप्पनी	280
सूत्रम्	281
टिप्पनी	281
सूत्रम्	282
टिप्पनी	282
सूत्रम्	283
टिप्पनी	283
सूत्रम्	284
टिप्पनी	284
सूत्रम्	284
टिप्पनी	284
सूत्रम्	285
टिप्पनी	285
सूत्रम्	286

टिप्पनी 286
सूत्रम् 287
टिप्पनी 287
सूत्रम् 287
टिप्पनी 287
सूत्रम् 288
प्रस्तावः 288
टिप्पनी 289
सूत्रम् 289
टिप्पनी 289
सूत्रम् 290
टिप्पनी 290
सूत्रम् 291
टिप्पनी 291
सूत्रम् 292
टिप्पनी 292
सूत्रम् 292
टिप्पनी 293
सूत्रम् 293
टिप्पनी 293
१० 297
01 चातुर्मासीषु च 297
सूत्रम् 297
टिप्पनी 297
सूत्रम् 298
टिप्पनी 298
सूत्रम् 299
टिप्पनी 299
सूत्रम् 300
टिप्पनी 300
सूत्रम् 301

टिप्पनी	301
सूत्रम्	302
टिप्पनी	302
सूत्रम्	303
टिप्पनी	303
सूत्रम्	303
प्रस्तावः	303
टिप्पनी	304
सूत्रम्	304
प्रस्तावः	304
टिप्पनी	305
सूत्रम्	305
टिप्पनी	305
सूत्रम्	307
टिप्पनी	307
सूत्रम्	307
टिप्पनी	308
सूत्रम्	308
टिप्पनी	308
सूत्रम्	309
टिप्पनी	309
सूत्रम्	310
टिप्पनी	310
सूत्रम्	311
टिप्पनी	311
सूत्रम्	311
टिप्पनी	312
सूत्रम्	312
टिप्पनी	313
सूत्रम्	313
टिप्पनी	313

सूत्रम्	314
टिप्पनी	314
सूत्रम्	315
टिप्पनी	315
सूत्रम्	316
टिप्पनी	316
सूत्रम्	316
टिप्पनी	316
सूत्रम्	317
टिप्पनी	317
सूत्रम्	318
टिप्पनी	318
सूत्रम्	319
टिप्पनी	319
सूत्रम्	319
टिप्पनी	320
सूत्रम्	320
टिप्पनी	320
सूत्रम्	321
टिप्पनी	321
११	326
01 {अनध्ययनम्} काण्डोपाकरणे चामातृकस्य	326
सूत्रम्	326
टिप्पनी	326
सूत्रम्	327
टिप्पनी	327
सूत्रम्	328
टिप्पनी	328
सूत्रम्	329
टिप्पनी	329
सूत्रम्	329

टिप्पनी	330
सूत्रम्	330
टिप्पनी	330
सूत्रम्	331
टिप्पनी	331
सूत्रम्	332
टिप्पनी	332
सूत्रम्	333
प्रस्तावः	333
टिप्पनी	333
सूत्रम्	334
टिप्पनी	334
सूत्रम्	335
टिप्पनी	335
सूत्रम्	335
टिप्पनी	336
सूत्रम्	336
प्रस्तावः	336
टिप्पनी	336
सूत्रम्	337
टिप्पनी	337
सूत्रम्	338
टिप्पनी	338
सूत्रम्	338
प्रस्तावः	339
टिप्पनी	339
सूत्रम्	339
टिप्पनी	340
सूत्रम्	340
टिप्पनी	340
सूत्रम्	341

टिप्पनी	341
सूत्रम्	342
टिप्पनी	342
सूत्रम्	342
टिप्पनी	343
सूत्रम्	343
टिप्पनी	343
सूत्रम्	344
टिप्पनी	344
सूत्रम्	345
टिप्पनी	345
सूत्रम्	346
टिप्पनी	346
सूत्रम्	347
टिप्पनी	347
सूत्रम्	347
टिप्पनी	347
सूत्रम्	348
टिप्पनी	348
सूत्रम्	349
टिप्पनी	349
सूत्रम्	350
टिप्पनी	350
सूत्रम्	351
टिप्पनी	351
सूत्रम्	352
टिप्पनी	352
सूत्रम्	353
टिप्पनी	353
सूत्रम्	353
टिप्पनी	353

सूत्रम् 354
टिप्पनी 354
सूत्रम् 355
टिप्पनी 355
सूत्रम् 356
टिप्पनी 356
सूत्रम् 357
टिप्पनी 357
०४ 362
१२ 363
01 तपः स्वाध्याय इति 363
सूत्रम् 363
टिप्पनी 363
सूत्रम् 364
टिप्पनी 364
सूत्रम् 365
प्रस्तावः 365
टिप्पनी 366
सूत्रम् 366
टिप्पनी 367
सूत्रम् 367
प्रस्तावः 368
टिप्पनी 368
सूत्रम् 368
प्रस्तावः 369
टिप्पनी 369
सूत्रम् 369
प्रस्तावः 370
टिप्पनी 370
सूत्रम् 370
प्रस्तावः 371

टिप्पनी	371
सूत्रम्	372
प्रस्तावः	372
टिप्पनी	372
सूत्रम्	373
प्रस्तावः	373
टिप्पनी	373
सूत्रम्	374
प्रस्तावः	374
टिप्पनी	374
सूत्रम्	375
प्रस्तावः	375
टिप्पनी	375
सूत्रम्	376
टिप्पनी	376
सूत्रम्	376
टिप्पनी	377
सूत्रम्	377
प्रस्तावः	378
टिप्पनी	378
१३	382
01 देवेभ्यः स्वाहाकार आ	382
सूत्रम्	382
टिप्पनी	382
सूत्रम्	383
प्रस्तावः	383
टिप्पनी	384
सूत्रम्	384
टिप्पनी	384
सूत्रम्	385
प्रस्तावः	385

टिप्पनी	385
सूत्रम्	386
टिप्पनी	386
सूत्रम्	387
टिप्पनी	387
सूत्रम्	388
टिप्पनी	388
सूत्रम्	389
प्रस्तावः	389
टिप्पनी	389
सूत्रम्	390
टिप्पनी	390
सूत्रम्	391
टिप्पनी	391
सूत्रम्	391
टिप्पनी	392
सूत्रम्	392
टिप्पनी	392
सूत्रम्	393
टिप्पनी	393
सूत्रम्	394
टिप्पनी	394
सूत्रम्	395
टिप्पनी	395
सूत्रम्	395
टिप्पनी	396
सूत्रम्	396
टिप्पनी	396
सूत्रम्	397
प्रस्तावः	397
टिप्पनी	397

सूत्रम् 398
टिप्पनी 398
सूत्रम् 399
प्रस्तावः 399
टिप्पनी 399
सूत्रम् 400
टिप्पनी 400
सूत्रम् 401
प्रस्तावः 401
टिप्पनी 401
१४ 404
01 अग्निहोत्रमतिथयः 404
सूत्रम् 404
प्रस्तावः 404
टिप्पनी 404
सूत्रम् 405
टिप्पनी 405
सूत्रम् 406
टिप्पनी 406
सूत्रम् 407
प्रस्तावः 407
टिप्पनी 407
सूत्रम् 408
टिप्पनी 408
सूत्रम् 409
टिप्पनी 409
सूत्रम् 409
टिप्पनी 409
सूत्रम् 410
टिप्पनी 410
सूत्रम् 411

टिप्पनी	411
सूत्रम्	412
टिप्पनी	412
सूत्रम्	412
टिप्पनी	413
सूत्रम्	413
टिप्पनी	413
सूत्रम्	414
प्रस्तावः	414
टिप्पनी	414
सूत्रम्	415
टिप्पनी	415
सूत्रम्	416
टिप्पनी	416
सूत्रम्	417
टिप्पनी	417
सूत्रम्	417
टिप्पनी	418
सूत्रम्	418
प्रस्तावः	418
टिप्पनी	418
सूत्रम्	419
टिप्पनी	419
सूत्रम्	420
टिप्पनी	420
सूत्रम्	421
टिप्पनी	421
सूत्रम्	421
टिप्पनी	421
सूत्रम्	422
टिप्पनी	422

सूत्रम् 423
टिप्पनी 423
सूत्रम् 424
प्रस्तावः 424
टिप्पनी 424
सूत्रम् 425
टिप्पनी 425
सूत्रम् 425
टिप्पनी 426
सूत्रम् 426
टिप्पनी 426
सूत्रम् 427
टिप्पनी 427
सूत्रम् 428
टिप्पनी 428
सूत्रम् 428
टिप्पनी 429
०५ 433
१५ 434
01 उपासने गुरूणां वृद्धानामतिथीनां 434
सूत्रम् 434
प्रस्तावः 434
टिप्पनी 435
सूत्रम् 435
टिप्पनी 436
सूत्रम् 436
टिप्पनी 436
सूत्रम् 437
टिप्पनी 437
सूत्रम् 438
टिप्पनी 438

सूत्रम्	439
टिप्पनी	439
सूत्रम्	439
टिप्पनी	440
सूत्रम्	440
टिप्पनी	440
सूत्रम्	441
टिप्पनी	441
सूत्रम्	442
टिप्पनी	442
सूत्रम्	443
टिप्पनी	443
सूत्रम्	443
टिप्पनी	444
सूत्रम्	444
टिप्पनी	444
सूत्रम्	445
टिप्पनी	445
सूत्रम्	446
टिप्पनी	446
सूत्रम्	447
टिप्पनी	447
सूत्रम्	448
टिप्पनी	448
सूत्रम्	449
टिप्पनी	449
सूत्रम्	450
टिप्पनी	450
सूत्रम्	450
टिप्पनी	450
सूत्रम्	451

टिप्पनी 451
सूत्रम् 452
टिप्पनी 452
सूत्रम् 453
टिप्पनी 453
१६ 458
01 तिष्ठन्न+आचामेत्प्रह्वो वा 458
सूत्रम् 458
टप्पनी 458
सूत्रम् 459
टिप्पनी 459
सूत्रम् 460
टिप्पनी 460
सूत्रम् 461
टिप्पनी 461
सूत्रम् 461
टिप्पनी 461
सूत्रम् 462
टिप्पनी 462
सूत्रम् 463
टिप्पनी 463
सूत्रम् 464
टिप्पनी 464
सूत्रम् 464
टिप्पनी 465
सूत्रम् 465
टिप्पनी 465
सूत्रम् 466
टिप्पनी 466
सूत्रम् 467
टिप्पनी 467

सूत्रम्	468
टिप्पनी	468
सूत्रम्	469
टिप्पनी	469
सूत्रम्	470
टिप्पनी	470
सूत्रम्	470
प्रस्तावः	471
टिप्पनी	471
सूत्रम्	471
टिप्पनी	471
सूत्रम्	472
टिप्पनी	472
सूत्रम्	473
टिप्पनी	473
सूत्रम्	474
टिप्पनी	474
सूत्रम्	475
टिप्पनी	475
सूत्रम्	476
टिप्पनी	476
सूत्रम्	477
टिप्पनी	477
सूत्रम्	477
टिप्पनी	477
सूत्रम्	478
टिप्पनी	478
सूत्रम्	479
टिप्पनी	479
सूत्रम्	480
टिप्पनी	480

सूत्रम् 480
टिप्पनी 481
सूत्रम् 481
टिप्पनी 481
सूत्रम् 482
टिप्पनी 482
सूत्रम् 483
टिप्पनी 483
सूत्रम् 483
टिप्पनी 484
सूत्रम् 484
टिप्पनी 484
१७ 489
01 यत्र शूद्र उपस्पृशेत् 489
सूत्रम् 489
टिप्पनी 489
सूत्रम् 490
टिप्पनी 490
सूत्रम् 491
टिप्पनी 491
सूत्रम् 491
टिप्पनी 492
सूत्रम् 492
टिप्पनी 492
सूत्रम् 493
टिप्पनी 493
सूत्रम् 494
टिप्पनी 494
सूत्रम् 494
टिप्पनी 495
सूत्रम् 495

टिप्पनी	495
सूत्रम्	496
टिप्पनी	496
सूत्रम्	497
टिप्पनी	497
सूत्रम्	498
टिप्पनी	498
सूत्रम्	498
टिप्पनी	498
सूत्रम्	499
टिप्पनी	499
सूत्रम्	500
टिप्पनी	500
सूत्रम्	501
टिप्पनी	501
सूत्रम्	501
टिप्पनी	502
सूत्रम्	502
टिप्पनी	502
सूत्रम्	503
टिप्पनी	503
सूत्रम्	504
प्रस्तावः	504
टिप्पनी	505
सूत्रम्	505
टिप्पनी	505
सूत्रम्	506
टिप्पनी	506
सूत्रम्	507
टिप्पनी	507
सूत्रम्	508

टिप्पनी	508
सूत्रम्	509
टिप्पनी	509
सूत्रम्	509
टिप्पनी	510
सूत्रम्	510
टिप्पनी	510
टिप्पनी	510
सूत्रम्	511
टिप्पनी	511
सूत्रम्	512
टिप्पनी	512
सूत्रम्	513
टिप्पनी	513
सूत्रम्	513
टिप्पनी	514
सूत्रम्	514
टिप्पनी	514
सूत्रम्	515
टिप्पनी	515
सूत्रम्	516
टिप्पनी	516
सूत्रम्	517
टिप्पनी	517
सूत्रम्	517
टिप्पनी	518
सूत्रम्	518
टिप्पनी	518
सूत्रम्	519
टिप्पनी	519
सूत्रम्	520

टिप्पनी 520
०६ 526
१८ 527
01 मध्वामम् मार्गम् मांसम् 527
सूत्रम् 527
प्रस्तावः 527
टिप्पनी 528
सूत्रम् 528
टिप्पनी 528
सूत्रम् 529
टिप्पनी 529
सूत्रम् 530
टिप्पनी 530
सूत्रम् 531
टिप्पनी 531
सूत्रम् 531
टिप्पनी 531
सूत्रम् 532
टिप्पनी 532
सूत्रम् 533
टिप्पनी 533
सूत्रम् 534
प्रस्तावः 534
टिप्पनी 534
सूत्रम् 535
टिप्पनी 535
सूत्रम् 536
प्रस्तावः 536
टिप्पनी 536
सूत्रम् 537
टिप्पनी 537

सूत्रम्	537
टिप्पनी	538
सूत्रम्	538
टिप्पनी	538
सूत्रम्	539
टिप्पनी	539
सूत्रम्	540
टिप्पनी	540
सूत्रम्	541
टिप्पनी	541
सूत्रम्	541
टिप्पनी	541
सूत्रम्	542
टिप्पनी	542
सूत्रम्	543
टिप्पनी	543
सूत्रम्	544
टिप्पनी	544
सूत्रम्	544
टिप्पनी	545
मन्त्र	545
टिप्पनी	545
सूत्रम्	546
टिप्पनी	546
सूत्रम्	547
प्रस्तावः	547
टिप्पनी	547
सूत्रम्	548
प्रस्तावः	548
टिप्पनी	548
सूत्रम्	549

टिप्पनी 549
सूत्रम् 550
टिप्पनी 550
सूत्रम् 550
टिप्पनी 550
सूत्रम् 551
टिप्पनी 551
सूत्रम् 552
टिप्पनी 552
सूत्रम् 553
टिप्पनी 553
सूत्रम् 553
टिप्पनी 554
१९ 558
02 मत्त उन्मत्तो बद्धो 558
सूत्रम् 558
टिप्पनी 558
सूत्रम् 559
टिप्पनी 559
सूत्रम् 560
टिप्पनी 560
सूत्रम् 561
टिप्पनी 561
सूत्रम् 561
टिप्पनी 561
सूत्रम् 562
प्रस्तावः 562
टिप्पनी 563
सूत्रम् 563
टिप्पनी 563
सूत्रम् 564

टिप्पनी 564
सूत्रम् 565
प्रस्तावः 565
टिप्पनी 565
सूत्रम् 566
टिप्पनी 566
सूत्रम् 566
टिप्पनी 567
सूत्रम् 567
प्रस्तावः 567
टिप्पनी 568
प्रस्तावः 568
सूत्रम् 569
सूत्रम् 570
टिप्पनी 570
सूत्रम् 571
प्रस्तावः 571
टिप्पनी 571
०७ 574
२० 575
01 नेमं लौकिकमर्थम् पुरस्कृत्य 575
सूत्रम् 575
टिप्पनी 575
सूत्रम् 576
प्रस्तावः 576
टिप्पनी 576
सूत्रम् 577
प्रस्तावः 577
टिप्पनी 577
सूत्रम् 578
टिप्पनी 578

सूत्रम्	579
टिप्पनी	579
सूत्रम्	580
प्रस्तावः	580
टिप्पनी	581
सूत्रम्	581
प्रस्तावः	582
टिप्पनी	582
सूत्रम्	583
प्रस्तावः	583
टिप्पनी	583
सूत्रम्	584
टिप्पनी	584
सूत्रम्	584
टिप्पनी	585
सूत्रम्	585
टिप्पनी	585
सूत्रम्	586
प्रस्तावः	587
टिप्पनी	587
सूत्रम्	588
टिप्पनी	588
सूत्रम्	589
टिप्पनी	589
सूत्रम्	589
प्रस्तावः	590
टिप्पनी	590
सूत्रम्	591
टिप्पनी	591
२१	594
01 मुञ्जबल्बजैर्मूलफलैः	594

सूत्रम्	594
टिप्पनी	594
सूत्रम्	595
टिप्पनी	595
सूत्रम्	596
टिप्पनी	596
सूत्रम्	596
टिप्पनी	597
सूत्रम्	597
टिप्पनी	597
सूत्रम्	598
टिप्पनी	598
सूत्रम्	599
टिप्पनी	599
सूत्रम्	600
टिप्पनी	600
सूत्रम्	601
टिप्पनी	601
सूत्रम्	602
टिप्पनी	602
सूत्रम्	603
टिप्पनी	603
सूत्रम्	603
टिप्पनी	603
सूत्रम्	604
टिप्पनी	604
सूत्रम्	605
टिप्पनी	605
सूत्रम्	606
प्रस्तावः	606
टिप्पनी	606

सूत्रम् 606
टिप्पनी 607
सूत्रम् 607
टिप्पनी 607
सूत्रम् 608
टिप्पनी 608
सूत्रम् 609
टिप्पनी 609
सूत्रम् 610
टिप्पनी 610
०८ 613
२२ 614
01 अध्यात्मिकान्योगान् 614
सूत्रम् 614
टिप्पनी 614
सूत्रम् 615
टिप्पनी 615
सूत्रम् 618
प्रस्तावः 619
टिप्पनी 619
सूत्रम् 620
प्रस्तावः 620
टिप्पनी 620
सूत्रम् 621
टिप्पनी 621
सूत्रम् 622
टिप्पनी 622
सूत्रम् 623
टिप्पनी 623
सूत्रम् 623
टिप्पनी 624

सूत्रम्	625
प्रस्तावः	625
टिप्पनी	625
सूत्रम्	626
प्रस्तावः	626
टिप्पनी	626
सूत्रम्	627
प्रस्तावः	627
टिप्पनी	627
सूत्रम्	628
प्रस्तावः	628
टिप्पनी	628
सूत्रम्	629
प्रस्तावः	629
टिप्पनी	630
सूत्रम्	630
टिप्पनी	630
सूत्रम्	631
टिप्पनी	632
सूत्रम्	632
टिप्पनी	632
२३	636
01 आत्मन् पश्यन् सर्वभूतानि	636
सूत्रम्	636
टिप्पनी	636
सूत्रम्	638
टिप्पनी	638
सूत्रम्	639
टिप्पनी	640
सूत्रम्	642
टिप्पनी	642

सूत्रम् 642
टिप्पनी 643
सूत्रम् 644
प्रस्तावः 644
टिप्पनी 644
०९ 647
२४ 648
01 क्षत्रियं हत्वा गवां 648
सूत्रम् 648
टिप्पनी 648
सूत्रम् 649
टिप्पनी 649
सूत्रम् 650
टिप्पनी 650
सूत्रम् 651
टिप्पनी 651
सूत्रम् 652
टिप्पनी 652
सूत्रम् 652
टिप्पनी 652
सूत्रम् 653
टिप्पनी 653
सूत्रम् 654
टिप्पनी 654
सूत्रम् 655
टिप्पनी 655
सूत्रम् 656
टिप्पनी 656
सूत्रम् 656
टिप्पनी 657
सूत्रम् 657

टिप्पनी 658
सूत्रम् 658
टिप्पनी 658
सूत्रम् 659
टिप्पनी 659
सूत्रम् 660
टिप्पनी 660
सूत्रम् 661
टिप्पनी 661
सूत्रम् 661
टिप्पनी 661
सूत्रम् 662
टिप्पनी 662
सूत्रम् 663
टिप्पनी 663
सूत्रम् 664
टिप्पनी 664
सूत्रम् 664
टिप्पनी 665
सूत्रम् 665
टिप्पनी 666
सूत्रम् 666
टिप्पनी 666
सूत्रम् 667
टिप्पनी 667
सूत्रम् 668
टिप्पनी 668
सूत्रम् 668
टिप्पनी 668
२५ 672
01 गुरुतल्पगामी सवृषणं शिश्नम् 672

सूत्रम् 672
टिप्पनी 672
सूत्रम् 673
टिप्पनी 673
सूत्रम् 674
टिप्पनी 674
सूत्रम् 675
टिप्पनी 675
सूत्रम् 676
टिप्पनी 676
सूत्रम् 677
टिप्पनी 677
सूत्रम् 677
सूत्रम् 677
टिप्पनी 678
सूत्रम् 678
टिप्पनी 678
सूत्रम् 679
टिप्पनी 679
सूत्रम् 680
टिप्पनी 680
सूत्रम् 681
टिप्पनी 681
सूत्रम् 682
टिप्पनी 682
सूत्रम् 683
टिप्पनी 683
२६ 686
01 धेन्वनडुहोश्चाकारणात् 686
सूत्रम् 686
टिप्पनी 686

सूत्रम्	687
टिप्पनी	687
सूत्रम्	688
टिप्पनी	688
सूत्रम्	689
टिप्पनी	689
सूत्रम्	689
टिप्पनी	690
सूत्रम्	690
टिप्पनी	691
सूत्रम्	692
टिप्पनी	692
सूत्रम्	693
टिप्पनी	693
सूत्रम्	694
टिप्पनी	694
सूत्रम्	695
टिप्पनी	695
सूत्रम्	695
टिप्पनी	696
सूत्रम्	696
टिप्पनी	696
सूत्रम्	697
टिप्पनी	697
सूत्रम्	698
टिप्पनी	698
सूत्रम्	698
टिप्पनी	699
२७	702
01 श्रावण्याम् पौर्णमास्यान् तिलभक्ष	702
सूत्रम्	702

टिप्पनी 702
सूत्रम् 703
टिप्पनी 703
सूत्रम् 704
टिप्पनी 704
सूत्रम् 705
प्रस्तावः 705
टिप्पनी 705
सूत्रम् 706
टिप्पनी 706
सूत्रम् 706
टिप्पनी 707
सूत्रम् 707
प्रस्तावः 708
टिप्पनी 708
सूत्रम् 708
टिप्पनी 709
सूत्रम् 709
टिप्पनी 709
सूत्रम् 710
टिप्पनी 710
सूत्रम् 711
टिप्पनी 711
१० 714
२८ 715
01 यथा कथा च 715
सूत्रम् 715
टिप्पनी 715
सूत्रम् 716
टिप्पनी 716
सूत्रम् 717

प्रस्तावः	717
टिप्पनी	717
सूत्रम्	718
टिप्पनी	718
सूत्रम्	719
टिप्पनी	719
सूत्रम्	720
टिप्पनी	720
सूत्रम्	720
टिप्पनी	721
सूत्रम्	721
टिप्पनी	721
सूत्रम्	722
टिप्पनी	722
सूत्रम्	723
टिप्पनी	723
सूत्रम्	724
टिप्पनी	724
सूत्रम्	725
टिप्पनी	725
सूत्रम्	726
टिप्पनी	726
सूत्रम्	726
टिप्पनी	727
सूत्रम्	727
टिप्पनी	727
सूत्रम्	728
टिप्पनी	728
सूत्रम्	729
प्रस्तावः	729
टिप्पनी	729

सूत्रम् 730
प्रस्तावः 730
टिप्पनी 730
सूत्रम् 731
टिप्पनी 731
सूत्रम् 732
टिप्पनी 732
सूत्रम् 733
टिप्पनी 733
२९ 735
02 खट्वाङ्गन् दण्डार्थे कर्मनामधेयम् 735
सूत्रम् 735
टिप्पनी 736
सूत्रम् 736
टिप्पनी 736
सूत्रम् 737
टिप्पनी 737
सूत्रम् 738
टिप्पनी 738
सूत्रम् 738
टिप्पनी 739
सूत्रम् 739
टिप्पनी 739
सूत्रम् 740
टिप्पनी 740
सूत्रम् 741
प्रस्तावः 741
टिप्पनी 741
सूत्रम् 742
प्रस्तावः 743
टिप्पनी 743

सूत्रम् 743
टिप्पनी 744
सूत्रम् 744
प्रस्तावः 744
टिप्पनी 745
सूत्रम् 745
प्रस्तावः 745
टिप्पनी 746
सूत्रम् 746
प्रस्तावः 746
टिप्पनी 747
सूत्रम् 747
प्रस्तावः 747
टिप्पनी 747
सूत्रम् 748
प्रस्तावः 748
टिप्पनी 749
सूत्रम् 749
टिप्पनी 749
सूत्रम् 750
टिप्पनी 750
सूत्रम् 751
टिप्पनी 751
सूत्रम् 752
प्रस्तावः 752
टिप्पनी 752
११ 754
३० 755
01 विद्यया स्नातीत्येके 755
सूत्रम् 755
प्रस्तावः 755

टिप्पनी	756
सूत्रम्	756
टिप्पनी	756
सूत्रम्	757
टिप्पनी	757
सूत्रम्	758
टिप्पनी	758
सूत्रम्	759
प्रस्तावः	759
टिप्पनी	759
सूत्रम्	760
टिप्पनी	760
सूत्रम्	761
टिप्पनी	761
सूत्रम्	762
टिप्पनी	762
सूत्रम्	763
प्रस्तावः	763
टिप्पनी	763
सूत्रम्	764
टिप्पनी	764
सूत्रम्	765
टिप्पनी	765
सूत्रम्	765
टिप्पनी	766
सूत्रम्	766
टिप्पनी	766
सूत्रम्	767
टिप्पनी	767
सूत्रम्	768
टिप्पनी	768

सूत्रम् 769
टिप्पनी 769
सूत्रम् 769
टिप्पनी 769
सूत्रम् 770
टिप्पनी 770
सूत्रम् 770
सूत्रम् 771
सूत्रम् 771
टिप्पनी 771
सूत्रम् 772
टिप्पनी 772
सूत्रम् 772
टिप्पनी 772
सूत्रम् 773
टिप्पनी 773
सूत्रम् 774
टिप्पनी 774
सूत्रम् 775
टिप्पनी 775
३१ 778
01 प्राङ्मुखोऽन्नानि भुञ्जीत उच्चरेद्दक्षिणामुखः 778
सूत्रम् 778
टिप्पनी 778
सूत्रम् 779
टिप्पनी 779
सूत्रम् 780
टिप्पनी 780
सूत्रम् 781
टिप्पनी 781
सूत्रम् 782

टिप्पनी	782
सूत्रम्	782
टिप्पनी	782
सूत्रम्	783
टिप्पनी	783
सूत्रम्	784
टिप्पनी	784
सूत्रम्	785
टिप्पनी	785
सूत्रम्	785
टिप्पनी	786
सूत्रम्	786
टिप्पनी	786
सूत्रम्	787
टिप्पनी	787
सूत्रम्	787
प्रस्तावः	788
टिप्पनी	788
सूत्रम्	788
टिप्पनी	789
सूत्रम्	789
टिप्पनी	789
सूत्रम्	790
टिप्पनी	790
सूत्रम्	791
टिप्पनी	791
सूत्रम्	792
टिप्पनी	792
सूत्रम्	792
टिप्पनी	793
सूत्रम्	793

टिप्पनी	794
सूत्रम्	794
प्रस्तावः	795
टिप्पनी	795
सूत्रम्	795
टिप्पनी	796
सूत्रम्	796
टिप्पनी	796
सूत्रम्	797
टिप्पनी	797
सूत्रम्	797
टिप्पनी	797
सूत्रम्	798
टिप्पनी	798
३२	802
01 प्रवचनयुक्तो वर्षाशरदम् मैथुनं	802
सूत्रम्	802
टिप्पनी	802
सूत्रम्	803
टिप्पनी	803
सूत्रम्	804
टिप्पनी	804
सूत्रम्	804
टिप्पनी	804
सूत्रम्	805
टिप्पनी	805
सूत्रम्	806
टिप्पनी	806
सूत्रम्	807
टिप्पनी	807
सूत्रम्	808

टिप्पनी	808
सूत्रम्	808
टिप्पनी	808
सूत्रम्	809
टिप्पनी	809
सूत्रम्	810
टिप्पनी	810
सूत्रम्	811
टिप्पनी	811
सूत्रम्	811
टिप्पनी	811
सूत्रम्	812
टिप्पनी	812
सूत्रम्	813
टिप्पनी	813
सूत्रम्	814
टिप्पनी	814
सूत्रम्	814
टिप्पनी	815
सूत्रम्	815
टिप्पनी	815
सूत्रम्	816
टिप्पनी	816
सूत्रम्	817
टिप्पनी	817
सूत्रम्	817
टिप्पनी	818
सूत्रम्	818
टिप्पनी	818
सूत्रम्	819
टिप्पनी	819

सूत्रम् 820
टिप्पनी 820
सूत्रम् 821
टिप्पनी 821
सूत्रम् 822
टिप्पनी 822
सूत्रम् 823
टिप्पनी 823
सूत्रम् 824
टिप्पनी 824
सूत्रम् 824
टिप्पनी 825
२ 827
०१ 828
०१ 829
01 पाणिग्रहणादधि गृहमेधिनोर्व्रतम् 829
सूत्रम् 829
टिप्पनी 829
सूत्रम् 830
टिप्पनी 830
सूत्रम् 831
टिप्पनी 831
सूत्रम् 832
टिप्पनी 832
सूत्रम् 833
प्रस्तावः 833
टिप्पनी 833
सूत्रम् 834
टिप्पनी 834
सूत्रम् 834
टिप्पनी 834

सूत्रम्	835
टिप्पनी	835
सूत्रम्	836
टिप्पनी	836
सूत्रम्	837
टिप्पनी	837
सूत्रम्	838
टिप्पनी	838
सूत्रम्	838
टिप्पनी	839
सूत्रम्	839
टिप्पनी	839
सूत्रम्	840
टिप्पनी	840
सूत्रम्	841
टिप्पनी	841
सूत्रम्	842
टिप्पनी	842
सूत्रम्	843
टिप्पनी	843
सूत्रम्	844
टिप्पनी	844
सूत्रम्	845
टिप्पनी	845
सूत्रम्	846
टिप्पनी	846
सूत्रम्	847
टिप्पनी	847
सूत्रम्	847
टिप्पनी	848
सूत्रम्	848

टिप्पनी 848

०२ 853

01 अपि वा लेपान्प्रक्षाल्याचम्य 853

सूत्रम् 853

टिप्पनी 853

सूत्रम् 854

टिप्पनी 854

सूत्रम् 855

प्रस्तावः 855

टिप्पनी 855

सूत्रम् 856

प्रस्तावः 856

टिप्पनी 856

सूत्रम् 857

टिप्पनी 857

सूत्रम् 858

टिप्पनी 858

टिप्पनी 858

सूत्रम् 859

टिप्पनी 859

सूत्रम् 860

टिप्पनी 860

सूत्रम् 861

टिप्पनी 861

०२ 863

०३ 864

01 आर्याः प्रयता वैश्वदेवेऽन्नसंस्कर्तारः 864

सूत्रम् 864

टिप्पनी 864

सूत्रम् 865

टिप्पनी 865

सूत्रम् 866
टिप्पनी 866
सूत्रम् 867
टिप्पनी 867
सूत्रम् 867
टिप्पनी 867
सूत्रम् 868
टिप्पनी 868
सूत्रम् 869
टिप्पनी 869
सूत्रम् 870
टिप्पनी 870
सूत्रम् 871
टिप्पनी 871
सूत्रम् 871
टिप्पनी 872
सूत्रम् 872
टिप्पनी 872
टिप्पनी 873
सूत्रम् 874
टिप्पनी 874
सूत्रम् 875
टिप्पनी 875
सूत्रम् 876
टिप्पनी 876
सूत्रम् 877
टिप्पनी 877
सूत्रम् 878
टिप्पनी 878
सूत्रम् 879
टिप्पनी 879

सूत्रम् 880
टिप्पनी 880
सूत्रम् 881
टिप्पनी 881
सूत्रम् 882
टिप्पनी 882
सूत्रम् 882
टिप्पनी 883
सूत्रम् 883
टिप्पनी 884
०४ 887
01 शय्यादेशे कामलिङ्गेन 887
सूत्रम् 887
टिप्पनी 887
सूत्रम् 888
टिप्पनी 888
सूत्रम् 889
टिप्पनी 889
सूत्रम् 890
टिप्पनी 890
सूत्रम् 891
टिप्पनी 891
सूत्रम् 892
टिप्पनी 892
सूत्रम् 893
टिप्पनी 893
सूत्रम् 894
टिप्पनी 894
सूत्रम् 895
टिप्पनी 895
सूत्रम् 895

टिप्पनी	896
सूत्रम्	896
टिप्पनी	896
सूत्रम्	897
टिप्पनी	897
सूत्रम्	898
टिप्पनी	898
सूत्रम्	899
प्रस्तावः	899
टिप्पनी	899
सूत्रम्	900
टिप्पनी	900
सूत्रम्	900
टिप्पनी	901
सूत्रम्	901
टिप्पनी	901
सूत्रम्	902
टिप्पनी	902
सूत्रम्	903
टिप्पनी	903
सूत्रम्	903
टिप्पनी	903
सूत्रम्	904
टिप्पनी	904
सूत्रम्	905
टिप्पनी	905
सूत्रम्	905
टिप्पनी	906
सूत्रम्	906
टिप्पनी	907
सूत्रम्	907

टिप्पनी 907
सूत्रम् 908
प्रस्तावः 908
टिप्पनी 908
सूत्रम् 909
टिप्पनी 909
सूत्रम् 910
टिप्पनी 910
०५ 914
01 सर्वविद्यानाम् अप्य् उपनिषदाम् 914
सूत्रम् 914
टिप्पनी 914
सूत्रम् 915
टिप्पनी 915
सूत्रम् 916
टिप्पनी 916
सूत्रम् 917
टिप्पनी 917
सूत्रम् 918
प्रस्तावः 918
टिप्पनी 918
सूत्रम् 919
टिप्पनी 919
सूत्रम् 920
टिप्पनी 920
सूत्रम् 920
टिप्पनी 920
सूत्रम् 921
टिप्पनी 921
सूत्रम् 922
टिप्पनी 922

सूत्रम्	923
टिप्पनी	923
सूत्रम्	924
टिप्पनी	924
सूत्रम्	924
टिप्पनी	924
सूत्रम्	925
टिप्पनी	925
सूत्रम्	926
टिप्पनी	926
सूत्रम्	927
प्रस्तावः	927
टिप्पनी	927
सूत्रम्	928
टिप्पनी	928
सूत्रम्	929
टिप्पनी	929
सूत्रम्	930
टिप्पनी	930
०३	933
०६	934
01 जात्याचारसंशये धर्मार्थमागतमग्निमुपसमाधाय जातिमाचारञ्	934
सूत्रम्	934
टिप्पनी	934
सूत्रम्	935
टिप्पनी	936
सूत्रम्	937
प्रस्तावः	937
टिप्पनी	937
सूत्रम्	938
प्रस्तावः	938

टिप्पनी 938
सूत्रम् 939
प्रस्तावः 939
टिप्पनी 939
सूत्रम् 940
टिप्पनी 940
सूत्रम् 941
टिप्पनी 941
सूत्रम् 941
टिप्पनी 941
सूत्रम् 942
टिप्पनी 942
सूत्रम् 943
प्रस्तावः 943
टिप्पनी 943
सूत्रम् 944
टिप्पनी 944
सूत्रम् 945
टिप्पनी 945
सूत्रम् 945
टिप्पनी 945
सूत्रम् 946
टिप्पनी 946
सूत्रम् 947
टिप्पनी 947
सूत्रम् 948
टिप्पनी 948
सूत्रम् 949
प्रस्तावः 949
टिप्पनी 949
सूत्रम् 950

टिप्पनी 950
सूत्रम् 950
टिप्पनी 951
सूत्रम् 951
टिप्पनी 951
०७ 954
01 स एष प्राजापत्यः 954
सूत्रम् 954
टिप्पनी 954
सूत्रम् 955
टिप्पनी 955
टिप्पनी 955
सूत्रम् 956
टिप्पनी 956
सूत्रम् 957
टिप्पनी 957
सूत्रम् 958
टिप्पनी 958
सूत्रम् 959
टिप्पनी 959
सूत्रम् 959
टिप्पनी 959
सूत्रम् 960
टिप्पनी 960
सूत्रम् 961
टिप्पनी 961
सूत्रम् 962
टिप्पनी 962
सूत्रम् 962
टिप्पनी 963
सूत्रम् 963

टिप्पनी 963
सूत्रम् 964
टिप्पनी 964
टिप्पनी 965
सूत्रम् 965
सूत्रम् 966
टिप्पनी 966
सूत्रम् 967
टिप्पनी 967
सूत्रम् 968
टिप्पनी 968
०४ 972
०८ 973
01 येन कृतावसथः स्यादतिथिर्न 973
सूत्रम् 973
टिप्पनी 973
सूत्रम् 974
टिप्पनी 974
सूत्रम् 975
टिप्पनी 975
सूत्रम् 976
टिप्पनी 976
सूत्रम् 976
टिप्पनी 976
सूत्रम् 977
टिप्पनी 977
सूत्रम् 978
टिप्पनी 978
सूत्रम् 979
प्रस्तावः 979
टिप्पनी 979

सूत्रम्	980
टिप्पनी	980
सूत्रम्	980
प्रस्तावः	981
टिप्पनी	981
सूत्रम्	981
प्रस्तावः	982
टिप्पनी	982
सूत्रम्	983
प्रस्तावः	983
टिप्पनी	983
सूत्रम्	984
प्रस्तावः	984
टिप्पनी	984
सूत्रम्	985
टिप्पनी	985
०९	988
01 श्वोभूते यथामनसन् तर्पयित्वा	988
सूत्रम्	988
टिप्पनी	988
सूत्रम्	989
प्रस्तावः	989
टिप्पनी	989
सूत्रम्	990
टिप्पनी	990
सूत्रम्	991
टिप्पनी	991
सूत्रम्	991
टिप्पनी	992
सूत्रम्	992
टिप्पनी	992

सूत्रम्	993
टिप्पनी	993
सूत्रम्	994
टिप्पनी	994
सूत्रम्	995
टिप्पनी	995
सूत्रम्	996
टिप्पनी	996
सूत्रम्	996
टिप्पनी	997
सूत्रम्	997
टिप्पनी	997
सूत्रम्	998
प्रस्तावः	998
टिप्पनी	999
०५	1001
१०	1002
01 भिक्षणे निमित्तमाचार्यो विवाहो	1002
सूत्रम्	1002
टिप्पनी	1002
सूत्रम्	1003
टिप्पनी	1003
सूत्रम्	1004
टिप्पनी	1004
सूत्रम्	1005
टिप्पनी	1005
सूत्रम्	1005
टिप्पनी	1006
सूत्रम्	1006
टिप्पनी	1007
सूत्रम्	1007

टिप्पनी	1007
सूत्रम्	1008
टिप्पनी	1008
सूत्रम्	1009
टिप्पनी	1009
सूत्रम्	1010
टिप्पनी	1010
सूत्रम्	1010
प्रस्तावः	1011
टिप्पनी	1011
सूत्रम्	1011
टिप्पनी	1012
सूत्रम्	1012
टिप्पनी	1013
सूत्रम्	1013
टिप्पनी	1013
सूत्रम्	1014
टिप्पनी	1014
सूत्रम्	1015
टिप्पनी	1015
सूत्रम्	1016
प्रस्तावः	1016
टिप्पनी	1016
११	1019
01 इतरेषां वर्णानामा प्राणविप्रयोगात्समवेक्ष्य	1019
सूत्रम्	1019
प्रस्तावः	1019
टिप्पनी	1019
सूत्रम्	1020
टिप्पनी	1020
सूत्रम्	1021

प्रस्तावः 1021
टिप्पनी 1021
सूत्रम् 1022
प्रस्तावः 1022
टिप्पनी 1022
सूत्रम् 1023
प्रस्तावः 1023
टिप्पनी 1023
सूत्रम् 1024
टिप्पनी 1024
सूत्रम् 1025
टिप्पनी 1025
सूत्रम् 1025
टिप्पनी 1026
सूत्रम् 1026
टिप्पनी 1026
सूत्रम् 1027
टिप्पनी 1027
सूत्रम् 1028
टिप्पनी 1028
सूत्रम् 1029
टिप्पनी 1029
सूत्रम् 1030
टिप्पनी 1030
सूत्रम् 1031
प्रस्तावः 1031
टिप्पनी 1031
सूत्रम् 1033
टिप्पनी 1033
सूत्रम् 1033
टिप्पनी 1033

सूत्रम् 1036
टिप्पनी 1036
सूत्रम् 1037
टिप्पनी 1037
सूत्रम् 1038
टिप्पनी 1038
सूत्रम् 1038
टिप्पनी 1038
१२ 1043
01 शक्तिविषयेण द्र व्याणि 1043
सूत्रम् 1043
टिप्पनी 1043
सूत्रम् 1044
टिप्पनी 1044
सूत्रम् 1045
टिप्पनी 1045
सूत्रम् 1046
टिप्पनी 1046
सूत्रम् 1047
टिप्पनी 1047
सूत्रम् 1047
टिप्पनी 1048
सूत्रम् 1048
टिप्पनी 1048
सूत्रम् 1049
टिप्पनी 1049
सूत्रम् 1050
टिप्पनी 1050
सूत्रम् 1050
टिप्पनी 1051
सूत्रम् 1051

टिप्पनी 1051
सूत्रम् 1052
टिप्पनी 1052
सूत्रम् 1053
टिप्पनी 1053
सूत्रम् 1054
टिप्पनी 1054
सूत्रम् 1055
टिप्पनी 1055
सूत्रम् 1055
टिप्पनी 1056
सूत्रम् 1056
टिप्पनी 1056
सूत्रम् 1057
टिप्पनी 1057
सूत्रम् 1058
टिप्पनी 1058
सूत्रम् 1058
टिप्पनी 1059
सूत्रम् 1059
टिप्पनी 1059
सूत्रम् 1060
टिप्पनी 1061
सूत्रम् 1061
टिप्पनी 1062
०६ 1065
१३ 1066
01 सवर्णाऽपूर्वशास्त्रविहितायां यथर्तु गच्छतः 1066
सूत्रम् 1066
टिप्पनी 1066
सूत्रम् 1067

टिप्पनी 1067
सूत्रम् 1068
टिप्पनी 1068
सूत्रम् 1069
टिप्पनी 1069
सूत्रम् 1070
प्रस्तावः 1070
टिप्पनी 1070
सूत्रम् 1071
टिप्पनी 1072
सूत्रम् 1073
प्रस्तावः 1073
टिप्पनी 1073
सूत्रम् 1074
प्रस्तावः 1074
टिप्पनी 1074
सूत्रम् 1075
प्रस्तावः 1075
टिप्पनी 1075
सूत्रम् 1076
प्रस्तावः 1076
टिप्पनी 1076
सूत्रम् 1077
टिप्पनी 1077
सूत्रम् 1078
प्रस्तावः 1078
टिप्पनी 1079
१४ 1082
01 जीवन्पुत्रेभ्यो दायं विभजेत्समङ् 1082
सूत्रम् 1082
प्रस्तावः 1082

टिप्पनी	1082
सूत्रम्	1083
प्रस्तावः	1084
टिप्पनी	1084
सूत्रम्	1090
टिप्पनी	1091
सूत्रम्	1091
टिप्पनी	1091
सूत्रम्	1092
टिप्पनी	1092
सूत्रम्	1093
टिप्पनी	1093
सूत्रम्	1093
टिप्पनी	1094
सूत्रम्	1094
टिप्पनी	1094
सूत्रम्	1095
टिप्पनी	1095
सूत्रम्	1096
टिप्पनी	1096
सूत्रम्	1097
प्रस्तावः	1097
टिप्पनी	1097
सूत्रम्	1097
प्रस्तावः	1098
टिप्पनी	1098
सूत्रम्	1099
प्रस्तावः	1099
टिप्पनी	1099
सूत्रम्	1100
टिप्पनी	1100

सूत्रम् 1100
टिप्पनी 1101
सूत्रम् 1101
प्रस्तावः 1101
टिप्पनी 1102
सूत्रम् 1102
प्रस्तावः 1102
टिप्पनी 1102
सूत्रम् 1103
टिप्पनी 1103
सूत्रम् 1104
टिप्पनी 1104
सूत्रम् 1105
प्रस्तावः 1105
टिप्पनी 1105
१५ 1111
01 एतेन देशकुलधर्मा व्याख्याताः 1111
सूत्रम् 1111
टिप्पनी 1111
सूत्रम् 1112
टिप्पनी 1112
सूत्रम् 1113
टिप्पनी 1113
सूत्रम् 1114
टिप्पनी 1114
सूत्रम् 1115
टिप्पनी 1115
सूत्रम् 1116
प्रस्तावः 1116
टिप्पनी 1116
सूत्रम् 1117

प्रस्तावः	1117
टिप्पनी	1117
सूत्रम्	1118
टिप्पनी	1118
सूत्रम्	1119
टिप्पनी	1119
सूत्रम्	1120
टिप्पनी	1120
सूत्रम्	1121
टिप्पनी	1121
सूत्रम्	1121
टिप्पनी	1122
सूत्रम्	1122
टिप्पनी	1122
सूत्रम्	1123
टिप्पनी	1123
सूत्रम्	1124
टिप्पनी	1124
सूत्रम्	1125
प्रस्तावः	1125
टिप्पनी	1125
सूत्रम्	1126
प्रस्तावः	1126
सूत्रम्	1126
सूत्रम्	1127
टिप्पनी	1127
सूत्रम्	1128
टिप्पनी	1128
सूत्रम्	1129
टिप्पनी	1129
सूत्रम्	1129

टिप्पनी 1129
सूत्रम् 1130
प्रस्तावः 1130
टिप्पनी 1130
सूत्रम् 1131
टिप्पनी 1131
सूत्रम् 1132
टिप्पनी 1132
०७ 1136
१६ 1137
01 सह देवमनुष्या अस्मिंल् 1137
सूत्रम् 1137
टिप्पनी 1138
सूत्रम् 1139
टिप्पनी 1139
सूत्रम् 1140
टिप्पनी 1140
सूत्रम् 1140
टिप्पनी 1141
सूत्रम् 1141
टिप्पनी 1141
सूत्रम् 1142
टिप्पनी 1142
सूत्रम् 1143
टिप्पनी 1143
सूत्रम् 1144
प्रस्तावः 1144
टिप्पनी 1144
सूत्रम् 1145
टिप्पनी 1145
सूत्रम् 1146

टिप्पनी 1146
सूत्रम् 1146
टिप्पनी 1146
सूत्रम् 1147
टिप्पनी 1147
सूत्रम् 1148
टिप्पनी 1148
सूत्रम् 1149
टिप्पनी 1149
सूत्रम् 1149
टिप्पनी 1150
सूत्रम् 1150
टिप्पनी 1150
सूत्रम् 1151
टिप्पनी 1151
सूत्रम् 1152
टिप्पनी 1152
सूत्रम् 1152
टिप्पनी 1153
सूत्रम् 1153
टिप्पनी 1153
सूत्रम् 1154
टिप्पनी 1154
सूत्रम् 1155
टिप्पनी 1155
सूत्रम् 1156
टिप्पनी 1156
सूत्रम् 1156
टिप्पनी 1157
सूत्रम् 1157
टिप्पनी 1157

सूत्रम् 1158
टिप्पनी 1158
सूत्रम् 1159
टिप्पनी 1159
सूत्रम् 1160
टिप्पनी 1160
१७ 1163
01 खड्गोपस्तरणे खड्गमांसेनानन्त्यङ् कालम् 1163
सूत्रम् 1163
टिप्पनी 1163
सूत्रम् 1164
टिप्पनी 1164
सूत्रम् 1165
टिप्पनी 1165
सूत्रम् 1166
टिप्पनी 1166
सूत्रम् 1167
टिप्पनी 1167
सूत्रम् 1167
टिप्पनी 1167
सूत्रम् 1168
टिप्पनी 1169
सूत्रम् 1169
टिप्पनी 1170
सूत्रम् 1170
प्रस्तावः 1170
टिप्पनी 1171
सूत्रम् 1171
प्रस्तावः 1171
टिप्पनी 1172
सूत्रम् 1172

टिप्पनी 1172
सूत्रम् 1173
टिप्पनी 1173
सूत्रम् 1174
टिप्पनी 1174
सूत्रम् 1174
टिप्पनी 1175
सूत्रम् 1175
टिप्पनी 1175
सूत्रम् 1176
टिप्पनी 1176
सूत्रम् 1177
टिप्पनी 1177
सूत्रम् 1178
टिप्पनी 1178
सूत्रम् 1179
टिप्पनी 1179
सूत्रम् 1180
टिप्पनी 1180
सूत्रम् 1181
टिप्पनी 1181
सूत्रम् 1182
टिप्पनी 1182
सूत्रम् 1183
टिप्पनी 1183
सूत्रम् 1184
टिप्पनी 1184
सूत्रम् 1185
टिप्पनी 1185
०८ 1189
१८ 1190

01 विलयनम् मथितम् पिण्याकम् 1190
सूत्रम् 1190
टिप्पनी 1190
सूत्रम् 1191
टिप्पनी 1191
सूत्रम् 1192
टिप्पनी 1192
सूत्रम् 1192
टिप्पनी 1192
सूत्रम् 1193
टिप्पनी 1193
सूत्रम् 1194
टिप्पनी 1194
सूत्रम् 1195
टिप्पनी 1195
सूत्रम् 1196
टिप्पनी 1196
सूत्रम् 1196
प्रस्तावः 1197
टिप्पनी 1197
सूत्रम् 1197
टिप्पनी 1198
सूत्रम् 1198
टिप्पनी 1198
सूत्रम् 1199
टिप्पनी 1199
सूत्रम् 1200
टिप्पनी 1200
सूत्रम् 1200
टिप्पनी 1201
सूत्रम् 1201

टिप्पनी 1201
सूत्रम् 1202
टिप्पनी 1202
सूत्रम् 1203
टिप्पनी 1203
सूत्रम् 1204
टिप्पनी 1204
सूत्रम् 1204
टिप्पनी 1204
सूत्रम् 1205
प्रस्तावः 1205
टिप्पनी 1205
१९ 1207
01 गौरसर्षपाणाञ् चूर्णानि कारयित्वा 1207
सूत्रम् 1207
टिप्पनी 1208
सूत्रम् 1208
टिप्पनी 1208
सूत्रम् 1209
टिप्पनी 1209
सूत्रम् 1210
टिप्पनी 1210
सूत्रम् 1211
टिप्पनी 1211
सूत्रम् 1211
टिप्पनी 1212
सूत्रम् 1212
टिप्पनी 1212
सूत्रम् 1213
टिप्पनी 1213
सूत्रम् 1214

टिप्पनी 1214
सूत्रम् 1215
टिप्पनी 1215
सूत्रम् 1215
टिप्पनी 1215
सूत्रम् 1216
टिप्पनी 1216
सूत्रम् 1217
टिप्पनी 1217
सूत्रम् 1218
टिप्पनी 1218
सूत्रम् 1218
टिप्पनी 1218
सूत्रम् 1219
टिप्पनी 1219
सूत्रम् 1220
टिप्पनी 1220
सूत्रम् 1221
प्रस्तावः 1221
टिप्पनी 1221
सूत्रम् 1222
टिप्पनी 1222
सूत्रम् 1222
टिप्पनी 1223
२० 1225
01 मासिश्राद्धे तिलानान् द्रोणन् 1225
सूत्रम् 1225
टिप्पनी 1225
सूत्रम् 1226
टिप्पनी 1226
सूत्रम् 1227

प्रस्तावः	1227
टिप्पनी	1228
सूत्रम्	1228
टिप्पनी	1228
सूत्रम्	1229
टिप्पनी	1229
सूत्रम्	1230
टिप्पनी	1230
सूत्रम्	1231
टिप्पनी	1231
सूत्रम्	1231
प्रस्तावः	1231
टिप्पनी	1232
सूत्रम्	1232
टिप्पनी	1232
सूत्रम्	1233
टिप्पनी	1233
सूत्रम्	1234
टिप्पनी	1234
सूत्रम्	1234
टिप्पनी	1235
सूत्रम्	1235
टिप्पनी	1235
सूत्रम्	1236
टिप्पनी	1236
सूत्रम्	1237
टिप्पनी	1237
सूत्रम्	1237
टिप्पनी	1238
सूत्रम्	1238
टिप्पनी	1238

सूत्रम् 1239
टिप्पनी 1239
सूत्रम् 1240
टिप्पनी 1240
सूत्रम् 1240
टिप्पनी 1241
सूत्रम् 1241
टिप्पनी 1241
सूत्रम् 1242
टिप्पनी 1242
सूत्रम् 1243
टिप्पनी 1243
०९ 1245
२१ 1246
01 चत्वार आश्रमा गार्हस्थ्यमाचार्यकुलम् 1246
सूत्रम् 1246
प्रस्तावः 1246
टिप्पनी 1246
सूत्रम् 1247
टिप्पनी 1247
सूत्रम् 1248
टिप्पनी 1248
सूत्रम् 1249
टिप्पनी 1249
सूत्रम् 1250
टिप्पनी 1250
सूत्रम् 1250
प्रस्तावः 1251
टिप्पनी 1251
सूत्रम् 1252
टिप्पनी 1252

सूत्रम्	1252
टिप्पनी	1253
सूत्रम्	1254
टिप्पनी	1254
सूत्रम्	1255
टिप्पनी	1255
सूत्रम्	1256
टिप्पनी	1256
सूत्रम्	1257
टिप्पनी	1257
सूत्रम्	1257
प्रस्तावः	1258
टिप्पनी	1258
सूत्रम्	1258
प्रस्तावः	1259
टिप्पनी	1259
सूत्रम्	1259
प्रस्तावः	1260
टिप्पनी	1260
सूत्रम्	1261
प्रस्तावः	1261
टिप्पनी	1261
सूत्रम्	1262
टिप्पनी	1262
सूत्रम्	1262
टिप्पनी	1263
सूत्रम्	1263
टिप्पनी	1263
सूत्रम्	1264
टिप्पनी	1264
सूत्रम्	1265

टिप्पनी 1265
सूत्रम् 1266
टिप्पनी 1266
२२ 1270
01 तस्यारण्यमाच्छादनं विहितम् 1270
सूत्रम् 1270
टिप्पनी 1270
सूत्रम् 1271
टिप्पनी 1271
सूत्रम् 1272
टिप्पनी 1272
सूत्रम् 1272
टिप्पनी 1273
सूत्रम् 1273
टिप्पनी 1273
सूत्रम् 1274
टिप्पनी 1274
सूत्रम् 1275
प्रस्तावः 1275
टिप्पनी 1275
सूत्रम् 1276
टिप्पनी 1276
सूत्रम् 1277
टिप्पनी 1277
सूत्रम् 1277
टिप्पनी 1278
सूत्रम् 1278
टिप्पनी 1278
सूत्रम् 1279
टिप्पनी 1279
सूत्रम् 1280

टिप्पनी 1280
सूत्रम् 1281
टिप्पनी 1281
सूत्रम् 1281
टिप्पनी 1282
सूत्रम् 1282
टिप्पनी 1282
सूत्रम् 1283
टिप्पनी 1283
सूत्रम् 1284
टिप्पनी 1284
सूत्रम् 1285
टिप्पनी 1285
सूत्रम् 1285
टिप्पनी 1286
सूत्रम् 1286
टिप्पनी 1286
सूत्रम् 1287
टिप्पनी 1287
सूत्रम् 1288
टिप्पनी 1288
सूत्रम् 1288
टिप्पनी 1289
२३ 1291
01 भूयांसं वा नियममिच्छन्न् 1291
सूत्रम् 1291
टिप्पनी 1291
सूत्रम् 1292
प्रस्तावः 1292
टिप्पनी 1293
सूत्रम् 1293

प्रस्तावः	1293
टिप्पनी	1293
सूत्रम्	1294
टिप्पनी	1294
सूत्रम्	1295
टिप्पनी	1295
सूत्रम्	1296
टिप्पनी	1296
सूत्रम्	1297
प्रस्तावः	1297
टिप्पनी	1297
सूत्रम्	1298
प्रस्तावः	1298
टिप्पनी	1298
सूत्रम्	1299
टिप्पनी	1299
सूत्रम्	1300
प्रस्तावः	1300
टिप्पनी	1300
सूत्रम्	1301
प्रस्तावः	1301
टिप्पनी	1302
सूत्रम्	1302
प्रस्तावः	1302
टिप्पनी	1303
२४	1305
01 अथाप्यस्य प्रजातिम् अमृतम्	1305
सूत्रम्	1305
प्रस्तावः	1305
टिप्पनी	1306
सूत्रम्	1306

प्रस्तावः	1306
टिप्पनी	1307
सूत्रम्	1307
प्रस्तावः	1307
टिप्पनी	1308
सूत्रम्	1308
टिप्पनी	1308
सूत्रम्	1309
टिप्पनी	1309
सूत्रम्	1310
टिप्पनी	1310
सूत्रम्	1311
टिप्पनी	1311
सूत्रम्	1311
टिप्पनी	1312
सूत्रम्	1312
प्रस्तावः	1313
टिप्पनी	1313
सूत्रम्	1313
प्रस्तावः	1314
टिप्पनी	1314
सूत्रम्	1314
टिप्पनी	1315
सूत्रम्	1315
टिप्पनी	1315
सूत्रम्	1316
प्रस्तावः	1316
टिप्पनी	1316
सूत्रम्	1317
टिप्पनी	1317
२५	1319

01 व्याख्याताः सर्ववर्णानां साधारणवैशेषिका 1319
सूत्रम् 1319
टिप्पनी 1319
सूत्रम् 1320
टिप्पनी 1320
सूत्रम् 1321
टिप्पनी 1321
सूत्रम् 1322
टिप्पनी 1322
सूत्रम् 1322
टिप्पनी 1323
सूत्रम् 1323
टिप्पनी 1323
सूत्रम् 1324
टिप्पनी 1324
सूत्रम् 1325
टिप्पनी 1325
सूत्रम् 1326
टिप्पनी 1326
सूत्रम् 1326
टिप्पनी 1327
सूत्रम् 1327
टिप्पनी 1327
सूत्रम् 1328
टिप्पनी 1328
सूत्रम् 1329
टिप्पनी 1329
सूत्रम् 1330
टिप्पनी 1330
सूत्रम् 1331
टिप्पनी 1331

१० 1334
२६ 1335
01 भृत्यानामनुपरोधेन क्षेत्रं वित्तञ् 1335
सूत्रम् 1335
टिप्पनी 1335
सूत्रम् 1336
टिप्पनी 1336
सूत्रम् 1337
टिप्पनी 1337
सूत्रम् 1338
टिप्पनी 1338
सूत्रम् 1338
टिप्पनी 1339
सूत्रम् 1339
टिप्पनी 1339
सूत्रम् 1340
टिप्पनी 1340
सूत्रम् 1341
टिप्पनी 1341
सूत्रम् 1341
टिप्पनी 1342
सूत्रम् 1342
टिप्पनी 1342
सूत्रम् 1343
टिप्पनी 1343
सूत्रम् 1344
टिप्पनी 1344
सूत्रम् 1344
टिप्पनी 1345
सूत्रम् 1345
टिप्पनी 1345

सूत्रम्	1346
टिप्पनी	1346
सूत्रम्	1347
टिप्पनी	1347
सूत्रम्	1348
टिप्पनी	1348
सूत्रम्	1348
टिप्पनी	1349
सूत्रम्	1349
टिप्पनी	1349
सूत्रम्	1350
टिप्पनी	1350
सूत्रम्	1351
टिप्पनी	1351
सूत्रम्	1352
टिप्पनी	1352
सूत्रम्	1352
टिप्पनी	1352
सूत्रम्	1353
टिप्पनी	1353
२७	1356
01 चरिते यथापुरं, धर्माद्धि	1356
सूत्रम्	1356
टिप्पनी	1356
सूत्रम्	1357
प्रस्तावः	1357
टिप्पनी	1357
सूत्रम्	1358
प्रस्तावः	1358
टिप्पनी	1358
सूत्रम्	1359

प्रस्तावः	1359
टिप्पनी	1359
सूत्रम्	1360
प्रस्तावः	1360
टिप्पनी	1360
सूत्रम्	1361
प्रस्तावः	1361
टिप्पनी	1361
सूत्रम्	1362
टिप्पनी	1362
सूत्रम्	1363
टिप्पनी	1363
सूत्रम्	1364
टिप्पनी	1364
सूत्रम्	1365
टिप्पनी	1365
सूत्रम्	1366
टिप्पनी	1366
सूत्रम्	1367
टिप्पनी	1367
सूत्रम्	1367
टिप्पनी	1367
सूत्रम्	1368
टिप्पनी	1368
सूत्रम्	1369
टिप्पनी	1369
सूत्रम्	1370
टिप्पनी	1370
सूत्रम्	1371
टिप्पनी	1371
सूत्रम्	1372

टिप्पनी 1372
सूत्रम् 1372
टिप्पनी 1372
सूत्रम् 1373
टिप्पनी 1373
सूत्रम् 1374
टिप्पनी 1374
११ 1378
२८ 1379
01 क्षेत्रम् परिगृह्योत्थानाभावात्फलाभावे यः 1379
सूत्रम् 1379
टिप्पनी 1379
सूत्रम् 1380
टिप्पनी 1380
सूत्रम् 1381
टिप्पनी 1381
सूत्रम् 1382
टिप्पनी 1382
सूत्रम् 1383
टिप्पनी 1383
सूत्रम् 1383
टिप्पनी 1383
सूत्रम् 1384
टिप्पनी 1384
सूत्रम् 1385
टिप्पनी 1385
सूत्रम् 1385
टिप्पनी 1385
सूत्रम् 1386
टिप्पनी 1386
सूत्रम् 1387

टिप्पनी	1387
सूत्रम्	1388
टिप्पनी	1388
सूत्रम्	1388
टिप्पनी	1389
सूत्रम्	1389
टिप्पनी	1389
२९	1391
01 प्रयोजयिता मन्ता कर्तेति	1391
सूत्रम्	1391
प्रस्तावः	1391
टिप्पनी	1391
सूत्रम्	1392
टिप्पनी	1392
सूत्रम्	1393
प्रस्तावः	1393
टिप्पनी	1393
सूत्रम्	1394
टिप्पनी	1394
सूत्रम्	1395
टिप्पनी	1395
सूत्रम्	1396
टिप्पनी	1396
सूत्रम्	1397
प्रस्तावः	1397
टिप्पनी	1397
सूत्रम्	1398
टिप्पनी	1398
सूत्रम्	1399
प्रस्तावः	1399
टिप्पनी	1399

सूत्रम् 1400
टिप्पनी 1400
सूत्रम् 1401
टिप्पनी 1401
सूत्रम् 1401
टिप्पनी 1402
सूत्रम् 1402
टिप्पनी 1402
सूत्रम् 1403
सूत्रम् 1403
टिप्पनी 1404
सूत्रम् 1404
टिप्पनी 1404
Appendix - +Dyugangā द्युगङ्गा 1408
Goals ध्येयानि 1408
संस्कृतानुवादः 1408
Contribution दानम् 1409

१①

०१①

०१①

01 अथातः सामयाचारिकान्धर्मान्व्याख्यास्यामः④

अथातः सामयाचारिकान् धर्मान् व्याख्यास्यामः १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. Now, therefore, we will declare the acts productive of merit which form part of the customs of daily life, as they have been settled by the agreement (of those who know the law). 1

▼ हरदत्त-टीका

2प्रणिपत्य महादेव हरदत्तेन धीमता।
धर्माख्यप्रश्नयोरेषा क्रियते वृत्तिरुज्ज्वला ॥१॥

सूत्रम्⑥

अथातस्सामयाचारिकान् धर्मान् व्याख्यास्यामः ॥ १॥

टिप्पनी⑥

अथशब्द आनन्तर्ये । अतश्शब्दो हेतौ । उक्तानि श्रौतानि गार्ह्याणि च कर्माणि । तानि च वक्ष्यमाणान्धर्मानपेक्षन्ते । कथम् ? आ चान्तेन कर्म कर्तव्यं, शुचिना कर्तव्यमिति

वचनादाचमनशौचादीनपेक्षन्ते ।

3 'सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु'। इति वचनात् सन्ध्यावन्दनम् । एवं 'अशुचिकरनिर्वेषः, 4 'द्विजातिकर्मभ्यो हानिः पतनम्' इति वचनात् ब्रह्महत्यादिप्रायश्चित्तानि च । एवमन्येष्वपि यथासम्भवमपेक्षा द्रष्टव्या । अतस्तदनन्तरं सामयाचारिकान् धर्मान् व्याख्यास्यामः । पौरुषेयी व्यवस्था समयः । स च त्रिविधः-विधिर्नियमः प्रतिषेधश्चेति ।

तत्र प्रवृत्तिप्रयोजनो विधिः-5 सन्ध्योश्च बहिर्ग्रामादासनं वाग्यतश्चेत्यादिः । निवृत्तिप्रयोजनावितरौ।

6 'प्राङ् मुखोऽन्नानि भुञ्जीते'ति नियमविधिः । क्षुदुपघातार्था भोजने प्रवृत्तिः । शक्यं च 7यत्किञ्चिद्दिङ्मुखेनापि भुञ्जानेन क्षुदुपहन्तुम् । तत्र नियमः क्रियते-प्राङ्मुख एव भुञ्जीत, न दक्षिणादिमुख इति । 8परिसङ्ख्या तु नियमस्यैव कियानपि भेदः । एवं द्रव्यार्जने रागात्प्रवृत्तं प्रति नियमः क्रियते- याजनाध्यापनप्रतिग्रहैरेव ब्राह्मणो द्रव्यमार्जयेत्, न कृषिवाणिज्यादिने'ति । 9 ब्राह्मणस्य गोरिति पदोपस्पर्शनं वर्जये'दित्यादिः प्रतिषेधः । समयमूला आचारास्समयाचाराः तेषु भवाः सामयाचारिकाः । एवम्भूतान् धर्मानिति । 10कर्मजन्योऽभ्युदयनिःश्रेयसहेतुरपूर्वाख्य आत्मगुणो धर्मः । तद्धेतुभूत कर्मव्याख्यानमेव तद्व्याख्यानम् । तत्र विधिषु तावद्विषयानुष्ठानाद्धर्म इति नास्ति विप्रतिपत्तिः। नियमेष्वषि 11नियमानुष्ठानाद्धर्मः, प्रतिषेधेष्वपि12नञर्थानुष्ठानाद्धर्म इति केचित् । अतएव धर्मानित्यविशेषेणाह ।

अन्ये तु-विधिष्वेव धर्मः, इतरयोस्तु विपरीतानुष्ठानादधर्मः केवलम्, न तु विषयानुष्ठानात् कश्चिद्धर्मः । न ह्यप्रतिगृह्णन्नपिबन्वा सुरां धार्मिक इति लोके प्रसिद्धः । सूत्रे तु धर्मग्रहणमधर्मस्याप्युपलक्षणमिति स्थितिः-इति ॥ १॥
कि भोः समयोऽपि प्रमाणम्, ? 13यदि स्यादिदमपि प्रमाणं भवितुमर्हति-'चैत्यं वन्देत स्वर्गकामः । प्रगे भुञ्जीत । केशानुल्लुँञ्छेत् ।
02 धर्मज्ञसमयः प्रमाणम्

धर्मज्ञ-समयः **प्रमाणम्** २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. The authority (for these duties) is the agreement of those who know the law, 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

धर्मज्ञसमयः प्रमाणम् ॥ २ ॥

प्रस्तावः⑥

तिष्ठन् भुञ्जीत । न स्नायादिति । तमाह—

टिप्पनी⑥

न हि ब्रूमः समयमात्रं प्रमाणामिति । कि तर्हि ? धर्मज्ञाः ये मन्वादयस्तेषां समयः प्रमाणं धर्माधर्मयोः ॥२॥
कथं पुनरिद15मवगतं मन्वादयो धर्मज्ञा न बुद्धादय इति ? यद्युच्यते-बुद्धादीनामतीन्द्रियेऽर्थे ज्ञानं न सम्भवतीति, तन्मन्वादिष्वपि समानम् । अथ तेषां धर्मज्ञानातिशयादतीन्द्रियेऽपि ज्ञानं सम्भवतीति, तत् बुद्धादिष्वपि समानम् ।
यथाऽऽहुः —

> 16 सुगतो यदि धर्मज्ञः कपिलो नेति का प्रमा।
> तावुभौ यदि धर्मज्ञौ मतभेदः कथं तयोः ॥ इति ।

03 वेदाश्च

वेदाश् च ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. And (the authorities for the latter are) the Vedas alone.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वेदाश्च ॥ ३॥

प्रस्तावः⑥

वक्तव्यो वा विशेष , तमाह—

टिप्पनी⑥

चोऽवधारणे । वेदा एव मूलप्रमाणं धर्माधर्मयोः । 17न च नित्यनिर्दोषेषु वेदेषूक्तोपालम्भसम्भवः । 18स्वतःप्रमाणस्य हि शब्दस्य न वक्तृदोषनिबन्धनमप्रामाण्यम् । तदिहास्मदादीनां धर्मज्ञसमयः प्रमाणम्, धर्मज्ञानां तु वेदाः प्रमाणम् ।

मनुरप्याह—

> 19वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम् ।
> आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च ॥

गौतमोऽपि-20

> 'वेदो धर्ममूलं, तद्विदां च स्मृतिशीले ।' इति ।

यद्यप्यप्रत्यक्षो वेदो मूलभूतोऽस्मदादिभिर्नोपलभ्यते । तथापि 21मन्वादय उपलब्धवन्तः इत्यनुमीयते ।

वक्ष्यति-
22तेषामुत्सन्नाः पाठाः प्रयोगादनुमीयन्ते' इति ॥३॥

04 चत्वारो वर्णो ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राः

चत्वारो **वर्णा** ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्राः ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. (There are) four castes--Brāhmaṇas, Kṣatriyas, Vaiśyas, and Śūdras.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

चत्वारो वर्णा ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राः॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

ब्राह्मणाद्याश्चत्वारो वर्णसंज्ञिकाः । ते च सामयाचारिकैर् धर्मा अधिक्रियन्ते । 23चतुर्णामेवोपदेशेऽपि पुनश्चतुर्ग्रहणं 24यथाकथञ्चित् चतुर्धन्तर्भूतानामपि ग्रहणार्थम् । ततश् च25 'ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्य' इति बौधायनादिभिरुक्तानामनुलोमादीनामप्यत्र ग्रहणं मतम् । तथा च गौतमः प्रतिलोमानामेव धर्मेऽनधिकारमाह-26 "प्रतिलोमास्तु धर्महीना" इति ॥४॥

05 तेषाम् पूर्वस्पूर्वो जन्मतः

तेषां पूर्वस्-पूर्वो जन्मतः श्रेयान् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. Amongst these, each preceding (caste) is superior by birth to the one following.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषां पूर्वः पूर्वो जन्मतश्श्रेयान् ॥५॥

टिप्पनी⑥

जन्मत इति वचनात् सद्वृत्तादपि शूद्राद्वैश्यब्रुवोऽपि श्रेयान् । एव वैश्यात् क्षत्रियः, क्षत्रियात् ब्राह्मणः ॥५॥

06 अशूद्राणामदुष्टकर्मणामुपायनं वेदाध्ययनमग्न्याधेयम् फलवन्ति

अशूद्राणाम् अदुष्टकर्मणाम् उपायनं वेदाध्ययनम् अग्न्याधेयं **फलवन्ति च कर्माणि** ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. (For all these), excepting Śūdras and those who have committed bad actions, (are ordained) the initiation, the study of the Veda, and the kindling of 27 the sacred fire; and (their) works are productive of rewards (in this world and the next).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अशूद्राणामदुष्टकर्मणामुपायनं वेदाध्ययनमग्न्याधेयं फलवन्ति च कर्माणि ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

शूद्रवर्जितानां त्रयाणां वर्णानाम् अदुष्टकर्मणाम् उपायनादयो धर्माः । **उपायनम्** उपनयनम् ।

नात्र त्रैवर्णिकानाम् उपनयादि विधीयते, प्राप्तत्वात् ।
नापि शूद्राणां प्रतिषिध्यते, प्राप्त्यभावात् ।
तथा हि-उपनयन तावद् गृह्ये 28
'गर्भाष्टमेषु ब्राह्मणमुपनयीते'त्यादिना त्रैवर्णिकानामेव विहितम् । इहापि तथैव विधास्यते ।

अध्ययनमपि 29'उपेतस्याचार्यकुले ब्रह्मचारिवास' इत्यारभ्य विधानात् अनुपनीतस्य शूद्रस्याप्राप्तमेव ।

किं च 30 'श्मशानवच्छूद्रपतिता'विति 31अध्ययननिषेधो वक्ष्यते ।
32यस्य समीपे नाध्येयं स कथं स्वयमध्येतुमर्हति ।

अग्न्याधेयम् अपि33'वसन्ता ब्राह्मण' इत्यादि त्रैवर्णिकानामेव विहितम्।

फलवन्ति चाग्निहोत्रादीनि **कर्माणि** 34
'स त्रयाणां वर्णाना'मित्युक्तत्वात् त्रैवर्णिकानामेव नियतानि ।
विद्याग्न्यभावाच् च शूद्राणाम् अप्रसक्तानि ।
उक्तो विद्याग्न्यभावः।

तस्माद् **दुष्ट-कर्म**-प्रतिषेधार्थं सूत्रम् । यथा शास्त्रान्तरे-35

'द्विजातिकर्मभ्यो हानिः पतनम्'

इति ।

अप्रतिषेधे तु दुष्ट-कर्मणाम् अप्य् अधिकारो भवत्य् एव ।*(5)*
'फलवन्ति च कर्माणी'त्य् अभिधानात्,
क्रियते इति कर्मेति निर्वचनात् । 36

'प्रागुपनयनात् कामचारवादभक्ष' इति गौतमस्मरणं
ब्रह्महत्यादि-महापातक-व्यतिरिक्त-विषयम् इत्य्
अनुपेतस्यापि दुष्टकर्मत्व-सम्भवात्
अदुष्टकर्मणा37मित्युक्तम् । शूद्रप्रतिषेधस्तु प्राप्तानुवादः ॥ ६ ॥

▼ सत्यशर्मा

Between 1200-1400 CE, a different version of Āpastambadharmasūtra 1.1.6 'अशूद्राणामदुष्टकर्मणामुपायनं..' emerged with the omission of 'अ' of 'अशूद्राणाम्'.

Screenshots from Smṛtikaumudī and Harihara's comm. on Pāraskaragṛhyasūtra. Both take 'शूद्राणाम्' to denote Rathakāra.

07 शुश्रूषा शूद्रस्येतरेषां वर्णानाम्

शुश्रूषा शूद्रस्येतरेषां वर्णानाम् *(फलवत् कर्म)*७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. To serve the other (three) castes (is ordained) for the Śūdra. 38

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शुश्रूषा शूद्रस्येतरेषां वर्णानाम् ॥ ७ ॥

प्रस्तावः⑥

यथा ब्राह्मणादीनामुपनयनादयो धर्माः प्रधानभूताः तादृशं शूद्रस्य कर्माऽऽह—

टिप्पनी⑥

इतरेषां ब्राह्मणादीनां वर्णानां या शुश्रूषा सा शूद्रस्य परमो धर्मः ॥ ७ ॥

08 पूर्वस्मिन्पूर्वस्मिन्वर्णे निःश्रेयसम्भूयः

(शूद्र-कृत-सेवा) पूर्वस्मिन् पूर्वस्मिन् वर्णे निःश्रेयसम् भूयः ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. The higher the caste (which he serves) the greater is the merit.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पूर्वस्मिन्पूर्वस्मिन्वर्णे निश्श्रेयसं भूयः ॥ ८ ॥

प्रस्तावः⑥

39तत्र विशेषमाह—

टिप्पनी⑥

सर्वप्रकारं कृताया अपि वैश्यशुश्रूषायाः' मात्रयापि कृता क्षत्रियशुश्रूषा बहुतरं फलं साधयति । एवं क्षत्रियशुश्रूषाया ब्राह्मणशुश्रूषा ॥८॥

09 उपनयनं विद्यार्थस्य श्रुतितः

उपनयनं विद्यार्थस्य श्रुतितः संस्कारः ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. The initiation is the consecration in accordance with the texts of the Veda, of a male who is desirous of (and can make use of) sacred knowledge. 40

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उपनयनं विद्यार्थस्य श्रुतितस्संस्कारः ॥ ९ ॥

प्रस्तावः⑥

उपायनं वेदाध्ययनमित्यादि यदुक्तं अस्मिन् क्रमे उपनयने विशेषमाह—

टिप्पनी⑥

विद्या अर्थः प्रयोजनं यस्य स विद्यार्थः । तस्यायं श्रुतिविहितस्संस्कारः उपनयनं नाम । 'विद्यार्थस्ये'ति वचनात् मूकादेर्न भवति । तथा च शङ्खलिखितौ 41 'नोन्मत्तमूकान् संस्कुर्यात्' इति । 42लिङ्गस्य विवक्षितत्वात् स्त्रिया अपि न भवति यद्यपि तस्याः 43 'अग्ने गृहपते' इत्यादिकया विद्यया अर्थः । 'श्रुतित' इति वचनं तदतिक्रमे श्रौतातिक्रमप्रायश्चित्तप्राप्त्यर्थम् ॥ ९ ॥

10 "सर्वेभ्यो वेदेभ्यः सावित्र्य्

"सर्वेभ्यो वेदेभ्यः **सावित्र्य्** अनूच्यत" इति हि ब्राह्मणम् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. A Brāhmaṇa declares that the Gāyatrī is learnt for the sake of all the (three) Vedas. 44

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वेभ्यो वै वेदेभ्यस्साविव्त्र्यनूच्यत इति हि ब्राह्मणम् ॥१०॥

प्रस्तावः⑥

अनेकवेदाध्यायिनां वेदव्रतवदुपनयनमपि प्रतिवेदं भेदेन कर्तव्यमिति प्राप्ते उच्यते—

टिप्पनी⑥

> 45'त्रिभ्य एव तु वेदेभ्यः पादं पादमदूदुहत् ।
> तदित्यृचोऽस्यास्साविव्त्र्याः परमेष्ठी प्रजापतिः॥' इति 46मनुः ।

ततश्चोपनयने यत्साविव्त्र्या अनुवचनं तन्मुखेन सर्वे वेदा अनूक्ता भवन्तीत्यगृह्यमाणविशेषत्वादेकमेवोपनयन सर्वार्थमिति । अस्मिन्नर्थे ब्राह्मणमपि भवति 47ब्राह्मणमेव वा पठितम् । आथर्वणस्य वेदस्य पृथगुपनयनं कर्तव्यम् । तथा च तत्रैव श्रुतम्—48नान्यत्र संस्कृतो भृग्वङ्गिरसोऽधीयते'ति ॥ १०॥

11 तमसो वा एष

तमसो वा एष *(आगत्य)* तमः प्रविशति - यम् अविद्वान् उपनयते, यश् चाविद्वान् - इति हि ब्राह्मणम् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. (Coming) out of darkness, he indeed enters darkness, whom a man unlearned in the Vedas, initiates, and (so does he) who, without being learned in the Vedas, (performs the rite of initiation.) That has been declared in a Brāhmaṇa.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तमसो वा एष तमः प्रविशति यमविद्धानुपनयते यश्चाऽविद्वानिति हि ब्राह्मणम् ॥ ११ ॥

प्रस्तावः⑥

विद्वानेवोपनेताऽभिगम्यत इति विधातुमविदुषो निन्दामाह—

टिप्पनी⑥

यथा कश्चित् तमसस्सकाशात्तम एव प्रविष्टो न किञ्चिज्जानाति एवमेवैषः य माणवकमविद्वानुपनयते, तथा यश्चाविद्वान् । उपनीयते इत्यपेक्ष्यते । यश्च स्वयमविद्वान् सन्नुपनीयते सोऽपि तमस एव तम प्रविशति । अस्मिन्नर्थे ब्राह्मणमपि भवतीति ।॥ ११ ॥

12 तस्मिन्नभिजनविद्यासमुदेतं समाहितं संस्कर्तारमीप्सेत्

तस्मिन्न् अभिजन-विद्यासमुदेतं समाहितं संस्कर्तारम् ईप्सेत् १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. As performer of this rite of initiation he shall seek to obtain a man in whose family sacred learning is hereditary, who himself possesses it, and who is devout (in following the law).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्मिन्नभिजनविद्यासमुदेतं समाहितं संस्कारमीप्सेत् ॥ १२ ॥

प्रस्तावः⑥

कीदृशस्तर्ह्युपनेताऽभिगम्यः ? तमाह—

टिप्पनी⑥

अविच्छिन्न49वेदवेदिसम्बन्धे कुले जन्म अभिजन । षड्भिरङ्गैस्सहैव यथावदर्थज्ञानपर्यन्तमधीतो वेदो विद्या । सर्वासम्भवे वेद एव वा । तस्मिन्नुपनयने कर्तव्ये ताभ्यां अभिजनविद्याभ्यां समुदेतं सम्पन्नम्, समाहितविहितप्रतिषिद्धेष्ववहितमनसम्, संस्कर्तारमाचार्यमीप्सेत् । इच्छया करणं लक्ष्यते । आप्नुयादभिगच्छेदिति ॥ १२ ॥

13 तस्मिंश्चैव विद्याकर्मान्तमविप्रतिपन्ने धर्मेभ्यः

तस्मिंश् चैव विद्या-कर्म +आन्तम् अविप्रतिपन्ने धर्मेभ्यः १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. And under him the sacred science must be 50 studied until the end, provided (the teacher) does not fall off from the

ordinances of the law.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्मिंश्चैव विद्याकर्माऽऽन्तमविप्रतिपन्ने धर्मेभ्यः ॥१३॥

टिप्पनी⑥

तस्मिन्नेव चोपनेतरि विद्याकर्म विद्याग्रहणं कर्तव्यम् । आन्तमासमाप्तेः, अविप्रतिपन्ने धर्मेम्यः यद्यसावाचार्यो धर्मभ्यो न प्रच्युतो भवति । प्रच्युते तु तस्मिन्नसम्पर्कार्हे अन्यतोऽपि विद्याकर्म भवत्येव ।

- *येषां चाचार्यकरणविधिप्रयुक्तमध्ययनं तेषामेतन्नोपपद्यते । कथम् ? उपनीयाध्यापनेनाचार्यकं भावयेदिति । सकृदुपनीतस्य माणवकस्य न पुनरुपनयनसंस्कारः सम्भवति । तं कथमन्योऽध्यापयेत् ? एतेन मध्ये आचार्यमरणे माणवकस्य तदध्ययनं नाचार्यान्तरात् सम्भवतीति द्रष्टव्यम् **॥ १३॥

*. एतचिह्नान्तर्गतो भागः प्रक्षिप्त इति Mysore पुस्तके । परन्तु क ग पुस्तकयोरुपलभ्यते पाठः । एतच्च गुरुमतानुसारेण । गुरवो हि "अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनयीत, तमध्यापयीत' इति विधिनाऽऽचार्यत्वसिध्यर्थमध्यापन विदधताऽध्ययनमपि प्रयुज्यते, अतो ऽध्यापनान्यथानुपपत्यैव सिध्यदध्ययनं न स्वविधिना "स्वाध्यायोऽध्येतव्य" इत्यनेन विधीयते इति ब्रुवते । अतस्तन्मतखण्डनमिदम् ।

14 यस्माद्धर्मानाचिनोति स आचार्यः

यस्माद् धर्मान् आचिनोति स **आचार्यः** १४*(5)*

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. He from whom (the pupil) gathers (ācinoti) (the knowledge of) his religious duties (dharmān) (is called) the Ācārya (teacher). 51

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यस्माद्धर्मानाचिनोति स आचार्यः ॥ १४॥.

प्रस्तावः⑥

52आचार्यशब्दं निराह—

टिप्पनी⑥

यस्मात्पुरुषादयं माणवकः धर्मानाचिनोति आत्मनः प्रचिनोति शिक्षते स आचार्यः । 53 'अप्यक्षरसाम्यान्निर्ब्रूयादि'ति चकारमात्रेणेदं निर्वचनम् । अनेन प्रकारेण माणवकमाचार्यः शौचाचारांश्च शिक्षयेदित्युक्तं भवति ॥१४॥

15 तस्मै न द्रुह्येत्कदाचन

तस्मै न द्रुह्येत् कदाचन १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. Him he should never offend. 54

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्मै न द्रुह्येत्कदाचन ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

तस्मै एवंभूताचार्याय कदाचन कदाचिदपि न द्रुह्येत् तद्विषयमपकारं न कुर्यात् ॥ १५॥

16 स हि विद्यातस्तञ्

स हि विद्यातस् तं जनयति १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. For he causes him (the pupil) to be born (a second time) by (imparting to him) sacred learning. 55

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स हि विद्यातस्तं जनयति ॥ १६ ॥

प्रस्तावः⑥

कस्मादित्यत आह—

टिप्पनी⑥

स ह्याचार्यः माणवकं विद्यातो जनयति, यथा पिता मातृतः।

> 56अत्रास्य माता सावित्री पिता त्वाचार्य उच्यते ॥ इति शास्त्रान्तरम् ॥ १६ ॥

17 तच्छ्रेष्ठञ् जन्म

तच् +छ्रेष्ठं जन्म १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. This (second) birth is the best. 57

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तच्छ्रेष्ठं जन्म ॥१७॥

टिप्पनी⑥

तद्विद्यातो जन्म श्रेष्ठं प्रशस्ततमम्, अभ्युदयनिःश्रेयसहेतुत्वात् ॥१७॥

18 शरीरमेव मातापितरौ जनयतः

शरीरम् एव माता-पितरौ जनयतः १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. The father and the mother produce the body only. 58

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शरीरमेव मातापितरौ जनयतः ॥ १८ ॥

प्रस्तावः⑥

मातापितृभ्यामाचार्यः श्रेष्ठ इत्याह—

टिप्पनी⑥

मातापितरौ शरीरमात्रमेव काष्ठकुड्यादिसमं जनयतः । आचार्यस्तु सर्वपुरुषार्थक्षमरूपं जनयति । 59"आचार्यः श्रेष्ठो गुरूणा"मिति गौतमः ॥ १८॥

19 वसन्ते ब्राह्मणम् उपनयीत,

वसन्ते ब्राह्मणम् उपनयीत, **ग्रीष्मे** राजन्यं शरदि वैश्यं,
गर्भाष्टमेषु ब्राह्मणं, **गर्भैकादशेषु** राजन्यं, गर्भ-द्वादशेषु वैश्यम् १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. Let him initiate a Brāhmaṇa in spring, a Kṣatriya in summer, a Vaiśya in autumn, a Brāhmaṇa in the eighth year after conception, a Kṣatriya in the eleventh year after conception, (and) a Vaiśya in the twelfth after conception. 60

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वसन्ते ब्राह्मणमुपनयीत, ग्रीष्मे राजन्यं, शरदि वैश्यं, गर्भाष्टमेषु ब्राह्मणं, गर्भैकादशेषु राजन्यं, गर्भद्वादशेषु वैश्यम् ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

61वसन्ते ब्राह्मणमित्यादि गृह्ये गतम् ॥ १९ ॥

20 अथ काम्यानि

अथ *(उपनयन-विषये)* काम्यानि २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. Now (follows the enumeration of the years to be chosen) for the fulfilment of some (particular) wish,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ काम्यानि ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

कामनिमित्तान्युपनयनानि वक्ष्यन्ते ॥ २० ॥

21 सप्तमे ब्रह्मवर्चसकामम्

सप्तमे ब्रह्म-वर्चस-कामम् २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. (Let him initiate) a person desirous of excellence in sacred learning in his seventh year, 62

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

63सप्तमे ब्रह्मवर्चसकामम् ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

'ब्रह्मवर्चसकाम'मित्यादीनि षट् सूत्राणि स्पष्टार्थानि । सर्वत्रोपनयीतेत्यपेक्ष्यते ॥ २१-२६ ॥

22 अष्टम आयुष्कामम्

अष्टम आयुष्-कामम् २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. A person desirous of long life in his eighth year, 64

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अष्टम आयुष्कामम् ॥ २२ ॥

23 नवमे तेजस्कामम्

नवमे तेजस्-कामम् २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. A person desirous of manly vigour in his ninth year,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नवमे तेजस्कामम् ॥ २३ ॥

24 दशमेऽन्नाद्यकामम्

दशमे ऽन्नाद्य-कामम् २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. A person desirous of food in his tenth year,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दशमेऽन्नाद्यकामम् ॥ २४॥

25 एकादश इन्द्रियकामम्

एकादश इन्द्रिय-कामम् २५

▼

⑤

>

▼ Bühler

25. A person desirous of strength in his eleventh year,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एकादश इन्द्रियकामम् ॥ २५ ॥

26 द्वादशे पशुकामम्

द्वादशे पशु-कामम् २६

▼

⑤

>
▼ Bühler

26. A person desirous of cattle in his twelfth year.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

द्वादशे पशुकामम् ॥ २६ ॥

27 आ षोडशाद् ब्राह्मणस्यानात्यय,

आ षोडशाद् ब्राह्मणस्यानात्यय, आ द्वाविंशात् क्षत्रियस्य+ आ चतुर्विंशाद् वैश्यस्य - यथा व्रतेषु समर्थः स्याद् यानि वक्ष्यामः २७

▼

⑤

>
▼ Bühler

27. There is no dereliction (of duty, if the initiation takes place), in the case of a Brāhmaṇa before the completion of the sixteenth year, in the case of a Kṣatriya before the completion of the twenty-second year, in the case of a Vaiśya before the completion of the twenty-fourth year. (Let him be initiated at such an age) that he may be able to perform the duties, which we shall declare below. 65

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आषोडशाद्ब्राह्मणस्यानात्यय आद्वाविंशात्क्षत्रियस्याऽऽचतुर्विंशाद्वैश्यस्य यथा व्रतेषु समर्थः स्याद्यानि वक्ष्यामः॥ २७ ॥

प्रस्तावः⑥

66 'आचार्याधीनस्स्या'दित्यादीनि यानि ब्रह्मचारिणो व्रतानि वक्ष्यन्ते तेष्वसमर्थानां कुमाराणां वर्णक्रमेणानुकल्पमाह—

टिप्पनी⑥

आकारोऽभिविधौ । अत्ययोऽतिक्रमः । स एवाऽऽत्ययः तदभावोऽनात्ययः । यादृच्छिको दीर्घः, आङो वा प्रश्लेषः । प्रकरणादुपनयनकालस्येति गम्यते । यथा व्रतेषु समर्थः स्यात् तथैतावान् कालः प्रतीक्ष्यः । पूर्वमेव तु सामर्थ्ये सत्यष्टमवर्षाद्यतिक्रमे वक्ष्यमाण प्रायश्चित्तमेव भवति । एवं षोडशादिभ्य ऊर्ध्वं कियन्तञ्चित्कालमसमर्थानां पश्चात्सामर्थ्ये सति प्रायश्चित्तं भवत्येव ॥ २७ ॥

28 अतिक्रान्ते सावित्र्याः काल

अतिक्रान्ते सावित्र्याः काल*(य्)*, ऋतुं *(यावत्)* त्रैविद्यकं ब्रह्मचर्यं *(अग्नि-परिचर्याम् अध्ययनं गुरु-शुश्रूषाम् इति परिहाप्य)* चरेत् २८

▼

⑤

>
▼ Bühler

28. If the proper time for the initiation has passed, he shall observe for the space of two months 67 the duties of a

student, as observed by those who are studying the three Vedas.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अतिक्रान्ते सावित्र्याः ऋतुं त्रैविद्यकं ब्रह्मचर्यं चरेत् ॥ २८ ॥

प्रस्तावः⑥

तदानीं प्रायश्चित्तमाह—

टिप्पनी⑥

यस्य यः **सावित्र्याः** काल उक्तः तद्-अतिक्रमे
त्रैविद्यकं - त्र्य्-अवयवा विद्या ताम् अधीयते ये ते त्रैविद्याः, तेषामिदं **त्रैविद्यकम्** । 68
'गोत्रचरणाद् वुञ् । 'चरणाद्धर्माम्नाययोरि'ति वुञ् ।
एवंभूतं **ब्रह्मचर्यं**, अग्नि-परिचर्याम् अध्ययनं गुरु-शुश्रूषाम् इति परिहाप्य, सकल ब्रह्मचारि-धर्मं चरेत् ।
कियन्तं कालम् ? **ऋतुं**, 'कालाध्वनो'रिति द्वितीया। ऋतुम् इति वचनाद् ऋत्वारम्भे प्रायश्चित्तारम्भम् इच्छन्ति ॥ २८ ॥

29 अथोपनयनम्

अथोपनयनम् २९

▼

⑤

>
▼ Bühler

29. After that he may be initiated.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथोपनयनम् ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

एवं चरितव्रत उपनेतव्यः ॥ २९ ॥

30 ततः संवत्सरम् उदकोपस्पर्शनम्

ततः संवत्सरम् उदकोपस्पर्शनम् ३०

▼

⑤

>
▼ Bühler

30. After that he shall bathe (daily) for one year. 69

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ततस्संवत्सरमुदकोपस्पर्शनम् ॥ ३०॥

टिप्पनी⑥

ततः उपनयनादारभ्य सम्वत्सरमुदकोपस्पर्शनं स्नानं कर्तव्यम् । शक्तस्य त्रिषवणं स्नानम्70 अशक्तस्य यथाशक्ति ॥ ३० ॥

31 अथाध्याप्यः

अथाध्याप्यः ३१

▼

⑤

>
▼ Bühler

31. After that he may be instructed.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाऽध्याप्यः॥ ३१ ॥

टिप्पनी⑥

एवं चरितव्रतः पश्चादध्याप्यः ॥३१॥

32 अथ यस्य पिता

अथ यस्य पिता पितामह इति अनुपेतौ स्यातां - ते ब्रह्म-ह-संस्तुताः ३२

▼

⑤

>

▼ Bühler

32. He, whose father and grandfather have not been initiated, (and his two ancestors) are called 'slayers of the Brahman.' 71

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ यस्य पिता पितामह इत्यनुपेतौ स्यातां ते ब्रह्महसंस्तुताः ॥ ३२ ॥

टिप्पनी⑥

यस्य माणवकस्य पिता पितामहश्चानुपेतौ स्यातां स्वयं च, ते तथाविधास्स माणवका ब्रह्महसस्तुताः ब्रह्महण इत्येव कीर्तिताः ब्रह्मवादिभिः। अतस्मिन् तच्छब्दयोगस्तद्धर्मप्राप्त्यर्थः । एवं च 72 'श्मशानवच्छूद्रपतिता'वित्यध्ययननिषेधप्रकरणे वक्ष्यते । ततश्च ब्रह्मा यथा ब्रह्महसमीपे नाध्येयमेवमेषामपीति ॥ ३२ ॥

33 तेषाम् अभ्यागमनम् भोजनं

तेषाम् अभ्यागमनं भोजनं विवाहम् इति च वर्जयेत् ३३

▼

⑤

>

▼ Bühler

33. Intercourse, eating, and intermarriage with them should be avoided. 73

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषामभ्यागमनं भोजनं विवाहमिति च वर्जयेत् ॥३३॥

टिप्पनी⑥

तेषामेतेषामभ्यागमनमाभिमुख्येन गमनम्, मातापितृपुत्रदारशरीररक्षणार्थमपि वर्जयेत् । यद्यपि भिक्षा सर्वतः प्रतिग्राह्येति वक्ष्यते भोजनमुद्यतमपि वर्जयेत् 74 'अपि दुष्कृतकारिण' इति सत्यपि वचने । विवाहं च वर्जयेत् यद्यपि 75 'स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपी'ति मानवस्मरणम् ॥ ३३ ॥

34 तेषाम् इच्छताम् प्रायश्चित्तम्

तेषाम् इच्छतां प्रायश्चित्तम् ३४

▼

⑤

>

▼ Bühler

34. If they wish it (they may perform the following) expiation;

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषामिच्छतां प्रायश्चित्तम् ॥ ३४ ॥

टिप्पनी⑥

इच्छतामिति वचनान्न बलात्कारेण प्रायश्चित्तं कारयितव्यम् ॥ ३४ ॥

35 यथा प्रथमे ऽतिक्रम

यथा प्रथमे ऽतिक्रम ऋतुर् एवं संवत्सरः ३५

▼

⑤

>

▼ Bühler

35. In the same manner as for the first neglect (of the initiation, a penance of) two months (was) prescribed, so (they shall do penance for) one year. 76

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथा प्रथमेऽतिक्रम ऋतुरेवं सम्वत्सरः ॥ ३५ ॥

टिप्पनी⑥

यथा प्रथमेऽतिक्रमे ब्रह्मचर्यस्य ऋतुः कालः एषमन्यस्मिन्नतिक्रमे संवत्सरः कालः ॥ ३५॥

36 अथोपनयनं, तत उदकोपस्पर्शनम्

अथोपनयनं, तत उदकोपस्पर्शनम् ३६

▼

⑤

>
▼ Bühler

36. Afterwards they may be initiated, and then they must bathe (daily),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथोपनयनम् ॥३६॥
तत उदकोपस्पर्शनम् ॥ ३७ ॥

टिप्पनी⑥

गते ॥ ३६॥ ३७॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रे प्रथमप्रश्ने प्रथमा 77कण्डिका।

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.

   ↩

2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
5. आप० ध० १.३०.८.↩
6. आप० ध० १. ३१. १.↩
7. यत्किञ्चनदिङ्मुखेन इति क० पु० ।↩
8. प्रतिषेध परिसंख्येत्यनर्थान्तरम् । परिसङ्ख्या वर्जनबुद्धिः । तद्विषयको विधिः परिसंख्याविधिः । स परिसंख्यापदेनाऽप्यभिधीयते इति मीमांसकाना मतम् । अत एव

   > विधिरत्यन्तमप्राप्ते नियम पाक्षिके सति ।
   > तत्र चान्यत्र च प्राप्ते परिसंख्येति गीयते ॥

   इत्येव वार्तिककारैरुक्तम् । ग्रन्थकारस्त्वयं परिसंख्या नियमविधावेवान्तर्भावयति ॥↩
9. आप० ध० १ ३१. ६.↩
10. इदं च तर्किकादिमतमनुसृत्य प्रभाकरमतञ्च । भाट्टमते तत्तत्कर्मणामेव यागदानहोमादिरूपाणां चोदनालक्षणानां धर्मत्वाङ्गीकारात् । उक्तं हि भट्टपादैः-

    > श्रेयो हि पुरुषप्रीतिस्सा द्रव्यगुणकर्मभिः ।
    > चोदनालक्षणैस्साध्या तस्मात्तेष्वेव धर्मता ॥ इति । श्लो. वा. १२. १९१.

    ↩

11. पक्षेऽप्राप्तांशस्य पूरणकरणादित्यर्थः ।↩
12. तत्तन्निषेध्यक्रियाप्रागभावपरिपालनादिति यावत् ।↩
13. यदि प्रमाणमिदमपि प्रमाणम् इति क० पु० ॥↩

14. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

15. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

16. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

17. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

18. आप० ध० १.३०.८.↩

19. मनु० स्मृ० २.६↩

20. गौ० ध० १. १, २↩

21. 'मन्वादिभिरुपलभ्यते इत्यनुमीयते' इति ख. पु.↩

22. आप० ध० १ १२.१०.↩

23. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

24. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

25. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

26. आप० ध० १.३०.८.↩

27. Manu II, 35.↩

28. मनु० स्मृ० २.६↩

29. गौ० ध० १. १, २↩

30. 'मन्वादिभिरुपलभ्यते इत्यनुमीयते' इति ख. पु.↩

31. आप० ध० १ १२.१०.↩

32. यस्य यस्य, स सः इति द्विरुक्ति. क० पु० ।↩

33. तै० ब्रा० १. १ २.↩

34. आप० परि० १.२↩

35. गौ० ध० २१. ४.↩

36. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

37. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

38. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

39. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

40. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

41. आप० ध० १.३०.८.↩

42. मनु० रमृ० २.६↩

43. गौ० ध० १. १, २↩

44. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

45. 'मन्वादिभिरुपलभ्यते इत्यनुमीयते' इति ख. पु.↩

46. आप० ध० १ १२.१०.↩

47. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

48. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

49. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

50. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

51. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

52. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

53. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

54. Manu II, 144.↩

55. Manu II, 146-148.↩

56. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

57. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

58. Manu II, 147.↩

59. आप० ध० १.३०.८.↩

60. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

61. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

62. Manu II, 37.↩

63. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

64. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

65. The meaning of the Sūtra is, that the initiation shall be performed as soon as the child is able to begin the study of the Veda. If it is so far developed at eight years, the ceremony must then be performed; and if it be then neglected, or, if it be neglected at any time when the capacity for learning exists, expiation prescribed in the following Sūtras must be performed. The age of sixteen in the case of Brāhmaṇas is the latest term up to which the ceremony may be deferred, in case of incapacity for study only. After the lapse of the sixteenth year, the expiation becomes also necessary. Manu II, 38; Yājñ. I, 37.↩

66. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

67. The meaning is, he shall keep all the restrictions imposed upon a student, as chastity, &c, but that he shall not perform the fire-worship or service to a teacher, nor study. Manu II, 39; XI. 192, Yājñ. I, 38; Weber, Ind. Stud. X, 101.↩

68. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

69. 'If he is strong, he shall bathe three times a day--morning, midday, and evening.'--Haradatta.↩

70. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

71. Brahman, apparently, here means 'Veda,' and those who neglect its study may be called metaphorically 'slayers of the Veda.'↩

72. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

73. Manu II, 40; Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 8, 9; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

74. आप० ध० १.३०.८.↩

75. मनु० रमृ० २.६↩

76. Compare above, I, 1, 1, 28.↩

77. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

०२①

01 प्रतिपूरुषं सङ्ख्याय संवत्सरान्④

प्रति-पूरुषं संख्याय संवत्सरान् यावन्तो ऽनुपेताः स्युः १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. For as many years as there are uninitiated persons, reckoning (one year) for each ancestor (and the person to be initiated himself),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रतिपूरुषं संख्याय संवत्सरान् यावन्तोऽनुपेताः स्युः ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

यदि पितैवानुपेतः ततस्संवत्सरमेकम् । अथ पितामहोऽपि, ततो द्वौ । अथ स्वयमपि यथाकालमनुपेतः, ततः संवत्सरानिति ॥१॥

02 सप्तभिः पावमानीभिर् यदन्ति

सप्तभिः पावमानीभिर् "यदन्ति यच् च दूरक" इति एताभिर्, यजुष्-पवित्रेण, साम-पवित्रेणाङ्गिरसेणेति*(→ वामदेव्यम्)* २

पावमान्यः⑤

य″द् अ″न्ति य″च् च दूरके″
भयं″ विन्द″ति मा″म् इह″
प″वमान वि″ त″ज् जहि

प″वमानः सो″ अद्य″ नः
पवि″त्रेण वि″चर्षणिः
यः″ पोता″ स″ पुनातु नः

य″त् ते पवि″त्रम् अर्चि″षि
अ″ग्ने वि″ततम् अन्त″र् आ″
ब्र″ह्म ते″न पुनीहि नः

य″त् ते पवि″त्रम् अर्चिव″द्*(=अर्चिष्मत्)*
अ″ग्ने ते″न पुनीहि नः ।
ब्रह्म-सवैः″ पुनीहि नः ॥

उभा″भ्यां देव सवितः
पवि″त्रेण सवे″न च
मा″म् पुनीहि विश्व″तः

त्रिभि″ष् - ट्वं″ देव सवितर्
व″र्षिष्ठैः, सोम धा″मभिः ।
अ″ग्ने द″क्षैः - पुनीहि नः ॥

पुन″न्तु मां″ देव-जनाः″
पुन″न्तु व″सवो धिया″ ।
वि″श्वे देवाः पुनीत″ मा
जा″तवेदः पुनीहि″ मा ॥

यजुष्-पवित्रम्⑤

'आपो अस्मान्मातरः शुन्धन्त्वि'त्यनेन Taitt. Saṃh. I, 2, 1, 1 *(पूरणीयम्??)*

साम-पवित्रम्⑤

ऋक्⑥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २ १ २ २ ३ १ २ ३ २
कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥ 12-1:0682 ॥

क"या नश् चित्र" *(→इन्द्रः)* **आ" भुवद्**
ऊती" *(=रक्षणम्/ तर्पणम् [तेन])*, सदा"-वृधः *(=वर्धमानः)* स"खा ।
क"या श"चिष्ठया *(=प्रज्ञावता)* वृता" *(=वर्तनेन)* १

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु ॥ 12-2:0683 ॥

क"स् त्वा सत्यो" म"दानां
मं"हिष्ठो *(=पूज्यः)* **मत्सद्** *(=मादयेद्)* अ"न्धसः*(= भोज्यः (→[सोमः]))* ।
दृळ्हा" *(=ढम्)* चिद् **आरु"जे** *(=सम्भङ्क्तुम्)* व"सु २

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतये ॥ 12-3:0684 ॥॥12(टा)॥

अभी" षु" णः स"खीनाम्
अविता" जरितॄणा"म् *(=स्तोतॄणाम्)*।
शतं" **भवास्य्** ऊति"भिः *(=रक्षाभिः)*३

(अभिभवसि = सम्मुखो भवसि)

साम - वामदेव्यम्।⑥

- पारम्परिक-गान-मूलम् अत्र।

वामदेव्यम् ।

का([टा]%)याअ । न([धू])श्चा(३)अइत्रा(३)आ(["]) भुवात(v)।
ऊ([त]%३)ती([गो]--%३)। सादा(["]), वृधस्, सा(३--%)खा([त]३--%)।
औ([पे])हो("३)हाइ।
क([तः])या(--%३)अ +शचाइ,,ष([टि])यौ(")हो।
ओ हिं([ता])म्मा([प्रे])अ।
वा("३[फ])आर्तो("), ओ(")हाइ ।।

का(%)स्([टा]) त्वा(")अ। स([धू])त्यो(")ओ, मा(%)दा(%)ना(")अम् ।
मा([त]%)ं,हि([गो])ष्ठो(["])ओ, मात्साद्, अन्धा(३--%),, सा([त]--%३)।
औ([पे])हो("३)हाइ।
दृ([तः])ढा(--%३)अ चिदा। रु([टी])जौ(["])हो(["])।
ओ हिं([ता])म्मा([प्रे])अ।
वा("३)आ([फ])सो, ओ(")हाइ॥

आ([टा]%)भि(")इ । षु([धू]) णा(")अ, स्सा(%)खि(%)ना(")अम्।
आ([त]%)वि([घि])ता(["])अ, जराइत्री(["])इणा(--%३)म्([त]) ।
औ([पे])हो("३)हाइ।
श([तः])ता(--%३)अम् भव,,सि([टी]) यौ(["]) हो।
ओ हिं([ता])म्मा([प्रे])अ। [ऊ](v)ता([फ]"३)आयो, ओ(")हाइ ।।

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. (They should bathe daily reciting) the seven 1 Pāvamānīs, beginning with 'If near or far,' the Yajuṣpavitra, ('May the waters, the mothers purify us,' &c.) the Sāmapavitra, ('With what help assists,' &c.), and the Āṅgirasapavitra ('A swan, dwelling in purity'),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सप्तभिः पावमानीभि"र्यदन्ति यच्च दूरक" इत्येताभिर् यजुष्पवित्रेण सामपवित्रेणाऽऽङ्गिरसेनेति ॥ २॥

प्रस्तावः⑥

अथोदकोपस्पर्शने मन्त्राः —

टिप्पनी⑥

पवमानः सोमो देवता यासां ताः 2पावमान्यः ।

यजुष्यवित्रेण3 'आपो अस्मान्मातरः शुन्धन्त्वि'त्यनेन, सामपवित्रेण 'कया नश्चित्र आभुवदि'त्यादिगीतेन वामदेव्येन साम्ना, आङ्गिरसेन4 'हंसाशुचिषदि'त्यनेन एतैरञ्जलिना शिरस्यपोऽवसिञ्चेत् ॥ २ ॥

03 अपि वा व्याहृतीभिर्

अपि वा व्याहृतीभिर् एव ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Or also reciting the Vyāhṛtis (om, bhūḥ, bhuvaḥ, suvaḥ).

▼ हरदत्त-टीका

अपि वा व्याहृतीभिर् एव ३
04 अथाध्याप्यः

अथाध्याप्यः ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. After that (such a person) may be taught (the Veda).

▼ हरदत्त-टीका

अथाध्याप्यः ४

05 अथ यस्य प्रपितामहादि

अथ यस्य प्रपितामहादि नानुस्मर्यत उपनयनं - ते श्मशान-संस्तुताः ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. But those whose great-grandfather's (grandfather's and father's) initiation is not remembered, are called 'burial-grounds.'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ यस्य प्रपितामहादि नानुस्मर्यत उपनयनं ते श्मशानसंस्तुताः ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

प्रपितामहादि प्रपितामहादारभ्य प्रपितामहः पितामहः पिता स्वयं च यथाकालमिति । ते तथाविधा माणवकाः श्मशानसंस्तुताः । एतेन 5 'श्मशाने सर्वतः शम्याप्रासा' दित्यध्ययननिषेध एषामपि सन्निधौ भवति ॥ ५॥

06 तेषाम् अभ्यागमनम् भोजनं

तेषाम् अभ्यागमनं भोजनं विवाहम् इति च वर्जयेत्। तेषामिच्छतां प्रायश्चित्तं - द्वादशवर्षाणि त्रैविद्यकं ब्रह्मचर्यं चरेद् । अथोपनयनं तत उदकोपस्पर्शनं पावमान्यादिभिः ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. Intercourse, dining, and intermarriage with them should be avoided. For them, if they like, the (following) penance (is prescribed). (Such a man) shall keep for twelve years the rules prescribed for a student who is studying the three Vedas. Afterwards he may be initiated. Then he shall bathe, reciting the Pāvamānīs and the other (texts mentioned above, I, 1, 2, 2).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषामभ्यागमनं भोजनं विवाहमिति च वर्जयेत्तेषामिच्छतां प्रायश्चित्तं द्वादश वर्षाणि त्रैविद्यकं ब्रह्मचर्यं चरेदथोपनयनं6तत उदकोपस्पर्शनं पावमान्यादिभिः ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

गतम् । पावमान्यादिभिरित्यनेनैव प्रतिपूरुषं सङ्ख्याय सम्बत्सरानित्येतदपि द्रष्टव्यम् ॥ ६ ॥

07 अथ गृहमेधोपदेशनम्

अथ गृहमेधोपदेशनम् ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. Then he may be instructed in the duties of a householder.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ गृहमेधोपदेशनम् ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

गृहमेधो गृह्यशास्त्रं गृहस्थधर्मो वा ॥ ७॥

08 नाध्यापनम्

नाध्यापनम् ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. He shall not be taught (the whole Veda), but only the sacred formulas required for the domestic ceremonies.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाध्यापनम् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

नाध्यापनं कृत्स्नस्य वेदस्य । किं तु गृह्यमन्त्राणामेवेति ॥ ८॥

09 ततो यो निर्वर्तते

ततो यो निर्वर्तते तस्य संस्कारो यथा प्रथमेऽतिक्रमे ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. When he has finished this (study of the Gṛhya-mantras), he may be initiated (after having performed the penance prescribed) for the first neglect (I, 1, 1, 28).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ततो यो निवर्तते तस्य संस्कारो यथा प्रथमेऽतिक्रमे ॥९॥

टिप्पनी⑥

ततः एवं कृतप्रायश्चित्तात् गृहस्थीभूताद्यो निवर्तते उत्पद्यते तस्योपनयनसंस्कारः कर्तव्यः । कथम् ? यथा प्रथमेऽतिक्रमे ऋतुं त्रैविद्यकं ब्रह्मचर्यं चारयित्वेत्यर्थः ॥९॥

10 तत ऊर्ध्वम् प्रकृतिवत्

तत ऊर्ध्वं प्रकृतिवत् १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. Afterwards (everything is performed) as in the case of a regular initiation. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत ऊर्ध्वं प्रकृतिवत् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

ततः यो निवर्तते तस्य प्रकृतिवत् यथा प्राप्तमुपनयनं कर्तव्यमिति । यस्य तु प्रपितामहस्थ पितुरारभ्य नानुस्मर्यत उपनयनं तत्र प्रायश्चित्तं नोक्तम्, धर्मज्ञैरूहितव्यम् ॥ १०॥

11 उपेतस्याचार्यकुले ब्रह्मचारिवासः

उपेतस्याचार्यकुले ब्रह्मचारिवासः ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

सूत्रम्⑥

उपेतस्याऽऽचार्यकुले ब्रह्मचारिवासः ॥ ११ ॥

प्रस्तावः⑥

एवं ततः पूर्वेष्वपि निरूपितमुपनयनम् , अथाऽध्ययनविधिः—

टिप्पनी⑥

एवं यथाविध्युपेतस्य ब्रह्मचारिणस्सत आचार्यकुले वासो भवति । ब्रह्म वेदस्तदर्थं व्रतं चरतीति ब्रह्मचारी। अध्ययनाङ्गानि व्रतानि चरता आचार्यकुले वस्तव्यमित्युक्तं भवति ॥ ११ ॥

▼ हरदत्त-टीका

He who has been initiated shall dwell as a religious student in the house of his teacher, 8

12 अष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि

अष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. For forty-eight years (if he learns all the four Vedas), 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

10अष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि ॥ १२ ॥

प्रस्तावः⑥

तत्र कालः—

टिप्पनी⑥

चतुर्णां वेदानामध्ययनकाल एषः । प्रतिवेदं द्वादश ॥ १२ ॥

13 पादूनम्

पादूनम् १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. (Or) a quarter less (i.e. for thirty-six years),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पादूनम् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

स एव कालः पादून वा प्रत्येतव्यः । पादेनोनं पादूनम् । पररूपं 11कतन्तवत् । षट्त्रिंशद्वर्षाणि । प्रतिवेदं नव ॥ १३ ॥

14 अर्धेन

अर्धेन १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. (Or) less by half (i.e. for twenty-four years),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अर्धेन ॥ १४॥

टिप्पनी⑥

ऊनमिति12 समस्तमप्यपेक्षते। चतुर्विंशतिर्वर्षाणि। प्रतिवेदं षट् ॥१४॥

15 त्रिभिर्वा

त्रिभिर्वा १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. (Or) three quarters less (i.e. for twelve years),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

त्रिभिर्वा ॥ १५॥

टिप्पनी⑥

पादैरूनमिति प्रकरणाद्गम्यते । द्वादशवर्षाणि प्रतिवेदं त्रीणि ॥१५॥

16 द्वादशावरार्ध्यम्

द्वादशावरार्ध्यम् १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. Twelve years (should be) the shortest time (for his residence with his teacher). 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

द्वादशावरार्ध्यम् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

अवरार्ध्यशब्दोऽवरमात्रेत्येतस्मिन्नर्थे वर्तते । द्वादशवर्षाणि अवरमात्रा यथा भवति तथा ब्रह्मचारिणा गुरुकुले वस्तव्यम् । पूर्वेणैव सिद्धे यो ब्रह्मचार्यतिमेधावितया चतुरोऽपि वदानितोऽल्पीयसा कालेन गृह्णाति तेनाप्येतावन्तं कालं गुरुकुले वस्तव्यम् । 14 'विद्यया स्नाती'त्येतस्मिन्नपि पक्षे नातित्वरितेन स्नातव्यमित्येवमर्थमिदमारभ्यते । एतेन एकस्य वेदस्य त्रीणि वर्षाणि ब्रह्मचर्यमवश्यं15 भावीत्यर्थात्सिद्धम् ।
मनुरप्याह—

> 16षट्त्रिंशदाब्दिक चर्थ गुरौ विद्यकं व्रतम् ।
> तदाधिक पादिकं वा ग्रहणान्तिकमेव वा ॥ इति ॥

त्रयाणां वेदानां षट् त्रिंशत् ; एकैकस्य द्वादश । तदर्धिकं त्रयाणामष्टादश; एकैकस्य षट् । पादिकं वा त्रयाणां नव, एकैकस्य त्रीणि । ग्रहणान्तिकमेव वेति एकैकस्य त्रिभ्य ऊर्ध्वमनियमः, न प्रागित्यर्थो द्रष्टव्यः॥१६॥

17 न ब्रह्मचारिणो विद्यार्थस्य

न ब्रह्मचारिणो विद्यार्थस्य परोपवासोऽस्ति १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. A student who studies the sacred science shall not dwell with anybody else (than his teacher). 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न ब्रह्मचारिणो विद्यार्थस्य परोपवासोऽस्ति ।। १७ ।।

टिप्पनी⑥

ब्रह्मचारिविद्यार्थशब्दयोरर्थ उक्तः । यो ब्रह्मचारी विद्यार्थो भवति न तेन दिवसमात्रमपि परस्य समीपे वस्तव्यम्। आचार्यस्य समीप एव वस्तव्यमित्युक्तं भवति । विद्यार्थस्येति वचनात् नैष्ठिकस्य कदाचिदन्यत्र 18वासेऽपि न दोषः । यद्वा भोजननिवृत्तिरेवोपवासः । परलोकार्थ उपवासः परोपवासः स विद्यार्थस्य न भवति। नैष्ठिकस्य तु19 दोषः। अत्र पक्षे 20 आहिताग्निरनड्वानि'ति विद्यार्थब्रह्मचारिविषयम् ॥१७॥

18 अथ ब्रह्मचर्यविधिः

अथ ब्रह्मचर्यविधिः १८

▼

⑤

>

▼ Bühler

18. Now (follow) the rules for the studentship.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ ब्रह्मचर्यविधिः ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

ब्रह्म वेदस्तदर्थं यद्व्रत चरितव्यं तद्ब्रह्मचर्यं तदधिक्रियते ॥ १८ ॥

19 आचार्याधीनः स्यादन्यत्र पतनीयेभ्यः

आचार्याधीनः स्यादन्यत्र पतनीयेभ्यः १९

▼

⑤

>

▼ Bühler

19. He shall obey his teacher, except (when ordered to commit) crimes which cause loss of caste. 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आचार्याधीनस्स्यादन्यत्र पतनीयेभ्यः ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

"आचार्याधीनो भवे"त्युपनयनान्ते यत् संशासनं तत्सिद्धैवाचार्याधीनताऽनूद्यते 'अन्यत्र पतनीयेभ्य' इति विशेषं वक्ष्यामीति।22पतनीय इति करणे कृत्प्रत्ययः । 23अमुमरातिं ब्राह्मणमित्थं व्यापादयेत्याचार्येण चोदितोऽप्येवमादि न कुर्यादिति ॥ १९ ॥

20 हितकारी गुरोरप्रतिलोमयन्वाचा

हितकारी गुरोरप्रतिलोमयन्वाचा २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. He shall do what is serviceable to his teacher, he shall not contradict him. 24

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

हितकारी गुरोरप्रतिलोमयन्वाचा ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

आचार्येण प्रयुक्तोऽप्यप्रयुक्तोऽपि तस्मै हितमेव कुर्यात्, वाचा 25प्रातिलोम्यमकुर्वन् ॥ २० ॥

21 अधासनशायी

अधासनशायी २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. He shall always occupy a couch or seat lower (than that of his teacher). 26

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अधासनशायी ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

शयनं शायः । 27 'कृत्यल्युटो बहुल'मिति बहुलवचनात् घञ् । अधः आसनशायो यस्य सः अधासनशायी । गुरुसन्निधावध आसीत अधश्शयीतेत्युक्तं भवति । अधश्शदस्य सवर्णदीर्घश्छान्दसः, अपपाठो वा। तृणेषु प्रस्तरेषु चासनशयने शिष्टाचारसिद्धे ॥ २१ ॥

22 नानुदेश्यम् भुञ्जीत

नानुदेश्यं भुञ्जीत २२

▼

⑤

>

▼ Bühler

22. He shall not eat food offered (at a sacrifice to the gods or the Manes),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नानुदेश्यं भुञ्जीत ।। २२॥

टिप्पनी⑥

अनुदेश्यं श्राद्धार्थं देवतार्थं वा उद्दिष्टं न भुञ्जीत ॥ २२ ॥

23 तथा क्षारलवणमधुमांसानि

तथा क्षार-लवण-मधु-मांसानि *(गृह्यसूत्र उपनयनप्रकरणे क्षार-लवणयोर् त्र्यहं नियमनात् मध्वादेरेव त्र्यहादूर्ध्वं नित्यो निषेधः।)* २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. Nor pungent condiments, salt, honey, or meat. 28

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा क्षारलवणमधुमांसानि ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

न भुञ्जीतेत्येव । 29क्षारादीनि गृह्ये गतानि ॥ २३ ॥

24 अदिवास्वापी

अदिवास्वापी २४

▼

⑤

>

▼ Bühler

24. He shall not sleep in the day-time.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अदिवास्वापी ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

न दिवा स्वप्यात् ॥ २४ ॥

25 अगन्धसेवी

अगन्धसेवी २५

▼

⑤

>

▼ Bühler

25. He shall not use perfumes. 30

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अगन्धसेवी ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

चन्दनादीनि गन्धद्रव्याणि न सेवेत ॥ २५ ॥

26 मैथुनन् न चरेत्

मैथुनं न चरेत् २६

▼

⑤

>

▼ Bühler

26. He shall preserve chastity. 31

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मैथुनं न चरेत् ॥ २६ ॥

टिप्पनी⑥

उपचारक्रिया केली स्पर्शो 32भूषणवाससाम् ।
एकशय्यासनं क्रीडा चुम्बनालिङ्गने तथा ॥ इत्यादेस्सर्वस्योपलक्षणं मैथुनग्रहणम् ॥ २६ ॥

27 उत्सन्नश्लाघः

उत्सन्न-श्लाघः २७

▼

⑤

>

▼ Bühler

27. He shall not embellish himself (by using ointments and the like). 33

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उत्सन्नश्लाघः॥२७॥

टिप्पनी⑥

श्लाघा शोभा सा उत्सन्ना यस्य स उत्सन्नश्लाघः । एवंभूतो भवेत् । 34स्रक्षणादिना मुखादिकं उज्वलं न कुर्यात् इति ॥ २७ ॥

28 अङ्गानि न प्रक्षालयीत

अङ्गानि न प्रक्षालयीत २८

▼

⑤

>
▼ Bühler

28. He shall not wash his body (with hot water for pleasure).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अङ्गानि न प्रक्षालयीत ॥ २८ ॥

टिप्पनी⑥

35विना शिरसा सुखार्थमुष्णोदकादिना शरीरं न प्रक्षालयेत् ॥२८॥

29 प्रक्षालयीत त्वशुचिलिप्तानि गुरोर्

प्रक्षालयीत त्वशुचिलिप्तानि गुरोर् असन्दर्शे २९

▼

⑤

>

▼ Bühler

29. But, if it is soiled by unclean things, he shall clean it (with earth or water), in a place where he is not seen by a Guru. 36

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रक्षालयीत त्वशुचिलिप्तानि37 गुरोरसन्दर्शे ॥२९॥

टिप्पनी⑥

यानि तु मूत्रपुरीषाद्यशुचिलिप्तान्यङ्गानि तानि कामं38 मृदाद्भिः प्रक्षालयेत् यावद्गन्धो लेपश्चापैति । तदपि गुरोरसन्दर्शे39 यत्र स्थितं गुरुर्न पश्यति तत्र। आचार्यप्रकरणे गुरुग्रहणात् पित्रादीनामपि ग्रहणम् ॥ २९ ॥

30 नाप्सु श्लाघमानः स्नायाद्

नाप्सु श्लाघमानः स्नायाद् - यदि स्नायाद् दण्डवत् ३०

▼

⑤

>

▼ Bühler

30. Let him not sport in the water whilst bathing; let him swim (motionless) like a stick. 40

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

41 नाप्सु श्लाघमानः स्नायाद्यदि स्नायाद्दण्डवत्प्लवेत् ॥ ३० ॥

टिप्पनी⑥

स्नाने प्राप्त न श्लाघमानः स्नायात् । किं तु दण्डवत्प्लवेदित्युक्तम् । स्नानीयैर्मलापकर्षणं श्लाघा; क्रीडा वा जले । अपरं आह-'अङ्गानि न प्रक्षालयीते'(सू.२८)त्यासमावर्तनान्नित्यस्नानस्य प्रतिषेधः । 'प्रक्षालयीत त्वशुचिलिप्तानी'(सू.२९)ति नैमित्तिकस्य विधिः। 'नाप्सु श्लाघमानः स्नाया'(सू. ३०)दिति तत्रैव श्लाघाप्रतिषेध इति ॥३०॥

31 जटिलः

जटिलः ३१

▼

⑤

>
▼ Bühler

31. He shall wear all his hair tied in one braid. 42

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

जटिलः ॥ ३१॥

टिप्पनी⑥

सर्वानेव केशान् जटां कृत्वा बिभृयात् ॥ ३१ ॥

32 शिखाजटो वा वापयेद्

शिखाजटो वा वापयेद् इतरान् ३२

▼

⑤

>
▼ Bühler

32. Or let him make a braid of the lock on the crown of the head, and shave the rest of the hair.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शिखाजटो वा वापयेदितरान् ॥ ३२ ॥

टिप्पनी⑥

अथवा शिखामेव जटां कृत्वा इतरान्केशान् वापयेत् नापितेन ॥ ३२ ॥

33 मौञ्जी मेखला त्रिवृद्

- मौञ्जी मेखला त्रिवृद् ब्राह्मणस्य, शक्तिविषये दक्षिणावृत्तानाम् ३३

▼

⑤

>
▼ Bühler

33. The girdle of a Brāhmaṇa shall be made of Muñja grass, and consist of three strings; if possible, (the strings) should be twisted to the right. 43

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मौञ्जी मेखला त्रिवृद्ब्राह्मणस्य शक्तिविषये दक्षिणावृत्तानाम् ॥ ३३ ॥

टिप्पनी⑥

मुञ्जानां विकारो मौली । त्रिवृत् त्रिगुणा । एवम्भूता ब्राह्मणस्य मेखला भवति । सा च शक्तिविषये शक्तौ सत्यां दक्षिणावृत्तानां प्रदक्षिणावृत्तानां कर्तव्या । तद्धितार्थे गुणभूतानामपि मुञ्जानामेवैतद्विशेषणम् ॥ ३३ ॥

34 ज्या राजन्यस्य

ज्या राजन्यस्य ३४

▼

⑤

>
▼ Bühler

34. A bowstring (should be the girdle) of a Kṣatriya,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ज्या राजन्यस्य ॥ ३४॥

टिप्पनी⑥

स्पष्टम् ॥३४॥

35 मौञ्जी वायोमिश्रा

मौञ्जी वायोमिश्रा ३५

▼

⑤

>
▼ Bühler

35. Or a string of Muñja grass in which pieces of iron have been tied.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मौञ्जी वाऽयोमिश्रा ॥ ३५ ॥

टिप्पनी⑥

अथवा अयोमिश्रा क्वचितु कालायसेन बद्धा मौञ्जी मेखला भवति राजन्यस्य ।। ३५॥

36 आवीसूत्रं वैश्यस्य

आवीसूत्रं वैश्यस्य ३६

▼

⑤

>
▼ Bühler

36. A wool thread (shall be the girdle) of a Vaiśya,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आवीसूत्रं वैश्यस्य ॥ ३६ ॥

टिप्पनी⑥

अविरुर्णायुः कम्बलप्रकृतिः तत्सम्बन्धिनी ऊर्णा आवी तत्कृतं सूत्रं आवीसूत्रम् । सा मेखला वैश्यस्य भवति ॥ ६६ ॥

37 सैरी तामली वेत्येके

सैरी तामली वेत्येके ३७

▼

⑤

>

▼ Bühler

37. Or a rope used for yoking the oxen to the plough, or a stringy made of Tamala-bark.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सैरी तामली वेत्येके ॥ ३७ ॥

टिप्पनी⑥

सैरी सीरा बाहयोक्त्ररज्जुः। 44तामलो मूलोदसंज्ञको वृक्षः तस्य त्वचा ग्रथिता तामली ॥ ३७ ॥

38 पालाशो दण्डो ब्राह्मणस्य,

पालाशो दण्डो ब्राह्मणस्य,
नैय्यग्रोध-स्कन्धजो ऽवाङ्ग्रो राजन्यस्य,
बादर औदुम्बरो वा वैश्यस्य।
(यज्ञियो) वार्क्षो दण्ड इत्य् अवर्ण-संयोगेनैक उपदिशन्ति ३८

▼

⑤

>
▼ Bühler

38. The staff worn by a Brāhmaṇa should be made of Palāśa wood, that of a Kṣatriya of a branch of the Banian tree, which grows downwards, that of a Vaiśya of Bādara or Udumbara wood. Some declare, without any reference to caste, that the staff of a student should be made of the wood of a tree (that is fit to be used at the sacrifice). 45

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पालाशो दण्डो ब्राह्मणस्य नैयग्रोधस्कन्धजोऽवा46 ङ्ग्रो राजन्यस्य बादर औदुम्बरो वा वैश्यस्य वार्क्षो दण्ड इत्यवर्णसंयोगेनैक उपदिशन्ति ॥ ३८ ॥

टिप्पनी⑥

पालाशो दण्ड इत्यादि गृह्य47गतम् ॥ ३८ ॥

39 वासः

- वासः ३९

▼

⑤

>
▼ Bühler

39. (He shall wear) a cloth (to cover his nakedness). 48

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वासः ॥ ३९ ॥

टिप्पनी⑥

वस्यते कौपीनमाच्छाद्यते येन तद्वासः । तद्वक्ष्यते ॥ ३९ ॥

40 शाणीक्षौमाऽजिनानि

शाणी*(=hemp)*-क्षौमा*(=linen/ flax)*ऽजिनानि *(ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्यानाम्)*४०

▼

⑤

>
▼ Bühler

40. (It shall be made) of hemp for a Brāhmaṇa, of flax (for a Kṣatriya), of the skin of a (clean) animal (for a Vaiśya). 49

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शाणीक्षौमाजिनानि ।। ४०॥

टिप्पनी⑥

शणस्य विकारः शाणी पटी ।
क्षुमा अतसी तस्या विकारः क्षौमम्। श्वेत-पट्टाख्य-वासो-विशेष इत्यन्ये ।
अजिन यस्य कस्यचिन्मेध्यस्य पशोः।
त्रीण्येतानि वर्णानुपूर्व्येण वासांसि ॥ ४ ॥

41 कषायञ् चैके वस्त्रम्

कषायं *(=red Lodh/ kaavi)* चैके *(कार्पासं)* वस्त्रम् उपदिशन्ति ४१

▼

⑤

>

▼ Bühler

41. Some declare that the (upper) *(sic)* garment (of a Brāhmaṇa) should be dyed with red Lodh, 50

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

काषायं चैके वस्त्रमुपदिशन्ति ॥ ४१ ॥

टिप्पनी⑥

एके आचार्या **वस्त्रं** त्व् अधो-धार्यम् उपदिशन्ति ।
वस्त्रं कार्पासम् । तच्च काषायं कषायेण रक्तम् । ब्राह्मणस्येत्यर्थाद्गम्यते । इतरयोर्वक्ष्यमाणत्वात् ॥ ४१ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रे प्रथमप्रश्ने द्वितीया कण्डिका ॥२॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
3. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
4. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
5. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
6. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
7. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
8. Manu II, 35.↩
9. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
10. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
11. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
12. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

13. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

14. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

15. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

16. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

17. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

18. आप० ध० १.३०.८.↩

19. मनु० रमृ० २.६↩

20. गौ० ध० १. १, २↩

21. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our

times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

22. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

23. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

24. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

25. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

26. Manu II, 144.↩

27. आप० ध० १.३०.८.↩

28. Manu II, 146-148.↩

29. मनु० स्मृ० २.६↩

30. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

31. Manu II, 147.↩

32. गौ० ध० १. १, २↩

33. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

34. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

35. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

36. Manu II, 37.↩

37. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

38. आप० ध० १.३०.८.↩

39. मनु० स्मृ० २.६↩

40. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

41. गौ० ध० १. १, २↩

42. The meaning of the Sūtra is, that the initiation shall be performed as soon as the child is able to begin the study of the Veda. If it is so far developed at eight years, the ceremony must then be performed; and if it be then neglected, or, if it be neglected at any time when the capacity for learning exists, expiation prescribed in the following Sūtras must be performed. The age of sixteen in the case of Brāhmaṇas is the latest term up to which the ceremony may be deferred, in case of incapacity for study only. After the lapse of the sixteenth year, the expiation becomes also necessary. Manu II, 38; Yājñ. I, 37.↩

43. The meaning is, he shall keep all the restrictions imposed upon a student, as chastity, &c, but that he shall not perform the fire-worship or service to a teacher, nor study. Manu II, 39; XI. 192, Yājñ. I, 38; Weber, Ind. Stud. X, 101.↩

44. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

45. 'If he is strong, he shall bathe three times a day--morning, midday, and evening.'--Haradatta.↩

46. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

47. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

48. Brahman, apparently, here means 'Veda,' and those who neglect its study may be called metaphorically 'slayers of the Veda.'↩

49. Manu II, 40; Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 8, 9; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

50. Compare above, I, 1, 1, 28.↩

०३ ①

01 माञ्जिष्ठं राजन्यस्य④

माञ्जिष्ठं*(=madder-red-dyed)* राजन्यस्य १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. And that of a Kṣatriya dyed with madder,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

माञ्जिष्ठं राजन्यस्य ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

मञ्जिष्ठया रक्तं माञ्जिष्ठम् ॥ १ ॥

02 हारिद्रं वैश्यस्य

हारिद्रं वैश्यस्य। *(तेन कार्पासे धृते वर्णविकल्पो नास्ति।)* २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. And that of a Vaiśya dyed with turmeric.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

हारिद्रं वैश्यस्य ॥२॥

टिप्पनी⑥

हरिद्रया रक्तं हारिद्रम् ॥ २ ॥

03 उत्तरीयम्, कम्बलः हारिणम्,

हारिणम्*(=मृगजम्)*, ऐणेयं*(=मृगीजम्)* वा *(blackbuck-जात्या, न वर्णेन)* कृष्णं ब्राह्मणस्य *(अजिनम्, न श्वेतैणेयम्)* ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. (The skin),worn by a Brāhmaṇa shall be that of a common deer or of a black doe. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

हारिणमैणयं वा कृष्णं ब्राह्मणस्य ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

एनान्युत्तरीयाणि । 'बस्ताजिन'मिति वक्ष्यमाणत्वात् इहाप्यजिनमिति गम्यते । 2अजिनमुत्तरमुत्तरये'त्युपनयने यदजिनमुक्तं धार्यं तद्धारिण ब्राह्मणस्य; हरिणो मृगस्तस्य विकारः हारिणम् । ऐणेयं वा कृष्णम् । एणी मृगी तस्या विकार ऐणेयम् । 3एण्या ढञ् । द्विविधा एण्यः कृष्णाश्च गौराश्च । अतो विशेष्यते-कृष्णमैणेयमिति ॥३॥

04 कृष्णञ् चेद् अनुपस्तीर्णासनशायी

(ऐणेयं) कृष्णं चेद् अनुपस्तीर्णासन-शायी स्यात् ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. If he wears a black skin, let him not spread it (on the ground) to sit or lie upon it.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कृष्णं चेदनुपस्तीर्णासनशायी स्यात् ॥ ४ ॥

प्रस्तावः⑥

अस्मिन् पक्षे विशेषमाह—

टिप्पनी⑥

कृष्णं चेद्बिभृयात् न हारिणं ततस्तस्मिन्ननुपस्तीर्णे नासीत, न च शयीत । अयं तावदर्थः। शब्दनिर्वाह4 त्वधासनशायी'त्यत्र कृतः ॥४॥

05 रौरवं राजन्यस्य

रौरवं*(→ रौतीति - barasingha? Chital?)* राजन्यस्य ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

> 5. (The skin worn) by a Kṣatriya shall be that of a spotted deer.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

रौरवं राजन्यस्य ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

रुरुर्बिन्दुमान्मृगः ॥५॥

06 बस्ताजिनम्

बस्ताजिनं वैश्यस्य ॥ ६ ॥

▼

⑤

>
▼ Bühler

> 6. (The skin worn) by a Vaiśya shall be that of a he-goat.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

बस्ताजिनं वैश्यस्य ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

बस्तश्छागः ॥६॥

07 आविकं सार्ववर्णिकम्

आविकं सार्ववर्णिकम् ॥ ७ ॥

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. The skin of a sheep is fit to be worn by all castes,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आविकं सार्ववर्णिकम् ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

अविरूर्णायुः । स एवाऽऽविकः । तस्य चर्माऽऽविक, तत्सर्वेषामेव वर्णानाम् । अस्य हारिणादिभिर्विकल्पः ॥७॥

08 कम्बलश्च

कम्बलश् च *(आविकः)* ॥८॥

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. And a blanket made of wool.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कम्बलश्च ॥८॥

टिप्पनी⑥

अयमप्याविक एव । प्रावरणमेव सर्वेषाम् ॥ ८ ॥

09 ब्रह्मवृद्धिम् इच्छन्

ब्रह्मवृद्धिमिच्छन्न् अजिनान्य् एव वसीत,
क्षत्रवृद्धिम् इच्छन् वस्त्राण्य् एव,
उभय-वृद्धिम् इच्छन्न् उभयम् इति हि(१) ब्राह्मणम् ॥ ९॥

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. He who wishes the increase of Brāhmaṇa power shall wear skins only; he who wishes the increase of Kṣatriya power shall wear cloth only; he who wishes the increase of both shall wear both (skin and cloth). Thus says a Brāhmaṇa. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ब्रह्मवृद्धिमिच्छन्नजिनान्येव वसीत, क्षत्रवृद्धिमिच्छन् वस्त्राण्येव, उभयवृद्धिमिच्छन्नुभयमिति हि6 ब्राह्मणम् ॥ ९॥

प्रस्तावः⑥

'काषायं चैके वस्त्रमुपदिशन्ती' त्यारभ्य वासांस्यजिनानि च विहितानि । तत्र कामवशेन विशेषमाह—

टिप्पनी⑥

ब्रह्मवृद्धिः ब्राह्मणवृद्धिः क्षत्रवृद्धिः क्षत्रियवृद्धिः ॥ ९॥

10 अजिनन् त्वेवोत्तरन् धारयेत्

अजिनं त्वेवोत्तरं *(→उत्तरीयरूपेण)* धारयेत् *(इत्य् आपस्तम्बपक्षः)* १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. But (I, Āpastamba, say), let him wear a skin only as his upper garment. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अजिनं त्वेवोत्तरं धारयेत् ॥ १० ॥

प्रस्तावः⑥

अथ स्वपक्षमाह—

टिप्पनी⑥

उत्तरमुत्तरीयम् । तदजिनमेव धारयेत् ॥ १० ॥

11 अनृत्तदर्शी

अ-नृत्त-दर्शी ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. Let him not look at dancing. 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

9अनृत्तदर्शी ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

नृत्तं न पश्येत् ॥ ११ ॥

12 सभाः समाजांश् चागन्ता

सभाः समाजांश् चागन्ता १२

▼

⑤

>

▼ Bühler

12. Let him not go to assemblies (for gambling, &c.), nor to crowds (assembled at festivals). 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सभाः समाजांश्चाऽगन्ता ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

द्यूतादिस्थान सभा। उत्सवादिषु समवायः समाजः ! तास्सभास्समाजाश्च अगन्ता ताच्छील्येन न गच्छेत् । यदृच्छया गमने न दोषः ॥ २॥

13 अजनवादशीलः

अजन-वाद-शीलः १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. Let him not be addicted to gossiping.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अजनवादशीलः ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

जनवादः परिवादः लोकवार्ता वा, तच्छीलो न स्यात् ॥ १३ ॥

14 रहश्शीलः

रहश्-शीलः १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. Let him be discreet.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

रहश्शीलः ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

सति सम्भवे रहःशीलः स्यात् ॥ १४ ॥

15 गुरोर् उदाचारेष्व् अकर्ता

गुरोर् उदाचारेष्व् अकर्ता स्वैरि-कर्माणि १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. Let him not do anything for his own pleasure in places which his teacher frequents. 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गुरोरुदाचारेष्वकर्ता स्वैरिकर्माणि ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

येषु प्रदेशेषु गुरुरुदाचरति पौनःपुन्येन चरति तेषु स्वैरिकर्माणि मैत्रप्रसाधनादीनि न कुर्यात् ॥ १५ ॥

16 स्त्रीभिर् यावद्अर्थसम्भाषी

स्त्रीभिर् यावद्-अर्थ-संभाषी १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. Let him talk with women so much (only) as his purpose requires.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्त्रीभिर्यावदर्थसम्भाषी ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

स्त्रीभिस्सह12यावत्प्रयोजनं तावदेव सम्भाषेत । न प्रसक्तानुप्रसक्तमतिचिरम् । 13 'बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षती'ति । अतिबालाभिरतिवृद्धाभिश्च न दोषः ॥ १६ ॥

17 मृदुः

मृदुः १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. (Let him be) forgiving.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मृदुः ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

क्षमावान् । १७ ॥

18 शान्तः

शान्तः १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. Let him restrain his organs from seeking illicit objects.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शान्तः ॥१८॥

टिप्पनी⑥

इन्द्रियाणामसद्विषये प्रवृत्त्यभावः शमः तद्वान् शान्तः ॥ १८ ॥

19 दान्तः

दान्तः १९

▼

⑤

>

▼ Bühler

19. Let him be untired in fulfilling his duties; 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दान्तः ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

विहितेषु कर्मस्वग्लानिर्दमः । तद्वान् दान्त ॥ ९ ॥

20 ह्रीमान्

ह्रीमान् २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. Modest;

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ह्रीमान् ॥ २०॥

टिप्पनी⑥

ह्रीर्लज्जा तद्वान् ॥ २० ॥

21 दृढधृतिः

दृढधृतिः २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. Possessed of self-command

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दृढधृतिः ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

लब्धे नष्टे मृते वा धृतावेवावस्थितः स्यातू न हृष्येत् न वाविषीदेत् ॥ २१ ॥

22 अग्लांस्नुः

अग्लांस्नुः २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. Energetic;

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अग्लाँस्नुः ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

उत्साहसम्पन्नः । 15"ग्लाजिस्थश्च ग्स्नुः” । अत्रानुस्वारः छान्दसोऽपपाठो वा ॥ २२ ॥

23 अक्रोधनः

अक्रोधनः २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. Free from anger; 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अक्रोधनः ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

न कस्मैचिदपि कुप्येत् ॥ २३ ॥

24 अनसूयुः

अनसूयुः २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. (And) free from envy.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनसूयुः ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

पराभ्युदयानुसन्तापः असूया । तच्छीलो न स्यात् ॥ २४॥

25 सर्वं लाभमाहरन्गुरवे सायम्

सर्वं लाभमाहरन्गुरवे सायं प्रातरमन्त्रेण भिक्षाचर्यं चरेद् भिक्षमाणोऽन्यत्रापपात्रेभ्योऽभिशस्ताच्च २५

▼

⑤

>

▼ Bühler

25. Bringing all he obtains to his teacher, he shall go begging with a vessel in the morning and in the evening, (and he may) beg (from everybody) except low-caste people unfit for association (with Āryas) and Abhiśastas. 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वं लाभमाहरन् गुरवे सायं प्रातरमत्रेण भिक्षाचर्यं चरेद्भिक्षमाणोऽन्यत्राऽपपात्रेभ्योऽभिशस्ताच्च ॥२५॥

टिप्पनी⑥

अपपात्राः प्रतिलोमजा रजकादयः। अपगतानि हि तेषां पात्राणि पाकाद्यर्थानि चतुर्भिर्वर्णैसह । अभिशस्तान् वक्ष्यति 'अथ पतनीयानी'त्यादिना । तानुभयान् वर्जयित्वा अन्यत्र भिक्षेत । तत्र भिक्षमाणस्सर्वं लाभं यञ्च यावञ्च लब्धं गोहिरण्यादि तत्सर्व18ममायया गुरवे आहरेत् । एवमहरहः कुर्वन् सायं प्रातरमत्रेण न हस्तादिना भिक्षाचर्यं भिक्षाचरणं चरेत् कुर्यात् । 'सायं प्रात'रिति वचनान्न सायं गृहीतेन प्रातराशः, नापि प्रातर्गृहीतेन सायमाशः ॥ २५ ॥

26 स्त्रीणाम् प्रत्याचक्षाणानां समाहितो

स्त्रीणां प्रत्याचक्षाणानां समाहितो ब्रह्मचारीष्टं दत्तं हुतं प्रजां पशून्ब्रह्मवर्चसमन्नाद्यं वृङ्क्ते २६-१

तस्मादु ह वै ब्रह्मचारिसंघं चरन्तं न प्रत्याचक्षीतापि हैष्वेवम्विध एवंव्रतः स्यादिति हि ब्राह्मणम् २६-२

▼

⑤

>

▼ Bühler

A Brāhmaṇa declares: Since a devout student takes away from women, who refuse (to give him alms, the merit gained) by (Śrauta)-sacrifices, by gifts, (and) by burnt-offerings (offered in the domestic fire), as well as their offspring, their cattle, the sacred learning (of their families), therefore, indeed, (a woman) should not refuse (alms) to the crowd of students; for amongst those (who come to beg), there might be one of that (devout) kind, one who thus (conscientiously) keeps his vow.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्त्रीणां प्रत्याचक्षाणानां समाहितो ब्रह्मचारीष्टं दत्तं हुतं प्रजां पशून ब्रह्मवर्चसमन्नाद्यं वृङ्क्ते । तस्मादु ह वै ब्रह्मचारिसङ्घं चरन्तं न प्रत्याचक्षीतापि हैष्वेवंविध एवंव्रतः स्यादिति हि19 ब्राह्मणम् ॥ २६ ॥

प्रस्तावः⑥

अथ भिक्षाप्रत्याख्यानं निन्दितुं ब्राह्मणमाकृष्यते—

टिप्पनी⑥

व्याख्यातः समाहितः। समाहितो ब्रह्मचारी याभिः स्त्रीभिः भिक्षमाणः प्रत्याख्यायते तासां प्रत्याचक्षाणानां स्त्रीणामिष्टं यागैरार्जितं धर्मं, दत्तं दानेनार्जितं हुतं दर्विहोमैश्च गार्ह्यैरार्जितं सर्वमेव धर्मं वृङ्क्ते आच्छिनत्ति; यस्मादेवं तस्मात् ब्रह्मचारिसङ्घं चरन्तं न प्रत्याचक्षीत । उ ह वा इति निपाता वाक्यालङ्कारार्थाः । अपिहशब्दो कदाचिदित्येतमर्थं द्योतयतः । एषु सङ्घीभूतेषु

ब्रह्मचारिषु कदाचिदेवंविध समाहित एवव्रतः अथ ब्रह्मचर्याविधि'रित्यारभ्य यान्युक्तानि तद्वान् ब्रह्मचारी स्यात् । 20सम्भावने लिङ् । सम्भवेत् । तस्मान्न प्रत्याचक्षीतेत्येवं ब्राह्मण भवतीति ॥ २६॥

27 नानुमानेन भेक्षम्

नानुमानेन भेक्षम् उच्छिष्टं - दृष्टश्रुताभ्यां तु २७

▼

⑤

>

▼ Bühler

27. Alms (shall) not (be considered) leavings (and be rejected) by inference from their appearance), but on the strength of ocular or oral testimony (only). 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नानुमानेन भैक्षमुच्छिष्टं दृष्टश्रुताभ्यां तु ॥ २७ ॥

टिप्पनी⑥

भिक्षाणां समूहो भैक्षम् । न तल्लिङ्गाभासेनोच्छिष्टं मन्तव्यम् । किं तु दृष्टश्रुताभ्यामेव । दृष्टमात्मनः प्रत्यक्षम् । श्रुतमाप्तोपदेशः। ताभ्यामेव तदुच्छिष्टमवगन्तव्यम् । अयमंशः प्राप्तानुवादोऽपूर्वमंशं विधातुम् । यथा22 नानुवषट्करोति, अपि वोपांश्वनुवषट्कुर्यात्' इति ॥ २७ ॥

28 भवत्पूर्वया ब्राह्मणो भिक्षेत

भवत्पूर्वया ब्राह्मणो भिक्षेत २८

▼

⑤

>

▼ Bühler

28. A Brāhmaṇa shall beg, prefacing (his request) by the word 'Lady'; 23

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

24भवत्पूर्वया ब्राह्मणो भिक्षेत ॥ २८ ॥

टिप्पनी⑥

ब्राह्मणो ब्रह्मचारी भवत्पूर्वया वाचा भिक्षेत भिक्षां याचेत- 'भवति भिक्षां देही'ति॥२८॥

29 भवद्मध्यया राजन्यः

भवद्मध्यया राजन्यः २९

▼

⑤

>

▼ Bühler

29. A Kṣatriya (inserting the word) 'Lady' in the middle (between the words 'give alms');

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भवन्मध्यया राजन्यः॥ २९॥

टिप्पनी⑥

'भिक्षां भवति देही'ति राजन्यो भिक्षेत ॥ २९ ॥

30 भवदन्त्यया वैश्यः

भवदन्त्यया वैश्यः ३०

▼

⑤

>

▼ Bühler

30. A Vaiśya, adding the word 'Lady' (at the end of the formula).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भवदन्त्यया वैश्यः ॥ ३० ॥

टिप्पनी⑥

'भिक्षां देहि भवती'ति ॥३०॥

31 तत्समाहृत्योपनिधायाचार्याय प्रब्रूयात्

तत्समाहृत्योपनिधायाचार्याय प्रब्रूयात् ३१

▼

⑤

>
▼ Bühler

31. (The pupil) having taken those (alms) shall place them before his teacher and offer them to him. 25

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्समाहृत्योपनिधायाऽऽचार्याय प्रब्रूयात् ॥३१॥

प्रस्तावः⑥

'सर्वं लाभमाहरन् गुरव' इत्युक्तम् । अथाऽऽहृतं किं कर्तव्यमित्यत आह—

टिप्पनी⑥

तत् भैक्षं समाहृत्य समीपे निधायाचार्याय प्रब्रूयात्-इदमित्थमाहृतमिति॥३१॥

32 तेन प्रदिष्टम् भुञ्जीत

तेन प्रदिष्टं भुञ्जीत ३२

▼

⑤

>
▼ Bühler

32. He may eat (the food) after having been ordered to do so by his teacher. 26

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेन प्रदिष्टं भुञ्जीत ॥ ३२ ॥

टिप्पनी⑥

तेन ह्याचार्येण प्रदिष्टं सौम्यं त्वमेव भुङ्क्ष्वेत्युक्तं भुञ्जीत ॥ ३२ ॥

33 विप्रवासे गुरोराचार्यकुलाय

विप्रवासे गुरोराचार्यकुलाय ३३

▼

⑤

>
▼ Bühler

33. If the teacher is absent, the pupil (shall offer the food) to (a member of) the teacher's family.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विप्रवासे गुरोराचार्यकुलाय ॥ ३३ ॥

टिप्पनी⑥

यदि गुरुर्विप्रोषितोऽसन्निहितः स्यात् तत् आचार्यकुलायाऽऽचार्यस्य यत्कुलं भार्यापुत्रादि तस्मै ब्रूयात् । तेन प्रदिष्टं भुञ्जीत ॥ ३३ ॥

34 तैर्विप्रवासेऽन्येभ्योऽपि श्रोत्रियेभ्यः

तैर्विप्रवासेऽन्येभ्योऽपि श्रोत्रियेभ्यः ३४

▼

⑤

>
▼ Bühler

34. If the (family of the teacher) is (also) absent, the pupil (may offer the food) to other learned Brāhmaṇas (Śrotriyas) also (and receive from them the permission to eat). 27

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तैर्विप्रवासेऽन्येभ्योऽपि श्रोत्रियेभ्यः ॥ ३४ ॥

टिप्पनी⑥

तैस्स्वकुल्यैस्सह गुरोः विप्रवासे अन्येभ्योऽपि "28श्रोत्रियेभ्यः प्रब्रूयात् । तैः प्रदिष्टं भुञ्जीतेति विपरिणामेनान्वयः । गौतमोऽप्याह29 "असन्निधौ तद्भार्यापुत्रसब्रह्मचारिभ्यः' इति ॥ ३४॥

35 नात्मप्रयोजनश्चरेत्

नात्मप्रयोजनश्चरेत् ३५

▼

⑤

>

▼ Bühler

35. He shall not beg for his own sake (alone). 30

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽऽत्मप्रयोजनश्चरेत् ॥ ३५ ॥

टिप्पनी⑥

आत्मा प्रयोजनं प्रयोजकः यस्य स आत्मप्रयोजन । एवंभूतो भिक्षां न चरेत् आत्मार्थं नचरेदित्यर्थः । अन्य प्रयोजनं यदा श्रोत्रिया अपि न लभ्यन्ते तदा31 प्रोषितो भैक्षादग्नौ कृत्वा भुञ्जीतेति वक्ष्यमाणमप्रोषितेऽपि यथा स्यादिति ॥ ३ ॥

36 भुक्त्वा स्वयम् अमत्रम्

भुक्त्वा स्वयम् अमत्रं प्रक्षालयीत ३६

▼

⑤

>
▼ Bühler

36. After he has eaten, he himself shall clean his dish. 32

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भुक्त्वा स्वयममन्त्रं प्रक्षालयीत ॥ ३६ ॥

टिप्पनी⑥

अमत्रं भोजनपात्रम् , मुक्त्वेति सन्निधानात् । तत्स्वयमेव प्रक्षालयीत प्रक्षालयेत् । भिक्षापात्रस्य त्वन्येन प्रक्षालने न दोषः । उभयोरपि पात्रयोर्ग्रहणमित्यन्ये ॥ ३६॥

37 न चोच्छिष्टङ् कुर्यात्

न चोच्छिष्टं कुर्यात् ३७

▼

⑤

>
▼ Bühler

37. And he shall leave no residue (in his dish).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न चोच्छिष्टं कुर्यात् ॥ ३७ ॥

टिप्पनी⑥

यावच्छक्नोति भोक्तुं तावदेव भोजनपात्रे कृत्वा भुञ्जीत ॥ ३७॥

38 अशक्तौ भूमौ निखनेत्

अशक्तौ भूमौ निखनेत् ३८

▼

⑤

>
▼ Bühler

38. If he cannot (eat all that he has taken in his dish), he shall bury (the remainder) in the ground;

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अशक्तौ भूमौ निखनेत् ॥३८॥

टिप्पनी⑥

भोजने प्रवृत्तो यदि तावद्भोक्तुं न शक्नुयात् तदा तदन्नं भूमौ निखनेत् ॥ ३८ ॥

39 अप्सु वा प्रवेशयेत्

अप्सु वा प्रवेशयेत् ३९

▼

⑤

>
▼ Bühler

39. Or he may throw it into the water;

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अप्सु वा प्रवेशयेत् ॥ ३९ ॥

टिप्पनी⑥

अप्सु प्रक्षिपेत् ॥ ३९ ॥

40 आर्याय वा पर्यवदध्यात्

आर्याय वा पर्यवदध्यात् ४०

▼

⑤

>

▼ Bühler

40. Or he may place (all that remains in a pot), and put it down near an (uninitiated) Ārya; 33

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आर्याय वा पर्यवदध्यात् ॥ ४० ॥

टिप्पनी⑥

आर्यस्त्रैवर्णिकः तस्मै अनुपनीताय पर्यवदध्यात् सर्वमेकस्मिन्पात्रेऽवधाय तत्समीपे भूमौ स्थापयेत् ॥ ४० ॥

41 अन्तर्धिने वा शूद्रा

अन्तर्धिने वा शूद्रा य ४१

▼

⑤

>
▼ Bühler

41. Or (he may put it down) near a Śūdra slave (belonging to his teacher).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्तर्धिने या शुद्राय ॥ ४१ ॥

टिप्पनी⑥

अन्तर्धानमन्तर्धिः सोऽस्यास्तीति । ब्रीह्यादित्वादिभिः । अन्तर्धी दासः। अन्तर्हितं हि तस्य शूद्रत्वम् , आशौचेषु स्वामितुल्यत्वात् । प्रकरणादाचार्यस्येति गम्यते । आचार्यदासाय वा शूद्राय पर्यवदध्यात् ॥ ४१॥

42 प्रोषितो भैक्षाद् अग्नौ

प्रोषितो भैक्षाद् अग्नौ कृत्वा भुञ्जीत ४२

▼

⑤

>

▼ Bühler

42. If (the pupil) is on a journey, he shall throw 34 a part of the alms into the fire and eat (the remainder).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रोषितो भैक्षादग्नौ कृत्वा भुञ्जीत ॥ ४२ ॥

टिप्पनी⑥

यदि शिष्य आचार्यार्थमात्मार्थं वा प्रोषितः स्यात् तदा भैक्षात् किञ्चिदादायाग्नौ कृत्वा प्रक्षिप्य शेषं भुञ्जीत श्रोत्रियाणां सद्भावे असद्भावे च । 'अन्येभ्योऽपि श्रोत्रियेभ्य'35 इत्येतन्न भवति । यदि स्यात्तत्रैवायं ब्रूया'त्तदभावेऽग्नौ कृत्वा भुञ्जीते'ति । यद्यपि तत्राचार्यस्य प्रवासः प्रकृतः, तथापि न्यायसाम्याच्छिष्यस्यापि विप्रवासे भविष्यति ॥ ४२ ॥

43 भैक्षं हविषा संस्तुतन्

भैक्षं हविषा संस्तुतं तत्राचार्यो देवतार्थे ४३

▼

⑤

>

▼ Bühler

43. Alms are declared to be sacrificial food. In regard to them the teacher (holds the position which) a deity (holds in regard to food offered at a sacrifice).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भैक्षं हविषा संस्तुतं तत्राऽऽचार्यो देवतार्थे ॥ ४३ ॥

प्रस्तावः⑥

अथ ब्रह्मचारिणो यज्ञ विधातु हविरादीनि सम्पादयति—

टिप्पनी⑥

भैक्षं हविध्येन सस्तुत कीर्तितम् । तत्र तस्मिन् हविषि आचार्यो देवतार्थे देवताकार्ये तत्प्रीत्यर्थत्वात्तस्यं ॥ ४३ ॥

44 आहवनीयार्थे च

आहवनीयार्थे च ४४

▼

⑤

>
▼ Bühler

44. And (the teacher holds also the place which) the Āhavanīya fire occupies (at a sacrifice, because a portion of the alms is offered in the fire of his stomach). 36

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आहवनीयार्थे च ॥ ४४ ॥

टिप्पनी⑥

तस्य जाठराग्नौ हूयमानत्वात् ॥४४॥

45 तम् भोजयित्वा यदुच्छिष्टम्

तं भोजयित्वा यदुच्छिष्टम् ४५

▼

⑤

>
▼ Bühler

45. To him (the teacher) the (student) shall offer (a portion of the alms),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तं भोजयित्वा ॥ ४५ ॥

इति प्रथमप्रश्ने तृतीया कण्डिका ।

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
5. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
6. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
7. Manu II, 35.↩
8. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
9. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
10. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
11. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in

case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

12. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

13. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

14. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

15. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

16. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

17. Manu II, 144.↩

18. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

19. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

20. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

21. Manu II, 146-148.↩

22. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

23. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

24. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

25. Manu II, 147.↩

26. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

27. Manu II, 37.↩

28. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

29. आप० ध० १.३०.८.↩

30. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

31. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

32. The meaning of the Sūtra is, that the initiation shall be performed as soon as the child is able to begin the study of the Veda. If it is so far developed at eight years, the ceremony must then be performed; and if it be then neglected, or, if it be neglected at any time when the capacity for learning exists, expiation prescribed in the following Sūtras must be performed. The age of sixteen in the case of Brāhmaṇas is the

latest term up to which the ceremony may be deferred, in case of incapacity for study only. After the lapse of the sixteenth year, the expiation becomes also necessary. Manu II, 38; Yājñ. I, 37.↩

33. The meaning is, he shall keep all the restrictions imposed upon a student, as chastity, &c, but that he shall not perform the fire-worship or service to a teacher, nor study. Manu II, 39; XI. 192, Yājñ. I, 38; Weber, Ind. Stud. X, 101.↩

34. 'If he is strong, he shall bathe three times a day--morning, midday, and evening.'--Haradatta.↩

35. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

36. Brahman, apparently, here means 'Veda,' and those who neglect its study may be called metaphorically 'slayers of the Veda.'↩

०४①

01 यदुच्छिष्टम् प्राश्नाति④

यदुच्छिष्टं प्राश्नाति १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. And (having done so) eat what is left.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यदुच्छिष्टं प्राश्ञाति ॥ १॥

टिप्पनी⑥

अनुवादेषु सर्वत्र विधिः कल्प्यते । तं भोजयेत् । भोजयित्वा तस्योच्छिष्टं प्राश्नीयात् प्राश्नाति । ञकारोऽपाठश्छन्दसो वा, 'शादि'ति चुत्वप्रतिषेधात् ॥ ४५ ॥ १ ॥

02 हविरुच्छिष्टमेव तत्

हविरुच्छिष्टमेव तत् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. For this (remnant of food) is certainly a remnant of sacrificial food.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

हविरुच्छिष्टमेव तत् ॥ २ ॥

टिप्पनी⑥

इडाभक्षणादिस्थानीयमित्यर्थः ॥ २ ॥

03 यदन्यानि द्र व्याणि

यदन्यानि द्रव्याणि यथालाभमुपहरति दक्षिणा एव ताः ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

If he obtains other things (besides food, such as cattle or fuel, and gives them to his teacher) as he obtains them, then those (things

hold the place of) rewards (given to priests for the performance of a sacrifice).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यदन्यानि द्रव्याणि यथालाभमुपहरति दक्षिणा एव ताः॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

यदन्यानि द्रव्याणि गवादीनि भिक्षाचरणे लब्धानि समिदादीनि च स्वयमाहृतानि यथालाभमुपहरति दक्षिणा एव ताः । दक्षिणासामानाधिकरण्यात्ता इत्युक्तम् ॥ ३॥

04 स एष ब्रह्मचारिणो

स एष ब्रह्मचारिणो यज्ञो नित्यप्रततः ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. This is the sacrifice to be performed daily by a religious student.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स एष ब्रह्मचारिणो यज्ञो नित्यप्रततः ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

स एष एवंभूतो यज्ञः ब्रह्मचारिणो नित्यं प्रतायते । एवं कुर्वता ब्रह्मचारिणा यज्ञ एव नित्यं क्रियत इत्यर्थः ॥४॥

05 न चास्मै श्रुतिविप्रतिषिद्धम्

न चास्मै श्रुति-विप्रतिषिद्धम् उच्छिष्टं दद्यात् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. And (the teacher) shall not give him anything that is forbidden by the revealed texts, (not even as) leavings,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न चास्मै श्रुतिविप्रतिषिद्धमुच्छिष्टं दद्यात् ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

अस्मै शिष्याय आचार्यः श्रुतिविप्रतिषिद्ध शास्त्रविप्रतिषिद्धमुच्छिष्टं न दद्यात् ॥५॥

06 यथा क्षारलवणमधुमांसानीति

यथा क्षार-लवण-मधु-मांसानीति ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. Such as pungent condiments, salt, honey, or meat (and the like). 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथा क्षारलवणमधुमांसानीति ॥ ६ ॥

प्रस्तावः⑥

किं पुनस्तत्—

टिप्पनी⑥

यथेतिवचना'च्छ्रुतिविप्रतिषिद्ध'मिति लक्षणतः प्रतिषेधाच्च क्षारादिग्रहणमेवंविधस्योपलक्षणम् ॥ ६॥

07 एतेनान्ये नियमा व्याख्याताः

एतेनान्ये नियमा व्याख्याताः ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. By this (last Sūtra it is) explained (that) the other restrictions (imposed upon a student, such as abstinence from perfumes, ointments, &c., are likewise not to be broken). 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतेनान्ये नियमा व्याख्याताः ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

अभ्यङ्गशेषो गन्धशेषो माल्यशेष इत्यादयो ब्रह्मचारिणः प्रतिषिद्धा आचार्येण न देया इत्युक्तं भवति ॥ ७॥

08 श्रुतिर्हि बलीयस्यानुमानिकादाचारात्

श्रुतिर्हि बलीयस्यानुमानिकादाचारात् ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. For (explicit) revealed texts have greater force than custom from which (the existence of a permissive passage of the revelation) may be inferred. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्रुतिर्हि बलीयस्यानुमानिकादाचारात् ॥ ८॥

प्रस्तावः⑥

केचित्तु श्रुतिविप्रतिषिद्धमाचार्यशेषमुपयुञ्जाना दृश्यन्ते पूर्वः पूर्व आचारः प्रमाणमिति वदन्तः । तानिराकरोति—

टिप्पनी⑥

अनुमानाय प्रभवतीत्यानुमानिकः । आचाराद्धि श्रुतिः स्मृतिर्वाऽनुमीयते । तस्मादानुमानिकादाचारात्प्रत्यक्षश्रुतिर्बलीयसी । तद्विरोधे तु नानुमातुं शक्यते,4 'अनुमानमबाधितम्' इति न्यायात् । एवं च ब्रुवता ब्रह्मचारिणः क्षारलवणादिप्रतिषेधः प्रत्यक्षब्राह्मणमूल इति दर्शितं भवति । यद्यपि क्षारादिप्रतिषेधश्रुतेरुच्छिष्टव्यतिरिक्तो विषयः सम्भवति तथापि सङ्कोचोऽपि तस्या अविशेषप्रवृत्ताया आनुमानिकादाचारादयुक्तः॥ ८॥

09 दृश्यते चापि प्रवृत्तिकारणम्

दृश्यते चापि प्रवृत्तिकारणम् ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. Besides (in this particular case) a (worldly) motive for the practice is apparent. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दृश्यते चापि प्रवृत्तिकारणम् ॥९॥

प्रस्तावः⑥

ननु परस्परविरुद्धा अपि श्रुतय उपलभ्यन्ते 6 'गृह्णाति, न गृह्णाती'ति । तत्किमाचारात् सङ्कोचिका श्रुतिर्नानुमीयते ? अत आह—

टिप्पनी⑥

स्यादेव यद्ययमाचारोऽगृह्यमाणकारणः स्यात् । गृह्यते तु तत्र कारणम् ॥९॥

10 प्रीतिर्ह्य् उपलभ्यते

प्रीतिर्ह्य् उपलभ्यते १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. For pleasure is obtained (by eating or using the forbidden substances). 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रीतिर्ह्युपलभ्यते ॥ १० ॥

प्रस्तावः⑥

किं तत् ?

टिप्पनी⑥

क्षारादिभोजने भुञ्जानस्य प्रीतिर्भवति। ततश्च यत्र प्रीत्युपलब्धितप्रवृत्तिर्न तत्र शास्त्रमस्ति। तदनुवर्तमाना नरकाय राध्यतीति न्यायान्न सङ्कोचिका श्रुतिरनुमीयते इति ॥ १०॥

11 पितुर् ज्येष्ठस्य च

पितुर् ज्येष्ठस्य च भ्रातुर् उच्छिष्टं भोक्तव्यम् ११

▼

⑤

>

▼ Bühler

11. A residue of food left by a father and an elder brother, may be eaten.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पितुर्ज्येष्ठस्य च भ्रातुरुच्छिष्टं भोक्तव्यम् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

8स्पष्टम् ॥ ११ ॥

12 धर्मविप्रतिपत्ताव् अभोज्यम्

धर्म-विप्रतिपत्ताव् अभोज्यम् १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. If they act contrary to the law, he must not eat (their leavings). 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

धर्मविप्रतिपत्तावभोज्यम् ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

यदि तयोर्धर्माद्विप्रतिपत्तिरपायो भवति ततो न भोज्यम् । यद्वा भुञ्जानस्य ब्रह्मचारिणो धर्मविप्रतिषेधो भवति मधुमांसादिमिश्रत्वेन ततो न भोज्यमिति ॥१२॥

13 सायम् प्रातर् उदकुम्भम्

सायं प्रातर् उदकुम्भम् आहरेत् १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. In the evening and in the morning he shall fetch water in a vessel (for the use of his teacher). 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सायं प्रातरुदकुम्भमाहरेत् ॥१३॥

टिप्पनी⑥

आचार्यस्य स्नानपानार्थम् ॥ १३॥

14 सदारण्याद् एधान् आहृत्याधो

सदारण्याद् एधान् आहृत्याधो निदध्यात् १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. Daily he shall fetch fuel from the forest, and place it on the floor (in his teacher's house). 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

12सदाऽरण्यादेवानाहत्याऽधो निदध्यात् ॥१४॥

टिप्पनी⑥

सदा प्रत्यहम् **अरण्यात्** न पित्रादि-गृहाद् **एधान्** काष्ठानि आचार्यगृहे पाकाद्यर्थम् आहरेत्, आहृत्य चाऽधो **निदध्यात्** अधोनिधानमाचार्यपुत्रादिषु बालेषु पतनशङ्कया।

अपर आह-
आत्मनस् समिदाधानार्थम्13 एधाहरणम् इति ।
उक्तं गृह्ये-14 एवम् अन्यस्मिन्न् अपि सदाऽरण्याद् एधानाहृत्य । इति। तद्-अनुवादेनाधोनिधानं विधीयते दृष्टार्थमदृष्टार्थं वेति ॥१४॥

15 नास्तम् इते समिद्धारो

नास्तम् इते समिद्धारो गच्छेत् १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. He shall not go to fetch firewood after sunset.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नास्तमिते समिद्धारो गच्छेत् ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

अस्तमित आदित्ये समिध आहर्तुं न गच्छेत् ; चोरव्याघ्रादिसम्भवात् । 'समिद्धार' इति 15 'अण् कर्मणि चे'ति तुमर्थेऽण्प्रत्ययः ॥ १५ ॥

16 अग्निम् इद्ध्वा परिसमूह्य

अग्निम् **इद्ध्वा**
परिसमूह्य *(मार्जयित्वा)*
समिध **आदध्यात्**
सायं प्रातर् यथोपदेशम् १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. After having kindled the fire, and having swept the ground around (the altar), he shall place 16 the sacred fuel on the fire every morning and evening, according to the prescription (of the Gṛhya-sūtra).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अग्निमिध्वा परिसमूह्य समिध आदध्यात्सायंप्रातर्यथोपदेशम् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

परिसमूहनं परितो मार्जनम् । विप्रकीर्णस्याग्ने17रेकीकरणमित्यन्ये । यथोपदेशं यथा गृह्य उक्तं तथा समिध आदध्यात् । गृह्ये विहितमपि समिदाधानं विधीयते सर्वाचरणार्थम् । सायं प्रातरित्यादिकान्विशेषाः न वक्ष्यामीति च ॥ १६ ॥

17 सायम् एवाग्निपूजेत्य् एके

सायम् एवाग्नि-पूजेत्य् एके १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. Some say that the fire is only to be worshipped in the evening.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सायमेवाऽग्निपूजेत्येके ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

एके आचार्यास्सायमेवाग्निपूजा कार्या, न प्रातरिति मन्यन्ते ॥ १७ ॥

18 समिद्धम् अग्निम् पाणिना

समिद्धम् अग्निं
पाणिना परिसमूहेन् - न समूहन्या १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. He shall sweep the place around the fire after it has been made to burn (by the addition of fuel), with his hand, and not with the broom (of Kuśa grass). 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

समिद्धमग्निं पाणिना परिसमूहेन्न समूहन्या ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

सामिदाधाने समिद्धमग्निं पाणिनैव परिसमूहेत्, न समूहन्या । समूहनी सम्मार्जनी दर्भनिर्मिता वेदाकृतिः, आचारात् ॥ १८ ॥

19 प्राक् तु याथाकामी

प्राक् तु याथाकामी १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. But, before (adding the fuel, he is free to use the broom) at his pleasure

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्राक्तु याथाकामी ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

प्राक्समिदाधानात् परिसमूहने याथाकामी भवति । यथाकामस्य भावो याथाकामी । ष्यञ्, षित्वादीकारः ॥ १९ ॥

20 नाग्न्य्उदकशेषेण वृथाकर्माणि कुर्वीताऽऽचामेद्

नाग्न्य्-उदक-शेषेण वृथा-कर्माणि कुर्वीताऽऽचामेद् वा २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. He shall not perform non-religious acts with the residue of the water employed for the fire-worship, nor sip it. 19

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नारन्युदकशेषेण वृथाकर्माणि कुर्वीताऽऽचामेद्वा ॥२०॥

टिप्पनी⑥

अग्निपरिचर्यायां परिसमूहने परिषेचने च यदुपयुक्तमुदकं, तच्छषेण वृथाकर्माणि अदृष्टप्रयोजनरहितानि पादप्रक्षालनादीनि न कुर्वीत। नाऽप्याचामेत् । अवृथाकर्मवादस्य पुनःप्रतिषेधः ॥ २० ॥

21 पाणिसङ्क्षुब्धेनोदकेनैकपाण्याऽऽवर्जितेन च नाचामेत्

पाणि-संक्षुब्धेनोदकेनैक-पाण्याऽऽवर्जितेन च नाचामेत् २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. He shall not sip water which has been stirred with the hand, nor such as has been received into one hand only.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पाणिसंक्षुब्धेनोदकेनैकपाण्यावर्जितेन च नाऽऽचामेत् ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

पाणिसंक्षुब्धं 20पाणिना संक्षोभितं तेनोदकेन नाऽऽचामेत् । इदं तटाकादिषु स्वयमाचमने । यदा पर आचामयति, तदैकेन पाणिना यदावर्जितं तेन नाऽऽचामेत्। किं तु उभाभ्यां हस्ताभ्यां करकादि गृहीत्वा यदावर्जितमुदकं, तेनैवाऽऽचामेत् । एवं च स्वयं वामहस्तावर्जितेनापि नाचामेत् । (अलाबुपात्रेण नालिकेरजेन वैणवेन चर्ममयेन ताम्रमयेन वा पात्रेण स्वयमाचमनमाचरन्ति शिष्टाः) ॥ २१ ॥

22 स्वप्नञ् च वर्जयेत्

स्वप्नं च वर्जयेत् २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. And he shall avoid sleep (whilst his teacher is awake).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्वप्नं च वर्जयेत् ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

पूर्व'मदिवास्वापी'(१. २. २८)त्यनेन 21दिवास्वापः प्रतिषिद्धः। अनेन रात्रावपि यावदाचार्यो न स्वपिति, तावन्तं कालं स्वापः प्रतिषिध्यते। स्वप्नकथनं वर्जयेदित्येके ॥ २२ ॥

23 अथाहरहराचार्यङ् गोपायेद् धर्मार्थयुक्तैः

अथाहरहराचार्यं गोपायेद् धर्मार्थयुक्तैः कर्मभिः २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. Then (after having risen) he shall assist his teacher daily by acts tending to the acquisition of spiritual merit and of wealth. 22

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाऽहरहराचार्यं गोपायेद्धार्थयुक्तः कर्मभिः ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

अथ स्वप्नस्य प्रकृतत्वात् स्वप्नानन्तरं ब्राह्मे मुहूर्त उत्थायेत्यर्थः । अहरहः नित्यमाचार्यं गोपायेत् रक्षेत् । किं दण्डादि गृहीत्वा ? नेत्याह— धर्मार्थयुक्तैः कर्मभिः । धर्मयुक्तानि कर्माणि समित्कुशपुष्पाहरणादीनि, अर्थयुक्तानि 23युग्यघासाहरणादीनि ॥ २३ ॥

24 स गुप्त्वा संविशन्ब्रूयाद्धर्मगोपायमाजूगुपमहमिति

स गुप्त्वा संविशन्ब्रूयाद्धर्मगोपायमाजूगुपमहमिति २४

▼

⑤

>

▼ Bühler

24. Having served (his teacher during the day in this manner, he shall say when going to bed): I have protected the protector of the law (my teacher). 24

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

25 स गुप्त्वा संविशन् ब्रूया'द्धर्म गोपाय माजूगुपमह'मिति ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

स26ब्रह्मचारी धर्मार्थयुक्तैः कर्मभिर्यावदुत्थानात् यावदस्य संवेशनात् एवमाचार्यं गुप्त्वा सविशन् शयनं भजन् 27 'धर्मगोपायमाजूगुपमह'मितीमं मन्त्रं ब्रूयात् । धर्मं गोपायतीति धर्मगोपाय । आचार्यः तमहमाजूगुपमाभिमूख्येन रक्षितवानस्मि, इदानीं तु संविशामीति मन्त्रार्थः । अपर आह- हे धर्म मा मां गोपाय रक्ष यस्मादहं आजूगुपमहमाचार्यमेतावन्तं कालमिति ॥ २४॥

25 प्रमादादाचार्यस्य बुद्धिपूर्वं वा

प्रमादादाचार्यस्य बुद्धिपूर्वं वा नियमातिक्रमं रहसि बोधयेत् २५

▼

⑤

>

▼ Bühler

25. If the teacher transgresses the law through carelessness or knowingly, he shall point it out to him privately.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रमादादाचार्यस्य बुद्धिपूर्वं वा नियमातिक्रमं रहसि बोधयेत् ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

प्रमादोऽनवधानम् । प्रमादात् बुद्धिपूर्वं यो आचार्यस्य वा नियमातिक्रमस्त रहसि बोधयेत् । इत्थमयं नियमः पूज्यपादैरतिक्रम्यते इति ॥ २५ ॥

26 अनिवृत्तौ स्वयङ् कर्माण्यारभेत

अनिवृत्तौ स्वयं कर्माण्यारभेत २६

▼

⑤

>

▼ Bühler

26. If (the teacher) does not cease (to transgress), he himself shall perform the religious acts (which ought to be performed by the former); 28

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनिवृत्तौ स्वयं कर्माण्यारभेत ॥ २६ ॥

टिप्पनी⑥

यदि बोधितोऽप्याचार्यस्ततो न निवर्तते, ततः स्वयमेव तस्य कर्तव्यानि ब्रह्मयज्ञादीनि कर्माण्यारभते कुर्यात् ॥ २६ ॥

27 निवर्तयेद्वा

निवर्तयेद्वा २७

▼

⑤

>
▼ Bühler

27. Or he may return home.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

निवर्तयेद्वा ॥ २७ ॥

टिप्पनी⑥

प्रसह्य वा स्वयं निवर्तयेत् । पित्रादिभिर्वा निवर्तयेत् ॥ २७ ॥

28 अथ यः पूर्वोत्थायी

अथ यः पूर्वोत्थायी जघन्यसंवेशी तमाहुर्न स्वपितीति २८

▼

⑤

>
▼ Bühler

28. Now of him who rises before (his teacher) and goes to rest after (him), they say that he does not sleep.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ यः पूर्वोत्थायी जघन्यसंवेशी तमाहुर्न स्वपितीति ॥ २८ ॥

टिप्पनी⑥

या पूर्वमाचार्यादुत्तिष्ठति प्रतिबुध्यते । जघन्यशब्दः पश्चादर्थे । जघन्यश्च संविशति, तं ब्रह्मचारिणं न स्वपितीति धर्मज्ञा आहु । प्रयोजनमुपनयने 'मा सुषुप्था' इति संशासनस्यायमर्थः, न स्वापस्यात्यन्ताभाव इति । अथशब्दश्च वाक्योपक्रमे ॥ २८॥

29 स य एवम्

स य एवं प्रणिहितात्मा ब्रह्मचार्यत्रैवास्य सर्वाणि कर्माणि फलवन्त्यवाप्तानि भवन्ति यान्यपि गृहमेधे २९

▼

⑤

>
▼ Bühler

29. The student who thus entirely fixes his mind there (in the teacher's family), has thereby performed all acts which yield rewards (such as the Jyotiṣṭoma), and also those which must be performed by a householder. 29

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स य एवं प्रणिहितात्मा ब्रह्मचार्यत्रैवास्थ सर्वाणि कर्माणि फलवन्त्यवाप्तानि भवन्ति यान्यपि गृहमेधे ॥२९॥

टिप्पनी⑥

'आचार्याधीनः स्या'दित्यारभ्य यस्य नियमा उक्ताः, स ब्रह्मचारी, एवमुक्तेन प्रकारेण, प्रणिहितात्मा प्रकर्षेण निहित आचार्यकुले स्थापित आत्मा येन स तथोक्तः । प्रकर्षश्च30आत्मनस्तत्रैव शरीरन्यासः । वक्ष्यति 31आचार्यकुले शरीरन्यासः" इति । अस्यैवंविधस्य ब्रह्म चारिणः अत्रैव ब्रह्मचर्याश्रमे सर्वाणि फलवन्ति ज्योतिष्टोमादीनि कर्माण्यवाप्तानि भवन्ति । तत्फलावाप्तिरेव तदवाप्तिः । यान्यपि कर्माणि गृहमेधे गृह्यशास्त्रे विवाहाद्यष्टकान्तानि, तान्यवाप्तानि भवन्ति । तदेवं नैष्ठिकब्रह्मचारिविषयमिदं सूत्रम् ॥ २९ ॥

इत्यापस्तम्बीये धर्मसूत्रे चतुर्थी कण्डिका ॥४॥②

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ32 हरदत्तविरचितायामुज्वलायां प्रथमप्रश्ने प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

इति प्रथमः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
 ↩
2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
3. Manu II, 35.↩
4. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
5. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
6. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

7. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

8. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

9. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

10. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

11. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

12. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
13. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
14. आप० ध० १.३०.८.↩
15. मनु० स्मृ० २.६↩
16. Manu II, 144.↩
17. गौ० ध० १. १, २↩
18. Manu II, 146-148.↩
19. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩
20. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
21. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
22. Manu II, 147.↩
23. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
24. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩
25. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
26. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
27. आप० ध० १.३०.८.↩
28. Manu II, 37.↩

29. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

30. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

31. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

32. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

૦૨①

०५①

01 नियमेषु तपःशब्दः④

नियमेषु तपःशब्दः १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. The word 'austerity' (must be understood to apply) to (the observance of) the rules (of studentship). 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नियमेषु तपशब्दः ॥ १॥

टिप्पनी⑥

'आचार्याधीनः स्या'दित्यादयो ये नियमाः अस्मिन्ब्रह्मचारिप्रकरणे निर्दिष्टाः, तपश्शब्दस्तेषु द्रष्टव्यः, न तु कृच्छ्रादिषु ॥ १ ॥

02 तद्अतिक्रमे विद्याकर्म निःस्रवति

तद्-अतिक्रमे विद्या-कर्म निःस्रवति ब्रह्म सहापत्याद् एतस्मात् २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. If they are transgressed, study drives out the knowledge of the Veda acquired already, from the (offender) and from his children. 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तदतिक्रमे विद्याकर्म निःस्रवति ब्रह्म सहापत्यादेतस्मात् ॥ २॥

टिप्पनी⑥

तेषां नियमानामतिक्रमे विद्याकर्म विद्याग्रहणं ब्रह्म निःस्रवति गृहीतं वेदं निस्सारयति । कुतः, ? एतस्मात् नियमातिक्रमेणाध्येतुःपुरुषात् । न केवलमेतस्मात् । किं तर्हि ? सहापत्यात् । अपत्येन सह वर्तत इति सहापत्यः 3 'वोपसर्जनस्येति सभावाभावे रूपम् । अपत्यादपि ब्रह्म निःसारयति। यद्यप्यपत्यं नियमातिक्रमकारि न भवति, तथापि पितृदोषादेव ततोऽपि ब्रह्म निस्सारयति । नियमातिक्रमेण विद्याग्रहणं कुर्वतः पुरुषात् सहापत्यात् गृहीतं ब्रह्म निस्सरति, ब्रह्मयज्ञादिषूपयुज्यमानमप्यकिञ्चित्करं भवतीत्यर्थो विवक्षितः । स्रवतेश्च सकर्मकस्य प्रयोगो भाष्ये दृष्टः 'स्रवत्युदकं कुण्डिके'ति ।

अपर आह-4तदतिक्रमे नियमातिक्रमे विद्याग्रहणं न कर्तव्यम् । कुतः? यतो निस्स्रवति ब्रह्म निस्सरतीत्यर्थः, शेषं समानमिति । विद्याकर्म निस्स्रवति ब्रह्म च निस्स्रवतीत्यन्ये । अन्ये च— कुर्वत इत्यध्याहार्यम् । तदतिक्रमेण विद्याकर्म कुर्वतो ब्रह्म निस्स्रवतीति ॥ २॥

03 कर्तपत्यम् अनायुष्यञ् च

कर्तपत्यम् अनायुष्यं च ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Besides he will go to hell, and his life will be shortened.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कर्तपत्यमनायुष्यं च ॥ ३ ॥

प्रस्तावः⑥

न केवलमकिञ्चित्करं नियमातिक्रमेण विद्याग्रहणम्, प्रत्युताऽनर्थकारीत्याह—

टिप्पनी⑥

कर्तशब्देन श्वभ्राभिधायिना नरको लक्ष्यते । पतत्यनेनेति पत्यम् । एवंभूतं विद्याग्रहणं नरकपातहेतुर्भवति । अनायुष्यं च अनायुष्करं च ॥ ३ ॥

04 तस्माद् ऋषयो ऽवरेषु

तस्माद् ऋषयो ऽवरेषु न जायन्ते नियमाति-क्रमात् ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. On account of that (transgression of the rules of studentship) no Ṛṣis are born amongst the men of later ages. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्मादृषयोऽवरेषु न जायन्ते नियमातिक्रमात् ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

अत एवावरेषु अर्वाचीनेषु कलियुगवर्तिषु ऋषयो न जायन्ते मन्त्रदृशो न भवन्ति। नियमातिक्रमस्येदानीमवर्जनीयत्वात् ॥ ४ ॥

05 श्रुतर्षयस्तु भवन्ति केचित्कर्मफलशेषेण

श्रुतर्षयस्तु भवन्ति केचित्कर्मफलशेषेण पुनःसंभवे ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. But some in their new birth, on account of a residue of the merit acquired by their actions (in former lives), become (similar to) Ṛṣis by their knowledge (of the Veda), 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्रुतर्षयस्तु भवन्ति केचित्कर्मफलशेषेण पुनस्सम्भवे ॥ ५ ॥

प्रस्तावः⑥

कथं तर्ह्यद्यतना अतिक्रामन्तोऽपि नियमानल्पेनैव यत्नेन चतुरो वेदान गृह्णन्ति? युगान्तरे सम्यगनुष्ठितस्य नियमकर्मणः फलशेषेणेत्याह—

टिप्पनी⑥

पुनस्सम्भवः पुनर्जन्म ॥ ५ ॥

06 यथा श्वेतकेतुः

यथा श्वेतकेतुः ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. Like Śvetaketu. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथा श्वेतकेतुः ॥ ६ ॥

प्रस्तावः⑥

अत्रोदाहरणम्—

टिप्पनी⑥

श्वेतकेतुर्ह्यल्पेनैव कालेन चतुरो वेदाञ्जग्राह। तथा च छान्दोग्यम्— 8"श्वेतकेतुर्हारुणेय आस । तं ह पितोवाच श्वेतकेतो वस ब्रह्मचर्यं, न वै सोम्यास्मत्कुलीलोऽननूच्य ब्रह्मबन्धूरिव भवतीति। स ह द्वादशवर्ष उपेत्य चतुर्विंशतिवर्षस्सर्वान् वेदानधीत्य महामना अनूचानमानी स्तब्ध एयाये"ति ॥ ६ ॥

07 यत्किञ् च समाहितो

यत्किं च समाहितो ऽब्रह्माप्य् आचार्याद् उपयुङ्क्ते ब्रह्मवद् एव तस्मिन् फलं भवति ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. And whatever else besides the Veda, (a student) who obeys the rules learns from his teacher, that brings the same reward as the Veda. 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यत्किञ्च समाहितोऽब्रह्मप्याचार्यादुपयुङ्क्ते ब्रह्मवदेव तस्मिन् फलं भवति ॥ ७ ॥

प्रस्तावः⑥

एवं नियमातिक्रमे देषमुक्त्वा तदनुष्ठाने सिद्धिमाह —

टिप्पनी⑥

अब्रह्मपि अब्रह्मापि । पररूपम्, कतन्तवत् । अपेर्वाऽकारलोपः, पिहितपिनद्धादिवत् । वेदव्यतिरिक्तमपि यत्किञ्चित् विप्रमन्त्रादि समाहितो नियमवान् भूत्वा आचार्यादुपयुङ्क्ते गृह्णाति तस्मिन् वेदव्यतिरिक्ते ब्रह्मवदेव फलं भवति ॥ ७ ॥

08 अथो यत्किञ् च

अथो यत्किञ् च मनसा वाचा चक्षुषा वा सङ्कल्पन् ध्यायत्य् आहाभिविपश्यति वा तथैव तद्भवतीत्युपदिशन्ति ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. Also, if desirous to accomplish something (be it good or evil), he thinks it in his mind, or pronounces it in words, or looks upon it with his eye, even so it will be; thus teach (those who know the law).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथो यत्किञ्च मनसा वाचा चक्षुषा वा सङ्कल्पयन् ध्यायत्याहाऽभिविपश्यति वा तथैव तद्भवतीत्युपदिशन्ति ॥ ८ ॥

प्रस्तावः⑥

निग्रहानुग्रहशक्तिरप्यस्य भवतीत्याह—

टिप्पनी⑥

अथो अपि च यत्किञ्च निग्रहात्मकं अनुग्रहात्मकम् वा सङ्कल्पयन् चिकीर्षन्मनसा निर्दयेन शिवेन वा ध्यायति— इत्थमिदमस्याऽस्त्विति, तथैव तद्भवति। तथा यत्किञ्च सङ्कल्पयन्वाचा 10क्रूरया मधुरया वा आह— इत्थमिदमस्यास्त्विति तथैव तद्भवति। एवं यत्किञ्च सङ्कल्पयन् चक्षुषा घोरेण वा मैत्रेण वा अभिविपश्यति तथैव तद्भवतीत्युपदिशन्ति धर्मज्ञाः ॥ ८ ॥

09 गुरुप्रसादनीयानि कर्माणि स्वस्त्ययनमध्ययनसंवृत्तिरिति

गुरुप्रसादनीयानि कर्माणि स्वस्त्ययनमध्ययनसंवृत्तिरिति ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. (The duties of a student consist in) acts to please the spiritual teacher, the observance (of rules) conducive to his own welfare, and industry in studying. 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गुरुप्रसादनीयानि कर्माणि स्वस्त्ययनमध्ययनसंवृत्ति12रिति ॥ ९॥
######प्रस्तावः अवश्यं धर्मयुक्तेनाध्येतव्यमित्युक्तम् । इदानीं ते धर्मा लक्षणतस्त्रिविधा इत्याह—

टिप्पनी⑥

यैरनुष्ठितैः गुरु प्रसीदति तानि गुरुप्रसादनीयानि पादप्रक्षालनादीनि कर्माणि । स्वस्तीत्यविनाशिनाम । तत्प्राप्तिसाधन स्वस्त्ययनम् । तच्च त्रिविधं दृष्टार्थमदृष्टार्थमुभयार्थं चेति । दृष्टार्थं बाहुनदीतरणादिनिषेधः । अदृष्टार्थं क्षारादिनिषेधः । उभयार्थं भिक्षाचरणादि । अध्ययनसम्वृत्तिरधीतस्य वेदस्याऽभ्यासः ॥ ९ ॥

10 अतोऽन्यानि निवर्तन्ते ब्रह्मचारिणः

अतोऽन्यानि निवर्तन्ते ब्रह्मचारिणः कर्माणि १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. Acts other than these need not be performed by a student. 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अतोऽन्यानि निवर्तन्ते ब्रह्मचारिणः कर्माणि ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

एतेभ्यः अन्यानि कर्माणि निवर्तन्ते ब्रह्मचारिणो, न कर्तव्यानीत्यर्थः ॥ १० ॥

11 स्वाध्यायधृग् धर्मरुचिस्तपस्व्यृजुर्मृदुः सिध्यति

स्वाध्यायधृग् धर्मरुचिस्तपस्व्यृजुर्मृदुः सिध्यति ब्रह्मचारी ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. A religious student who retains what he has learned, who finds pleasure in the fulfilment of the law, who keeps the rules of studentship, who is upright and forgiving, attains perfection. 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्वाध्यायधृग्धर्मरुचिस्तपस्व्यृजुर्मृदुस्सिद्ध्यति ब्रह्मचारी ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

स्वाध्यायधृक् अधीतस्य15वेदस्य धारयिता अविस्मर्ता । धर्मे रुचि यस्य स धर्मरुचिः । तपस्वी नियमेषु तपशब्दः तद्वान् । ऋजुः अमायावी। मृदु । क्षमावान् । एवंभूतो ब्रह्मचारी सिद्ध्यति सिद्धिं प्राप्नोति । उक्ता सिद्धिः 16 'अथो यत्किञ्च मनसे'ति । तत्रोक्तानां पुनर्वचनमादरार्थम् । तदनुष्ठाने फलभूमा, अतिक्रमे च दोषभूमेति तात्पर्यम् ॥ ११ ॥

12 सदा महान्तमपररात्रमुत्थाय गुरोस्तिष्ठन्प्रातरभिवादमभिवादयीतासावहम्

सदा महान्तम् अपररात्रम् उत्थाय
गुरोस् तिष्ठन्
प्रातर् अभिवादम् अभिवादयीत - "असाव् अहं भो" इति १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. Every day he shall rise in the last watch of the night, and standing near his teacher, salute him with (this) salutation: I, N. N., ho! (salute thee.) 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सदा महान्तमपररात्रमुत्थाय गुरोस्तिष्ठन्प्रातरभिवादनमभिवादयीताऽसावहं भो, इति ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

सदा प्रतिदिनं महान्तमपररात्रं रात्रे पश्चिमे याम उत्तिष्ठेत् । उत्थाय च समीपे तिष्ठन् गुरोः प्रातरभिवादनमभिवादयीत-'असावहं भो' इति न । असावित्यत्राऽऽत्मनो नामनिर्देशः, यथा- 'अभिवादये यज्ञशर्माऽहं भो' इति ॥ १२ ॥

13 समानग्रामे च वसतामन्येषामपि

समान-ग्रामे च वसताम् अन्येषाम् अपि वृद्धतराणां प्राक् प्रातर्-आशात् १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. And (he shall salute) before the morning meal also other very aged (learned Brāhmaṇas) who may live in the same village.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

समानग्रामे च वसतामन्येषामपि वृद्धतराणां प्राक्प्रातराशात् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

अन्येषामप्याचार्यव्यतिरिक्तानाम् प्राक्प्रातराशात् प्रातर्भोजनात्माक् प्रातरभिवादनमभिवादयीत, ते चेत् समानग्रामे वसन्ति ॥ १३ ॥

14 प्रोष्य च समागमे

प्रोष्य च समागमे १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. If he has been on a journey, (he shall salute 18 the persons mentioned) when he meets them on his, return.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रोष्य च समागमे ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

यदा स्वयं प्रोष्य समागतो भवति, आचार्यादयो वा तदाऽप्यभिवादयीत । इदं नैमित्तिकम् । पूर्व नित्यम् ॥ १४ ॥

15 स्वर्गमायुश्चेप्सन्

स्वर्गम् आयुश् चेप्सन् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. (He may also salute the persons mentioned at other times), if he is desirous of heaven and long life.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्वर्गमायुश्चेप्सन् ॥ १५ ॥

प्रस्तावः⑥

अथ काम्यम् —

टिप्पनी⑥

अभिवादयीतेत्येव ॥ १५ ॥

16 दक्षिणम्बाहुं श्रोत्रसमम् प्रसार्य

दक्षिणम् बाहुं श्रोत्र-समं प्रसार्य ब्राह्मणोऽभिवादयीत उरःसमं
राजन्यो मध्यसमं
वैश्यो नीचैः
शूद्रः प्राञ्जलि १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. A Brāhmaṇa. shall salute stretching forward his right arm on a level with his ear, a Kṣatriya holding it on a level with the breast, a Vaiśya holding it on a level with the waist, a Śūdra holding it low, (and) stretching forward the joined hands. 19

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दक्षिणं बाहुं श्रोत्रसमं प्रसार्य ब्राह्मणोऽभिवादयीतोरस्समं राजन्यो मध्यसमं वैश्यो 20नीचैश्शुद्रः प्राञ्जलि ॥ १६ ॥

प्रस्तावः⑥

अभिवादनप्रकारं वर्णानुपूर्व्येणाऽऽह—

टिप्पनी⑥

ब्राह्मणोऽभिवादयमानः आत्मनो दक्षिण बाहु श्रोत्रसम प्रसार्याभिवादयीत । उरस्समं राजन्यः । दक्षिणं प्रसार्याभिवायीतेत्यत्रानुवर्तते । एवमुत्तरयो रपि । मध्यसममुदरसमम् । ऊरुसममित्यन्ये । नीचैः पादसमं शूद्रोऽभिवादयीत । प्राञ्जलि यथा भवति तथा अभिवादयति । अञ्जलिं कृत्वेत्यर्थः । प्राञ्जलिरिति युक्तः पाठः ॥१६॥

17 प्लावनञ् च नाम्नोऽभिवादनप्रत्यभिवादने

प्लावनं च नाम्नो (ऽन्तिमस्वरस्य) ऽभिवादन(सम्बद्ध)-प्रत्यभिवादने च पूर्वेषां वर्णानाम् १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. And when returning the salute of (a man belonging) to the first (three) castes, the (last syllable of the) name (of the person addressed) is produced to the length of three moras. 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्लावनं च नाम्नोऽभिवादनप्रत्यभिवादने च पूर्वेषां वणानाम् ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

अभिवादनस्य यत्प्रत्यभिवादनं तत्राभिवादयितुर्नाम्नः प्लावनं कर्तव्यम् प्लुतः कर्तव्य इत्यर्थः। पूर्वेषां वर्णानां शूद्रर्जितानामभिवादयमानानाम् ।

22प्रत्यभिवादेऽशूद्र' इति पाणिनीयस्मृतिः। तत्र 23 वाक्यस्य टे'रित्यनुवृत्तेः प्रत्यभिवादवाक्यस्यान्ते नामप्रयोगः तस्य टेः प्लुतः । 'आयुष्मान् भव सौम्या३ इति प्रयोक्तव्यः । स्मृत्यन्तरवशानाम्नश्च पश्चादकारः। तथा च मनुः —

> 24आयुष्मान् भव सौम्येति
> वाच्यो विप्रोऽभिवादने । अकारश्चास्य नाम्नोऽन्ते
> वाच्यः पूर्वाक्षरः प्लुतः ॥”

इति ।

'आयुष्मान् भव सौम्य देवदत्त ३ अ' इति प्रयोगः । शम्भुर्विष्णुः पिनाकपाणिश्चक्रपाणिरित्यादीनां नाम्नां सम्बुद्धौ गुणे कृते 'एचोऽप्रगृह्यस्यादूराद्धूते पूर्वस्यार्धस्यादुत्तरस्येदुतौ' इत्ययं विधिर्भवति । अन्ते अकारः । 25 'तयोर्य्वाविचि संहितायाम्' इति यकारवकारौ च भवतः शम्भा३व, विष्णा३व, पिनाकपाणा३य, चक्रपाणा३य, इति । अत्र सूत्रे 'प्रत्यभिवादने चे'ति चकारस्यार्थं न पश्यामः।

अपर आह- 'अभिवादने प्रत्यभिवादने च प्लावन'मिति । अस्मिन्नपि पक्षे द्वन्द्वेनाभिहितत्वाच्चशब्दोऽनर्थक एव । अभिवादने च शास्त्रान्तरे न क्वापि प्लुतो विहितः । तस्मादनर्थक एव चकारः। अनर्थकाश्च निपाता बहुलं प्रयुज्यन्ते ॥ १७ ॥

18 उदिते त्वादित्य आचार्येण

उदिते त्वादित्य आचार्येण समेत्योपसङ्ग्रहणम् १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. But when he meets his teacher after sunrise (coming for his lesson), he shall embrace (his feet). 26

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उदिते त्वादित्य आचार्येण समेत्योपसंग्रहणम् ॥१८॥

टिप्पनी⑥

उदिते त्वादित्ये आचार्येण अध्ययनार्थं समेत्य वक्ष्यमाणेन विधिनोपसंग्रहणं कुर्यात् ॥ १८ ॥

19 सदैवाभिवादनम्

सदैवाभिवादनम् १९

▼

⑤

>

▼ Bühler

19. On all other occasions he shall salute (him in the manner described above).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सदैवाऽभिवादनम् ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

अन्यदा सर्वदा पूर्वोक्तप्रकारेणाभिवादनमेव । अयमनुवाद उत्तरविवक्षया ॥ १९ ॥

20 उपसङ्ग्राह्य आचार्य इत्येके

उपसंग्राह्य आचार्य इत्येके २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. But some declare that he ought to embrace the (feet of his) teacher (at every occasion instead of saluting him).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उपसंग्राह्य आचार्य इत्येके ॥२०॥

टिप्पनी⑥

अभिवादनप्रसङ्गे सदैव उपसंग्राह्य आचार्य इत्येके मन्यन्ते ॥ २० ॥

21 दक्षिणेन पाणिना दक्षिणम्

दक्षिणेन पाणिना दक्षिणं पादम्
अधस्ताद् अभ्यधिमृश्य सकुष्ठिकम् उपसंगृह्णीयात् २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. Having stroked the teacher's right foot with his right hand below and above, he takes hold of it and of the ankle.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दक्षिणेन पाणिना दक्षिणं पादमधस्तादभ्यधिमृश्य सकुष्टिकमुपसंगृह्णीयात् ॥ २१ ॥

प्रस्तावः⑥

ननु किमिदमुपसंग्रहणम् ? तदाह—

टिप्पनी⑥

आत्मनो दक्षिणेन पाणिना आचार्यस्य दक्षिणं पादं अधस्तादभ्यधिमृश्य, अधिशब्द उपरिमाचे, अधस्ताच्चोपरिष्टाच्चाभिमृश्य । सकुष्ठिकं सगुल्फम् । साङ्गुष्ठमित्यन्ये । उपसंगृह्णीयात् । इदमुपसंग्रहणम् । एतत्कुर्यात् ॥ २१ ॥

22 उभाभ्यामेवोभावभिपीडयत उपसङ्ग्राह्याव् इत्येके

उभाभ्याम् एवोभाव् अभिपीडयत
उपसंग्राह्याव् इत्य् एके २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. Some say, that he must press both feet, each with both hands, and embrace them. 27

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उमाभ्यामेवोभावभिपीडयत उपसंग्राह्याविल्येके ॥२२॥

टिप्पनी⑥

उभाभ्यां पाणिभ्यां उभावेवाऽऽचार्यस्य पादौ अभिपीडयतो माणवकस्य उपसंग्राह्याविल्येके मन्यन्ते । अभिपीडयत इति 28कृत्यानां कतरि"इति कर्तरि षष्ठी । अत्र मनुः— 29 व्यत्यस्तपाणिना कार्यमुपसंग्रहणं गुरोः। सव्येन सव्यः स्प्रष्टव्यो दक्षिणेन च दक्षिणः ॥ इति ॥ २२ ॥

23 सर्वाह्णं सुयुक्तोऽध्ययनादनन्तरोऽध्याये

सर्वाह्णं सुयुक्तो ऽध्ययनाद् अनन्तरोऽध्याये २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. He shall be very attentive the whole day 30 long, never allowing his mind to wander from the lesson during the (time devoted to) studying.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वाह्णं सुयुक्तोऽध्ययनादनन्तरोऽध्याये ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

सर्वं च तदहश्च सर्वाह्णम् । 31 राजाहस्सखिभ्यष्टच् ।' 32 'अह्नोऽह्न एतेभ्य' इत्यहादेशः । 33 'अह्नोदन्ता'दिति णत्वम् । अत्यन्तसंयोगे द्वितीया।' सर्वाह्ण सदा सुयुक्तः सुसमाहितः अनन्यचित्तः । अध्ययनादनन्तरः नान्तरयतीत्यनन्तरः । अध्ययनाद्यथा आत्मानं नान्तरयति यथा अध्ययनान्न विच्छिद्येत तथा स्यात् । अध्याये स्वाध्यायकाले। अध्याय इत्यनुवादः । 34 'मनसा चानध्याय' इति विशेषविधानात् । 'अध्याये'दिति प्रायेण पठन्ति । तत्र तकारोऽपपाठश्छान्दसो वा ॥ २३ ॥

24 तथा गुरुकर्मसु

तथा गुरु-कर्मसु २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. And (at other times he shall be attentive) to the business of his teacher.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा गुरुकर्मसु ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

गुरुकर्मसु च तथा स्यात् सुयुक्तोऽनन्तरश्च स्यात् ॥ २४॥

25 मनसा चानध्याये

मनसा चानध्याये २५

▼

⑤

>

▼ Bühler

25. And during the time for rest (he shall give) his mind (to doubtful passages of the lesson learnt).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मनसा चाऽनध्याये ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

अनध्यायकाले मनसा च अध्यायादनन्तरः स्यात् । सन्देहस्थानानि मनसा निरूपयेत् । अध्ययनविषयामेव चिन्तां कुर्यात् ॥ २५ ॥

26 आहूताध्यायी च स्यात्

आहूताध्यायी च स्यात् २६

▼

⑤

>

▼ Bühler

26. And he shall study after having been called by the teacher (and not request the teacher to begin the lesson). 35

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आहूताध्यायी च स्यात् ॥ २६ ॥

टिप्पनी⑥

आचार्येणाहूतस्सन्नधीयीत, नाध्यापने स्वयं प्रवर्तयेत् ॥ २६ ॥

॥ इत्यापस्तम्बीये धर्मसूत्रे पञ्चमी कण्डिका ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
3. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
4. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
5. Manu II, 35.↩

6. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

7. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

8. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

9. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

10. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

11. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must

not study the same branch of science under any other teacher.↩

12. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

13. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

14. Manu II, 144.↩

15. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

16. आप० ध० १.३०.८.↩

17. Manu II, 146-148.↩

18. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

19. Manu II, 147.↩

20. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

21. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

22. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

23. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

24. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

25. आप० ध० १.३०.८.↩

26. Manu II, 37.↩

27. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

28. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

29. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

30. The meaning of the Sūtra is, that the initiation shall be performed as soon as the child is able to begin the study of the Veda. If it is so far developed at eight years, the ceremony must then be performed; and if it be then neglected, or, if it be neglected at any time when the capacity for learning exists, expiation prescribed in the following Sūtras must be performed. The age of sixteen in the case of Brāhmaṇas is the latest term up to which the ceremony may be deferred, in case of incapacity for study only. After the lapse of the sixteenth year, the expiation becomes also necessary. Manu II, 38; Yājñ. I, 37.↩

31. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

32. आप० ध० १.३०.८.↩

33. मनु० रमृ० २.६↩

34. गौ० ध० १. १, २↩

35. The meaning is, he shall keep all the restrictions imposed upon a student, as chastity, &c, but that he shall not perform the fire-worship or service to a teacher, nor study. Manu II, 39; XI. 192, Yājñ. I, 38; Weber, Ind. Stud. X, 101.↩

०६①

01 सदा निशायाङ् गुरुं④

सदा निशायां गुरुं संवेशयेत्तस्य पादौ प्रक्षाल्य संवाह्य १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. Every day he shall put his teacher to bed after having washed his (teacher's) feet and after having rubbed him. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सदा निशायां गुरुं संवेशपेत्तस्य पादौ प्रक्षाल्य संवाह्य ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

सदा प्रत्यहं निशायां अतिक्रान्ते प्रदोषे गुरु संवेशयेत् । कथम् ? तस्य गुरोः पादौ प्रक्षाल्य संवाह्य च । संवाहनं मर्दनम् ॥ १॥

02 अनुज्ञातः संविशेत्

अनुज्ञातः संविशेत् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. He shall retire to rest after having received (the teacher's permission). 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनुज्ञातः संविशेत् ॥ २ ॥

टिप्पनी⑥

3गुरुणाऽनुज्ञातस्तु स्वयं संविशेत् शयीत ॥२॥

03 न चैनमभिप्रसारयीत

न चैनमभिप्रसारयीत ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. And he shall not stretch out his feet towards him.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न चैनमभिप्रसारयीत ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

एनमाचार्यं प्रति पादौ न प्रसारयेत् ॥ ३ ॥

04 न खट्वायां सतोऽभिप्रसारणमस्तीत्येके

न खट्वायां सतोऽभिप्रसारणमस्तीत्येके ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. Some say, that it is not (sinful) to stretch out the feet (towards the teacher), if he be lying on a bed. 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न खट्वायां सतोऽभिप्रसारणमस्तीत्येके ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

यदा तु गुरुः खटवाया शेते तदा तं प्रति पादयोः प्रसारणं न दोषायेत्येके मन्यन्ते, स्वपक्षस्तु तत्रापि दोष इति ॥ ४ ॥

05 न चास्य सकाशे

न चास्य सकाशे संविष्टो भाषेत् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. And he shall not address (the teacher), whilst he himself is in a reclining position. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न चाऽस्य सकाशे संविष्टो भाषेत ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

अस्याऽऽचार्यस्य सकाशे स्वयं संविष्ट. शयानो न भाषेत ! कार्यावेदनादावुत्थायैव भाषेत ॥५॥

06 अभिभाषितस्त्वासीनः प्रतिब्रूयात्

अभिभाषितस्त्वासीनः प्रतिब्रूयात् ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. But he may answer (the teacher) sitting (if the teacher himself is sitting or lying down). 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अभिभाषितस्त्वासीनः प्रतियात् ॥ ६॥ .

टिप्पनी⑥

आचार्येणा7भिभाषितस्त्वासीनः प्रतिब्रूयात् । एतदाचार्य आसीने शयाने वा ॥६॥

07 अनूत्थाय तिष्ठन्तम्

अनूत्थाय तिष्ठन्तम् ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. And if (the teacher) stands, (he shall answer him,) after having risen also.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनुत्थाय तिष्ठन्तम् ॥ ७॥

टिप्पनी⑥

यदा त्याचार्यस्तिष्ठन् ब्रूते तदा तमनूत्थाय प्रतिब्रूयात् । उत्तरे द्वे सूत्रे स्पष्टार्थे ॥७॥

08 गच्छन्तमनुगच्छेत्

गच्छन्तमनुगच्छेत् ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. He shall walk after him, if he walks.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गच्छन्तमनुगच्छेत् ॥ ८ ॥

टिप्पनी⑥

(अग्रे १० सूत्रे व्याख्यातम्।)

09 धावन्तमनुधावेत्

धावन्तमनुधावेत् ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. He shall run after him, if he runs.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

धावन्तमनुधावेत् ॥ ९॥

टिप्पनी⑥

(अग्रे १० सूत्रे व्याख्यातम्।)

10 न सोपानःवेष्टितशिरा अवहितपाणिर्वासीदेत्

न सोपानःवेष्टितशिरा अवहितपाणिर्वासीदेत् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. He shall not approach (his teacher) with shoes on his feet, or his head covered, or holding (implements) in his hand.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न सोपानद्वेष्टितशिरा अवहितपाणिर्वासीदेत् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

उत्तरत्रोपानत्-प्रतिषेधान् 'न सोपान'द् इत्य् अनुवादः 'अध्वापन्नस् त्व् इति प्रतिप्रसोतुम् ।

आचार्यं न सोपानत्क आसीदेत् । नापि वेष्टितशिराः । अवहितपाणि - दात्रादिहस्तः

एवंभूतोऽपि नासीदेत् ॥ ८-१० ॥

11 अध्वापन्नस्तु कर्मयुक्तोवासीदेत्

अध्वापन्नस् तु कर्म-युक्तो ऽवासीदेत् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. But on a journey or occupied in work, he may approach him (with shoes on, with his head covered, or with implements in his hand),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अध्वापन्नस्तु कर्मयुक्तो वाऽऽसीदेत् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

अध्वानं प्राप्तोऽध्वापन्नः कर्मणि दात्रादिसाध्ये प्रवृत्तः कर्मयुक्तः एवंभूतस्तु सोपानत्कोऽप्यासीदेत् ॥ ११ ॥

12 न चेदुपसीदेत्

न चेद् उपसीदेत् १२

▼

⑤

>

▼ Bühler

12. Provided he does not sit down quite near (to his teacher).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न चेदुपसीदेत् ॥ १२॥

टिप्पनी⑥

8 न चेदाचार्यस्समीपे, उपसीदेत् उपविशेत् । यदि तूपविशेदध्वापन्नः कर्मयुक्तो वा तदोपानत्प्रभृतीनि विहायोपविशेत् ॥ १२ ॥

13 देवमिवाचार्यमुपासीताविकथयन्न् अविमना वाचं

देवम् इवाचार्यम् उपासीताविकथयन्न् अविमना वाचं शुश्रूषमाणोऽस्य १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. He shall approach his teacher with the same reverence as a deity, without telling idle stories, attentive and listening eagerly to his words.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

देवमिवाचार्यमुपासीताऽविकथयन्नविमना वाचं शुश्रूषमाणोऽस्य ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

यो यं देवं भजते स तद्भावनया तमिवाऽऽचार्यमुपासीत । अविकथयन् 9व्यर्थां कथामकुर्वन् । अविमनाः अविक्षिप्तमनाः । अस्याऽऽचार्यस्य वाचं शुश्रूषमाणः ॥ १३ ॥

14 अनुपस्थकृतः

अनुपस्थकृतः १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. (He shall not sit near him). with his legs crossed.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनुपस्थकृतः ॥१४॥

टिप्पनी⑥

10उपस्थकरणं प्रसिद्धम् । तत्कृत्वा नोपासीत ॥ १४॥

15 अनुवाति वीतः

अनुवाति वीतः १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. If (on sitting down) the wind blows from the pupil towards the master, he shall change his place. 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनुवाति12 वाते वीतः ॥१५॥

टिप्पनी⑥

वाते अनुवाति सति वीतः विपर्ययेणेतः उपासीत । प्रतिवातं तु वक्ष्यमाणेन प्रतिषिध्यते । मनुरप्याह— 13 प्रतिवातेऽनुवाते च नासीत गुरुणा सहेति ॥ १५ ॥

16 अप्रतिष्टब्धः पाणिना

अप्रतिष्टब्धः पाणिना १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. (He shall sit) without supporting himself with his hands (on the ground),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अप्रतिष्टब्धः पाणिना ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

पाणिना प्रतिष्टब्धो न स्यात् पाणितलं भूमौ कृत्वा पाण्यवलम्बनो नाऽऽसीत ॥१६॥

17 अनपश्रितोऽन्यत्र

अनपश्रितोऽन्यत्र १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. Without leaning against something (as a wall or the like).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनपाश्रितोऽन्यत्र ॥१७॥

टिप्पनी⑥

अन्यत्र कुड्याद्यपाश्रितो न स्यात् । कुड्याद्यपाश्रितो नासीत ॥१७॥

18 यज्ञोपवीती द्विवस्त्रः

यज्ञोपवीती द्विवस्त्रः १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. If the pupil wears two garments, he shall wear the upper one after the fashion of the sacred thread at the sacrifices. 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यज्ञोपवीती द्विवस्त्रः॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

यदा द्विवस्त्रस्तदा वाससाऽन्यतरेण यज्ञोपवीती स्यात् । 15 "अपि वा सूत्रमेवोपवीतार्थ" इत्येष कल्पस्तदा न भवति ॥१८॥

19 अधोनिवीतस्त्वेकवस्त्रः

अधोनिवीतस्त्वेकवस्त्रः १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. But, if he wears a (lower) garment only, he shall wrap it around the lower part of his body.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अधोनिवीतस्त्वेकवस्त्रः ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

यदा त्वेकवस्त्रो भवति तदा अधोनिवीतः स्यात् । न तस्य दीर्घस्याप्येकदेशेनोत्तरीयं कुर्यात् ॥ १९ ॥

20 अभिमुखोऽनभिमुखम्

अभिमुखोऽनभिमुखम् २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. He shall turn his face towards his teacher though the latter does not turn his towards him. 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अभिमुखोऽनभिमुखम् ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

स्वयमाचार्याभिमुखः आत्मानं प्रत्यनभिमुखमाचार्यमुपासीत । 17स्वयमाचार्यमपश्यन् आचार्यस्य पुरत आर्जवे नाऽऽसीत ॥ २० ॥

21 अनासन्नोऽनतिदूरे

अनासन्नोऽनतिदूरे २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. He shall sit neither too near to, nor too far (from the teacher),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनासन्नोऽनतिदूरे18 च ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

अत्यासन्नो न स्यादतिदूरे च न स्यात् ॥ २१ ॥

22 यावदासीनो बाहुभ्याम्प्राप्नुयात्

यावदासीनो बाहुभ्याम्प्राप्नुयात् २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. (But) at such a distance, that (the teacher) may be able to reach him with his arms (without rising).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यावदासीनो बाहुभ्यां प्राप्नुयात् ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

यावत्यन्तराले आसीन आचार्यं बाहुभ्यां प्राप्तुं शक्नुयात् तावत्यासीत ॥२२॥

23 अप्रतिवातम्

अप्रतिवातम् २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. (He shall not sit in such a position) that the wind blows from the teacher, towards himself. 19

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अप्रतिवातम् ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

आचार्यस्य 20प्रतिवाते नाऽऽसीत् ॥ २३ ॥

24 एकाध्यायी दक्षिणम् बाहुम्

एकाध्यायी दक्षिणं बाहुं प्रत्युपसीदेत् २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. (If there is) only one pupil, he shall sit at the right hand (of the teacher).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एकाध्यायी दक्षिणं बाहुं प्रत्युपसीदेत् ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

यदा एक एवाऽधीते तदा आचार्यस्य दक्षिणं बाहुं प्रति दक्षिणे पार्श्व उपसीदेत् उपविशेत् ॥ २४ ॥

25 यथावकाशम् बहवः

यथावकाशं बहवः २५

▼

⑤

>

▼ Bühler

25. (If there are) many, (they may sit) as it may be convenient.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथावकाशं बहवः ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

बहवस्तु शिष्या यथावकाशमुपसीदेयुः ॥ २५ ॥

26 तिष्ठति च नासीतानासनयोगविहिते

तिष्ठति च नासीतानासनयोगविहिते २६

▼

⑤

>
▼ Bühler

26. If the master (is not honoured with a seat and) stands, the (pupil) shall not sit down.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तिष्ठति च नाऽऽसीताऽनासनयोगविहिते ॥ २६ ॥

टिप्पनी⑥

आसनयोग आसनकल्पना। आसनयोगेन विहितस्सम्भावित आसनयोगविहितः । आसनयोगेनाऽसम्भाविते आचार्ये तिष्ठति सति स्वयं नाऽऽसीत् ॥ २६ ॥

27 आसीने च न

आसीने च न संविशेत् २७

▼

⑤

>
▼ Bühler

27. (If the master is not honoured with a couch) and sits, the (pupil) shall not lie down on a couch.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आसीने च न संविशेत् ॥ २७ ॥

टिप्पनी⑥

21 'अशयनयोगविहिते' इति पूर्वानुसारेण गम्यते । शयनयोगेनासम्भावित आचार्ये आसीने स्वयं न संविशेत् न शयीत ॥ २७ ॥

28 चेष्टति च चिकीर्षन्तच्छक्तिविषये

चेष्टति च चिकीर्षन्तच्छक्तिविषये २८

▼

⑤

>
▼ Bühler

28. And if the teacher tries (to do something), then (the pupil) shall offer to do it for him, if it is in his power.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

चेष्टति च चिकीर्षंस्तच्छक्तिविषये ॥ २८ ॥

टिप्पनी⑥

व्यत्ययेन परस्मैपदम् । आचार्ये चेष्टति सति स्वयमपि तच्चिकीर्षन् स्यात् । किमविशेषेण, ? शक्तिविषये । यद्याचार्येण क्रियमाणमात्मनश्शक्तेर्विषयो भवति । 'चिकीर्ष'न्निति सन्प्रयोगादिच्छामेव प्रदर्शयेत् नाच्छिद्य कुर्यात् । प्रदर्शितायां त्विच्छायामाचार्यश्चेदनुजानीयात्, कुर्यात् । अशक्तिविषये तु नेच्छापि प्रदर्शयितव्या । चिकीर्षेदिति युक्तः पाठः ॥२८॥

29 न चास्य सकाशेऽन्वक्स्थानिनमुपसङ्गृह्णीयात्

न चास्य सकाशेऽन्वक्स्थानिनमुपसंगृह्णीयात् २९

▼

⑤

>

▼ Bühler

29. And, if his teacher is near, he shall not embrace (the feet of) another Guru who is inferior (in dignity), 22

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न चास्य सकाशेऽन्वक्स्थानिन उपसङ्ग्रह्णीयात् ॥ २९ ॥

टिप्पनी⑥

आचार्यव्यतिरिक्ता गुरवोऽन्वक्स्थानिन इति स्मार्तो व्यवहारः । आचार्यः श्रेष्ठो गुरूणाम् । तमपेक्ष्यान्वक्यानं पदमेषामिति कृत्वा । आचार्यस्य सन्निधौ अन्वक्स्थानिनं नोपसंगृह्णीयात् ॥ १९ ॥

30 गोत्रेण वा कीर्तयेत्

गोत्रेण वा कीर्तयेत् ३०

▼

⑤

>

▼ Bühler

30. Nor shall he praise (such a person in the teacher's presence) by (pronouncing the name of) his family.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गोत्रेण वा कीर्तयेत् ॥ ३० ॥

टिप्पनी⑥

न चैनमन्वक्स्थानिनं गोत्रेण अभिजनकुलादिना वा कीर्तयेत् न स्तुवीत भार्गवोऽयं महाकुलप्रसूत इति ॥ ३० ॥

31 न चैनम् प्रत्युत्तिष्ठेदनूत्तिष्ठेद्वा

न चैनं प्रत्युत्तिष्ठेदनूत्तिष्ठेद्वा ३१

▼

⑤

>
▼ Bühler

31. Nor, shall he rise to meet such an (inferior Guru) or rise after him, 23

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न चैनं प्रत्युत्तिष्ठेदनुत्तिष्ठेवा24पि चेत्तस्य - गुरुः स्यात् ॥ ३१ ॥

टिप्पनी⑥

प्रत्युत्थानमप्यस्य न कर्तव्यमाचार्यस्य सकाशे । यदा पुनरसावाचार्यसकाशे त्वासित्वा गमनायोत्तिष्ठति तदाऽनूत्थानमपि न कर्तव्यम् । यद्यप्यसौ तस्य25आचार्यस्य मातुलादिः गुरुः स्यात् । 26 आचार्य-प्राचार्यसन्निपात' इति वक्ष्यति। तेनैव ग्यायेन27मातुलादिष्वपि प्रसङ्गे इदमुक्तम् ॥ ३१ ॥

32 अपि चेत्तस्य गुरुः

अपि चेत्तस्य गुरुः स्यात् ३२

▼

⑤

>

▼ Bühler

32. Even if he be a Guru of his teacher.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अपि चेत्तस्य गुरुः स्यात् ॥ ३२ ॥

टिप्पनी⑥

यद्यप्यसौ तस्य28आचार्यस्य मातुलादिः गुरुः स्यात् । 29 आचार्य-प्राचार्यसन्निपात' इति वक्ष्यति। तेनैव ग्यायेन30मातुलादिष्वपि प्रसङ्गे इदमुक्तम् ॥ ३१ ॥

33 देशात्त्वासनाच्च संसर्पेत्

देशात्त्वासनाच्च संसर्पेत् ३३

▼

⑤

>
▼ Bühler

33. But he shall leave his place and his seat, (in order to show him honour.)

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

देशात्वासनाच संसर्पेत् ॥ ३३॥

टिप्पनी⑥

किं तु देशादासनाच्च संसर्पेत्तस्य सम्मानार्थम् ॥ ३३ ॥

34 नाम्ना तदन्तेवासिनङ् गुरुमप्यात्मन

नाम्ना तदन्तेवासिनं गुरुमप्यात्मन इत्येके ३४

▼

⑤

>
▼ Bühler

34. Some say, that (he may address) a pupil of his teacher by (pronouncing) his name, if he is also one of his (the pupil's) own Gurus. 31

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाम्ना तदन्तेवासिनं गुरुमप्यात्मन इत्येके ॥ ३४ ॥

टिप्पनी⑥

तस्याचार्यस्यान्तेवासिनं नाम्नैव कीर्तयेत् 'यज्ञशर्मन्नि'ति । यद्यप्यसा. वात्मनो गुरुभवति इत्येवमेके मन्यन्ते । स्वपक्षस्तु गुरोर्नामग्रहणं न कर्तव्यमिति ॥ ३४ ॥

35 यस्मिंस्त्वनाचार्यसम्बन्धाद्गौरवं वृत्तिस्तस्मिन्न् अन्वक्स्थानीये

यस्मिंस्त्वनाचार्यसंबन्धाद्गौरवं वृत्तिस्तस्मिन्न् अन्वक्स्थानीये ऽप्याचार्यस्य ३५

▼

⑤

>
▼ Bühler

35. But towards such a person who is generally revered for some other reason than being the teacher (e.g. for his learning), the (student) should behave as towards his teacher, though he be inferior in dignity to the latter.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यस्मिंस्त्वनाचार्यसम्बन्धाद्गौरवं वृत्तिस्तस्मिन्नन्वक्स्थानीये ऽप्याचार्यस्य ॥ ३४ ॥

टिप्पनी⑥

यस्मिंस्तु पुरुषे शिष्याचार्यभावमन्तरेणापि विद्याचारित्र्यादिना लौकिकानां गौरवं तस्मिन्नन्वक्स्थानीये ऽप्याचार्ये या वृत्तिस्सा कर्तव्या। अन्वक्स्थानीयोऽप्यनन्वक्स्थान्येव ॥ ३४ ॥

36 भुक्त्वाचार्यस्य सकाशे नानूत्थायोच्छिष्टम्

भुक्त्वाचार्यस्य सकाशे नानूत्थायोच्छिष्टं प्रयच्छेत् ३६

▼

⑤

>
▼ Bühler

36. After having eaten in his (teacher's) presence, he shall not give away the remainder of the food without rising. 32

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भुक्त्वा चास्य सकाशे नानूत्थायोच्छिष्टं प्रयच्छेत् ॥ ३५ ॥

टिप्पनी⑥

आचार्यस्य भुञानस्याऽभुञ्जानस्य वा सकाशे भुक्त्वा अनूत्थाय छान्दसो दीर्घः। उत्थानमकृत्वा उच्छिष्टं न प्रयच्छेत् 33 आर्याय वा पर्यवदध्यादिति यद्विहितम् ॥ ३५ ॥

37 आचामेद्वा

आचामेद्वा ३७

▼

⑤

>

▼ Bühler

37. Nor shall he sip water (after having eaten in the presence of his teacher without rising).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आचामेद्वा ।। ३६ ॥

टिप्पनी⑥

आचमनमप्यनुत्थाय न कुर्यात् ।। ३६ ।।

38 किङ् करवाणीत्य् आमन्त्र्य

किं करवाणीत्य् आमन्त्र्य ३८

▼

⑤

>

▼ Bühler

38. (He shall rise) addressing him (with these words), 'What shall I do?'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

किं करवाणीत्यामन्त्र्य ॥ ३७॥

टिप्पनी⑥

आचम्य किं करवाणीति गुरुमामन्त्र्य ॥ ३७॥

इस्यापस्तम्बधर्मसूत्रे प्रथमप्रश्ने षष्ठी कण्डिका ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
3. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
4. Manu II, 35.↩
5. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
6. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially

ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

7. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
8. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
9. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
10. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
11. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩
12. आप० ध० १.३०.८.↩
13. मनु० रमृ० २.६↩
14. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in

order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

15. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

16. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

17. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

18. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

19. Manu II, 144.↩

20. आप० ध० १.३०.८.↩

21. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

22. Manu II, 146-148.↩

23. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

24. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

25. आप० ध० १. ३१. १.↩

26. यत्किञ्चनदिङ्मुखेन इति क० पु० ।↩

27. प्रतिषेध परिसंख्येत्यनर्थान्तरम् । परिसङ्ख्या वर्जनबुद्धिः । तद्विषयको विधिः परिसंख्याविधिः । स परिसंख्यापदेनाऽप्यभिधीयते इति मीमांसकाना मतम् । अत एव

    > विधिरत्यन्तमप्राप्ते नियम पाक्षिके सति ।
    > तत्र चान्यत्र च प्राप्ते परिसंख्येति गीयते ॥

    इत्येव वार्तिककारैरुक्तम् । ग्रन्थकारस्त्वयं परिसंख्या नियमविधावेवान्तर्भावयति ॥↩

28. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

29. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

30. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

31. Manu II, 147.↩

32. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

33. आप० ध० १.३०.८.↩

०७①

01 उत्तिष्ठेत् तूष्णीं वा④

उत्तिष्ठेत् तूष्णीं वा १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. Or he may rise silently.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उत्तिष्ठेतूष्णीं वा ॥१॥

टिप्पनी⑥

उत्तिष्ठेत् तूष्णीं वा। विकल्पः । आमन्त्र्येति लिङ्गात् 1 उत्थायाप्याचामन्नाचार्यसकाश एवाऽऽचामेत् ॥ १॥

02 नापपर्यावर्तेत गुरोः प्रदक्षिणीकृत्यापेयात्

नापपर्यावर्तेत गुरोः प्रदक्षिणीकृत्यापेयात् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. Nor shall he (in going away) move around his teacher with his left hand turned towards him; he shall go away after having walked around him with his right side turned towards him.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नापपर्यावर्तेत गुरोः प्रदक्षिणीकृत्याऽपेयात् ॥ २॥

टिप्पनी⑥

उत्थाय कार्यवत्तया गन्तुमिच्छन् गुरोरप अपसव्यं न पर्यावर्तेत । किं तु प्रदक्षिणीकृत्याऽपेयात् ॥ २॥

03 न प्रेक्षेत नग्नां

न प्रेक्षेत नग्नां स्त्रियम् ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. He shall not look at a naked woman. 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न प्रेक्षेत नग्नां स्त्रियम् ॥ ३॥

टिप्पनी⑥

यां प्रेक्षमाणस्य मनसो विकारो भवति तां नग्नां स्त्रियं नेक्षेत ॥३॥

04 ओषधिवनस्पतीनाम् आच्छिद्य नोपजिघ्रेत्

ओषधि-वनस्पतीनाम् आच्छिद्य नोपजिघ्रेत् ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. He shall not cut the (leaves or flowers) of herbs or trees, in order to smell at them. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

4ओषधिवनस्पतीनामाच्छिद्य नोपजिघ्रेत् ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

ओषधयः फलपाकान्ताः । वनस्पतयो ये पुष्पैर्विना फलन्ति । वीरुद्वृक्षाणामप्युपलक्षणम् । तेषां पत्रपुष्पाण्याच्छिद्य नोपजिघ्रेत् । 'आच्छिद्ये'तिवचना5द्यादृच्छिकाघ्राणे न दोषः ॥ ४ ॥

05 उपानहौ छत्रं यानम्

उपानहौ छत्रं यानम् इति च वर्जयेत् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. He shall avoid (the use of) shoes, of an umbrella a chariot, and the like (luxuries). 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उपानहौ छत्रं यानमिति वर्जयेत् ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

यानं शकटादि । इतिशब्द एवंप्रकाराणामुपलक्षणार्थः । तत्र गौतमः—
7वर्जयेन्मधुमांसगन्धमाल्यदिवास्वप्नाञ्जनाभ्यञ्जनयानोपानच्छत्रकाम-
क्रोधलोभमोहवादवादनस्नानदन्तधावनहर्षनृत्तगीतपरिवादभयानीति ॥ ५ ॥

06 न स्मयेत

न स्मयेत ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. He shall not smile.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न स्मयेत ॥६॥

टिप्पनी⑥

स्मितं न कुर्यात् ॥ ६॥

07 यदि स्मयेतापिगृह्य स्मयेतेति

यदि स्मयेतापिगृह्य स्मयेतेति हि ब्राह्मणम् ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. If he smiles, he shall smile covering (the mouth with his hand); thus says a Brāhmaṇa.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यदि स्मयेताऽपिगृह्य स्मयेतेति हि ब्राह्मणम् ॥७॥

टिप्पनी⑥

यदि हर्षातिरेकं धारयितुं न शक्यते अपिगृह्य हस्तेन मुखं पिधाय स्मयेत इति ब्राह्मणं 'न स्मयेते'त्यारभ्य ॥ ७ ॥

08 नोपजिघ्रेत् स्त्रियम् मुखेन

नोपजिघ्रेत् स्त्रियं मुखेन ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. He shall not touch a woman with his face, in order to inhale the fragrance of her body.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

8नोपजितघ्रेत् स्त्रियं मुखेन ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

स्नाता9मनुलिप्तां वा स्त्रियं बालामपि मुखेन नोपजिघ्रेत् । 'मुखेने'ति वचनाद्याद‍ृच्छिके गन्धाघ्राणे न दोषः ॥ ८॥

- १. पञ्च ह वा एते ब्रह्मचारिण्यग्नयो धीयन्ते द्वौ पृथग्घस्तयोर्मुखे हृदये उपस्थ एव पञ्चमः । स यद्दक्षिणेन पाणिना स्त्रियं न स्पृशति तेनाहरहर्याजिनां लोकमवरुन्धे, यत्सव्येन तेन प्रव्राजिनाम् , यन्मुखेन, तेनाग्निप्रस्कन्दिनां, यद्धृदयेन तेन शूराणां, यदुपस्थेन तेन गृहमेधिनां, तैश्चेत् स्त्रियं पराहरत्यनग्निरिव शिष्यते ॥ इति गो० ब्रा० १.२. ४.

09 न हृदयेन प्रार्थयेत्

न हृदयेन प्रार्थयेत् ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. Nor shall he desire her in his heart.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न हृदयेन प्रार्थयेत् ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

हृदयेन मनसा स्त्रियं न प्रार्थयेत्—अपीयं मम स्यादिति ॥ ९ ॥

10 नाकारणाद् उपस्पृशेत्

नाकारणाद् उपस्पृशेत् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. Nor shall he touch (a woman at all) without a particular reason. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाकारणादुपस्पृशेत् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

कारणेन विना स्त्रियं नोपस्पृशेत् । कारणं योक्त्रसन्नहनविमोचनविषम-पतनधारणादि ॥१०॥

11 रजस्वलो रक्तदन् सत्यवादी

रजस्वलो रक्तदन् सत्यवादी स्याद् इति हि ब्राह्मणम् ११

▼

⑤

>

▼ Bühler

11. A Brāhmaṇa declares, 'He shall be dusty, be shall have dirty teeth, and speak the truth.' 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

रजस्वलो रक्तदन्सत्यवादी स्यादिति हि ब्राह्मणम् ॥११॥

टिप्पनी⑥

रजस्वलो मलिनगात्रः । रक्ता दन्ता यस्य स रकदन् । छान्दसो दन्नादेशः । पङ्किलदन्त इत्यर्थः । एतदुभय'मुत्सन्नश्लाघ'(१-१-२७) इत्यनेन गतमपि पुनरुच्यते12श्रौतप्रायश्चित्तप्राप्त्यर्थम् । अनृतं वोक्त्वे(२-१-२७)ति प्रायश्चित्तं वक्ष्यति । सत्यवादी स्यादिति ब्राह्मणम् ॥ ११ ॥

12 यां विद्याङ् कुरुते

यां विद्यां कुरुते गुरौ तेऽप्यस्याचार्या ये तस्यां गुरोर्वंश्याः १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. Those teachers, who instructed his teacher in that science which he (the pupil) studies with him, (are to be considered as) spiritual teachers (by the pupil). 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यां विद्यां कुरुते गुरौ तेऽप्यस्याऽऽचार्या ये तस्यां गुरोर्वंश्याः ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

आत्मीये गुरौ यां विद्यां कुरुते अधीते तस्यां विद्यायां गुरोर्वंश्या आचार्यास्तेऽप्यस्य माणवकस्याचार्याः । यद्यपि साक्षात्तेभ्यो न गृह्यते विद्या तथापि आचार्यवदुपचरितव्याः। 'तस्या'मिति वचनाद्विद्यान्तरे ये वंश्यास्तेषु नायं विधिः ॥ १२ ॥

13 यानन्यान्पश्यतोऽस्योपसङ्गृह्णीयात् तदा त्वेत

यानन्यान्पश्यतोऽस्योपसंगृह्णीयात् तदा त्वेत उपसंग्राह्याः १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. But if (a teacher), before the eyes of his (pupil), embraces the feet of any other persons, then he (the pupil also) must embrace their feet, (as long as he remains) in that (state of studentship). 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यानन्यान् पश्यतोऽस्योपसङ्ग्रहीयात्तदात्वे त उपसङ्ग्राह्याः ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

अस्य माणवकस्य पश्यत अस्मिन् माणवके पश्यति यानन्यानाचार्य उपसङ्गृहीयात्ते माणवकस्याऽप्युपसङ्ग्राह्याः । किं सदा ? नेत्याह-तदात्वे तस्यां दशायाम् । अपर आह—तदा प्रभृति त उपसङ्ग्राह्याः । तुशब्दात् समावृत्तेनापि ॥ १३ ॥

14 गुरुसमवाये भिक्षयामुत्पन्नायां यमनुबद्धस्तदधीना

गुरुसमवाये भिक्षयामुत्पन्नायां यमनुबद्धस्तदधीना भिक्षा १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. If (a pupil) has more than one teacher, the alms (collected by him) are at the disposal of him to whom he is (just then) bound. 15

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गुरुसमवाये भिक्षायामुत्पन्नायां यमनुबद्धस्तदधीना भिक्षा ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

यदा द्वितीयं तृतीयं वा वेदमधीयानस्य माणवकस्य गुरुसमवायो भवति गुरवः समवेता भवन्ति, तदा भिक्षायामुत्पन्नायां य गुरुमिदानीमनुबद्धो माणवकः यतोऽधीते तदघीना भिक्षा, यच्च यावञ्च लब्धं तत्तस्मै निवेदनीयम् । 16तदुक्तश्च विनियोगः ॥ १४ ॥

15 समावृत्तो मात्रे दद्यात्

समावृत्तो मात्रे दद्यात् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. When (a student) has returned home (from his teacher), he shall give (whatever he may obtain by begging or otherwise) to his mother.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

समावृत्तो मात्रे दद्यात् ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

कृतसमावर्तनो विवाहात्प्रागर्जितं मात्रे दद्यात् ॥ १५ ॥

16 माता भर्तारङ् गमयेत्

माता भर्तारं गमयेत् १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. The mother shall give it to her husband;

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

माता भर्तारं गमयेत् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

माता पतिं प्रापयेत् ॥ १६ ॥

17 भर्ता गुरुम्

भर्ता गुरुम् १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. (And) the husband to the (student's) teacher.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मतो गुरुम् ॥ १७॥

टिप्पनी⑥

17 प्रापयेत् । माणवकस्य गुरुम् , माणवकार्जितं द्रव्यं तद्गामि युक्तम् ॥ १७॥

18 धर्मकृत्येषु वोपयोजयेत्

धर्मकृत्येषु वोपयोजयेत् १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. Or he may use it for religious ceremonies. 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

धर्मकृत्येषु वोपयोजयेत् ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

धर्मकृत्यानि विवाहादीनि । तेषु वोपयोजयेत् । गुरोरभावे भर्ता, तदभावे माता, सर्वेषामभावे समावृत्तस्स्वयमेव वा ॥ १८ ॥

19 कृत्वा विद्यां यावतीं

कृत्वा विद्यां यावतीं शक्नुयाद्वेददक्षिणामाहरेद्धर्मतो यथाशक्ति १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. After having studied as many (branches of) sacred learning as he can, he shall procure in a righteous manner the fee for (the teaching of) the Veda (to be given to his teacher), according to his power. 19

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कृत्वा विद्यां यावतीं शक्नुयात् वेददक्षिणामाहरेद्धर्मतो यथाशक्ति ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

यावतीं विद्यां कर्तुं शक्नुयात् वेदं वेदौ वेदान्वा तावतीं कृत्वा अधीत्य गुरवे दक्षिणामाहरेत् दद्यात् । यथाशक्ति धर्मत उपलब्धां न्यायार्जिताम् ॥१९॥

20 विषमगते त्वाचार्य उग्रतः

विषमगते त्वाचार्य उग्रतः शूद्र तो वाहरेत् २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. But, if the teacher has fallen into distress, he may take (the fee) from an Ugra or from a Śūdra. 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विषमगते त्वाचार्य उग्रतः शुद्रतो वाऽऽहरेत् ॥२०॥

प्रस्तावः⑥

धर्मत इत्यस्यापवादः-

टिप्पनी⑥

यदा त्वाचार्यो विषमगतः आपद्गतः तदा उग्रतः शूद्रतो वाऽपि प्रतिगृह्य दक्षिणामाहरेत् । वैश्याच्छूद्रायां जात उग्रः, उग्रकर्मा वा द्विजातिः ॥२०॥

21 सर्वदा शूद्रत उग्रतो

सर्वदा शूद्रत उग्रतो वाचार्यार्थस्याहरणं धार्म्यमित्येके २१

▼

⑤

>

▼ Bühler

21. But some declare, that it is lawful at any time to take the money for the teacher from an Ugra or from a Śūdra.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वदा शूद्रत उग्रतो वाऽऽचार्यार्थस्याहरणं धर्म्यमित्येके ॥२१॥

टिप्पनी⑥

सर्वदा आपद्यनापदि च, आचार्यार्थस्याचार्याय यो देयोऽर्थः तस्य, उग्रतः शूद्रतो वाऽऽहरणं धर्म्यं धर्मादनपेतमित्येके मन्यन्ते । 'धार्म्य'मिति पाठे स्वार्थे ष्यञ् ॥२१॥

22 दत्वा च नानुकथयेत्

दत्वा च नानुकथयेत् २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. And having paid (the fee), he shall not boast of having done so.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दत्वा च नाऽनुकथयेत् ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

आचार्याय एवमाहृत्य दत्वा न कीर्तयेत्,-एतन्मया दत्तमिति ॥ २२ ॥

23 कृत्वा च नानुस्मरेत्

कृत्वा च नानुस्मरेत् २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. And he shall not remember what he may have done (for his teacher).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कृत्वा च नाऽनुस्मरेत् ॥२३॥

टिप्पनी⑥

गुरवे प्राणसंशयादौ महान्तमप्युपकारं कृत्वा नानुस्मरेत् नाऽनुचिन्तयेत्- अहो मयैतत्कृतमिति ॥ २३ ॥

24 आत्मप्रशंसाम् परगर्हामिति च

आत्मप्रशंसां परगर्हामिति च वर्जयेत् २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. He shall avoid self-praise, blaming others, and the like. 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आत्मप्रशंसा परगर्हामिति च वर्जयेत् ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

इतिकरणादेवंप्रकाराणामात्मनिन्दादीनामपि प्रतिषेधः ॥ २४ ॥

25 प्रेषितस्तदेव प्रतिपद्येत

प्रेषितस्तदेव प्रतिपद्येत २५

▼

⑤

>
▼ Bühler

25. If he is ordered (by his teacher to do something), he shall do just that.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रेषित22स्तदैव प्रतिपद्येत ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

इदं कुर्वित्याचार्येण प्रेषितस्तदैव प्रतिपद्येत कुर्यात् क्रियमाणमपि कर्म विहाय, यद्यपि 23तदाचार्यस्य भवति ॥ २५ ॥

26 शास्तुश्चानागमाद्वृत्तिरन्यत्र

शास्तुश्चानागमाद्वृत्तिरन्यत्र २६

▼

⑤

>

▼ Bühler

26. On account of the incompetence of his teacher, (he may go) to another (and) study (there). 24

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शास्तुश्चाऽनागमाद्वृत्तिरन्यत्र ॥ २६ ॥

टिप्पनी⑥

तस्मिंश्च 'विद्याकर्मान्त'मित्यस्यापवादः । यद्यधिगन्तुमिष्टा विद्या शास्तुः शाशितुराचार्यस्य सम्यङ्नाऽगच्छति तदा तस्यानागमात् अन्यत्र पुरुषान्तरे वृत्तिर्भवत्येव यस्य सम्यगागच्छति । 25येषामाचार्यविधिप्रयुक्तमध्ययनं तेषामेतन्नोपपद्यत' इत्यवोचाम ॥ २६॥

27 अन्यत्रोपसङ्ग्रहणादुच्छिष्टाशनाच्चाचार्यवदाचार्यदारे वृत्तिः

अन्यत्रोपसंग्रहणादुच्छिष्टाशनाच्चाचार्यवदाचार्यदारे वृत्तिः २७

▼

⑤

>

▼ Bühler

27. He shall behave towards his teacher's wife as towards the teacher himself, but he shall not embrace her feet, nor eat the residue of her food. 26

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्यत्रोपसङ्ग्रहणादुच्छिष्टाशनाच्चाऽऽचार्यवदाचार्यदारे वृत्तिः ॥२७॥

टिप्पनी⑥

अन्यत्रेत्युभयोश्शेषः । आचार्यवदाचार्यदारे वृत्तिः कर्तव्या । किमविशेण ? अन्यत्रोपसङ्ग्रहणादुच्छिष्टाशनाच्च, पादोपसङ्ग्रहणमुच्छिष्टाशनं च इत्येतदुभयं वर्जयित्वा । अत्र मनुः— 27'गुरुवद्गुरुपत्नीषु युवतीर्नाभिवादयेत् ।' इति । गौतमस्तु, 28 'तद्भार्यापुत्रेषु चैवं नोच्छिष्टाशनस्नापनप्रसाधनपादप्रक्षालनोन्मर्दनोपसङ्ग्रहणानि' इति । 'दार' इत्येकवचनं छान्दसम् ॥२७॥

28 तथा समादिष्टेऽध्यापयति

तथा समादिष्टेऽध्यापयति २८

▼

⑤

>
▼ Bühler

28. So also (shall he behave) towards him who teaches him at (the teacher's) command, 29

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा समादिष्टेऽध्यापयति ।। २८ ॥

टिप्पनी⑥

य आचार्येण समादिष्टो नियुक्तोऽध्यापयति तस्मिन्नाचार्यदारवद्वृत्तिः । 'अध्यापयतीति वर्तमाननिर्देशा30द्यावदध्यापनमेवायमतिदेशः ॥ २८ ॥

29 वृद्धतरे च सब्रह्मचारिणि

वृद्धतरे च सब्रह्मचारिणि २९

▼

⑤

>
▼ Bühler

29. And also to a fellow-student who is superior (in learning and years). 31

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वृद्धतरे च सब्रह्मचारिणि ॥ २९ ॥

टिप्पनी⑥

अध्यापयतीति नाऽनुवर्तते । तरनिर्देशात् ज्ञानवयोभ्यामुभाभ्यां वृद्धो गृह्यते । सब्रह्मचारी सहाध्यायी, समाने ब्रह्मणि व्रत चरतीति । तस्मिन्नप्याचार्यदारवद्वृत्तिः।
'आचार्यात्पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया।
पादं सब्रह्मचारिभ्यः पादः कालेन पच्यते ॥' इत्यध्ययने उपयोगसम्भवात् ॥ २९॥

30 उच्छिष्टाशनवर्जमाचार्यवदाचार्यपुत्रे वृत्तिः

उच्छिष्टाशनवर्जमाचार्यवदाचार्यपुत्रे वृत्तिः ३०

▼

⑤

>
▼ Bühler

30. He shall behave to his teacher's son (who is superior to himself in learning or years) as to his teacher, but not eat the residue of his food. 32

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उच्छिष्टाशनवर्जमाचार्यवदाचार्यपुत्रे वृत्तिः ॥ ३० ॥

टिप्पनी⑥

'उच्छिष्टाशनवर्जमिति वचनादुपसङ्ग्रहणं भवति । एतच्च ज्ञानवयोभ्यामुभाभ्यां वृद्धे । तदर्थं वृद्धतर इत्यनुवर्तते । गौतमीयस्तूपसङ्ग्रहणप्रतिषेधो वृद्धतरादन्यविषयः ॥ ३० ॥

31 समावृत्तस्याप्येतदेव सामयाचारिकमेतेषु

समावृत्तस्याप्येतदेव सामयाचारिकमेतेषु ३१

▼

⑤

>
▼ Bühler

31. Though he may have returned home, the behaviour towards his (teacher and the rest) which is prescribed by the rule of conduct settled by the agreement (of those who know the law, must be observed by him to the end),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

समावृत्तस्याप्येतदेव सामयाचारिकमेतेषु ॥ ३१॥

टिप्पनी⑥

कृतसमावर्तनस्याप्येतदेवानन्तरोक्तम् । एतेष्वाचार्यादिषु पुत्रान्तेषु सामयाचारिकं समयाचारप्राप्तं वृत्तमान्तात् । समादिष्टे त्वध्यापयीतेति33 विशेष उक्तः ॥ ३१॥

॥ इत्यापस्तम्बीयधर्मसूत्रवृत्तावुज्वलायां सप्तमी कण्डिका ॥

---

1. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
2. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
3. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
4. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
5. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
6. Manu II, 35.↩
7. आप० ध० १.३०.८.↩
8. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
9. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
10. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
11. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
12. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
13. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which,

according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

14. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩
15. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩
16. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
17. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
18. Manu II, 144.↩
19. Manu II, 146-148.↩
20. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩
21. Manu II, 147.↩
22. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

23. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

24. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

25. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

26. Manu II, 37.↩

27. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

28. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

29. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

30. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

31. The meaning of the Sūtra is, that the initiation shall be performed as soon as the child is able to begin the study of the Veda. If it is so far developed at eight years, the ceremony must then be performed; and if it be then neglected, or, if it be neglected at any time when the capacity for learning exists, expiation prescribed in the following Sūtras must be performed. The age of sixteen in the case of Brāhmaṇas is the latest term up to which the ceremony may be deferred, in case of incapacity for study only. After the lapse of the sixteenth year, the expiation becomes also necessary. Manu II, 38; Yājñ. I, 37.↩

32. The meaning is, he shall keep all the restrictions imposed upon a student, as chastity, &c, but that he shall not perform the fire-worship or service to a teacher, nor study. Manu II, 39; XI. 192, Yājñ. I, 38; Weber, Ind. Stud. X, 101.↩

33. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

०८①

01 यथा ब्रह्मचारिणो वृत्तम्④

यथा ब्रह्मचारिणो वृत्तम् १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. Just as by a student (actually living with his teacher). 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथा ब्रह्मचारिणो वृत्तम् ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

समावृत्तस्येति2 वर्तते । समावृत्तस्य 3ब्रह्मचारिणोऽकृतविवाहस्य यथा वृत्तं वर्तनम् तथा वक्ष्यामः ॥ १ ॥

02 माल्यालिप्तमुख उपलिप्तकेशश्मश्रुरक्तोऽभ्यक्तो वेष्टित्युपवेष्टिती

माल्यालिप्तमुख उपलिप्तकेशश्मश्रुरक्तोऽभ्यक्तो वेष्टित्युपवेष्टिती काञ्चुक्युपानही पादुकी २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. He may wear garlands, anoint his face (with sandal), oil his hair and moustaches, smear his eyelids (with collyrium), and (his body) with oil, wear a turban, a cloth round his loins, a coat, sandals, and wooden shoes.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

माल्यालिप्समुख उपलिप्तकेशश्मश्रुरक्तोऽभ्यक्तो वेष्टित्युपवेष्टिती काञ्चुक्युपानही पादुकी ॥२॥

टिप्पनी⑥

माली मालावान् । आलिप्तमुखश्चन्दनादिना । मुखग्रहणमुपलक्षणम् । 4मुखमग्रे ब्राह्मणोऽनुलिम्पेदि'त्याश्वलायनवचनात् । सुगन्धिभिरामल कादिभिर्द्रव्यैरुपलिप्तानि संस्कृतानि केशश्मश्रूणी यस्य सः उपलिप्तकेशश्मश्रुः । अक्त अञ्जनेनाऽक्ष्णोः। अभ्यक्तः तैलेन । वेष्टिता वेष्टितशिराः । कटिप्रदेशो द्वितीयेन वाससा वेष्टितो यस्य सः उपवेष्टिती । कञ्चुकञ्चोपानच्च कञ्चुकोपानहम् । 5द्वन्द्वाच्चुदपहान्तादित्यच् समासान्तः । तदस्यास्तीति कञ्चुकोपानही। द्वन्द्वोपतामह्यात्प्राणिस्थादिनिप्रत्ययः। प्रसिद्धे पाठे कञ्चुकमेव काञ्चुकं तद्वान् काञ्चुकी। उपानद्वानुपानही । ब्रीह्यादिस्वादिनिः। पादुके दारुमये पादरक्षणे तद्वान् पादुकी ॥२॥

03 उदाचारेषु चास्यैतानि न

उदाचारेषु चास्यैतानि न कुर्यात्कारयेद्वा ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Within the sight of his (teacher or teacher's relations) he shall do none of those (actions, as putting on a garland), nor cause them to be done.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उदाचारेषु चास्यैतानि न कुर्यात्कारयेद्वा ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

अस्याऽऽचार्यादेः पुत्रान्तस्य उदाचारेषु दृष्टिगोचरेषु देशेषु एतानि माल्यादीनि न कुर्यात्कारयेद्वा ॥ ३ ॥

04 स्वैरिकर्मसु च

स्वैरिकर्मसु च ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. Nor (shall he wear garlands &c. whilst performing) acts for his pleasure,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्वैरिकर्मसु च ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

एतानि न कुर्यात् कारयेद्वा॥४॥

05 यथा दन्तप्रक्षालनोत्सादनावलेखनानीति

यथा दन्तप्रक्षालनोत्सादनावलेखनानीति ५

▼

⑤

>

▼ Bühler

5. As, for instance, cleaning his teeth, shampooing, combing the hair, and the like.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथा दन्तप्रक्षालनोत्सादनावलेखनानीति ॥५॥

प्रस्तावः⑥

तत्रोदाहरणम्

टिप्पनी⑥

दन्तप्रक्षालनं दन्तधावनम् । उत्सादनमुद्वर्तनम् । अवलेखनं कङ्कतादिना केशानां विभागेनाऽवस्थापनम् । इतिशब्दः प्रदर्शनार्थः । तेन स्नानभोजनमूत्रोचारादिष्वपि प्रतिषेधः ॥ ५ ॥

06 तद्द्रव्याणाञ् च न

तद्द्रव्याणां च न कथयेदात्मसंयोगेनाचार्यः ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. And the teacher shall not speak of the goods of the (pupil) with the intention to obtain them. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तद्रव्याणां च न कथयेदात्मसंयोगेनाऽऽचार्यः ॥ ६॥

टिप्पनी⑥

तस्य शिष्यस्य गृहस्थभूतस्य यानि द्रव्याण्युपस्थापितानि तेषां मध्ये एकेनापि द्रव्येण यथाऽऽत्मा संयुज्यते तथा न कथयेत् । आचार्यः शिष्यगृह7मेत्य अहो दर्शनीयं भोजनपात्रमित्यादि8 लिप्सा यथा गम्यते तथा न कथयेदिति ॥ ६ ॥

07 स्नातस्तु काले यथाविध्यभिहृतमाहूतो

स्नातस्तु काले यथाविध्यभिहृतमाहूतो ऽभ्येतो वा न प्रतिसंहरे इत्येके ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. But some declare, that, if a pupil who has bathed (after completing his studies) is called by his teacher or has gone to see him, he shall not take off 9 that (garland or other ornaments) which he wears according to the law at the time (of that ceremony).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्नातस्तु काले यथाविध्यभिहृतमाहूतोऽभ्येतो वा न प्रतिसंहरेदित्येके ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

10 वेदमधीत्य स्नास्य'न्नित्यनेन विधिना स्नातः तस्मिन्काले यथाविध्यभिहृतमाबद्धं स्रगादि आचार्येणाहूतः स्वयमेव वा तत्समीपमभ्येतो न प्रतिसंहरेत् न विमुञ्चेदित्येके मन्यते । स्वपक्षस्तु तदापि मुञ्चेदिति । 'काले यथाविध्यभिहृत'मिति वचनादपरेद्युरारभ्य प्रतिसंहरेदेव ॥ ७ ॥

08 उच्चैस्तरान् नासीत

उच्चैस्तरां नासीत ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. He shall not sit on a seat higher (than that of his teacher),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उच्चैस्तरां नाऽऽसीत ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

स्वार्थे तरप् । आचार्यासनादुच्चासने नाऽऽसीत ॥ ८॥

09 तथा बहुपादे

तथा बहुपादे ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. Nor on a seat that has more legs (than that of his teacher),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा बहुपादे ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

नीचेऽप्यासने बहुपादे नाऽऽसीत ॥९॥

10 सर्वतः प्रतिष्ठिते

सर्वतः प्रतिष्ठिते १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. Nor on a seat that stands more firmly fixed (on the ground than that of his teacher), 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वतः प्रतिष्ठिते ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

आसने आसीत । आचार्य पीठादावुपवेश्य स्वयं वेत्रासनादावासीत । तद्धि भूमौ सर्वतः प्रतिष्ठितम् ॥ १० ॥

11 शय्यासने चाचरिते नाविशेत्

शय्यासने चाचरिते नाविशेत् ११

▼

⑤

>

▼ Bühler

11. Nor shall he sit or lie on a couch or seat which is used (by his teacher). 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शय्यासने चाऽऽचरिते नाविशेत् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

आचार्येणाचरित उपभुक्ते शय्यासने नाऽऽविशेत् । शयने न शयीत आसने नासीत । पित्रादिष्वपि गुरुषु समानमिदम् । तथा च मनुरविशेषेणाह-13शय्यासने चाध्युषिते श्रेयसा न समाचरेत्।' इति ॥ ११ ॥

12 यानमुक्तोऽध्वन्यन्वारोहेत्

यानमुक्तोऽध्वन्यन्वारोहेत् १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. If he is ordered (by his teacher), he shall on journey ascend a carriage after him. 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यानमुक्तोऽध्वन्यन्वारोहेत् ॥ १२ ॥

प्रस्तावः⑥

गतं समावृत्तस्य वैशेषिकम् । अथ ब्रह्मचर्यविधेरेव शेषः—

टिप्पनी⑥

यानं शकटादि । आरोहेत्युक्तो गुरुणा पश्चादारोहेत् । अध्वनि मार्गे 'छत्रं यानमिति वर्जये'दिति पूर्वोक्तस्य प्रतिषेधस्यापवादः। यानं च गुर्वारूढमन्यद्वा ॥ १२ ॥

13 सभानिकषकटस्वस्तरांश्च

सभानिकषकटस्वस्तरांश्च १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. (At his teacher's command) he shall also enter an assembly, ascend a roller (which his teacher drags along), sit on a mat of fragrant grass or a couch of straw (together with his teacher). 15

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सभानिकषकटस्वस्तरांश्च ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

उक्तोऽध्वन्यन्वारोहेदित्येव । 'सभासमाजाश्चे'त्यस्यापवादार्थं सभाग्रहणम् । निकषो नाम कृषीवलानामुपकरणं, कृष्टं क्षेत्रं येन समीक्रियते, यच्च कस्मिंश्चिदारूढे16 केनचिदाकृष्यते । तत्र गुरुणा आकृष्यमाणेऽपि तेनोक्तस्सन्नाराहेत् । न त्वनौचित्यभयान्नारोहेदिति । कटो वीरणनिर्मिता शय्या। तत्र गुरुणोक्तस्सन् सहाऽऽसीत । उत्सवादावेष आचारः । स्वस्तरो नाम पलालशय्या17 नवस्वस्तरे संविशन्ती'ति दर्शनात् । तत्रापि गुरुणोक्तस्सन् सहासनादि कुर्यात् ॥ १३ ॥

14 नानभिभाषितो गुरुमभिभाषेत प्रियादन्यत्

नानभिभाषितो गुरुमभिभाषेत प्रियादन्यत् १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. If not addressed by a Guru, he shall not speak to him, except (in order to announce) good news.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नानभिभाषितो गुरुमभिभाषेत प्रियादन्यत् ॥१४॥

टिप्पनी⑥

गुरुणाऽनभिभाषितो गुरुं प्रति न किञ्चित् ब्रूयात् प्रियादन्यत् । प्रियं तु ब्रूयात् यथा ते पुत्रोजात इति ॥ १४ ॥

15 व्युपतोदव्युपजावव्यभिहासोदामन्त्रणनामधेयग्रहणप्रेषणानीति गुरोर्वर्जयेत्

व्युपतोदव्युपजावव्यभिहासोदामन्त्रणनामधेयग्रहणप्रेषणानीति गुरोर्वर्जयेत् १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. He shall avoid to touch a Guru (with his finger), to whisper (into his ear), to laugh (into his face), to call out to him, to pronounce his name or to give him orders and the like (acts) 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

व्युपतोदव्युपजापव्यभिहासोदामन्त्रणनामधेयग्रहण-प्रेषणानीति गुरोर्वर्जयेत् ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

व्युपतोदः 19 अङ्गुल्यादिघट्टनं यदाभिमुख्यार्थं क्रियते । व्युपजापः श्रोत्रयोर्मुहुर्मुहुर्जल्पनम् । वकारश्छान्दसोऽपपाठो वा । व्यभिहासः आभिमुख्येन हसनम् । उदामन्त्रणमुच्चैस्सम्बोधनम् , यथा बधिरं प्रति । नामधेयग्रहणं दशम्यां पितृविहितस्य नाम्नो ग्रहणम्। न पूज्यनाम्नो भगवदादेः । प्रेषणमाज्ञापनम् । एतानि गुरुविषये न कर्तव्यानि । इतिकरणादेवंप्रकाराणामन्येषामपि प्रतिषेधः । यथाऽऽह मनुः—

20 नोदाहरेत्तस्य नाम परोक्षमपि केवलम् ।
न चैवास्यानुकुर्वीत गतिभाषितचेष्टितम् ॥ इति ॥ १५॥

16 आपद्यर्थञ् ज्ञापयेत्

आपद्यर्थं ज्ञापयेत् १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. In time of need he may attract attention (by any of these acts).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आपद्यर्थ ज्ञापयेत् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

आपदि व्युपतोदादिमिरप्यर्थमभिप्रेतं ज्ञापयेत् । असति पुरुषान्तरे 21वचनेनापि बोधयेत्, न साक्षात्प्रेषयेत् , यथा-शूलतोदो मे भवति, स चाऽग्निना शाम्यति, न चात्र कश्चित्सन्निहितः, किं करोमि मन्दभाग्य इति ॥ १६ ॥

17 सह वसन्सायम् प्रातरनाहूतो

सह वसन्सायं प्रातरनाहूतो गुरुं दर्शनार्थो गच्छेत् १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. If (a pupil) resides (in the same village) with (his teacher after the completion of his studies), he shall go to see him every morning and evening, without being called. 22

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सहवसन्सायं प्रातरनाहूतो गुरुं दर्शनार्थो गच्छेत् ॥१७॥

प्रस्तावः⑥

उत्तरे सूत्रे समावृत्तविषये—

टिप्पनी⑥

सह एकस्मिन् ग्रामे वसन् सायं प्रातरनाहूतोऽपि गुरुं दर्शनार्थो नान्यप्रयोजनो गच्छेत् ॥ १७॥

18 विप्रोष्य च तदहरेव

विप्रोष्य च तदहरेव पश्येत् १८

▼

⑤

>

▼ Bühler

18. And if he returns from a journey, he shall (go to) see him on the same day.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विप्रोष्य च तदहरेव पश्येत् ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

यदा ग्राामान्तरं गतः प्रत्यागच्छति तदा तदहरेवाऽऽचार्यं पश्येत् ॥१८॥

19 आचार्यप्राचार्यसन्निपाते प्राचार्यायओपसङ्गृह्योपसञ्जिघृक्षेदाचार्यम्

आचार्यप्राचार्यसन्निपाते प्राचार्यायओपसङ्गृह्योपसञ्जिघृक्षेदाचार्यम् १९

▼

⑤

>

▼ Bühler

19. If his teacher and his teacher's teacher meet, he shall embrace the feet of his teacher's teacher, and then show his desire to do the same to his teacher.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आचार्यप्राचार्यसन्निपाते प्राचार्यायोपसंगृह्योपसञ्जिघृक्षेदाचार्यम् ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

आचार्यस्याऽऽचार्यः प्राचार्य प्रपितामहवत् । यदा आचार्यस्य प्राचार्यस्य च कार्यवशात् सन्निपातो मेलनं भवति, तदा प्राचार्याय द्वितीयार्थे चतुर्थी । प्राचार्यं पूर्वमुपसंगृह्य पश्चात्स्वाचार्यमुपसङ्गृहीतुमिच्छेत् । न केवलं मनसा किन्तु यथाऽचार्यो जानाति मामयमुपसञ्जिघृक्षतीति तथा चेष्टेत । अन्यथा अदृष्टार्थमुपदिष्टं स्यात् ॥ १९॥

20 प्रतिषेधेदितरः

प्रतिषेधेदितरः २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. The other (the teacher) shall (then) forbid it.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रतिषेधेदितरः ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

इतर आचार्यः प्रतिषेधेत् 'वत्स मा मोपसङ्ग्रहीरिति ॥ २०॥

21 लुप्यते पूजा चास्य

लुप्यते पूजा चास्य सकाशे २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. And (other marks of) respect (due to the teacher) are omitted in the presence of the (teacher's teacher).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

लुप्यते पूजा चाऽस्य सकाशे ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

अस्य प्राचार्यस्य सकाशे सन्निधौ आचार्यस्य पूजा लुप्यते न कार्या । न केवलमुपसङ्ग्रहणमेव । उत्तरसूत्रं समावृत्तविषयम् ॥ २१ ॥

22 मुहूंश्चाचार्यकुलन् दर्शनार्थो गच्छेद्यथाशक्त्यधिहस्त्यमादायापि

मुहूंश्चाचार्यकुलं दर्शनार्थो गच्छेद्यथाशक्त्यधिहस्त्यमादायापि दन्तप्रक्षालनानीति २२

▼

⑤

>

▼ Bühler

22. And (if he does not live in the same village), he shall go frequently to his teacher's residence, in order to see him, and bring him some (present) with his own hand, be it even only a stick for cleaning the teeth. Thus (the duties of a student have been explained).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मुहूंश्चाऽऽचार्यकुलं दर्शनार्थो गच्छेद्यथाशक्त्यधिहस्त्यमादायाऽपि दन्तप्रक्षालनानीति ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

मुहूँश्चेत्यनुस्वारदीर्घौ छान्दसौ। वीप्सालोपश्चात्र द्रष्टव्यः । मुहुर्मुहुरिति विवक्षितम् । ग्रामान्तरे वसन्नपि मुहुर्मुहुराचार्यकुलं दर्शनार्थमागच्छेत् । यथाशक्ति गोरसापूपादि अधिहस्त्यं हस्ते भवमादाय स्वयमेव गृहीत्वेत्यर्थः । अपिशब्दोऽभावे विधिं द्योतयति-गोरसाद्यभावे दन्तकाष्ठान्यपीति । इतिशब्दः अन्तवासिधर्माणां समाप्तिद्योतनार्थः ॥ २२ ॥

23 मातरम् पितरमाचर्यमग्नींश्च गृहाणि

मातरं पितरम् आचर्यम् अग्नींश् च गृहाणि च रिक्त-पाणिर् नोपगछ्हेद्, राजानं चेन् न श्रुतम् इति २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

[MISSING]

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

23मातरं पितरमाचार्यमग्नींश्च गृहाणि च रिक्तपाणिर्नोपगच्छेद्राजानं चेन्न श्रुतमिति ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

24 तस्मिन्गुरोर्वृत्तिः

तस्मिन्गुरोर्वृत्तिः २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. (Now) the conduct of a teacher towards his pupil (will be explained).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्मिन्गुरोर्वृत्तिः ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

तस्मिन्न् अन्तेवासिनि गुरोर् वृत्तिः । वृत्तः प्रकारो वक्ष्यते ॥ २३ ॥ २४ ॥

25 पुत्रमिवैनमनुकाङ्क्षन्सर्वधर्मेष्वनपच्छादयमानः सुयुक्तो विद्याङ्

पुत्रमिवैनमनुकाङ्क्षन्सर्वधर्मेष्वनपच्छादयमानः सुयुक्तो विद्यां ग्राहयेत् २४

▼

⑤

>

▼ Bühler

24. Loving him like his own son, and full of attention, he shall teach him the sacred science, without hiding anything in the whole law. 24

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पुत्रमिवैनमनुकाङ्क्षन् सर्वधर्मेष्वनपच्छादयमानः सुयुक्तो विद्यां ग्राहयेत् ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

एनं शिष्यं पुत्रमिव25 अस्याऽभ्युदयः स्यादिति अनुकाङ्क्षन् सर्वेषु धर्मेषु किञ्चिदप्यनपच्छादयमानः अगूहन् सुयुक्तः सुष्ठ्ववहितः तत्परो भूत्वा विद्यां ग्राहयेत् ॥ २५ ॥

26 न चैनमध्ययनविघ्नेनात्मार्थेषूपरुन्ध्यादनापत्सु

न चैनमध्ययनविघ्नेनात्मार्थेषूपरुन्ध्यादनापत्सु २५

▼

⑤

>

▼ Bühler

25. And he shall not use. him for his own purposes to the detriment of his studies except in times of distress.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न चैनमध्ययनविघ्नेनात्मार्थेषूपरुन्ध्यादनापत्सु ॥ २६ ॥

टिप्पनी⑥

न चैनं शिष्यमध्ययनविघ्नेनाऽऽत्मप्रयोजनेष्वनापत्सूपरुन्ध्यात् । 26उपरोधः अस्वतन्त्रीकरणम् । 'अनापत्स्वि'तिवचनादापद्यध्ययनविघातेनाऽप्युपरोधे न दोषः ॥ २६ ॥

27 अन्तेवास्यनन्तेवासी भवति विनिहितात्मा

अन्तेवास्यनन्तेवासी भवति विनिहितात्मा गुरावनैपुणमापद्यमानः २६

▼

⑤

>

▼ Bühler

26. That pupil who, attending to two (teachers), accuses his (principal and first) teacher of ignorance, remains no (longer) a pupil.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्तेवास्यनन्तेवासी भवति विनिहितात्मा गुरावनैपुणमापद्यमानः ॥ २७ ॥

टिप्पनी⑥

'आपद्यमान' इत्यन्तर्भावितण्यर्थः । योऽन्तेवासी विनिहितात्मा द्वयोराचार्ययोः27विविधं निहितात्मा गुरावनैपुणमापादयति-नाऽनेनाऽयं प्रदेशः सम्यगुक्त इति, सोऽन्तेवासी न भवति । स त्याज्य इत्यर्थः28।
अपर आह- योऽन्तेवासी वाङ्मनःकर्मभिरनैपुणमापद्यमानो गुरौ विसदृशं निहितात्मा भवति अनुरूपं न शुश्रूषते सोऽन्तेवासी न भवतीति ॥ २७ ॥

28 आचार्योऽप्यनाचार्यो भवति श्रुतात्परिहरमाणः

आचार्योऽप्यनाचार्यो भवति श्रुतात्परिहरमाणः २७

▼

⑤

>

▼ Bühler

27. A teacher also, who neglects the instruction (of his pupil), does no (longer) remain a teacher. 29

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आचार्योऽप्यनाचार्यो भवति श्रुतात्परिहरमाणः ॥ २८ ॥

टिप्पनी⑥

आचार्योऽप्यनाचार्यो भवतीति, त्याज्य इत्यर्थः । किं कुर्वन् ? श्रुतात्परिहरमाणः तेन तेन व्याजेन विद्याप्रदानमकुर्वन् ॥ २८॥

29 अपराधेषु चैनं सततमुपालभेत

अपराधेषु चैनं सततमुपालभेत २८

▼

⑤

>
▼ Bühler

28. If the (pupil) commits faults, (the teacher) shall always reprove him.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अपराधेषु चैनं सततमुपालभेत ॥ २९ ॥

टिप्पनी⑥

अपराधेषु कृतेष्वेनं शिष्यं सततमुपालभेत-इदमयुक्तं त्वया कृतमिति ॥ २९ ॥

30 अभित्रास उपवास उदकोपस्पर्शनमदर्शनमिति

अभित्रास उपवास उदकोपस्पर्शनमदर्शनमिति दण्डा यथामात्रमा निवृत्तेः २९

▼

⑤

>
▼ Bühler

29. Frightening, fasting, bathing in (cold) water, and banishment from the teacher's presence are the punishments (which are to be employed), according to the greatness (of the fault), until (the pupil) leaves off (sinning). 30

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अभित्रास उपवास उदकोपस्पर्शनमदर्शनमिति दण्डा यथामात्रमानिवृत्तेः ॥ ३० ॥

टिप्पनी⑥

अभित्रासो 31भयोत्पादनम् । उपवासो भोजनलोपः। उदकोपस्पर्शनं शीतोदकेन स्नापनम् । अदर्शनं यथाऽऽत्मानं न पश्यति तथा करणम्। गृहप्रवेशनिषेधः। सर्वत्र ण्यन्तात् प्रत्ययः । इत्येते दण्डाः शिष्यस्य यथामात्रं यावत्यपराधमात्रा तदनुरूपं व्यस्ताः समस्ताश्च । आनिवृत्तेः यावदसौ न ततोऽपराधान्निवर्तते तावदेते दण्डाः ॥ ३० ॥

31 निवृत्तञ् चरितब्रह्मचर्यमन्येभ्यो धर्मेभ्योऽनन्तरो

निवृत्तं चरितब्रह्मचर्यमन्येभ्यो धर्मेभ्योऽनन्तरो भवेत्यतिसृजेत् ३०

▼

⑤

>
▼ Bühler

30. He shall dismiss (the pupil), after he has performed the ceremony of the Samāvartana and has finished his studentship, with these words, 'Apply thyself henceforth to other duties.'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

निवृत्तं चरितब्रह्मचर्यमन्येभ्यो धर्मेभ्योऽनन्तरो भवेत्यतिसृजेत् ॥ ३१ ॥

टिप्पनी⑥

एवं चरितब्रह्मचर्यं निवृत्तं गुरुकुलात् कृतसमावर्तनमित्यर्थः। एवंभूतमन्येभ्यो धर्मेभ्यो यमसावाश्रमं प्रतिपित्सते तत्र तेभ्योऽनन्तरो भव यथा त्वमन्तरितो न भवसि तथा भवेत्युक्त्वाऽतिसृजेत् । तं तमाश्रमं प्रतिपत्तुमुत्सृजेत् ॥ ३१ ॥

इत्यापस्तम्बसूत्रवृत्तावुज्वलायामष्टमी कण्डिका ॥
इति चापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तविरचितायामुज्ज्वलायां प्रथमप्रश्ने द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

इति द्वितीयः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
5. आप० ध० १.३०.८.↩
6. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
7. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
8. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
9. Manu II, 35.↩
10. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
11. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
12. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially

ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

13. आप० ध० १.३०.८.↩

14. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

15. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

16. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

17. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

18. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

19. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

20. आप० ध० १.३०.८.↩

21. मनु० स्मृ० २.६↩

22. Manu II, 144.↩

23. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

24. Manu II, 146-148.↩

25. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

26. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

27. आप० ध० १.३०.८.↩

28. मनु० स्मृ० २.६↩

29. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

30. Manu II, 147.↩

31. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

૦૩①

०९①

01 श्रावण्याम् पौर्णमास्यामध्यायमुपाकृत्य मासं④

श्रावण्यां पौर्णमास्यामध्यायमुपाकृत्य मासं {अनूक्तम् अननूक्तञ्च} प्रदोषे नाधीयीत १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. After having performed the Upākarma for studying the Veda on the full moon of the month' Srāvaṇa (July-August), he shall for one month not study in the evening. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्रावण्यां पौर्णमास्यामध्यायमुपाकृत्य मासं प्रदोषं नाऽधायीत ॥ १ ॥

प्रस्तावः⑥

एवमध्येतुरध्यापयितुश्च धर्मा उक्ताः। अथ देशकालकृता अध्ययनधर्मा उच्यन्ते—

टिप्पनी⑥

मेषादिस्थे सवितरि यो यो दर्शः प्रवर्तते। चान्द्रमासास्तत्तदन्ताश्चैत्राद्या द्वादश स्मृताः। तेषु या या पौर्णमासी सासाचच्यादिका स्मृता। कादाचित्कन योगेन नक्षत्रस्यति निर्णयः ।। तदेवं सिंहस्थे सवितरियाऽमावास्या तदन्ते चान्द्रमले मासे या मध्यवर्तिनी पौर्णमाली सा श्रावणी । श्रवणयोगस्तु भवतु वा मा वा । तस्यां श्रावण्या पौर्णमास्यामध्यायमुपाकृत्य गृह्योक्तेन विधिनोपाकर्म क. स्वा स्वाध्यायमधीयीत । अधीयानश्च मासमेक प्रदोषे प्रथमे रात्रिभागे ना धीयीत ग्रहणाध्ययनं धारणाध्ययन च न कुर्यात् । प्रदोषग्रहणादात्रा वप्पूर्व न दोषः ॥ १॥
02 तैष्याम् पौर्णमास्यां रोहिण्यां

तैष्यां पौर्णमास्यां रोहिण्यां वा विरमेत् २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. On the full moon of the month of Pauṣa (December-January), or under the constellation Rohini, he shall leave off reading the Veda. 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तैष्यां पौर्णमास्यां रोहिण्यां वा विरमेत् ॥२॥

टिप्पनी⑥

तिष्यः पुष्यः, तेन युक्ता पौर्णमासी तैषी श्रावणीवत्। तस्यां विरमेत् । उत्सर्जनं कुर्यात् । तस्यापि प्रयोगो3गृह्य एवोक्तः। रोहिण्यां वा,4 तेषमासि तिष्यात्पूर्वा या रोहिणी तस्यां वा विरमेत् । अनयोः पक्षयोः पञ्च मासानधीयीत ॥२॥

03 अर्धपञ्चमांश्चतुरो मासानित्येके

अर्धपञ्चमांश्चतुरो मासानित्येके ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Some declare, (that he shall study) for four months and a half. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अर्धपञ्चमांश्चतुरो मासानित्येके ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

अर्धः पञ्चमो येषां ते अर्धपञ्चमाः । अधिकांश्चतुरो मासान् अधीयीतेत्यपेक्ष्यत 6इत्येके मन्यन्ते । अस्मिन्पक्षे प्रोष्ठपद्यामुपाकरणं शास्त्रान्तरदर्शनात् । उत्सर्जनस्य वा प्रतिकर्षः। उत्सर्जने च कृते श्रावण्याः प्राक् शुक्लपक्षेषु धारणाध्ययनं वेदस्य, कृष्णपक्षेषु व्याकरणाद्यङ्गाध्ययनम् । पुनः श्रावण्यामुपाकृत्यागृहीतभागस्य ग्रहणाध्ययनमिति । प्रपञ्चितमेतत्7गृह्ये ॥ ३ ॥

04 निगमेष्वध्ययनं वर्जयेत्

निगमेष्वध्ययनं वर्जयेत् ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. He shall avoid to Study the Veda on a high-road. 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

निगमेश्वध्ययनं वर्जयेत् ॥ ४॥

टिप्पनी⑥

निगमाश्चत्वराः । ग्रामनिर्गमनामर्गा वा नियमेन गम्यते तेष्विति । तेषु सर्वप्रकारमध्ययनं वर्जयेत् ॥ ४॥

05 आनडुहेन वा शकृत्पिण्डेनोपलिप्तेऽधीयीत

आनडुहेन वा शकृत्पिण्डेनोपलिप्तेऽधीयीत ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. Or he may study it (on a high-road), after having smeared (a space) with cowdung.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आनडुहेन वा शकृत्पिण्डेनोपलिप्तेऽधीयीत ॥५॥

टिप्पनी⑥

अनडुत्सम्बन्धिना वा शकत्पिण्डेनोपलिप्य निगमेष्वप्यधीयीत ॥५॥

06 श्मशाने सर्वतः शम्याप्रासात्

श्मशाने सर्वतः शम्याप्रासात् ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. He shall never study in a burial-ground nor anywhere near it within the throw of a Samyā. 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्मशाने सर्वतः शम्याप्रासात् ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

श्मशाने चाध्ययनं वर्जयेत् । सर्वतः सर्वासु दिक्षु । शम्या क्षिप्ता यावति देशे पतति ततोऽर्वागिति पञ्चमीनिर्देशाद्गम्यते ॥ ६ ॥

07 ग्रामेणाध्यवसिते क्षेत्रेण वा

ग्रामेणाध्यवसिते क्षेत्रेण वा नानध्यायः ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. If a village has been built over (a burial ground) or its surface has been cultivated as a field, the recitation of the Veda (in such a place) is not prohibited.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ग्रामेणाऽध्यवसिते क्षेत्रेण वा नाऽनध्यायः ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

यदा श्मशानं ग्रामतया क्षेत्रतया वा अध्यवसितं स्वीकृतं भवति तदा अध्येतव्यमेव ॥ ७ ॥

08 ज्ञायमाने तु तस्मिन्न्

ज्ञायमाने तु तस्मिन्न् एव देशे नाधीयीत ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. But if that place is known to have been a burial-ground he shall not study (there). 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ज्ञायमाने तु तस्मिन्नेव देशे नाऽधायीत ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

यदा तु तदध्यवसितमपि श्मशानं ज्ञायते-अयं स प्रदेश इति, तदा तावत्येव प्रदेशे नाऽधीयीत । न शम्याप्रासात् ॥ ८ ॥

09 श्मशानवच्छूद्र पतितौ

श्मशानवच्छूद्र पतितौ ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. A Śūdra and an outcast are (included by the term) burial-ground, (and the rule given, Sūtra 6, applies to them). 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

12 श्मशानवच्छूद्रपतितौ ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

शूद्रापतितसकाशेऽपि शम्याप्रासान्नाऽध्येयम् ॥९॥

▼ विश्वास-टिप्पनी

श्मशानवच्छूद्रपतितौ ॥ ९ ॥ समानागार इत्येके ॥ १० ॥

So, safe to say that deliberate (literal) shrAvaNa to v4s was to be avoided; but tolerated if accidental.

10 समानागार इत्येके

समानागार इत्येके १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. Some declare, that (one ought to avoid only, to study) in the same house (where they dwell).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

समानागार इत्येके ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

एके मन्यन्ते समानागारे शूद्रपतितौ वर्ज्यौ, न शम्याप्रासादिति ॥१०॥

11 शूद्रा यान् तु

शूद्रा यां तु प्रेक्षणप्रतिप्रेक्षणयोरेवानध्यायः ११

▼

⑤

>

▼ Bühler

11. But if (a student and) a Śūdra woman merely look at each other, the recitation of the Veda must be interrupted,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शूद्रायां तु प्रेक्षणप्रतिप्रेक्षणयोरेवाऽनध्यायः ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

शूद्रायां तु यदा परस्परं प्रेक्षणं भवति तदैवाऽनध्यायः । न समानागारे, नापि शम्याप्रासादिति ॥ ११ ॥

12 तथान्यस्यां स्त्रियां वर्णव्यतिक्रान्तायाम्

तथान्यस्यां स्त्रियां वर्णव्यतिक्रान्तायां मैथुने १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. Likewise, if (a student and) a woman, who has had connexion with a man of a lower caste, (look at each other).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथाऽन्यस्यां स्त्रियां वर्णव्यतिक्रान्तायां मैथुने ॥१२॥

टिप्पनी⑥

शूद्राव्यतिरिक्ताऽपि या स्त्री मैथुने वर्णव्यतिक्रान्ता नीचगामिनी तस्यामपि प्रेक्षणप्रतिप्रेक्षणयोरनध्यायः ॥ १२ ॥

13 ब्रह्माध्येष्यमाणो मलवद्वाससेच्छन्सम्भाषितुम् ब्राह्मणेन

ब्रह्माध्येष्यमाणो मलवद्वाससेच्छन्संभाषितुं ब्राह्मणेन संभाष्य तया संभाषेत संभाष्य तु ब्राह्मणेनैव संभाष्याधीयीत । एवं तस्याः प्रजानिःश्रेयसम् १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. If he, who is about to study the Veda, wishes to talk to a woman during her courses, he shall first speak to a Brāhmaṇa and then to her, then again speak to a Brāhmaṇa, and afterwards study. Thereby the children (of that woman) will be blessed. 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ब्रह्माध्येष्यमाणो मलवद्वाससेच्छन् सम्भाषितुं ब्राह्मणेन सम्भाध्य तथा सम्भाषेत । सम्भाष्य तुब्राह्मणेनैव सम्भाष्याऽधीयीत । एवं तस्याः प्रजानिःश्रेयसम् ॥१३॥

टिप्पनी⑥

यो वेदमध्येष्यमाणो मलवद्वाससा रजस्वलया सह सम्भाषितुमिच्छति स पूर्वं ब्राह्मणेन सम्भाष्य पश्चात्तया सम्भाषेत । सम्भाष्य च पुनरपि ब्राह्मणेनैव सम्भाष्याऽधीयीत । किमेवं सति भवति ?

एवं तस्या मलवद्वासस आगामिनी या प्रजा तस्या निःश्रेयसमभ्युदयो भवति । प्रजारूपं वा निःश्रेयसं तस्या भवति । 'प्रजानिःश्रेयसमिति वचनात् विधवादिभिः सह सम्भाषणे नैतत्कर्तव्यम् ॥ १३ ॥

14 अन्तःशवम्

अन्तःशवम् १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. (He shall not study in a village) in which a corpse lies; 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

15 अन्तश्शवम् ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

अन्तश्शवो यत्र ग्रामे तत्र नाध्येयम् । एतेना'न्तश्चाण्डाल'मिति व्याख्यातम् ॥ १४॥

15 अन्तश्चाण्डालम्

अन्तश्चाण्डालम् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. Nor in such a one where Kāndālas live.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्तश्चाण्डालम् ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

चण्डाल एव चाण्डालः । उभयत्र प्रथमा सप्तम्यर्थे । अव्ययीभावो वा विभक्त्यर्थे द्रष्टव्यः ॥१५॥

16 अभिनिर्हृतानान् तु सीम्न्यनध्यायः

अभिनिर्हृतानां तु सीम्न्यनध्यायः १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. He shall not study whilst corpses are being carried to the boundary of the village,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

16अभिनिस्सृतानां तु सीम्न्यनध्यायः ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

यदा शवाः सीम्नि अभिनिस्सृता भवन्ति तदा तत्राऽनध्यायः ॥ १६ ॥

17 सन्दर्शने चारण्ये

संदर्शने चारण्ये १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. Nor in a forest, if (a corpse or Cāṇḍāla) is within sight.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सन्दर्शने चाऽरण्ये ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

अरण्ये च यावति प्रदेशे शवश्चण्डालो वा सन्दृश्यते तावत्यनध्यायः ॥ १७॥

18 तदहरागतेषु च ग्रामम्

तदहरागतेषु च ग्रामं बाह्येषु १८

▼

⑤

>

▼ Bühler

18. And if outcasts have entered the village, he shall not study on that day, 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तदहरागतेषु च ग्रामं बाह्येषु ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

बाह्याः उपनिषादादयः परिपन्थिनः तेषु च ग्राममागतेषु तदहरनध्यायः तस्मिन्नहनि नाऽध्येतव्यम् ॥ १८॥

19 अपि सत्सु

अपि सत्सु १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. Nor if good men (have come). 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अपि सत्सु ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

ये विद्याचरित्रादिभिर्महान्तः सन्तः तेष्वपि ग्राममागतेषु तदहरनध्यायः ॥ १९ ॥

20 सन्धावनुस्तनिते रात्रिम्

संधावनुस्तनिते रात्रिम् २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. If it thunders in the evening, (he shall not study) during the night. 19

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सन्धावनुस्तनिते रात्रिम् ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

सन्धिः सन्ध्या तस्मिन् सन्धौ । अनुस्तनिते मेघगर्जिते सति रात्रिं 20सर्वां रात्रिं नाऽधीयीत। वर्षताविदम् । अन्यस्मिन्नधिकं वक्ष्यति ॥२०॥

21 स्वप्नपर्यान्तं विद्युति

स्वप्नपर्यान्तं विद्युति २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. If lightning is seen (in the evening, he shall not study during that night), until he has slept.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्वप्नपर्यान्तं विद्युति ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

अन्त्यो दीर्घ उपान्त्यो ह्रस्वः । विपर्यासश्छान्दसोऽपपाठो वा । सन्धौ विद्युति सत्यां स्वप्नपर्यन्तां रात्रिमनध्यायः न सर्वाम् । स्वप्नपर्यन्ता रात्रिः प्रहरावशिष्टा ॥ २१ ॥

22 उपव्युषं यावता वा

उपव्युषं
यावता वा कृष्णां रोहिणीम् इति,
शम्या-प्रासाद् विजानीयाद्

- एतस्मिन् काले विद्योत-माने सप्रदोषम् अहरनध्यायः २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. If lightning is seen about the break of dawn, or at the time when he may distinguish at the distance of a Samyā-throw, whether (a cow) is black or red, be shall not study during that day, nor in the following evening.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उपव्युषं यावता वा कृष्णां रोहिणीमिति शम्याप्रासाद्विजानीयादेतस्मिन्काले विद्योतमाने सप्रदोषमहरनध्यायः ॥ २२ ॥

प्रस्तावः⑥

एवं सायं सन्ध्यायामुक्तं, प्रातस्सन्ध्यायामाह —

टिप्पनी⑥

उपव्युषं उषस्समीपे तत्र विद्योतमाने विद्युति सत्यामपरेद्युस्सप्रदोषमहरनध्यायः । प्रदोषादूर्ध्वं रात्रावध्ययनम् । यावता वा कालेन शम्याप्रासादर्वागवस्थितां गां कृष्णामिति वा रोहिणीमिति वा विजानीयात् । एतस्मिन्काले उपव्युषं विद्योतमान इत्यन्वयः । रोहिणी गौरवर्णा । इतिशब्दप्रयोगे द्विताया प्रयुज्यते । तत्राऽन्वयप्रकारश्चिन्त्यः ॥ २२॥

23 दह्रेऽपररात्रे स्तनयित्नुना

दह्रे*(=अपररात्रे तृतीयो भागः)* ऽपररात्रे*(=रात्रेस् तृतीयो भागः)* स्तनयित्नुना २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. If it thunders in the second part of the third watch of the night, (he shall not study during the following day or evening).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दह्रेऽपररात्रे स्तनयित्नुना ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

रात्रेस् तृतीयो भागः सर्वो ऽपररात्रः। तस्य त्रेधा विभक्तस्याद्योंऽशो महारात्रः। अन्त्यो दह्रः । तस्मिन् दह्रेऽपररात्रे स्तनयित्नुना निमित्तेन सप्रदोषमहरनध्यायः ॥ २३ ॥

24 ऊर्ध्वमर्धरात्रादित्येके

ऊर्ध्वमर्धरात्रादित्येके २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. Some (declare, that this rule holds good, if it thunders), after the first half of the night has passed.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ऊर्ध्वमर्धरात्रादित्येके ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

अर्धरात्रादूर्ध्वमनन्तरोक्तो विधिरित्येके मन्यन्ते । स्वपक्षस्तु दह्र एवेति ॥ २४ ॥

25 गवाञ् चावरोधे

गवां चावरोधे २५

▼

⑤

>
▼ Bühler

25. (Nor shall he study) whilst the cows are prevented from leaving (the village on account of thieves and the like),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गवां चाऽवरोधे ॥ २५॥

टिप्पनी⑥

दस्युप्रभृतिभिरवरुद्धासु गोषु तावन्तं कालमनध्यायः । अवरोधो ग्रामान्निर्गमनिरोधः ॥२५॥

26 वध्यानाञ् च यावता

वध्यानां च यावता हन्यन्ते २६

▼

⑤

>
▼ Bühler

26. Nor (on the imprisonment of criminals) whilst they are being executed.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वध्यानां च यावता हन्यन्ते ॥ २६ ॥

टिप्पनी⑥

वर्धाहाणांचो रादीनामवरोधे यावता कालेन हन्यन्ते तावन्तं कालमनध्यायः ॥ २६ ॥

27 पृष्ठारूढः पशूनान् नाधीयीत

पृष्ठारूढः पशूनां नाधीयीत २७

▼

⑤

>
▼ Bühler

27. He shall not study whilst he rides on beasts (of burden). 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पृष्ठारूढः पशूनां नाऽधीयीत ॥ २७ ॥

टिप्पनी⑥

हस्त्यश्वादीनां पशूनां पृष्ठाऽरूढः तत्राऽऽसीनस्सन्नाधीयीत ॥२७॥

28 अहोरात्रावमावास्यासु

अहोरात्राव् अमावास्यासु *(पूर्वेद्युश् चतुर्दशीषु चेति हरदत्तः। मनुना पूर्णिमायाम् अपि निषिद्धम्।)* २८

▼

⑤

>
▼ Bühler

28. At the new moon, (he shall not study) for two days and two nights. 22

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अहोरात्रावमावास्यासु ॥ २८ ॥

टिप्पनी⑥

अमावास्यासु द्वावहोरात्रौ नाऽधीयीत । तासु च पूर्वेद्युश्चतुर्दशीषु च । तथा च मनुः23- 'अमावास्याचतुर्दश्योः पौर्णमास्यष्टकासु च ।' इति ॥ २८॥

इत्यापस्तम्बसूत्रवृत्तावुज्ज्वलायां नवमी कण्डिका ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition. ↩
2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
3. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
4. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
5. Manu II, 35.↩
6. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
7. आप० ध० १.३०.८.↩
8. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
9. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
10. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩
11. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person

who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

12. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

13. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

14. Manu II, 144.↩

15. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

16. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

17. Manu II, 146-148.↩

18. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

19. Manu II, 147.↩

20. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

21. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

22. Manu II, 37.↩

23. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

१०①

01 चातुर्मासीषु च④

चातुर्मासीषु च १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. (Nor shall he study) on the days of the full moons of those months in which the Kāturmasya-sacrifice may be performed (nor on the days preceding them). 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

चातुर्मासीषु च ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

चतुर्षु मासेषु भवाश्चातुर्मास्य । संज्ञैषा तिसृणां पौर्णमासीनां यासु चातुर्मास्यानि क्रियन्ते । काः पुनस्ताः? फाल्गुन्याषाढीकार्तिक्यः। चातुर्मास्यो यशः। तत्र भव'इति वर्तमाने 'संज्ञायामणि'त्यण्प्रत्ययः । तासु चातुर्मासीषु पूर्ववद्वावहोरात्रावनध्यायः । गौतमस्तु स्वशब्देनाह2 'कार्तिके फाल्गुन्याषाढी पौर्णमासी'ति । 3पौर्णमास्यनन्तरप्रतिपत्सु च शास्त्रान्तरवशादनध्यायः । यथा होशनाः-'पर्वणीतिहासर्जितानां विद्यानामनध्याय' इति । 'प्रतिपत्सु न चिन्तये'दिति च ।

एवं चतुर्दशीमात्रस्य वर्जने शास्त्रान्तरं4 मूलं मृग्यम् । तत्र याज्ञवल्क्यः —
5 'पञ्चदश्यां चतुर्दश्यामष्टम्यां राहुसूतके।' इति ॥१॥
02 वैरमणो गुरुष्वष्टाक्य औपाकरण

वैरमणे(=उत्सर्जने) (मृतेषु) गुरुष्व् अष्टाक्य औपाकरण इति त्र्यहाः २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. At the time of the Vedotsarga, on the death of Gurus, at the Ashlakā-Śrāddha, and at the time of the Upākarma, (he shall not study) for three days; 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वैरमणे गुरुष्वष्टाक्य औपाकरण इति त्र्यहाः ॥ २ ॥

टिप्पनी⑥

विरमणमुत्सर्जनं तदेव वैरमणम् । तस्मिन् वैरमणे । प्रथमान्तपाठे सप्तम्यर्थे प्रथमा । गुरुषु श्वशुरादिषु । संस्थितेष्विति प्रकरणाद्गम्यते। अष्टकैवाऽष्टाक्यं स्वार्थिकः ष्यञ् । आदौ प्राप्ता वृद्धिर्मध्ये कृता । उपाकरणमेवौपाकरणम् । एतेषु निमित्तेषु त्र्यहा अध्ययनरहिताः । तत्र गुरुषु मरणदिनमारभ्य त्र्यहः । इतरेषु पूर्वेद्युरपेद्युस्तस्मिंश्च दिने नाधीयीत। अत्र गौतमः-7तिस्रोऽष्टकास्त्रिरात्रमन्त्यामेकेऽभितो वार्षिक'मिति । उपाकरणादूर्ध्वं प्रागुत्सर्जनात् यदध्ययनं तद्वार्षिकम् । तदभितस्तस्यादावन्ते च यत्कर्म क्रियते तत्रापि त्रिरात्रमित्यर्थः। औशनसे

च व्यक्तमुक्तम8 'उपाकर्मणि चोत्सर्गे त्र्यहमनध्याय' इति । मानवे च व्यक्तम्9 उपाकर्मणि चोत्सर्गे त्रिरात्र क्षपणं स्मृतम् ।' इति ॥२ ॥

03 तथा सम्बन्धेषु ज्ञातिषु

तथा संबन्धेषु ज्ञातिषु *(मृतेषु त्र्यहम् अनध्याय इति ब्रह्मचारिनियमः। इतरेषाम् आशौचवतां तु यावद् आशौचमनध्यायः)*[3]

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Likewise if near relations have died. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा सम्बन्धेषु ज्ञातिषु ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

ये सन्निकृष्टा ज्ञातयः भ्रातृतत्पुत्रपितृव्यादयः । तेष्वपि मृतेषु तथा त्र्यहमनध्यायः । ब्रह्मचारिणो विधिरयम् । आशौचवतां तु यावदाशौचमनध्यायः शास्त्रान्तरसिद्धः —

> 'उभयत्र दशाऽहानि
> कुलस्यान्नं न भुज्यते ।
> दानं प्रतिग्रहो यज्ञः
> स्वाध्यायश्च निवर्तते ॥'

इति । 11**उभयत्र** जनने मरणे च ॥३॥

04 मातरि पितर्याचार्य इति

मातरि पितर्य् आचार्य इति द्वादशाहाः ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. (He shall not study) for twelve days, if his mother, father, or teacher have died.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मातरि पिताचार्य इति द्वादशाहाः ॥४॥

टिप्पनी⑥

मात्रादिषु मृतेषु द्वादशाहमनध्यायः। अयं विधिर्गृहस्थानामपि । केचिदाशौचमपि तावन्तं कालमिच्छन्ति । नेति वयम्, अनध्यायप्रकरणात् ॥ ४॥

05 तेषु चोदकोपस्पर्शनन् तावन्तङ्

तेषु चोदकोपस्पर्शनं तावन्तं कालम् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. If these (have died), he must (also) bathe for the same number of days.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषु चोदकोपस्पर्शनं तावन्तं कालम् ॥५॥

टिप्पनी⑥

मात्रादिष्व् अधिकं तावन्तं कालम् अहर् अहस् स्नानम् अपि कार्यम, न केवलम् अनध्यायः ॥५॥

06 अनुभाविनाञ् च परिवापनम्

अनु-भाविनां*(=पश्चाज्-जातानां)* च परिवापनम् ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. Persons who are younger (than the relation deceased), must shave (their hair and beard), 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनुभाविनां च परिवापनम् ॥ ६॥

टिप्पनी⑥

अनु पश्चात् भूता जाता अनुभाविनः मृतापेक्षयाऽवरवयसः। तेषां परिवापनमपि भवति केशानाम् । 13 कृत्यच' इति प्राप्तस्य णत्वस्य 14'णे15र्विभाषे'ति विकल्पः । अन्ये तु शावं दुःखमनुभवतां सर्वेषां परिवापनमिच्छन्ति। अपर आह- अनुभाविन उदकार्हाः । तेषां मरणे परिवापनमिति ॥६॥

"शिखामनु प्रवपन्त ऋध्यै" इति वचनम् ! तस्य बलीयस्त्वादित्याह"इति ख. पु.

07 न समावृत्ता वपेरन्न्

न समावृत्ता *(केशान्)* वपेरन्न् अन्यत्र *(याग-)*विहाराद् इत्येके ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. Some declare, that students who have returned home on completion of their studentship, shall never shave, except if engaged in the initiation to a Śrauta-sacrifice. 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न समावृत्ता वपेरन्नन्यत्र विहारादित्येके ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

विहारो यागदीक्षा । ततोऽन्यत्र न समावृत्ता वपेरनित्येके मन्यते । स्वमतं तु वपरन्नेवेति ॥ ७॥

08 अथापि ब्राह्मणं "रिक्तो

अथापि ब्राह्मणं - "रिक्तो वा एषोऽनपिहितो यन् मुण्डः। तस्यैतद् अपिधानं यच् छिखे"ति ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. Now a Brāhmaṇa also declares, 'Verily, an empty, uncovered (pot) is he, whose hair is shaved off entirely; the top-lock is his covering.' 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथापि ब्राह्मणम्-रिक्तो वा एषोऽनपिहितो यन्मुण्डस्तस्यैतदपिधानं यच्छिखेति ॥८॥

प्रस्तावः⑥

तत्र वपनस्याऽमङ्गलत्वं गुणविधिना परिहारं च वक्तुं ब्राह्मणमुदाहरति —

टिप्पनी⑥

रिक्तः अन्तःशून्यो घटादिः। सोऽनपिहितः पिधानरहितो यादृशः तादृश एषः यन्मुण्डो नाम । तस्य रिक्तस्यापिधानमेतत् यच्छिखा नाम । अनेन चैतद्दर्शित-निषेधशास्त्रं सह शिखया वपनप्रतिषेधपरमिति ॥ ८॥

09 सत्रेषु तु वचनाद्

सत्रेषु तु वचनाद् वपनं शिखायाः ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. But at sacrificial sessions the top-lock must be shaved off, because it is so enjoined in the Veda. 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सत्रेषु तु वचनाद्वपनं शिखायाः ॥ ९ ॥

प्रस्तावः⑥

कथं तर्हि सत्रेषु शिखाया वपनम् ? 19वचनसामर्थ्यादित्याह—

टिप्पनी⑥

स्पष्टम् ॥ ९॥

10 आचार्ये त्रीनहोरात्रानित्येके

आचार्ये त्रीन् अहोरात्रान् इत्य् एके १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. Some declare, that, upon the death of the teacher, (the reading should be interrupted) for three days and three nights. 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आचार्य त्रीनहोरात्रानित्येके ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

आचार्ये संस्थिते त्रीनहोरात्रानध्ययनं वर्जयेदित्येके मन्यते । स्वपक्षस्तु द्वादशाहः पूर्वमुक्तः ॥ १० ॥

11 श्रोत्रियसंस्थायामपरिसंवत्सरायामेकाम्

श्रोत्रिय-संस्थायाम् अपरिसंवत्सरायाम् एकाम् *(रात्रिम्)* ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. If (he hears of) the death of a learned Brāhmaṇa (Śrotriya) before a full year (since the death) has elapsed, (he shall interrupt his reading) for one night (and day). 21

▼ हरदत्त-टीका

श्रोत्रियसंस्थाचा22मपरिसंवत्सरायामेकाम् ॥ ११ ॥

श्रोत्रियं 23वक्ष्यति । तस्य संस्थायामपरिपूर्णसंवत्सराया श्रुतायामेकां रात्रिमेकमहोरात्रमध्ययनं वर्जयेत् । अत्र संस्थाश्रवणाद्गुर्वादिष्वपि सैव निमिक्कमनध्यायस्य ॥ ११ ॥

13 सब्रह्मचारिणीत्येके १२ ...

सब्रह्मचारिणीत्य् एके १२ ...

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. Some declare, (that the deceased Śrotriya must have been) a fellow-student.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सब्रह्मचारिणीत्येके ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

एके तु सब्रह्मचारिणो मरण एवाऽनन्तरोक्तमनध्यायमिच्छन्ति, न तु श्रोत्रियसामान्यमरणे ॥ १२॥

13 श्रोत्रियाभ्यागमेऽधिजिगांसमानो...

श्रोत्रियाभ्यागमे ऽधिजिगांसमानो ऽधीयानो वा ऽनुज्ञाप्याधीयीत १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13-14. If a learned Brāhmaṇa (Śrotriya) has arrived and he is desirous of studying or is actually studying, (or if he is desirous of teaching or is teaching,) he may study or teach after having received permission (to do so from the Śrotriya).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्रोत्रियाभ्यागमेऽधिजिगांसमानोऽधीयानो वाऽनुज्ञाप्याधीयीत ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

श्रोत्रियेऽभ्यागते अध्येतुकामोऽधीयानश्च तमनुज्ञाप्याधीयीत ॥ १३ ॥

14 अध्यापयेद्वा

अध्यापयेद् वा १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

(See previous sUtra.)

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अध्यापयेद्वा ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

अध्यापयितुकामोऽध्यापयन्वेति प्रकरणाद्गम्यते । सोऽपि तमनुज्ञाप्याध्यापयेदिति ॥ १४॥

15 गुरुसन्निधौ चाधीहि भो

गुरुसंनिधौ चाधीहि भो इत्य् *(आत्मगतम्)* उक्त्वाधीयीत १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15-16. He may likewise study or teach in the presence of his teacher, if (the latter) has addressed him (saying), 'Ho, study! (or, Ho, teach!)' 24

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गुरुसन्निधौ "चाधीहि भो" इत्युक्त्वाऽधीयीत ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

धारणाध्ययनं पारायणाध्ययनं वा कुर्वन् गुरौ सन्निहिने सति 'अधीहि भो' इत्युक्त्वाऽधीयीत ॥ १५॥*

16 अध्यापयेद्वा

अध्यापयेद् वा १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

(See previous sUtra.)

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अध्यापयेद्वा ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

अध्यापयन्नपि तत्सन्निधावेवमेवोक्त्वाऽध्यापयेत् ॥ १६ ॥*

17 उभयत उपसङ्ग्रहणमधिजिगांसमानस्याधीत्य च

उभयत उपसंग्रहणम् अधिजिगांसमानस्याधीत्य च १७*(5)*

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. When a student desires to study or has finished his lesson, he shall at both occasions embrace the feet of his teacher. 25

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उभयत उपसंग्रहणमधिजिगांसमानस्याधीत्य च ॥१७॥

टिप्पनी⑥

उभयतः अध्ययनस्याऽऽदावन्ते च उपसंग्रहण कर्तव्यं यथाक्रम26मध्ये तु कामस्याऽऽदावधीत्यान्ते ॥ १७ ॥*

*मनौ. २. ७३ श्लोको द्रष्टव्यः ।

18 अधीयानेषु वा यत्रान्यो

अधीयानेषु वा यत्रान्यो व्यवेयाद् *(=मध्ये गच्छेत्)*, एतम् एव शब्दम् *(=अधीहि भोः)* उत्सृज्याधीयीत १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. Or if, whilst they study, another person comes in, he shall continue his recitation, after those words, ('Ho, study!') have been pronounced (by the newcomer). 27

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अधीयानेषु वा यत्राऽन्यो व्यवेयादेतमेव शब्दमुत्सृज्याऽधीयीत ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

बहुवचनमतन्त्रम् । अधीयानेषु च यत्राऽन्यो व्यवेयादन्तरा गच्छेत्, तत्रा'प्यधीहि भो' इत्येतमेव शब्दमुत्सृज्य उच्चार्याऽधीयीत । प्रत्येकमुपदेशादेकवचनम् । अर्थायीरन् ॥ १८ ॥

19 श्वगर्दभनादाः सलावृक्येकसृकोलूकशब्दाः सर्वे

*(बहु-)*श्व-गर्दभ-नादाः सलावृक्य्-एकसृक*(=श्रृगाल)*+उलूक-शब्दाः
सर्वे वादित्र-शब्दा
रोदन-गीत-सामशब्दाश् च १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. The barking of (many) dogs, the braying of (many) asses, the cry of a wolf or of a solitary jackal or of an owl, all sounds of musical instruments, of weeping, and of the Sāman melodies (are reasons for discontinuing the study of the Veda). 28

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्वगर्दभनादास्सलावृक्येकसृकोलूकशब्दास्सर्वे वादितशब्दा रोदनगीतसामशब्दाश्च ॥१९॥

टिप्पनी⑥

शुनां गर्दभानां च बहूनां नादः । बहुवचननिर्देशात् ।

सलावृकी वृकजाताव् अवान्तरभेदः । क्रोष्ट्रीत्यन्ये । लिङ्गस्याविवक्षितत्वात् पुंसोऽपि ग्रहणम् । 29 'इन्द्रो यतीन् सालावृकेभ्य' इत्यादौ दर्शनात् । सर्वत्रादिस्वरो दीर्घः । स एवायं विकृतः प्रयुक्तः ।

एकसृकः एकचरः सृगालः । उलूको दिवाभीतः। एतेषां च शब्दाः । वादितानि वादित्राणि वीणावेणु मृदङ्गादीनि । तेषां च सर्वे शब्दाः । रोदनशब्दादयश्च । एते श्रूयमाणा 30अनध्यायस्य हेतवः ॥ १९ ॥

20 शाखान्तरे च साम्नामनध्यायः

शाखान्तरे *(श्रूयमाणे)* च साम्नाम् अनध्यायः २०

▼

⑤

>

▼ Bühler

20. If another branch of the Veda (is being recited in the neighbourhood), the Sāman melodies shall not be studied.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शाखान्तरे च साम्नामनध्यायः ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

वेदान्तरसकाशे31 साम्नामनध्ययनम् । गीतिषु सामाख्या, तद्योगाद्वेदवचन इत्यन्ये ॥२०॥

21 सर्वेषु च शब्दकर्मसु

सर्वेषु च शब्दकर्मसु *(=आक्रोश-परिवादादिषु)* यत्र *(+अध्ययन-शब्देन)* संसृज्येरन् २१

▼

⑤

>

▼ Bühler

21. And whilst other noises (are being heard, the recitation of the Veda shall be discontinued), if they mix (with the voice of the person studying). 32

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वेषु च शब्दकर्मसु यत्र संसृज्येरन् ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

आक्रोश33परिवादादिषु सर्वेषु शब्दकर्मसु अनध्यायः। यत्राध्ययनशब्देन ते ससृज्येरन् ॥ २१॥

22 छर्दयित्वा स्वप्नान्तम्

छर्दयित्वा *(=वमित्वा)* स्वप्नान्तम् *(नाधीयीत)*। २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. After having vomited (he shall not study) until he has slept. 34

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

छर्दयित्वा स्वप्नान्तम् ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

छर्दनं वमनम् । तत्कृत्वा स्वप्नान्तं यावन्नाऽधीयीत ॥ २२ ॥

23 सर्पिर्वा प्राश्य

सर्पिर्वा प्राश्य *(अधीयीत)*। २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. Or (he may study) having eaten clarified butter (after the attack of vomiting).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्पिर्वा प्राश्य ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

अथ वा सर्पिः प्राश्याऽधीयीत ॥ २३ ॥

24 पूतीगन्धः

पूतीगन्धः २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. A foul smell (is a reason for the discontinuance of study). 35

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पूतिगन्धः ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

दुर्गन्ध उपलभ्यमानोऽनध्यायहेतुः ॥ २४ ॥

25 शुक्तञ् चात्मसंयुक्तम्

शुक्तं *(=पक्वं कालपाकेनाम्लं जात)* चात्मसंयुक्तम् *(=उदरस्थम्)* २५

▼

⑤

>
▼ Bühler

25. Food turned sour (by fermentation), which he has in his stomach, (is a reason for the discontinuance of the recitation, until the sour rising ceases). 36

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शुक्तञ्चाऽऽत्मसंयुक्तम् ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

यत्पक्वं कालपाकेनाऽम्लं जातं तच्छुक्तम् । तद्यावदात्मसंयुक्तं स्वोदरस्थमजीर्णं, यावत्तदनुगुण उद्गारस्तावदनध्यायहेतुः ॥ २५ ॥

26 प्रदोषे च भुक्त्वा

प्रदोषे च भुक्त्वा २६

▼

⑤

>
▼ Bühler

26. (Nor shall he study) after having eaten in the evening, 37

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रदोषे च भुक्त्वा नाऽधीयीत ॥ २६ ॥

टिप्पनी⑥

तेनाऽधीत्यैव भुञ्जीत ॥ २६ ॥

27 प्रोदकयोश्च पाण्योः

प्रोदकयोश्च *(= भुक्त्वार्द्रयोः)* पाण्योः २७

▼

⑤

>
▼ Bühler

27. Nor as long as his hands are wet. 38

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रोदकयोश्च पाण्योः ॥ २७ ॥

टिप्पनी⑥

भुक्त्वेत्येव । भुक्त्वा यावत्प्रोदकौ पाणी आर्द्रौ तावन्नाऽधीयीत । केचित् भुक्त्वेति नानुवर्तयन्ति ॥ २७ ॥

28 प्रेतसङ्क्लृप्तञ् चान्नम् भुक्त्वा

प्रेतसंक्लृप्तं चान्नं भुक्त्वा सप्रदोषमहरनध्यायः २८

▼

⑤

>

▼ Bühler

28. (And he shall discontinue studying) for, a day and an evening, after having eaten food prepared in honour of a dead person (for whom the Sapiṇḍī-karaṇa has not yet been performed), 39

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रेतसंक्लृप्तं चान्नं भुक्त्वा सप्रदोषमहरनध्यायः ॥ २८ ॥

टिप्पनी⑥

यो मृतोऽसपिण्डीकृतस्स प्रेतः । तदुद्देशेन दत्तमन्नं भुक्त्वा सप्रदोषमहर्नाऽधीयीत । प्रदोषादूर्ध्वं न दोषः । अत्र मनुः —
40यावदेकानुदिष्टस्य गन्धो लेपश्च तिष्ठति । विप्रस्य विदुषो देहे तावद्ब्रह्म न कीर्तयेत् ॥' इति ॥ २८ ॥

29 आ च विपाकात्

आ च विपाकात् २९

▼

⑤

>
▼ Bühler

29. Or until the food (eaten on that occasion) is digested. 41

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आ च विपाकात् ॥ २९ ॥

टिप्पनी⑥

यदि तावता कालेन तदन्नं पक्वं जीर्णं न भवति, तत आविपाकात् तस्य नाऽधीयीत ॥ २९ ॥

30 अश्राद्धेन तु पर्यवदध्यात्

अश्राद्धेन तु पर्यवदध्यात् ३०

▼

⑤

>

▼ Bühler

30. But he shall (always) eat in addition (to the meal given in honour of a dead person), food which has not been given at a sacrifice to the Manes. 42

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अश्राद्धेन तु पर्यवदध्यात् ॥ ३० ॥

टिप्पनी⑥

जीर्णे अजीर्णे च तस्मिन् अश्राद्धेनाऽन्नेन पर्यवदध्यात् तस्योपर्यश्राद्धमन्नं भुञ्जीतेत्युक्तं भवति । केचित् अत्र 'अश्राद्धेने'ति वचनात् पूर्वत्रापि प्रेतान्नमिति श्राद्धमात्रं विवक्षितं मन्यन्ते ॥ ३० ॥

॥ इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रे तद्वृत्तावुज्वलाया च दशमी कण्डिका ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.

   ↩

2. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

3. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
4. आप० ध० १.३०.८.↩
5. मनु० रमृ० २.६↩
6. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
7. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
8. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
9. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
10. Manu II, 35.↩
11. आप० ध० १.३०.८.↩
12. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
13. मनु० रमृ० २.६↩
14. गौ० ध० १. १, २↩
15. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
16. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
17. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which,

according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

18. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩
19. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
20. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩
21. Manu II, 144.↩
22. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
23. आप० ध० १.३०.८.↩
24. Manu II, 146-148.↩
25. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩
26. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

27. Manu II, 147.↩

28. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

29. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

30. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

31. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

32. Manu II, 37.↩

33. आप० ध० १.३०.८.↩

34. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

35. The meaning of the Sūtra is, that the initiation shall be performed as soon as the child is able to begin the study of the Veda. If it is so far developed at eight years, the ceremony must then be performed; and if it be then neglected, or, if it be neglected at any time when the capacity for learning exists, expiation prescribed in the following Sūtras must be performed. The age of sixteen in the case of Brāhmaṇas is the latest term up to which the ceremony may be deferred, in case of incapacity for study only. After the lapse of the sixteenth year, the expiation becomes also necessary. Manu II, 38; Yājñ. I, 37.↩

36. The meaning is, he shall keep all the restrictions imposed upon a student, as chastity, &c, but that he shall not perform the fire-worship or service to a teacher, nor study. Manu II, 39; XI. 192, Yājñ. I, 38; Weber, Ind. Stud. X, 101.↩

37. 'If he is strong, he shall bathe three times a day--morning, midday, and evening.'--Haradatta.↩

38. Brahman, apparently, here means 'Veda,' and those who neglect its study may be called metaphorically 'slayers of the Veda.'↩

39. Manu II, 40; Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 8, 9; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

40. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

41. Compare above, I, 1, 1, 28.↩

42. 'Because in this Sūtra the expression "food not given at a Śrāddha" occurs, some think that the preceding Sūtra refers to "food eaten at a Śrāddha."'--Haradatta. This explanation is not at all improbable.↩

११①

01 {अनध्ययनम्} काण्डोपाकरणे चामातृकस्य④

{अनध्ययनम्} काण्डोपाकरणे चामातृकस्य १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. (The recitation of the Veda shall be interrupted for a day and evening if he has eaten), on beginning a fresh Kāṇḍa (of his Veda), food given by a motherless person, 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

काण्डोपाकरणे चाऽऽमातृकस्य ॥१॥

टिप्पनी⑥

काण्डोपाकरणं काण्डव्रतादेशनम् । तस्मिन्नहनि अमातृकस्यान्नं भुक्त्वा सप्रदोषमहरनध्यायः। अपर आह-भुक्त्वेति नाऽनुवर्तते । यथाचोत्तरत्र भुक्त्वा ग्रहणम् । काण्डोपाकरणे अमातृकस्य माणवकस्य सप्रदोषमहरनध्यायः। एतेनोत्तरं व्याख्यातम् ॥ १॥

02 काण्डसमापने चापितृकस्य

काण्डसमापने चापितृकस्य २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. And also if he has eaten, on the day of the completion of a Kāṇḍa, food given by a fatherless person.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

काण्डसमापने चाऽपितृकत्य ॥२॥

टिप्पनी⑥

काण्डसमापनं व्रतविसर्गः ॥२॥

03 मनुष्यप्रकृतीनाञ् च देवानां

मनुष्यप्रकृतीनां च देवानां यज्ञे भुक्त्वेत्येके ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. Some declare, that (the recitation shall be interrupted for the same space of time), if he has eaten at a sacrifice offered in honour of gods who were formerly men. 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मनुष्यप्रकृतीनां च देवानां यज्ञे भुक्त्वत्येके ॥३॥

टिप्पनी⑥

ये मनुष्या भूत्वा प्रकृष्टेन तपसा देवास्सम्पन्नास्ते मनुष्यप्रकृतयो 3नन्दिकुबेरादयः । तेषां यज्ञः तत्प्रीत्यर्थं ब्राह्मणभोजनम्, तत्र भुक्त्वा सप्रदोषमहरनध्याय इत्येके मन्यन्ते । मनुभ्यमुखेन देवेष्विज्यमानेष्वित्यन्ये ॥३॥

04 पर्युषितैस्तण्डुलैराममांसेन च नानध्यायाः

पर्युषितैस्तण्डुलैराममांसेन च नानध्यायाः ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. Nor is the recitation interrupted, if he has eaten rice received the day before, or raw meat (though these things may have been offered in honour of the dead), 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पर्युषितैस्तण्डुलैराममांसेन च नाऽनध्यायः ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

'प्रेतसंक्लृप्तं चाऽन्न'(१०.२८)मित्यस्यापवादः। पर्युषिता रात्र्यन्तरिताः ह्यः प्रतिगृहीताः, तेषु तण्डुलेष्वद्य पक्त्वा भुज्यमानेषु नानध्यायः। तथा आममांसेन तदहर्भक्षितेनापि नानध्यायः। पर्युषितेनेत्येके । 'पर्युषितै'रिति वचनात्तदहर्भक्षितैः सप्रदोषमहरनध्यायः ॥ ४॥

05 तथौषधिवनस्पतिमूलफलैः

तथौषधिवनस्पतिमूलफलैः ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. Nor (if he has eaten at a funeral dinner) roots or fruits of herbs and trees.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथौषधिवनस्पतिमूलफलैः॥५॥

टिप्पनी⑥

ओषधिग्रहणेन वीरुधोऽपि गृह्यन्ते । वनस्पतिग्रहणेन वृक्षमात्रम् । तेषां मूलैः सूरणकन्दादिभिः फलैश्चाऽम्रादिभिः पक्वैरपक्वैश्च तदहक्षितैरपि नाऽनध्यायः॥५॥

06 यत्काण्डमुपाकुर्वीत यस्य चानुवाक्यङ्

यत्काण्डमुपाकुर्वीत यस्य चानुवाक्यं कुर्वीत न तत्तदहरधीयीत ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. When he performs the ceremony for beginning of a Kāṇḍa, or when he studies the index of the Anuvākas 5 of a (Kāṇḍa), he shall not study that (Kāṇḍa) on that day (nor in that night).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यत्काण्डमुपाकुर्वीत यस्य चानुवाक्यं कुर्वीत न तत्तदहरधीयीत ॥६॥

टिप्पनी⑥

यस्मिन्नहनि यत्काण्डमुपाकृतं न तत्तदहरधीयीत ।
तथा श्रावण्यां पौर्णमास्याम् उपाकृत्य
प्रशस्ते ऽहर्-अन्तरे यस्य काण्डस्यानुवाक्यम् अध्येतुम् आरम्भं कुर्वीत
न तत्-तद्-अहर् अधीयीत ।
अहर् इत्य् अहोरात्रोपलक्षणम् ॥६॥

07 उपाकरणसमापनयोश्च पारायणस्य तां

उपाकरणसमापनयोश्च पारायणस्य तां विद्याम् ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. And if he performs the ceremonies prescribed on beginning or ending the recitation of one entire Veda, he shall not study that Veda (during that day). 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उपाकरणसमापनयोश्च पारायणस्य तां विद्याम् ॥ ७॥

टिप्पनी⑥

अनेकवेदाध्यायी यद्येकस्य वेदस्य पारायणं कुरुते तदा तस्य पारायणस्य 7ये उपाकरणोत्सर्जने, तयोः कृतयोस्तां विद्यां तदहर् नाऽधीयीत । एतदेव ज्ञापकं पारायणस्याऽप्युपाकरणोत्सर्जने भवत इति । 'तां विद्यामि'ति वचनाद्विद्यान्तराध्ययने न दोषः ॥ ७॥

08 वायुर्घोषवान्भूमौ वा तृण

वायुर्घोषवान्भूमौ वा तृण संवाहो वर्षति वा यत्र धाराः प्रवहेत् ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. If the wind roars, or if it whirls up the grass on the ground, or if it drives the rain-drops forward during a rain-shower, (then the recitation shall be interrupted for so long a time as the storm lasts). 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वायुर्घोषवान् भूमौ तृणसंवाहो वर्षति वा यत्र धाराः प्रवहेत् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

घोषवान् कर्णश्रवः । भूमाववस्थितानि तृणानि संवाहयति उत्क्षिप्य गमयतीति तृणसंवाहः । वर्षति वा 9मेघे धाराः प्रवहेत् विक्षिपेत् । यत्र देशे एवंविधो वायुस्तत्र तावन्तं कालं नाऽधीयीत । अत्र मनुः —
10"कर्णश्रवेऽनिले रात्रौ दिवा पांसुसमूहने" ॥ इति ॥ ८॥

09 ग्रामारण्ययोश्च सन्धौ

ग्रामारण्ययोश्च सन्धौ ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. (Nor shall he study) on the boundary between a village and forest,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

11ग्रामारण्ययोश्च सन्धौ महापथे च विप्रोष्य च समध्ययनं तदहः ॥९॥

प्रस्तावः⑥

उत्तरे द्वे सूत्रे निगदसिद्धे—

टिप्पनी⑥

यदा12 सहाऽधीयानाः कारणवशाद्विप्रवसेयुः । केचिच्चाचार्येण वा सङ्गतास्तदा समध्ययनं सहाऽधीयमानं प्रदेश तदहर्नाधीयीत । विप्रोषितानां यदहः पुनर्मेलनं तदहर्नाधीयीतेत्यन्ये ॥ ९ ॥

10 महापथे च

महापथे च १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. Nor on a highway.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

महापथे च ॥

टिप्पनी⑥

(पूर्वसूत्रे व्याख्यातम् ।)

11 विप्रोष्य च समध्ययनन्

विप्रोष्य च समध्ययनं तदहः ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. If (some of his) fellow-students are on a journey, he shall not study during that day, (the passage) which they learn together. 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विप्रोष्य च समध्ययनं तदहः ॥

टिप्पनी⑥

(पूर्वसूत्रे व्याख्यातम् ।)

12 स्वैरिकर्मसु च

स्वैरिकर्मसु च १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. And whilst performing acts for his pleasure,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्वैरिकर्मसु च ॥१०॥

टिप्पनी⑥

नाधीयीतेत्येव ॥१०॥

13 यथा पाद प्रक्षालनोत्सादनानुलेपनाणीति

यथा पाद प्रक्षालनोत्सादनानुलेपनाणीति १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. Such as washing his feet, shampooing or anointing himself,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथाहस्तप्रक्षालनोत्सादनानुलेखणानाति ॥ ११ ॥

प्रस्तावः⑥

अत्रोदाहरणम्—

टिप्पनी⑥

णत्वमाकस्मिकम् , अपपाठो वा ॥ ११ ॥

14 तावन्तङ् कालन् नाधीयीताध्यापयेद्वा

तावन्तं कालं नाधीयीताध्यापयेद्वा १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. He shall neither study nor teach, as long as he is thus occupied.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तावन्तं कालं नाऽधीयीताऽध्यापयेद्वा ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

तेषु स्वैरिकर्मसु तावन्त कालमध्ययनमध्यापनञ्च वर्जयेत् ॥ १२ ॥

15 सन्ध्योः

सन्ध्योः १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. (He shall not study or teach) in the twilight, 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सन्ध्योः ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

सज्योतिषोऽज्योतिषोऽदर्शनात् उभे सन्ध्ये। तयोस्तावन्तं कालं नाधीयीताध्यापयेद्वा । एवमुत्तरत्राप्यनुवृत्तिः ॥ १३ ॥

16 तथा वृक्षमारूढः

तथा वृक्षमारूढः १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. Nor whilst sitting on a tree, 15

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा वृक्षमारूढोऽप्सु चावगाढो नक्तं चापावृते ॥ १४ ॥

प्रस्तावः⑥

उत्तरे द्वे सूत्रे निगदसिद्धे—

टिप्पनी⑥

विवृतद्वारमपावृतम् । तत्र नक्तं नाधीयीत ॥ १४ ॥

17 अप्सु चावगाढः

अप्सु चावगाढः १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. Nor whilst immersed in water,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्सु चावगाढः ॥

टिप्पनी⑥

(पूर्वसूत्रे व्याख्यातम् ।)

18 नक्तञ् चापावृते

नक्तं चापावृते १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. Nor at night with open doors,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नक्तं चापावृते ॥

टिप्पनी⑥

(पूर्वसूत्रे व्याख्यातम् ।)

19 दिवा चापिहिते

दिवा चापिहिते १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. Nor in the day-time with shut doors.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दिवा च पिहिते ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

संवृतद्वारं पिहितम् । तत्र दिवा नाधीयीत ॥ १५ ॥

20 अविहितमनुवाकाध्ययनमाषाढवासन्तिकयोः

अविहितमनुवाकाध्ययनमाषाढवासन्तिकयोः *(=वसन्तोत्सवः)* २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. During the spring festival and the festival (of Indra), in the month of Āṣāḍha (June-July), the study of an Anuvāka is forbidden. 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अविहितमनुवाकाध्ययनमाषाढवासन्तिकयोः ॥१६॥

टिप्पनी⑥

वासन्तिको वसन्तोत्सवः । स च चैत्रमासि शुक्लत्रयोदश्यां भवति । आषाढशब्देनापि तस्मिन्मासे क्रियमाणस्तादृशः कश्चिदिन्द्रोत्सवादिर्विवक्षितः। तयोस्तदहरनुवाकाध्ययनमविहितम् ।
अनुवाकग्रहणान्न्यूने न दोषः।
अपर आह- अनुवाकग्रहणान्मन्त्रब्राह्मणयोरेव प्रतिषेधः, नाङ्गानामिति ॥ १६ ॥

21 नित्यप्रश्नस्य चाविधिना

नित्यप्रश्नस्य चाविधिना २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. (The recitation) of the daily portion of the Veda (at the Brahmayajña is likewise forbidden if done) in a manner differing from the rule (of the Veda). 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नित्यप्रश्नस्य चाऽविधिना ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

नित्यं प्रश्नाध्ययनं यत्र स नित्यप्रश्नो ब्रह्मयज्ञः। तस्य चाविधिना वक्ष्यमाणेन प्रकारेण विनाऽनुवाकाध्ययनमविहितम् । यद्यपि नित्यं ब्रह्म यज्ञाध्ययनं तथापि केनचिदप्यङ्गेन विना न कर्तव्यम् । तेन विस्मृत्य प्रातराशे कृते प्रायश्चित्तमेव न ब्रह्मयज्ञः। मनुः—
'स्नातकव्रतलोपे च प्रायश्चित्तमभोजनम् । इति ॥ १७ ॥

22 तस्य विधिः

तस्य विधिः २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. (Now follows) the rule (for the daily recitation) of that (Brahmayajña).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्य विधिः ॥ १८॥

टिप्पनी⑥

तस्य नित्यप्रश्नस्य विधिर्वक्ष्यते ॥ १८ ॥

23 अकृतप्रातराश उदकान्तङ् गत्वा

अकृतप्रातराश उदकान्तं गत्वा प्रयतः शुचौ देशेऽधीयीत यथाध्यायम् उत्सृजन् वाचा २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. Before taking his morning-meal, he shall go to the water-side, and having purified himself, he shall recite aloud (a portion of the Veda) in a pure 18 place, leaving out according to (the order of the) texts (what he has read the day before).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अकृतप्रातराश उदकान्तं गत्वा प्रयतः शुचौ देशेऽधीयीत यथाध्यायमुत्सृजन्वाचा ॥ २९ ॥

टिप्पनी⑥

अकृतदिवाभोजन उदकसमीपं गत्वा प्रयतः स्नानमार्जनादिशुद्धः शुचौ देशे प्राच्यामुदीच्यां वा दिश्यच्छदिर्दर्शेऽधीयीत । यथाध्यायं यथा पामनुषङ्गरहितमुत्सृजन् आदित आरभ्य प्रथमादिष्वहस्सु19 अधीयीत द्वितीयादिषूत्सृज्य ततः परमधीयीत । वाचा उच्चैरित्यर्थः ॥ १९ ॥

24 मनसा चानध्याये

मनसा चानध्याये २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. If a stoppage of study is enjoined (for the day, he shall recite the daily portion) mentally.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मनसा चाऽनध्याये ॥२०॥

टिप्पनी⑥

अनध्याये च मनसाऽधीयीत नित्यस्वाध्यायम् ॥ २० ॥

25 विद्युति चाभ्यग्रायां स्तनयित्नाव्

विद्युति चाभ्यग्रायां स्तनयित्नाव् अप्रायत्ये प्रेतान्ने नीहारे च मानसं परिचक्षते २५

▼

⑤

>
▼ Bühler

25. If lightning flashes without interruption, or, thunder rolls continually, if a man has neglected to purify himself, if he has partaken of a meal in honour of a dead person, or if hoarfrost lies on the ground, (in these cases) they forbid the mental recitation (of the daily portion of the Veda). 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विद्युति चाऽभ्यग्रायां स्तनयित्नावप्रायत्ये प्रेतान्ने नीहीरे च मानसं परिचक्षते ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

विद्युति अभ्यग्रायामविरतायाम् । स्तनयित्नौ चाऽभ्यग्रे । अप्रायत्ये आत्मनोऽशुचिभावे । प्रेतान्ने च भुक्ते । नीहारे च नीहारो हिमानी तस्मिंश्च वर्तमाने । मानसमनन्तरोक्तमध्ययनं परिचक्षते वर्जयन्ति ॥ २१ ॥

26 श्राद्धभोजन एवैके

श्राद्धभोजन एवैके २६

▼

⑤

>

▼ Bühler

26. Some forbid it only in case one has eaten a funeral dinner. 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्राद्धभोजन एवैके ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

एके त्वाचार्याः श्राद्धभोजन एव मानसं परिचक्षते, न विद्युदादिषु ॥२२॥

27 विद्युत्स्तनयित्नुर्वृष्टिश्चापर्तौ यत्र सन्निपतेयुस्तस्त्र्यहमनध्यायः

विद्युत्स्तनयित्नुर्वृष्टिश्चापर्तौ यत्र संनिपतेयुस्तस्त्र्यहमनध्यायः २७

▼

⑤

>
▼ Bühler

27. Where lightning, thunder, and rain happen together out of season, the recitation shall be interrupted for three days. 22

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विद्युत्स्तनयित्नुर्वृष्टिश्चापर्तौ23 यत्र सन्निपतेयुस्त्र्यहमनध्यायः ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

अपर्तौ यस्मिन् देशे यो वर्षाकालः ततोऽन्यस्तत्रापर्तुः । तत्र यदि विद्युदादयस्सन्निपतेयुः समुदितास्स्युः तदा त्र्यहमनध्यायः ॥ २३ ॥

28 यावद्भूमिर्व्युदकेत्येके

यावद्भूमिर्व्युदकेत्येके २८

▼

⑤

>
▼ Bühler

28. Some (declare, that the recitation shall stop) until the ground is dry.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यावद्भूमिर्व्युदकेत्येके ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

यावता कालेन भूमिः विगतोदका भवति तावन्तं कालमनध्याय इत्येके मन्यन्ते ॥२४॥

29 एकेन द्वाभ्यां वैतेषामाकालम्

एकेन द्वाभ्यां वैतेषामाकालम् २९

▼

⑤

>
▼ Bühler

29. If one or two (of the phenomena mentioned in Sūtra 27 appear, the recitation shall be interrupted) from that hour until the same hour next day.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एकेन द्वाभ्यां वैतेषामाकालम् ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

एतेषां विद्युदादीनां मध्ये एकेन द्वाभ्यां वा योगे आकालमनध्यायः । अपरेद्युरा तस्य कालस्य प्राप्तिरित्यर्थः ॥ २५ ॥

30 सूर्याचन्द्रमसोर्ग्रहणे भूमिचलेऽपस्वान उल्कायामग्न्युत्पाते

सूर्याचन्द्रमसोर्ग्रहणे भूमिचलेऽपस्वान उल्कायामग्न्युत्पाते च सर्वासां विद्यानां सार्वकालिकमाकालम् ३०

▼

⑤

>
▼ Bühler

30. In the case of an eclipse of the sun or of the moon, of an earthquake, of a whirlwind, of the fall of a meteor, or of a fire (in the village), at whatever time these events happen, the recitation of all the sacred sciences (Vedas and Aṅgas) must be interrupted from that hour until the same hour next day. 24

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सूर्याचन्द्रमसोर्ग्रहणे भूमिचलेऽपस्वान उल्कायामग्न्युत्पाते च सर्वासां विद्यानां सार्वकालिकमाकालम् ॥२६॥

टिप्पनी⑥

'सुर्याचन्द्रमसो'रिति वचनं बृहस्पत्यादिनिवृत्त्यर्थम् । भूमिचले भूकम्पे । अपस्वाने निर्घाते । उल्कायामुल्कापाते । अग्न्युत्पाते25 ग्रामादिदाहे । एतेषु निमित्तेषु26 सर्वेषु सर्वासां विद्यानाम्—
27अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
पुराणं धर्मशास्त्रं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश ॥ इत्युक्तानाम् ।

सार्वकालिकमृतौ चापर्तौ चाऽऽकालमनध्यायः। अत्र 'सर्वासामि'ति वचनादन्यत्र वेदानामेव प्रतिषेधः । अङ्गानामपीत्यन्ये ॥ २६ ॥

31 अभ्रञ् चापर्तौ सूर्याचन्द्र

अभ्रं चापर्तौ सूर्याचन्द्र मसोः परिवेष इन्द्र धनुः प्रतिसूर्यमत्स्यश्च वाते पूतीगन्धे नीहारे च सर्वेष्वेतेषु तावन्तं कालम् ३१

▼

⑤

>

▼ Bühler

31. If a cloud appears out of season, if the sun or the moon is surrounded by a halo, if a rainbow, a parhelion or a comet appears, if a (high) wind (blows), 28 a foul smell (is observed), or hoarfrost (lies on the ground, at all these occasions (the recitation of all the sacred sciences must be interrupted) during the duration (of these phenomena).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अभ्रं चापर्तौ सूर्याचन्द्रमसोः परिवेष इन्द्रधनुः प्रतिसूर्यमत्स्यश्च वाते पूतिगन्धे नीहारे च सर्वष्वेतेषु तावत्कालम् ॥२७॥

टिप्पनी⑥

अपर्तावभ्रं दृश्यमानं यावत् दृश्यते तावत्कालमनध्यायः । एवं परिवेषादिवपि योज्यम् । बृहस्पत्यादिपरिवषे न दोषः । इन्द्रधनुः प्रसिद्धम् । सूर्यसमीपे तदाकृतिः प्रतिसूर्यः । मत्स्यः पुच्छवन्नवाम् । समाहारद्वन्द्वे छान्दसो लिङ्गव्यत्ययः । सर्वेष्वेतेषु वातादिषु च त्रिषु तावत्कालमनध्यायः । वाते घोषवति । पूतिगन्धे दुर्गन्धे । नीहारे हिमान्याम् । वातादिग्रहणं पूर्वोक्तानां श्वगर्दभादीनामुपलक्षणार्थम् । पुनरिह वचनं तावत्कालमिति विधातुम् । अत्रैव श्वगर्दभादिग्रहणे कर्तव्ये पूर्वत्र पाठस्य चिन्त्यं प्रयोजनम् ॥ २७ ॥

32 मुहूर्तं विरते वाते

मुहूर्तं विरते वाते ३२

▼

⑤

>

▼ Bühler

32. After the wind has ceased, (the interruption of the recitation continues) for one muhūrta. 29

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मुहर्तं विरते वाते ॥ २८ ॥

टिप्पनी⑥

वाते घोषवति विरतेऽपि मुहुर्तमात्रमनध्यायः। द्वे नाडिके मुहूर्तम् ॥ २८ ॥

33 सलावृक्यामेकसृक इति स्वप्नपर्यान्तम्

सलावृक्यामेकसृक इति स्वप्नपर्यान्तम् ३३

▼

⑤

>

▼ Bühler

33. If (the howl of) a wolf or of a solitary jackal (has been heard, he shall stop the reading) until he has slept.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सलावृक्यामेकसृक इति स्वप्नपर्यन्तम् ॥ २९ ॥

टिप्पनी⑥

30 तावत्काल'मित्यस्याऽपवादोऽयम् । सलावृक्येकसृकशब्दौ व्याख्यातौ ॥ २९॥

34 नक्तञ् चारण्येऽनग्नावहिरण्ये वा

नक्तं चारण्येऽनग्नावहिरण्ये वा ३४

▼

⑤

>
▼ Bühler

34. At night (he shall not study) in a wood, where there is no fire nor gold.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नक्तं चारण्येऽनग्नावहिरण्ये वा ॥३०॥

टिप्पनी⑥

रात्रावग्निवर्जिते हिरण्यवर्जिते वारण्ये नाधीयीत ॥ ३० ॥

35 अननूक्तञ् चापर्तौ छन्दसो

अननूक्तं चापर्तौ छन्दसो नाधीयीत ३५

▼

⑤

>
▼ Bühler

35. Out of term he shall not study any part of the Veda which he has not learnt before.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अननूक्तं चाऽपर्त्तौ छन्दसो नाधीयीत ॥ ३१ ॥

टिप्पनी⑥

उत्सर्जनादूर्ध्वमुपाकरणादर्वागपर्तुः । तत्र छन्दसोऽननूक्तमंशमपूर्वं नाऽधीयीत । ग्रहणाध्ययनमपर्तौ न कर्तव्यम् । यद्यपि31तैष्यां पौर्णमास्यां रोहिण्यां वा विरमे'दित्युक्तम, तथापि कियन्तं कालं तद्विररमणम् ? कस्माद्वाऽध्ययनम् ? इत्यपेक्षायामिदमुच्यते-एतावन्तं कालं ग्रहणाध्ययनं न कर्तव्यमिति । धारणाध्ययने न दोषः। तथा 'छन्दस' इति वचनादङ्गानां ग्रहणाध्ययने न दोषः ॥ ३१॥

36 {अननूक्तं} प्रदोषे च

{अननूक्तं} प्रदोषे च ३६

▼

⑤

>

▼ Bühler

36. Nor (shall he study during term some new part of the Veda) in the evening. 32

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रदोषे च ॥३२॥

टिप्पनी⑥

प्रदोषे चाऽननूक्तमृतामपि नाधीयीत । 33 मासं प्रदोषे नाधीयीते'त्येतत्तु धारणाध्ययनस्यापि प्रतिषेधार्थम् । अपर आह-यस्यां रात्रौ द्वादशी त्रयोदशी च मिश्रीभवतः, तस्यां प्रदोषे नाधीयातानूक्तमनूक्तं च, ऋतावपर्तौ च । एष आचार इति ॥ ३२ ॥

37 सार्वकालिकमाम्नातम् {अध्येतव्यम्}

सार्वकालिकमाम्नातम् *(=अधीतम्)* {अध्येतव्यम्} ३७

▼

⑤

>

▼ Bühler

37. That which has been studied before, must never be studied (during the vacation or in the evening). 34

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सार्वकालिकमाम्नातम् ॥ ३३ ॥

टिप्पनी⑥

आम्नातमधीतं तत्सार्वकालिकमपौ प्रदोषे च सर्वस्मिन्कालेऽध्येतव्यम् ॥ ३३ ॥

38 यथोक्तमन्यदतः परिषत्सु

यथोक्तमन्यदतः परिषत्सु ३८

▼

⑤

>

▼ Bühler

38. Further particulars (regarding the interruption 35 of the Veda-study may be learnt) from the (teaching and works of other) Vedic schools.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथोक्तमन्यदतः परिषत्सु ॥ ३४ ॥

टिप्पनी⑥

अत एतस्मादनध्यायप्रकरणोक्तादन्यदनध्यायनिमित्तम् । परिषत्सु मानवादिधर्मशास्त्रेषु यथोक्तं 36तथा द्रष्टव्यम् । तत्र वासेष्ठः 37 दिग्दाहपर्वतप्रपातेषूपलरुधिरपांसुवर्षेष्वाकालिक'मिति । यमः — 38 श्लेष्मातकस्य शल्मल्या मधूकस्य तथाप्यधः ।
कदाचिदपि नाध्येयं कोविदारकपित्थयोः॥ सङ्ग्रामोद्यानदेवतासमीपेषु नाधीयीतेति ॥ ३४ ॥

व. स्मृ. १३ ८. दिग्नादपर्वतनादकम्पप्रपातेषु, इति मुद्रितपुस्तकपाठः ।
निमित्तप्रादुर्भावादारभ्याऽन्येद्युर्यावत् स एव कालः स आकालः । तत्र भवमाकालिकम् ।

॥ इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तावुज्वलायामेकादशी कण्डिका ॥

इति चापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तविरचितायामुज्ज्वलायां प्रथमप्रश्ने तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥

इति तृतीयः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
4. Manu II, 35.↩
5. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
6. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire,

of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

7. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

8. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

9. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

10. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

11. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

12. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

13. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by

paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

14. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

15. Manu II, 144.↩

16. Manu II, 146-148.↩

17. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

18. Manu II, 147.↩

19. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

20. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

21. Manu II, 37.↩

22. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

23. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

24. The meaning of the Sūtra is, that the initiation shall be performed as soon as the child is able to begin the study of the Veda. If it is so far developed at eight years, the ceremony must then be performed; and if it be then neglected, or, if it be neglected at any time when the capacity for learning exists, expiation prescribed in the following Sūtras must be performed. The age of sixteen in the case of Brāhmaṇas is the latest term up to which the ceremony may be deferred, in case of incapacity for study only. After the lapse of the

sixteenth year, the expiation becomes also necessary. Manu II, 38; Yājñ. I, 37.↩

25. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

26. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

27. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

28. The meaning is, he shall keep all the restrictions imposed upon a student, as chastity, &c, but that he shall not perform the fire-worship or service to a teacher, nor study. Manu II, 39; XI. 192, Yājñ. I, 38; Weber, Ind. Stud. X, 101.↩

29. 'If he is strong, he shall bathe three times a day--morning, midday, and evening.'--Haradatta.↩

30. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

31. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

32. Brahman, apparently, here means 'Veda,' and those who neglect its study may be called metaphorically 'slayers of the Veda.'↩

33. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

34. Manu II, 40; Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 8, 9; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

35. Compare above, I, 1, 1, 28.↩

36. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

37. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

38. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

oɤ①

१२①

01 तपः स्वाध्याय इति④

तपः स्वाध्याय इति ब्राह्मणम् १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. A Brāhmaṇa declares, 'The daily recitation (of the Veda) is austerity.' 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तपः स्वाध्याय इति ब्राह्मणम् ॥१॥

टिप्पनी⑥

योऽयं नित्यस्वाध्यायस्तत्तपः कृच्छ्रातिकृच्छ्रचान्द्रायणादिलक्षणं तपो यावत्फलं साधयति तावत्साधयतीत्यर्थः ॥ १॥

02 तत्र श्रूयते स

तत्र श्रूयते । स यदि तिष्ठन् आसीनः शयानो वा स्वाध्यायमधीते तप एव तत्तप्यते तपो हि स्वाध्याय इति २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. In the same (sacred text) it is also declared, Whether he recites the daily portion of the Veda standing, or sitting, or lying down, he performs austerity thereby; for the daily recitation is austerity.' 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्र श्रूयते3स यदि तिष्ठन्नासीनः शयानो वा स्वाध्यायमधीते तप एव तत्तप्यते तपो हि स्वाध्याय इति ॥२॥

टिप्पनी⑥

तत्रैव ब्राह्मणे "स यदि तिष्ठन्नासीन' इत्यापत्कल्पः श्रूयते । तत्र 4 'दर्भाणां महदुपस्तीर्योपस्थं कृत्वा प्राङासीनः स्वाध्याय'मित्यादिर्मुख्यः कल्पो5 ब्राह्मण एवोक्तः । इह पुनरासीनवचनं यथाकथञ्चिदासनार्थम् । सर्वथाऽप्यधीयानस्तप एव तत्तप्यत इति ब्राह्मणार्थः। मनुरप्याह—
6आहैव स नखाग्रेभ्यः परमं तप्यते तपः।
यस्स्रग्व्यपि द्विजोऽधीते स्वाध्यायं शक्तितोऽन्वहम् ॥' इति ।
स्रग्वीति स्वैरं दर्शयति ॥२॥

03 अथापि वाजसनेयिब्राह्मणम् ब्रह्मयज्ञो

अथापि वाजसनेयिब्राह्मणम् । ब्रह्मयज्ञो ह वा एष यत्स्वाध्यायस्तस्यैते वषट्कारा यत्स्तनयति यद्विद्योतते यदवस्फूर्जति यद्वातो वायति । तस्मात्स्तनयति विद्योतमानेऽवस्फूर्जति वाते वा वायत्यधीयीतैव वषट्काराणामच्छम्बट्कारायेति ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Now the Vājasaneyi-brāhmaṇa declares also, 'The daily recitation is a sacrifice at which the Veda is offered. When it thunders, when lightning flashes or thunderbolts fall, and when the wind blows violently, these sounds take the place of the exclamations Vaṣaṭ (Vauṣaṭ and Svāhā). Therefore he shall recite the Veda whilst it thunders, whilst lightning flashes and thunderbolts fall, and whilst the wind blows violently, lest the Vaṣaṭ (should be heard) in vain. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथापि वाजसनेयिब्राह्मणम्8ब्रह्मयज्ञो ह वा एष यत्स्वाध्यायस्तस्यैते वषट्कारा यत्स्तनयति यद्विद्योतते यदवस्फूर्जति यद्वातो वायति । तस्मात् स्तनयति विद्योतमानेऽवस्फूर्जति वाते वा वायत्यधीयीतैव वषट्काराणामच्छम्बट्कारायेति ॥ ३॥

प्रस्तावः⑥

एवं कर्तुर्नियमो नाऽऽपद्यतीवाऽऽदरणीय इत्युक्त्वा कालेऽप्याह—

टिप्पनी⑥

अथापि अपि च स्वाध्यायो नाम य एष ब्रह्मयज्ञ ब्रह्मवेदः तत्साधनो यागः। यथा दर्शपूर्णमासादयः पुरोडाशादिसाधनाः। हवैशब्दौ प्रसिद्धिं द्योतयतः। तस्य यज्ञस्यैते वक्ष्यमाणाः स्तनयित्न्वादयो वषट्काराः वषटकारस्थानीयाः । बहुवचनर्निर्देशात्9 वषट्कारानुवषट्कारस्वाहाकारास्सर्वे प्रदानार्था गृह्यन्ते । 10स्तनितं मेघशब्दः। विद्योतनं विद्युद्व्यापारः। अवस्फूर्जनम् शनिपातः । तत्र अवस्फूर्जथुर्लिङ्गमिति दर्शनात् । 'वायती'ति ओवै शोषण' इत्यस्य रूपम् । यथा आर्द्रप्रदेशश्शुष्को भवति तथा11 वातीत्यर्थः । यस्मादेते वषट्काराः तस्मात् स्तननादिष्वनध्यायनिमित्तेषु सत्स्वप्यधीयीतैव । न पुनरनध्याय इति नाधीयीत । किमर्थम् ? वषट्काराणामेतेषामच्छम्बट्काराय अव्यर्थत्वाय । अन्यथा एते वषटकारा व्यर्थास्स्युः । ततश्च12 यथा होत्रा वषट्कृते अध्वर्युर्न जुहुयात् तादृगेव तत्स्यात् ॥३॥

04 तस्य शाखान्तरे वाक्यसमाप्तिः

तस्य शाखान्तरे वाक्यसमाप्तिः ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. The conclusion of the passage from that (Vājasaneyi-brāhmaṇa is found) in another Śākhā (of the Veda).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्य शाखान्तरे वाक्यसमाप्तिः॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

तस्य वाजसनेयिब्राह्मणस्य । शाखान्तरे वाक्यसमाप्तिर्भवति, न 13तावति पर्यवसानम् ॥ ४॥

05 अथ यदि वातो

अथ यदि वातो वा वायात् स्तनयेद् वा विद्योतेत वावस्फूर्जेद् वैकां वर्चमेकं वा यजुरेकं वा सामाभिव्याहरेद्भूर्भुवः सुवः सत्यं तपः श्रद्धायां जुहोमीति वैतत् । तेनो हैवास्यैतदहः स्वाध्याय उपात्तो भवति ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. 'Now, if the wind blows, or if it thunders, or if lightning flashes, or thunderbolts fall, then he shall recite one Ṛk-verse (in case he studies the Rig-Veda), or one Yajus (in case he studies the Yajur-veda), or one Sāman (in case he studies the Sāma-veda), or (without having a regard to his particular Veda, the following Yajus), "Bhūḥ Bhuvaḥ, Suvaḥ, in faith I offer true devotion." Then, indeed, his daily recitation is accomplished thereby for that day.' 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ यदि वा वातो वायात्स्तनयेद्वा विद्योतेत वाऽवस्फूर्जेद्वैकां वर्चमेकं वा यजुरेकं वा सामाभिव्याहरेद्भूर्भुवस्सुवस्सत्यं तपः श्रद्धायां जुहोमीति वैतत् । तेनोहैवाऽस्यैतदहस्स्वाध्याय उपात्तो भवति ॥ ६ ॥

प्रस्तावः⑥

तदेव 15शाखान्तरं पठति—

टिप्पनी⑥

अन्ते इतिशब्दोऽध्याहार्यः । वातादिषु सत्सु एकामृचमधीयीत । प्राप्ते प्रदेशे। यजु16र्वेदाध्ययन एकं यजुः । साम17वेदाध्ययन एकं साम । सर्वेषु वा वेदेषु 'भूर्भुवः सुव'रित्यादिकं यजुरभिव्याहरेत् , न पुनर्यथापूर्वं प्रश्नमात्रम् । तेनैव तावतैवास्याऽध्येतुः तदहः तस्मिन्नहनि स्वाध्याय उपात्तो भवति18 अधीतो भवतीति यावत् । केचितु 'भूर्भुवः सुव'रित्यादिकं ब्राह्मणभागाध्ययनविषयं मन्यन्ते, न सार्वत्रिकम् ॥५॥

06 एवं सत्यार्यसमयेनाविप्रतिषिद्धम्

एवं सत्यार्यसमयेनाविप्रतिषिद्धम् ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. If that is done, (if the passage of the Vājasaneyi-brāhmaṇa is combined with that quoted in Sūtra 5, the former stands) not in contradiction with the decision of the Āryas. 19

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवं सत्यार्यसमयेनाऽविप्रतिषिद्धम् ॥ ६ ॥

प्रस्तावः⑥

कस्मात् पुनर्वाजसनेयिब्राह्मणस्योदाहृते शाखान्तरे वाक्यसमाप्तिराश्रीयते न पुनर्यथाश्रुतमात्रं गृह्यते ? तत्राह—

टिप्पनी⑥

एवं सति वाक्यपरिसमाप्तावाश्रीयमाणायामार्यसमयेन आर्याः शिष्टा मन्वादयः तेषां समयो व्यवस्था, तेन अविप्रतिषिद्धं भवति । इतरथा विप्रतिषिद्धं स्यात् ॥ ६ ॥

07 अध्यायानध्यायं ह्युपदिशन्ति तदनर्थकं

अध्यायानध्यायं ह्युपदिशन्ति । तदनर्थकं स्याद्वाजसनेयिब्राह्मणं चेदवेक्षेत ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. For they (who know the law) teach both the continuance and the interruption (of the daily recitation of the Veda). That would be meaningless, if one paid attention to the (passage of the) Vājasaneyi-brāhmaṇa (alone).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अध्यायानध्यायं ह्युपदिशन्ति । तदनर्थकं स्याद्वाजसनेयिब्राह्मणं चेदवेक्षेत ॥ ७ ॥

प्रस्तावः⑥

कथम्?

टिप्पनी⑥

आर्या हि अध्यायमनध्यायं चोपदिशन्ति । तदुपदेशनमनर्थकं स्यात् यदि वाजसनेयिब्राह्मणं यथाश्रुतमवेक्षताऽध्येता ॥७॥

08 आर्यसमयो ह्यगृह्यमानकारणः

आर्यसमयो ह्यगृह्यमानकारणः ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. For no (worldly) motive for the decision of those Āryas is perceptible; (and hence it must have a religious motive and be founded on a passage of the Veda). 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आर्यसमयो ह्यगृह्यमानकारणः ॥ ८॥

प्रस्तावः⑥

ननु-अनर्थकमेवेदमस्तु, श्रुतिविरोधात् । तत्राह—

टिप्पनी⑥

योऽयमध्यायानध्यायविषय आर्यसमयः न तत्र किञ्चित्कारणं गृह्यते । यथा21 वैसर्जनहीमोयं वासोऽध्वर्यवे ददाती'त्यत्रागृह्यमाणकारणश्चार्यसमयः श्रुत्यनुमानद्वारेण प्रमाणम् । अतो वाक्यपरिसमाप्तिरेव युक्ता । एवं हि वाजसनेयिब्राह्मणस्यापि नात्यन्तबाधः । अनध्यायोपदेशस्यापि प्रभूताध्ययनविषयतयाऽर्थवत्वमिति । सूत्रे 'अगृह्यमान कारण' इति णत्वाभावश्छान्दसः ॥ ८ ॥

09 विद्याम् प्रत्यनध्यायः श्रूयते

विद्यां प्रत्यनध्यायः श्रूयते न कर्मयोगे मन्त्राणाम् ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. (The proper interpretation therefore is, that) the prohibition to study (given above and by the

Āryas generally) refers only to the repetition of the sacred texts in order to learn them, not to their application at sacrifices.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विद्यां प्रत्यनध्यायः श्रूयते न कर्मयोगे मन्त्राणाम् ॥ ९ ॥

प्रस्तावः⑥

का पुनरसौ स्मृतिः ? या ब्रह्मयज्ञेऽप्यनध्यायमुपदिशति । मानवे तावद्विपर्ययः श्रूयते—
22 'नैत्यके नास्त्यनध्यायो ब्रह्मसत्रं हि तत्स्मृतम् ।' इति ।
सामान्येनानध्यायोपदेशस्तु ब्रह्मयज्ञादन्यत्र चरितार्थः। तस्मात्तादृशी स्मृतिर्मृग्या । एवं तर्ह्यग्निहोत्रादिष्वपि मन्त्राणामनध्याय प्राप्नोति । नेत्याह—

टिप्पनी⑥

विद्या वेदाध्ययनम् । तां प्रत्यनध्यायः श्रूयते । न पुनर्मन्त्राणां कर्मयोगे । हेतुः परिभाषायामुक्तो23र्थान्तरत्वादिति । अर्थान्तरं हि कर्मणि प्रयोगो मन्त्राणाम् 24न पुनर्ग्रहणाध्ययनम् । पारायणाध्ययनमध्येऽनध्यायागमो भवति वा न वेति चिन्त्यम् । एवं श्रीरुद्रादिजपेऽपि ॥९॥

10 ब्राह्मणोक्ता विधयस्तेषामुत्सन्नाः पाठाः

ब्राह्मणोक्ता विधयस्तेषामुत्सन्नाः पाठाः प्रयोगादनुमीयन्ते १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. (But if you ask, why the decision of the Āryas presupposes the existence of a Vedic passage, then I answer): All precepts were

(originally) taught in the Brāhmaṇas, (but) these texts have been lost. Their (former existence) may, however, be inferred from usage. 25

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ब्राह्मणोक्ता विधयस्तेषामुत्सन्नाः पाठाः प्रयोगादनुमीयन्ते ॥ १० ॥

प्रस्तावः⑥

कथं पुनरार्यसमयः प्रमाणम् ? यावता न तेषामतीन्द्रियेऽर्थे ज्ञानं सम्भवति । तत्राह—

टिप्पनी⑥

विधीयन्त इति विधयः कर्माणि । ते सर्वे स्मार्ता अपि ब्राह्मणेष्वेवोक्ताः। नन्विदानीं ब्राह्मणानि नोपलभ्यन्ते। सत्यम्; तेषामुत्सन्नाः पाठाः, अध्येतृदौर्बल्यात् । कथं तर्हि तेषामस्तित्वम् ? प्रयोगादतुमीयन्ते । प्रयोगः स्मृतिनिबन्धनमनुष्ठानं च । तस्माद्ब्राह्मणान्यनुमीयन्ते मन्वादिभिरुपलब्धानीति । 26 कथमन्यथा स्मरेयुरनुतिष्ठेयुर्वा । सम्भवति च तेषां वेदसंयोगः ॥ १०॥

11 यत्र तु प्रीत्युपलब्धितः

यत्र तु प्रीत्युपलब्धितः प्रवृत्तिर्न तत्र शास्त्रमस्ति ११

▼

⑤

>

▼ Bühler

11. But it is not (permissible to infer the former existence of) a (Vedic) passage in cases where pleasure is obtained (by following a rule of the Smṛti or a custom). 27

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यत्र तु प्रीत्युपलब्धितः प्रवृत्तिर्न तत्र शास्त्रमस्ति ॥११॥

प्रस्तावः⑥

अथ प्रसङ्गादपस्मृतिरुच्यते—

टिप्पनी⑥

यत्र28पितृष्वसृसुतामातुलसुतापरिणयनादौ । प्रीत्युपलब्धितः प्रवृत्तिर्न तत्रोत्सन्नपाठं शास्त्रमनुमीयते, प्रीतेरेव प्रवृत्तिहेतोः सम्भवात् ॥ ११ ॥

12 तदनुवर्तमानो नरकाय राध्यति

तदनुवर्तमानो नरकाय राध्यति १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. He who follows such (usages) becomes fit for hell.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तदनुवर्तमानो नरकाय राध्यति ॥ १२ ॥

प्रस्तावः⑥

ततश्च—

टिप्पनी⑥

तद्विधानमनुतिष्ठन्नरकायैव राध्यति कल्पते ॥ १२ ॥

13 अथ ब्राह्मणोक्ता विधयः

अथ ब्राह्मणोक्ता विधयः १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. Now follow (some rites and) rules that have been declared in the Brāhmaṇas. 29

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ ब्राह्मणोक्ता विधयः ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

एवं स्मृत्याचारप्राप्तानां श्रुतिमूलत्वमुक्तम्। 30 अथ प्रत्यक्षब्राह्मणोक्ता एव केचिद्विधयो व्याख्यायन्ते तेषामपि स्मार्तेष्वनुप्रवेशार्थम् । तेन तदा तिक्रमे स्मार्तातिक्रमनिमित्तमेव प्रायश्चित्तं भवति ॥ १३॥

14 तेषाम् महायज्ञा महासत्त्राणीति

तेषां महायज्ञा महासत्त्राणीति संस्तुतिः १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. By way of laudation they are called 'great sacrifices ' or 'great sacrificial sessions.' 31

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषां 32महायज्ञा महासत्राणीति च संस्तुतिः ॥१४॥

टिप्पनी⑥

तेषां वक्ष्यमाणानां महायज्ञा इति संस्तुतिः स्वाध्यायब्राह्मणे । महासत्राणीति च संस्तुतिर्भवति बृहदारण्यकादौ । संस्तुतिग्रहणेन संस्तुतिमात्रमिदं न नामधेयं33 धर्मातिदेशार्थमिति दर्शयति । तेन महायज्ञेषु सोमयागेषु ये धर्माः 'न ज्येष्ठं भ्रातरमतीत्य सोमेन यष्टव्य'मित्यादयः, ये च महासत्रस्य गवामयनस्य धर्मा34 इष्टप्रथमयज्ञानामधिकार' इत्यादयः उभयेऽपि ते वक्ष्यमाणेषु पञ्चमहायज्ञेषु न भवन्ति ॥ १४ ॥

15 अहरहर्भूतबलिर्मनुष्येभ्यो यथाशक्ति दानम्

अहरहर्भूतबलिर्मनुष्येभ्यो यथाशक्ति दानम् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. (These rites include): The daily Bali-offering to the (seven classes of) beings; the (daily) gift of (food) to men according to one's power;

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

35अहरहर्भूतबलिर्मनुष्येभ्यो यथाशक्ति दानम् ॥ १५ ॥

प्रस्तावः⑥

के पुनस्ते? तानाह—

टिप्पनी⑥

वैश्वदेवे वक्ष्यमाणेन बलिहरणप्रकारेण भूतेभ्योऽहरहर्भूतबलिर्देयः, एष भूतयज्ञः । मनुष्येभ्यश्च यथाशक्ति दानं कर्तव्यम् । एष मनुष्ययशः ॥ १५ ॥

॥ इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ द्वादशी कण्डिका ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
3. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
4. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
5. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
6. आप० ध० १.३०.८.↩
7. Manu II, 35.↩
8. मनु० रमृ० २.६↩
9. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
10. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

11. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

12. आप० ध० १.३०.८.↩

13. मनु० रमृ० २.६↩

14. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

15. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

16. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

17. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

18. आप० ध० १.३०.८.↩

19. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

20. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

21. मनु० रमृ० २.६↩

22. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

23. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

24. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

25. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

26. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

27. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

28. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

29. Manu II, 144.↩

30. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

31. Manu II, 146-148.↩

32. आप० ध० १.३०.८.↩

33. मनु० स्मृ० २.६↩

34. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

35. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

१३①

01 देवेभ्यः स्वाहाकार आ④

देवेभ्यः स्वाहाकार आ काष्ठात्, पितृभ्यः स्वधाकार ओदपात्रात्, स्वाध्याय इति १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. The oblation to the gods accompanied by the exclamation Svāhā, which may consist even of a piece of wood only; the offering to the Manes accompanied by the exclamation Svadhā, which may consist even of a vessel with water only; the daily recitation. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

देवेभ्यः स्वाहाकार आ काष्ठात् पितृभ्यः स्वधाकार ओदपात्रात् स्वाध्याय इति ॥१॥

टिप्पनी⑥

देवेभ्यः स्वाहाकारेण प्रदानम् आकाष्ठात् अशनीयाभावे काष्ठमपि तावद्देयम् । वैश्वदेवोक्तप्रकारेणैवैष देवयज्ञः । केचिद्वैश्वदेवाहुतीभ्यः पृथग्भूतामिमामाहुतिं मन्यन्ते । 'देवेभ्यः स्वाहे'ति च मन्त्रमिच्छन्ति । 'देवयज्ञेन यक्ष्य' इति सङ्कल्पमिच्छन्ति । वयं तु न तथेति2 गृह्य

एवाऽवोचाम । केचिदाहुः—'आकाष्ठा'दिति वचनादशनीयाभावेन भोजनलोपेऽपि यथाकञ्चित् वैश्वदेवं कर्तव्यम्, पुरुषसंस्कारत्वादिति ।

अपरे तु-अशनीयसंस्कार इति वदन्तो भोजनलोपे वैश्वदेवं न कर्तव्यमिति स्थिताः। पितृभ्यः स्वधाकारेण प्रदानम् आरपात्रात् अन्नाद्यभावे उदपात्रमपि स्वधाकारेण तावद्देयम् । पात्रग्रहणात् सह पात्रेण देयम् । एष पितृयज्ञः । स्वाध्याय 3 'तस्य विधिरित्यारभ्योक्तो नित्यस्वाध्यायः । स तु ब्रह्मयज्ञः। इतिः समाप्तौ । इत्येते महायज्ञा इति । न चायमुपदेशक्रमोऽनुष्ठान उपयुज्यते । अनुष्ठानं तु—4ब्रह्मयज्ञो, देवयज्ञः, पितृयज्ञो, भूतयज्ञो, मनुष्ययज्ञ इति ॥ १॥
02 पूजा वर्णज्यायसाङ् कार्या

पूजा वर्णज्यायसां कार्या २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. Respect must be shown to those who are superior by caste, 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पूजा वर्णज्यायसां कार्या ॥ २ ॥

प्रस्तावः⑥

पूजां प्रसङ्गादाह—

टिप्पनी⑥

वर्णतो6 ये ज्यायांसः प्रशस्ततरा भवन्ति तेषामवरेण वर्णेन कार्या पूजा अध्वन्यनुगमनादिका उत्सवादिषु च गन्धलेपादिका ॥२॥

03 वृद्धतराणाञ् च

वृद्धतराणां च ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. And also to (persons of the same caste who are) venerable (on account of learning, virtue, and the like).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वृद्धतराणां च ॥३॥

टिप्पनी⑥

सजातीनामपि पूजा कार्या । तरपो निर्देशात्7 विद्यावयःकर्मभिर्वृद्धानां ग्रहणम् । हीनानामपीत्येके । तथा च मनुः—
8'शद्रोऽपि दशमी गत' इति ॥३॥

04 हृष्टो दर्पति दृप्तो

हृष्टो दर्पति दृप्तो धर्ममतिक्रामति धर्मातिक्रमे खलु पुनर्नरकः ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. A man elated (with success) becomes proud, a proud man transgresses the law, but through the transgression of the law hell indeed (becomes his portion).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

हृष्टो दर्पति दृप्तो धर्ममतिक्रामति धर्मातिक्रमे खलु पुनर्नरकः ॥ ४॥

प्रस्तावः⑥

पूजा कार्येत्युक्तम् । तद्विरोधी हर्षो वर्ज्य इत्याह—

टिप्पनी⑥

अभिमतलाभादिनिमित्तश्चित्तविकारो हर्षः । तद्युक्तो हृष्टः । स दर्पति दृप्यति। दर्पो गर्वोऽभिमानः। दृप्तो धर्ममतिक्रामति, पूज्यपूजनादिकं प्रति स्तब्धत्वात् । खलुपुनश्शब्दो वाक्यालङ्कारे । धर्मातिक्रमे खलु पुनर्नरको भवति निरय प्रतिपद्यते । तस्माद्धर्मातिक्रममूलभूतो

हर्षो न कर्तव्यः । यद्यपि भूतदाहीयेषु 9दोषेषु वर्जनीयेषु हर्षोऽपि, 10वक्ष्यते । तथापीह विशेषेण हर्षस्य वर्जनार्थोऽयमारम्भः ! योगाङ्गात्वाद्वक्ष्यमाणस्य ॥ ४॥

05 न समावृत्ते समादेशो

न समावृत्ते समादेशो विद्यते ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. It has not been declared, that orders (may be addressed by the teacher) to a pupil who has returned home. 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न समावृत्ते समादेशो विद्यते ॥ ५॥

टिप्पनी⑥

समावृत्तं शिष्यं प्रति आचार्येण समादेशो न देयः-इदं त्वया कर्तव्यमिति । यथा असमावृत्तदशायामाज्ञा दीयते-उदकुम्भमाहरेत्यादि, नैवमिदानीम्। स्वेच्छया करणे न प्रतिषेध्यम् ॥ ५॥

06 ॐकारः स्वर्गद्वारन् तस्माद्ब्रह्माध्येष्यमाण

ॐकारः स्वर्गद्वारं तस्माद्ब्रह्माध्येष्यमाण एतदादि प्रतिपद्येत ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. The syllable 'Om' is the door of heaven. 12 Therefore he who is about to study the Veda, shall begin (his lesson) by (pronouncing) it.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ओङ्कारस्स्वर्गद्वारं तस्माद्ब्रह्माऽध्येष्यमाण एतदादि प्रतिपद्येत ॥ ६॥

टिप्पनी⑥

ओङ्कारः प्रणवः स्वर्गस्य द्वारमिव । यथा द्वारेण गृहाभ्यन्तरं प्राप्यते तथाऽनेन स्वर्गः ! तम्मात् ब्रह्म वेदं स्वर्गसाधनमध्येष्यमाण एतदादि अनाम्नातमप्योङ्कारमादौ कृत्वा प्रतिपद्येत उपक्रमेताऽध्येतुम् ॥ ६ ॥

07 विकथाञ् चान्याङ् कृत्वैवं

विकथां चान्यां कृत्वैवं लौकिक्या वाचा व्यावर्तते ब्रह्म ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. If he has spoken anything else (than what refers to the lesson, he shall resume his reading by repeating the word 'Om'). Thus the Veda is separated from profane speech.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विकथां चान्यां कृत्वैवं लौकिक्या वाचा व्यावर्तते ब्रह्म ॥ ७॥

टिप्पनी⑥

अध्ययने ऽनुपयुक्ता कथा विकथा ।
तां चान्यां कृत्वा एतदादि प्रतिपद्येत । एवं सति ब्रह्म वेदः लौकिक्या वाचा व्यावर्तते तया मिश्रितं न भवति ॥७॥

08 यज्ञेषु चैतदादयः प्रसवाः

यज्ञेषु चैतदादयः प्रसवाः ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. And at sacrifices the orders (given to the priests) are headed by this word.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यज्ञेषु चैतदादयः प्रसवाः॥८॥

प्रस्तावः⑥

पुनरप्योङ्कारमेव स्तौति—

टिप्पनी⑥

यज्ञेषु दर्शपूर्णमासादिषु एतदादयः ओङ्कारादयः प्रसवा अनुज्ञावाक्यानि भवन्ति ब्रह्मादीनाम्-ॐ प्रणय, ॐ निर्वप, ॐ 13स्तुध्वमिति ॥ ८॥

09 लोके च भूतिकर्मस्वेतदादीन्येव

लोके च भूतिकर्मस्वेतदादीन्येव वाक्यानि स्युर्यथा पुण्याहं स्वस्त्यृद्धिमिति ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. And in common life, at the occasion of ceremonies performed for the sake of welfare, the sentences shall be headed by this

word, as, for instance, '(Om) an auspicious day,' '(Om) welfare,' '(Om) prosperity.' 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

लोके च भूतिकर्मस्वेतदादीन्येव वाक्यानि स्युर्यथा पुण्याहं स्वस्त्यृद्धिमिति ॥९॥

टिप्पनी⑥

यथा यज्ञेष्वोङ्कारादयः प्रसवाः, लोके च भूतिकर्मसु पाणिग्रहणादिषु एतदादीन्येव वाक्यानि स्युः । तान्युदाहरति— यथेति । पुण्याहवाचने ॐ कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्वि'ति वाचयिता वदति । 15 'ॐ पुण्याहं कर्मणोऽस्तु' इति प्रतिवक्तारः । 16 ॐ कर्मणे स्वस्ति भवन्तो अवन्तु' इति वाचयिता। 'ॐ कर्मणे स्वस्ति' इतीतरे। 17 ॐ कर्मण ऋद्धि भवन्तो ब्रुवन्तु" इति वाचयिता । 'ॐ कर्मर्घ्यतामितीतरे । तस्मादेवं प्रशस्त ॐकार इति ॥ ९॥

10 नासमयेन कृच्छ्रङ् कुर्वीत

नासमयेन कृच्छ्रं कुर्वीत त्रिःश्रावणं त्रिःसहवचनमिति परिहाप्य १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. Without a vow of obedience (a pupil) shall not study (nor a teacher teach) a difficult (new book) with the exception of (the texts called) Triḥsrāvaṇa and Tr.ihsahavacana. 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽसमयेन कृच्छ्ं कुर्वीत त्रिःश्रावणं त्रिस्सहवचनमिति परिहाप्य ॥१०॥

टिप्पनी⑥

समयः शुश्रूषा, तेन विना कृच्छ्रं दुःखं दुरवधारणं अपूर्वं ग्रन्थं न कुर्वीत । क्रियासामान्यवचनः करोतिरध्ययनेऽध्यापने च वर्तते । समयेन विना शिष्योऽपि कृच्छ्रं ग्रन्थं नाऽधीयीत । आवार्योऽपि नाध्यापयेत् । तथा च मनुः—
19 धर्मार्थौ यत्र न स्यातां शुश्रूषा वापि तद्विधा ।
न तत्र विद्या वप्तव्या शुभं बीजमिवोषरे' ॥ इति । किमविशेषेण ? नेत्याह-त्रिःश्रावणमात्रे त्रिस्सहवचनमिति परिहाप्य वर्जयित्वा । त्रिःश्रावणमात्रे त्रिस्सहवचनमात्रे चान्यतरापेक्षया क्रियमाणे शुश्रूषा नाऽपेक्ष्या । ततोऽधिके सर्वत्रापेक्ष्यति ॥१०॥

11 अविचिकित्सा यावद्ब्रह्म निगन्तव्यमिति

अविचिकित्सा यावद् ब्रह्म निगन्तव्यम् इति हारीतः ११ *(????)*

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. Hārita declares, that the (whole) Veda must be studied under a vow of obedience until there is no doubt (regarding it in the mind of the pupil). 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अविचिकित्सा यावद्ब्रह्म निगन्तव्यमिति हारीतः ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

विचिकित्सा संशयः। तदभावोऽविचिकित्सा सा यावदुत्पद्यते तावद्ब्रह्म निगन्तव्यं नियमपूर्वमधिगन्तव्यमिति हारीतः आचार्यो मन्यते । अत्र पक्षे त्रिःश्रावणत्रिस्सहवचनयोरपि शुश्रूषितव्यम् । ब्रह्मग्रहणादङ्गेषु नायं विधिः ॥ ११ ॥

12 न बहिर्वेदे गतिर्विद्यते

न बहिर्वेदे गतिर्विद्यते १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. No obedience is due (to the teacher for teaching) works which do not belong to the Veda.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न बहिर्वेदे गतिर्विद्यते ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

वेदाद्बहिर्भूते काव्यनाटकादिश्रवणे । गतिः शुश्रूषा न विद्यते यद्यपि तदुपयुक्तं वेदार्थज्ञाने ॥ १२ ॥

13 समादिष्टमध्यापयन्तं यावदध्ययनमुपसङ्गृह्णीयात्

समादिष्टमध्यापयन्तं यावदध्ययनमुपसंगृह्णीयात् १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. (A student) shall embrace the feet of a person, who teaches him at the request of his (regular teacher), as long as the instruction lasts. 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

समादिष्टमध्यापयन्तं यावदध्ययनमुपसंगृह्णीयात् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

य आचार्येण समादिष्टोऽध्यापयति तं यावदध्ययनं यावदसावध्यापयते तावदुपसंगृह्णीयात् । तथा 22 'समादिष्टेऽध्यापयती'त्यत्राऽऽचार्यवद्वृत्तिरुक्ता । तत्र 23चा'न्यत्रोपसङ्ग्रहणादि'ति वर्तते । 24अत उपसङ्ग्रहणार्थोऽयमारम्भः ॥ १३ ॥

14 नित्यमर्हन्तमित्येके

नित्यमर्हन्तमित्येके १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. Some (declare, that he shall also) always, (if the substitute is) a worthy person. 25

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नित्यमर्हन्तमित्येके ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

स चेत्समादिष्टोऽर्हन् भवति26 विद्यासदाचारादिना । ततो नित्यमुपसंगृह्णीयात्, इत्येके मन्यन्ते । स्वमते तु यावदध्ययनमिति ॥ १४ ॥

15 न गतिर् विद्यते

न गतिर् *(=शुश्रूषा)* विद्यते १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. But obedience (as towards the teacher) is not required (to be shown towards such a person).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न गतिर्विद्यते ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

यद्यसावर्हन् भवति तथाप्याचार्ये या गतिःशुश्रूषा सा तस्मिन्न् कर्तव्या ॥ १५ ॥

16 वृद्धानान् तु

वृद्धानां तु १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. And (pupils) older (than their teacher need not show him obedience). 27

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वृद्धानां तु ॥१६॥

टिप्पनी⑥

तुश्चार्थे । वृद्धानां चान्तेवासिनां न गतिर्विद्यते । पूर्ववयसाऽन्ते वासिना अवरवया आचार्यो न शुश्रूषितव्यः। अध्ययनादूर्ध्वमित्येके । अध्ययनकालेऽपीत्यन्ये । केचिदवरवयसाऽप्यन्तेवासिना न वार्धके गतिः कर्तव्येत्याहुः ॥ १६ ॥

17 ब्रह्मणि मिथो विनियोगे

ब्रह्मणि मिथो विनियोगे न गतिर्विद्यते १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. If (two persons) teach each other mutually (different redactions of) the Veda, obedience (towards each other) is not ordained for them.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ब्रह्मणि मिथो विनियोगे न गतिर्विद्यते ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

ब्रह्मणि वेदविषये यदा मिथो विनियोगः क्रियते बह्वृचो यजुर्वेदिनः सकाशाद्यजुर्वेदमधीते सोऽपि तस्मादृग्वेदम् । तदाऽपि परस्परं शुश्रूषा न कर्तव्या ॥ १७ ॥

18 ब्रह्म वर्धत इत्युपदिशन्ति

ब्रह्म वर्धत इत्युपदिशन्ति १८

▼

⑤

>

▼ Bühler

18. (For) the (wise) say, 'The Veda-knowledge (of either of them) grows.'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ब्रह्म वर्धत इत्युपदिशन्ति ॥ १८ ॥

प्रस्तावः⑥

अत्र हेतुं स्वयमेवाह—

टिप्पनी⑥

द्वयोरपि ब्रह्म वर्धते । सैव ब्रह्मवृद्धि' शुश्रूषेत्युपदिशन्त्याचार्याः ॥१८॥

19 निवेशे वृत्ते संवत्सरे

निवेशे वृत्ते संवत्सरे संवत्सरे द्वौ द्वौ मासौ समाहित आचार्यकुले वसेद्भूयः श्रुतमिच्छन्न् इति श्वेतकेतुः १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. Śvetaketu declares, 'He who desires to study more, after having settled (as a householder), shall dwell two months every year, with collected mind, in the house of his teacher,'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

निवेशे वृत्ते संवत्सरेसंवत्सरे द्वौद्वौ मासौ समाहित आचार्यकुले वसेद्भूयःश्रुतिमिच्छन्निति श्वेतकेतुः॥ १९॥

टिप्पनी⑥

भूयःश्रवणमिच्छन् पुरुषो निवेशे दारकर्मणि वृत्तेऽपि प्रतिसंवत्सरं द्वौद्वौ मासौ समाहितो भूत्वाऽचार्यकुले वसेदिति श्वेतकेतुराचार्यो मन्यते ॥ १९ ॥

20 एतेन ह्यहं योगेन

एतेन ह्यहं योगेन भूयः पूर्वस्मात्कालाच्छ्रुतमकुर्वीति २०

▼

⑤

>

▼ Bühler

20. (And he adds), 'For by this means I studied a larger part of the Veda than before, (during my studentship.)'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतेन ह्यहं योगेन भूयः पूर्वस्मात्कालाच्छ्रुतमकुर्वीति ॥ २० ॥

प्रस्तावः⑥

अत्र हेतुत्वेन श्वेतकेतोरेव शिष्यान्प्रति वचनम् —

टिप्पनी⑥

एतेनानन्तरोक्तेन योगेनोपायेन अहं पूर्वस्मात् ब्रह्मचर्यकालात् भूयः 28बहुतरं श्रुतमकुर्वीति कृतवानस्मि । अतो यूयमपि तथा कुरुध्वमिति ॥

21 तच्छास्त्रैर्विप्रतिषिद्धम्

तच्छास्त्रैर्विप्रतिषिद्धम् २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. That is forbidden by the Śāstras.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तच्छास्त्रैर्विप्रतिषिद्धम् ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

तदिदं श्वेतकेतोर्वचनं श्रुत्यादिभिः शास्त्रैर्विरुद्धम् ॥ २१ ॥

22 निवेशे हि वृत्ते

निवेशे हि वृत्ते नैयमिकानि श्रूयन्ते २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. For after the student has settled as a householder, he is ordered by the Veda, to perform the daily rites,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

निवेशे हि वृत्ते नैयमिकानि श्रूयन्ते ॥ २२ ॥

प्रस्तावः⑥

कथमित्यत आह —

टिप्पनी⑥

हिशब्दो हेतौ । यस्मात् निवेशे वृत्ते नैयमिकानि नियमेन कर्तव्यानि नित्यानि कर्माणि श्रूयन्ते ॥ २२ ॥

॥ इति त्रयोदशी कण्डिका ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
3. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
4. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
5. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
6. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
7. आप० ध० १.३०.८.↩

8. मनु० रमृ० २.६↩

9. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

10. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

11. Manu II, 35.↩

12. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

13. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

14. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

15. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

16. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

17. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

18. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

19. आप० ध० १.३०.८.↩

20. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

21. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

22. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

23. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

24. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

25. Manu II, 144.↩

26. आप० ध० १.३०.८.↩

27. Manu II, 146-148.↩

28. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

१४①

01 अग्निहोत्रमतिथयः④

अग्निहोत्रमतिथयः १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. (That is to say) the Agnihotra, hospitality, 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

2अग्निहोत्रमतिथयो यच्चान्यदेवं युक्तम् ॥ १ ॥

प्रस्तावः⑥

कानि पुस्तकानि ?

टिप्पनी⑥

अग्निहोत्रम्, अतिथयः अतिथिपूजा ।
3 यथा मातरमाश्रित्य सर्व जीवन्ति जन्तवः ।
एवं गृहस्थमाश्रित्य सर्वे जीवन्ति भिक्षवः ॥ इति । यच्चान्यदेव युक्तं एवंविधं श्राद्धसन्ध्योपासनादि । एवमेतैः कर्मभि रहरहराक्रान्तस्य न 4शरीरकण्डूयनेष्वप्यवसरो भवति । स कथं द्वौद्वौ मासौ गुरुकुले वसेदिति ॥ १ ॥
02 यच्चान्यदेवं युक्तम्

यच्चान्यदेवं युक्तम् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. And what else of this kind (is ordained).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यच्चान्यदेवं युक्तम् २

टिप्पनी⑥

(पूर्वसूत्रे वीक्षताम् ।)

03 अध्ययनार्थेन यञ् चोदयेन्न

अध्ययनार्थेन यं चोदयेन्न चैनं प्रत्याचक्षीत ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. He whom (a student) asks for instruction, shall certainly not refuse it; 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अध्ययनार्थेन यं चोदयेन्न चैनं प्रत्याचक्षीत ॥ २ ॥

टिप्पनी⑥

यमाचार्यं माणवकोऽध्ययनं प्रयोजनमुद्दिश्य चोदयेत्-'शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्न'मिति, स एनं माणवकं नैव प्रत्याचक्षीत । चशब्दोऽवधारणे ॥२॥

04 न चास्मिन्दोषम् पश्येत्

न चास्मिन्दोषं पश्येत् ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. Provided he does not see in him a fault, (which disqualifies him from being taught).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न चास्मिन् दोषं पश्येत् ॥ ३ ॥

प्रस्तावः⑥

किमविशेषेण ? नेत्याह—

टिप्पनी⑥

चणिति निपातोऽस्ति-6'निपातैर्यद्यदिहन्तकुविनेच्चेश्चणकच्चिद्यत्रयुक्त'मिति । स चेदर्थे वर्तते। 7 'इन्द्रश्च मृडयाति न' इत्यादौ दर्शनात् । तस्यायं प्रयोगः- न चेदस्मिन् माणवके दोषमनध्याप्यताहेतुं पश्येत् ॥ ३॥

05 यदृच्छायामसंवृत्तौ गतिरेव तस्मिन्

यदृच्छायामसंवृत्तौ गतिरेव तस्मिन् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. If by chance (through the pupil's stupidity the teaching) is not completed, obedience towards the (teacher is the pupil's only refuge). 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यदृच्छायामसंवृत्तौ गतिरेव तस्मिन् ॥ ४॥

टिप्पनी⑥

समानमधीयानेषु माणवकेषु यदि कस्यचिद्यदृच्छया दृष्टहेतुमन्तरेण बुद्धिमान्द्यादिनाऽध्ययनस्या 9संवृत्तिस्स्यात् अधीतो भागो माणवकान्तरवन्नागच्छेत् तदा तस्यां यहच्छायामसंवृत्तौ तस्मिन्नाचार्ये गतिरेव शुश्रूषैव माणवकस्य शरणम् । तथा च मनुः—
10 यथा खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति ।
तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रूधुरधिगच्छति ॥ इति ।
अधिकं शुश्रूषितो हि गुरुस्सर्वात्मना तं शिक्षयेदिति ॥ ४ ॥

06 मातरि पितर्याचार्यवच्छुश्रूषा

मातरि पितर्याचार्यवच्छुश्रूषा ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. Towards a mother (grandmother and great-grandmother) and a father (grandfather and great-grandfather) the same obedience must be shown as towards a teacher. 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मातरि पितर्याचार्यवच्छुश्रूषा ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

मातृग्रहणेन पितामहीप्रपितामह्योरपि ग्रहणम् । पितृग्रहणेन पितामहप्रपितामहयोः। सर्व एते आचार्यवच्छुश्रूषितव्याः ॥५॥

07 समावृत्तेन सर्वे गुरव

समावृत्तेन सर्वे गुरव उपसंग्राह्याः ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. The feet of all Gurus must be embraced (every day) by a student who has returned home; 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

समावृत्तेन सर्वे गुरव उपसङ्ग्राह्याः ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

उक्ताश्चानुक्ताश्च ज्येष्ठम्रातृमातुलादयः सर्वे गुरव समावृत्तेनाहरहरुपसंग्राह्याः ॥

08 प्रोष्य च समागमे

प्रोष्य च समागमे ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. And also on meeting them, after returning from a journey. 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रोष्य च समागमे ।। ७॥

टिप्पनी⑥

यदि स्वयं प्रोष्य समागतो भवति । गुरवो वा प्रोष्य समागताः । वदामि ते उपसङ्ग्राह्याः ॥ ७ ॥

09 भ्रातृषु भगिनीषु च

भ्रातृषु भगिनीषु च यथापूर्वमुपसंग्रहणम् ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. The feet of (elder) brothers and sisters must be embraced, according to the order of their seniority. 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भ्रातृषु भगिनीषु च यथापूर्वमुपसङ्ग्रहणम् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

पूर्वेणैव सिद्धे क्रमार्थं वचनम्-यथापूर्वं ज्येष्ठक्रमेणेति ॥८॥

10 नित्या च पूजा

नित्या च पूजा यथोपदेशम् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. And respect (must) always (be shown to one's elders and betters), according to the injunction 15 (given above and according to the order of their seniority).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नित्या च पूजा यथोपदेशम् ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

16 'पूजा वर्णज्यायसां कार्या, वृद्धतराणां चे'त्युपदेशानुरोधेन या नित्या पूजा सा यथापूर्वं वृद्धक्रमेण ॥ ९ ॥

11 ऋत्विक्श्वशुरपितृव्यमातुलानवरवयसः प्रत्युत्थायाभिवदेत्

ऋत्विक्श्वशुरपितृव्यमातुलानवरवयसः प्रत्युत्थायाभिवदेत् ११

▼

⑤

>

▼ Bühler

11. He shall salute an officiating priest, a father-in-law, a father's brother, and a mother's. brother, (though they may be) younger than he himself, and (when saluting) rise to meet them. 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ऋत्विक्श्वशुरपितृव्यमातुलानवरवयसः प्रत्युत्थायाऽभिवदेत् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

18'त्रिवर्षपूर्वः श्रोत्रियोऽभिवादनमर्हती'ति वक्ष्यति । तेनावरवयस ऋत्विगादयोऽप्यभिवादयन्ते । तानभिवादयमानान् प्रत्युत्थायाभिवदेत् । नान्येष्विव सुखमासीनोऽभिवदति। वयस्त उत्कृष्टानां तेषामियमेव पूजा ॥१०॥

12 तूष्णीं वोपसङ्गृह्णीयात्

तूष्णीं वोपसंगृह्णीयात् १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. Or he may silently embrace their feet. 19

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तूष्णीं वोपसंगृह्णीयात् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

अथवा प्रत्युत्थाय स्वयमपि तास्तूष्णीमुपसंगृह्णीयात् । विद्याचारित्राद्यपेक्षो विकल्पः ॥ ११॥

13 दशवर्षम् पौरसख्यम् पञ्चवर्षन्

दशवर्षं पौरसख्यं पञ्चवर्षं तु चारणम् । त्रिवर्षपूर्वः श्रोत्रियः अभिवादनमर्हति १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. A friendship kept for ten years with fellow citizens (is a reason for giving a salutation, and so is) a friendship, contracted at school, which has lasted for five years. But a learned Brāhmaṇa (known) for less than three years, must be saluted. 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दशवर्षं पौरसख्यं पञ्चवर्षं तु चारणम् ।
त्रिवर्षपूर्वः श्रोत्रियोऽभिवादनमर्हति ॥ १२ ॥

प्रस्तावः⑥

अथाभिवाद्या उच्यन्ते—

टिप्पनी⑥

पुरेभवं पौरम् । पौरं च तत्सख्यं च पौरसख्यं सेवादिनिबन्धनं बान्धवं तदभिवादनस्य निमित्तम् । कीदृशम् ? दशवर्षान्तरालं, दशवर्षाधिकः पौरस्सखा अश्रोत्रियोऽप्यभिवाद्य इति विवक्षितम्। पञ्चवर्षं तु चारणम् । सख्यमित्युपसमस्तमप्यपेक्ष्यते। चारणशब्दः शाखाध्यायिषु रूढः । तेषां

सख्यं पञ्चवर्षमभिवादनस्य निमित्तम् । 21श्रोत्रियं वक्ष्यति । त्रिवर्षपूर्वः श्रोतियोऽभिवादनमर्हति । स त्रिवर्षपूर्वतामात्रेणाभिवादनमर्हति, न पूर्वसंस्तवमपेक्षते ॥ १२॥

14 ज्ञायमाने वयोविशेषे वृद्धतरायाभिवाद्यम्

ज्ञायमाने वयोविशेषे वृद्धतरायाभिवाद्यम् १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. If the age (of several persons whom one meets) is exactly known, one must salute the eldest (first).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ज्ञायमाने वयोविशेषे वृद्धतरायाऽभिवाद्यम् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

क्रमार्थमिदम्22 वयोविशेषे ज्ञायमाने पूर्वं वृद्धतरायाऽभिवाद्यम् अभिवादनं कर्तव्यम् ! पश्चाद्वृद्धायेति ॥ १३ ॥

15 विषमगतायागुरवे नाभिवाद्यम्

विषमगतायागुरवे नाभिवाद्यम् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. He need not salute a person, who is not a Guru, and who stands in a lower or higher place than he himself.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विषमगतायाऽगुरवे नाभिवाद्यम् ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

उच्चैस्थाने नीचैस्स्थाने वाऽवस्थितो विषमगतः । तस्मै गुरुव्यतिरिक्ताय नाभिवाद्यम् । गुरवे स्वाभिवाद्यमेव, दर्शने सति तूष्णीमवस्थानस्याऽयुक्तत्वात् ॥ १४॥

16 अन्वारुह्य वाभिवादयीत

अन्वारुह्य वाभिवादयीत १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. Or he may descend or ascend (to the place where such a person stands) and salute him. 23

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्वारुह्य वाभिवादयीत ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

इदमगुरुविषयम् । यत्रासावभिवादनीयः स्थितः तत्रान्वारुह्याभिवादयीत अभिवदेत् । अन्ववरुह्येत्यपि द्रष्टव्यम्, न्यायस्य तुल्यत्वात् । गुरौ तु दृष्टमात्र एवाभिवादनमित्युक्तम् ॥ १५ ॥

17 सर्वत्र तु प्रत्युत्थायाभिवादनम्

सर्वत्र तु प्रत्युत्थायाभिवादनम् १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. But every one (Gurus and others) he shall salute, after having risen (from his seat). 24

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वत्र तु प्रत्युत्थायाभिवादनम् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

सर्वत्र गुरावगुरौ च प्रत्युत्थायैवाभिवादनं कर्तव्यम् ॥१६॥

18 अप्रयतेन नाभिवाद्यम्

अप्रयतेन नाभिवाद्यम् १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. If he is impure, he shall not salute (anybody); 25

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

26अप्रयतेन नाभिवाद्यं, तथाऽप्रयतायाऽप्रयतश्च न प्रत्यभिवदेत् ॥ १७ ॥

प्रस्तावः⑥

उत्तरे द्वे सूत्रे निगदसिद्धे ॥

टिप्पनी⑥

यद्यज्ञानादप्रयताय कश्चिदभिवादयेत् तथापि सोऽप्रयतो न प्रत्यभिवदेत् ॥ १७ ॥

19 तथाप्रयताय

तथाप्रयताय १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. (Nor shall he salute) a person who is impure.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथाऽप्रयताया ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

(पूर्वसूत्रे वीक्षताम् ।)

20 अप्रयतश्च न प्रत्यभिवदेत्

अप्रयतश्च न प्रत्यभिवदेत् २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. Nor shall he, being impure, return a salutation.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अप्रयतश्च न प्रत्यभिवदेत् ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

(पूर्वसूत्रे वीक्षताम् ।)

21 पतिवयसः स्त्रियः

पतिवयसः स्त्रियः २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. Married women (must be saluted) according to the (respective) ages of their husbands.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पतिवयसः स्त्रियः ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

पत्युर्यद्वयस्तदेव स्त्रीणां वयः । तेन तदनुरोधेन ज्येष्ठभार्यादिष्वभिवादनम् ॥ १८॥

22 न सोपानह्वेष्टितशिरा अवहितपाणिर्वाभिवादयीत

न सोपानह्वेष्टितशिरा अवहितपाणिर्वाभिवादयीत २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. He shall not salute with his shoes on, or his head wrapped up, or his hands full.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न सोपानद्वेष्टितशिरा अवहितपाणिर्वाभिवादयीत ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

अवहितपाणिः समिकुशादिहस्तः, दानादिहस्तो वा । अन्यत्प्रसिद्धम्॥

23 सर्वनाम्ना स्त्रियो राजन्यवैश्यौ

सर्वनाम्ना स्त्रियो राजन्यवैश्यौ च न नाम्ना २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. In saluting women, a Kṣatriya or a Vaiśya he shall use a pronoun, not his name. 27

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वनाम्ना स्त्रियो राजन्यवैश्यो च28न नाम्ना ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

स्त्रिय सर्वनाम्नैवाभिवादयीत अभिवादयेऽहमिति न नाम्ना29 ऽसाधारणेन देवदत्तोऽहमभिवादय इति । एवं राजन्यवैश्यौ च ॥ २० ॥

24 मातरमाचार्यदारञ् चेत्येके

मातरमाचार्यदारं चेत्येके २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. Some (declare, that he shall salute in this manner even) his mother and the wife of his teacher. 30

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मातरमाचार्यदारं चेत्येके ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

मातरमाचार्यदारं चैते अपि वे सर्वनाम्नवाऽभिवादयीत । न नाम्नाभिवादयीतेत्येके मन्यन्ते । स्वमतं तु नाम्नैवेति ॥ २१ ॥

25 दशवर्षश्च ब्राह्मणः शतवर्षश्च

दशवर्षश्च ब्राह्मणः शतवर्षश्च क्षत्रियः । पितापुत्रौ स्म तौ विद्धि तयोस्तु ब्राह्मणः पिता २५

▼

⑤

>
▼ Bühler

25. Know that a Brāhmaṇa of ten years and a Kṣatriya of a hundred years stand to each other in the relation of father

and son. But between those two the Brāhmaṇa is the father. 31

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दशवर्षश्च ब्राह्मणः शतवर्षश्च क्षत्रियः । पितापुत्रौ स्म तो विद्धि तयोस्तु ब्राह्मणः पिता ॥

प्रस्तावः⑥

वयोविशेषणाभिवादनं हीनवर्णे नास्तीत्याह—

टिप्पनी⑥

शिष्य प्रत्याचार्यस्याऽयमुपदेशः । स्मशब्दः श्लोकपूरणो निपातः । ब्राह्मणः क्षत्रिय इत्युपलक्षणमुत्तमाधमवर्णानाम् । विद्धि जानीहि । 32शिष्टं स्पष्टम् ॥२२॥

26 कुशलमवरवयसं वयस्यं वा

कुशलमवरवयसं वयस्यं वा पृच्छेत् २६

▼

⑤

>

▼ Bühler

26. A younger person or one of equal age he shall ask, about his well-being (employing the word kuśala). 33

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कुशलमवरवयसं वयस्यं वा पृच्छेत् ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

ब्राह्मणविषयमिदम् । 34क्षत्रियादिषु विशेषस्य वक्ष्यमाणत्वात् । वयसा तुल्यो वयस्यः । अवरवयस वयस्य वा ब्राह्मणं पथ्यादिषु सङ्गतं कुशलं पृच्छेत्-'अपि कुशल'मिति ॥ २३ ॥

27 अनामयङ् क्षत्रियम्

अनामयं क्षत्रियम् २७

▼

⑤

>
▼ Bühler

27. (He shall ask under the same conditions) a Kṣatriya, about his health (employing the word anāmaya);

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनामयं क्षत्रियम् ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

पृच्छेत् 'अप्यनामयं भवत' इति । आमयो रोगः तदभावोऽनामयम् ॥

28 अनष्टं वैश्यम्

अनष्टं वैश्यम् २८

▼

⑤

>
▼ Bühler

28. A Vaiśya if he has lost anything (employing the word anaṣṭa). 35

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनष्टं वैश्यम् ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

'अप्यनष्टपशुधनोऽसी'ति ॥ २५ ॥

29 आरोग्यं शूद्र म्

आरोग्यं शूद्र म् २९

▼

⑤

>
▼ Bühler

29. A Śūdra, about his health (employing the word ārogya).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आरोग्यं शूद्रम् ॥ २६॥

टिप्पनी⑥

शूद्रमारोग्यं पृच्छेत्-'अप्यरोगो भवा'निति ॥ २६ ॥

30 नासम्भाष्य श्रोत्रियं व्यतिव्रजेत्

नासंभाष्य श्रोत्रियं व्यतिव्रजेत् ३०

▼

⑤

>
▼ Bühler

30. He shall not pass a learned Brāhmaṇa without addressing him;

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽसम्भाष्य श्रोत्रियं व्यतिव्रजेत् ॥ २७ ॥

टिप्पनी⑥

श्रोत्रियं पथि सङ्गत्तमसम्भाष्य न व्यतिव्रजेत् न व्यतिक्रामेत् ॥ २७ ॥

31 अरण्ये च स्त्रियम्

अरण्ये च स्त्रियम् ३१

▼

⑤

>

▼ Bühler

31. Nor an (unprotected) woman in a forest (or any other lonely place). 36

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अरण्ये च स्त्रियम् ॥ २८ ॥

टिप्पनी⑥

अरण्यग्रहणं 37सभयस्य देशस्योपलक्षणम् । तत्र स्त्रियमेकाकिनीं दृष्ट्वा असम्भाष्य न व्यतिव्रजेत् । सम्भाषणं च मातृवद्भगिनीवच्च-'भगिनि किं ते करवाणि न भेतव्यम्' इति ॥ २८ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ चतुर्दशी कण्डिका ॥

इति चापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तमिश्रविरचितायामु. ज्ज्वलायां प्रथमप्रश्ने चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

इति चतुर्थः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
3. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
4. आप० ध० १.३०.८.↩
5. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
6. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
7. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
8. Manu II, 35.↩
9. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
10. आप० ध० १.३०.८.↩

11. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

12. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

13. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

14. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

15. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

16. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

17. Manu II, 144.↩

18. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

19. Manu II, 146-148.↩

20. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

21. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

22. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

23. Manu II, 147.↩

24. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

25. Manu II, 37.↩

26. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

27. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

28. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

29. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

30. The meaning of the Sūtra is, that the initiation shall be performed as soon as the child is able to begin the study of the Veda. If it is so far developed at eight years, the ceremony must then be performed; and if it be then neglected, or, if it be neglected at any time when the capacity for learning exists, expiation prescribed in the following Sūtras must be performed. The age of sixteen in the case of Brāhmaṇas is the

latest term up to which the ceremony may be deferred, in case of incapacity for study only. After the lapse of the sixteenth year, the expiation becomes also necessary. Manu II, 38; Yājñ. I, 37.↩

31. The meaning is, he shall keep all the restrictions imposed upon a student, as chastity, &c, but that he shall not perform the fire-worship or service to a teacher, nor study. Manu II, 39; XI. 192, Yājñ. I, 38; Weber, Ind. Stud. X, 101.↩
32. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
33. 'If he is strong, he shall bathe three times a day--morning, midday, and evening.'--Haradatta.↩
34. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
35. Brahman, apparently, here means 'Veda,' and those who neglect its study may be called metaphorically 'slayers of the Veda.'↩
36. Manu II, 40; Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 8, 9; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩
37. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

૦૫①

१५①

01 उपासने गुरूणां वृद्धानामतिथीनां④

उपासने गुरूणां वृद्धानामतिथीनां होमे जप्यकर्मणि भोजन आचमने स्वाध्याये च यज्ञोपवीती स्यात् १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. When he shows his respect to Gurus or aged persons or guests, when he offers a burnt-oblation (or other sacrifice), when he murmurs prayers at dinner, when sipping water and during the (daily) recitation of the Veda, his garment (or his sacrificial thread) shall pass over his left shoulder and under his right arm. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उपासने गुरूणां वृद्धानामतिथीनां होमे जप्यकर्मणि भोजन आचमने स्वाध्याये च यज्ञोपवीती स्यात् ॥१॥

प्रस्तावः⑥

सर्वेषामेव कर्मणां शेषभूतमाचमनं विधास्यंस्तदुपयोगिनो विधीनाह —

टिप्पनी⑥

गुरूणामाचार्यादीनाम् , अन्येषां च वृद्धानां पूज्यानामतिथीनां च उपासने यदा तानुपास्ते तदा, होमे साङ्गे पित्र्यादन्यत्र, जप्यकर्मणि जपक्रियायां भोजनाचमनयोश्च, स्वाध्यायाध्ययने च, यज्ञोपवीती स्यात् यज्ञोपवीती भवेत् । वासोविन्यासविशेषो यज्ञोपवीतम्2 'दक्षिणं वाहुमुद्धरतेऽवधत्ते सव्यमिति यज्ञोपवीतम्, इति ब्राह्मणम् । वाससोऽसम्भवेनुकल्पं वक्ष्यति 'अपि वा सूत्रमेवोपवीतार्थ' (२-४-२२) इति । मनुरप्याह—
3 कार्पासमुपवीतं स्याद्विप्रस्योर्ध्वकृतं त्रिवृत् । इति ॥
4 उद्धृते दक्षिणे पाणावुपवीत्युच्यते बुधैः ॥ इति च । एषु कर्मसु यज्ञोपवीतविधानात्कालान्तरे नावश्यम्भावः ॥ १ ॥
02 भूमिगतास्वप्स्वाचम्य प्रयतो भवति

भूमिगतास्वप्स्वाचम्य प्रयतो भवति २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. By sipping (pure) water, that has been collected on the ground, he becomes pure. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भूमिगतास्वप्वाचम्य प्रयतो भवति ॥२॥

टिप्पनी⑥

6आपः शुद्धा भूमिगता वैतृष्ण्यं यासु गोर्भवेत् ।
अव्याप्ताश्चेदमेध्येन गन्धवर्णरसान्विताः7 ॥ इति मनुः ।
'शुचि गातृप्तिकृतोयं प्रकृतिस्थं महीगतम्' इति । याज्ञवल्क्य.
8 अजा गावो महिष्यश्च ब्राह्मणी च प्रसूतिका! दशरात्रेण शुध्यन्ति भूमिष्ठं च नवोदकम् ॥' 9इति ।
श्रावणे मासि सम्प्राप्ते सर्वा नद्यः रजस्वलाः10 ।
इति स्मृत्यन्तरम् । एवंभूतदोषरहितास्वपस्वाचम्य प्रयतो भवति । प्रायत्यार्थमाचमनं भूमिगतास्वप्सु कर्तव्यमिति ॥ २॥

03 यं वा प्रयत

यं वा प्रयत आचामयेत् ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Or he, whom a pure person causes to sip water, (becomes also pure). 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यं वा प्रयत आचमयेत् ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

यं वा प्रयतोऽन्य आचमयेत् सोऽपि प्रयतो भवति । सर्वथा स्वयं वामहस्तावर्जिताभिरद्भिराचमनं न भवति । एतेन शास्त्रान्तरोक्त कमण्डलुधारणमप्याचार्यस्याऽनभिमतं लक्ष्यते। अलाबुपात्रेण नालिकेरपात्रेण वा स्वयमाचमनमाचरन्ति शिष्टाः ॥ ३॥

04 न वर्षधारास्वाचामेत्

न वर्षधारास्वाचामेत् ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. He shall not sip rain-drops. 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न वर्षधारास्वाचामेत् ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

पूर्वोक्तेन प्रकारेण प्रायत्यार्थस्याचमनस्य वर्षधारासु प्रसङ्गाभावात् पिपासितस्य पानप्रतिषेधार्थमिति केचित् । अपर आह-अस्मादेव प्रतिषेधाच्छिक्यादिस्थकरकादेर्या धारा तत्र प्रायत्यार्थमाचमनं13 भवतीति ॥ ४॥

05 तथा प्रदरोदके

तथा प्रदरोदके *(स्वयंभुवि गर्ते)* ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. (He shall not sip water) from a (natural) cleft in the ground.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा14 प्रदरोदके ॥५॥

टिप्पनी⑥

भूमेः स्वयं दीर्णः प्रदेशः प्रदर तत्र यदुदकं तस्मिन् भूमिगतेऽपि नाऽऽचामेत् ॥ ५॥

06 तप्ताभिश्चाकारणात्

तप्ताभिश्चाकारणात् ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. He shall not sip water heated (at the fire) except for a particular reason (as sickness). 15

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तप्ताभिश्चाऽकारणात् ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

तप्ताभिरद्भिर्नाचामेत् अकारणात् ज्वरादौ कारणे सति न दोषः । 'तप्ताभि'रिति वचनात् श्रृतशीताभिरदोषः। तथा चोष्णानामेव प्रतिषेधः स्मृतिषु 16प्रायो भवति ॥ ६ ॥

07 रिक्तपाणिर् वयस उद्यम्याप

- रिक्तपाणिर् वयस उद्यम्याप उपस्पृशेत् ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. He who raises his empty hands (in order to scare) birds, (becomes impure and) shall wash (his hands). 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

रिक्तपाणिर्वयस उद्यम्याऽप उपस्पृशेत् ॥ ७॥

टिप्पनी⑥

वय इति पक्षिनाम । यो रिक्तपाणिस्सन् वयसे पक्षिण इद्यम्य तस्य प्रोत्सारणाय पाणिमुद्यच्छते स तत्कृत्वाऽप उपस्पुशेत् तेनैव पाणिना। 'रिक्तपाणि'रिति वचनात् काष्ठलोष्टादिसहितस्य पाणेरुद्यमने न दोषः । केचिदुपस्पर्शनमाचमनमाहुः ॥ ७ ॥

08 शक्तिविषये न मुहूर्तमप्यप्रयतः

शक्तिविषये न मुहूर्तमप्यप्रयतः स्यात् ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. If he can (find water to sip) he shall not remain impure (even) for a muhūrta.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शक्तिविषये न मुहूर्तमप्यप्रयतः स्यात् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

शक्तौ सत्यां मुहूर्तमप्यप्रयतो न स्यात् । आचमनयोग्यजलं दृष्ट्वैव मूत्र पुरीषादिकं कुर्यात् यदि तावन्तं कालं18 वेगं धारयितुं शक्नुयात् इति ॥८॥

09 नग्नो वा

नग्नो वा ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. Nor (shall he remain) naked (for a muhūrta if he can help it).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नग्नो वा ॥ ९॥

टिप्पनी⑥

न मुहूर्तमपि स्यादिति सम्बध्यते, शक्तिविषय इति च । व्रणादिना कौपीनाच्छादनाशक्तौ न दोषः ॥ ९॥

10 नाप्सु सतः प्रयमणम्विद्यते

नाप्सु सतः प्रयमणम्विद्यते १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. Purification (by sipping water) shall not take place whilst he is (standing) in the water.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाप्सु सतः प्रयमणं विद्यते ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

येन प्रयतो भवति तत्प्रयमणमाचमनम् । करणे ल्युट । तदप्सु सतो वर्तमानस्य न भवति । जलमध्ये आसीनोऽपि नाचामेत् ॥ १० ॥

11 उत्तीर्य त्वाचामेत्

उत्तीर्य त्वाचामेत् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. Also, when he has crossed a river, he shall purify himself by sipping water. 19

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उत्तीर्य त्वाचामेत् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

तीर उत्तीर्याचामेत् न जल इति । अयमर्थो न विधेयः । पूर्वेण गतत्वात् । तस्मादयमर्थः-यदा नदीमुत्तरति नावा प्रकारान्तरेण वा तदा तामुत्तीर्य तीरान्तरं गतः प्रयतोऽप्याचामेत् । नद्यादेरुत्तरणमाचमनस्य निमित्तमिति । 20तुरप्यर्थः ॥ ११ ॥

12 नाप्रोक्षितमिन्धनमग्नावादध्यात्

नाप्रोक्षितमिन्धनमग्नावादध्यात् १२

▼

⑤

>

▼ Bühler

12. He shall not place fuel on the fire, without having sprinkled it (with water). 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽप्रोक्षितमिन्धनमग्नावादध्यात् ॥१२॥

टिप्पनी⑥

श्रोते स्मार्ते लौकिके वाऽग्नौ अप्रोक्षितमिन्धनं नाऽऽदध्यात् न प्रक्षिपेत् । केचिल्लौकिके नेच्छन्ति ॥ १२ ॥

13 मूढस्वस्तरे चासंस्पृशन्न् अन्यानप्रयतान्प्रयतो

मूढस्वस्तरे चासंस्पृशन्न् अन्यानप्रयतान्प्रयतो मन्येत १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. (If he is seated in company with) other unclean persons on a seat consisting of a confused heap of straw, and does not touch them, he may consider himself pure.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मूढस्वस्तरे चासंस्पृशन्नन्यानप्रयतान्प्रयतो मन्येत ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

22पतितचण्डाल सूतिकाद्येकाशनस्पृष्टितत्स्पृष्ट्युपस्पर्शने सचेलमिति गौतम । 23तस्मिन्विषय इदमुच्यते आसनतया शयनतया वा सुष्ठ्वास्तीर्णः पलालादिसङ्घातः स्वस्तरः । पृषोदरादिषु दर्शनाद्रूपसिद्धिः । यत्रातिश्लक्ष्णतया पलालादेर्मूलाग्रविभागो न ज्ञायते स मृढः । मूढश्चासौ स्वस्तरश्च मूढस्वस्तर तस्मिन् पतितादिष्वप्रयतेष्वासीनेषु यः कश्चित्प्रयत उपविशेत् न च तान् संस्पृशेत् । तदा स प्रयतो मन्येत । यथा प्रयतमात्मानं मन्यते प्रयतोऽस्मीति तथैव मन्येत । नैवंविधे विषये तत्पृष्टिन्यायः प्रवर्तते इति ॥ १३ ॥

14 तथा तृणकाष्ठेषु निखातेषु

तथा तृणकाष्ठेषु निखातेषु १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. (The same rule applies, if he is seated) on grass or wood fixed in the ground. 24

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा तृणकाष्ठेषु निखातेषु ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

तृणकाष्ठेष्वपि भूमौ निखातेषु तत्स्पृष्टिन्यायो न भवति ॥१४॥

15 प्रोक्ष्य वास उपयोजयेत्

प्रोक्ष्य वास उपयोजयेत् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. He shall put on a dress, (even if it is clean,) only after having sprinkled it with water. 25

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रोक्ष्य वास उपयोजयेत् ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

शुद्धमपि वास प्रोक्ष्यैवोपयोजयेत् वसीत । अपर आह-अशुद्धस्यापि वाससः प्रोक्षणमेव शुद्धिहेतुरिति ॥ १५ ॥

16 शूनोपहतः सचेलो ऽवगाहेत

- शूनोपहतः सचेलो ऽवगाहेत १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. If he has been touched by a dog, he shall bathe, with his clothes on;

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शुनोपहतः सचेलोऽवगाहेत ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

शुना उपहतः स्पृष्टः । यद्यपि चेलं न शुना स्पृष्ट तथापि सचेलोऽवगाहेत भूमिगतास्वप्सु स्नायात् नोद्धृतादिभिः । दष्टस्य तु स्मृत्यन्तरे प्रायश्चित्तम् । तत्र वसिष्ठः26
ब्राह्मणस्तु शुना दष्टो नदी गत्वा समुद्रगाम् । प्राणायामशतं कृत्वा घृतं प्राश्य विशुद्ध्यति।"
अङ्गिराः—
27 ब्रह्मचारी शुना दष्टस्त्रिरात्रेणैव शुद्यति । गृहस्थस्तु द्विरात्रेण ह्येकाहेनाऽग्निहोत्रवान् ॥
नाभेरूर्ध्वं तु दष्टस्य तदेव द्विगुणं भवेत् ।
तदेव त्रिगुणं वक्त्रे मूर्ध्नि चेत्स्याच्चतुर्गुणम् ॥
क्षत्रविट्छूद्रयोनिस्तु स्नानेनैव शुचिर्भवेत् । द्विगुणं तु वनस्थस्य तथा प्रव्रजितस्य च ॥
ब्राह्मणी तु शुना दष्टा सोमे दृष्टिं निपातयेत् ।
यदा न दृश्यते सोमः प्रायश्चित्तं तदा कथम् ।
यां दिशं तु गतस्सामस्तां दिशं त्ववलोकयेत् ॥
सोममार्गेण सा पूता पञ्चगव्येन शुद्धति ॥ इति ॥ १६ ॥

17 प्रक्षाल्य वा तन्

प्रक्षाल्य वा तं देशम् अग्निना संस्पृश्य पुनः प्रक्षाल्य पादौ चाचम्य प्रयतो भवति १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. Or he becomes pure, after having washed that part (of his body) and having touched it with fire and again washed it, as well as his feet, and having sipped water. 28

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रक्षाल्य वा तं देशमग्निना संस्पृश्य पुनः प्रक्षाल्य पादौ चाऽऽचम्य प्रयतो भवति ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

शुना स्पृष्टं प्रदेशं प्रक्षाल्याग्निना च संस्पृश्य पुनश्च प्रक्षाल्य पादौ च प्रक्षाल्य पश्चादाचम्य प्रयतो भवति । व्यवस्थितविकल्पोऽयम् ॥
29ऊर्ध्व नाभेः करौ मुक्त्वा यदङ्गमुपहन्यते ।
तत्र स्नानविधिः प्रोक्तो ह्यधः प्रक्षालनं स्मृतम् ॥'
इति मानवे दर्शनात् ॥ १७ ॥

18 अग्निन् नाप्रयत आसीदेत्

अग्निं नाप्रयत आसीदेत् १८

▼

⑤

>

▼ Bühler

18. Unpurified, he shall not approach fire, (so near that he can feel the heat). 30

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अग्निं नाप्रयत आसीदेत् ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

अप्रयतस्सन्नग्निं नासीदेत् अग्नेरासन्नो न भवेत् , यावति देशे ऊष्मोपलम्भः । तत्राप्यशक्तौ न दोषः ॥ १८ ॥

19 इषुमात्रादित्येके

इषुमात्रादित्येके १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. Some declare, that (he shall not approach nearer) than the length of an arrow.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

इषुमात्रादित्येके ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

इषुमात्रादर्वाङ्नासीदेत् । ऊष्मोपलम्भो भवतु वा मा भूदित्येके मन्यन्ते ॥ १९ ॥

20 न चैनमुपधमेत्

न चैनमुपधमेत् २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. Nor shall he blow on fire with his breath. 31

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न चैनमुपधमेत् ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

अप्रयत इत्येव । एनमग्निमप्रयतो नोपधमेत् । प्रयतस्य न दोषः।
'मुखेनोपधमेदग्निं मुखाग्निरजायत ।'
इति स्मृत्यन्तरे दर्शनात् ।
32 'नाग्निं मुखेनोपधमे'दिति मानवे दर्शनादुभयोर्विकल्पः। अपर आह- वाजसनेये श्रौतप्रकरणे 'मुखाद्ध्यग्निरजायत । तस्मान्मुखेनोपसमिन्ध्या'दिति दर्शनात् श्रौतेषु मुखेनोपसमिन्धनम् , अन्यत्र स्मार्ते प्रतिषेध इति।
अन्ये तु वैणवेनायसेन वा सुषिरेणोपसमिन्धनमिच्छन्ति । एवं हि मुखव्यापारस्यान्वयाच्छ्रुतिरप्यनुगृहीता भवति, आस्यबिन्दूनां पतनशङ्काभयात् प्रतिषेधस्मृतिरपीति ॥ २०॥

21 खट्वायाञ् च नोपदध्यात्

खट्वायां च नोपदध्यात् २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. Nor shall he place fire under his bedstead. 33

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

खट्वायां च नोपदध्यात् ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

खट्वायां खट्वाया अधोऽग्निं नोपध्यात् । अत्राप्यशक्तौ न दोषः ॥२१॥

22 प्रभूतैधोदके ग्रामे यत्रात्माधीनम्

प्रभूतैधोदके ग्रामे यत्रात्माधीनं प्रयमणं तत्र वासो धार्म्यो ब्राह्मणस्य २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. It is lawful for a Brāhmaṇa to dwell in a village, where there is plenty of fuel and water, (and) where he may perform the rites of purification by himself. 34

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रभूतैधोदके ग्राम यत्राऽऽत्माधीनं प्रयमणं तत्र वासो धार्म्यो ब्राह्मणस्य ॥ २१॥

टिप्पनी⑥

प्रभूतं एधः उदकं च यस्मिन् ग्रामे तत्र वासो धार्म्यः धर्म्यः । अत्रापि न सर्वत्र । किं तर्हि ? यत्रात्माधीन प्रयमणं प्रायत्यं मूत्रपुरीषप्रक्षालनादीनि यत्रात्माधीनानि तत्र । यत्र तु कूपेष्वेवोदकं तत्र बहुकूपेऽपि न वस्तव्यम् । ब्राह्मणग्रहणाद्वर्णान्तरस्य न दोषः । ग्रामग्रहणादेवंभूतेषु घोषादिश्वपि न वस्तव्यम् ॥ २२ ॥

23 मूत्रङ् कृत्वा पुरीषं

- मूत्रं कृत्वा पुरीषं वा मूत्रपुरीष-लेपान् अन्नलेपान् उच्छिष्टलेपान् रेतसश् च ये लेपास्, तान् प्रक्षाल्य पादौ च, +आचम्य प्रयतो भवति २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. When he has washed away the stains of urine and fæces after voiding urine or fæces, the stains of food (after dinner), the stains of the food eaten the day before (from his vessels), and the stains of semen, and has also washed his feet and afterwards has sipped water, he becomes pure. 35

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मूत्रं कृत्वा पुरीषं वा मूत्रपुरीषलेपानन्नलेपानुच्छिष्टलेपान् रेतसश्च ये लेपास्तान्प्रक्षाल्य पादौ चाऽऽचम्प प्रयतो भवति ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

मूत्रं पुरीष वा कृवा उत्सृज्य तयोर्मुत्रपुरीषयोर्ये लेपास्तस्मिन्प्रदेशे स्थिताः प्रदेशान्तरे वा पतिताः तान् सर्वान् । 36अन्नलेपांश्चानुच्छिष्टानपि उच्छिष्टलेपांश्चानन्नलेपानपि । तथा रेतसश्च ये लेपाः स्वप्नादौ मैथुने वा तान् सर्वानद्भिर्मृदा च प्रक्षाल्य पादौ च लेपवर्जितावपि प्रक्षाल्य पश्चादाचम्य प्रयतो भवति । अत्र मृत्प्रमाणस्य सङ्ख्यायाश्चानुक्तत्वात् यावता गन्धलेपक्षयो भवति तावदेव विवक्षितम् । तथा च याज्ञवल्क्यः—
37गन्धलेपक्षयकरं शौचं कुर्यादतन्द्रितः।' इति ।
देवलस्तु व्यक्तमाह—
38 यावत्स शुद्धिं मन्येत तावच्छौचं समाचरेत् ।
प्रमाणं शौचसङ्ख्याया न शिष्टैरुपदिश्यते ॥' इति ।

पैठीनसि -
'मुत्रोच्चारे कृते शौचं न स्यादन्तर्जलाशये।
अन्यत्रोद्धृत्य कुर्यात्तु सर्वदैव समाहितः।' इति ॥ २३ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ पञ्चदशी कण्डिका ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
5. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
6. आप० ध० १.३०.८.↩
7. मनु० रमृ० २.६↩
8. गौ० ध० १. १, २↩
9. 'मन्वादिभिरुपलभ्यते इत्यनुमीयते' इति ख. पु.↩
10. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
11. Manu II, 35.↩
12. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
13. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
14. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

15. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

16. आप० ध० १.३०.८.↩

17. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

18. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

19. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

20. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

21. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

22. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

23. आप० ध० १.३०.८.↩

24. Manu II, 144.↩

25. Manu II, 146-148.↩

26. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

27. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

28. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

29. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

30. Manu II, 147.↩

31. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

32. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

33. Manu II, 37.↩

34. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

35. The meaning of the Sūtra is, that the initiation shall be performed as soon as the child is able to begin the study of the Veda. If it is so far developed at eight years, the ceremony

must then be performed; and if it be then neglected, or, if it be neglected at any time when the capacity for learning exists, expiation prescribed in the following Sūtras must be performed. The age of sixteen in the case of Brāhmaṇas is the latest term up to which the ceremony may be deferred, in case of incapacity for study only. After the lapse of the sixteenth year, the expiation becomes also necessary. Manu II, 38; Yājñ. I, 37.↩

36. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

37. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

38. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

१६①

01 तिष्ठन्न+आचामेत्प्रह्वो वा④

तिष्ठन्न+आचामेत्प्रह्वो वा १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. He shall not drink water standing or bent forwards. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तिष्ठन्नाऽऽचामेत् प्रह्वो वा ॥१॥

टप्पनी⑥

तिष्ठन् प्रह्वो वा नाचामेत् । नायं प्रतिषेधः शक्यो वक्तुम् । कथम् ? 'आसीनस्त्रिराचामे'(१६२.)दिति वक्ष्यति । ततश्च यथा शयानस्याचमनं न भवति तथा तिष्ठतः प्रह्वस्य च न भवति । एवं तर्हि शौचार्थस्याचमनस्य नायं प्रतिषेधः । किं तर्हि ? पानीयपानस्य प्रतिषेधः । तथा गौतमः 2 नाञ्जलिना जलं पिबेत् । न तिष्ठ'न्निति । अपर आह-अस्मादेव प्रतिषेधात्क्वचित्तिष्ठतः प्रह्वस्य चाऽऽचमनमभ्यनुज्ञातं भवति । तेन 'भूमिगतास्वप्स्वि'त्यत्र तीरस्याऽयोग्यत्वे ऊरुदध्ने 3जानुदध्ने वा जले स्थितस्याऽचमनं भवति । गौतमीयेऽपि4 न तिष्ठन्नुद्धृतोदकेनाचामे'दिति सूत्रच्छेदादुद्धृतोदकेनैव तिष्ठतः प्रतिषेध इति ॥ १ ॥

02 आसीनस्त्रिराचामेद्धृदयङ्गमाभिरद्भिः

आसीनस्त्रिराचामेद्धृदयङ्गमाभिरद्भिः २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. Sitting he shall sip water (for purification) thrice, the water penetrating to his heart. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आसीनस्त्रिराचामेद्धृदयङ्गमाभिरद्भिः ॥ २ ॥

टिप्पनी⑥

अद्भिः तृतीया द्वितीयार्थे । अत्राऽनुक्तं स्मृत्यन्तरवशा6दुपस्क्रियते। आसीनः शुचौ देशे, नासने, भोजनान्ते त्वासने । दक्षिणं बाहु7 जान्वन्तरे कृत्वा प्राङ्मुख उपविष्टः उदङ्मुखो वा हृदयङ्गमा8 अप करतलस्थासु यावतीषु माषो निमज्जति तावती फेनबुद्बुदरहिताः वीक्षितास्त्रिराचामेत् पिबेत् , ब्राह्मणः हृदयङ्गमाः, क्षत्रियः कण्ठगताः, वैश्यस्तालुगताः, शूद्रो जिह्वास्पृष्टास्सकृत् ॥ २॥

03 त्रिरोष्ठौ परिमृजेत्

त्रिरोष्ठौ परिमृजेत् ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. He shall wipe his lips three times.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

9त्रिरोष्ठौ परिमृजेत् ॥३॥

टिप्पनी⑥

परिमृज्यात् ॥३॥

04 द्विरित्येके

द्विरित्येके ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. Some (declare, that he shall do so) twice.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

द्विरित्येके ॥४॥

टिप्पनी⑥

तुल्यविकल्पः ॥ ४ ॥

05 सकृदुपस्पृशेत्

सकृदुपस्पृशेत् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. He shall then touch (his lips) once (with the three middle fingers).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सकृदुपस्पृशेत् ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

मध्यमाभिस्तिसृभिरङ्गुलीभिरोष्ठौ ॥ ५ ॥

06 द्विरित्येके

द्विरित्येके ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. Some (declare, that he shall do so) twice.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

द्विरित्येके ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

तुल्यविकल्पः ॥६॥

07 दक्षिणेन पाणिना सव्यम्

दक्षिणेन पाणिना सव्यं प्रोक्ष्य, पादौ शिरश्चेन्द्रियाण्युपस्पृशेच् चक्षुषी नासिके श्रोत्रे च ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. Having sprinkled water on his left hand with his right, he shall touch both his feet, and his head and (the following three) organs, the eyes, the nose, and the ears. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दक्षिणेन पाणिना सव्यं प्रोक्ष्य पादौ शिरश्चेन्द्रियाण्युपस्पृशेत् चक्षुषी नासिके श्रोत्रे च ॥७॥

टिप्पनी⑥

दक्षिणेन पाणिना सव्यं पाणिं प्रोक्ष्य तथा पादौ शिरश्च, इन्द्रियाण्युपस्पृशेत् अङ्गुलीभिः । सर्वेषामिन्द्रियाणां प्रसङ्गे परिसञ्चष्टे-चक्षुषी नासिके श्रोत्रे चे'ति । इन्द्रियाणीति वचनं स्वरूपकथनमात्रम् । तत्राऽङ्गुष्ठानामिकाभ्यां चक्षुषी । केचिद्युगपत् , केचित्पृथक् । अङ्गुष्ठप्रदेशिनीभ्यां नासिके । अङ्गुष्ठकनिष्ठिकाभ्यां श्रोत्रे । 11अत्र सहभावस्याऽशक्यत्वात् पृथग्भावस्य निश्चितत्वात् पूर्वत्रापि पृथगेवेति युक्तम् ॥ ७ ॥

08 अथाप उपस्पृशेत्

अथाप उपस्पृशेत् ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. Then he shall wash (his hands).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाऽप उपस्पृशेत् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

इन्द्रियस्पर्शनान तरं हस्तौ प्रक्षालयेत् ॥ ८॥

09 भोक्ष्यमाणस्तु प्रयतोऽपि द्विराचामेद्द्विः

भोक्ष्यमाणस्तु प्रयतोऽपि द्विराचामेद्द्विः परिमृजेत्सकृदुपस्पृशेत् ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. But if he is going to eat he shall, though pure, twice sip water, twice wipe (his mouth), and once touch (his lips). 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भोक्ष्यमाणस्तु प्रयतोऽपि द्विराचामेद्द्विः परिमृजेत्सकृदुपस्पृशेत् ॥९॥

टिप्पनी⑥

भोजनं करिष्यन् प्रयतोऽपि द्विराचमनं कुर्यात् । अत्र विशेषः-द्विः परिमृजेत् , न विकल्पेन त्रिः। सकृदुपस्पृशेत् , न विकल्पेन द्विः । 'प्रयतोऽपी'ति वचनादप्रायत्ये सर्वत्र द्विराचमनमाचार्यस्याऽभिप्रेतम् ।
तत्र स्मृत्यन्तरम्—
'भुक्त्वा क्षुत्त्वा च सुप्त्वा च ष्ठीवित्वोक्त्वाऽनृतं वचः।
आचान्तः पुनराचामेद्वासो विपरिधाय च ॥ ९ ॥

10 श्यावान्तपर्यन्ताव् ओष्ठाव् उपस्पृश्याचामेत्

श्यावान्तपर्यन्ताव् ओष्ठाव् उपस्पृश्याचामेत् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. He shall rub the gums and the inner part of his lips (with his finger or with a piece of wood) and then sip water.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्यावान्तपर्यन्तावोष्ठावुपस्पृश्याऽऽचामेत् ॥ १०॥

टिप्पनी⑥

दन्तमूलात्प्रभृत्योष्ठौ । तत्राऽलोमकः प्रदेशः श्यावः। तस्यान्तः सलोमकः। तत्पर्यन्तावोष्ठावुपस्पृश्याऽऽचामेत् । ओष्ठयोरलोमकप्रदेशमङ्गुल्या13 काष्ठादिना वोपस्पृश्याऽऽचामेदिति ॥ १० ॥

11 न श्मश्रुभिर् उच्छिष्टो

- न श्मश्रुभिर् उच्छिष्टो भवत्य् अन्तरास्ये सद्भिर् यावन् न हस्तेनोपस्पृशति ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. He does not become impure by the hair (of his moustaches) getting into his mouth, as long as he does not touch them with his hand. 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न श्मश्रुभिरुच्छिष्टो भवत्यन्तरास्ये सद्भिर्यावन्न हस्तेनोपस्पृशति ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

श्मश्रूणि यदा आस्यस्यान्तर्भवन्ति तदा तैरन्तरास्ये सद्भिरुच्छिष्टो न भवति यावन्न हस्तेनोपस्पृशति । 15उपस्पर्शने तूच्छिष्टो भवति । ततश्चाऽऽचामेदिति । अस्मादेव प्रतिषेधात् ज्ञायते-यत्किञ्चिदपि द्रव्यमन्तरास्ये 16सदुच्छिष्टताया निमित्तमिति ॥ ११ ॥

12 य आस्याद्बिन्दवः पतन्त

- य आस्याद्बिन्दवः पतन्त उपलभ्यन्ते तेष्वाचमनं विहितम् १२

▼

⑤

>

▼ Bühler

12. If (in talking), drops (of saliva) are perceived to fall from his mouth, then he shall sip water. 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

य आस्याद्बिन्दवः पतन्त उपलभ्यन्ते तेष्वाचमनं विहितम् ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

भाषमाणस्याऽऽस्यात् पतन्तो ये लालाबिन्दव उपलभ्यन्ते चक्षुषा स्पर्शनाद्वा उपलव्धुं योग्यास्तेष्वाचमनं विहितम् । वेदोच्चारणे तु गौतमः 18 मन्त्रबाह्मणमुच्चारयतो ये बिन्दवः शरीरे उपलभ्यन्ते न तेष्वाचमनमिति ॥ १२॥

13 ये भूमौ न

ये भूमौ न तेष्वाचामेदित्येके १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. Some declare, that if (the saliva falls) on the ground, he need not sip water.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ये भूमौ न तेष्वाचामेदित्येके ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

ये बिन्दवो भूमौ पतन्ति, न शरीरे, तेषु नाचामेदित्येके मन्यन्ते । स्वमते तु तेष्वप्याचामेदिति ॥ १३ ॥

14 स्वप्ने क्षवथौ शृङ्खाणिकाऽऽश्र्व्आलम्भे,

- स्वप्ने क्षवथौ शृङ्खाणिका*(=नासामलम्)*-ऽऽश्र्व्-आलम्भे, लोहितस्य केशानाम्, अग्नेर्, गवां, ब्राह्मणस्य, स्त्रियाश् चालम्भे, महापथं च गत्वा ऽमेध्यं चोपस्पृश्याप्रयतं च मनुष्यं, नीवीं च परिधाय +अप उपस्पृशेत् १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. On touching during sleep or in sternutation the effluvia of the nose or of the eyes, on touching blood, hair, fire, kine, a

Brāhmaṇa, or a woman, and after having walked on the high road, and after having touched an (thing or man), and after having put on his lower garment, he shall either bathe or sip or merely touch water (until he considers himself clean). 19

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्वप्ने क्षवधौ 20शिङ्घाणिकाश्वालम्भे लोहितस्य केशानामग्नेर्गवां ब्राह्मणस्य स्त्रियाश्चालम्भे महापथं च गत्वाऽमेध्यं चोपस्पृश्याऽप्रयतं च मनुष्यं नीवीं च परिधायाऽप उपस्पृशेत् ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

स्वप्नः 21स्वापः। क्षवधुः क्षुतम् , तयोः कृतयोः। शिङ्घाणिका नासिकामलम् । अश्रु नेत्रजलम्, तयोरालम्भे स्पर्शे । लोहितस्य रुधिरस्य । केशानां शिरोगतानां भूमिगतानां च । अग्न्यादीनां चतुर्णामालम्भे । महापथं च गत्वा । अमेध्यं च गोव्यतिरिक्तानां मूत्रपुरीषादि । ताम्बूलनिषेकादि चोपस्पृश्य । अप्रयतं च मनुष्यमुपस्पृश्य । नीवी प्रसिद्धा तद्योगादधोवासो लक्ष्यते । तच्च परिधायाप उपस्पृशेत् । केषुचित् स्नानं केषुचिदाचमनं केषुचित् स्पर्शनमात्रं यावता प्रयोत मन्यते ॥ १४ ॥

15 आर्द्रं वा शकृद्

आर्द्रं वा शकृद् ओषधीर् भूमिं वा १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. (Or he may touch) moist cowdung, wet herbs, or moist earth.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आर्द्रं वा शकृदोषधीर्भूमिं वा ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

22उपस्पृशेदित्येव । त्रिश्वार्द्रशब्दस्सम्बध्यते लिङ्गवचनादिविपरिणामेन । आर्द्रं वा शकृदुपस्पृशेत् ओषधीर्वा आर्द्रा , भूमिं वा आर्द्राम् । पूर्वोक्तेष्वेव 23कल्पेषु वैकल्पिकमिदम् ॥ १५ ॥

16 हिंसार्थेनासिना मांसञ् छिन्नमभोज्यम्

हिंसार्थेनासिना मांसं छिन्नमभोज्यम् १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. He shall not eat meat which has been cut with a sword (or knife) used for killing.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

हिंसार्थेनाऽसिना मांसं छिन्नमभोज्यम् ॥१६॥

प्रस्तावः⑥

एवमाचमनं 24सह निमत्तैरुक्तम् । अथाऽभक्ष्याधिकारः—

टिप्पनी⑥

असिग्रहणं क्षुरादेरुपलक्षणम् । यन्मासं पाककाले हिसार्थेनाऽसिना छिन्न तदभोज्यम् ॥ १६ ॥

17 दद्भिरपूपस्य नापच्छिन्द्यात्

दद्भिरपूपस्य नापच्छिन्द्यात् १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. He shall not bite off with his teeth (pieces from) cakes (roots or fruits).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दद्भिरपूपस्य नाऽपच्छिन्द्यात् ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

अपग्रहणं मूलफलादेरप्युपलक्षणम् । द्वितीयार्थे षष्ठी। दन्तैरपूपं नापच्छिन्द्यात् । किंतु हस्तादिभिरपच्छिद्य भक्षयेत् ॥ १७॥

18 यस्य कुले म्रियेत

यस्य कुले म्रियेत न तत्रानिर्दशे भोक्तव्यम् १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. He shall not eat in the house of a (relation within six degrees) where a person has died, before the ten days (of impurity) have elapsed. 25

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यस्य कुले म्रियेत न तत्राऽनिर्दशे भोक्तव्यम् ॥१८॥

टिप्पनी⑥

यस्य कुले कश्चिन्म्रियते असपिण्डतायां सत्यां 26तत्राऽनिर्गते दशाह न भोक्तव्यम् । 'अनिर्दशे' इत्याशौचकालस्योपलक्षणम् । तेन क्षत्रियादिष्वधिकं पक्षिण्यादिषु न्यूनम् ॥ १८ ॥

19 तथानुत्थितायां सूतिकायाम्

तथानुत्थितायां सूतिकायाम् १९

▼

⑤

>

▼ Bühler

19. (Nor shall he eat in a house) where a lying-in woman has not (yet) come out (of the lying-in chamber), 27

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथाऽनुत्थितायां सूतकायाम् ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

सूतका सुतिका । तस्यामनुत्थितायाम् । उत्थानं नाम सुतिकागारे निवेशितानामुदकुम्भादीनामपनयनम् । तच्च दशमेऽहनि भवति । 28 दशम्यामुत्थिताया'मिति गृह्ये उक्तत्वात् । अत्राप्याशौचकालोपलक्षणत्वाद्यावदाशौचमभोजनम् । अत्राऽङ्गिराः— 'ब्रह्मक्षत्रविशां भुक्त्वा न दोषस्त्वग्निहोत्रिणाम् । सूतके शाव आशौच स्वस्थिसञ्चयनात्परम् ॥ इति ॥ १९ ॥

20 अन्तःशवे च

अन्तःशवे च २०

▼

⑤

>

▼ Bühler

20. (Nor in a house) where a corpse lies. 29

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्तःशवे च ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

याव30द्ग्रामान्न निर्ह्रियते शवः तावत्तत्र न भोक्तव्यम् । आचारस्तु धनुश्शतादर्वाक् । तत्रापि प्रदीपमारोप्य उदकुम्भं चोपनिधाय भुञ्जते यदि 31समानवशं गृहं न भवति ॥ २० ॥

21 अप्रयतोपहतमन्नमप्रयतन् न त्वभोज्यम्

अप्रयतोपहतम् अन्नम् अप्रयतं, न त्व् अभोज्यम् २१

▼ विस्तारः (द्रष्टुं नोद्यम्)

अप्रयतम् अन्नम्
अग्नाव् अधिश्रितम्
अद्भिः प्रोक्षितं
भस्मना मृदा वा संस्पृष्टं
वाचा च प्रशस्तं
प्रयतं भवति
भोज्यं च ।

▼

⑤

>

▼ Bühler

21. Food touched by a (Brāhmaṇa or other high-caste person) who is impure, becomes impure, but not unfit for eating. 32

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अप्रयतोपहतमन्नमप्रयतं न त्वभोज्यम् ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

अप्रयतेनाऽशुचिना **उपहतं** स्पृष्टम् **अप्रयतं** भवति ।
किं **तु** अशुद्धम् अप्य् **अभोज्यं न** भवति ।

कः पुनर् अप्रयतस्याऽभोज्यस्य च विशेषः ? उच्यते-
अप्रयतम् अन्नम्
अग्नाव् अधिश्रितम्
अद्भिः प्रोक्षितं
भस्मना मृदा वा संस्पृष्टं
वाचा च प्रशस्तं प्रयतं भवति
भोज्यं च ।

अभोज्यं तु लशुनादि न कथञ्चिद् अपीति ॥ २१॥

22 अप्रयतेन तु शूद्रेणोपहृतमभोज्यम्

अप्रयतेन तु शूद्रेणोपहृतम् अभोज्यम् २२

▼

⑤

>

▼ Bühler

22. But what has been brought (be it touched or not) by an impure Śūdra, must not be eaten, 33

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अप्रयतेन तु शूद्रेणोपहृतमभोज्यम् ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

अप्रयतेन तु शूद्रेणोपहृतम् आनीतम् अन्नं **न भोज्यम्** - स्पृष्टम् अस्पृष्टं च । स्पृष्टम् एवेत्यन्ये ॥ २२ ॥

23 यस्मिंश्चान्ने केशः स्यात्

यस्मिंश् चान्ने केशः स्यात् *(पाकावस्थायां सति भिन्ना वार्ता)* २३

▼

⑤

>

▼ Bühler

23. Nor that food in which there is a hair, 34

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यस्मिश्चाऽऽन्ने केशस्यात् ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

तदप्यभोज्यम् । एतच्च पाकदशायामेव पतितेन केशेन सह यत्पक्वमन्नं तद्विषयम् । 35पश्चात् केशसंसर्गे तु घृतप्रक्षेपादिना संस्कृतस्य भोज्यत्वं स्मृत्यन्तरोक्तम् ॥ २३ ॥

24 अन्यद्वामेध्यम्

अन्यद् वामेध्यम् २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. Or any other unclean substance. 36

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्यद्वाऽमेध्यम् ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

अन्यद्वाऽमेध्यं नखादि यस्मिन्नन्ने स्यात् तदप्यभोज्यम् । इदमपि पूर्ववत । 37 केशकीटनखरोमाखुपुरीषाणि दृष्ट्वा तावन्मात्रमन्नमुद्धृत्य शेषं भोज्य'मिति । वसिष्ठस्तु 38'कामं तु केशकीटानुत्सृज्याद्भिः प्रोक्ष्य भस्मनाऽवकीर्य वाचा प्रशस्तमुपयुञ्जीते'ति ॥ २४ ॥

25 अमेध्यैरवमृष्टम्

अमेध्यैर् अवमृष्टम् २५

▼

⑤

>

▼ Bühler

25. (Nor must that food be eaten) which has been touched with an unclean substance (such as garlic),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अमेध्यैरवमृष्टम् ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

अमेध्यैः कलञ्ज-पलाण्ड्वादिभिर् अवमृष्टं स्पृष्टम् अभोज्यम् ॥ २५ ॥

26 कीटो वामेध्यसेवी

कीटो वामेध्य-सेवी २६

▼

⑤

>
▼ Bühler

26. Nor (that in which) an insect living on impure substances (is found), 39

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कीटो वाऽमेध्यसेवी ॥ २६ ॥

टिप्पनी⑥

'यस्मिंश्चान्ने केशः स्यादि'ति व्यवहितम् अविसम्बध्यते । अमेध्यसेवी कीटः पूत्यण्डाख्यः ॥ २६ ॥

27 मूषकलाङ्गं वा

मूषकलाङ्गं वा २७

▼

⑤

>
▼ Bühler

27. Nor (that in which) excrements or limbs of a mouse (are found),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मूषिकलाङ्गं वा ॥ २७ ॥

टिप्पनी⑥

पूर्ववत्सम्बन्धः । **मूषिकला** मूषिकपूरीषम् । **अङ्गं** वा । समस्तमपि मूषिकग्रहणं सम्बध्यते । यस्मिन्नन्ने मूषिकस्याङ्गं पुच्छपादादि भवति तदप्यभोज्यम् ॥ २७॥

28 पदा वोपहतम्

पदा वोपहतम् २८

▼

⑤

>

▼ Bühler

28. Nor that which has been touched by the foot (even of a pure person),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पदा वोपहतम् ॥ २८ ॥

टिप्पनी⑥

प्रयतेनाऽपि पदा यस्पृष्टं तदप्यभोज्यम् ॥ २८ ॥

29 सिचा वा

सिचा *(वस्त्राञ्चलेन)* वा २९

▼

⑤

>
▼ Bühler

29. Nor what has been (touched) with the hem of a garment,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सिचा वा ॥ २९ ॥

टिप्पनी⑥

सिक् वस्त्रदशा । परिहितस्य वाससः सिचा यत् स्पृष्टं तदप्यभोज्यम् ॥ २९ ॥

30 शुना वापपात्रेण वा

शुना वापपात्रेण वा दृष्टम् ३०

▼

⑤

>
▼ Bühler

30. Nor that which has been looked at by a dog or an Apapātra, 40

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शुना वाऽपपात्रेण वा दृष्टम् ॥ ३०॥

टिप्पनी⑥

दृष्टमिति प्रत्येकमभिसम्बध्यते । शुना वा दृष्टमपपात्रेण वा दृष्टं यत्तदप्यभोज्यम् । पतितसूतिकाचण्डालोदक्यादयोऽपपात्राः, अपगता पात्रेभ्यः । न हि ते पात्रे भोक्तुं लभन्ते ॥ ३०॥

31 सिचा वोपहृतम्

सिचा वोपहृतम् ३१

▼

⑤

>
▼ Bühler

31. Nor what has been brought in the hem of a garment, (even though the garment may be clean),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सिचा वोपहृतम् ॥ ३१ ॥

टिप्पनी⑥

अपरिहितस्य शुद्धस्यापि वाससस्सिचा यद् उपहृतमानीतं तदप्यभोज्यम् ॥ ३१ ॥

32 दास्या वा नक्तमाहृतम्

दास्या वा नक्तमाहृतम् ३२

▼

⑤

>

▼ Bühler

32. Nor what has been brought at night by a female slave. 41

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दास्या वा नक्तम् आहृतम् ॥ ३२ ॥

टिप्पनी⑥

दास्या रात्राव् आहृतम् अभोज्यम् । स्त्रीलिङ्गनिर्देशात् दासेनाऽऽहृते न दोषः। अन्ये लिङ्गमविवक्षितं मन्यन्ते । 'नक्त'मिति वचनाद् दिवा न दोषः ॥ ३२ ॥

33 भुञ्जानं वा

भुञ्जानं वा ३३

▼

⑤

>
▼ Bühler

33. If during his meal,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भुञ्जानं वा ॥ ३३ ॥

टिप्पनी⑥

॥ इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ षोडशी कण्डिका ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.

↩

2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

5. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

6. आप० ध० १.३०.८.↩

7. मनु० स्मृ० २.६↩

8. गौ० ध० १. १, २↩

9. 'मन्वादिभिरुपलभ्यते इत्यनुमीयते' इति ख. पु.↩

10. Manu II, 35.↩

11. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

12. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

13. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

14. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

15. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

16. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

17. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

18. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

19. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

20. आप० ध० १.३०.८.↩

21. मनु० रमृ० २.६↩

22. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

23. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

24. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

25. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

26. आप० ध० १.३०.८.↩

27. Manu II, 144.↩

28. मनु० स्मृ० २.६↩

29. Manu II, 146-148.↩

30. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

31. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

32. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

33. Manu II, 147.↩

34. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

35. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

36. Manu II, 37.↩

37. आप० ध० १.३०.८.↩

38. मनु० स्मृ० २.६↩

39. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

40. The meaning of the Sūtra is, that the initiation shall be performed as soon as the child is able to begin the study of the Veda. If it is so far developed at eight years, the ceremony must then be performed; and if it be then neglected, or, if it be neglected at any time when the capacity for learning exists, expiation prescribed in the following Sūtras must be

performed. The age of sixteen in the case of Brāhmaṇas is the latest term up to which the ceremony may be deferred, in case of incapacity for study only. After the lapse of the sixteenth year, the expiation becomes also necessary. Manu II, 38; Yājñ. I, 37.↩

41. The meaning is, he shall keep all the restrictions imposed upon a student, as chastity, &c, but that he shall not perform the fire-worship or service to a teacher, nor study. Manu II, 39; XI. 192, Yājñ. I, 38; Weber, Ind. Stud. X, 101.↩

१७①

01 यत्र शूद्र उपस्पृशेत्④

यत्र शूद्र उपस्पृशेत् १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. A Śūdra touches him, (then he shall leave off eating). 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यत्र शुद्र उपस्पृशेत् ॥१॥

टिप्पनी⑥

भोजनदशायां यदा शूद्र उपस्पृशेत् तदापि न भुञ्जीत । अत्र भुञ्जानग्रहणादन्यदा शूद्रस्पर्शे नाऽप्रायत्यमिति केचित् । अन्ये तु- सदा भवत्त्येवाऽप्रायत्यम् , भोजनदशायां त्वाधिक्यप्रतिपादनाय निषेध इति ॥ १ ॥

02 अनर्हद्भिर्वा समानपङ्क्तौ

अनर्हद्भिर्वा समानपङ्क्तौ २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. Nor shall he eat sitting in the same row with unworthy people. 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनर्हद्भिर्वा समानपङ्क्तौ ॥ २ ॥

टिप्पनी⑥

सर्वत्र वाशब्दः समुच्चये। अभिजनविद्यावृत्तरहिता अनर्हन्तः । तैस्सह समानायां पङ्क्तौ न भुञ्जीत ॥२॥

03 भुञ्जानेषु व यत्रानूत्थायोच्छिष्टम्

भुञ्जानेषु व यत्रानूत्थायोच्छिष्टं प्रयच्छेदाचामेद्वा ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Nor shall he eat (sitting in the same row with persons) amongst whom one, whilst they eat, rises and gives his leavings to his pupils or sips water; 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भुञ्जानेषु वा यत्राऽनूत्थायोच्छिष्टं प्रयच्छेदाचामेद्वा ॥३॥

टिप्पनी⑥

समानपङ्क्ताविति वर्तते । समानपङ्क्तौ बहुषु भुञ्जानेषु यद्येकोऽनूत्थाय भोजनाद्विरम्य उच्छिष्ट शिष्यादिभ्यः प्रयच्छेत् आचामेद्वा, तस्यां पङ्क्तावितरेषां न भोक्तव्यम् । अतो बहुषु भुञ्जानेषु4एको मध्ये न विरमेत् । भोजनकण्टक इति हि तमाचक्षते ॥ ३ ॥

04 कुत्सयित्वा वा यत्रान्नन्

कुत्सयित्वा वा यत्रान्नं दद्युः ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. Nor (shall he eat) where they give him food, reviling him. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कुत्सयित्वा वा यत्राऽन्नं दद्युः ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

मूर्ख, वैधवेय, विषं भुङ्क्ष्वेति, एवं कुत्सयित्वा यत्रान्नं दद्युस्तदप्यभोज्यम् ॥ ४ ॥

05 मनुष्यैरवघ्रातमन्यैर्वामेध्यैः

मनुष्यैरवघ्रातमन्यैर्वामेध्यैः ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. Nor (shall he eat) what has been smelt at by men or other (beings, as cats). 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मनुष्यैरवघ्रातमन्यैर्वाऽमेध्यैः ॥५॥

टिप्पनी⑥

मनुष्यैरन्यैर्वा मार्जारादिभिरमेध्यैरवघ्रातमन्नमभोज्यम् । 7अवेत्युपसर्गयोगात् दुरस्थैर्गन्धाघ्राणे न दोषः ॥ ५ ॥

06 न नावि भुञ्जीत

न नावि भुञ्जीत ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. He shall not eat in a ship,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न नावि भुञ्जीत ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

नाव्यासीनो न भुञ्जीत, शुद्धेऽपि पात्रे ॥६॥

07 तथा प्रासादे

तथा प्रासादे *(काष्ठमञ्चे)* ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. Nor on a wooden platform.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा प्रासादे ॥ ७॥

टिप्पनी⑥

प्रासादो दारुमयो मञ्चः। तत्रापि न भुञ्जीत ॥ ७॥

08 कृतभूमौ तु भुञ्जीत

कृतभूमौ तु भुञ्जीत ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. He may eat sitting on ground which has been purified (by the application of cowdung and the like).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कृतभूमौ तु भुञ्जीत ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

भूमावपि भुञ्जानः कृतायां गोमयादिना संस्कृतायां भुञ्जीत । 8अपर आह- प्रासादोऽपि यदा मृदा कृतभूमिर्भवति, न केवलं दारुमयः, तदा तत्र भुञ्जीतैवेति ॥ ८॥

09 अनाप्रीते मृण्मये भोक्तव्यम्

अनाप्रीते मृण्मये भोक्तव्यम् ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. (If he eats) out of an earthen vessel, he shall eat out of one that has not been used (for cooking).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनाप्रीते मृण्मये भोक्तव्यम् ॥९॥

टिप्पनी⑥

यदि मृण्मये भुञ्जीत तदाऽनाप्रीते भोक्तव्यम् । आप्रीतं क्वचित्कार्ये पाकादावुपयुक्तम् ॥ ९ ॥

10 आप्रीतञ् चेद् अभिदग्धे

आप्रीतं चेद् अभिदग्धे १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. (If he can get) a used vessel (only, he shall eat from it), after having heated it thoroughly.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आप्रीतं चेदभिदग्धे ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

आप्रीतमेव चेल्लभ्यते, तदाऽग्निनाऽभितो दग्ध्वा तत्र भोक्तव्यम् ॥

11 परिमृष्टं लौहम् प्रयतम्

परिमृष्टं लौहं प्रयतम् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. A vessel made of metal becomes pure by being scoured with ashes and the like. 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

परिमृष्टं लौहं प्रयतम् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

लौह लोहविकारभूतं कांस्यादि भोजनपात्रं भस्मादिभिः परिमृष्टं सत् प्रयत भवति । तत्र भस्मना कांस्यम् । आम्लेन ताम्रम् । राजतं शकृता । सौवर्णमद्भिरेवेत्यादि स्मृत्यन्तरवशादद्रष्टव्यम् ॥११॥

12 निर्लिखितन् दारुमयम्

निर्लिखितं दारुमयम् १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. A wooden vessel becomes pure by being scraped. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

निर्लिखितं दारुमयम् ॥ १२॥

टिप्पनी⑥

दारुमयं भाजनं निर्लिखितं तष्ट सत् प्रयतं भवति ॥ १२ ॥

13 यथागमं यज्ञे

यथागमं यज्ञे १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. At a sacrifice (the vessels must be cleaned) according to the precepts of the Veda.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथागमं यज्ञे ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

यज्ञपात्रं तु यथागम शोधितं प्रयत भवति । तद्यथा अग्निहोत्रहवणी दर्भैरद्भिः प्रक्षालिता, सोमपात्राणि 11'मार्जालीये प्रक्षालितानि, आज्यपात्राण्युष्णेन वारिणा ॥ १३ ॥

14 नापणीयमन्नमश्नीयात्

नाऽऽपणीयम् *(पक्वं)* अन्नम् अश्नीयात् १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. He shall not eat food which has been bought or obtained ready-prepared in the market.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽऽपणीयमन्नमश्नीयात् ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

आपणः पण्यवीथी । तत्र यत्क्रीतं लब्धं वा । तद् **आपणीयम्** । तच्च कृतान्नं नाश्नीयात् । व्रीह्यादिषु न दोषः ॥ १४ ॥

15 तथा रसान् आममांसमधुलवणानीति

तथा *(ऽऽपणियान्)* रसान् *(नाश्नीयात्)*, आम*(=अपक्व)*-मांस-मधु-लवणानीति परिहाप्य १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. Nor (shall he eat) flavoured food (bought in the market) excepting raw meat, honey, and salt.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा रसानामाममांसमधुलवणानीति परिहाप्य ॥१५॥

टिप्पनी⑥

रसाः रसद्रव्याणि । तान् अप्य् आपणीयान् नाश्नीयात् ।
12आम-मांसादि वर्जयित्वा ॥ १५॥

16 तैलसर्पिषी तूपयोजयेदुदकेऽवधाय

तैल-सर्पिषी तूपयोजयेद् उदकेऽवधाय १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. Oil and clarified butter (bought in the market) he may use, after having sprinkled them with water. 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तैलसर्पिषी तूपयोजयेदुदकेऽवधाय ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

तैल-सर्पिषी वापणीये अप्य् उपयोजयेत् ।
उदकेऽवधाय निषिच्य पाकेन तैल-सर्पिषी14 शोधयित्वा ।
कार्यविरोधो यथा न भवति तथा उदकेन संसृज्येत्यन्ये15॥ १६ ॥

17 कृतान्नम् पर्युषितमखाद्यापेयानाद्यम्

कृतान्नं पर्युषितम् अखाद्यापेयानाद्यम् १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. Prepared food which has stood for a night, must neither be eaten nor drunk. 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कृतान्नं पर्युषितमखाद्यापेयानाद्यम् ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

कृतान्नं पक्वान्नं, तत् **पर्युषितं** पूर्वेद्यु पक्वं सत् **अखाद्यम्** ।
अपेयम् अनाद्यं च
यथायोगं खरविशदं द्रवं मृदुविशदं सिद्धं च ॥ १७ ॥

18 शुक्तञ् च

शुक्तं*(=काल-पकेनाऽम्लीभूतं)* च १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. Nor (should prepared food) that has turned sour (be used in any way). 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शुक्तं च ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

शुक्तं यत् काल-पकेनाऽम्लीभूतं
तद् अपर्युषितम् अपि
अखाद्यापेयाः नाद्यम् ॥ १८॥

19 फाणितपृथुक तण्डुलकरम्ब भरुजसक्तुशाकमांसपिष्टक्षीरविकारौषधिवनस्पतिमूलफलवर्जम्

फाणित*(=शर्कररस)*-पृथुक*(=चिउडा)*-तण्डुल-करम्ब*(=दधि+शक्तु)*-भरुज*(=भ्रष्टयव)*-सक्तु-शाक-मांस-पिष्ट-क्षीर-विकारौषधि-वनस्पति-मूल-फल-वर्जम् १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. (The preceding two rules do) not (hold good in regard to) the juice of sugar-cane, roasted rice-grains, porridge prepared with whey, roasted yava, gruel, vegetables, meat, flour, milk and preparations from it, roots and fruits of herbs and trees. 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

फाणित-पृथुक *(चिउडा)*-तण्डुल-करम्ब *(दधि+शक्तु)*-19भरुज-सक्तु-शाक-मांस-पिष्ट-क्षीरविकारौषधि-वनस्पति-मूल-फल-वर्जम् १९

टिप्पनी⑥

अनन्तरोक्त-विधिद्वयं फाणितादीन् वर्जयित्वा द्रष्टव्यम् ।

फाणितं पानविशेषः । इक्षुरस इति केचित् ।
[20]भ्रष्टानां व्रीहीणां तण्डुलाः पृथूकृताः **पृथुकाः** ।
करम्बो दधि-सक्तु-समाहारः यः करम्भ इति प्रसिद्धः।
वेदेऽप्युभयं भवति[21] 'यत्करम्बैर्जुहोति' । [22] धानाः करम्भः परिवाप' इति।
भरूजाः भ्रष्टा यवाः।
क्षीर-विकारो दध्यादि । प्रसिद्धमन्यत् ॥

20 शुक्तञ् चापरयोगम्

शुक्तं चापरयोगम् २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. (Substances which have turned) sour without being mixed with anything else (are to be avoided). [23]

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शुक्तं चाऽपरयोगम् ॥ २०॥

प्रस्तावः⑥

अथ 'शुक्तं चे'त्यस्य विधेः शेषः—

टिप्पनी⑥

परेण द्रव्यान्तरेण योगो यस्य तत् परयोगं, ततोऽन्यदपरयोगम् । तदेव शुक्तं वर्ज्यम् । यत्तु दध्यादि द्रव्यान्तरसंसृष्टं शुक्तं तद्भोज्यमेव । एवं च पूर्वत्रैवाऽपरयोगमिति विशेषणं वक्तव्यम् । इदमेव वा सूत्रमस्तु । सूत्रद्वयकरणं त्वाचार्यप्रवृत्तिकृतम्। यथा 'सलावृक्येकसृकोलूकशब्दा' (पृ. ५८) इति पूर्वं सामान्येनाऽभिधाय 'सलावृक्यामेकसृक इति स्वप्नपर्यान्त'(पृ. ६५)मिति पश्चाद्विशेष उक्तः ॥ २० ॥

21 सर्वम् मद्यमपेयम्

सर्वं मद्यमपेयम् २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. All intoxicating drinks are forbidden.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वं मद्यमपेयम् ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

मद्यं मदकरं तत्सर्वमपेयम् । अत्र स्मृत्यन्तरवशाद्व्यवस्था ।
तत्र मनुः —

24 'गौडी पैष्टी च माध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरा।
यथैवैका न पातव्या25 तथा सर्वा द्विजोत्तमैः । इति । सुराव्यतिरिक्तं तु मद्यं ब्राह्मणस्य नित्यमपेयम् ॥
तथा च गौतमः—
26 'मद्यं नित्यं ब्राह्मणस्य क्षत्रियवैश्ययोस्तु ब्रह्मचारिणो'रिति ॥२१॥

22 तथैलकम् पयः

तथैलकं पयः २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. Likewise sheep's milk, 27

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथैलकं पयः ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

अवि एलका। तस्याः पयः क्षीरमपेयम् ॥ २२ ॥

23 उष्ट्रीक्षीरमृगीक्षीरसन्धिनीक्षीरयमसूक्षीराणीति

उष्ट्रीक्षीर-मृगीक्षीर-सन्धिनीक्षीर-यमसूक्षीराणीति २३

▼

⑤

>

▼ Bühler

23. Likewise the milk of camels, of does, of animals that give milk while big with young, of those that bear twins, and of (one-hoofed animals), 28

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उष्ट्रीक्षीरमृगीक्षीरसन्धिनीक्षीरयमसूक्षीराणीति ॥२३॥

टिप्पनी⑥

उष्ट्रीमृग्यौ प्रसिद्धे। या गर्भिणी दुग्धे सा सन्धिनीति शास्त्रान्तरे प्रसिद्धा। एककालदोहेत्यन्ये । एकस्मिन् प्रसवे या अनेकं गर्भं सूते, सा यमसूः। उष्ट्र्यादीनां क्षीराण्यपेयानि । इतिकरणमेवं प्रकाराणामन्येषामेकशफादीनां क्षीरमपेयमिति ।
तथा च मनुः—
29 आरण्यानां च सर्वेषां मृगाणां महिषीं विना । स्त्रीक्षीरं चैव वानि सर्वशूक्तानि चैव हि ॥
अनिर्दशाया गोः क्षीरमौष्ट्रमैकशफं तथा।
आविकं सन्धिनीक्षीरं विवत्सायाश्च गोः पयः ॥ इति ॥२३॥

24 धेनोश्चानिर्दशायाः

धेनोश्चानिर्दशायाः *(प्रसवाद् १० दिनेभ्यः प्राक्)* २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. Likewise the milk of a cow (buffalo-cow or she-goat) during the (first) ten days (after their giving birth to young ones), 30

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

धेनोश्चाऽनिर्दशायाः ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

धेनुर्नवप्रसूता गौः । चकारादजामहिष्योश्च । 31 'अजा गावो महिष्यश्चे'ति मानवे दर्शनात् ॥ २४॥

25 तथा कीलालौषधीनाञ् च

तथा कीलालौषधीनां च २५

▼

⑤

>
▼ Bühler

25. Likewise (food mixed) with herbs which serve for preparing intoxicating liquors,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा कीलालौषधीनां च ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

कीलालोषधयः सुरार्था ओषधयः । तासां च विकारभूतमन्नमनाद्यम् ॥ २५ ॥

26 करञ्जपलण्डुपरारीकाः

करञ्ज-पलण्डु-परारीकाः २६

▼

⑤

>
▼ Bühler

26. (Likewise) red garlic, onions, and leeks, 32

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

33करञ्जपलण्डुपरारीकाः ॥२६ ॥

टिप्पनी⑥

34करजं रक्तलशुनम् । पलण्डु श्वेतम् । परारीका कृष्णम् । 35मण्डुमाख्यया म्लेच्छानां प्रसिद्धम् । एते चाऽभक्ष्याः ॥ २६ ॥

27 यच्चान्यत् परिचक्षते

यच्चान्यत् परिचक्षते २७

▼

⑤

>
▼ Bühler

27. Likewise anything else which (those who are learned in the law) forbid. 36

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यच्चाऽन्यत् परिचक्षते ॥ २७ ॥

टिप्पनी⑥

अभक्ष्यानां प्रतिपदपाठो न शक्यते इति समासेनाह—

टिप्पनी⑥

यच्चान्यदेवंयुक्तं शिष्टाः परिचक्षते वर्जयन्ति तदप्यभक्ष्यम् । तत्राह मनुः—
37लशुनं गृञ्जनं चैव पलण्डु कवकानि च ॥
अभक्ष्याणि द्विजातीनाममेध्यप्रभवानि च ॥ इति ॥ २७॥

28 क्याक्वभोज्यमिति हि ब्राह्मणम्

क्याक्वभोज्यमिति हि ब्राह्मणम् २८

▼

⑤

>

▼ Bühler

28. Mushrooms ought not to be eaten; that has been declared in a Brāhmaṇa; 38

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

क्याक्वभोज्यमिति हि ब्राह्मणम् ॥२८॥

टिप्पनी⑥

क्याकु छत्राकं तदभोज्यमभक्ष्यम् । ब्राह्मणग्रहणमुक्तार्थम् ॥ २८ ॥

29 एकखुरोष्ट्रगवयग्रामसूकरशरभगवाम्

एकखुरोष्ट्रगवयग्रामसूकरशरभगवाम् २९

▼

⑤

>
▼ Bühler

29. (Nor the meat) of one-hoofed animals, of camels, of the Gayal, of village pigs, of Śarabhas, and of cattle. 39

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एकखुरोष्ट्रगवयग्राममूकरशरभगवाम् ॥ २९ ॥

टिप्पनी⑥

एकखुरा अश्वादयः । गवयो गोसदृशः पशुः। शरभोऽष्टपाद आरण्यो मृगः। अन्ये प्रसिद्धाः । एतेषां मांसमभक्ष्यम् ॥ २९ ॥

30 धेनु+अनडुहोर्भक्ष्यम्

धेनु+अनडुहोर्भक्ष्यम् ३०

▼

⑤

>
▼ Bühler

30. (But the meat) of milch-cows and oxen may be eaten.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

धेन्वनडुहोर्भक्ष्यम् ॥३०॥

टिप्पनी⑥

धेन्वनडुहोर्मांसं भक्ष्यम् । गोप्रतिषेधस्य प्रतिप्रसवः ॥ ३०॥

31 मेध्यमानडुहमिति वाजसनेयकम्

मेध्यमानडुहमिति वाजसनेयकम् ३१

▼

⑤

>
▼ Bühler

31. The Vājasaneyaka declares 'bull's flesh is fit for offerings.'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मेध्यमानडुहमिति वाजसनेयकम् ॥ ३१ ॥

टिप्पनी⑥

40अनुडुहो मांसं न केवलं भक्ष्यम् , किं तर्हि ? मेध्यमपीति वाजसनेयिनः समामनन्ति ॥ ३१ ॥

32 कुक्कुटो विकिराणाम्

कुक्कुटो विकिराणाम् *(=खनित्वा कीटान्यश्नन्ति ये तेषु, अभक्ष्यम्)* ३२

▼

⑤

>
▼ Bühler

32. Amongst birds that scratch with their feet for, food, the (tame) cock (must not be eaten). 41

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कुक्कुटो विकिराणाम् *(=खनित्वा कीटान्यश्नन्ति ये तेषु, अभक्ष्यम्)* ॥ ३२ ॥

टिप्पनी⑥

व्यवहितमप्यभोज्यमिति सम्बध्यते । पादाभ्यां विकीर्य कीटधान्यादि ये भक्षयन्ति ते मयूरादयो विकिरास्तेषां मध्ये कुक्कुटो न भक्ष्यः। स्मृत्यन्तरवशात् ग्राम्यो, नाऽऽरण्यः ॥ ३२ ॥

33 प्लवः प्रतुदाम्

प्लवः प्रतुदाम् ३३

▼

⑤

>

▼ Bühler

33. Amongst birds that feed thrusting forward their beak, the (heron, called) Plava (or Sakaṭabila, must not be eaten). 42

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्लवः प्रतुदाम् ॥ ३३ ॥

टिप्पनी⑥

तुण्डेन प्रतुद्य ये भक्षयन्ति ते दार्वाघाटादयः प्रतुदाः। तेषां मध्ये प्लव पवाऽभक्ष्यः । प्लवः 43शकटबलाख्यो बकविशेषः ॥ ३३ ॥

34 क्रव्यादः

क्रव्यादः ३४

▼

⑤

>
▼ Bühler

34. Carnivorous (birds are forbidden), 44

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

45क्रव्यादः ॥ ३४ ।।

टिप्पनी⑥

क्रव्यं मांसं तदेव केवलं येऽदन्ति ते क्रव्यादाः गृध्रादयः। ते ऽप्यभक्ष्याः ॥ ३४ ॥

35 हंसभासचक्रवाकसुपर्णाश्च

हंसभासचक्रवाकसुपर्णाश्च ३५

▼

⑤

>
▼ Bühler

35. Likewise the swan, the Bhāsa, the Brāhmaṇī duck, and the falcon. 46

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

हंसभासचक्रवाकसुपणाश्च॥ ३५ ॥

टिप्पनी⑥

हंसः प्रसिद्धः। भासः श्येनाकृतिः पीनतुण्डः । चक्रवाकः मिथुनचरः । सुपर्णः श्येनः। एते चाऽभक्ष्याः ॥ ३५ ॥

36 क्रुञ्चक्रौञ्च वार्ध्राणसलक्ष्मणवर्जम्

क्रुञ्च-क्रौञ्च-वार्ध्राणस-लक्ष्मण-वर्जम् *(अभक्ष्यम्)* ३६

▼

⑤

>
▼ Bühler

36. Common cranes and Sāras-cranes (are not to 47 be eaten) with the exception of the leather-nosed Lakṣmaṇa.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

क्रुञ्च-क्रौञ्च *(एतेषु)* वार्ध्राणस-लक्ष्मण-वर्जम् *(अभक्ष्यम्)* ॥ ३६॥

टिप्पनी⑥

क्रुञ्चा वृन्दचाराः । क्रौञ्चा मिथुनचराः । ते चाऽभक्ष्याः । सूत्रे क्रौञ्चेति विभक्तिलोपश्छान्दसः । किमविशेषेण क्रुञ्चक्रौञ्चा अभक्ष्याः। नेत्याह-वार्ध्राणसलक्ष्मणवर्जम् । श्वेतो लोहितो वा मूर्धा येषां ते लक्ष्मणाः त एव विशेष्यन्ते-वार्ध्राणसा इति । वार्ध्रं चर्म तदाकारा नासिका येषां ते वार्ध्राणसाः। एवंभूतान् लक्ष्मणान् वर्जयित्वा क्रुञ्चक्रौञ्चा न भक्ष्या इति।
अन्ये त्वाहुः-'क्रव्याद' इति प्राप्तस्य प्रतिषेधस्य क्रुञ्चादिषु चतुर्ष्वप्रतिषेध इति । तत्र लक्ष्मणा सारसी लक्ष्मणवर्जमिति48 'ङ्यापोस्संज्ञाच्छन्दसो'रिति ह्रस्वः। एवं क्रुञ्चादिशब्दस्याऽप्यजादिटाबन्तस्य ॥३६॥

37 पञ्चनखानाङ् गोधाकच्छपश्वाविट्शल्यकखण्गशशपूतिखषवर्जम्

पञ्चनखानां गोधा-कच्छप-श्वाविट्-शल्यक-खण्ग-शश-पूतिखष-वर्जम् ३७

▼

⑤

>
▼ Bühler

37. Five-toed animals (ought not to be eaten) with the exception of the iguana, the tortoise, the porcupine, the hedgehog, the rhinoceros, the hare, and the Pūtikhasha. 49

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पञ्चनखानां50 गोधाकच्छपश्वाविट्छर्यकखङ्गशशपूतिखषवर्जम् ॥ ३७ ॥

टिप्पनी⑥

पञ्चनखा नरवानरमार्जारादयः। तेषांमध्ये गोधादीन् सप्त वर्जयित्वा अन्ये अभक्ष्याः । गोधा कृकलासाकृतिर्महाकाया । कच्छपः कूर्मः । श्वाबिट् वराहविशेषः, यस्य नाराचाकाराणि लोमानि। शर्यक्रः शल्यकः, यस्य चर्मणा तनुत्राणं क्रियते । श्वाविट्शर्यक इति युक्तः पाठः। एके तु छकारं पठन्ति । छकारात्पूर्वमिकारम् । खड्गो मृगविशेषः, यस्य शृङ्गं तैलभाजनम् । शशः प्रसिद्धः। पूतिखषः । शशाकृतिः हिमवति प्रसिद्धः ॥३७॥

38 अभक्ष्यश्चेटो मत्स्यानाम्

अभक्ष्यश्चेटो मत्स्यानाम् ३८

▼

⑤

>
▼ Bühler

38. Amongst fishes, the Ceta ought not to be eaten,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अभक्ष्यश्चेटो मत्स्यानाम् ॥ ३८॥

टिप्पनी⑥

मत्स्यानां मध्ये चेटाख्यो मत्स्यो न भक्ष्यः ॥ ३८ ॥

39 सर्पशीर्षी मृदुरः क्रव्यादो

सर्पशीर्षी मृदुरः क्रव्यादो ये चान्ये विकृता यथा मनुष्यशिरसः ३९

▼

⑤

>
▼ Bühler

39. Nor the snake-headed fish, nor the alligator, nor those which live on flesh only, nor those which are misshaped (like) mermen. 51

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्पशीर्षी मृदुरः क्रव्यादो ये चाऽन्ये विकृता यथा मनुष्यशिरसः ॥ ३९ ॥

टिप्पनी⑥

सर्पस्येव शिरो यस्य सोऽपि मत्स्यो न भक्ष्यः । मृदुरो मकरः ये च क्रव्यमेवाऽदन्ति शिंशुमारादयः तेऽप्यभक्ष्याः। ये च उक्तेभ्योऽन्ये मत्स्या विकृताकाराः । तत्रोदाहरणम्-यथा मनुष्याशेरसः जलमनुष्याख्या जलहस्त्यादयश्च । तेऽपि सर्वे न भक्ष्याः । अत्र मनुः—
52 अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी।
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः ॥
53मांसभक्षयिताऽमुत्र यस्य मांसमिहाद्म्यहम् ।
एतन्मासस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिणः ॥
न मांसभक्षणे दोषो न मधे न च मैथुने ।
प्रवृत्तिरेषा भूतानां निवृत्तिस्तु महाफला ॥' इति ।
54अप्रतिषिद्धेष्वपि भक्षणान्निवृत्तिरेव ज्यायसीत्यर्थः ॥ ३९ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रे सप्तदशी कण्डिका ॥
इति चापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तमिश्रविरचितायामुज्ज्वलायां प्रथमप्रश्ने पञ्चमः पटलः ॥ ५ ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
↩
2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
3. Manu II, 35.↩
4. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
5. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
6. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
7. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
8. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
9. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩
10. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person

who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

11. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

12. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

13. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

14. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

15. आप० ध० १.३०.८.↩

16. Manu II, 144.↩

17. Manu II, 146-148.↩

18. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

19. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

20. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

21. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

22. आप० ध० १.३०.८.↩

23. Manu II, 147.↩

24. मनु० स्मृ० २.६↩

25. गौ० ध० १. १, २↩

26. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

27. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

28. Manu II, 37.↩

29. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

30. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

31. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

32. The meaning of the Sūtra is, that the initiation shall be performed as soon as the child is able to begin the study of the Veda. If it is so far developed at eight years, the ceremony must then be performed; and if it be then neglected, or, if it be neglected at any time when the capacity for learning exists, expiation prescribed in the following Sūtras must be performed. The age of sixteen in the case of Brāhmaṇas is the latest term up to which the ceremony may be deferred, in case of incapacity for study only. After the lapse of the sixteenth year, the expiation becomes also necessary. Manu II, 38; Yājñ. I, 37.↩

33. आप० ध० १.३०.८.↩

34. मनु० स्मृ० २.६↩

35. गौ० ध० १. १, २↩

36. The meaning is, he shall keep all the restrictions imposed upon a student, as chastity, &c, but that he shall not perform the fire-worship or service to a teacher, nor study. Manu II, 39; XI. 192, Yājñ. I, 38; Weber, Ind. Stud. X, 101.↩

37. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

38. 'If he is strong, he shall bathe three times a day--morning, midday, and evening.'--Haradatta.↩

39. Brahman, apparently, here means 'Veda,' and those who neglect its study may be called metaphorically 'slayers of the Veda.'↩

40. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

41. Manu II, 40; Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 8, 9; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

42. Compare above, I, 1, 1, 28.↩

43. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

44. 'Because in this Sūtra the expression "food not given at a Śrāddha" occurs, some think that the preceding Sūtra refers to "food eaten at a Śrāddha."'--Haradatta. This explanation is not at all improbable.↩

45. आप० ध० १.३०.८.↩

46. Yājñ. I, 172.↩

47. Manu V, 12; Yājñ. I, 172. Other commentators take the whole Sūtra as one compound, and explain it as an exception to Sūtra 34. In that case the translation runs thus: ('Carnivorous birds are forbidden) except the Kruñca, Krauñca, Vārdhrāṇasa, p. 65 and Lakṣmaṇa.'--Haradatta. This translation is

objectionable, because both the Kruñca, now called Kulam or Kūñc, and the Krauñca, the red-crested crane, now called Sāras (Cyrus), feed on grain. Kruñcakrauñca is a Vedic dual and stands for kruñcakrauñcā or kruñcakrauñcau.↩

48. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

49. Manu V, 18; Yājñ. I, 77. Pūtikhasha is, according to Haradatta, an animal resembling a hare, and found in the Himālayas.↩

50. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

51. Haradatta closes this chapter on flesh-eating by quoting Manu V, 56, which declares flesh-eating, drinking spirituous liquor, and promiscuous intercourse to be allowable, but the abstinence therefrom of greater merit. He states that the whole chapter must be understood in this sense.↩

52. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

53. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

54. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

०६①

१८①

01 मध्वामम् मार्गम् मांसम्④

मध्वामं मार्गं मांसं भूमिर् मूलफलानि रक्षा-गव्यूतिर्-निवेशनं युग्यघासश् चोग्रतः प्रतिगृह्याणि १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. Honey, uncooked (grain), venison, land, roots, fruits, (a promise of) safety, a pasture for cattle, a house, and fodder for a draught-ox may be accepted (even) from an Ugra. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मध्वामं मार्गं मांसं भूमिर् मूलफलानि रक्षा-गव्यूतिर्-निवेशनं युग्यघासश् चोग्रतः प्रतिगृह्याणि ॥ १ ॥

प्रस्तावः⑥

एवं तावन्निमित्तदुष्टं जातिदुष्टं कालदुष्टं चाऽभोज्यमुक्तम् । तत्र निमित्तदुष्टं यस्य कुले म्रियेते(पृ. ९२.)त्यादि । जातिदुष्टं कलञ्जादि । कालदुष्टं पर्युषितादि । इदानीं प्रतिग्रहाशुचीनि कानिचिदनुज्ञाय कानिचित् प्रतिषेधति—

टिप्पनी⑥

मधु पक्वमपक्वं वा । आमं तण्डुलादि । मृगस्य विकारो मार्गं मांसम् । भूमिः शालेयादिक्षेत्रम् । विश्रमस्थानमित्यन्ये । मूलफलानि2 मूलकाम्रादीनि । रक्षा अभयदानम् । गव्यूतिर्गोमार्गः । निवेशनं गृहम् । युगं वहतीति युग्यो बलीवर्दः । तस्य घासो भक्ष्यं पलालादि। एतान्युग्रतोऽपि प्रतिगृह्याणि प्रतिग्राह्याणि अदुर्भिक्षेऽपि । उग्रपापकर्मा द्विजातिः, वैश्याद्वा शुद्रायां जातः । उग्रग्रहणं तादृशानामुपलक्षणम् ॥ १ ॥
02 एतान्यपि नानन्तेवास्याहृतानीति हारीतः

एतान्यपि नानन्तेवास्याहृतानीति हारीतः २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. Hārita declares, that even these (presents) are to be accepted only if they have been obtained by a pupil.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतान्यपि नाऽनन्तेवास्याहृतानीति हारीतः ॥ २ ॥

टिप्पनी⑥

एतानि मध्वादीन्यपि अन्तेवास्याहृतान्येव प्रतिग्राह्याणि, न स्वयमुग्रत इति हारीत आचार्यो मन्यते ॥२॥

03 आमं वा गृह्णीरन्

आमं वा गृह्णीरन् ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Or they (Brāhmaṇa householders) may accept (from an Ugra) uncooked or (a little) unflavoured boiled food.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आमं वा गृह्णीरन् ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

पूर्वोक्तेष्वामं स्वयमेव वा गृह्णीरन् द्विजा इति3 हारीतस्यैव पक्षः ॥ ३ ॥

04 कृतान्नस्य वा विरसस्य

कृतान्नस्य वा विरसस्य ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. (Of such food) they shall not take a great quantity (but only so much as suffices to support life). 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कृतान्नस्य वा विरसस्य ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

आमस्याऽलाभे कृतान्नस्याऽपि विरसस्य लवणादिरसासंयुक्तस्य । षष्ठी निर्देशात स्तोकम् । स्वयमन्तेवास्याहृतं वा गृह्णीरन् ॥ ४ ॥

05 न सुभिक्षाः स्युः

न सुभिक्षाः स्युः ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. If (in times of distress) he is unable to keep himself, he may eat (food obtained from anybody),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न सुभिक्षाः स्युः ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

अनन्तरोक्तविधानद्वये यद्गृहीतमन्नं तेन सुभिक्षाः सुहिता न भवेयुरेव । यावता प्राणयात्रा भवति तावदेव गृह्णीरन् , न यावता सौहित्यं तावदिति ॥५॥

06 स्वयमप्यवृत्तौ सुवर्णन् दत्त्वा

स्वयमप्यवृत्तौ सुवर्णं दत्त्वा पशुं वा भुञ्जीत ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

> 6. After having touched it (once) with gold,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्वयमप्यवृत्तौ सुवर्णं दत्वा पशुं वा भुञ्जीत ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

यदि तु दुर्भिक्षतया आत्मनोऽपि वृत्तिर्न लभ्यते प्रागेव पोष्यवर्गस्य, तदा स्वयमप्यवृत्तौ यत्रैव लभ्यते तत्रैव कृतान्नमपि भुञ्जीत । तत्र गुणविधिः- सुवर्णं दत्वा सकृदेवोपक्लृप्तमुपरिष्टात्सुवर्णेन स्पृष्ट्वा । एतेन पशुं वा दत्वेत्यपि व्याख्यातम् । 'पशुरग्निः, 5अग्निः पशुरासीदिति मन्त्रलिङ्गात्6 गोसूक्तेनाऽग्नेरुपस्थानदर्शनाच्च ॥ ६ ॥

07 नात्यन्तमन्ववस्येत्

नात्यन्तमन्ववस्येत् ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. Or (having touched it with) fire.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽत्यन्तमन्ववस्येत् ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

न पुनरत्यन्तमन्ववसीदेत् ॥ ७ ॥

08 वृत्तिम् प्राप्य विरमेत्

वृत्तिं प्राप्य विरमेत् ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. He shall not be too eager after (such a way of living). He shall leave it when he has obtained a (lawful) livelihood. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वृत्तिं प्राप्य विरमेत् ॥ ८ ॥

टिप्पनी⑥

यदा विहिता वृत्तिलभ्यते तदा निषिद्धाया विरमेत् । न पुनस्"सकृत्प्रवृत्ताया किमवकुण्ठनेने"ति न्यायेन तत्रैव रमेत । अत्र छान्दोग्योपनिषत्-8'मटचीहतेषु कुरुष्वाटिक्या सह जाययोषस्तिर्ह चाक्रायण इभ्यग्रामे प्रद्राणक उवास। स हेभ्यं कुल्माषान् खादन्तं बिभिक्षे' इत्यादि । मन्त्रवर्णश्च भवति9 'अवर्त्त्या शुन अन्त्राणि पेच' इति । अवर्त्त्या वृत्यभावेन । अपर आह- दुर्भिक्षे स्वयमप्यवृत्तौ आ तन्निवृत्तेर्यत्र कुत्रचिन्नीचेऽपि दातरि भुञ्जानो वसेत् यां च यावतीं च स्वर्णमात्रा वा कञ्चन पशुं वा तस्मै दत्वा । न पुनरत्यन्तमन्ववस्येत् वृत्तिं प्राप्य विरमेदिति ॥ ८॥

09 त्रयाणां वर्णानाङ् क्षत्रियप्रभृतीनां

त्रयाणां वर्णानां क्षत्रियप्रभृतीनां समावृत्तेन न भोक्तव्यम् ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. (A student of the Brahmanic caste) who has returned home shall not eat (in the house) of people belonging to the three tribes, beginning with the Kṣatriya (i. e. of Kṣatriyas, Vaiśyas, and Śūdras). 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

त्रयाणां वर्णानां क्षत्रियप्रभृतीनां समावृत्तेन न भोक्तव्यम् ॥ ९ ॥

प्रस्तावः⑥

एवमापदि वृत्तिमुक्त्वा सुभिक्षेऽनापदि वृत्तिमाह—

टिप्पनी⑥

समावृत्तो द्विजातिः क्षत्रियादीनां त्रयाणां वर्णानां गृहे न भुञ्जीत ॥९॥

10 प्रकत्या ब्राह्मणस्य भोक्तव्यङ्

प्रकत्या ब्राह्मणस्य भोक्तव्यं कारणादभोज्यम् १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. He may (usually) eat (the food) of a Brāhmaṇa on account of (the giver's) character (as a Brāhmaṇa). It must be avoided for particular reasons only.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रकृत्या ब्राह्मणस्य भोक्तव्यमकारणादभोज्यम् ॥१०॥

टिप्पनी⑥

ब्राह्मणस्यान्नं प्रकृत्या स्वभावेनैव भोक्तव्यम् । कारणादेव स्वभोज्यम् ॥१०॥

11 यत्राप्रायश्चित्तङ् कर्मासेवते प्रायश्चित्तवति

यत्राप्रायश्चित्तं कर्मासेवते प्रायश्चित्तवति ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. He shall not eat in a house where (the host) performs a rite which is not a rite of penance, whilst he ought to perform a penance. 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यत्राऽप्रायश्चित्तं कर्माऽऽसेवते प्रायश्चित्तवति ॥ ११ ॥

प्रस्तावः⑥

कारणमाह —

टिप्पनी⑥

12 यत्र यदा वैश्वदेवाग्निहोत्रादीनि नित्यमाभ्युदयिकं वाऽप्रायश्चित्तं कर्माऽऽसेवते तात्पर्येण करोति प्रायश्चित्तवत्यात्मनि चोदितं प्रायश्चित्तं 13प्राणायामोपवासविधिकृच्छ्रादि न करोति तदा एतस्मात् कारणात ब्राह्मणस्याऽन्नमभोज्यमिति ॥ ११ ॥

12 चरितनिर्वेषस्य भोक्तव्यम्

चरितनिर्वेषस्य भोक्तव्यम् १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. But when the penance has been performed, he may eat (in that house). 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

चरितनिर्वेषस्य भोक्तव्यम् ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

चरितो निर्वेषः प्रायश्चित्तं येन तस्याऽन्नं भोक्तव्यम् । तद्भोजने न दोषः । निष्ठया भूतकालस्याऽभिधानाच्चर्यमाणेऽपि निर्वेषे न भोक्तव्यम् । किं तर्हि ? चरिते ॥ १२ ॥

13 सर्ववर्णानां स्वधर्मे वर्तमानानाम्

सर्ववर्णानां स्वधर्मे वर्तमानानां भोक्तव्यं, शूद्र-वर्जमित्येके १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. According to some (food offered by people) of any caste, who follow the laws prescribed for them, except that of Śūdras, may be eaten.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्ववर्णानां स्वधर्मे वर्तमानानां भोक्तव्यं शुद्रवर्जमित्येके ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

शूद्रवर्जितानां स्वधर्मे वर्तमानानां त्रयाणां वर्णानामन्नं भोज्यम् । न ब्राह्मणस्यैवेत्येक मन्यन्ते ॥ १३ ॥

14 तस्यापि धर्मोपनतस्य

(शूद्रस्य) तस्यापि धर्मोपनतस्य *(= धर्मार्थम् आश्रितस्य)* १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. (In times of distress) even the food of a Śūdra, who lives under one's protection for the sake of spiritual merit, (may be eaten). 15

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

(शूद्रस्य) तस्यापि धर्मोपनतस्य *(= धर्मार्थम् आश्रितस्य)* ॥ १४॥

टिप्पनी⑥

तस्याऽपि शूद्रस्याऽन्नं भोज्यम् , यद्यसो धर्मार्थमुपनतः आश्रितो भवति । धर्मग्रहणादर्थार्थमुपनतस्याऽभोज्यम् । आपत्कल्पश्चाऽयम् ॥ १४ ॥

15 सुवर्णन् दत्वा पशुं

सुवर्णं दत्वा पशुं वा भुञ्जीत नात्यन्तमन्ववस्येद्वृत्तिं प्राप्य विरमेत् १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. He may eat it, after having touched it (once) with gold or with fire. He shall not be too eager after (such a way of living). He shall leave it when he obtains a (lawful) livelihood. 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सुवर्णं दत्वा पशुं वा भुञ्जीत नाऽत्यन्तमन्ववस्येद्वृत्तिं प्राप्य विरमेत् ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

गतम् ॥ १५ ॥

16 सङ्घान्नमभोज्यम्

सङ्घान्नमभोज्यम् १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. Food received from a multitude of givers must not be eaten, 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सङ्घान्नमभोज्यम् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

सङ्घो गणः तस्य यत् स्वमन्नं न त्वेकस्य । तदभोज्यं यद्यपि ते सर्वे दद्युः ॥ १६ ॥

17 परिक्रुष्टञ् च

परिक्रुष्टं *(=सर्वान् भोजनार्थम् आह्वान्ति ये)* च १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. Nor food offered by a general invitation (to all comers). 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

परिक्रुष्टं *(=सर्वान् भोजनार्थम् आह्वान्ति ये)* च ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

'भोक्तुकामा आगच्छत' इत्येवं परिक्रुश्य सर्वत आहूय यद्दीयते तत्परिक्रुष्टं तदभोज्यम् ॥ १७ ॥

18 सर्वेषाञ् च शिल्पाजीवानाम्

सर्वेषां च शिल्पाजीवानाम् १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. Food offered by an artisan must not be eaten, 19

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वेषां च शिल्पाजीवानाम् ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

चित्रनिर्माणादिकं शिल्प ये आजीवन्ति20 तेषां सर्वेषामपि ब्राह्मणादीनामन्नमभोज्यम् ॥ १८ ॥

19 ये च शस्त्रमाजीवन्ति

ये च शस्त्रमाजीवन्ति १९

▼

⑤

>

▼ Bühler

19. Nor (that of men) who live by the use of arms (with the exception of Kṣatriyas), 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ये च शस्त्रमाजीवन्ति ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

ये च शस्त्रेण जीवन्ति तेषामप्यन्नमभोज्यम् । क्षत्रियवर्जम,22तस्य विहितत्वात् ॥ १९ ॥

20 ये चाधिम्

ये चाधिम् *(भाटकग्राहकाः)* २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. Nor (that of men) who live by letting lodgings or land.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ये चाऽऽधिम् ॥२०॥

टिप्पनी⑥

आजीवन्तीत्यपेक्षते । स्वगृहे परान् वासयित्वा तेभ्यो भृतिग्रहणमाधिः, यः स्तोम इति प्रसिद्धः ॥
परभूमौ कुटिं कृत्वा स्तोमं दत्वा वसेत्तु यः'। इति ।
तं चाऽऽधिं ये आजीवन्ति तेषामप्यन्नमभोज्यम् । ये तु प्रसिद्धमाधिमाजीवन्ति तेषां
वार्धुषिकत्वादेव23 सिद्धो निषेधः ॥ २० ॥

21 भिषक्

भिषक् २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. A (professional) physician is a person whose food must not be eaten, 24

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भिषक् ॥ २१॥

टिप्पनी⑥

अभोज्यान्न इति प्रकरणाद्गम्यते । भिषक् भैषज्यवृतिः। धर्मार्थं तु ये सर्पदष्टादींश्चिकित्सन्ति ते भोज्यान्ना एव ॥ २१ ॥

22 वार्धुषिकः

वार्धुषिकः *(वृद्ध्युपजीविनः)* २२

▼

⑤

>

▼ Bühler

22. (Also) a usurer, 25

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वार्धुषिकः ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

वृद्ध्याजवी । सोऽप्यभोज्यानः ॥ २२ ॥

23 दीक्षितोऽक्रीतराजकः

दीक्षितोऽक्रीतराजकः २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. (Also) a Brāhmaṇa who has performed the Dīkṣaṇīyeṣṭi (or initiatory ceremony of the Soma-sacrifice) before he has bought the king (Soma). 26

▼ हरदत्त-टीका

मन्त्र⑥

दीक्षितोऽक्रीतराजकः ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

दीक्षितो 27 दीक्षणीयेष्टया संस्कृतः सोऽपि यावत् क्रीतराजको न भवति सोमक्रयं न करोति तावदभोज्यान्नः ॥ २३ ॥

24 अग्नीषोमीयसंस्थायामेव

अग्नीषोमीयसंस्थायामेव २४

▼

⑤

>

▼ Bühler

24. (The food given by a person who has performed the Dīkṣaṇīyeṣṭi may be eaten), when the victim sacred to Agni and Soma has been slain.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अग्नीषोमीय संस्थायामेव ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

भोक्तव्यमिति वक्ष्यमाणमपेक्षते । अग्नीषोमीये पशौ संस्थिते समाप्त एव भोक्तव्यम् । न प्रागिति ॥ २४ ॥

25 हुतायां वा वपायान्

हुतायां वा वपायां दीक्षितस्य भोक्तव्यम् २५

▼

⑤

>

▼ Bühler

25. Or after that the omentum of the victim (sacred to Agni and Soma) has been offered. 28

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

हुतायां वपायां दीक्षितस्य भोक्तव्यम् ॥ २५ ॥

प्रस्तावः⑥

पक्षान्तरमाह—

टिप्पनी⑥

अग्नीषोमीयस्य वपायां हुतायां वा दीक्षितस्यान्नं भोक्तव्यम् । तथा च बह्वृचब्राह्मणम्-'अशितव्यं वपायां हुतायाम्' इति ॥ २५ ॥

26 यज्ञार्थे वा निर्दिष्टे

यज्ञार्थे वा निर्दिष्टे शेषाद्भुञ्जीरन् इति हि ब्राह्मणम् २६

▼

⑤

>

▼ Bühler

26. For a Brāhmaṇa declares, 'Or they may eat of the remainder of the animal, after having set apart a portion for the offering.'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

29यज्ञार्थं वा निर्दिष्टे शेषाद्भुञ्जीरन्निति हि ब्राह्मणम् ॥ १६ ॥

प्रस्तावः⑥

पक्षान्तरमाह —

टिप्पनी⑥

इदं यज्ञार्थमिति व्यादेशे कृते शेषाद्भुञ्जीरन्निति ब्राह्मणं भवति । ब्राह्मणग्रहणं प्रीत्युपलब्धितः प्रवृत्तेरपस्मृतिता मा भूदिति प्रत्यक्षमेवाऽत्र ब्राह्मणमिति ॥ २६ ॥

27 क्लीबः

क्लीबः २७

▼

⑤

>
▼ Bühler

27. A eunuch (is a person whose food must not be eaten), 30

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

क्लीबः ॥ २७ ॥

टिप्पनी⑥

पण्डकः । सोऽप्यभोज्यान्नः ॥२७॥

28 राज्ञाम् प्रैषकरः

राज्ञां प्रैषकरः २८

▼

⑤

>
▼ Bühler

28. (Likewise) the (professional) messenger employed by a king (or others), 31

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

राज्ञां प्रैषकरः ॥२८॥

टिप्पनी⑥

राज्ञामिति बहुवचनात् ग्रामादेर्यः प्रैषकरः तस्याऽपि प्रतिषेधः ॥ २८ ॥

29 अहविर्याजी

अहविर्याजी २९

▼

⑤

>
▼ Bühler

29. (Likewise a Brāhmaṇa) who offers substances that are not fit for a sacrifice, 32

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अहविर्याजी ॥ २९ ॥

टिप्पनी⑥

यश्चाऽहविषा नररुधिरादिना यजतेऽभिचारादौ यथा 'यमभिचरेत्तस्य लोहितमवदानं कृत्वे'ति सोऽप्यभाज्यान्नः ॥ २९ ॥

30 चारी

चारी ३०

▼

⑤

>
▼ Bühler

30. (Likewise) a spy, 33

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

चारी ॥ ३०॥

टिप्पनी⑥

चारो गूढचरः स्पशः । सोऽप्यभोज्यानः ॥ ३० ॥

31 अविधिना च प्रव्रजितः

अविधिना च प्रव्रजितः ३१

▼

⑤

>
▼ Bühler

31. (Also) a person who has become an ascetic without (being authorized thereto by) the rules (of the law), 34

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अविधिना च प्रव्रजितः ॥ ३१ ॥

टिप्पनी⑥

यश्चाऽविधिना प्रव्रजितः शाक्यादिस्सोऽप्यभोज्यान्नः ॥ ३१ ॥

32 यश्चाग्नीनपास्यति

यश्चाग्नीनपास्यति ३२

▼

⑤

>
▼ Bühler

32. (Also) he who forsakes the sacred fires without performing the sacrifice necessary on that occasion), 35

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यश्चाऽग्नीनपास्यति ॥ ३२ ॥

टिप्पनी⑥

36(योऽनापद्यग्निं त्यक्त्वा प्रायश्चित्तं न करोति सोऽप्यभोज्यान्नः । अपि च) अविधिनेत्येव । यश्चाऽविधिना उत्सर्गेष्टया विनाऽनग्नीनपास्यति सोऽप्यभोज्यान्नः ॥ ३२ ॥

33 यश्च सर्वान्वर्जयते, सर्वान्नी

यश्च सर्वान्वर्जयते, सर्वान्नी च श्रोत्रियो *(ऽपि)*, निराकृतिर् *(=अस्वाध्यायः)* वृषलीपतिः ३३

▼

⑤

>
▼ Bühler

33. Likewise a learned Brāhmaṇa who avoids everybody, or eats the food of anybody, or neglects the (daily) recitation of the Veda, (and) he whose (only living) wife is of the Śūdra caste. 37

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यश्च सर्वान्वर्जयते, सर्वान्नी च श्रोत्रियो *(ऽपि)*, निराकृतिर् *(=अस्वाध्यायः)* वृषलीपतिः ॥ ३३ ॥

टिप्पनी⑥

यश्च सर्वान् वर्जयते भोजने न क्वचिद्भुङ्क्ते न कश्चिद्भोजयति स सर्ववर्जी। यश्च सर्वान्नी सर्वेषामन्नं भुङ्क्ते तावुभावप्यभोज्यान्नौ । श्रोत्रिय इत्युभयोश्शेषः । श्रोत्रियोऽपि सन्नभोज्यान्न एवेति । निराकृतिः निःस्वाध्यायः । निर्व्रत इत्यन्ये । सोऽप्यभोज्यान्न । बृषलीपतिः क्रमविवाहे यस्य वृषली पत्नी जीवति इतरा मृताः स वृषलीपतिः । स श्रोत्रियोऽप्यभोज्यान्न इति ॥ ३३ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तावष्टादशी कण्डिका ॥ १८ ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
4. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
5. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
6. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
7. Manu II, 35.↩
8. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
9. आप० ध० १.३०.८.↩
10. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
11. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially

ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

12. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

13. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

14. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

15. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

16. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

17. Manu II, 144.↩

18. Manu II, 146-148.↩

19. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

20. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

21. Manu II, 147.↩

22. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

23. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

24. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

25. Manu II, 37.↩

26. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

27. आप० ध० १.३०.८.↩

28. The meaning of the Sūtra is, that the initiation shall be performed as soon as the child is able to begin the study of the Veda. If it is so far developed at eight years, the ceremony must then be performed; and if it be then neglected, or, if it be neglected at any time when the capacity for learning exists, expiation prescribed in the following Sūtras must be performed. The age of sixteen in the case of Brāhmaṇas is the latest term up to which the ceremony may be deferred, in case of incapacity for study only. After the lapse of the sixteenth year, the expiation becomes also necessary. Manu II, 38; Yājñ. I, 37.↩

29. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

30. The meaning is, he shall keep all the restrictions imposed upon a student, as chastity, &c, but that he shall not perform the fire-worship or service to a teacher, nor study. Manu II, 39; XI. 192, Yājñ. I, 38; Weber, Ind. Stud. X, 101.↩

31. 'If he is strong, he shall bathe three times a day--morning, midday, and evening.'--Haradatta.↩

32. Brahman, apparently, here means 'Veda,' and those who neglect its study may be called metaphorically 'slayers of the Veda.'↩

33. Manu II, 40; Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 8, 9; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

34. Compare above, I, 1, 1, 28.↩

35. 'Because in this Sūtra the expression "food not given at a Śrāddha" occurs, some think that the preceding Sūtra refers to "food eaten at a Śrāddha."'--Haradatta. This explanation is not at all improbable.↩

36. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

37. Yājñ. I, 172.↩

१९①

02 मत्त उन्मत्तो बद्धो④

मत्त उन्मत्तो बद्धो ऽणिकः*(=पुत्राच् छ्रुतग्राही)* प्रत्युपविष्टो*(?)* यश्च प्रत्युपवेशयते तावन्तं कालम् १ ...

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. A drunkard, a madman, a prisoner, he who learns the Veda from his son, a creditor who sits with his debtor (hindering the fulfilment of his duties), a debtor who thus sits (with his creditor, are persons whose food must not be eaten) as long as they are thus engaged or in that state. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मत्त उन्मत्तो बद्धोऽणिकः प्रत्युपविष्टो यश्च प्रत्युपवेशयते तावन्तं कालम् ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

मदकरद्रव्यसेवया 2विकृतिं गतो मत्तः । उन्मत्तो मान्तः । बद्धो निगलितः। अणिकः पुत्रात् श्रुतग्राही, पुत्राचार्य इति शास्त्रेषु निन्दितः। प्रत्युपविष्टः ऋणादिना कारणेनाऽधमर्णादिकं निरुध्य

तत्पार्श्वं उपविष्टः । प्रत्युपेवशयिता त्वितरः, तस्य परिहारमकुर्वंस्तेन सह कामं सुचिरमास्यतामित्यासीनः । ता एते मत्तादयस्तावन्तं कालमभोज्यान्नाः, यावन्मदाद्यनुवृत्तिः । अपर आह- अणिकः ऋणस्य दाता प्रत्युपवेष्टुरिदं विशेषणमिति ॥ १॥
02 क आश्यान्नः

क अश्यान्नः २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. Who (then) are those whose food may be eaten? 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

क आश्यान्नः ॥ २॥

टिप्पनी⑥

यद्येते अभाज्यान्नोः कस्तहि आश्यान्नः ? कस्य तर्ह्यन्नमशनीयमिति । यद्यप्येते अभोज्यान्ना इत्युक्ते परिशिष्टा भोज्यान्ना इति गम्यते । तथाप्यनेकमतोपन्यासार्थं प्रश्नपूर्वक आरम्भः ॥ २ ॥

03 य ईप्सेद् इति

य ईप्सेद्*(=प्रार्थ्यते [भोक्तव्यमिति, तस्यान्नं])* इति कण्वः ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Kaṇva declares, that it is he who wishes to give.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

य ईप्सेदिति कण्वः ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

य एव प्रार्थयते स एवाऽऽश्यान्न इति कण्वऋषिर्मन्यते 4प्रतिषिद्धवर्जम् ॥ ३ ॥

04 पुण्य इति कौत्सः

पुण्य *(अन्न)* इति कौत्सः ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. Kautsa declares, that it is he who is holy. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पुण्य इति कौत्सः ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

सर्ववर्णानां स्वधर्मे वर्तमानाना'(१८.१३.)मित्युक्तत्वात् भोज्यान्नास्सर्वे पुण्या एव । इह पुनः पुण्यग्रहणमतिशयार्थम् । तपोहोमजप्यैः क्ष्वधर्मेण च युक्तः पुण्यः । स स्वयमप्रार्थयमानोऽपि भोज्यान्न इति कौत्सस्य पक्षः ॥ ४ ॥

06 यः कश्चिद् दद्यादिति

यः कश्चिद् दद्यादिति वार्ष्यायणिः *(आपस्तम्बेनायम् पक्षो निराकरिष्यते ऽग्रे)*[५]

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. Vārshyāyaṇi declares, that it is every giver (of food).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यः कश्चिद्दद्यादिति वार्ष्यायणिः ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

यः कश्चित्पुण्योऽपुण्यो वा सततं दानशीलः । स भोज्यान्न इति वार्ष्यायणिराह।
तथा च मनुः—
6श्रद्धापूतं वदान्यस्य हतमश्रद्धयेतरत् ।' इति ॥ ५ ॥

06 यदि हि रजः

यदि ह रजः *(=पापम्)* स्थावरं - पुरुषे भोक्तव्यम्, अथ चेच् चलं - दानेन निर्दोषो भवति ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. For if guilt remains fixed on the man (who committed a crime, then food given by a sinner) may be eaten (because the guilt cannot leave the sinner). But if guilt can leave (the sinner at any time, then food given by the sinner may be eaten because) he becomes pure by the gift (which he makes).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यदि हि रजः स्थावरं पुरुषे भोक्तव्यमथ चेच्चलं दानेन निर्दोषो भवति ॥ ६॥

प्रस्तावः⑥

अत्रोपपत्तिः —

टिप्पनी⑥

रजः पापम् । तद्यदि पुरुषे कर्तरि स्थावरं स्थिरं नोपभोगमन्तरेण क्षीयते तदा ततः प्रतिग्रहेऽपि भोक्तरि संक्रमाभावात् भोक्तव्यम् । अथ चेच्चलमुपभोगमन्तरेणाऽपि क्षीयते तदा सततदानशीले न मुहूर्तमपि पापमवतिष्ठत इति कुतो भोक्तुर्दोष इति ॥ ६॥

07 शुद्धा भिक्षा भोक्तव्या

शुद्धा भिक्षा भोक्तव्या *(इति)* एककुणिकौ काण्वकुत्सौ तथा पुष्करसादिः ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. Offered food, which is pure, may be eaten, according to Eka, Kuṇika, Kāṇva, Kutsa, and Pushkarasādi.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शुद्धा भिक्षा भोक्तव्यैककुणिकौ काण्वकुत्सौ तथा पुष्करसादिः ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

धार्मिकेणोद्यता आहृता भिक्षा शुद्धा । सा भोज्येत्येकादीनां पञ्चानां पक्षः । पुष्करसादिः7 पौष्करसादिः । आदिवृद्ध्यभावश्छान्दसः ॥७॥

08 सर्वतोपेतं वार्ष्यायणीयम् ८

सर्वतोपेतं *(=अप्रार्थ्य लब्धम् भोज्यमिति)* वार्ष्यायणीयम् *(मतम् - आपस्तम्बो निराकरिष्यत्यग्रे)*८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. Vārshyāyaṇi's opinion is, that (food) given unasked (may be accepted) from anybody.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वतोपेतं वार्ष्यायणीयम् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

सर्वत उपेतं सर्वतोपेतम् । छान्दसो गुणः । उपेतमयाचितोषपन्नम् । तत्सर्वतोऽपि भोज्यमिति वार्ष्यायणीयं मतम् ॥ ८॥

09 पुण्यस्येप्सतो

पुण्यस्येप्सतो *(ऽन्नस्य)* भोक्तव्यम् *(इत्यापस्तम्बनिश्चयः)* ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. (Food offered) willingly by a holy man may be eaten.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पुण्यस्येप्सतो भोक्तव्यम् ॥ ९ ॥

प्रस्तावः⑥

इदानीं स्वमतमाह—

टिप्पनी⑥

कण्वकुत्सयोः पक्षौ समुच्चितावाचार्यस्य पक्षः8 ॥९॥

10 पुण्यस्याप्य् अनीप्सतो न

पुण्यस्याप्य् *(दातुम्)* अनीप्सतो न भोक्तव्यम् १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. Food given unwillingly by a holy man ought not to be eaten. 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पुण्यस्याऽप्यनीप्सतो न भोक्तव्यम् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

यः प्रार्थितोऽपि नेत्यसकदुक्त्वा कथंचिदापादितेप्स10 सोऽनीप्सन्नित्युच्यते, तस्य पुण्यस्याऽप्यभोज्यमिति । अपर आह-अनीप्सत इति कर्तरि षष्ठी । पुण्यस्याप्यन्नं न भोज्यं, यदि भिक्षमाणः पूर्ववैरादिना स्वयमीप्सन्न भवतीति ॥१०॥

11 यतः कुतश्चाभ्युद्यतम् भोक्तव्यम्

यतः कुतश्चाभ्युद्यतं भोक्तव्यम् ११

▼

⑤

>

▼ Bühler

11. Food offered unasked by any person whatsoever may be eaten,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यतः कुतश्चाऽभ्युद्यतं भोक्तव्यम् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

'सर्वतोपेत'(१९८.)मित्युक्तमेव पुनरुच्यते विशेषविवक्षया ॥११॥

12 नाननियोगपूर्वमिति हारीतः

नाननियोगपूर्वमिति हारीतः १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. 'But not if it be given after an express previous announcement;' thus says Hārita.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽननियोगपूर्वमिति हारीतः ॥ १२ ॥

प्रस्तावः⑥

तमाह—

टिप्पनी⑥

'अद्य तुभ्यामिदमाहरिष्यामि तदत्रभवता ग्राह्य'मिति निवेदनं नियोगः । तदभावः अनियोगः । पुनर्नञ्समासः । द्वौ नञौ प्रकृतमर्थं गमयतः । अननियोगो नियोगः तत्पूर्वं चेदभ्युद्यतं न भोज्यमिति ॥ १२ ॥

13 अथ पुराणे श्लोकावुदाहरन्ति

अथ पुराणे श्लोकावुदाहरन्ति । उद्यतामाहृतां भिक्षां पुरस्तादप्रवेदिताम् । भोज्यां मेने प्रजापतिरपि दुष्कृतकारिणः । न तस्य पितरोऽश्नन्ति दश वर्षाणि पञ्च च । न च हव्यं वहत्यग्निर्यस्तामभ्यधिमन्यत इति १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. Now they quote also in a Purāṇa the following two verses: 11

'The Lord of creatures has declared, that food offered unasked and brought by the giver himself, may be eaten, though (the giver be) a sinner, provided the gift has not been announced beforehand. The Manes of the ancestors of that man who spurns such food, do not eat (his oblations) for fifteen years, nor does the fire carry his offerings (to the gods).'

▼ हरदत्त-टीका

प्रस्तावः⑥

अथ पुराणे श्लोकावुदाहरन्ति—

सूत्रम्⑥

12उद्यतामाहृतां भिक्षा पुरस्तादप्रवेदिताम् ।
भोज्यां मेने प्रजापतिरपि दुष्कृतकारिणः ॥
न तस्य पितरोऽश्नन्ति दश वर्षाणि पञ्च च ।
न च हव्यं वहत्यग्निर्यस्तामभ्यधिमन्यते ॥ इति ॥ १३ ॥

नाद्यतनभविष्यत्पुराणीयमिदं वचनम् । Cf मनु ४. २५१, २५२.

अथ अपि च पुराणे—
13सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशमन्वन्तराणि च ।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥'
इत्येवलक्षणे भविष्यदादौ । उद्यतां हस्ताभ्यामुद्यम्य धारिताम् । आहृतां स्वयमानीताम् । पूर्वमनिवेदितां भिक्षाम् । दुष्कृतकारिणोऽपि सकाशात् भोज्या मेने प्रजापतिर्मनुः, मनुः प्रजापतिरस्मीति14दर्शनात् । यस्तु तामभ्यधिमन्यते प्रत्याचष्टे तस्य पितरः कव्य नाश्नन्ति । कियन्तं कालम् ? दश वर्षाणि पञ्च च । अग्निश्च हव्यं न वहति । तावन्तमेव कालमिति प्रत्याख्यातुर्निन्दार्थवादः ॥ १३ ॥

मनु प्रजापतिर्यस्मिन्निति दक्षे दर्शनात्, इति क. पु. प्रजापतिर्यस्मिन्निति मानवे दर्शनात्' इति ख. पु.

14 चिकित्सकस्य मृगयोः शल्यकृन्तस्य

चिकित्सकस्य मृगयोः शल्यकृन्तस्य पाशिनः । कुलटायाः षण्ढकस्य च तेषामन्नमनाद्यम् १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. (Another verse from a Purāṇa declares): 'The food given by a physician, a hunter, a surgeon, a fowler, an unfaithful wife, or a eunuch must not be eaten.' 15

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

16चिकित्सकस्य मृगयोश्शल्यकृन्तस्य पाशिनः ।
कुलटायाष्षण्डकस्य च तेषामन्नमनायम् ॥१४॥

टिप्पनी⑥

चिकित्सको भिषक् । मृगयुर्मृगघाती लुब्धकः । शल्यकृन्तः शस्त्रेण ग्रन्थ्यादीनां छेत्ता अम्बष्ठः । पाशी पाशवान् पाशजालेन मृगादीनां ग्राहकः। कुलात्कुलमटतीति कुलटा व्यभिचारिणी। षण्डकः तृतीयाप्रकृतिः। एतेषां चिकित्सकादीनामन्नमनाद्यम् । चिकित्सकषण्डकयोः पुनर्वचनमुद्यतस्याऽपि प्रतिषेधार्थम् । 17 पूर्वत्र तर्हि ग्रहणं शक्यमकर्तुम् । एवं तर्हि सूत्रकारस्य स प्रतिषेधः । अयं तु पुराणश्लोके प्रतिषेध इत्यपौनरुक्त्यम् ॥ १४ ॥

15 अथाप्युदाहरन्ति अन्नादे भ्रूणहा

अथाप्युदाहरन्ति । अन्नादे भ्रूणहा मार्ष्टि अनेना अभिशंसति । स्तेनः प्रमुक्तो राजनि याचन्ननृतसङ्कर इति १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. Now (in confirmation of this) they quote (the following verse): 'The murderer of a Brāhmaṇa learned in the Veda heaps his guilt on his guest, an innocent man on his calumniator, a thief set at liberty on the king, and the petitioner on him who makes false promises.' 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्नादे भ्रूणहा मार्ष्टि अनेना अभिशंसति ।
स्तेनः प्रमुक्तो राजनि याचन्ननृतसङ्करे ॥ इति ॥१५॥

प्रस्तावः⑥

अथाऽप्युदाहरन्ति—

टिप्पनी⑥

षडङ्गस्य वेदस्याऽध्येता भ्रूणः । तं यो हतवान् स भ्रूणहा । सोऽन्नादे मार्ष्टि लिम्पति । किम् ? प्रकरणादेन इति गम्यते । भ्रूणघ्नो योऽन्नमत्ति तस्मिंस्तदेन' संक्रामति ।
तस्मात्तस्योद्यतमप्यभोज्यमिति प्रकरणसङ्गतः पादः । इतरत् पुराणश्लोके पठ्यमाने पठितम् ।
अनेनसं योऽभिशंसति मिथ्यैव ब्रूते- इदं त्वया कृतमिति । स तस्मिन्नभिशंसति तदेनो मार्ष्टि।
मनुस्तु—
19पतितं पतितेत्युक्त्वा चोरं चोरेति वा पुनः।
वचनात्तुल्यदोषस्स्यान्मिथ्या द्विर्दोषभाग्भवेत् ॥
इति द्वैगुण्यमाह । तदभ्यासे द्रष्टव्यम् । स्तेनः प्रकीर्णकेश' (२५४.) इति वक्ष्यति । स एव तृतीयस्य पादस्याऽर्थः । कर्तृभेदादपौनरुक्त्यम् । सङ्करः प्रतिज्ञा प्रतिश्रवः । सत्यसङ्गर इति यथा । यः प्रतिश्रुत्य न ददाति सोऽनृतसङ्कर इति । ककारस्तु छान्दसः । तस्मिन् याचकः स्वयमेनो मार्ष्टि। तस्मात्प्रतिश्रुतं देयमिति ॥ १५ ॥

॥ इत्यापस्तम्बसूत्रवृत्तावेकोनविंशी कण्डिका ॥ १९ ॥

इति चापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तमिश्रविरचितायामुज्ज्वलायां प्रथमप्रश्ने षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

इति षष्ठः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.

↩

2. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

3. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

4. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

5. Manu II, 35.↩

6. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

7. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

8. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

9. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

10. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

11. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

12. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

13. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

14. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

15. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This

repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

16. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

17. आप० ध० १.३०.८.↩

18. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

19. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

০৬①

२०①

01 नेमं लौकिकमर्थम् पुरस्कृत्य④

नेमं लौकिकम्-अर्थं पुरस्कृत्य
धर्मांश् चरेत् १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. He shall not fulfil his sacred duties
   merely in order to acquire these worldly objects (as fame, gain, and honour).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नेमं लौकिकमर्थं पुरस्कृत्य धमांश्चरेत् ॥१॥

टिप्पनी⑥

इमं लौकिकं लोके विदितं ख्यातिलाभपूजात्मकम् , अर्थं प्रयोजनम् । पुरस्कृत्य अभिसन्धाय । धर्मान्न चरेत् ॥ १॥

02 निष्फला ह्यभ्युदये भवन्ति

निष्फला ह्य् अभ्युदये भवन्ति २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. For when they ought to bring rewards, (duties thus fulfilled) become fruitless.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

निष्फला ह्यभ्युदये भवन्ति ॥ २ ॥

प्रस्तावः⑥

किं कारणम्?

टिप्पनी⑥

हि यस्मादेवं क्रियमाणा धर्मा अभ्युदये फलकाले निष्फला भवन्ति । 1लोकार्थं ह्यसौ धर्मं चरति, न कर्तव्यमिति श्रद्धया । न च श्रद्धया विना धर्मः फलं साधयति । 2 'यो वै श्रद्धामनारभ्येति श्रुतेः॥

लोकभक्त्या इति क. पु.

03 तद्यथाम्रे फलार्थे निर्मिते

तद् यथा ऽऽम्रे फलार्थे निर्मिते
छाया गन्ध इत्य् अनूत्पद्येते,
एवं धर्मं चर्यमाणम् अर्था अनूत्पद्यन्ते ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. (Worldly benefits) are produced as accessories (to the fulfilment of the law), just as in the case of a mango tree, which is planted in order to obtain fruit, shade and fragrance (are accessory advantages).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तद्यथाऽऽम्रे फलार्थे3निमित्ते छाया गन्ध इत्यनूत्पद्येते, एवं धर्मं चर्यमाणमर्था अनूत्पद्यन्ते ॥३॥

प्रस्तावः⑥

किमत्रेदानीं दृष्टं फलं त्याज्यमेव ? नेत्याह—

टिप्पनी⑥

तदिति वाक्योपन्यासे । फलार्थं ह्याम्रवृक्षो निर्मीयते आरोप्यते । तस्मिन् फलार्थे4निमित्ते छाया गन्धश्चाऽनूत्पद्येते। एवं धर्मं चर्यमाणमर्थाः ख्यात्यादयोऽनूत्पद्यन्ते अनुनिष्पद्यन्ते । तथैव स्वीकार्या-5। न चोद्देश्यतया। तथा चाह—
'यथेक्षुहेतोः सलिलं प्रसेचयंस्तृणानि वल्लीरपि च प्रसिञ्चति ।
तथा नरो धर्मपथेन वर्तयन् यशश्च कामांश्च वसूनि चाऽश्नुते ॥ इति ॥३॥

04 नो चेदनूत्पद्यन्ते न

नो चेद् अनूत्पद्यन्ते,
न धर्म-हानिर् भवति ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. But if (worldly advantages) are not produced, (then at least) the sacred duties have been fulfilled.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नो चेदनूत्पद्यन्ते न धर्महानिर्भवति ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

यद्यपि दैवादर्था नाऽनूत्पद्यन्ते तथापि धर्मस्तावद्भवति । स च स्वतन्त्रः पुरुषार्थः । किमन्यैरर्थैरिति ॥ ४ ॥

05 अनसूयुर्दुष्प्रलम्भः स्यात्कुहकशठनास्तिकबालवादेषु

अन्-असूयुर्, दुष्-प्रलम्भः स्यात्
कुहक-शठ-नास्तिक-बाल-वादेषु ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. Let him not become irritated at, nor be deceived by the speeches of hypocrites, of rogues, of infidels, and of fools.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनसूयुर्दुष्प्रलम्भः स्यात्कुहकशठनास्तिकबालवादेषु ॥५॥

टिप्पनी⑥

कुहकः प्रकाशे शुचिर्
एकान्ते यथेष्टचारी ।
शठः वक्रचित्तः ।
नास्तिकः 6प्रेत्यभावापवादी ।
बालः श्रुतरहितः।

एतेषां वादेषु **अनसूयुः** स्यात् ।
असूयया द्वेषो लक्ष्यते ।
द्वेष्टा न स्यात् ।
तान् विषयीकृत्य
द्वेषम् अपि न कुर्यात् ।

तथा **दुष्प्रलम्भश्च** स्यात् ।
प्रलम्भनं विलवादनं मिथ्या-फलाख्यानम् । 7
गृधिवञ्च्योः प्रलम्भन इति दर्शनात् । **दुष्प्रलम्भो** विसंवादयितुं
मिथ्याफलाख्यानेन प्रवर्तयितुम् अशक्यः । कुहकादिवादेषु वञ्चितो न स्यात् । तदशो न स्यादित्यर्थः ॥ ५॥

06 न धर्माधर्मौ चरत

न धर्माधर्मौ चरत
"आवं स्व" इति ।
न देव-गन्धर्वा, न पितर *(पुर आगत्य)* इत्य् आचक्षते
"ऽयं धर्मो ऽयम् अधर्म" इति ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. For Virtue and Sin do not go about and say, 'Here we are;' nor do gods, Gandharvas, or Manes say (to men), 'This is virtue, that is sin.'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न धर्माधर्मौ चरत'आवं स्व' इति, न देवगन्धर्वा न पितर इत्याचक्षते'ऽयं धर्मोऽयमधर्म, इति ॥ ६ ॥

प्रस्तावः⑥

वञ्चनस्य सम्भवमाह—

टिप्पनी⑥

आवमिति छान्दसं रूपम् । भाषायां तु8 प्रथमायाश्च द्विवचने भाषाया'मित्यात्वं प्राप्नोति । यदि हि धर्माधर्मौ विग्रहवन्तौ गोव्याघ्रवच्चरेतामावां स्व इति वाणी, यदि वा देवादयः प्रकृष्टज्ञाना ब्रूयुरिमौ धर्माधर्माविति ततः कुहकादिवादेषु न स्याद्व्यञ्चना । तदभावात्तु वञ्चनासम्भव इति । इदं चात्र द्रष्टव्यम्-प्रत्यक्षादेर्न गोचरौ धर्माधर्मौ। किंतु नित्यनिर्दोषवेदगम्यौ । तदभावे तन्मूलधर्मशास्त्रगम्याविति ॥ ६ ॥

07 यत्त्वार्याः क्रियमाणम् प्रशंसन्ति

यत् त्व् आर्याः
क्रियमाणं प्रशंसन्ति
स धर्मो,
यद् गर्हन्ते
सोऽधर्मः ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. But that is virtue, the practice of which wise men of the three twice-born castes praise; what they blame, is sin. 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यं त्वार्याः क्रियमाणं प्रशंसन्ति स धर्मो, यं गर्हन्ते सोऽधर्मः ॥७॥

प्रस्तावः⑥

यत्र तु प्रायश्चित्तादौ विषयव्यवस्था दुष्करा तत्र निर्णयमाह—

टिप्पनी⑥

आर्याः शिष्टास्त्रैवर्णिकाः । बहुवचनाच्चत्वारस्त्रयो वा । यथाऽऽह याज्ञवल्क्यः—

10 चत्वारो वेदधर्मज्ञाः पर्षत्त्रैविद्यमेव वा ।
सा ब्रूते यं स धर्मस्स्यादेको वाऽध्यात्मवित्तमः ॥' इति ॥७॥

08 सर्व-जन-पदेष्व् एकान्त-समाहितम्

सर्व-जन-पदेष्व् एकान्त-समाहितम्
आर्याणाम् वृत्तं
सम्यग् विनीतानां वृद्धानाम्
आत्मवताम्, अलोलुपानाम्, अदाम्भिकानां वृत्त-सादृश्यं भजेत ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. He shall regulate his course of action according to the conduct which in all countries is unanimously approved by men of the three twice-born castes, who have been properly obedient (to their teachers), who are aged, of subdued senses, neither given to avarice, nor hypocrites. 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वजनपदेष्वेकान्तसमाहितमार्याणां वृत्तं सम्यग्विनीतानां
वृद्धानामात्मवत्तामलोलुपानामदाम्भिकानां वृत्तसादृश्यं भजेत ॥८॥

प्रस्तावः⑥

इदानीं श्रुतिस्मृत्योः प्रत्यक्षयोरदर्शने शिष्टाचारादप्यवगम्य धर्मः कार्य इत्याह—

टिप्पनी⑥

सम्यग्विनीताः । आचार्याधीनः स्या'(२.१९)दित्यादिना विनयनसम्पन्नाः । वृद्धाः परिणतवयसः। यौवने विषयवश्यताऽपि स्यादितीदमुक्तम् । आत्मवन्तो जितेन्द्रियाः। अलोलुपा अकृपणाः । अदाम्भिका अधर्मध्वजा, एकान्तप्रकाशयोरेकवृत्ताः । एवंभूतानामार्याणां सर्वजनपदेषु यदेकान्तेनाऽव्यभिचारेण समाहितमनुमतं वृत्तमनुष्ठानम् , न मातुलसुतापरिणयनवत्कतिपयविषयम्, तद्वृत्तसादृश्यं भजेत । तदनुरूपं चेष्टेत । न तेषामनुष्ठानं निर्मूलम् । सम्भवति च वैदिकानामुत्सन्नपाठब्राह्मणानुभव इति ॥ ८ ॥

09 एवम् उभौ लोकाव्

एवम् उभौ लोकाव् अभिजयति ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. Acting thus he will gain both worlds.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवमुभौ लोकावभिजयति ॥९॥

टिप्पनी⑥

एवं श्रुतिस्मृतिसदाचारमूलमनुष्ठानं कुर्वन् उभौ लोकावभिजयति इमं चाऽमुं च ॥ ९ ॥

10 अविहिता ब्राह्मणस्य वणिज्या

अविहिता ब्राह्मणस्य वणिज्या १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. Trade is not lawful for a Brāhmaṇa.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अविहिता ब्राह्मणस्य वणिज्या ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

क्रयविक्रयव्यवहारो वणिज्या । सा स्वयं कृता ब्राह्मणस्य वृत्तिर्न विहिता प्राप्तानुवादोऽ12यमपवादविधानार्थः ॥१०॥

11 आपदि व्यवहरेत पण्यानामपण्यानि

आपदि व्यवहरेत पण्यानाम्
अपण्यानि व्युदस्यन् *(=वर्जयन् [वक्ष्यमाणानि] ...)* ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. In times of distress he may trade in lawful merchandise, avoiding the following (kinds), that are forbidden: 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आपदि व्यवहरेत पण्यानामपण्यानि व्युदस्यन् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

ब्राह्मणवृत्तेरभाव आपत् । तस्यां सत्याम् । पण्यानाम् । 14व्यवहृपणो समर्थयो'रिति कर्मणि षष्ठी । व्यवहरेत । क्रयश्च विक्रयश्च व्यवहारः, पण्यानि क्रीणीयात् विक्रीणीत चेत्यर्थः । अपण्यानि वक्ष्यमाणानि व्युदस्यन् वर्जयन् । कृत्स्नाया वैश्यवृत्तेरुपलक्षणमिदम् । क्षत्रियवृत्तिश्च

15दण्डापूपिकया सिद्धा । तथा च गौतमः-16 तदलाभे क्षत्रियवृत्तिस्तदलाभे वैश्यवृत्ति'रिति ॥ ११॥

12 यान्रसान्रागान्गन्धानन्नञ् चर्म गवां

... मनुष्यान्,
रसान्, रागान्, गन्धान्,
अन्नं,
चर्म, गवां वशां*(=वन्ध्य-गाम्)*
श्लेष्म*(=glue)*+उदके,
तोक्म*(=अङ्कुराणि)*-किण्वे*(=सुरादि)*
पिप्पलि*(=रक्त-मरीच)*-मरीचे
धान्यं, मांसम्,
आयुधं, सुकृताशां च १२*(5)*

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. (Particularly) men, condiments and liquids, colours, perfumes, food, skins, heifers, substances 17 used for glueing (such as lac), water, young cornstalks, substances from which spirituous liquor may be extracted, red and black pepper, corn, flesh, arms, and the hope of rewards for meritorious deeds.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मनुष्यान् रसान् रागान् गन्धानन्नं चर्म गवां वशां श्लेमोदके तोक्मकिण्वे पिप्पलीमरीचे धान्यं मांसमायुधं सुकृताशां च ॥१२॥

प्रस्तावः⑥

अपण्यान्याह—

टिप्पनी⑥

मनुष्या दारदासादयः । रसा गुडलवणादयः, क्षीरादयो वा । रागाः कुसुम्भादयः रज्यन्तेऽनेनेति । रज्यन्त इति वा रागा वस्त्रादयः। गन्धाश्चन्दनादयः। **गवां** मध्ये **वशा** वन्ध्या गौः । श्लेष्म जतुवज्रादिः, येन विश्लिष्टं चर्मादि सन्धीयते। 'यथा18 श्लेष्मणा चर्मण्यं वाऽन्यद्वा विश्लिष्टं सश्लेषये'दिति बहवृचब्राह्मणे दर्शनात् । उदकं कुम्भजलम् । **तोक्मं** ईषदङ्कुरितानि व्रीह्यादीनि । **किण्वं** सुराप्रकृतिद्रव्यम् । सुकृत पुण्यं तस्य फलं सुकृताशा । शिष्टानि प्रसिद्धानि । 19

एतान्यपण्यानि वर्जयित्वा अन्येषां पण्यानां व्यवहरेत । मनुष्यादीन्वर्जयित्वेत्येव सिद्धे 'अपण्यानीति वचनमन्येषामप्यपण्यानां व्युदासार्थम् । तत्र मनुः—
20सर्वान् रसानपोहेत कृतान्नं च तिलैस्सह ।
अश्मनो लवणं चैव पशवो ये च मानुषाः ॥
सर्वं च तान्तवं रक्तं शाणझौमाविकानि च।
अपि चेत्स्युररक्तानि फलमूले तथौषधीः ॥
अपः शस्त्रं विषं मांसं सोम गन्धांश्च सर्वशः।
क्षीरं क्षौद्रं दधि घृतं तैलं मधुं गुडं कुशान् ॥ आरण्यांश्च पशून सर्वान् दंष्ट्रिणश्च वयांसि च ।
मद्यं नीलीं च लाक्षां च सर्वाश्चैकशफान पशुन् ।' इति ॥ १२ ॥

13 तिलतण्डुलांस्त्वेव धान्यस्य

तिल-तण्डुलांस् त्व् एव धान्यस्य
विशेषेण न विक्रीणीयात् १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. Among (the various kinds of) grain he shall especially not sell sesamum or rice (except he have grown them himself). 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तिलतण्डुलांस्त्वेवं धान्यस्य विशेषेण न विक्रीणीयात् ॥१३॥

टिप्पनी⑥

धान्यानां मध्ये तिलतण्डुलानेव विशेषतोऽतिशयेन न विक्रीणीयात् न विक्रीणीत । अन्येषां विकल्पः । स्वयमुत्पादितेषु नाऽयं प्रतिषेधः । मानवे हि श्रुतम् 22— 'काममुत्पाद्य कृष्यां तु स्वयमेव कृषीवलः। विक्रीणीत तिलाच्छुद्धान् धर्मार्थमचिरस्थितान् ॥ इति ॥१३॥

14 अविहितश्चैतेषाम् मिथो विनिमयः

अविहितश् चैतेषां मिथो विनिमयः १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. The exchange of the one of these (abovementioned goods) for the other is likewise unlawful.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अविहितश्चैतेषां मिथो विनिमयः ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

विनिमयः परिवर्तनम् । येषां विक्रयः प्रतिषिद्धः तेषां परस्परेण विनिमयोऽप्यविहितः प्रतिषिद्धः, न कर्तव्य इत्यर्थः ॥१४॥

15 अन्नेन चान्नस्य मनुष्याणाञ्

अन्नेन चान्नस्य,
मनुष्याणां च मनुष्यैः,
रसानां च रसैर्,
गन्धानां च गन्धैर्,
विद्यया च विद्यानाम् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. But food (may be exchanged) for food, and slaves for slaves, and condiments for condiments, and perfumes for perfumes, and learning for learning. 23

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनेन चाऽन्नस्य मनुष्याणां च मनुष्यैः रसानां च रसैर्गन्धानां च गन्धैर्विद्यया च विद्यानाम् ॥१५॥

प्रस्तावः⑥

तेष्वेव केषांचिद्विनिमयोऽनुज्ञायते—

टिप्पनी⑥

अन्नादीनां विद्यान्तानां विनिमयो भवत्येवेत्यर्थः । तथा च वसिष्ठः24-रसा रसैस्समतो हीनतो वा ... ..तिलतण्डुलपक्वान्नं विद्यामनुष्याश्च विहिताः परिवर्तनेन' इति । मानवे तु विशेषः—
25रसा रसैर्निर्मातव्या न त्वेव लवणं रसैः।
कृतान्नं चाऽकृतान्नेन तिला धान्येन तत्समाः ॥ इति ।

गौतमीये तु-26विनिमयस्तु । रसानां रसैः । पशूनां च । न लवणं कृतान्नयोः । तिलानां च । समेनाऽऽमेन तु पक्वस्य सम्प्रत्यर्थ' इति । तस्मादत्र प्रतिषेधानुवृत्तिर्न शङ्कनीया । पूर्वत्र चोक्तं 'ब्रह्मणि मिथो विनियोगे न गतिर्विद्यत' (१३.१७) इति । 27विनिमयाभ्यनुज्ञानादेव विद्यादीनां विक्रयोऽपि प्रतिषिद्धो वेदितव्यः ॥ १५ ॥

16 अक्रीतपण्यैर्व्यवहरेत

अ-क्रीतपण्यैर् व्यवहरेत १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. Let him traffic with lawful merchandise which he has not bought,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अक्रीतपण्यैर्व्यवहरेत ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

अक्रीतानि स्वयमुत्पादितानि अरण्यादाहृतानि वा यानि पण्यानि तैर्व्यवहरेत मुञ्जादिभिः ॥ १६ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ विंशतितमी कण्डिका ॥ २० ॥

---

1. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
2. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
3. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
4. आप० ध० १.३०.८.↩
5. मनु० रमृ० २.६↩
6. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
7. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
8. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
9. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.

   ↩
10. आप० ध० १.३०.८.↩

11. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
12. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
13. Manu II, 35.↩
14. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
15. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
16. आप० ध० १.३०.८.↩
17. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
18. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
19. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
20. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
21. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
22. आप० ध० १.३०.८.↩
23. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

24. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

25. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

26. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

27. आप० ध० १.३०.८.↩

२१①

01 मुञ्जबल्बजैर्मूलफलैः④

मुञ्जबल्बजैर्मूलफलैः १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. With Muñja-grass, Balbaja-grass (and articles made of them), roots, and fruits,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मुञ्जबल्बजैर्मूलफलैः ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

मुञ्जबल्वजास्तृणविशेषाः ॥ १ ॥

02 तृणकाष्ठैरविकृतैः

तृणकाष्ठैरविकृतैः २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. And with (other kinds of) grass and wood which have not been worked up (into objects of use). 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तृणकाष्ठैरविकृतैः ॥२॥

टिप्पनी⑥

तृणानां विकारो रज्ज्वादिभावः । काष्ठानां विकारः स्थूणादिभावः । तृणत्वादेव सिद्धे मुञ्जबल्वजग्रहणं विकारार्थम् ॥ २॥

03 नात्यन्तमन्ववस्येत्

नात्यन्तमन्ववस्येत् ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. He shall not be too eager (after such a livelihood).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽत्यन्तमन्ववस्येत् ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

प्रतिषिद्धानामपि विक्रयविनिमयाभ्यां जीवेत् । न पुनरत्यन्तमन्ववस्येत् अवसीदेत् । तथा च गौतमः2 'सर्वथा तु वृत्तिरशक्तावशौद्रेण । तदप्यके प्राणसंशय' इति । मनुरपि—
3 जीवितात्ययमापन्नो योऽन्नमत्ति यतस्ततः ।
आकाशमिव पङ्केन न स दोषेण लिप्यते ॥ इति ॥३॥

04 वृत्तिम् प्राप्य विरमेत्

वृत्तिं प्राप्य विरमेत् ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. If he obtains (another lawful) livelihood, he shall leave off (trading). 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वृत्तिं प्राप्य विरमेत् ॥ ४॥

टिप्पनी⑥

गतम् ॥४॥

05 न पतितैः संव्यवहारो

न पतितैः संव्यवहारो विद्यते ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. Intercourse with fallen men is not ordained, 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न पतितैस्संव्यवहारो विद्यते ॥५॥

टिप्पनी⑥

पतिताः स्तेनादयो वक्ष्यमाणास्तैः सह न कश्चिदपि व्यवहार कर्तव्यः। तत्र मनुः6—
संवत्सरेण पतति पतितेन सहाऽऽचरन् ।

याजनाध्यापनाद्यौनान्न तु यानासनाशनात् ॥ इति ।
यानादिभिस्संवत्सरेण पतति । याजनादिभिस्तु सद्य एव ॥ ५ ॥

06 तथापपात्रैः

तथापपात्रैः ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. Nor with Apapātras. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथाऽपपात्रैः ॥६॥

टिप्पनी⑥

अपपात्राश्चण्डालादयः । तैश्च संव्यवहारो न कर्तव्यः ॥ ६ ॥

07 अथ पतनीयानि

अथ पतनीयानि *(←द्विजातिकर्मभ्यो हानिः पतनम्)* ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. Now (follows the enumeration of) the actions which cause loss of caste (Patanīya).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ पतनीयानि ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

द्विजातिकर्मभ्यो हानिः पतनं, तस्य निमित्तानि कर्माणि वक्ष्यन्ते ॥७॥

08 स्तेयम्, आभिशस्त्यं ,

स्तेयम्, आभिशस्त्यं *(←ब्रह्महत्यादिभिर् वक्ष्यमाणैः)*,
पुरुष-वधो, ब्रह्मोज्झं*(=वेद-त्यागः)*,
गर्भ-शातनम्,
मातुः पितुर् इति योनि-संबन्धे सहापत्ये स्त्री-गमनं,
सुरा-पानम्, असंयोग-संयोगः ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. (These are) stealing (gold), crimes whereby one becomes an Abhiśasta, homicide, neglect of the Vedas, causing abortion, incestuous connection with relations born from the same womb as one's mother or father, and with the offspring of such persons, drinking spirituous liquor, and intercourse with persons the intercourse with whom is forbidden. 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्तेयमाभिशस्त्यं पुरुषवधो ब्रह्मोज्झं गर्भशातनं मातुः पितुरिति योनिसम्बन्धे सहापत्ये स्त्रीगमनं सुरापानमसंयोगसंयोगः ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

स्तेयं सुवर्णचौर्यम् । आभिशस्त्यं ब्रह्महत्या। 'ब्राह्मणमात्रं च हत्वाभिशस्त' (२४७.) इति वक्ष्यमाणत्वात् । पुरुषवधो मनुष्यजातिवधः । तेन स्त्रीवधोऽपि गृह्यते । ब्रह्मोज्झं उज्झ उत्सर्गे। भावे घञ्। छान्दसो लिङ्गव्यत्ययः । ब्रह्म वेदः तस्याऽधीतस्य नाशनं ब्रह्मोज्झम् । औषधादिप्रयोगेण गर्भस्य वधो गर्भशातनम् । मातुर्योनिसम्बन्धे मातृष्वस्रादौ । पितुर्योनिसम्बन्धे पितृष्वस्रादौ सहापत्ये अपत्येन सहिते स्त्रीगमनं मातृष्वसृगमनं तत्सुतागमनं मातुलसुतागमनं चेत्यर्थः ।
9 गौडी पैष्टी च माध्वी च विशेया त्रिविधा सुरा।
यथैवैका न पातव्या तथा सर्वा द्विजोत्तमैः ॥
इति मानवे निषिद्धायाः सुरायाः, पानं सुरापानम् । असंयोगाः, संयोगानर्हाः प्रतिलोमादयः । तैः संयोग एकगृहवासादिः असंयोगसंयोगः । एतानि पतनीयानि ॥८॥

09 गुर्वीसखिङ् गुरुसखिञ् च

गुर्वी-सखिं गुरु-सखिं च गत्वा
ऽन्यांश् च पर-तल्पान् ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. That man falls who has connection with a female friend of a female Guru, or with a female friend of a male Guru, or with any married woman. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गुर्वीसखिं गुरुसखिं च गत्वाऽन्यांश्च परतल्पान् ॥९॥

टिप्पनी⑥

सखीशब्दस्य छान्दसो ह्रस्वः । गुर्वीसखी मात्रादीनां सखी। गुरुसखी पित्रादिनां सखी तां गत्वा । किम् ? पततीत्युत्तरत्र श्रुतमपेक्ष्यते। अन्याश्च परतल्पान् गत्वा पतति । तल्पशब्देन शपयनवाचिना दारा लक्ष्यन्ते ॥९॥

10 नागुरुतल्पे पततीत्येके

नागुरुतल्पे पततीत्येके १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. Some (teachers declare), that he does not fall by having connection with any other married female except his teacher's wife. 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽगुरुतल्पे पततीत्येके ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

गुरुदारव्यतिरेकेण परतल्पगमने पातित्यं नास्तीत्येके मन्यन्ते । यद्यपि सामान्येन पतनीयानीत्युक्तम् , प्रायश्चित्ते तु गुरुलघुभावो द्रष्टव्यः ॥१०॥

11 अधर्माणान् तु सततम्

अधर्माणां तु सततम् आचारः ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. Constant commission of (other) sins (besides those enumerated above) also causes a man to lose his caste.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अधर्माणां तु सततमाचारः ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

तुश्चार्थे । उक्तव्यतिरिक्तानामप्यधर्माणां सततमाचारः पतनहेतुः ॥११॥

12 अथाशुचिकराणि

अथाशुचिकराणि १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. Now follows (the enumeration of) the acts which make men impure (Asucikara).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाऽशुचिकराणि ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

अशुचिं पुरुषं कुर्वन्तीत्यशुचिकराणि, तानि वक्ष्यन्ते ॥ १२ ॥

13 शूद्रगमनमार्यस्त्रीणाम्

शूद्र-गमनम् आर्य-स्त्रीणाम् १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. (These are) the cohabitation of Aryan women with Śūdras,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शूद्रगमनमार्यस्त्रीणाम् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

त्रैवर्णिकस्त्रीणां शूद्रगमनमशुचिकरम् ॥ १३ ॥

14 प्रतिषिद्धानाम् मांसभक्षणम्

प्रतिषिद्धानां मांस-भक्षणम् १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. Eating the flesh of forbidden (creatures),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रतिषिद्धानां मांसभक्षणम् ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

येषां मांसं प्रतिषिद्धं तेषां मांसस्य भक्षणमशुचिकरम् ॥ १४ ॥

15 शुनो मनुष्यस्य च

(यथा -) शुनो मनुष्यस्य च
कुक्कुट-सूकराणां ग्राम्याणां, क्रव्यादसाम् १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. As of a dog, a man, village cocks or pigs, carnivorous animals,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शुनो मनुष्यस्य च कुक्कुटसूकराणां ग्राम्याणां क्रव्यादसाम्॥ १५ ॥

प्रस्तावः⑥

तत्रोदाहरणम्—

टिप्पनी⑥

ग्राम्याणामिति वचनादारण्यानामप्रतिषेधः । अदनमदः, भावेऽसुन्प्रत्ययः । क्रव्यविषयमदनं येषां ते क्रव्यादसः केवलं मांसवृत्तयो गृध्रादयः ॥ १५ ॥

16 मनुष्याणाम् मूत्रपुरीषप्राशनम्

मनुष्याणां मूत्र-पुरीष-प्राशनम् १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. Eating the excrements of men,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मनुष्याणां मूत्रपुरीषप्राशनम् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

मूत्रपुरीषग्रहणं तादृशस्य रेतसोऽप्युपलक्षणम् ॥ १६ ॥

17 शूद्रोच्छिष्टमपपात्रागमनञ् चार्याणाम्

शूद्रोच्छिष्टम्,
*(प्रतिलोमाद्य्-)*अपपात्रा-गमनं चार्याणाम् १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. Eating what is left by a Śūdra, the cohabitation of Aryans with Apapātra women.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शद्रोच्छिष्टमपपात्रगमनं चाऽऽर्याणाम् ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

शूद्रोच्छिष्टं भुक्तमार्याणां त्रैवर्णिकानामशुचिकरम् । अपपात्राः प्रतिलोमस्त्रियः तासां च गमनम् ॥ १७॥

18 एतान्यपि पतनीयानीत्येके

एतान्यपि पतनीयानीत्य् एके १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. Some declare, that these acts also cause a man to lose his caste.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतान्यपि पतनीयानीत्येके ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

यान्येतान्यशुचिकरत्वेनाऽनुक्रान्तानि एतान्यपि पतनीयान्येवेत्येके मन्यन्ते ॥१८॥

19 अतोऽन्यानि दोषवन्त्यशुचिकराणि भवन्ति

अतोऽन्यानि दोषवन्त्य् अशुचिकराणि भवन्ति १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. Other acts besides those (enumerated) are causes of impurity.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अतोऽन्यानि दोषवन्त्यशुचिकराणि भवन्ति ॥१९॥

टिप्पनी⑥

उक्तव्यतिरिक्तानि दोषवन्ति कर्माणि दुष्प्रतिग्रहहिंसादीनि तान्यशुचिकराणि भवन्ति ॥ १९ ॥

20 दोषम् बुद्ध्वा न

दोषं बुद्ध्वा
न पूर्वः परेभ्यः पतितस्य समाख्याने स्याद्,
वर्जयेत् त्व् एनं धर्मेषु २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. He who learns (that a man has) committed a sin, shall not be the first to make it known to others; but he shall avoid the (sinner), when performing religious ceremonies. 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दोषं बुद्ध्वा न पूर्वः परेभ्यः पतितस्य समाख्याने स्याद्वर्जयेत्त्वेनं धर्मेषु ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

पतितस्य दोषं परैरविदितं बुद्ध्वा परस्य समाख्याने पूर्वो न स्यात् । परैरविदितं स्वयं विद्वानपि न परेभ्यः पूर्वमाचक्षीत । किं तु स्वयं धर्मकृत्येष्वेनं वर्जयेत् , यथा परे न जानन्ति । अन्यथा दोषवान् स्यात् ॥२०॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तावेकविंशी कण्डिका ॥ २१ ॥

इति चापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तमिश्रविरचितायामुज्ज्वलायां प्रथमप्रश्ने सप्तमः पटल; ॥ ७ ॥

इति सप्तमः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मनु० रमृ० २.६↩
3. गौ० ध० १. १, २↩
4. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
5. Manu II, 35.↩

6. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
7. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
8. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
9. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
10. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩
11. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must

not study the same branch of science under any other teacher.↩

12. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

oし①

२२①

01 अध्यात्मिकान्योगान्④

अध्यात्मिकान् योगान् अनुतिष्ठेन् न्याय-संहितान् अनैश्चारिकान् १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. He shall employ the means which tend to the acquisition of (the knowledge of) the Ātman, which are attended by the consequent (destruction of the passions, and) which prevent the wandering (of the mind from its object, and fix it on the contemplation of the Ātman). 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अध्यात्मिकान् योगाननुतिष्ठेन्न्यायसंहितानैश्चारिकान् ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

उक्तानि पतनीयान्यशुचिकराणि च कर्माणि । तेषां प्रायश्चित्तानि वक्ष्यन्नादित आत्मज्ञानं तदुपयोगिनश्च योगानधिकुरुते । तस्यापि सर्वपापहरत्वेन मुख्यप्रायश्चित्तत्वात् । श्रूयते हि— 2भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥ इति ।

3 'तद्यथेषीकातूलमग्नौ प्रोतं प्रदूयेतेवं हाऽस्य सर्वे पाप्मानः प्रदूयन्त' इति च । याज्ञवल्क्योऽप्याह —

4इज्याचारदमाहिंसादानस्वाध्यायकर्मणाम् ।
अयं तु परमो धर्मो यद्योगनाऽऽत्मदर्शनम् ॥ इति ॥

अध्यात्मनि भवानध्यात्मिकान् । छान्दसो वृद्ध्यभावः । आत्मनो लम्भयितॄन् । योगान् चित्तसमाधानहेतून् वक्ष्यमाणानक्रोधादीनुपायान् । अनुतिष्ठेत् सेवेत न्यायसंहितान् उपपत्तिसमन्वितान् , उपपद्यन्ते हि ते न्यायतः क्रोधादीनां दोषाणां निर्घाते । अनैश्चारिकान् निश्चारश्चित्तस्य बहिर्विक्षेपः, तस्मै ये प्रभवन्ति क्रोधादयो वक्ष्यमाणाःते नैश्चारिकाः तत्प्रतिपक्षभूतान् । अक्रोधादिषु सत्सु चित्तमनिश्चरणशीलमात्मालम्बनं निश्चलं तिष्ठति तस्मात्ताननुतिष्ठेत् । आत्मानं लब्धुमक्रोधादिलक्षणं चित्तसमाधानं कुर्यादिति ॥१॥
▼ शङ्कराचार्य-विवरणम्

सूत्रम्⑥

अध्यात्मिकान् योगाननुतिष्ठेन्न्यायसंहिताननैश्चारिकान् ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

श्रीमच्छङ्करभगवत्पादप्रणीतं विवरणम् ॥

अथ 'अध्यात्मिकान् योगान्'—इत्याद्यध्यात्मपटलस्य संक्षेपतो विवरणं प्रस्तूयते। किमिह प्रायश्चित्तप्रकरणे समाम्नानस्य प्रयोजनमिति । उच्यते— कर्मक्षयहेतुत्वसामान्यात्। अनिष्टकर्मक्षयहेतूनि हि प्रायश्चित्तानि भवन्ति । सर्वं च कर्म वर्णाश्रमविहितमनिष्टमेव विवेकिनः, देहग्रहणहेतुत्वात् । तत्क्षयकारणं चाऽऽत्मज्ञानम्, प्रवृत्तिहेतुदोषनिवर्तकत्वात् । दोषाणां च निर्घाते आत्मज्ञानवतः पण्डितस्य धर्माधर्मक्षये क्षेमप्राप्तिरिह विवक्षितेत्यात्मज्ञानार्थमध्यात्म(१)पटलमारभ्यते, कर्मक्षयहेतुत्वसामान्यात् ।

- १. अत्र पटलशब्दो नपुसकलिङ्गः प्रयुक्तः । 'समूहे पटलं न ना' (अमरको. ३. ३. २००) इत्यमरकोशात्तु समूहवाचिनः पटलशब्दस्यैव क्लीबत्वम् । 'तिलके च परिच्छेदे पटलः' इति शेषकोशात् परिच्छेदवाचकस्य पटलशब्दस्य तु पुंल्लिागतैवेत्यवगम्यते । अत एव च सर्वे ग्रन्थकाराः 'इति प्रथमः पटलः, इत्येव लिखन्ति । अतोऽत्रापि पुलिंङ्गेनैव भाव्यं यद्यपि पटलशब्देन तथापि भेदाविवक्षया प्रयोगः कृत इति भाति ॥

ननु वर्णाश्रमविहितानां कर्मणामफलहेतुन्वात् तत्क्षयो नेष्ट इति, न, "सर्ववर्णानां स्वधर्मानुष्ठाने परमपरिमितं सुखम्” (२. २. २.) इत्यादिश्रवणात् । अपरिमितवचनात् क्षेमप्राप्तिरेवेति चेन्न, 'तत्परिवृत्तौ कर्मफलशेषेण' (२.२.३.) इत्यादिश्रवणात् । गौतमश्च—
(२) वर्णाः आश्रमाश्च स्वकर्मनिष्ठाः प्रेत्य कर्मफलमनुभय" इत्यादि ना संसारगमनमेव दर्शयति कर्मणां फलम् । सर्वाश्रमाणां हि दोषनिर्घातलक्षणानि समयपदानि विधिनाऽनुतिष्ठन् सार्वगामी भवति, न तु स्वधर्मानुष्ठानात् । वक्ष्यति च—
'विधूय कविः' (२२. ५) "सत्यानृते सुखदुःखे वेदानिमं लोकममुं च परित्यज्याऽत्मानमन्विच्छेद्' (२. २१. १३) इत्यादि ।
"तेषु सर्वेषु यथोपदेशमव्यग्रो वर्तमानः क्षेमं गच्छति"(२. २१. २)

- २. गौ.ध. ११. २१

इति वचनात् क्षेमशब्दस्य चाऽपवर्गार्थत्वात् सर्वाश्रमकर्मणां ज्ञानरहितानामेव फलार्थत्वं ज्ञानसंयुक्तानि तु क्षेमप्रापकाणि, यथा विषदध्यादीनि मन्त्रशर्करादिसंयुक्तानि कार्यान्तरारम्भकाणि, तद्वदिति चेत्- न; अनारभ्यत्वात् क्षेमप्राप्तेः। यदि हि क्षेमप्राप्तिः कार्या स्यात् तत इदं चिन्त्यम्- किं केवलैः कर्मभिरारभ्या? ज्ञानसहितैर्वा? ज्ञानकर्मभ्यां वा? केवलेन ज्ञानेन कर्मासंयुक्तेन वेति । न त्वारभ्या केनचिदपि; क्षेमप्राप्तेः नित्यत्वात् । अतोऽसदिदम्- ज्ञानसंयुक्तानि कर्माणि क्षेमप्राप्तिमारभन्ते इति । ज्ञानसंयुक्तानां ज्ञानवदेव क्षेमप्राप्तिप्रतिबन्धापनयकर्तृत्वमिति चेत्- न, सकार्यकारणानामेव कर्मणां क्षेमप्राप्तिप्रतिबन्धकत्वात् । अविद्यादोषहेतूनि हि सर्वकर्माणि सहफलैः कार्यभूतैः क्षेमप्राप्तिप्रतिबन्धकानि । तदभावमात्रमेव हि क्षेमप्राप्तिः। न च तदभाव आत्मज्ञानादन्यतः कुतश्चिदुपलभ्यते । तथाह्युक्तम्— "निहत्य भूतदाहान् क्षेमं गच्छति पण्डितः" (२२. ११.) इति । पाण्डित्यं चेहात्मज्ञानं, प्रकृतत्वात् । श्रुतेश्च (१)"आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चनेति" इति । अभयं हि क्षेमप्राप्तिः । (२) अभयं वै जनक ! प्राप्तोऽसि' इति श्रुत्यन्तरात् ।
"तेषु सर्वेषु यथोपदेशमव्यग्रो वर्तमानः क्षेमं गच्छति' (२.२१.२.) इत्याचार्यवचनमन्यार्थम् । कथम् ? यथोपदिष्टेष्वाश्रमधर्मेष्वव्यग्रो निष्कामस्सन् प्रवर्तमानो ज्ञानेऽधिकृतो भवति, न यथेष्टं(३) चेष्टन कामकामी जायापुत्रवित्तादिकामापहृतव्यप्रचेताः। ज्ञानी च सन् सर्वसन्यासक्रमेण क्षेमं गच्छतीत्येषोऽर्थः । नहि दोषनिर्घातः कदाचिदपि कर्मभ्य उपपद्यते । समिथ्याज्ञानानां हि दोषाणां प्रवृत्तौ सत्यां प्राबल्यामिहोपलभ्यते । 'सङ्कल्पमूलः कामः' इति च स्मृतेः । प्रवृत्तिमान्द्ये च दोषतनुत्वदर्शनात् । न चाऽनिर्हृत्य समिथ्याज्ञानान् दोषान् क्षेमं प्राप्नोति कश्चित् । न च जन्मान्तरसञ्चितानां शुभकर्मणां विहितकर्मभ्यो निवृत्तिरुपपद्यते, शुद्धिसामान्ये विरोधाभावात् । सत्सु च तेषु तत्फलोपभोगाय शरीरग्रहणं, ततो धर्माधर्मप्रवृत्तरागद्वेषौ, पुनः शरीरग्रहणं चेति संसारः केन वार्यते ? तस्मान्न कर्मभ्यः क्षेमप्राप्तिस्तत्प्रतिबन्धनिवृत्तिर्वा । कर्मसहिताज्ज्ञानादविद्यानिवृत्तिरिति चेत् ! यद्यपि ज्ञानकर्मणो भिन्नकार्यत्वाद् विरोधः तथापि तैलवर्त्त्यग्नीनामिव संहृत्य कर्मणा ज्ञानमविद्यादि संसारकारणं निवर्तयतीति चेन्न । क्रियाकारकफलानुपमर्देनाऽऽत्मलाभाभावात् ज्ञानस्य कर्मभिः संहतत्वानुपपत्तेः । तैलवर्त्त्यग्नीनां तु सहभावित्वोपपत्तेरितरेतरोपकार्योपकारकत्वोपपत्तेश्च संहतत्वं स्यात् । न तु

ज्ञानकर्मणोस्तदुभयानुपपत्तेः संहतत्वं कदाचिदपि सम्भवति । केवलज्ञानपक्षे शास्त्रप्रतिषेधवचनादयुक्तमिति चेन्न । ज्ञान कार्यानिवर्तकत्वाच्छास्त्रप्रतिषेधवचनस्य ॥

- १. तैत्ति, उ. २, ९.
- २. बृ. उ., ४. २.४.
- ३. 'चेष्टन्' इति शत्रन्तः प्रयोगस्साधुरिति न प्रतीमः।

योऽयं कर्मविधिपरैः केवलज्ञानपक्षस्य सर्वसन्न्यासस्य विप्रतिषेधो विरोधः, स नैव ज्ञानकार्यमविद्यादोषक्षयं वारयति (१)'भिद्यते हृदयग्रन्थिः' (२) 'तस्य तावदेव चिरम्' (३) 'मृत्युमुखात् प्रमुच्यते' इत्येवमादिश्रुतिस्मृतिशतसिद्धम्, कर्मविधिपरत्वात् प्रवृत्तिशास्त्रस्य । न च (तत्) ज्ञानस्वरूपं ब्रह्मात्मैकत्वविषयं वारयति, सर्वोपनिषदामप्रामाण्यानर्थक्यप्रसङ्गात, 'पूः प्राणिनः'(२२ ४.) 'आत्मा वै देवता' इत्यादिस्मृतीनां च । तस्माद्यद्यपि बहुभिः प्रवृत्तिशास्त्रैर्विप्रतिषिद्धं केवलज्ञानशास्त्रमात्मैकत्वविषयमल्पं, तथापि सकार्यस्य ज्ञानस्य बलवत्तरत्वान्न केनचिद्वारयितुं शक्यम्।

- १. मु.उ. २. २. ८.
- २. छा. उ. ६.१४. ..
- ३. कठो. २, ३ १५,

जीवतो दुःखानिवतर्कत्वाज्ञानस्याऽनैकान्तिकं क्षेमप्रापकत्वमिति चेत्, न, 'भिद्यते हृदयग्रन्थिः' 'ब्रह्मविदाप्नोति परम्', 'निचाय्य तं मृत्युमुखात् प्रमुच्यते' (४) ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति' इत्यादिश्रुतिस्मृतिन्यायेभ्यः । बहुभिर्विप्रतिषिद्धत्वात् सर्वत्यागशास्त्रस्य लोकवत् त्याज्यत्वमिति चेन्न, तुल्यप्रमाणत्वात् । मानसान्तानि सर्वाणि कर्माण्युक्त्वा । (५)"तानि वा एतान्यवराणि तपांसि न्यास एवात्यरेचयत्" इति तपःशब्दवाच्यानां कर्मणामवरत्वेन संसाराविषयत्वमुक्त्वा न्यासशब्दवाच्यस्य ज्ञानस्य केवलस्य न्यास एवात्यरेचयत्' (६) त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः' इत्यमृतत्वफलं दर्शयति शास्त्रम् ।
(७)"तस्यैव विदुषो यज्ञस्याऽऽत्मा यजमानः" इत्यादिना च विदुषः सर्वक(र्म?र्मा) भावं दर्शयति; "द्वौ पन्थानावनुनिष्क्रान्ततरौ कर्मपथश्चैव पुरस्तात् सन्यासश्च, तयोः सन्न्यास एवातिरेचयति" इति च । विप्रतिषेधवचनस्य निन्दापरत्वादयुक्तमिति चेन्न।

- ४. मुण्ड. उ.३.२ ९.
- ५. नारा. उ. ७८,
- ६. नारा.उ.३.
- ७. नारा.उ. ८०

अविद्वद्विषयस्य कर्मणः स्तुत्यर्थत्वोपपत्तेः । मन्दबुद्धयो हि लोकेऽदृष्टप्रयोजनाः प्ररोचनेन प्रवर्तयितव्याः कर्मसु । न दृष्टप्रयोजना विद्वांसः। परनिन्दा हि परस्तुतिरिति केवलज्ञाननिन्दया कर्मस्तुतिपरमाचार्यवचनम् ।
यत्तु "बुद्धे चेत् क्षेमप्रापणम् , इहैव न दुःखमुपलभेत” (२.२१.१६) इति ज्ञानस्य साधनत्वानैकान्तिकवचनं, तद् (१) 'ब्रह्मविदाप्नोति परम्' इत्यादिवाक्येभ्यः प्रत्युक्तम्,

आचार्यान्तरवचनाच्च 'त्यज धर्ममधर्मं च' 'न तत्र क्रमते बुद्धिः' 'नैष्कर्म्यमाचरेत्' 'तस्मात् कर्म न कुर्वन्ति' इत्यादेः । तस्मात् केवलादेव ज्ञानात् क्षेमप्राप्तिः॥

- १. तै.उ. २. १.

अध्यात्मिकान् योगानिति । अध्यात्मं भवन्तीत्यध्यात्मिकाः । छान्दसं स्वत्वम् । के ते अध्यात्मिका योगाः ? वक्ष्यमाणा अक्रोधादयः । ते हि चित्तलमाधानहेतुत्वाद् योगाः । बाह्यनिमित्तनिरपेक्षत्वाच्चाध्यात्मिकाः । तानध्यात्मिकान् योगान् । न्यायसहितान् उपपत्तिसमन्वितान् । ते हि क्रोधादिषु दोषनिर्घातं प्रति समर्था उपपद्यन्ते न्यायतः । अनैश्चारिकान् निश्चारयन्ति मनोऽन्तःस्थं बहिर्विषयेभ्य इति नैश्चारिकाः क्रोधादयो दोषाः, तत्प्रतिपक्षभूता ह्येते ऽनैश्चारिकाः । अक्रोधादिषु हि सत्सु चित्तमनिश्चरणस्वरूपं प्रसन्नमात्मावलम्बनं तिष्ठति । अतस्ताननुतिष्ठेत् सेवेत । अक्रोधादिलक्षणं चित्तसमाधानं कुर्यादित्यर्थः। तथा हि परः स्व आत्मा लभ्यते । क्रोधादिदोषापहृतचेतस्तया हि स्वोऽपि पर आत्माऽविज्ञातोऽलब्ध इव सर्वस्य यतः, अतस्तल्लाभाय योगानुष्ठानं कुर्यात् ॥ १ ॥

02 आत्मलाभान्न परं विद्यते

आत्म-लाभान् न परं विद्यते २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. There is no higher (object) than the attainment of (the knowledge of the) Ātman. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आत्मलाभान्न परं विद्यते ॥२॥

प्रस्तावः⑥

किपुनरात्मा प्रयत्नेन लब्धव्यः ? ओमित्याह—

टिप्पनी⑥

आत्मलाभात्परमुत्कृष्टं लाभान्तरं नास्ति । तस्मात्तस्य लाभाय यत्न आस्थेय इति । का पुनरसावात्मा ? प्रत्यगात्मा । नन्वसौ नित्यलब्धः। न हि स्वयमेव स्वस्याऽलब्धो भवति । सत्यम्, प्रकृतिमेलनात्तधर्मतामुपगतो विनष्टस्वरूप इव भवति । प्रकृत्या हि नित्यसम्बद्धः पुरुषः । तथाविधश्च सम्बन्धो यथा परस्परं विवेको न ज्ञायते । अन्योन्यधर्मश्चान्योऽन्यत्राऽध्यस्यन्ते । यथा क्षीरोदके सम्पृक्ते न ज्ञायते विवेकः-इयत् क्षीरमियदुदकमिति, अमुष्मिन्नवकाशे क्षीरममुश्मिन्नवकाश उदकमिति । यथा वा अग्न्ययोगोलकयोरभिसम्बद्धयोर्ये अग्निधर्मा उष्णत्वभास्वरत्वादयः ते अयोगोलकेऽध्यस्यन्ते। ये वा अयोगोलकधर्माः काठिन्यादैर्घ्यादयः ते ऽग्नावध्यस्यन्ते । एवं हि तत्र 'प्रतिपत्तिः एकं वस्तु उष्णं दीर्घं भास्वरं कठिनमिति । तद्वदिहापि पुरुषधर्माश्चैत न्यादयः प्रकृतावध्यस्यन्ते । प्रकृतिधर्माश्च सुखदुःखमोहपरिणामादयः पुरुषे । ततश्च एकं वस्तु चेतनं सुखादिकलिल परिणामीति व्यवहारः। वस्ततस्तु तस्मिन् सङ्घाते अचेतनांशः परिणामी । चेतनांशस्तु तमनुधावति । येन येन रूपेण परिणमति तेन तेनाऽभेदाध्यासमापद्यते।

यथा क्षीरावस्थागतं घृतं क्षीरे दध्यात्मना परिणमति तामप्यवस्थामनुप्रविशति तद्वदिहापि । तदिदमुच्यते-6 तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविश'दिति । सर्गेऽप्यात्मनः कर्तृत्वमिदमेव-यदुत भोक्तृतया निमित्तत्वम् । तदेवं स्वभावतः स्वच्छोऽप्यात्मा प्रकृत्या सहाभेदमापन्नः तद्धर्मा भवति। एवं तद्विकारेण महता तद्विकारेणाऽहङ्कारेण, इत्याशरीराद्द्रष्टव्यम् । स्थूलोऽहं कृशोऽहं देवोऽहं मनुष्योऽहं तिर्यगहमिति । तस्यैवंगतस्यापेक्षितव्यस्स्वरूपलाभः नीचैरिव वर्धितस्य राजपुत्रस्य । तद्यथा शबरादिभिर्बाल्यात्प्रभृति स्वसुतैस्सह संवर्धितो राजपुत्रस्तज्जातीयमात्मानमवगमयन्मात्रा स्वरूपे कथिते लब्धस्वरूप इव भवति । तथा प्रकृत्या7वेश्ययेव स्वरूपान्तरं नीत आत्मा मातृस्थानीयया8 "तत्त्वमसी'ति श्रुत्या स्वभाव नीयते-यदेवंविधं परिशुद्धं वस्तु तदेव त्वमसि, यथा मन्यसे 'मनुष्योऽहं दुःख्यह'मित्यादि न तथेति । यथा य एवंभूतो राजा स त्वमसीति राजपुत्रः ।

ननु तत्त्वमसीति ब्रह्मणा तादात्म्यमुच्यते। को ब्रूते ? नेति । ब्रह्माऽपि नान्यदात्मनः । किं पुनरयमात्मा एक ? आहो स्विन्नाना? किमनेन ज्ञानेन ? त्वं तावदेवंविधश्चिदेकरसो नित्यनिर्मलः संसर्गात्कलुषतामिव गतः। तद्वियोगश्च ते मोक्षः । त्वयि मुक्ते यद्यन्ये सन्ति ते संसरिष्यन्ति । का ते क्षतिः ? अथ न सन्ति तथापि कस्ते लाभ इत्यलमियता । महत्येषा कथा । तदप्येते श्लोका भवन्ति —

नीचानां वसतौ तदीयतनयैः सार्धं चिरं वर्धित
स्तज्जातीयमवैति राजतनयः स्वात्मानमप्यञ्जसा।
संघाते महदादिभिस्सहवसंस्तद्वत्परः पूरुषः
स्वात्मानं सुखदुःखमोहकलिलं मिथ्यैव धिङ्मन्यते ॥१॥
दाता भोगपरः समग्रविभवो यः शासिता दुष्कृतां
राजा स त्वमसीति मातृमुखतः श्रुत्वा यथावत्स तु ।
राजीभ्य9 जयार्थमेव यतते तद्वत्पुमान् बोधितः
श्रुत्या तत्त्वमसीत्यपास्य दुरितं ब्रह्मैव सम्पद्यते ॥२॥
इत्येवं बहवोऽपि राजतनयाः प्राप्ता दशामीदृशीं
नैवान्योन्यभिदामपस्य सहसा सर्वे भजन्त्येकताम् ।
किं तु स्वे परमे पदे पृथगमी तिष्ठन्ति भिन्नास्तथा
क्षेत्रज्ञा इति तत्त्वमादिवचसः का भेदवादे क्षतिः ॥३॥
तेष्वेको यदि जातु मातृवचनात् प्राप्तो निजं वैभवं
नान्येन क्षतिरस्य यत्किल परे सत्यन्यथा च स्थिता ॥
यद्वान्ये न भवेयुरेवमपि को लाभोऽस्य तद्वद्गतिः पुंसामित्याभिदां भिदां च न वयं निर्बद्ध्य
निश्चिन्महे॥४॥ इति॥

▼ शङ्कराचार्य-विवरणम्

सूत्रम्⑥

आत्मलाभान्न परं विद्यते ॥२॥

प्रस्तावः⑥

पुत्रवित्तादिलाभो हि परो दृष्टो लोके । किमात्मलाभेन ? इत्यत आह—

टिप्पनी⑥

आत्मलाभाद् आत्मनः परस्य स्वरूपप्रतिपत्तेः न परं लाभान्तरं विद्यते । तथा विचारितं वृहदारण्यके(१) तदेतत् प्रेयः पुत्राद्' इत्यादिना ॥२॥

03 तत्रात्मलाभीयाञ्श्लोकानुदाहरिष्यामः

तत्रात्मलाभीयाञ् श्लोकान् उदाहरिष्यामः ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. We shall quote the verses (from the Veda) 10 which refer to the attainment of (the knowledge of) the Ātman.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्राऽऽत्मलाभीयाञ्च्छलोकानुदाहरिष्यामः ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

तदिहापेक्षितमात्मज्ञानमुपदिश्यते । तच्च त्रिविधम्- श्रुतं मननं निदिध्यासनमिति । 11श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य' इति श्रवणात् । तत्र श्रुतमुपनिषदादिशब्दजन्यं ज्ञानम् । मननमुपपत्तिभिर्निरूपणम् । एवं श्रुते मते चात्मनि साक्षात्कारहेतुरविक्षिप्तेन चेतसा निरन्तरं भावना12निदिध्यासनम्। तत्राऽऽत्मसिद्धये श्रोतं ज्ञानं तावदाह—
तत्रेति वाक्योपन्यासे । आत्मलाभीयानात्मलाभप्रयोजनान् । अनुप्रवचनादिषु दर्शनाच्छप्रत्ययः । श्लोकान् पादबद्धानोपनिषदान् मन्त्रान् । उदाहरिष्यामः उद्धृत्याहरिष्यामः ग्रन्थे निवेशयिष्यामः ॥ ३॥

▼ शङ्कराचार्य-विवरणम्

सूत्रम्⑥

तत्राऽऽत्मलाभीयाञ्च्छलोकानुदाहरिष्यामः ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

सत्य क्रोधादयो दोषा आत्मलाभप्रतिबन्धभूता अक्रोधादिभिर्निर्ह(न्य?ण्य)न्ते; तथापि न मुलोद्वर्तनेन निवृत्तिः क्रोधादीनाम्, सर्वदोषबीजभूतमज्ञानं न निवृत्तमिति तस्य चानिवृत्तौ बीजस्याऽनिवर्तितत्वात् सकृन्निवृत्ता अपि क्रोधादयो दोषाः पुनरुद्भविष्यन्तीति संसारस्याऽऽत्यन्तिकोच्छेदो न स्यात् । तद्दोषबीजभूतस्याऽज्ञानस्य मतान् , ज्ञानादन्यतो न निवृत्तिरित्यात्मस्वरूपप्रकाशनायात्मज्ञानाय मतान् शाखान्तरोपनिषद्भ्यः, तत्र तस्मिन् आत्मलाभप्रयोजने निमित्ते । आत्मानं करतलन्यस्तमिव ल(म्भि ? भयि)तुं समर्थान् आत्मलाभीयान् श्लोकानुदाहरिष्यामः उद्धृत्याऽऽहरिष्यामः । ग्रन्थीकृत्य दर्शयिष्याम इत्यर्थः ॥ ३॥

04 पूः प्राणिनः सर्व

पूः प्राणिनः सर्व एव गुहाशयस्य । अहन्यमानस्य विकल्मषस्य ।
अचलं चलनिकेतं येऽनुतिष्ठन्ति तेऽमृताः ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. All living creatures are the dwelling of him who lies enveloped in matter, who is immortal and who is spotless. Those become

immortal who worship him who is immovable and lives in a movable dwelling. 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पूः प्राणिनः सर्व एव गुहाशयस्याऽहन्यमानस्य विकल्मषस्याऽचलं चलनिकेतं येऽनुतिष्ठन्ति तेऽमृताः॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

गुहेति प्रकृतिनाम।
'यत्तस्मृतं कारणमप्रमेयं ब्रह्म प्रधान प्रकृतिप्रसूतिः।
आत्मा गुहा योनि14रनाद्यनन्त क्षेत्रं तथैवामृतमक्षरं च ॥इति
पुराणे दर्शनात् । तस्यां शेते तया सहाऽऽविभागमापन्नास्तिष्ठतीति गुहाशय आत्मा ।

15 अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीं प्रजां जनयन्तीं सरूपाम् ।
अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः, इति च मन्त्रान्तरम् ।
अहन्यमानस्य न ह्यसौ शरीरे हन्यमानेऽपि हन्यते 16तथा चोक्तं भगवता-17 न हन्यते हन्यमाने शरीर' इति । विकल्मषस्य निर्लेपस्य। सर्व एव हि धर्माधर्मादिरन्तःकरणस्य धर्मः, आत्मनि त्वध्यस्तः। एवंभूतस्यात्मनः सर्व एव प्राणिनः ब्रह्माद्यास्तिर्यगन्ताः प्राणादिमन्तः संघाता पूः पुरं उपभोगस्थानम् । यथा राजा पुरमधिवसन् सचिवैरानीतान् भोगानुपभुङ्क्ते, तथाऽयं देवादिशरीरमधिवसन् करणैः रुपस्थापितान् भोगानुपभुङ्क्ते । तमेव भूतमचलं सर्वगतत्वेन निश्चलम् । चलनिकेतं निकेतं स्वस्थान शरीरं तद्यस्य चलं तं येऽनुतिष्ठन्ति उपासते एवंभूतोऽहमिति प्रतिपद्यन्ते, तेऽमृताः मुक्ता भवन्तीति ।' ४॥

▼ शङ्कराचार्य-विवरणम्

सूत्रम्⑥

पूः प्राणिनः सर्व एव गुहाशयस्याऽहन्यमानस्य विकल्मषस्याऽचलं चलनिकेतं येऽनुतिष्ठन्ति तेऽमृताः ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

पूः पुरं शरीरम् । प्राणिनः प्राणवन्तः। सर्व एव ब्रह्मादीनि स्तम्बपर्यन्तानि प्राणिनः । पुरं पुरमिव राज्ञः उपलब्ध्याधिष्ठानम् । कस्य पुरम् ? गुहाशयस्याऽऽत्मनः । यथा स्वकीयपुरे राजा सचिवादिपरिवृत उपलभ्यते, एवं देहेष्वात्मा बुधादिकरणसंयुक्त उपलभ्यते । उपलभते च बुद्ध्यादिकरणोपसंहृतान् भोगान् । अतोऽविद्यावरणात्मभूतायां बुद्धिगुहायां शेत इति गुहाशयः । तस्य पुरम् । तस्यां बुद्धावविद्यादिदोषमलापनये विद्वद्भिस्त्यक्तैषणैरुपलभ्यते । इदमपरं विशेषणं गुहाशयस्याऽहन्यमानस्य, छेदनभेदनजरारोगादिभिर्हन्यमाने देहे न हन्यते । (१) न वधेनाऽस्य हन्यते' इतिच्छान्दोग्ये । तस्य विकल्मषस्य, कल्मषं पापं तदस्य नास्तीति विकल्मषः । सर्वं ह्यविद्यादोषसहितं धर्माधर्माख्यं कर्म कल्मषं भवति, विकल्मषस्येति विशेषणेन तत् प्रतिषिध्यते तत्कार्यं जरारोगादिदुःखरूपमहन्यमानस्येति । एवं हेतुफलसम्बन्धरहितस्याऽसंसारिण उपलब्ध्यधिष्ठानं पूः सर्वे प्राणिनः । अतो न संसार्यन्यो ऽस्ति । (२) एको देवः सर्वभूतेषु 'गूढ' इति श्वेताश्वतरे। (३)"एष सर्वेषु भूतेषु गुढोऽऽत्मा न प्रकाशते" इति च काठके । (४) नान्यदतोऽस्ति द्रष्टा' इत्यादि वाजसनेयके । (१) 'स आत्मा तत्त्वमसी'ति च छान्दोग्ये । पूर्वार्धेन ब्रह्मणो याथात्म्यमुक्त्वोत्तरार्धेन तद्विज्ञानवतस्तद्विज्ञानफलमाह-यस्य सर्वे प्राणिनः पुरा अहन्यमानस्य विकल्मषस्य, तस्य सर्वप्राणिसम्बन्धादर्थसिद्धमाकाशवत् सर्वगतत्वम्, 'आकाशवत् सर्वगतश्च नित्य' इति च श्रुतेः। सर्वगतस्य चाऽचलत्वमर्थसिद्धमेव । तमचलं चलनिकेतं चलायां हि प्राणिगुहायां स्वयं शेते तमचलं चलनिकेतम् । येऽनुतिष्ठन्ति ममात्मेति साक्षात् प्रतिपद्यन्ते, तेऽमृताः अमरणधर्माणो भवन्ति ॥ ४॥

- १. छा. उ. ८ १० ४.
- २. श्वेता. उ. ६. ११.
- ३. कठो. १. ३, १२.
- ५, छा. ६. ८. ९.
- ४. बृ. उ. ३.८.११

05 यदिदमिदिहेदिह लोके विषयमुच्यते

यदिदमिदिहेदिह लोके विषयमुच्यते । विधूय कविरेतदनुतिष्ठेद्गुहाशयम् ५

▼

⑤

>

▼ Bühler

5. Despising all that which in this world is called an object (of the senses) a wise man shall strive after the (knowledge of the) Ātman. 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यदिदमिदिहेदिह लोके विषयमुच्यते।
विधूय कविरेतदनुतिष्ठेद्गुहाशयम् ॥ ५ ॥

प्रस्तावः⑥

विषयसङ्गपरित्यागेनाऽयमुपास्य इत्याह —

टिप्पनी⑥

यदिदं, विषयं, मेतदिति सर्वत्र लिङ्गव्यत्ययश्छान्दसः। एवमितिशब्दे तकारस्य दकारः । इतिशब्दः प्रसिद्धौ । हशब्द आश्चर्ये । इतिशब्देनावृत्तेन शब्दादिषु विषयेष्ववान्तरप्रकारभेदः प्रतिपाद्यते। विषयापहृतचेतसो हि वदन्ति- 'इति ह तस्या गीतम् , इति ह तस्याः सुखस्पर्शः, इति ह तस्या रूपं निष्टप्तमिव कनकम्, इति ह तस्याः स्वादिष्ठोऽधरमणिः, इति ह तस्या गन्धो घ्राणतर्पण' इति । एवं दिव्यमानुषभेदोऽपि द्रष्टव्यः। अत्राऽनन्तरमपर इतिशब्दोऽध्याहार्यः । इति ह इति हेति यो ऽयं लोके विषय उच्यते, सामान्यापेक्षमेकवचनम् , एतद्विधूय गुहाशयमनुतिष्ठेत् । कविर्मेधावी ॥ ५॥

▼ शङ्कराचार्य-विवरणम्

सूत्रम्⑥

यदिदमिदिहेदिह लोके विषयमुच्यते।
विधूय कविरेतदनुतिष्ठेद्गुहाशयम् ॥ ५ ॥

प्रस्तावः⑥

कथं तदनुष्ठानमिति ? उच्यते —

टिप्पनी⑥

यदिदं प्रत्यक्षतोऽवगम्यमानं स्त्र्यन्नपानादिसंभोगलक्षणम् । इदिति किञ्चिदर्थे । यत्किञ्चिदिदं प्रत्यक्षम् । इहाऽस्मिन् लोके। विषयम् । इदंशब्दसामानाधिकरण्यान्नपुंसकलिङ्गप्रयोगो विषयमिति । उभयालिङ्गो वा विषयशब्दः । द्वितीय इच्छब्द इहशब्दश्च । तयोः क्वचिन्नियोगः । इच्छब्दश्चार्थे । इहशब्दोऽमुष्मिन्नर्थे । लोकशब्दः काकाक्षिवदुभयत्र सम्बध्यते । इह लोके इह च लोकेऽमुष्मिंश्च यदिदं विषयमुच्यते, स्वर्गादिलोके पार्श्वस्थमध्यस्थो व्यपदिशति इह लोके इति च लोके इत तत्सर्वं विधूय परित्यज्य । कविः क्रान्तदर्शी, मेधावीत्यर्थः । फलं साधनं च तद्विधूय एषणात्रयाद् व्युत्थायेत्यर्थः । अनुतिष्ठेद् गुहाशयं यथोक्तलक्षणमात्मतत्वम् ॥५॥

06 आत्मन्न् एवाहमलब्ध्वैतद्धितं सेवस्व

आत्मन्न् एवाहमलब्ध्वैतद्धितं सेवस्व नाहितम् । अथान्येषु प्रतीच्छामि साधुष्ठानमनपेक्षया । महान्तं तेजसस्कायं सर्वत्र निहितं प्रभुम् ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. O pupil, I, who had not recognised in my own self the great self-luminous, universal, (absolutely) free Ātman, which must be obtained without the mediation of anything else, desired (to find) it in others (the senses). (But now as I have obtained the pure knowledge, I do so no more.) Therefore follow thou also this good road that leads to welfare (salvation), and not the one that leads into misfortune (new births). 19

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आत्मन्नेवाऽहमलब्ध्वैतद्धितं सेवस्व नाऽहितम् ।
अथाऽन्येषु प्रतीच्छामि साधुष्ठानमनपेक्षया ।
महान्तं तेजसस्कायं सर्वत्र निहितं प्रभुम् ॥ ६ ॥

प्रस्तावः⑥

विषयत्यागे हेतुमाह—

टिप्पनी⑥

शिष्यं प्रत्याचार्यस्य वचनमेतत्। द्वौ चात्र हेतू विषयाणां त्यागे-पराधीनत्वमाहितत्वं च । महान्त गुणतः। तेजसस्कायं तेजसश्शरीरं तेजोराशिं स्वयंप्रकाशम् । 20 'आत्मज्योतिः सम्राडिति होवाचे'ति बृहदारण्यकम्। सर्वत्र निहितं सर्वगतम् । प्रभुं स्वतन्त्रम् । एवंभूतं गुहाशयं एतावन्तं कालं अहमात्मन् , सप्तम्येकवचनस्य लुक्, आत्मनि । अस्मिन् मदीये सङ्घाते अन्यानपेक्षयैव लब्धुं योग्यमलब्ध्वा अथाऽन्येषु इन्द्रियादिषु तं तं विषयं प्रतीच्छामि लङथै लट्, प्रत्यैच्छम् । इदानीं तु तं लब्ध्वा न तथाविधोऽस्मि । त्वमप्येतदेव हितं साधुष्ठानं साधुमार्गं सेवस्व नाहितं विषयानुधावनमिति ॥ ६॥

▼ शङ्कराचार्य-विवरणम्

सूत्रम्⑥

आत्मन्नेवाऽहमलब्ध्वैतद्धितं सेवस्व नाऽहितम् ।
अथाऽन्येषु प्रतीच्छामि साधुष्ठानमनपेक्षया ।
महान्तं तेजसस्कायं सर्वत्र निहितं प्रभुम् ॥ ६ ॥

प्रस्तावः⑥

तत् क्वाऽनुष्ठातव्यमिति । उच्यते—

टिप्पनी⑥

आत्मन्नेव आत्मन्येव । प्रत्यगात्मा हि परमात्मा। सर्वं ह्यत्रानुष्ठेयम् । यदि देहादन्यत्राऽनुष्ठीयेत, सोऽनात्मा कल्पितः स्यात् । तस्माद् देहादिसङ्घात आत्मन्येव विधूय बाह्यासङ्गं गुहाशयमात्मतत्वमनुष्ठेयम् । किमन्येष्वननुष्ठेयमिति भगवतो मतम् ? बाढम्, प्रथममेव नान्येष्वनुष्ठेयमात्मतत्त्वम् । कथं तर्हि ? सर्वप्रयत्नेनाऽपि स्वदेहादिसङ्घाते यथोक्तमात्मतत्त्वं न लभेत, अथाऽहमन्येष्वादित्यादिषु प्रतीच्छामि अभिवाञ्छामि । साधुष्ठानं साधोः परमात्मनः उपलब्धिस्थानं, यत्र गुहाशायं ब्रह्मतत्वमनुष्ठेयम् । अनपेक्षयाऽन्यत् पुत्रवित्तलोकादिसुखं छित्वा निःस्पृहतया । न ह्यात्मानुष्ठानं बाह्यार्थाकाङ्क्षा च सह सम्भवतः । कस्मात् पुनरनेकान्यन्यानि हितप्रकाराण्यनपेक्ष्याऽत्मानुष्ठानमेव यत्नत आस्थीयत इत्यत आहाऽऽचार्यः- यथान्यान्यहितानि हितबुध्या परिगृहीतानि, न तथैवमात्मसेवनम् । किं तर्हि ? (ए)तद्धितमेव । तस्मात् सेवस्वेति । किंविशिष्टश्चाऽऽत्मा सेवितव्य इत्याह- महान्तम् अमितान्तम् अनन्त(र)त्वादबाह्यत्वाच्च महानात्मा, तं महान्तम् । गुणैर्वोपाधिसहचारिभिर्महान्तं, बृंहणमिति यद्वत् । तेजसस्कायं तेजःशरीरमित्यर्थः । चैतन्यात्मज्योतिःस्वरूपम् । तद्धि तेजसां तेजः । (१) 'येन सूर्यस्तपति तेजसेद्धः' (२) 'तस्य भासा सर्वमिदं विभाति' इति श्रुतेः। सर्वत्र सर्वदेहेषु ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तेषु । निहितं स्थितम, उपलब्धिरूपेणाभिव्यक्तमित्यर्थः । न हि ब्रह्मणोऽभिव्यक्तिनिमित्तत्वव्यतिरेकेण कस्यचिदाधारत्वसम्भवः । निराधारं हि ब्रह्म, सर्वगतत्वोपपत्तेः । प्रभुं प्रभवति सर्वानीश्वरान् प्रति, अचिन्त्यशक्तित्वात् । एवमाद्यनन्तगुणविशिष्टमात्मानं सेवस्वेति ॥ ६॥

- १. तै. ब्रा. १३. ९. ७.
- २. मुण्ड, २. २. १०.

07 सर्वभूतेषु यो नित्यो

सर्वभूतेषु यो नित्यो विपश्चिदमृतो ध्रुवः । अनङ्गो ऽशब्दोऽशरीरोऽस्पर्शश्च महाञ्शुचिः । स सर्वं परमा काष्ठा स वैषुवतं स वै वैभाजनं पुरम् ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. It is he who is the eternal part in all creatures, whose essence is wisdom, who is immortal, unchangeable, destitute of limbs, of voice, of the (subtle) body, 21 (even) of touch, exceedingly pure; he is the universe, he is the highest goal; (he dwells in the middle of the body as) the Vishuvat day is (the middle of a Sattra-sacrifice); he, indeed, is (accessible to all) like a town intersected by many streets.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वभूतेषु यो नित्यो विपश्चिदमृतो ध्रुवः ।
अनङ्गोऽशब्दोऽशरीरोऽस्पर्शश्च महाञ्छुचिः।
स सर्वां परमा काष्ठा स वैषुवतं स वै वैभाजनं पुरम् ॥७॥

प्रस्तावः⑥

पुनरप्यसौ कीदृश इत्याह—

टिप्पनी⑥

सर्वभूतेषु मनुष्यादिषु सङ्घातेषु यो नित्यः विनश्यत्स्वपि न विनश्यति विपश्चित् मेधावी चित्स्वरूपः। अमृतः नित्यत्वादेवाऽमरणधर्मा । अतः ध्रुवः एकरूपः, विकाररहितः । न प्रधानवाद्विकारिणस्सतो धार्मरूपेणाऽस्य नित्यत्वमित्यर्थः । अनङ्गः करचरणाद्यङ्गरहितः । अशब्दोऽस्पर्श इति भूतगुणानामुपलक्षणम् । शब्दादिगुणरहितः अशरीरः सूक्ष्मशरीरेणाऽपि वर्जितः। महाञ्च्छुचिः महत्त्वं शौचस्य विशेषणम् । परमार्थतोऽत्यन्तशुद्धः। स सर्वं प्रकृत्यभेदद्वारेण । स एव परमा काष्ठा, ततः परं गन्तव्याभावाद । स वैषुवतं विषुवान्नाम गवामयनस्य मध्ये भवमहः । 'एकविंशमेतदहरुपयन्ति विषुवन्तं मध्ये सम्वत्सरस्ये'ति दर्शनात् । विषुवानेव वैषुवतम् ।
तद्यथा सम्वत्सरस्य मध्ये भवति एवमङ्गानामेष मध्ये । 22 मध्यं ह्येषामङ्गानामात्मेति बह्वृचब्राह्मणम् । स एव च वैभाजनं पुरं विविधैर्मार्गैर्भजनीयं विभजनम् । तदेव वैभाजनं प्रज्ञादिरनुशतिकादिश्च । यथा समृद्धं पुरं सर्वैरर्थिभिः प्राप्यमेवमयमपीति ॥७॥

▼ शङ्कराचार्य-विवरणम्

सूत्रम्⑥

सर्वभूतेषु यो नित्यो विपश्चिदमृतो ध्रुवः ।
अनङ्गोऽशब्दोऽशरीरोऽस्पर्शश्च महाञ्च्छुचिः।
स सर्वां परमा काष्ठा स वैषुवतं स वै वैभाजनं पुरम् ॥७॥

टिप्पनी⑥

विशिष्टमात्मानं सेवस्वेति क्रियापदमनुवर्तते । किं च सर्वभूतेषु ब्रह्मादिष्वनित्येषु यो नित्योऽविनाशी । विपश्चिन्मेधावी, सर्वज्ञ इत्यर्थः । अमृतोऽत एव । यो ह्यनित्योऽसर्वज्ञः स मर्त्यो दृष्टः, अयं तु तद्विपरीतत्वादमृतः। ध्रुव अविचलः । निष्कम्पस्वभाव इत्यर्थः । अनङ्गः स्थूलशरीररहित इत्यर्थः । स्थूले हि शरीरे शिरआद्यङ्गानि सम्भवन्ति । अशरीर इति लिङ्गशरीरवर्जित इत्येतत् । अशब्दः नाऽस्य शब्दगुणः सम्भवति । शब्दविद्धि सन् अन्यथा शब्दात्मकः शब्दात्मकमेव विजानीयात् । न चैतदस्ति । अतोऽशब्दः । तथा अस्पर्शः आकाशवायुभूतद्वयगुणप्रतिषेधेन शब्दादयो गन्धावसानाः सर्वभूतगुणाः प्रतिषिद्धा वेदितव्याः। तत इदं सिद्धमाकाशादपि सूक्ष्मत्वम् । शब्दादिगुणबाहुल्याद्वाय्वादिषु स्थौल्यतारतम्यमुपलभ्यते।

शब्दादिगुणाभावान्निरतिशयसूक्ष्मत्वं सर्वगतत्वादि चाऽऽप्रतिबन्धेन धर्मजातं तर्केणाऽपि शक्यं स्थापयितुम् ।

- १. बृह.उ. ४. ३ ६. अत्र पाठभेदो दृश्यते.

महान्, अत एव शुचिर्निरञ्जनः। अथवा शुचिः पावन इत्यर्थः । शुचि हि वस्तु पावनं दृष्टम् , यथा लोके वाय्वग्न्यादि । किञ्च य आत्मा प्रकृतः, स सर्वम् । (१)'इदं सर्वं यदयमात्मे'ति हि वाजसनेयके । न ह्यात्मव्यतिरेकेण किञ्चिन्निरूप्यमाणमुपपद्यते । अत एव परमा प्रकृष्टा । काष्ठा अवसानम् । (२) 'सा काष्ठा सा परा गति'रिति काठके । संसारगतीनां अवसानं निष्ठा समाप्तिरित्यर्थः । स वैषुवतं मध्यं सर्वस्य, सर्वान्तरश्रुतेः। विषुवत्सु वा(३) दिवाकीर्त्येषु मन्त्रेषु नित्यं प्रकाश्यं भवतीति वैषुवतः । स परमात्मा ।
ननु स सर्वं परमा काष्ठा सा वैषुवत'मित्युक्तम् । कस्मात् पुनस्तदात्मतत्त्वं विभक्तमुपलभ्यत इति । उच्यते- स परमात्मा वैभाजनं, विभाकर्विभजनं विवेकः आत्मनो यस्मिन् देहे क्रियते, तत् । विभाजनमेव वैभाजनम् । आत्मनो विवेकोपलब्ध्यधिष्ठानं हि शरीरम् । तच्चाऽनेकधा विभक्तम् । तदुपाध्यनुवर्तित्वाद् वैभाजनम् सर्वथा शुद्धमेव सर्वैर्नोपलभ्यते । किं तर्हि ? विभक्तो विपरीतश्चोपलभ्यते ॥ ७॥

08 तं योऽनुतिष्ठेत्सर्वत्र प्राध्वञ्

तं योऽनुतिष्ठेत्सर्वत्र प्राध्वं चास्य सदाचरेत् । दुर्दर्शं निपुणं युक्तो यः पश्येत्स मोदेत विष्टपे ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. He who meditates on him, and everywhere and always lives according to his (commandments), and who, full of devotion, sees him who is difficult to be seen and subtle, will rejoice in (his) heaven. 23

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तं योऽनुतिष्ठेत्सर्वत्र प्राध्वं चाऽस्य सदाऽऽचरेत् ।
दुर्दर्शं निपुणं युक्तो यः पश्येत्स मोदेत विष्टपे ॥८॥

टिप्पनी⑥

तमेवंभूतमात्मानं योऽनुतिष्ठेदुपासीत यश्चाऽस्य सर्वत्र सर्वास्ववस्थासु सदा प्राध्वमानुकूल्यमाचरेत् । आनुकूल्य प्रतिषिद्धवर्जनं नित्यनैमित्तिककर्मानुष्ठानं च। यश्च दुर्दशं निपुणं24 सूक्ष्मतः युक्तः समाहितो भूत्वा पश्येत् साक्षात्कुर्यात् । सः विष्टपे विगततापे स्वे महिम्नि स्थितो मोदेत सर्वदुःखवर्जितो भवति । संसारदशायां वा तिरोहितं निरतिशयं स्वमानन्दमनुभवतीति ॥८॥

॥ इत्यापस्तम्बसुत्रवृत्तावुज्जलायां द्वाविंशी कण्डिका ॥ २२ ॥

▼ शङ्कराचार्य-विवरणम्

सूत्रम्⑥

तं योऽनुतिष्ठेत्सर्वत्र प्राध्वं चाऽस्य सदाऽऽचरेत् ।
दुर्दर्शं निपुणं युक्तो यः पश्येत्स मोदेत विष्टपे ॥८॥

टिप्पनी⑥

अतस्तदुपाध्यनुवर्तिस्वभावदर्शनमविद्याख्यं हित्वा विद्यया शास्त्रजनितदर्शनेन तं यथोक्तलक्षणमात्मानमनुतिष्ठेत् । सर्वत्र सर्वस्मिन् काले। किञ्च न केवलमनुष्ठानमात्रमस्य । प्राध्वं बन्धनम् आत्मैकत्वरसप्रज्ञतां स्थिरां बाह्यैषणाव्यावृत्तरूपां सर्वसन्यासलक्षणम् । तद्धि बन्धनं विदुषो ब्रह्मणि । एवं हि बद्धो ब्रह्मणि संसाराभिमुखो नाऽऽवर्तते । तस्माद् बन्धनं चाऽस्य सदाऽऽचरेत् । तदनुष्ठानबन्धने सदाचरतः किं स्यादिति ? उच्यते- दुर्दर्श दुःखेन ह्येषणात्यागादिना स दृश्यत इति दुर्दर्शम् । निपुणं यस्माद्धि दुर्दर्शं तस्मान्निपुणम् । अत्यन्तकौशलेन समाहितचेतसा युक्तो यः पश्येत् साक्षादुपलभेत्-अहमात्मेति, स मोदेत् । एवं दृष्टा हर्षमानन्दलक्षणं प्राप्नुयात् । विष्टपे विगतसन्तापलक्षणेऽस्मिन् ब्रह्मणीत्यर्थः ॥ ८ ॥

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
3. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
4. आप० ध० १.३०.८.↩
5. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
6. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
7. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
8. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
9. आप० ध० १.३०.८.↩
10. Manu II, 35.↩
11. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
12. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
13. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
14. गौ० ध० १. १, २↩
15. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
16. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
17. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

18. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

19. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

20. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

21. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

22. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

23. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

24. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

२३①

01 आत्मन् पश्यन् सर्वभूतानि④

आत्मन् पश्यन् सर्वभूतानि न मुह्येच्चिन्तयन्कविः । आत्मानं चैव सर्वत्र यः पश्येत्स वै ब्रह्मा नाकपृष्ठे विराजति १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. That Brāhmaṇa, who is wise and recognises all creatures to be in the Ātman, who pondering (thereon) does not become bewildered, and who recognises the Ātman in every (created) thing, shines, indeed, in heaven.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आत्मन् पश्यन् सर्वभूतानि न मुह्येच्चिन्तयन्कविः।
आत्मानं चैव सर्वत्र यः पश्यत्स वै ब्रह्मा नाकपृष्ठे विराजति ॥ ९ ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

सर्वाणि भूतानि आत्मन् आत्मनि शेषत्वेन स्थितानि पश्यन् उपनिषदादिभिर्जानन् । पश्चाच्चिन्तयन् युक्तिभिर्निरूपयन्, यो न मुह्येत् मध्ये मोहं न गच्छेत् । कविर्मेधावी । पश्चाच्च

सर्वत्रैव शेषत्वेन स्थितमात्मनं पश्येत् साक्षात्कुर्यात् । स वै ब्रह्मा ब्राह्मणः नाकपृष्ठे तत्सदृशे स्वे महिम्नि स्थितो विराजति स्वयं प्रकाशते ॥१॥
▼ शङ्कराचार्य-विवरणम्

आत्मन् पश्यन् सर्वभूतानि न मुह्येच्चिन्तयन्कविः । आत्मानं चैव सर्वत्र यः पश्येत्स वै ब्रह्मा नाकपृष्ठे विराजति १

विवरणम् । किञ्च आत्मन् पश्यन् आत्मनि पश्यन् उपलभमानः । सर्वभूतानि सर्वाणि (भूतानि)। सर्वेषां भूतानामात्मस्वरूपतामेव पश्यन्नित्यर्थः । सवत्राऽऽत्मानं च परम् । न मुह्येत मोह न गच्छेत् । न ह्यात्मैकत्वदर्शिनो मोहावतारः; (१) तत्र को मोह' इति च मन्त्रलिङ्गात्। कीडग्विशिष्टमा स्मदर्शनं मोहनिबर्हणमित्याह--चिन्तयन् उपसंहृतकरणः कविः मेधा वी सन् ध्यायमानः । न शब्दजनितदर्शनमात्रेण मोहापगमः । सर्वभूते. चतुप्रविष्टमकं संव्यवहारकाले यो हि युक्तः पश्येत् , स वै ब्रह्मा ब्राह्मणः । नाकपृष्ठे सुकरागौ(१) ब्रह्मणि । विराजति विविधं दीप्यते ॥९॥
02 निपुणोऽणीयान्बिसोर्णाया यः सर्वमावृत्य

निपुणोऽणीयान्बिसोर्णाया यः सर्वमावृत्य तिष्ठति । वर्षीयांश्च पृथिव्या ध्रुवः सर्वमारभ्य तिष्ठति । स इन्द्रियैर्जगतोऽस्य ज्ञानादन्योऽनन्यस्य ज्ञेयात्परमेष्ठी विभाजः । तस्मात्कायाः प्रभवन्ति सर्वे स मूलं शाश्वतिकः स नित्यः २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. He, who is intelligence itself and subtler than the thread of the lotus-fibre, pervades the universe, and who, unchangeable and larger than the earth, contains the universe; he, who is different from the knowledge of this world, obtained by the senses and identical with its objects, possesses the highest (form consisting of absolute knowledge). From him, who divides himself, spring all (created) bodies. He is the primary cause, he is eternal, he is unchangeable. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

निपुणोऽणीयान् बिसोर्णाया यस्सर्वमावृत्य तिष्ठति । वर्षीयांश्च पृथिव्या ध्रुवः सर्वमारभ्य तिष्ठति ।
स इन्द्रियैर्जगतोऽस्य ज्ञानादन्योऽ नन्यस्य ज्ञेयात्परमेष्ठी विभाजः।
तस्मात्कायाःप्रभवन्ति सर्वे समूलं शाश्वतिकः स नित्यः ॥

टिप्पनी⑥

निपुणो मेधावी चित्स्वरूपः । बिसोर्णाया बिसतन्तोरप्यणीयान् सूक्ष्मः। य सर्वमावृत्य व्याप्य तिष्ठति । यश्च पृथिव्या अपि वर्षीयान् प्रवृद्धतरः सर्वगतत्वादेव सर्वमारभ्य विष्टभ्य शेषित्वेनाऽधिष्ठाय तिष्ठति । ध्रुवः एकरूपः। अस्य जगतो यदिन्द्रियैर्ज्ञानं इन्द्रियजन्यं ज्ञानं तस्मात् । कीदृशात ? अनन्यस्य ज्ञेयात् , पञ्चम्यर्थे षष्ठी, ज्ञेयात् नीलपीताद्याकारादनन्यभूतं नीलपीताद्याकारं, तस्माद्विषज्ञानादन्य इत्यर्थः । श्रूयते च 2 तस्माद्वा एतस्माद्विज्ञानमयात् । अन्योऽन्तर आत्माऽऽनन्दमय' इति ।
3 ज्ञानस्वरूपमत्यन्तनिर्मलं परमार्थतः ।
तमेवार्थस्वरूपेण भ्रान्तिदर्शनतस्स्थितम् ॥ इति पुराणम् । स्वभावतः स्वच्छस्य चिद्रूपस्यऽऽत्मनो नीलपीताद्याकारकालुष्यं तद्रूपाया बुद्धेरनुरागकृतं भ्रान्तमित्यर्थः। वैषयिकज्ञानादन्य इति विशेषणेन ज्ञानात्मक इत्यपि सिद्धम्। 4 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्मे'ति च श्रुतिः। एवंभूतस्याऽऽमा परमेष्ठी परमे स्वरूपे तिष्ठतीति । विभाज इत्यस्य परेण सम्बन्धः । विभजत्यात्मानं देवमनुष्यादिरूपेण नानाशरीरानुप्रवेशेनेति विभाक् । तस्माद्विभाजो निमित्तभूतात् सर्वे काया देवमनुष्यशरीराणि प्रभवन्ति उत्पद्यन्ते । स मूलं प्रपञ्चसृष्टेर्भोक्तृतया मूलकारणम् । स नित्यः अविनाशी । शाश्वतिक एकरूपः अविकारः ॥२॥

▼ शङ्कराचार्य-विवरणम्

निपुणोऽणीयान्बिसोर्णाया यः सर्वमावृत्य तिष्ठति । वर्षीयांश्च पृथिव्या ध्रुवः सर्वमारभ्य तिष्ठति । स इन्द्रियैर्जगतोऽस्य ज्ञानादन्योऽनन्यस्य ज्ञेयात्परमेष्ठी विभाजः । तस्मात्कायाः प्रभवन्ति सर्वे स मूलं शाश्वतिकः स नित्यः २

विवरणम्। किञ्च निपुण' सर्ववित् अणीयान् अणुतरो विसोर्णायाः बिसत तन्तोरपि । कोऽसौ ? य प्रकृत आत्मा सर्व समस्तं जगदावृत्य सं. व्याप्य तिष्ठति । किञ्च वर्षीयान् वृद्धतरः स्थूलतरश्च पृथिव्याः। सर्वा. त्मको हि सः । ध्रुव. नित्यः सर्व कृत्स्नमारभ्य संस्तम्भनं कृत्वा । तिष्ठति वर्तते ।

(२) येन द्यौरुमा पृथवी च बढा' इति मन्त्रलिङ्गात् । स सर्वेश्वरः सर्वज्ञः एको विनेय इत्यर्थः। स परमात्मा इन्द्रियैर्जन्यते यशानं ज गतोऽस्य, तस्मात् ज्ञानादन्यो विलक्षणः, लौकिकज्ञानादन्य इति विशे. षणाज्ञानात्मक इत्यतेत् सिद्धम् । 'सत्यं ज्ञानमनन्तमिति च श्रुतेः। अस्य जगत इन्द्रियजन्यज्ञानादन्य इत्युक्तम् । अतश्च तद्यतिरिक्तं ज. १. इशा. उ. ७. २. ८.७.३. HELP I । .. . आपस्तम्बधर्मसूत्रे (प.८)क.२३. PAL A गदिति प्राप्तम् । अतस्तन्मा भूदित्याह-अनन्यस्य अपृथग्भूतस्य ज. गतः, ज्ञेयात् ज्ञातव्यात् परमार्थस्वरूपाद्वयात् परमेश्वराद् घटादेरिव मदः । स च परमेष्ठी परमे प्रकृष्टे स्वे माहिम्नि हृदाकाशेऽवस्थातुं शीलमस्येति परमेष्ठी । स्वयमेव विभाज' विभक्तो देवपितृमनुष्यादि. ना ज्ञातृशेयज्ञानभेदेन च, यस्मात् स एव ज्ञेय आत्मा स्वतो विभजति जगदनेकधा । तस्मादेवाऽऽत्मनः काया. शारीराण्याकाशादिक्रमेण प्रभवन्ति सर्वे ब्रह्मादिलक्षणाः। अतो मूलं स जगतः । (१) यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते" इति श्रुतेः । अत एव स शाश्वतिकः । यो हि पृथिव्यादिविकार, सोऽबादिक्रमेण विनश्येत् , पर मूलकारणमापद्यते, सोऽशाश्वतिकोऽ नित्यः । अयं चाऽऽत्मा परं मूलम् । न तस्याऽप्यन्यन्मूलमस्ति, यतो जा. तो विनश्येत् , मूलमापद्यते, ततस्तद्विलक्षणत्वाच्छाश्वतिकः शश्वदे. करूपः । अतो नित्यः एकत्वमहत्वमूलत्वेभ्यश्च ॥ १० ॥

- १. तै. उ. ३. १.

03 दोषाणान् तु विनिर्घातो

दोषाणां तु विनिर्घातो योगमूल इह जीविते । निर्हृत्य भूतदाहीयान् क्षेमं गच्छति पण्डितः ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. But the eradication of the faults is brought about in this life by the means (called Yoga). A wise man who has eradicated the (faults) which destroy the creatures, obtains salvation.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दोषाणां तु निर्घातो योगमूल इह जीविते ।
निर्हृत्य भूत दाहीयान् क्षेमं गच्छति पण्डितः ॥ ११ ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

दोषाणां वक्ष्यमाणानां क्रोधादीनां निर्घातः निर्मूलनम् । इह जीविते योगमूलः योगाः वक्ष्यमाणा अक्रोधादयः तन्मूलकः । अतश्च तान् भूतदाहीयान् भूतानि दहतः क्रोधादीन्दोषान् निर्हृत्य क्षेमं गच्छति आत्मत्राणद्वारेण । पण्डितो 5लब्धज्ञानः आत्मसाक्षात्कारी । क्षेमं अभयं मोक्षम् 6अभयं वै जनक प्राप्तोऽसीति बृहदारण्यकम् ॥ समाप्ताः श्लोकाः ॥ ३ ॥

▼ शङ्कराचार्य-विवरणम्

दोषाणां तु विनिर्घातो योगमूल इह जीविते । निर्हृत्य भूतदाहीयान् क्षेमं गच्छति पण्डितः ३

विवरणम् । एवं यथोक्तमात्मान विदितवत आध्यात्मिका योगा न्यायसहिता अप्रतिबन्धेन भविष्यन्ति । मिथ्याप्रत्ययपूर्वका हि दोषाः। दोषनिमिः सश्च धर्माधर्मजनितः ससारः दोषनिवृत्तावत्यन्तं विनिवर्तते इत्येतम. थै दर्शयिष्यन्नाह--

दोषाणां तु निर्घातो योगमूल इह जीविते । निहत्य भूत दाहीयान् क्षेमं गच्छति पण्डितः ॥ ११ ॥ ३ ॥ ___ दोषाणां तु क्रोधादीनां निर्घात विनाशः। योगा अक्रोधादयः, त. न्मूलः तनिमित्तमित्येतत् । अक्रोधादिषु हि सत्सु प्रतिद्वन्द्विनो दोषा दुर्बलत्वानिहन्यन्ते । इह जवित इति दोषप्रभवकमीनीमत्तत्वाज्जीवित तस्य देहधारणावसानो दोषव्यापार इत्येतद् दर्शयति । तत्प्रतिपक्षेश्व क्रोधादिषु कथं नु नाम मुमुक्षवः प्रयत्नातिशय कुयुरिति योगदोषयो रितरेतरविरोधित्वे सति स्थितिगतिवद् योगेभ्यो दोषाणामेव निर्धातः, न तु विपर्यय इत्येतत् । कथामिति चेत् ? उच्यते-सम्यग्दर्शनसचिव. त्वाद् बलवन्तो योगाः । मिथ्याप्रत्ययसचिवक्त्वात दुर्बलत्वानिहन्यन्ते । निहन्तीत्येतदप्युक्तम् । बुद्धिबलवद्धयस्तद्धीनानां लोके निर्धातो दृष्टः । 'अक्रोधनः' (१. १. २३) 'क्रोधादींश्च---' (१. ११. २५) इति लि नात् । निर्हत्य अपहृत्य । भूतदाहान् दोषेषु(न?) ह्युद्भुतेषु भूतानि द. हन्त इव अग्निना परितप्यन्ते । अतो भूतदाहा दोषा उच्यन्ते । तान् निहत्य । क्षेमं निर्भय मोक्षं गच्छति। ___"आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन"अभयं वै जनक प्राप्तो अलि' न भवति विदषां ततो भयम' इत्यादिश्रतिस्मतिभ्य. । न दोषप्रशममात्रेणाऽब्रह्मविदः क्षेमप्राप्तिरित्याह-पण्डित इति । ब्रह्मविदि ह्यत्र पण्डितशब्दः प्रयुक्तो, न शास्त्रविदि । (१)"तस्माद् ब्राह्मणः पा ण्डित्य निर्विद्य" इति श्रुतेः । इहाऽऽत्मविद्याधिकारात । यदि तर्हि दोषनिहरणं पण्डितोऽप्यपक्षेत, तं प्रति न हि ब्रह्मवि द्या क्षेमप्राप्तिनिमित्तम् । यदि ब्रह्मविद्यैव क्षेमप्राप्तिनिमित्तं, ब्रह्मविद्या नन्तरमेव न दुःखमुपलभेत । नैष दोषः । उक्तो ह्यत्र परिहारः--सम्यग ज्ञानबलावष्टम्भाद् बलिनो योगा दुर्वलान् दोषान् मिथ्याप्रत्ययभवान् निहन्तुमलमिति । तस्माद् ब्रह्मविद्ययैव क्षेमप्राप्तिः । अन्यथा दोषनिह

रणकर्मक्षययोरसम्भवात् । १. ब. उ. ३. ५. १. wwwPhomemain ८ आपस्तम्बधर्मसूत्रे (प.८)क.२३ विद्यया चेद् दोषनिहरणकर्मक्षयावश्यं भवतः, तत इदमयनका. यत्वाद् दोषनिहरणस्य नित्यानुवाद रूपमनर्थकम्, निहत्येति, न, प्रवृत्तकर्माक्षिप्तत्वाद् दोषाणाम्। द्विविधानि बनेकजन्मान्तरकृतानि कर्माणि-फलदानाय प्रवृत्तान्यप्रवृत्तानि च । यत्तु प्रवृत्त कर्म, तेनाक्षि ना दोषाः कर्तुः सुखदुःखादिफलदानाय, दोषाभावे फलारम्भकत्वा. नुपपत्तेः । न हि रागद्वेषादिशून्ये सुखदुःख प्रवृत्तिलब्धिः कदाचित् कस्यचिदिह दृश्यते । तस्मात् फलदानाय प्रवृत्तेन कर्मणाक्षिप्ता दोषाः प्रसङ्गेन प्राप्तबला यत्नतो निहर्तव्या । प्रवृत्याधिक्यहेतुत्वप्रसङ्गात् । अत एवेदमुक्तम्-दोषाणां तु निर्घातो योगमूले इह जीवित इति। मन्द. मध्यमोत्तमापेक्षत्वाच्च । ब्रह्मविदामपि न सर्वेषां समा बह्मप्रतिपत्तिः, विवेकातिशयदर्शनात कस्याचत । 'एष ब्रह्मविदां वरिष्ट' इति च श्रुतः सम्यग्दर्शनसम्पन्न' इति च स्मृतः। मन्दमध्यमब्रह्मविदपेक्षया त्याग. वैराग्येन्द्रियजयाविधेरर्थवत्त्वम् : उत्तम ब्रह्मविदां त्वर्थप्राप्तमेतत् सवमि. त्यनुवादमात्रम् । (१) रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते, इति वचनात् गुणा तीत्तलक्षणवचनेभ्यश्च । प्रवृत्तकांक्षिप्तदोषात् तजानतचेष्टाभ्यश्च भ. वति विदुषोऽपि देहान्तरोत्पत्तिरिति चेद-मुक्तषुवत् प्रवृत्तकाक्षिप्त त्वाद् विद्वहोषचेष्टानां प्रवृत्त कर्मविभागनवोपक्षीणशक्तित्वात प्रयोजना न्ताराभावाच्च न जन्मान्तरारम्भकत्वमुपपद्यते । यद्यप्रवृत्तं कम, तत सत्यवावस्थमेव ब्रह्मविद्याहुताशनदग्धबीजशक्तित्वाचाल जन्मान्तरार. म्भाय, 'क्षीयन्ते चाऽस्य कमाणि'(२) 'ज्ञानाग्निः सर्वकमाणि'इत्यादिश्रु. तिस्मृतिभ्यः । अतः सिद्धा पण्डितस्य दोषनिहरणात क्षमप्राप्तिः ॥ ११॥

१. श्रीभ० गीता० २. ५९. २. श्रीभगव. ४. ३७.
05 अथ भूतदाहीयान्दोषानुदाहरिष्यामः

अथ भूतदाहीयान्दोषानुदाहरिष्यामः ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. Now we will enumerate the faults which tend to destroy the creatures.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ भूतदाहीयान्दोषानुदाहरिष्यामः ॥ १२ ॥ ४॥

टिप्पनी⑥

भूतानां दाहो भूतदाहः तस्मै हिताः भृतदाहीयाः तस्मै हितमिति छः।

05 क्रोधो हर्षो

क्रोधो हर्षो रोषो लोभो मोहो दम्भो द्रोहो मृषोद्यमत्याशपरीवादावसूया काममन्यू अनात्म्यमयोगस्तेषां योगमूलो निर्घातः ॥ १३ ॥ ५ ॥

▼

⑤

>

▼ Bühler

5. (These are) anger, exultation, grumbling, covetousness, perplexity, doing injury, hypocrisy, lying, gluttony, calumny, envy, lust, secret hatred, neglect to keep the senses in subjection, neglect to concentrate the mind. The eradication of these (faults) takes place through the means of (salvation called) Yoga.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

क्रोधो हर्षो रोषो लोभो मोहो दम्भो द्रोहो मृषोद्यमत्याशपरीवादावसूया काममन्यू अनात्म्यमयोगस्तेषां योगमूलो निर्घातः ॥ १३ ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

7ताडनाक्रोशादिहेतुकोऽन्तःकरणविक्षोभः स्वेदकम्पादिलिङ्गः क्रोधः । हर्षः इष्टलाभाच्चेतस उद्रेको रोमाञ्चादिलिङ्गः । रोषः क्रोधस्यैव कियानपि भेदो मित्रादिषु प्रतिकूलेषु मनसो वैलोम्यमात्रकार्यकरः। लोभो द्रव्यसङ्गः, यो धर्मव्ययमपि रुणद्धि । मोहः कार्याकार्ययोरविवेकः। स च प्रायेण क्रोधादिजन्योऽपि पृथगुपदिश्यते कदाचित्तदभावेऽपि सम्भवतीति । दम्भो धार्मिकत्व8प्रकाशनेन लोकवञ्चनम् । द्रोहोऽपकारः। मृषोद्यमनृतवादः । अत्याशोऽत्यशनम् । परीवादः परदोषाभिधानम् । असूया परगुणे9ष्वक्षमा । कामः स्त्रीसंसर्गः । मन्युः गूढो द्वेषः । अनात्म्य अजितेन्द्रियत्वं जिह्वाचापलादि । अयोगो विक्षिप्तचित्तता । एते भूतदाहीया दोषाः । तेषां योगमूलो निर्घातः ॥५॥

06 अक्रोधोऽहर्षोऽरोषोऽलोभोऽमोहोऽदम्भोऽद्रोहः सत्यवचनमनत्याशोऽपैशुनमनसूया संविभागस्त्याग

अक्रोधोऽहर्षोऽरोषोऽलोभोऽमोहोऽदम्भोऽद्रोहः सत्यवचनमनत्याशोऽपैशुनमनसूया संविभागस्त्याग आर्जवं मार्दवं शमो दमः सर्वभूतैरविरोधो योग आर्यमानृशंसं तुष्टिरिति सर्वाश्रमाणां समयपदानि तान्यनुतिष्ठन्विधिना सार्वगामी भवति ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. Freedom from anger, from exultation, from grumbling, from covetousness, from perplexity, from hypocrisy (and) hurtfulness; truthfulness, moderation in eating, silencing a slander, freedom from envy, self-denying liberality, avoiding to accept gifts, uprightness, affability, extinction of the passions, subjection of the senses, peace with all created

beings, concentration (of the mind on the contemplation of the Ātman), regulation of one's conduct according to that of the Āryas, peacefulness and contentedness;--these (good qualities) have been settled by the agreement (of the wise) for all (the four) orders; he who, according to the precepts of the sacred law, practises these, enters the universal soul.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अक्रोधोऽहर्षोऽरोषोऽलोभोऽमोहोऽदम्भोऽद्रोहः सत्यवचनमनत्याशोऽपैशुनमनसूया संविभागस्त्याग आर्जवं मार्दवं शमो दमः सर्वभूतैरविरोधो योग आर्यमानृशंसं तुष्टिरिति सर्वाश्रमाणां समयपदानि तान्यनुतिष्ठन् विधिना 10सार्वगामी भवति ॥ १४ ॥ ६॥

प्रस्तावः⑥

के पुनस्ते योगा इति, उच्यते —

टिप्पनी⑥

के पुनस्ते योगाः ? तानाह—
एते चाऽक्रोधादयोऽपि भावरूपाः न क्रोधाद्यभावमात्रम् , क्रोधादिनिर्घातहेतुतयोपदेशात् । के पुनस्ते ? अक्रोधः, क्रोधादिषु प्रसक्तेष्वपि मा कार्षमिति सङ्कल्पः। अहर्षः, इष्टलाभालाभेषु चेतस ऐकरूप्यम् । अरोषः मित्रादिषु प्रतिकूलेष्वपि मनोविकाराभावः । अलोभः सन्तोषोऽलम्बुद्धिः। अमोहोऽवधानम् । अदम्भो धर्मानुष्ठानम् । अद्रोहः परेष्वपकारिष्वप्यनपकारः । अनसूया परगुणेष्वभिमोदनम् । सत्यवचनं यथादृष्टार्थवादित्वम् । सम्विभागः आत्मान11मुपरुध्याऽप्यग्राद्दिदानम् । त्यागोऽपरिप्रहः । आर्जवं मनोवाक्कायानामेकरूपत्वम् । मार्दवं सूपगम्यता। शमः मन्युपरित्यागः । दमः12इन्द्रियजयः । एताभ्यामेव गतत्वात् पूर्वस्वस्मिन् क्रमे अकामः, अमन्युः, आत्मवत्वमिति नोपदिष्टम् । सर्वभूतैरविरोधः । सर्वग्रहणं क्षुद्रैरविरोधार्थम् । योगः ऐकाप्यम् । आर्याणां भावः आर्यं शिष्टाचारानुपालनम् । आनृशंसं आनृशंस्यं

व्यवहारवचनादौ प्रसक्तनैष्ठुर्यस्य वर्जनम् । तुष्टिरनिर्वेदः । समयो ब्यवस्था । सा च प्रकरणाद्धर्मज्ञानाम् । पदं विषयः । एते अक्रोधादयः सर्वेषामाश्रमाणां सेव्याः, न केवलं योगिनामेवेति धर्मज्ञानां समय इत्यर्थः । एते हि भाव्यमानाः क्रोधादीनू समूलघातं घ्नन्ति । अतश्च तान्यनुतिष्ठन् विधिना सार्वगामी भवति । तान्यक्रोधादीनि तुष्ट्यन्तानि । विधिना यथाशास्त्रम् । अनुतिष्ठन् सार्वगामी सर्वस्मै हितः सार्वः आत्मा तं गच्छति प्राप्नोति। 'विधिने'ति वचनात्13प्राणिनां तु वधो यत्र तत्र साक्ष्यनृतं वदेत् ।' इत्यादिके विषये अनृतवचनादावपि न दोष इति ॥ ६ ॥

इति श्रीहरदत्तविरचितायामापस्तम्बधर्मसत्रवृत्तावुज्वलायां त्रयोविंशी कण्डिका ॥ २३ ॥

इति चापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तमिश्रविरचितायामु ज्ज्वलायां प्रथमप्रश्नेऽष्टमः पटलः ॥८॥ .

▼ शङ्कराचार्य-विवरणम्

अक्रोधोऽहर्षोऽरोषोऽलोभोऽमोहोऽदम्भोऽद्रोहः सत्यवचनमनत्याशोऽपैशुनमनसूया संविभागस्त्याग आर्जवं मार्दवं शमो दमः सर्वभूतैरविरोधो योग आर्यमानृशंसं तुष्टिरिति सर्वाश्रमाणां समयपदानि तान्यनुतिष्ठन्विधिना सार्वगामी भवति ६

विवरणम् । __ अक्रोधोऽहर्षः इत्येवमाद्या अयोगविपरीताः । अतस्ते समाधिलक्षण स्वाद योगा। सविभागः आत्मनो यात्रालाधनस्याऽर्थिभ्यः संविभजनम् । स्यागः दृष्टादृष्टेष्टभोगानां शक्तितः परित्यजम् , तत्साधनानां च । आर्जवम् ऋजुता, अदुष्टाकलनपूर्विका वाङ्मनाकायानां प्रवृतिः। मार्दव मृदुत्वम् । शमोऽन्तःकरणोपशमः। दमो बाह्यकरणापेशमः। इदमन्यद् योगलक्षणं संक्षेपत उच्यते-सर्वभूताविरोधो योगः, विरोघे हि भूतानां पीडा, तदभावेऽपीडा । स एव सर्वभूतापीडालक्षणो योगः। आर्यम् आर्याणां भावः अक्षुद्रता । आनृशंसम् आनृशंस्यम् , अक्रौर्यम् । तुष्टिः लब्धव्यस्याऽलाभेऽपि चेतसा प्रसन्नतयाऽवस्थानं लाभ इव । सर्व भताविरोलक्षणांहिला परिव्राजकस्यैव सम्भवतीत्यायर्यादीनां त्रया. णामन्येषां चाविरुद्धानां सर्वाश्रमान प्रति प्राप्तिरितीतिशब्दसाम द्‚ि इतिशब्दस्य च प्रकारवचनत्वादार्यादीनीत्थंप्रकाराणि सर्वाश्र मान् प्रति गमयति सर्वाश्रमाणां समयपदानोति । समयस्थानानीत्ये तत् । अवश्यानुष्ठेयानीत्यर्थः । तान्येतानि यथोक्तान्यनुतिष्ठन् विधिना सर्वगामी सर्वगमनशीलः, शानाभिव्यक्तिक्रमेण । भवति मुच्यते इत्यर्थः ।। इति श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीशङ्करभगवत्पादाचार्यस्य कृतिषु आपस्तम्बीयधर्मशास्त्राध्यात्मपटलविवरणम् ॥

इति अष्टमः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
↩

2. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

3. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

4. आप० ध० १.३०.८.↩

5. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

6. आप० ध० १.३०.८.↩

7. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

8. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

9. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

10. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

11. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

12. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

13. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

၀၉①

२४①

01 क्षत्रियं हत्वा गवां④

क्षत्रियं हत्वा गवां सहस्रं वैरयातनार्थं दद्यात् १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. He who has killed a Kṣatriya shall give a thousand cows (to Brāhmaṇas) for the expiation of his sin. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

क्षत्रियं हत्वा गवां सहस्रं वैरयातनार्थं दद्यात् ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

क्षत्रियं हत्वा गवां सहस्रं ब्राह्मणेभ्यो दद्यात्। किमर्थम् ? वैरयातनार्थं वैरं पापं तस्य यातनं निहरणं तदर्थम् "ऋषभश्चात्राधिकः सर्वत्र प्रायश्चित्तार्थ"(२४.४)इति वक्ष्यति । तेन प्रायश्चित्तरूपमिदं दानम्। प्रायश्चित्तं च पापक्षयार्थम् । तत्किमर्थं वैरयातनार्थमित्युच्यते ? केचिन्मन्यन्ते नाऽभुक्तं क्षीयते कर्म पुण्यमपुण्यं च । प्रायश्चित्तं तु नैमित्तिकं कर्मान्तरं 2यथा गृहदाहादौ क्षामवत्यादय इति । तान्निराकर्तुमिदमुक्तम् । श्रौतेऽप्युक्तं-3दोषनिघातार्थानि भवन्ती'ति । अपर आह-यो येन

हन्यते स हतो म्रियमाणस्तस्मिन्वैरं करोति-अपि नामाऽहमेनं जन्मान्तरेऽपि वध्यासमिति । तस्य वैरस्य यातनार्थमिदमिति प्रायश्चित्तार्थत्वमपि वक्ष्यमाणेन सिद्धमिति ॥ १॥
02 शतं वैश्ये

शतं वैश्ये २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. (He shall give) a hundred cows for a Vaiśya, 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शतं वैश्ये ॥२॥

टिप्पनी⑥

वैश्ये हते गवां शतं दद्यात् ॥ २॥

03 दश शूद्रे

दश शूद्रे ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Ten for a Śūdra, 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दश शूद्रे ॥३॥

टिप्पनी⑥

शूद्रे हते दश दद्यात् । गा इति प्रकरणागम्यते ॥३॥

04 ऋषभश्चात्राधिकः सर्वत्र प्रायश्चित्तार्थः

ऋषभश्चात्राधिकः सर्वत्र प्रायश्चित्तार्थः ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. And in every one (of these cases) one bull (must be given) in excess (of the number of cows) for the sake of expiation.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ऋषभश्चाऽत्राधिकः सर्वत्र प्रायश्चित्तार्थः॥ ४॥

टिप्पनी⑥

सर्वेष्वेतेषु निमित्तेषु ऋषभोऽप्यधिको देयः। न केवलं गा एव । इदं प्रायश्चित्तत्रयं मानवेन समानविषयम् । यथाऽऽह—

6अकामतस्तु राजन्यं विनिपात्य द्विजोत्तमः ।
ऋषभैकसहस्रा गा दद्याच्छुद्ध्यर्थमात्मनः ॥
त्र्यब्दं चरेद्वा नियतो जटी ब्रह्महणो व्रतम् ।
वलन् दूरतरे ग्रामाद्वृक्षमूलनिकेतनः ॥

एतदेव चरेदब्दं प्रायश्चित्तं द्विजोत्तमः।
प्रमाप्य वैश्यं वृत्तस्थ दद्याद्वैकशतं गवाम् ॥
एतदेव व्रतं कृत्स्नं षण्मासान्श्छूद्रहा चरेत् ।
ऋषभैकादशा वाऽपि दयाद्विप्राय गास्सिताः ॥ इति ॥४॥

05 स्त्रीषु चैतेषामेवम्

स्त्रीषु चैतेषामेवम् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. And if women of the (three castes mentioned have been slain) the same (composition must be paid).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्त्रीषु चैतेषामेवम् ॥ ५॥

टिप्पनी⑥

एतेषां क्षत्रियादीनां स्त्रीषु च हतासु एवमेव प्रायश्चित्तं यथा पुरुषेषु॥५॥

06 पूर्वयोर्वर्णयोर्वेदाध्यायं हत्वा सवनगतं

पूर्वयोर्वर्णयोर्वेदाध्यायं हत्वा सवनगतं वाभिशस्तः ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. He who has slain a man belonging to the two (first-mentioned castes) who has studied the Veda, or had been initiated for the performance of a Soma-sacrifice, becomes an Abhiśasta. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पूर्वयोर्वर्णयोर्वेदाध्यायं हत्वा सवनगतं वाऽभिशस्तः ॥६॥

टिप्पनी⑥

उक्तेषु यौ पूर्वौ वर्णौ क्षत्रियवैश्यौ तयोर्यो वेदाध्यायः अधीतवेदः तं हत्वा अभिशस्तो भवति । अभिशस्त इति ब्रह्मघ्नोऽभिधानम् । सवनगतं वा, तयोरेव वर्णयोः यः सवनगतः सवनशब्देन न प्रातस्सवनादीन्युच्यन्ते, नापि यागमात्रम् । किं तर्हि ? सोमयागः। तत्र यो दीक्षितः सवनगतः 'ब्राह्मणो वा एष जायते यो दीक्षित' इति दर्शनात्। तं च हत्वाऽभिशस्तो भवति । पूर्वयोर्वर्णयोरिति किम् ? ब्राह्मणे मा भूत् । इष्यते ब्राह्मणे। वक्ष्यति च 'ब्राह्मणमात्रं 'चे'(२४.७.)ति। एवं तर्हि शूद्रे मा भूत् । न शुद्रो वेदाध्यायः सवनगतो वा भवति । इदं तर्हि प्रयोजनं पूर्वयोर्वर्णयोरेव यथा स्यात्तयोरेव यावनुलोमी8 करणाम्बष्ठौ तयोर्मा भूदिति । तेनान्ये वर्णधर्मा अनुलोमानामपि भवन्ति ॥ ६ ॥

07 ब्राह्मणमात्रञ् च

ब्राह्मणमात्रं च ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. And (he is called an Abhiśasta) who has slain a man belonging merely to the Brāhmaṇa caste (though he has not studied the Veda or been initiated for a Soma-sacrifice),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ब्राह्मणमात्रं च ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

हत्वाऽभिशस्तो भवति । मात्रग्रहणान्नाऽभिजनविद्यासंस्काराद्यपेक्षा ॥

08 गर्भञ् च तस्याविज्ञातम्

गर्भं च तस्याविज्ञातम् ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. Likewise he who has destroyed an embryo of a (Brāhmaṇa, even though its sex be) undistinguishable,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गर्भ च तस्याऽविज्ञातम् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

तस्य ब्राह्मणमात्रस्य । गर्भं च स्त्रीपुन्नपुंसकभेदेनाऽविज्ञातम् । हत्वाभिशस्तो भवति ॥८॥

09 आत्रेयीञ् च स्त्रियम्

आत्रेयीं *(=ऋतुस्नाताम्)* च स्त्रियम् ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. Or a woman (of the Brāhmaṇa caste) during her courses. 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आत्रेयीं च स्त्रियम् ॥९॥

टिप्पनी⑥

10 'ऋतुस्नातामात्रेयीमाहु'रिति वसिष्ठः । तस्येति वर्तते । आत्रेयीं च ब्राह्मणनस्त्रियं हत्वाऽभिशस्तो भवति । ब्रह्महा भवति । सम्भवत्यस्यां ब्राह्मणगर्भ इति । अत्रिगोत्रजा आत्रेयीत्यन्ये ॥ ९॥

10 तस्य निर्वेषः

तस्य निर्वेषः *(=प्रायश्चित्तम्)* १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. (Now follows) the penance for him (who is an Abhiśasta).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्य निर्वेषः ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

तस्य सर्वप्रकाराभिशस्तस्य निर्वेषः प्रायश्चित्तं वक्ष्यते ॥१०॥

11 अरण्ये कुटिङ् कृत्वा

अरण्ये कुटिं कृत्वा वाग्यतः शवशिरध्वजोऽर्धशाणीपक्षमधोनाभ्युपरिजान्वाच्छाद्य ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. He (himself) shall erect a hut in the forest, restrain his speech, carry (on his stick) the skull (of the person slain) like a flag, and cover the space from his navel to his knees with a quarter of a piece of hempen cloth. 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अरण्ये कुटिं कृत्वा वाग्यतः शवशिरध्वजोऽधशाणोपक्षमधोनाभ्युपरिजान्वाच्छाद्य ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

कृत्वेति वचनान्न परकृता कुटी ग्राह्या । वाक् यता नियता येन स वाग्यतः वाचयमः। आहिताग्न्यादिषु दर्शनात् निष्ठान्तस्य परनिपातः। शवशिरः ध्वजो यस्य स शवशिरोध्वजः । सकारलोपश्छान्दसः। स्वव्यापादितस्य शिरो ध्वजदण्डस्याग्रे प्रोतं कृत्वेत्यर्थः यस्य कस्यचिच्छवस्येत्यन्ये । शणस्य विकारःशाणी पटी तस्या अर्धमर्धशाणी तस्याः पक्षमर्धशाणीपक्ष आयामविस्तारयोरुभयोरप्यर्धम् । अधो नाभि उपरिजानु च यथा भवति तथा तावन्तं प्रदेशमाच्छाद्य । सापेक्षत्वात् 'ग्रामे प्रतिष्ठेते'(२४.१४.)ति वक्ष्यमाणेन सम्बन्धः । मध्ये क्रियान्तरविधिः ॥११॥

12 तस्य पन्था अन्तरा

तस्य पन्था अन्तरा वर्त्मनी १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. The path for him when he goes to a village, is the space between the tracks (of the wheels).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्य पन्था अन्तरा वर्मनी ॥ १२॥

टिप्पनी⑥

तस्य ग्रामं प्रविशतः वर्त्मनी अन्तरा शकटादेर्वत्मनोर्मध्ये पन्था वेदितव्यः । अपर आह- यत्र रथ्यादावुभयोः पार्श्वयोर्वर्त्मनी भवतः तत्र तयोर्मध्येन सूकरादिपथेन सञ्चरेदिति ॥ १२ ॥

13 दृष्ट्वा चान्यमुत्क्रामेत्

दृष्ट्वा चान्यमुत्क्रामेत् १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. And if he sees another (Ārya), he shall step out of the road (to the distance of two yards).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दृष्ट्वा चाऽन्यमुत्क्रामेत् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

अन्यमार्यं दृष्ट्वा पथ उत्क्रामेत् । तत्र कौटिल्यः12 'पञ्चारत्नयो रथपथश्चत्वारो हस्तिपथः द्वौ क्षुद्रपशुमनुष्याणा'मिति । तेन मनुष्येषु द्वौ हस्तावुत्क्रामेदिति ॥ १३॥

14 खण्डेन लोहितकेन शरावेण

खण्डेन लोहितकेन शरावेण ग्रामे प्रतिष्ठेत १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. He shall go to the village, carrying a broken tray of metal of an inferior quality.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

खण्डेन लोहितकेन शरावेण ग्रामे प्रतिष्ठेत ॥१४॥

टिप्पनी⑥

खर्परमात्रं खण्डम् । 13लोहितकमनाप्रीतम् । एवम्भूतं शरावं भिक्षा पात्रं गृहीत्वा ग्रामे प्रतिष्ठेत । ग्रामं गच्छेत् ॥ १४ ॥

15 कोऽभिशस्ताय भिक्षामिति सप्तागाराणि

कोऽभिशस्ताय भिक्षामिति सप्तागाराणि चरेत् १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. He may go to seven houses only, (crying,) 'Who will give alms to an Abhiśasta?'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कोऽभिशस्ताय भिक्षामिति14 सप्ताऽगारं चरेत् ॥१५॥

टिप्पनी⑥

15अभिशस्तो ब्रम्हहा । तस्मै मह्यं को धार्मिको भिक्षां ददातीति उच्चैर्ब्रुवाणः सप्ताऽगाराणि चरेत् । सप्तग्रहणमधिकनिवृत्यर्थम् । द्वित्रेष्वागारेषु यदि पर्याप्तं लभ्यते तदा तावत्येव ॥ १५ ॥

16 सा वृत्तिः

सा वृत्तिः १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. That is (the way in which he must gain) his livelihood.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सा वृत्तिः॥ १६॥

टिप्पनी⑥

सप्तस्वगारेषु या च यावती लभ्यते सैव वृत्तिः अपर्याप्ताऽपि ॥१६॥

17 अलब्धोपवासः

अलब्धोपवासः १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. If he does not obtain anything (at the seven houses), he must fast.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अलब्ध्वोपवासः ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

यदि सप्तागारेषु न किञ्चिल्लभ्यते तदोपवास एव तस्मिन्नहनि ॥

18 गाश्च रक्षेत्

गाश्च रक्षेत् १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. And (whilst performing this penance) he must tend cows.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गाश्च रक्षेत् ॥१८॥

टिप्पनी⑥

एवं प्रायश्चित्तं कुर्वन्नहरहर्गाश्च रक्षेत् ॥ १८॥

19 तासान् निष्क्रमणप्रवेशने द्वितीयो

तासां निष्क्रमणप्रवेशने द्वितीयो ग्रामेऽर्थः १९

▼

⑤

>

▼ Bühler

19. When they leave and enter the village, that is the second occasion (on which he may enter) the village.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तासां निष्क्रमणप्रवेशने द्वितीयो ग्रामेऽर्थः ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

तासां गवां निष्क्रमणसमये प्रवेशनसमये च द्वितीयो ग्रामेऽर्थः प्रयोजनम् । भिक्षार्थ प्रथममुक्तम् । नाऽन्यथा ग्रामं प्रविशेदित्युक्तं भवति ॥

20 द्वादश वर्षाणि चरित्वा

द्वादश वर्षाणि चरित्वा सिद्धः सद्भिः संप्रयोगः २०

▼

⑤

>

▼ Bühler

20. After having performed (this penance) for twelve years, he must perform) the ceremony known (by custom), through which he is re-admitted into the society of the good. 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

द्वादश वर्षाणि17 चरित्वा सिद्धः सद्भिस्सम्प्रयोगः ॥२०॥

टिप्पनी⑥

एवं द्वादश वर्षाणि व्रतमेतच्चरित्वा सद्भिः सम्प्रयोगः कर्तव्यः । सद्भिः सह सम्प्रयुज्यते येन विधिना स कर्तव्यः। स शिष्टाचारे शास्त्रान्तरे च सिद्धः स उच्यते-कृतप्रायश्चित्तः स्वहस्ते यवसं गृहीत्वा गामाह्वयेत् । सा यद्यागत्य श्रद्दधाना भक्षयति तदा सम्यगनेन व्रतं चरितमिति जानीयात् , अन्यथा नेति ॥ २० ॥

21 आजिपथे वा कुटिम्कृत्वा

आजिपथे वा कुटिङ्कृत्वा ब्राह्मणगव्योपजिगीषंआणो वसेत्त्रिः प्रतिराद्धोऽपजित्य वा मुक्तः २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. Or (after having performed the twelve years' penance), he may build a hut on the path of robbers, and live there, trying to take from them the cows of Brāhmaṇas. He is free (from his sin), when thrice he has been defeated by them, or when he has vanquished them. 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आजिपथे वा कुटिं कृत्वा ब्राह्मणगव्योऽपजिगीषमाणो वसेस्त्रिः प्रतिराद्धोऽपजित्य वा मुक्तः ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

सङ्ग्रामेण जेतव्या दस्यवो येन पथा ग्रामं प्रविश्य गवादिकमपहृत्याऽपसरन्ति स आजिपथः । तस्मिन्वा कुटिं कृत्वा वसेत् । किं चिकीर्षन् ? ब्राह्मणगव्यः 19 'वा छन्दसी'ति पूर्वसवर्णाभावे यणादेशः। ब्राह्मणगवीरपजिगीषमाणः दस्यूनपजित्य प्रत्याहर्तुमिच्छन् । एष वसन् दस्युभिर्ह्रियमाणं गवादिकमुद्दिश्य तैर्युद्धं कुर्वन् त्रिः प्रतिराद्धः तैरपजितः अपजित्य वा तान् गवादिकं प्रत्याहृत्य ब्राह्मणेभ्यो दत्वा मुक्तो भवति तस्मादेनसः । द्वादशवार्षिके प्रवृत्तस्येदम् । एवमुत्तरमपि ॥ २१ ॥

22 आश्वमेधिकं वावभृथमवेत्य मुच्यते

आश्वमेधिकं वावभृथमवेत्य मुच्यते २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. Or he is freed (from his sin), if (after the twelve years' penance) he bathes (with the priests) at the end of a horse-sacrifice. 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आश्वमेधिकं वाऽवभृथमवेत्य मुच्यते ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

अथ वाऽश्वमेधावभृथे स्नात्वा मुच्यते ॥ २२ ॥

23 धर्मार्थसन्निपातेऽर्थग्राहिण एतदेव

धर्मार्थसंनिपातेऽर्थग्राहिण एतदेव २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. This very same (penance is ordained) for him who, when his duty and love of gain come into conflict, chooses the gain. 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

धर्मार्थसन्निपातेऽर्थग्राहिण एतदेव ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

धर्मस्याऽग्निहोत्रादेः, अर्थस्य च कुड्यकरणादेः 22 युगपद्यत्र सन्निपातः तोभयानुग्रहासम्भवे धर्मलोपेन योऽर्थं गृह्णाति तस्याऽप्येतदेव प्रायश्चित्तम् । अथवा धर्मं हित्वाऽर्थहेतोः कौटसाक्ष्यादि करोति तद्विषयमेतत् । अत्र गौतमः—
23 'कौटसाक्ष्यं राजगामि पैशुनं गुरोरनृताभिशंसनं महापातकसमानी'ति । मनुरपि—

24 अनृतं च समुत्कर्षे राजगामि च पैशुनम् ॥
गुरोश्चाऽलीकनिर्बन्धः समानि ब्रह्महत्यया' ॥ इति ॥ २३ ॥

24 गुरुं हत्वा श्रोत्रियं

गुरुं हत्वा श्रोत्रियं वा कर्मसमाप्तमेतेनैव विधिनोत्तमादुच्छवासाच्चरेत् २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. If he has slain a Guru or a Brāhmaṇa, who has studied the Veda and finished the ceremonies of a Soma-sacrifice, he shall live according to this very same rule until his last breath. 25

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गुरुं हत्वा श्रोत्रियं वा कर्मसमासमेतेनैव विधिनोत्तमादुच्छवासाच्चरेत् ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

गुरुः पित्राचार्यादिः । श्रोत्रियोऽधीतवेदः । स यदि कर्मसमाप्तो भवति सोमान्तानि कर्माणि समाप्तानि यस्य स कर्मसमाप्तः । तो हत्वा एतेनैवाऽनन्तरोक्तेन विधिना ओत्तमादुच्छवासात् । उत्तम उच्छवासःप्राणविनियोगः । आ तस्माच्चरेत् ॥ २४॥

25 नास्यास्मिंल्लोके प्रत्यापत्तिर्विद्यते कल्मषन्

नास्यास्मिंल्लोके प्रत्यापत्तिर्विद्यते कल्मषं तु निर्हण्यते २५

▼

⑤

>

▼ Bühler

25. He cannot be purified in this life. But his sin is removed (after death). 26

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नास्याऽस्मिंल्लोके प्रत्यापत्तिर्विद्यते ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

अश्वमेधावभृथादिषु सम्भवत्स्वपि अस्याऽस्मिंल्लोके अस्मिन् जीविते प्रत्यापत्तिः शुद्धिर्नास्तीत्यर्थः ॥ २५ ॥

सूत्रम्⑥

कल्मषं तु निर्हण्यते ॥ २६ ॥

टिप्पनी⑥

मृतस्य कल्मषं निर्हण्यते । 27तेन पुत्रादिभिः संस्कारादिः कर्तव्य इति भावः । अन्ये तु पूर्वं सूत्रं तन्निवृत्त्यर्थं मन्यन्ते । प्रत्यापत्तिः पुत्रादिभिः पित्रादिभावेन सम्बन्ध इति ॥२६॥

इति हरदत्तविरचितायामापस्तम्बसूत्रवृत्तौ चतुर्विंशी कडिका ॥२४॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
4. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
5. Manu II, 35.↩
6. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
7. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
8. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
9. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
10. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
11. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the

commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

12. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

13. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

14. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

15. आप० ध० १.३०.८.↩

16. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

17. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

18. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

19. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

20. Manu II, 144.↩

21. Manu II, 146-148.↩

22. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

23. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

24. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

25. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

26. Manu II, 147.↩

27. आप० ध० १.३०.८.↩

२५①

01 गुरुतल्पगामी सवृषणं शिश्नम्④

गुरुतल्पगामी सवृषणं शिश्नं परिवास्याञ्जलावाधाय दक्षिणां दिशमनावृत्तिं व्रजेत् १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. He who has had connection with a Guru's wife shall cut off his organ together with the testicles, take them into his joined hands and walk towards the south without stopping, until he falls down dead. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गुरुतल्पगामी सवृषणं शिश्न परिवास्याऽञ्जलावाधाय दक्षिणां दिशमनावृत्ति व्रजेत् ॥ १॥

टिप्पनी⑥

गुरुरत्र पिता, नाऽऽचार्यादिः। तल्पशब्देन शयनवाचिना भार्या लक्ष्यते । सा च साक्षाज्जननी2 न तत्सपत्नी। तां गत्वा सवृषणं साण्डं शिश्नं परिवास्य क्षुरादिना छित्वाऽञ्जलावाधाय दक्षिणां दिशं व्रजेत् । अनावृत्तिम् आवृत्तिर्न क्रियते यस्यां तां दिशमनावर्तमानो गच्छेत् । अथ ये3

दक्षिणस्योदधेस्तीरे वसन्ति तेऽपि यावद्देशं गत्वा उदधिमेव प्रवेक्ष्यन्ति । मरणं ह्यत्र विवक्षितम् । अत्र सर्वतः—

4पितृदारान् समारुह्य मातृवर्जं नराधमः।
भगिनीं मातुराप्तां वा स्वसारं वाऽन्यमातृजाम् ॥
एता गत्वा स्त्रियो मोहात5 तप्तकृच्छ्रं समाचरेत् ॥ इति ।
नारदस्तु—
'माता मातृष्वसा श्वश्रूर्मातुलानी पितृष्वसा ।
6पितृव्यपत्नी शिष्यस्त्री भगिनी तत्सखी स्नुषा ।
दुहिताऽऽचार्यभार्या च सगोत्रा शरणागता ।
राशी प्रव्रजिता धात्री साध्वी वर्णोत्तमा च या । आसामन्यतमां गत्वा गुरुतल्पग उच्यते ।
शिश्नस्योत्कृन्तनं तत्र नाऽन्यो दण्डो विधीयते ॥ इति ॥ १ ॥
02 ज्वलितां वा सूर्मिम्

ज्वलितां वा सूर्मिं परिष्वज्य समाप्नुयात् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. Or he may die embracing a heated metal image of a woman. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ज्वलितां वा सूर्मिं परिष्वज्य समाप्नुयात् ॥ २॥

टिप्पनी⑥

आयसी ताम्रमयी वा अन्तस्सुषिरा स्त्रीप्रकृतिरत्र सूर्मिः। तां ज्वलितामग्नौ तप्ताम् । परिष्वज्य समाप्नुयात् समाप्तिं गच्छेत् म्रियेत ॥२॥

03 सुरापोऽग्निस्पर्शां सुराम् पिबेत्

सुरापोऽग्निस्पर्शां *(क्वतिथां)* सुरां पिबेत् ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. A drinker of spirituous liquor shall drink exceedingly hot liquor so that he dies. 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सुरापोऽग्निस्पर्शां सुरां पिबेत् ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

'गौडी पैष्टी च माध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरा।'
तस्याः पाता सुरापः । सः अग्निस्पर्शां 9अग्निकथितां सुरां पिबेत् । तया दग्धकायः शुद्ध्यति ॥ ३॥

04 स्तेनः प्रकीर्णकेशोऽए मुसलमादाय

स्तेनः प्रकीर्णकेशोऽए मुसलमादाय राजानं गत्वा कर्माचक्षीत । तेनैनं हन्याद्वधे मोक्षः ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. A thief shall go to the king with flying hair, carrying a club on his shoulder, and tell him his deed. He (the king) shall give him a blow with that (club). If the thief dies, his sin is expiated. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्तेनः प्रकीर्णकेशोंऽसे मुसलमाधाय राजानं गत्वा कर्माऽऽचक्षीत । तेनैनं हन्याधे मोक्षः ॥ ४॥

टिप्पनी⑥

स्तनो ब्राह्मणस्वर्णहारी। अंसे स्वे स्कन्धे । मुसलमाधाय आयसं खादिरं वा धारयन् । राजानं गवा कर्माऽऽचक्षीत-एवंकर्माऽस्मि, शाधि मामिति। स तेन मुसलेन एनं स्तेनं हन्यात् , यथा मृतो भवति । 11वधेन स्तेयात् मोक्षो भवति ॥ ४॥

05 अनुज्ञातेऽनुज्ञातारमेनः

अनुज्ञातेऽनुज्ञातारमेनः ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. If he is forgiven (by the king), the guilt falls upon him who forgives him, 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनुज्ञातेऽनुज्ञातारमेनः स्पृशति ॥५॥

टिप्पनी⑥

यदि राजा दयादिना तमनुजानीयात् गच्छेति, तदा तमनुज्ञातारं राजानमेव तदेनः स्पृशति ॥ ५॥

06 अग्निं वा प्रविशेत्तीक्ष्णं

अग्निं वा प्रविशेत्तीक्ष्णं वा तप आयच्छेत् ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. Or he may throw himself into the fire, or perform repeatedly severe austerities, 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अग्निं वा प्रविशेत ॥६॥

टिप्पनी⑥

उत्तरमृजु ॥६॥

सूत्रम्⑥

तीक्ष्णं वा तप आयच्छेत् ॥ ७ ॥

तीक्ष्णं तपः महापराकादि । तद्वा आयच्छेत् आवर्तयेत् ॥७॥

07 भक्तापचयेन वात्मानं समाप्नुयात्

भक्तापचयेन वात्मानं समाप्नुयात् ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. Or he may kill himself by diminishing daily his portion of food,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भक्तापचयेन वाऽऽत्मानं समाप्नुयात् ॥८॥

टिप्पनी⑥

भक्तमन्नम् । तस्याऽपचयो ह्रासः। प्रथमे दिने यावन्तो ग्रासाः ते एकेन न्यूना द्वितीये । एवं तृतीयादिष्वपि आ एकस्माद् ग्रासात् । तत्रापि यदि न समाप्तिः ततस्तत्रैव ग्रासपरिमाणापचयः कर्तव्यः । एवं भक्तापचयेनाऽऽत्मानं समाप्नुयात् समापयेत् ॥

08 कृच्छ्रसंवत्सरं वा चरेत्

कृच्छ्रसंवत्सरं वा चरेत् ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. Or he may perform Kṛcchra penances (uninterruptedly) for one year. 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कृच्छ्रसंवत्सरं वा चरेत् ॥ ९॥

टिप्पनी⑥

अथ वा संवत्सरमेकं नैरन्तर्येण कृच्छ्रांश्चरेत् । एषामेनस्सु गुरुषु गुरूणि, लघुषु लघूनीति व्यवस्था ॥ ९॥

09 अथाप्युदाहरन्ति स्तेयङ् कृत्वा

अथाप्युदाहरन्ति । स्तेयं कृत्वा सुरां पीत्वा गुरुदारं च गत्वा ब्रह्महत्यामकृत्वा चतुर्थकाला मितभोजनाः स्युरपोऽभ्यवेयुः सवनानुकल्पम् ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. Now they quote also (the following verse): 15

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाऽप्युदाहरन्ति ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

अस्मिन्नेव विषये पुराणश्लोकमप्युदाहरन्तीत्यर्थः ॥ १०॥

10 स्थानासनाभ्यां विहरन्त एते

स्थानासनाभ्यां विहरन्त एते त्रिभिर्वर्षैरप पापं नुन्दते १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. Those who have committed a theft (of gold), drunk spirituous liquor, or had connection with a Guru's wife, but not those who have slain a Brāhmaṇa, shall eat every fourth meal-time a little food, bathe at the times of the three libations (morning, noon, and evening), passing the day standing and the night sitting. After the lapse of three years they throw off their guilt.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्तेयं कृत्वा सुरां पीत्वा गुरुदारं च गत्वा ब्रह्महत्यामकृत्वा ।
चतुर्थकाला मितभोजिनः स्यु16रपोऽभ्यवेयुः सवनानुकल्पम् ।
स्थानासनाभ्यां विहरन्त एते त्रिभिर्वर्षैरप पापं नुदन्ते ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

ब्रह्महत्याव्यतिरिक्तानि स्तेयादीनि कृत्वा चतुर्थकालाश्चतुर्थो भोजनकालो येषाम् । यथा- अद्य दिवा भुङ्क्ते श्वो नक्तमिति, ते तथोक्ताः। तथापि मितभोजिनः न मृष्टाशिनः। 17अपोऽभ्यवेयुः भूमिगतास्वप्सु स्नानं कुर्युः । सवनानुकल्पं, यथा सवनानि प्रातस्सवनादीन्यनुक्लृप्तानि अनुसृतान्यनुष्ठितानि भवन्ति तथा18 त्रिषवणमित्यर्थः । तिष्ठेयुरहनि, रात्रावासीरन् । एवं स्थानासनाभ्यां विहरन्तः कालक्षेपं कुर्वन्तः। एते त्रिभिर्वर्षैस्तत्पापमपनुदन्ते ॥ ११ ॥

11 प्रथमं वर्णम् परिहाप्य

प्रथमं वर्णं परिहाप्य प्रथमं वर्णं हत्वा संग्रामं गत्वावतिष्ठेत । तत्रैनं हन्युः ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. (A man of any caste) excepting the first, who has slain a man of the first caste, shall go on a battle-field and place himself (between the two hostile armies). There they shall kill him (and thereby he becomes pure). 19

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रथमं वर्णं परिहाप्य प्रथमं वर्णं हत्वा सङ्ग्रामं गत्वाऽवतिष्ठेत तत्रैनं हन्युः ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

प्रथमो वर्णो ब्राह्मणः । तं हत्वा सङ्ग्रामं गत्वा सेनयोर्मध्येऽवतिष्ठेत् । किं सर्वे ? नेत्याह-प्रथमं वर्णं परिहाप्य ब्राह्मणवर्जमितरो वर्णः क्षत्रियादिरित्यर्थः । तत्र स्थितमेनं ते सैनिका हन्युः, त एनं हतं विदध्युः । अघ्नन्त एनस्विनः स्युः, यथा राजा स्तेनम् । स मृतश्शुद्ध्यति ॥ १२ ॥

12 अपि वा लोमानि

अपि वा लोमानि त्वचं मांसमिति हावयित्वाग्निं प्रविशेत् १२

▼

⑤

>

▼ Bühler

12. Or such a sinner may tear from his body and make the priest offer as a burnt-offering his hair, skin, flesh, and the rest, and then throw himself into the fire. 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अपि वा लोमानि त्वचं मांसमिति हावयित्वाऽग्निं प्रविशेत् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

अनन्तरोक्त एव विषये प्रायश्चित्तान्तरम् । इतिशब्दो लोहितादीनामप्युपलक्षणार्थः। आत्मनो लोमादीन्युत्कृत्य पुरोहितेन हावयित्वा होमं कारयित्वा पश्चात् स्वयं तस्मिन्नग्नौ प्रविशेत् , मृतः शुद्धति । तत्राऽग्निमुपसमाधाय जुहुयात्21 "लोमानि मृत्योर्जुहोमि, लोमभिर्मृत्युं वासये स्वाहा । त्वचं मृत्योर्जुहोमि त्वचा मृत्युं वासये स्वाहा ॥ लोहितं मृत्योर्जुहोमि लोहितेन मृत्युं वासये स्वाहा । स्नावानि मृत्योर्जुहोमि स्नावभिर्मृत्युं वासये स्वाहा। मांसानि मृत्योर्जुहोमि मांसैर्मृत्युं वासये स्वाहा । अस्थीनि मृत्योर्जुहोमि अस्थभिर्मृत्युं वासये स्वाहा । मज्जानं मृत्योर्जुहोमि मज्जभिमृत्युं वासये स्वाहा। मेदो मृत्योर्जुहोमि मेदसा मृत्युं वासये स्वाहा" इत्येते मन्त्राः वसिष्ठेन पठिताः ॥१३॥

13 वायसप्रचलाकबर्हिणचक्रवाकहंसभासमण्डूकनकुलडेरिकाश्वहिंसायां शूद्र वत्प्रायश्चित्तम्

वायसप्रचलाकबर्हिणचक्रवाकहंसभासमण्डूकनकुलडेरिकाश्वहिंसायां शूद्र वत्प्रायश्चित्तम् १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. If a crow, a chameleon, a peacock, a Brāhmaṇī duck, a swan, the vulture called Bhāsa, a frog, an ichneumon, a musk-rat, or a dog has been killed, then the same penance as for a Śūdra must be performed. 22

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वायसप्रचलाकबर्हिणचक्रवाकहंसभासमण्डूकनकुलडेरिकाश्वहिंसायां शूद्रवत्प्रायश्चित्तम् ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

वायसः काकः । प्रचलाकः कामरूपी कृकलासः । बर्हिणो मयूरः । चक्रवाको दिवा मिथुनचर , रात्रौ विरही। हंसो मानसवासी। भासो गृध्रविशेषः। नकुलमण्डूकादयः प्रसिद्धाः । डेरिका गन्धमूषिका । एतेषां समुदितानां वधे शूद्रवत्प्रायश्चित्तम् । प्रत्येकं वधे तु कल्प्यम् । केचित् प्रत्येकं वध एतत्प्रायश्चित्तमित्याहुः ॥१४॥

॥ इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ प्रथमप्रश्ने पञ्चविंशी कण्डिका ॥ २५ ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩

2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

5. आप० ध० १.३०.८.↩
6. मनु० स्मृ० २.६↩
7. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
8. Manu II, 35.↩
9. गौ० ध० १. १, २↩
10. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
11. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
12. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
13. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩
14. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also

Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

15. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩
16. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
17. आप० ध० १. ३१. १.↩
18. यत्किञ्चनदिङ्मुखेन इति क० पु० ।↩
19. Manu II, 144.↩
20. Manu II, 146-148.↩
21. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
22. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

२६①

01 धेन्वनडुहोश्चाकारणात्④

धेन्वनडुहोश्चाकारणात् १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. (The same penance must be performed), if a milch-cow or a full-grown ox (has been slain), without a reason. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

धेन्वनडुहोश्चाऽकारणात् ॥१॥

टिप्पनी⑥

धेनुः पयस्विनी गौः । अनड्वान् अनोवहनयोग्यो बलीवर्दः । तयोः कारणमन्तरेण हिंसायां शूद्रवत्प्रायश्चित्तं कर्तव्यम् । कारणं कोपो मांसेच्छा वा । ताभ्यां विना, अबुद्धिपूर्वमित्यर्थः । बुद्धिपुर्वं तु2 'गाश्च वैश्यव'दित्यादि स्मृत्यन्तरे द्रष्टव्यम् ॥ १ ॥

02 धुर्यवाहप्रवृत्तौ चेतरेषाम् प्राणिनाम्

धुर्यवाहप्रवृत्तौ चेतरेषां प्राणिनाम् २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. And for other animals (which have no bones), if an ox-load of them has been killed. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

धुर्यवाहप्रवृत्तौ चेतरेषां प्राणिनाम् ॥ २॥

टिप्पनी⑥

धुरं वहतीति धुर्यो बलीवर्दः । तेन वोढुं शक्त्या धुर्यवाहाः। तावत्सु हिंसायाः प्रवृत्तौ सत्याम् । इतरेषां प्राणिनां केवलं प्राणा एव येषां नाऽस्थीनि तेषां हिंसायां शूद्रवत्प्रायश्चित्तमिति। अत्र गौतमः4 अस्थन्वतां सहस्रं हत्वा अनस्थिमतामनुडुद्धारे चेति ॥ २॥

03 अनाक्रोश्यमाक्रुश्यानृतं वोक्त्वा त्रिरात्रमक्षीराक्षारालवणभोजनम्

अनाक्रोश्यमाक्रुश्यानृतं वोक्त्वा त्रिरात्रमक्षीराक्षारालवणभोजनं ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. He who abuses a person who (on account of his venerability) ought not to be abused, or speaks an untruth (regarding any small matter) must abstain for three days from milk, pungent condiments, and salt. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनाक्रोश्यमाक्रुश्याऽनृतं वोक्त्वा त्रिरात्रमक्षीराक्षारलवणभोजनम् ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

येन यो न कथञ्चनाऽऽक्रोशमर्हति स पित्राचार्यादिरनाक्रोश्यः । तमाक्रुश्य अनृतं वोक्त्वा पातकोपातकवर्जं, त्रिरात्रं क्षीरादि भोजने वर्जयेत् । क्षीरग्रहणेन तद्विकाराणां दध्यादीनामपि6 ग्रहणमित्याहुः ॥३॥

04 शूद्रस्य सप्तरात्रमभोजनम्

शूद्रस्य सप्तरात्रमभोजनम् ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. (If the same sins have been committed) by a Śūdra, he must fast for seven days.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शुद्रस्य सप्तरात्रमभोजनम् ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

शुद्रस्त्वनन्तरोक्तविषये सप्तरात्रमुपवसेत् ॥ ४॥

05 स्त्रीणाञ् चैवम्

स्त्रीणां चैवम् ५

▼

⑤

>

▼ Bühler

5. And the same (penances must also be performed) by women, (but not those which follow). 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्त्रीणां चैवम् ॥५॥

टिप्पनी⑥

'क्षत्रियं हत्वे'(२४. १.)त्यादिषु अन्नवचनान्तेषु निमित्तेषु यानि प्रायश्चित्तान्युक्तानि तानि स्त्रीणामप्येवमेव कर्तव्यानि । एतत् 'चत्वारो वर्णा' इति जात्याभिधानादेव8 प्राप्तं सन्नियमार्थमुच्यते—अत ऊर्ध्वं पुरुषस्यैव न स्त्रीणामिति । अपर आह— जात्याभिधानादेव सिद्धे अतिदेशार्थं वचनम् । अतिदेशेषु चाऽर्धं प्राप्यते इति स्मार्तो न्यायः । तेन स्त्रीणामर्धप्राप्त्यर्थं वचनमिति । तथा च भार्गवः —

अशीतिर्यस्य वर्षाणि बालो वाप्यूनषोडशः ।
प्रायश्चित्तार्धमर्हन्ति स्त्रियो व्याधित एव च ॥' इति ॥५॥

06 येष्वाभिशस्त्यन् तेषामेकाङ्गञ् छित्त्वाप्राणहिंसायाम्

येष्वाभिशस्त्यं तेषामेकाङ्गं छित्त्वाप्राणहिंसायाम् *(ततः शूद्रहप्रायश्चित्तम्)* ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. He who cuts off a limb of a person for whose murder he would become an Abhiśasta (must perform the penance prescribed for killing a Śūdra), if the life (of the person injured) has not been endangered.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

येष्वाभिशस्त्यं तेषामेकाङ्गं छित्वाऽप्राणिहिंसायाम् ॥६॥

टिप्पनी⑥

येषु हतेषु 'सवनगतं वाऽभिशस्त, (२४.९) इत्यादिना अभिशस्तत्वमुक्तं तेषामेकाङ्गं छित्वा शूद्रवत्प्रायश्चित्तं कुर्यात् । अप्राणिहिंसायां यदि छेदनेन तस्याङ्गस्य शक्ति9र्न हन्यते ॥६॥

07 अनार्यवपैशुनप्रतिषिद्धाऽचारेष्वभक्ष्याभोज्यापेयप्राशने शूद्रायाञ् च

अनार्यव-पैशुन-प्रतिषिद्धाऽचारेष्व्
अभक्ष्याऽभोज्याऽपेय-प्राशने
शूद्रायां च रेतः सिक्त्वा ऽयोनौ च
दोषवच् च कर्माभिसंधिपूर्वं कृत्वा ऽनभिसंधिपूर्वं वा
ऽब्लिङ्गाभिर् अप उपस्पृशेद्
वारुणीभिर् वान्यैर् वा पवित्रैर् यथा कर्माभ्यासः ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. He who has been guilty of conduct unworthy of an Aryan, of calumniating others, of actions contrary to the rule of conduct, of eating or drinking things forbidden, of connection with a woman of the Śūdra caste, of an unnatural crime, of performing; magic rites with intent (to harm his enemies) or (of hurting others) unintentionally, shall bathe and sprinkle himself with water, reciting the (seven) verses addressed to the Waters, or the verses addressed to Varuṇa, or (other verses chosen from the Anuvāka, called) Pavitra, in proportion to the frequency with which the crime has been committed. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

11अनार्यवपैशुनप्रतिषिद्धाचारेश्वभक्ष्या भोज्यापेयप्राशने शूद्रायां च रेतस्सिक्त्वाऽयोनौ च दोषवच्च कर्माभिसन्धिपूर्वं कृत्वाऽनभिसन्धिपूर्वं वाऽब्लिङ्गाभिरप उपस्पृशेद्वारुणीभिर्वाऽन्यैर्वा पवित्रमन्त्रैर्यथा कर्माभ्यासः ॥७॥

टिप्पनी⑥

आर्याणां भाव आर्यम् । तद्यस्मिन्नाचारेऽस्ति तदार्यवम् । मत्वर्थीयो वप्रत्ययः। ततोऽन्यदनार्यवम् । असत्यभाषणादि । पैशुनं परदोषकथनं राजगामि प्रतिषिद्धाचारः 'ष्ठीवनमैथुनयोः कर्माऽसुवर्जये(३०.१९)दित्यादेरनुष्ठानम् । अभक्ष्यं वृथाकृसरादि । अभोज्यं केशकीटद्युपहतम् । अपेयम् अनिर्दशायाः गोः क्षीरादि । एतेषां प्राशने । शूद्रायां च वेश्याप्रभृतौ रेतः सिक्त्वा । अयोनी च जलादौ रेतः सिक्त्वा । दोषवच्च कर्म श्रौतमाभिचारिकम् । अभिसन्धिपूर्वं बुद्धिपूर्वं कृत्वा। अनभिसन्धिपूर्वं वा परपीडादिकरं कर्म कृत्वा । अब्लिङ्गाभिः12 "आपो हि ष्ठा मयोभुव' इति तिसृभि13 हिरण्यवर्णाश्शुचयः पावका' इति चतसृभिरप उपस्पृशेत् ।

तूष्णीं प्रथमं स्नात्वा पश्चादेतैर्मन्त्रैर्मार्जनं कुर्यात् । वारुणीभिर्वा 14 इमं मे वरुण, 'तत्त्वा यामि, 'त्वन्नो अग्ने' इत्येताभिरन्यैर्वा पवित्रैः 15पवमानस्सुवर्जन' इत्यतेनानुवाकेन 16 शुद्धवतीभिः 17 तरत्समन्दीयेन च । यथा कर्माभ्यासः कृतः 18 तावत्कृत्वोऽप उपस्पृशेत् । रहस्यप्रायश्चित्तमेतदित्याहुः ॥७॥

08 गर्दभेनावकीर्णी निर्ऋतिम् पाकयज्ञेन

गर्दभेनावकीर्णी निर्ऋतिं पाकयज्ञेन यजेत ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. A (student) who has broken the vow of chastity, shall offer to Nirṛti an ass, according to the manner of the Pākayajña-rites. 19

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गर्दभेनाऽवकीर्णी निर्ऋतिं पाकयज्ञेन यजेत ॥ ८ ॥

टिप्पनी⑥

यो ब्रह्मचारी स्त्रियमुपेयात् सोऽवकीर्णी गर्दभेन निर्ऋतिं यजेत पाकयज्ञेन स्थालीपाकविधानेन । अत्र मनुः—

20 'अविकीर्णा तु काणेन गर्दभेन चतुष्पथे।
पाकयज्ञविधानेन, यजेत निर्ऋतिं निशि ॥' इति ।
हारीतस्तु—
"स्त्रीष्ववकीर्णी निर्ऋत्यै चतुष्पथे गर्दभं पशुमालभेत पाकयज्ञधर्मेण। भूमौ पशुपुरोडाशश्रपणमप्स्ववदानैः प्रचार्याऽऽज्यं जुहोति 'कामावकीर्णोऽस्म्यवकीर्णोऽस्मि कामकामाय स्वाहा । कामाभिद्रुग्धोस्म्यभिद्रुग्धोऽस्मि कामकामाय स्वाहा' इति ॥ ८॥

09 तस्य शूद्रः प्राश्नीयात्

तस्य शूद्रः प्राश्नीयात् ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. A Śūdra shall eat (the remainder) of that (offering).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्य शुद्रः प्राश्नीयात् ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

तस्य गर्दभस्य सर्पिष्मद्धविरुच्छिष्टं शुद्रः प्राश्नीयात् 21 तेन सर्पिष्मता ब्राह्मण'मित्यस्याऽपवादः ॥९॥

10 मिथ्याअधीतप्रायश्चित्तम्

मिथ्याऽधीत-प्रायश्चित्तम् १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. (Now follows) the penance for him who transgresses the rules of studentship.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मिथ्याधीतप्रायश्चित्तम् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

नियमातिक्रमेणाऽधीतं मिथ्याधीतम् । तद्दोषनिर्हरणाय प्रायश्चित्तं वक्ष्यते ॥१०॥

11 संवत्सरमाचार्यहिते वर्तमानो वाचं

संवत्सरम् आचार्य-हिते वर्तमानो
वाचं यच्छेत्
स्वाध्याय एवोत्सृजमानो वाचम्
आचार्य आचार्य-दारे भिक्षाचर्ये च ११

▼

⑤

>

▼ Bühler

11. He shall for a year serve his teacher silently, emitting speech only during the daily study (of the Veda, in announcing necessary business to) his teacher or his teacher's wife, and whilst collecting alms.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सम्वत्सरमाचार्यहिते वर्तमानो वाचं यच्छेत्स्वाध्याय एवोत्सृजमानो वाचमाचार्य आचार्यदारे वा भिक्षाचर्ये च ॥११॥

टिप्पनी⑥

आचार्यहिते वर्तमानो वाचंयमः स्यात् । 22स्वाध्यायादिष्वेषु वाचमुत्सृजमानः । आचार्ये तं प्रति कार्यनिवेदने । एवमाचार्यदारे । भिक्षाचर्यं भिक्षाचरणम्। तत्र च 'भवति भिक्षां देही'ति । अस्मादेव ज्ञायते-असमावृत्तविषयमेतदिति ॥ ११ ॥

12 एवमन्येष्वपि दोषवत्स्वपतनीयेषूत्तराणि यानि

एवमन्येष्व् अपि दोषवत्स्व् अपतनीयेषूत्तराणि यानि वक्ष्यामः १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. The following penances) which we are going to proclaim, may be performed for the same sin, and 23 also for other sinful acts, which do not cause loss of caste.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवमन्येष्वपि दोषवत्स्वपतनीयेषूत्तराणि यानि वक्ष्यामः ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

यथा मिथ्याधीतस्येदं प्रायश्चित्तमेवमुत्तराणि यानि प्रायश्चित्तानि वक्ष्यामः तान्यन्येष्वपि । अपिशब्दान्मिथ्याधीतेऽपि । दोषवत्स्वपतनीयेषु पतनीयव्यतिरिक्तेषु कर्मसु येष्वाहत्य प्रायश्चित्तं नोक्तं तद्विषयाणि द्रष्टव्यानि ॥ १२॥

13 काममन्युभ्यां वा जुहुयात्कामोऽकार्षीन्मन्युरकार्षीदिति

काम-मन्युभ्यां वा जुहुयात् -
कामोऽकार्षीन् मन्युर् अकार्षीद् इति जपेद् वा १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. He may either offer oblations to Kāma and Manyu (with the following two Mantras), 'Kāma (passion) has done it; Manyu (anger) has done it.' Or he may mutter (these Mantras). 24

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

काममन्युभ्यां वा जुहुयात्कामोऽकार्षीन्मन्युरकार्षीदिति ॥१३ ॥

टिप्पनी⑥

स्वाहाकारान्ताभ्यां होमः । आज्यं द्रव्यम् ॥ १३ ॥

14 पर्वणि वा तिलभक्ष

पर्वणि वा तिलभक्ष उपोष्य वा श्वोभूत उदकम् उपस्पृश्य सावित्रीं प्राणायामशः सहस्र-कृत्व आवर्तयेद् अप्राणायामशो वा १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. Or, after having eaten sesamum or fasted on the days of the full and new moon he may, on the following day bathe, and stopping his breath, repeat the Gāyatrī one thousand times, or he may do so without stopping his breath.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

जपेद्वा ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

अस्मिन् पक्षे न स्वाहाकारः। केचित्तु 'कामाय स्वाहा' 'मन्यवे स्वाहे'ति होममिच्छन्ति । जपपक्षे तु सूत्रोपदिष्टौ मन्त्राविति । दोषाभ्यासानुरूपं जपहोमयोरावृत्तिः ॥१४॥

सूत्रम्⑥

पर्वणि वा तिलभक्ष उपोष्य वा श्वोभूत उदकमुपस्पृश्य सावित्रीं प्राणायामशस्सहस्रकृत्व आवर्तयेदप्राणायामशो वा ॥१५॥

टिप्पनी⑥

पर्वणि पौर्णमास्याममावास्यायां वा । तिलानेव भक्षयति नान्यदोदनादिकमिति तिलभक्षः । श्वोभूते उदकमुपस्पृश्य स्नात्वा सावित्रीं प्राणायामशः प्राणायामेन एकस्मिन्प्राणायामे यावत्कृत्व आवर्तयितुं शक्यं तावत्कृत्व आवर्तयेत् । एवमा सहस्रपूर्तेः प्राणायामावृत्तिः । अप्राणायामशो वा 25जपकाले प्राणानायच्छेत् , तुष्णीं जपेद्वेति ॥ १५ ॥

॥ इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ प्रथमप्रश्ने षड्विंशी कण्डिका ॥२६॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
4. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
5. Manu II, 35.↩
6. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
7. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
8. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
9. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

10. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

11. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

12. आप० ध० १.३०.८.↩

13. मनु० रमृ० २.६↩

14. आप० ध० १. ३१. १.↩

15. यत्किञ्चनदिङ्मुखेन इति क० पु० ।↩

16. प्रतिषेध परिसंख्येत्यनर्थान्तरम् । परिसङ्ख्या वर्जनबुद्धिः । तद्विषयको विधिः परिसंख्याविधिः । स परिसंख्यापदेनाऽप्यभिधीयते इति मीमांसकाना मतम् । अत एव

> विधिरत्यन्तमप्राप्ते नियम पाक्षिके सति ।
> तत्र चान्यत्र च प्राप्ते परिसंख्येति गीयते ॥

    इत्येव वार्तिककारैरुक्तम् । ग्रन्थकारस्त्वयं परिसंख्या नियमविधावेवान्तर्भावयति ॥↩

17. आप० ध० १ ३१. ६.↩

18. इदं च तर्किकादिमतमनुसृत्य प्रभाकरमतञ्च । भाट्टमते तत्तत्कर्मणामेव यागदानहोमादिरूपाणां चोदनालक्षणानां धर्मत्वाङ्गीकारात् । उक्तं हि भट्टपादैः-

> श्रेयो हि पुरुषप्रीतिस्सा द्रव्यगुणकर्मभिः ।
> चोदनालक्षणैस्साध्या तस्मात्तेष्वेव धर्मता ॥ इति । श्लो. वा. १२. १९१.

    ↩

19. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which,

according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

20. गौ० ध० १. १, २↩

21. 'मन्वादिभिरुपलभ्यते इत्यनुमीयते' इति ख. पु.↩

22. आप० ध० १ १२.१०.↩

23. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

24. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

25. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

२७①

01 श्रावण्याम् पौर्णमास्यान् तिलभक्ष④

श्रावण्यां पौर्णमास्यां तिल-भक्ष उपोष्य वा
श्वोभूते महानदम् उदकम् उपस्पृश्य
सावित्र्या समित्-सहस्रम् आदध्याज् जपेद् वा १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. After having eaten sesamum or having fasted on the full moon day of the month Srāvaṇa July-August), he may on the following day bathe in the water of a great river and offer (a burnt-oblation of) one thousand pieces of sacred fuel, whilst. reciting the Gāyatrī, or he may mutter (the Gāyatrī) as many times. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्रावण्यां वा पौर्णमास्यां तिलभक्ष उपोष्य वा श्वो भूते 2माहानदमुदकमुपस्पृश्य सावित्र्या समित्सहस्रमादध्याज्जपेद्वा ॥१॥

टिप्पनी⑥

गिरिप्रभवा समुद्रगामिनी नदी महानदी तत्र भवं माहानदम् । समित्सहस्रं याज्ञिकस्य वृक्षस्य । 'आदध्यादि'ति वचनान्न होमधर्मः स्वाहाकारः3 'जुहोतिचोदना स्वाहाकारप्रदान,' इत्युक्तत्वात् । जपेद् वा ॥१॥
02 इष्टियज्ञक्रतून् वा पवित्रार्थान्

इष्टि-यज्ञ-क्रतून् वा पवित्रार्थान् आहरेत् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. Or he may perform Iṣṭis and Soma-sacrifices for the sake of purifying himself (from his sins), 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

इष्टियज्ञक्रतून्वा पवित्रार्थानाहरेत् ॥ २ ॥

टिप्पनी⑥

पवित्रार्थाः शुद्ध्यर्थाः 5मृगाराद्या इष्टयः । 6यज्ञक्रतवः सोमयागा अग्निष्टोमादयः । तान्येतानि षट् प्रायश्चित्तानि एनस्सु गुरुषु गुरूणि, लघुषु लघूनि ॥ २॥

03 अभोज्यम् भुक्त्वा नैष्पुरीष्यम्

अभोज्यं भुक्त्वा नैष्पुरीष्यम् *(कदेति चेत् -)*३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. After having eaten forbidden food, he must fast, until his entrails are empty. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अभोज्यं भुक्त्वा नैष्पुरीष्यम् ॥३॥

टिप्पनी⑥

अभोज्यस्य मार्जारादिमांसस्य भक्षणे निष्पुरीषभावः कर्तव्यः । यावदुदरं निष्पुरीषं भवति तावदुपवस्तव्यम् ॥ ३॥

04 तत्सप्तरात्रेणावाप्यते

तत्-सप्त-रात्रेणावाप्यते ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. That is (generally) attained after seven days.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्सप्तरात्रेणाऽवाप्यते ॥ ४ ॥

प्रस्तावः⑥

तत्कियता कालेनाऽवाप्यते ? तदाह—

टिप्पनी⑥

तत् नैष्पुरीष्यम् । सप्तरात्रेणाऽवाप्यते सप्तरात्रमुपवस्तव्यमित्यर्थः । सप्तरात्रमुपवसदित्येव सिद्धे नैष्पुरीष्यवचनाद्येषां त्रिरात्रेणैव तदवाप्यते तेषां तावतैव शुद्धिः। तथा च गौतमः-8 'अभोज्यभोजने निष्पुरीषभावः त्रिरात्रावरमभोजनं सप्तरात्रं वे'ति ॥ ४ ॥

05 हेमन्तशिशिरयोर्वोभयोः सन्ध्योरुदकमुपस्पृशेत्

हेमन्त-शिशिरयोर् वोभयोः संध्योर् उदकम् उपस्पृशेत् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. Or he may during winter and during the dewy season (November-March) bathe in cold water both morning and evening.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

हेमन्तशिशिरयोर्वोभयोस्सन्ध्योर्वोदकमुपस्पृशेत् ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

उभयोः सन्ध्ययोः सायं प्रातश्च । उदकमुपस्पृशेत् भूमिगतास्वप्सु स्नायात् । उद्धृताभिर्वा शीताभिः ॥ ५ ॥

06 कृच्छ्रद्वादशरात्रं वा चरेत्

कृच्छ्र-द्वादश-रात्रं वा चरेत् ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. Or he may perform a Kṛcchra penance, which lasts twelve days.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कृच्छ्वादशरात्रं वा चरेत् ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

द्वादशरात्रसाध्यो व्रतविशेषः कृच्छ्रद्वादशरात्रः ॥ ६ ॥

07 त्र्यहमनक्ताश्यदिवाशी ततस्त्र्यहन् त्र्यहमयाचितव्रतस्त्र्यहन्

त्र्यहम् अनक्ताश्य्
अदिवाशी ततस् त्र्यहं
त्र्य्-अहम् अयाचित-व्रतस्
त्र्यहं नाश्नाति किंचनेति
कृच्छ्र-द्वादश-रात्रस्य विधिः ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. The rule for the Kṛcchra penance of twelve days (is the following): For three days he must not eat in the evening, and then for three days not in the morning; for three days he must live on food which has been given unasked, and three days he must not eat anything. 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

त्र्यहमनक्ताश्यदिवाशी ततस्त्र्यहम्, त्र्यहमयाचितव्रतस्त्र्यहं नाश्नाति किञ्चनेति कृच्छ्रद्वादशरात्रस्य विधिः ॥ ७ ॥

प्रस्तावः⑥

तस्य विधिमाह10—

टिप्पनी⑥

आदितस्त्रिष्वहस्सु नक्तं नाश्नीयात् । दिवैव भुञ्जीत । ततस्त्र्यहमदिवाशी रात्रावेव भुञ्जीत । न दिवा । ततस्त्र्यहमयाचितमेव भुञ्जीत। याच्ञाप्रतिषधोऽयम । तेन स्वद्रव्यस्याप्रतिषेधः । तथा च गौतमः 11 'अथाऽपरं त्र्यहं न कंचन याचे'दिति । ततत्र्यहं नाश्नाति किञ्चन फलादिकमपीति । एवं कृच्छ्रद्वादशरात्रस्य विधिः । तत्र स्मृत्यन्तरवशाद्धविष्यमन्नं, ब्रह्मचर्यं, स्त्रीशूद्रादिभिरसम्भाषणं च द्रष्टव्यम् ॥ ७ ॥

08 एतमेवाभ्यसेत्संवत्सरं स कृच्छ्रसंवत्सरः

एतम् एवाभ्यसेत् संवत्सरं - स कृच्छ्रसंवत्सरः ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. If he repeats this for a year, that is called a Kṛcchra penance, which lasts for a year.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतमेवाऽभ्यस्येत्संवत्सरं स कृच्छ्रसंवत्सरः ॥८॥

टिप्पनी⑥

एतमेव विधिं संवत्सरं निरन्तरमभ्यस्येत् । स एष कृच्छ्रसंवत्सरो वेदितव्यः । यः पूर्वोक्तः 'कच्छ्रसंवत्सरं वा चरे'(२५.९)दिति ॥८॥

09 अथापरम् बहून्यप्यपतनीयानि कृत्वा

अथाऽपरम् ।
बहून्य् अप्य् अपतनीयानि कृत्वा
त्रिभिर् अनश्नत्-पारायणैः कृत-प्रायश्चित्तो भवति ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. Now follows another penance. He who has committed even a great many sins which do not cause him to fall, becomes free from guilt, if, fasting, he recites the entire Śākhā of his Veda three times consecutively. 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाऽपरं बहून्यप्यपतनीयानि कृत्वा त्रिभिरनश्नन् पारायणैः कृतप्रायश्चित्तो भवति ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

अथाऽपरं प्रायश्चित्तमुच्यते । अनश्नतैव निरन्तरं त्रीणि पारायणानि कर्तव्यानि । आदित आरभ्याऽऽसमाप्तेर्वेदस्याऽध्ययनं पारायणम् । बहून्यपि । अपिशब्दात्किं पुनरेकं द्वे वा ॥९॥

10 अनार्यां शयने बिभ्रेद्ददद्वृद्धिङ्

अनार्यां शयने बिभ्रेद्,
ददद् वृद्धिं(=interest) (स्वद्रव्यस्य), कषाय-पः(=सुराव्यतिरिक्तं मद्यं पिबन्) ।
अब्राह्मण इव (सर्वान्) वन्दित्वा,
तृणेष्व् आसीत पृष्ठ-तप् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. He who cohabits with a non-Aryan woman, he who lends money at interest, he who drinks (other) spirituous liquors (than Surā), he who praises everybody in a manner unworthy of a Brāhmaṇa, shall sit on grass, allowing his back to be scorched (by the sun).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनार्यां शयने विभ्रद्ददद्वृद्धिं कषायपः ।
अब्राह्मण इव वन्दित्वा तृणेष्वासीत पृष्ठतप् ॥१०॥

टिप्पनी⑥

अनार्यां शूद्रा तां शयने बिभ्रत् उपगच्छन् ।
ददद् वृद्धिं वृद्ध्यर्थं द्रव्यं ददत् । वृद्ध्याजीव इत्यर्थः ।
सुराव्यतिरिक्तं मद्यं कषायः । 13 तस्य पाता कषायपः ।
यश्चाऽब्राह्मण इव सर्वान् वन्दी भूत्वा स्तौति स सर्वोऽपि तृणेषूदयादारभ्याऽऽसीत् ।
यावदस्याऽऽदित्यः पृष्ठं पश्चाद्भागं तपति । आदित्ये तपति तदानुगुण्याचरणात् स्वयमेव पृष्ठतवित्युच्यते । अभ्यासे अभ्यासो यावता शुद्धिं मन्यते ॥ १०॥

11 यदेकरात्रेण करोति पापङ्

यद् एकरात्रेण करोति पापं
कृष्णं*(→शूद्रं)* वर्णं ब्राह्मणः सेवमानः ।
चतुर्थ-काल उदकाभ्यवायी *(स्नानकर्ता)*
त्रिभिर् वर्षैस् तद् अपहन्ति पापम् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. A Brāhmaṇa removes the sin which he committed by serving one day and night (a man of) the black race, if he bathes for three years, eating at every fourth meal-time. 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यदेकरात्रेण करोति पापं कृष्णं वर्णं ब्राह्मणस्सेधमानः चतुर्थकाल 15उदकाभ्यवायी त्रिभिर्वर्षैस्तदपहन्ति पापम् ॥ ११॥

टिप्पनी⑥

कृष्णो वर्णः शूद्रः। तमाज्ञाकरो भूत्वा वृत्त्यर्थं सेवमानः । शिष्टं स्पष्टं गतं च । अपर आह- शूद्रां मैथुने सेवमान इति । अस्मिन्पक्षे ऋतावुपगमने अपत्योत्पत्ताविदं द्रष्टव्यम् । मनुः—
16वृषलीफेनपीतस्य निश्वासोपहतस्य च ।
तस्यां चैव प्रसूतस्य निष्कृतिर्न विधीयते ॥ इति ॥११॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ प्रथमप्रश्ने सप्तविंशी कण्डिका ॥२७॥

इति चाऽऽपस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तमिश्रविरचितायामुज्वलायां प्रथमप्रश्ने नवमः पटलः ॥ ९ ॥

इति नवमः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
4. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
5. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
6. आप० ध० १.३०.८.↩
7. Manu II, 35.↩
8. मनु० रमृ० २.६↩
9. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
10. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
11. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

12. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

13. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

14. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

15. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

16. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

१०①

२८①

01 यथा कथा च④

यथा कथा च परपरिग्रहम् अभिमन्यते - स्तेनो ह भवतीति कौत्स-हारीतौ, तथा कण्व-पुष्करसादी १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. He who, under any conditions whatsoever, covets (and takes) another man's possessions is a thief; thus (teach) Kautsa and Hārita as well as Kaṇva and Pushkarasādi.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथा कथा च परपरिग्रहमभिमन्यते स्तेनो ह भवतीति कौत्सहरीतौ तथा काण्वपुष्करसादी ॥१॥

टिप्पनी⑥

1यथा कथा च आपद्यनापदि वा भूयांसमल्पं वा, परपरिग्रहं परस्वमभिमन्यते-ममेदमस्त्विति बुद्धौ कुरुते2 सर्वथा स्तेन एव भवतीति कौत्सादयो मन्यन्ते ॥१॥

बुद्धौ कृत्वाऽऽदत्त इत्यर्थ , इत्यधिक क. छ. पु.

02 सन्त्यपवादाः परिग्रहेष्विति वार्ष्यायणिः

सन्त्य् अपवादाः परिग्रहेष्व् इति वार्ष्यायणिः २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. Vārshyāyaṇi declares, that there are exceptions to this law, in regard to some possessions.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

संत्यपवादाः परपरिग्रहेष्विति वार्ष्यायणिः ॥ २॥

टिप्पनी⑥

वार्ष्यायणिस्तु मन्यते केषुचित्परपरिग्रहेषु स्तेयस्याऽपवादास्सन्तीति॥

03 शम्योषा युग्यघासो न

शम्योषा युग्यघासो न स्वामिनः प्रतिषेधयन्ति ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. (E.g.) seeds ripening in the pod, food for a draught-ox; (if these are taken), the owners (ought) not (to) forbid it. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शम्योषा युग्यघासो न स्वामिनः प्रतिषेधयन्ति ॥ ३ ॥

प्रस्तावः⑥

तानेवोदाहरति —

टिप्पनी⑥

शमी बीजकोशी तस्याम् **उष्यन्ते** दह्यन्ते कालवशेन पच्यन्ते इति **शम्योषाः** - कोशीधान्यानि मुद्ग-माष-चणकादीनि ।

युगं वहतीति **युग्यः** शकटवाही बलीवर्दः, तस्य **घासो** भक्षस्तृणादिः **युग्यघासः** ।

एते आदीयमानाः स्वामिनो न प्रतिषेधयन्ति - स्वामिभिः प्रतिषेधं न कारयन्ति ।

एतेष्व् आदीयमानेषु स्वामिनो न प्रतिषेधुम् अर्हन्तीत्य् अर्थः । स्वयंग्रहणेऽपि न स्तेय-दोष इति यावत् । अत्र स्मृत्यन्तरे विशेषः —

> 'चणकव्रीहिगोधूम-
> यवानां मुद्गमाषयोः ।

> अनिषिद्धैर् ग्रहीतव्यो
> मुष्टिर् एकाऽध्वनि स्थितैः ॥'

मनुस्तु—
4 द्विजोऽध्वगः क्षीणवृत्तिर्द्वाविक्षू द्वे च मूलके ।
आददानः परक्षेत्रान्न दण्डं दातुमर्हति ॥ ३ ॥

04 अतिव्यपहारो व्यृद्धो भवति

अतिव्यपहारो व्यृद्धो भवति ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

> 4. To take even these things in too great a quantity is sinful.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अतिव्यवहारो व्यृद्धो भवति ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

शम्योषादिष्वपि अतिव्यवहारो व्यृद्धो दुष्टो भवति, अतिमात्रापहारे स्तेयदोषो भवतीत्यर्थः ॥ ४ ॥

05 सर्वत्रानुमतिपूर्वमिति हारीतः

सर्वत्रानुमतिपूर्वमिति हारीतः ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. Hārita declares, that in every case the permission (of the owner must be obtained) first.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वत्राऽऽनुमतिपूर्वमिति हारीतः ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

सर्वेषु द्रव्येषु सर्वास्ववस्थासु स्वाम्यनुमतिपूर्वमेव ग्रहणमिति हारीत आचार्यो मन्यते ॥५॥

06 न पतितमाचार्यञ् ज्ञातिं

न पतितमाचार्यं ज्ञातिं वा दर्शनार्थो गच्छेत् ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. He shall not go to visit a fallen teacher or blood relation.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न पतितमाचार्यं ज्ञातिं वा दर्शनार्थो गच्छेत् ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

'न पतितैः सव्यवहारो विद्यत'(२१.५.) इत्युक्तेऽपि पुनरुच्यते- आचार्यादिषु विशेषं वक्ष्यामीति ॥ ६ ॥

07 न चास्माद्भोगानुपयुञ्जीत

न चास्माद्भोगानुपयुञ्जीत ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. Nor shall he accept the (means for procuring) enjoyments from such a person. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न चाऽस्माद्भोगानुपयुञ्जीत ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

अस्मात्पतितादाचार्यात् ज्ञातेर्वा पित्रादेः भोगान् भोगसाधनानि दायप्राप्तान्यपि नोपयुञ्जीत न गृह्णीयात् ॥ ७ ॥

08 यदृच्छासन्निपात उपसङ्गृह्य तूष्णीं

यदृच्छासंनिपात उपसंगृह्य तूष्णीं व्यतिव्रजेत् ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. If he meets them accidentally he shall silently embrace (their feet) and pass on.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यदृच्छासन्निपात उपसंगृह्य तूष्णीं व्यतिव्रजेत् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

यदि पतितैराचार्यादिभिर्यदृच्छया सन्निपातः सङ्गतिः स्यात् तदाऽविधिनोपसङ्गृह्य तुष्णीं तैस्सह किञ्चिदप्यसम्भाष्य व्यतिव्रजेत् गच्छेत् । न क्षणमपि सह तिष्ठेत् ॥ ८॥

09 माता पुत्रत्वस्य भूयांसि

माता पुत्रत्वस्य भूयांसि कर्माण्यारभते तस्यां शुश्रूषा नित्या पतितायामपि ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. A mother does very many acts for her son, therefore he must constantly serve her, though she be fallen.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

माता पुत्रत्वस्य भूयांसि कर्माण्यारभते तस्यां शुश्रूषा नित्या पतितायामपि ॥९॥

टिप्पनी⑥

पुत्रत्वस्य, स्वार्थिकस्त्वः । यथा 'देहत्वमेवान्य'दिति । पुत्रस्य कृते माता भूयांसि दृष्टार्थानि गर्भधारणाशुचिनिर्हरणस्तन्यदानप्रदक्षिणनमस्कारोपवासादीनि कर्माणि करोति तस्मात्तस्यां पतितायामपि शुश्रूषा अभ्यङ्गस्नापनादिका । नित्या नित्यमेव कर्तव्या ॥९॥

10 न तु धर्मसन्निपातः

न तु धर्मसंनिपातः स्यात् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. But (there shall be) no communion (with a fallen mother) in acts performed for the acquisition of spiritual merit.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न तु धर्मसन्निवापः स्यात् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

एकस्मिन् धर्मे सहाऽन्वयो धर्मसन्निवापः । स पतितया मात्रा सह न कर्तव्यः। नामसुब्रह्मण्यायां मातुर्नामग्रहणम् । वरुणप्रघासेषु 6यावन्तो यजमानस्याऽमात्याः सस्त्रीकास्तावन्त्येकातिरिक्तानी'त्येवमादिकमुदाहरणम् । किं पुनरेवमादिषु मातुरन्वयः शुश्रूषा ? ओमित्याह । अन्विता हि सा सम्मता मन्यते । निरस्ता तु विमता। वैश्वदेवार्थे च पाके सा न भोजयितव्या । मृतायास्तु तस्याः संस्कारादिकाः क्रियाः कर्तव्याः नेति विप्रतिपन्नाः ॥१०॥

11 अधर्माहृतान्भोगाननुज्ञाय न वयञ्

अधर्माहृतान् भोगान् अनुज्ञाय
न वयं चाधर्मश् चेत्य् अभिव्याहृत्या
ऽधोनाभ्य् उपरिजान्व् आछाद्य
त्रिषवणम् उदकम् उपस्पृशन्न्
अक्षीराक्षारालवणं भुञ्जानो
द्वादश वर्षाणि नागारं प्रविशेत् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. Enjoyments taken unrighteously he shall give up; he shall say, 'I and sin (do not dwell together).' Clothing himself with a garment reaching from the navel down to the knee, bathing daily, morn, noon, and evening, eating food which contains neither milk nor pungent condiments, nor salt, he shall not enter a house for twelve years. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

धर्माहृतान् भोगाननुज्ञाय न वयं चाऽधर्मश्चेत्यभि व्याहृत्याऽधो नाभ्युपरिजान्वाच्छाद्य त्रिषवणमुदकमुपस्पृशन्नक्षीराक्षारलवणं भुञ्जानो द्वादशवर्षाणि नाऽगारं प्रविशेत् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

ब्राह्मणस्वहरणम्,
8चण्डालान्त्यस्त्रियो गत्वा भुक्त्वा च प्रतिगृह्य च ।
पतत्यज्ञानतो विप्रो ज्ञानात्साम्य तु गच्छति ॥

इत्येवमादिकमुदाहरणम्। ये अधर्माहृता भोगास्ताननुज्ञाय परित्यज्य 'न वयं चाऽधर्मश्चेति प्रैषं ब्रूयात् । तस्यार्थः— वयं चाऽधर्मश्च सह न वर्तामह इति । अधो नाभीत्यादि (२४.११.)गतम् । नात्राऽर्धशाणीपक्षो भिक्षाचर्यं वा ॥ ११ ॥

12 ततः सिद्धिः

ततः सिद्धिः १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. After that he (may be) purified.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ततस्सिद्धिः ॥१२॥

टिप्पनी⑥

एतस्य द्वादशवार्षिकस्याऽन्ते सिद्धिः शुद्धिर्भवति ॥ १२ ॥

13 अथ सम्प्रयोगः स्यादार्यैः

अथ संप्रयोगः स्याद् आर्यैः १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. Then he may have intercourse with Aryans.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ सम्प्रयोगस्स्यादार्यैः ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

प्रायश्चित्तोपदेशात सिध्युपदेशाच्च सिद्धे पुनर्वचनं 'ज्ञानात्साम्यं तु गच्छती'त्यस्याऽपवादार्थम् ॥ १३ ॥

14 एतदेवान्येषामपि पतनीयानाम्

एतद् एवान्येषाम् अपि पतनीयानाम् १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. This penance may also be employed in the case of the other crimes which cause loss of caste (for which no penance has been ordained above).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतदेवाऽन्येषामपि पतनीयानाम् ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

उक्तव्यतिरिक्तानि यानि पतनीयानि पूर्वमुक्तानि तेषु यत्राऽऽहत्य प्रायश्चित्तं 9नोक्तं तेषामप्येतदनन्तरोक्तमेव प्रायश्चित्तं वेदितव्यम् । उक्तविषये विकल्प इत्यन्ये । तत्र ज्ञानाज्ञानकृतो विकल्पः ॥१४॥

15 गुरुतल्पगामी तु सुषिरां

गुरुतल्पगामी तु सुषिरां सूर्मिं प्रविश्योभयत आदीप्याभिदहेदात्मानम् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. But the violator of a Guru's bed shall enter a hollow iron image and, having caused a fire to be lit on both sides, he shall burn himself. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गुरुतल्पगामी तु सुषिरां सूर्मिं प्रविश्योभयत आदीप्याऽभिदहेदात्मानम् ॥१५॥

टिप्पनी⑥

यस्तु गुरुतल्पगामी सोऽन्तःप्रवेशयोग्यां सुषिरां सूर्मिं कृत्वा प्रविशेत प्रविश्योभयतः पार्श्वयो11र्वह्निमादीपयेत् । आदीप्याऽऽत्मानमभिदहेत् । “ज्वलितां वा सूर्मिं परिष्वज्य समाप्नुया (२५.२.)" दित्यत्रैव कियानपि विशेषः । अनन्तरोक्तस्य वैकल्पिकस्य निवृत्त्यर्थं वचनम् ॥ १५ ॥

16 मिथ्यैतदिति हारीतः

मिथ्यैतदिति हारीतः १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. According to Hārita, this (last-mentioned penance must) not (be performed).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मिथ्यैतदिति हारीतः ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

हारीतस्त्वृषिर्मन्यते- एतदनन्तरोक्तं मरणान्तिकप्रायश्चित्तं मिथ्या न कर्तव्यमिति ॥ १६॥

17 यो ह्यात्मानम् परं

यो ह्यात्मानं परं वाभिमन्यते *(=हन्ति)* ऽभिशस्त एव स भवति १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. For he who takes his own or another's life becomes an Abhiśasta.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यो ह्यात्मानं परं वाऽभिमन्यतेऽभिशस्त एव स भवति ॥ १७ ॥

प्रस्तावः⑥

कुत इत्यत आह—

टिप्पनी⑥

हिशब्दो हेतौ । यस्मात् य आत्मन परं वाऽभिमन्यते मारयति सोऽभिशस्त एव भवति ब्रह्महैव भवति । 12न च पतनीयापनोदनं चिकीर्षुरन्यत् पतनीयं कर्तुमर्हतीति । हेत्वभिधानादभिशस्तवचनाच्चाऽन्येषामपि मरणान्तिकानां ब्राह्मणविषये निवृत्तिः ॥ १७॥

18 एतेनैव विधिनोत्तमादुच्छ्वासाच्चरेत् नास्यास्मिंल्

एतेनैव विधिनोत्तमादुच्छ्ववासाच्चरेत् । नास्यास्मिंल् लोके प्रत्यापत्तिर्विद्यते । कल्मषं तु निर्हण्यते १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. He (the violator of a Guru's bed) shall perform to his last breath (the penance) prescribed by that rule (Sūtra 11). He cannot be purified in this world. But (after death) his sin is taken away.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतेनैव विधिनोत्तमादुज्छासाचरेनाऽस्याऽस्मिल्लोके प्रत्यापत्तिर्विद्यते कल्पषं तु निहण्यते ॥ १८ ॥

प्रस्तावः⑥

किं तर्हि तस्य प्रायश्चित्तमिति 13 आह—

टिप्पनी⑥

'अधोनाभ्युपरिजान्वि'(२८.११.)त्यादि यदनन्तरोक्तमेतेनैव विधिना । शिष्टं गतम् ॥ १८॥

19 दारव्यतिक्रमी खराजिनम् बहिर्लोम

दारव्यतिक्रमी खराजिनं बहिर्लोम परिधाय दारव्यतिक्रमिणे भिक्षामिति सप्तागाराणि चरेत् । सा वृत्तिः षण्मासान् १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. He who has unjustly forsaken his wife shall put on an ass's skin, with the hair turned outside, and beg in seven houses, saying, 'Give alms to him who forsook his wife.' That shall be his livelihood for six months.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दारव्यतिक्रमी खराजिनं बहिर्लोम परिधाय 'दारव्यतिक्रमिणे भिक्षा'मिति सप्ताऽगाराणि चरेत् । सा वृत्तिः षण्मासान् ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

14 यस्तु अन्तरेणैव निमित्तं कौमारान् दारान् परित्यजति स दारव्यतिक्रमी । खरस्य, गर्दभस्याऽजिनं बहिर्लोम परिधाय वसित्वा दारव्यतिक्रमिणे भिक्षां दत्तेति सप्तागाराणि भिक्षां चरेत् । 15कौमारदारपरित्यागिने भिक्षां दत्ते'ति वासिष्ठे । 16सा वृत्तिः षण्मासान् । ततः सिद्धिः ॥ १९ ॥

20 स्त्रियास्तु भर्तृव्यतिक्रमे कृच्छ्रद्वादशरात्राभ्यासस्तावन्तङ्

स्त्रियास्तु भर्तृव्यतिक्रमे कृच्छ्रद्वादशरात्राभ्यासस्तावन्तं कालम् २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. But if a wife forsakes her husband, she shall perform the twelve-night Kṛcchra penance for as long a time.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्त्रियास्तु भर्तुर्व्यतिक्रमे कृच्छ्रद्वादशरात्राभ्यासस्तावन्तं कालम् ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

भर्तुर्व्यतिक्रम इति छान्दसो रेफलोपः । व्यतिक्रमः परित्यागः । या तु स्त्री भर्तारं परित्यजत्यन्तरेण निमित्तं, तस्यास्तावन्त कालं षण्मासान् कृच्छ्रद्वादशरात्राभ्यासः प्रायश्चित्तम् ॥ २० ॥

21 अथ भ्रूणहा श्वाजिनङ्

अथ भ्रूणहा श्वाजिनं खराजिनं वा बहिर्लोम परिधाय पुरुषशिरः प्रतीपानार्थमादाय २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. He who has killed a Bhrūṇa (a man learned in the Vedas and Vedāṅgas and skilled in the performance of the rites) shall put on the skin of a dog or of an ass, with the hair turned outside, and take a human skull for his drinking-vessel,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ भ्रूणहा वाजिनं खराजिनं वा बहिर्लोम परिधाय पुरुषशिरः प्रतीपानार्थमादाय ॥२१॥

टिप्पनी⑥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ प्रथमप्रश्नेऽष्टाविंशी कण्डिका ॥२८॥

---

1. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
2. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
3.   1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.

    ↩
4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
5. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
6. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
7. Manu II, 35.↩

8. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

9. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

10. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

11. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

12. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

13. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

14. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

15. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

16. आप० ध० १.३०.८.↩

२९①

02 खट्वाङ्गन् दण्डार्थे कर्मनामधेयम्④

खट्वाङ्गं दण्डार्थे कर्मनामधेयं प्रब्रुवाणश्चङ्क्रम्येत को भ्रूणघ्ने भिक्षामिति । ग्रामे प्राणवृत्तिं प्रतिलभ्य शून्यागारं वृक्षमूलं वाभ्युपाश्रयेन्न हि म आर्यैः संप्रयोगो विद्यते १-१

एतेनैव विधिनोत्तमादुच्छ्वासाच्चरेत् । नास्यास्मिंल् लोके प्रत्यापत्तिर्विद्यते । कल्मषं तु निर्हण्यते १-२

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. And he shall take the foot of a bed instead of a staff and, proclaiming the name of his deed, he shall go about (saying), 'Who (gives) alms to the murderer of a Bhrūṇa?' Obtaining thus his livelihood in the village, he shall dwell in an empty house or under a tree, (knowing that) he is not allowed to have intercourse with Aryans. According to this rule he shall act until his last breath. He cannot be purified in this world. But (after death) his sin is taken away.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

खटाङ्गं दण्डार्थे कर्मनामधेयं प्रब्रुवाणश्चङ्क्रम्येत को भ्रूणघ्ने भिक्षामिति । ग्रामे प्राणवृत्तिं प्रतिलभ्य शून्यागारं वृक्षमूलं वाऽभ्युपाश्रये'न्न हिम आर्यैः सह सम्प्रयोगो विद्यते । एतेनैव

विधिनोत्तमादुच्छवासाच्चरेत् । नाऽस्यास्मिंल्लोके प्रत्यापत्तिर्विद्यते । कल्मषं तु निर्हण्यते॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

षडङ्गस्य वेदस्याऽध्येता, तदर्थवित्, प्रगोगशास्त्रस्य सव्याख्यस्यार्थवित् कर्मणामनुष्ठाताऽनुष्ठापयिता च ब्राह्मणो भ्रूणः । तथा च बौधायनः— 1'वेदानां किञ्चिदधीत्य ब्राह्मणः । एका शाखामधीत्य श्रोत्रियः । अङ्गाध्याय्यनूचानः । कल्पाध्याय्यृषिकल्पः। सूत्रप्रवचनाप्यायी भ्रूणः' इति । तं यो हतवान् स भ्रूणहा । स शुनः खरस्य वाऽजिनं वहिर्लोमपरिधाय पुरुषस्य यस्य कस्यचिन्मृतस्य शिरः, प्रतीपानार्थम् । प्रतिर्धात्वानुवादः 2 'उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुल'मिति बाहुलको दीर्घः । पानमेव प्रतीपानम् । पानग्रहणमुपलक्षणम् । भोजनमपि तत्रैव । खटाङ्गं दण्डार्थे, खट्वाया अङ्गं खट्वाङ्गमीषादि तण्द्दण्डकृत्ये आदाय । “भ्रणहाऽस्मीत्येवं कर्मनिबन्धनमात्मनो नामधेयं प्रब्रुवाणश्चक्रम्येत इतस्ततश्चरेत् । कापालिकतन्त्रप्रसिद्धस्य खट्वाङ्गस्य वा ग्रहणम् । भिक्षाचरणकाले च को भ्रूणघ्ने भिक्षा ददातीति चरेत् । चरित्वा प्रामे प्राणवृत्तिं प्राणयात्रामात्रं प्रतिलभ्य शून्यागारं वृक्षमूलं वा निवासार्थमभ्युपाश्रयेत्- 'न हि म आर्यैः सह सम्प्रयोगो विद्यत' इत्येवं मन्यमानः । कियन्तं कालमेवं चरितव्यमित्यत आह— एतेनैवेत्यादि । गतम् ।

'श्रोत्रियं वा कर्मसमाप्त(२४.२४.) मित्यत्र यः श्रोत्रियः 3ग्रन्थधारी अर्थज्ञश्च न भवति अनुष्ठापयिता च न भवति तस्य प्रहणम् ॥२॥

सूत्रम्⑥

यः प्रमत्तो हन्ति प्राप्तं दोषफलम् ॥ २॥

टिप्पनी⑥

'क्षत्रियं हत्वे'त्येवमादिकेऽनुक्रान्तेऽपि विषये यः प्रमत्तो हन्ति प्रमादे नाऽबुद्धिपूर्वं हन्ति तस्याऽपि दोषफलं प्राप्तमेव । न तु प्रमादकृतमिति दोषाभावः ॥२॥
02 यः प्रमत्तो

यः प्रमत्तो हन्ति, प्राप्तं दोषफलम् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. He even who slays unintentionally, reaps nevertheless the result of his sin.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यः प्रमत्तो हन्ति प्राप्तं दोषफलम् ॥ २॥

टिप्पनी⑥

'क्षत्रियं हत्वे'त्येवमादिकेऽनुक्रान्तेऽपि विषये यः प्रमत्तो हन्ति प्रमादे नाऽबुद्धिपूर्वं हन्ति तस्याऽपि दोषफलं प्राप्तमेव । न तु प्रमादकृतमिति दोषाभावः ॥२॥

03 सह सङ्कल्पेन भूयः

सह संकल्पेन भूयः ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. (His guilt is) greater, (if he slays) intentionally.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सह सङ्कल्पेन भूयः ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

सङ्कल्पेन सह वधे कृते भूयः प्रभूततरं भवति । तेन प्रमादकृते लघुप्रायश्चित्तम् , बुद्धिपूर्वं तु गुर्विति । यत्पुनः पूर्वमुक्तं 'दोषवच्च कर्माभिसन्धिपूर्वं कृत्वाऽनभिसन्धिपूर्वं वे(२६.७)'ति तत्र तेषु प्रायश्चित्तेषु विशेषाभावादिदमुक्तम् ॥ ३ ॥

04 एवमन्येष्वपि दोषवत्सु कर्मसु

एवमन्येष्वपि दोषवत्सु कर्मसु ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. The same (principle applies) also to other sinful actions,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवमन्येष्वपि दोषवत्सु कर्मसु ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

अन्येष्वपि हननव्यतिरिक्तेषु दोषवत्सु कर्ममु एवमेव द्रष्टव्यम्-अबुद्धिपूर्वं कृतेऽल्पो दोषः , बुद्धिपूर्वे महानिति ॥ ४॥

05 तथा पुण्यक्रियासु

तथा पुण्यक्रियासु ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. And also to good works. 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा पुण्यक्रियासु ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

पुण्यक्रियास्वप्येष एव न्यायः— अबुद्धिपूर्वेऽल्पं फलम्, बुद्धिपूर्वे महदिति। तद्यथा— ब्राह्मणस्स्वान्यपहृत्य चोरेषु धावत्सु यदृच्छया कश्चिच्छूर आगतस्तान् हन्यात्, स्वयमेव वा शूरं

दृष्ट्वा चोरा अपहृतानि द्रव्याण्युत्सृज्य पलायेरन् तदा शूरस्याऽल्पं पुण्यफलम् । यदा तु बुद्धिपूर्वं स्वयमेव चोरेभ्यः प्रत्याहृत्य स्वानि स्वामिभ्यो ददाति तदा महदिति । एवं स्वभार्याबुद्ध्या परदारगमनेऽल्पम्, अन्यत्र महदिति ॥५॥

06 परीक्षार्थोऽपि ब्राह्मण आयुधन्

परीक्षार्थोऽपि ब्राह्मण आयुधं नाददीत ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. A Brāhmaṇa shall not take a weapon into his hand, though he be only desirous of examining it.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

परीक्षार्थोऽपि ब्राह्मण आयुधं नाऽऽददीत ॥ ६॥

टिप्पनी⑥

गुणदोषज्ञानं परीक्षा । तया अर्थः प्रयोजनं यस्य सः । एवंभूतोऽपि ब्राह्मण आयुधं न गृह्णीयात् किं पुनर्हिंसार्थ इत्यपिशब्दार्थः ॥ ७ ॥

07 यो हिंसार्थमभिक्रान्तं हन्ति

यो हिंसार्थमभिक्रान्तं हन्ति मन्युरेव मन्युं स्पृशति न तस्मिन्दोष इति पुराणे ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. In a Purāṇa (it has been declared), that he who slays an assailant does not sin, for (in that case) wrath meets wrath.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यो हिंसार्थमभिकान्तं हन्ति मन्युरेव मन्युं स्पृशति न तस्मिन् दोष इति पुराणे ॥ ७ ॥

प्रस्तावः⑥

अस्य प्रतिप्रसवः—

टिप्पनी⑥

यस्तु हिंसार्थं मारणार्थमभिक्रान्तमभिपतितं हन्ति न तस्मिन् दोषो विद्यत इति पुराणे श्रुतम् । दोषाभावे हेतुः-यस्मान्मन्युरेव मन्युं स्पृशति न पुनः पुरुषः पुरुषम् । अत्र वसिष्ठबौधायनौ—

5स्वाध्यायिनं कुले जातं यो हन्यादाततायिनम् ।
न तेन भ्रूणहा स स्यान्मन्युस्तं मन्युमृच्छति ॥ इति ॥
मनुस्तु—

6शस्त्रं द्विजातिभिर्ग्राह्यं धर्मो यत्रोपरुद्ध्यते । द्विजातीनां च वर्णानां विप्लवे कालकारिते ॥
आत्मनश्च परित्राणे दक्षिणानां च सङ्गरे ।
स्त्रीविप्राभ्यवपत्तौ च घ्नन् धर्मेण न दुष्यति ॥ इति ॥

गौतमः- 7'प्राणसंशये ब्राह्मणोऽपि शस्त्रमाददीते'ति ॥

वसिष्ठः— 8अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः ।
क्षेत्रदारहरश्चैव षडेते ह्याततायिनः ॥
आततायिनमायान्तमपि वेदान्तपारगम् ।
जिघांसन्तं जिघांसीयान्न तेन भ्रूणहा भवेत् ॥' इति ॥७॥

08 अथाभिशस्ताः समवसाय पतितपुत्रेषु

अथाभिशस्ताः समवसाय
पतित-पुत्रेषु चरेयुर् धार्म्यम् इति
सांशित्येतरेतर-याजका इतरेतराध्यापका मिथो विवहमानाः ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. But Abhiśastas shall live together in dwellings (outside the village); considering this their lawful (mode of life), they shall sacrifice for each other, teach each other, and marry amongst each other.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाऽभिशस्ताः समवसाय चरेयुर्धार्म्यमिति सांशित्येतरेतरयाजका इतरेतराध्यापका मिथो विवाहमानाः ॥८॥

प्रस्तावः⑥

पतितैरकृतप्रायश्चित्तैरुत्पादितानां पुत्राणामपि पातित्यमस्तीति प्रतिपादयितुं पूर्वपक्षमाह —

टिप्पनी⑥

अथशब्दोऽर्थान्तरप्रस्तावं सूचयति । अभिशस्ताः पतिताः । समवसाय चरेयुः । अवसानं गृहम् । समित्येकीभावे । ग्रामाद्बहिरेकस्मिन् प्रदेशे गृहाणि कृत्वा चरेयुः । धार्म्यं धर्म्ये वक्ष्यमाणं वृत्तमिति । सांशित्य संशितां तीक्ष्णां बुद्धिं कृत्वा । निश्चित्येत्यर्थः । इतरेतरं याजयन्तः । इतरेतरमध्यापयन्तः परस्परं विवाहसम्बन्धं च कुर्वन्तश्चरेयुः वर्तेरन्निति ॥८ ॥

09 पुत्रान्सन्निष्पाद्य ब्रूयुर्विप्र व्रजततास्मदेवं

पुत्रान्संनिष्पाद्य ब्रूयुर् -
"विप्रव्रजततास्मद् -
एवं ह्य् अस्मत्स्व् आर्याः संप्रत्यपत्स्यते"ति ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. If they have begot sons, let them. say to them: 'Go out from amongst us, for thus the Āryas, (throwing the guilt) upon us, will receive you (amongst their number).' 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पुत्रान् सन्निष्पाद्य ब्रूयुर्विप्रजताऽस्मदेवं ह्यस्मत्स्वार्यास्सम्प्रत्यपत्स्यतेति ॥९॥

टिप्पनी⑥

अथ ते पुत्रान् सन्निष्पाद्य ब्रूयुः हे पुत्राः अस्मत् अस्मत्तः। विप्रव्रजत विविधं प्रकर्षेण च स्नेहमुत्सृज्याऽऽर्यसमीपं गच्छत ।
एवं ह्यस्मासु अस्मास्व् आर्याः शिष्टाः सम्प्रत्यपत्स्यत । 10
'आशंसायां भूतवच्चेति' भविष्यति लुङ् । सकारात्परो यकारोऽपपाठश्छान्दसो वा । सम्प्रतिपत्तिं करिष्यन्ति । आर्याणामप्येतदभिप्रेतं भविष्यति । यस्मादस्माभिरेव पतनीयं कर्माऽनुष्ठितं न भवद्भिः । न च पतितेनोत्पादितस्य पातित्यम्, अन्यत्वात् ॥९॥

10 अथापि न सेन्द्रि

अथापि न सेन्द्रि यः पतति १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. For the organs do not become impure together with the man.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाऽपि न सेन्द्रियः पतति ॥ १०॥

प्रस्तावः⑥

एतदेवोपपादयति

टिप्पनी⑥

न हि पतितो भवन् सहेन्द्रियेण पतति, पुरुष एव पतति, नेन्द्रियं शुक्लमिति । अथापिशब्दावपि चेत्यस्याऽर्थे ॥ १० ॥

11 तदेतेन वेदितव्यम् अङ्गहीनो

तदेतेन वेदितव्यम् । अङ्गहीनो हि साङ्गं जनयति ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. (The truth of) that may be learned from this (parallel case); a man deficient in limbs begets a son who possesses the full number of limbs. 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तदेतेन वेदितव्यमङ्गहीनो ऽपि साङ्गं जनयति ॥ ११ ॥

प्रस्तावः⑥

कथं न सेन्द्रियः पततीत्याह—

टिप्पनी⑥

तदनन्तरोक्तमर्थरूपमेतेन वक्ष्यमाणेन निदर्शनेन वेदितव्यम् । चक्षुराद्यङ्गहीनोऽपि साङ्गं चक्षुरादिमन्तं जनयति, एवमधिकारविकलः साधिकारं जनयिष्यति । स्त्रिया अपि कारणत्वात् तस्याश्च दोषाभावात् ॥ ११ ॥

12 मिथ्यैतदिति हारीतः

मिथ्यैतदिति हारीतः १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. Hārita declares that this is wrong.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मिथ्येतदिति हारीतः ॥ १२ ॥

प्रस्तावः⑥

दूषयति—

टिप्पनी⑥

एतदनन्तरोक्तमर्थरूपं मिथ्या न युक्तमिति हारीतो मन्यते ॥ १२॥

13 दधिधानीसधर्मा स्त्री भवति

दधिधानीसधर्मा स्त्री भवति १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. A wife is similar to the vessel which contains the curds (for the sacrifice). 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दधिधानीसधर्मा स्त्री भवति ॥ १३ ॥

प्रस्तावः⑥

कुत इत्याह—

टिप्पनी⑥

दधि धीयते यस्यां सा दधिधानी स्थाली । तया सधर्मा सदृशी स्त्री भवति ॥

14 यो हि दधिधान्यामप्रयतम्

यो हि दधिधान्यामप्रयतं पय आतच्य मन्थति न तेन धर्मकृत्यं क्रियते । एवमशुचि शुक्लं यन्निवर्तते न तेन सह संप्रयोगो विद्यते १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. For if one makes impure milk curdle (by mixing it with whey and water) in a milk-vessel and stirs it, no sacrificial rite can be performed with (the curds produced from) that. Just so no intercourse can be allowed with the impure seed which comes (from an Abhiśasta).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यो हि दधिधान्यामप्रयत्तं पय आतञ्च्य मन्थति न तेन धर्मकृत्यं क्रियेत एवमशुचि शुक्लं यन्निवर्तते न तेन सह सम्प्रयोगो विद्यते ॥ १४ ॥

प्रस्तावः⑥

ततः किम् ?

टिप्पनी⑥

यो हि पुरुषः दधिधान्यां स्थाल्याम्, अप्रयतं श्वाद्युपहतम् , पय आतञ्च्य तक्राद्यातञ्चनेन संस्कृत्य मन्थति न तेन तदुत्पन्नेन घृतादिना धर्मकृत्यं यागादिकं क्रियते। एवं पतितसम्बन्धेनाऽशुचि शुक्लं स्त्रियां निषितं शोणितेनाकं यन्निवर्तते येन रूपेण निष्पद्यते न तेन सह सम्प्रयोगो विद्यते शिष्टानाम् । अत्र चा'शुचि शुक्ल'मित्येत'दथापि न सेन्द्रिय पतती'त्यस्य दूषणम् । न हि वाचनिकेऽर्थे युक्तय क्रमन्ते । तथा च समानायामप्युत्पत्तौ पुत्र एव पतति न दुहिता । यथाऽऽह वसिष्ठः—

13 'पतितोत्पन्नः पतितो भवत्यन्यत्र स्त्रियाः । सा हि परगामिनी तामरिक्थामुपेयात्' । इति ॥ १४ ॥

15 अभीचारानुव्याहारावशुचिकरावपतनीयौ

अभीचारानुव्याहारावशुचिकरावपतनीयौ १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. Sorcery and curses (employed against a Brāhmaṇa) cause a man to become impure, but not loss of caste.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अभीचारा14नुव्याहारावशुचिकरावपतनीयौ ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

अभिचारः एवाऽभीचार । 15 'उपसर्गस्य धञी'ति दीर्घः । अभीचारः श्येनादिः । अनुव्याहारः शापः । तौ ब्राह्मणविषयेऽपि क्रियमाणावशुचिः करावेव, न तु पतनीयौ ॥ १५ ॥

16 पतनीयाविति हारीतः

पतनीयाविति हारीतः १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. Hārita declares that they cause loss of caste.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पतनीयाविति हारीतः ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

हारीतस्तु तावपि पतनीयाविति मन्यते ॥ १६ ॥

17 पतनीयवृत्तिस्त्वशुचिकराणान् द्वादश मासान्द्वादशार्धमासान्द्वादश

पतनीयवृत्तिस्त्वशुचिकराणां द्वादश मासान्द्वादशार्धमासान्द्वादश द्वादशाहान्द्वादश सप्ताहान्द्वादश त्र्यहान्द्वादशाहं सप्ताहं त्र्यहमेकाहम् १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. But crimes causing impurity must be expiated, (when no particular penance is prescribed,) by performing the penance enjoined for crimes causing loss of caste during twelve months, or twelve half months, or twelve twelve-nights, or twelve se’nnights, or twelve times three days, or twelve days, or seven days, or three days, or one day.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पतनीयवृत्तिस्त्वशुचिकराणां द्वादश मासान् द्वादशाऽर्धमासान् द्वादश द्वादशाहान् द्वादश सप्ताहान् द्वादश त्र्यहान् द्वादश द्व्यहान् द्वादशाहं सप्ताहं त्र्यहं द्व्यहमेकाहम् ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

अशुचिकराणामपि कर्मणां येषामाहत्य प्रायश्चित्तं नोक्तं तेषामपि पतनीयेषु कर्मसु या वृत्तिः प्रायश्चित्तं सैव प्रायश्चित्तिः। कियन्तं कालम् ? द्वादश मासाद्येकाहान्तम् ॥ १७ ॥

18 इत्यशुचिकरनिर्वेषो यथा कर्माभ्यासः

इत्यशुचिकरनिर्वेषो यथा कर्माभ्यासः १८

▼

⑤

>

▼ Bühler

18. Thus acts causing impurity must be expiated according to the manner in which the (sinful) act has been committed (whether intentionally or unintentionally).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

इत्यशुचिकरनिर्वेषो यथा कर्माभ्यासः ॥ १८ ॥

प्रस्तावः⑥

किमविशेषेण सर्वेष्वेवाऽशुचिकरेष्वयं कालविकल्पः ? नेत्याह—

टिप्पनी⑥

इत्येषोऽशुचिकरनिर्वेषो यथा कर्माभ्यासस्तथा वेदितव्यः । बुद्धिपूर्वे सानुबन्धेऽभ्यासे च भूयांसं कालम्, विपरीते विपर्यय इति ॥१८॥

॥ इत्यापस्तम्बसूत्रवृत्तौ प्रथमप्रश्ने एकोनत्रिंशी कण्डिका ॥ २९ ॥

इति चाऽऽपस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तमिश्रविरचितायामुज्वलायां प्रथमप्रश्ने दशमः पटलः ॥ १० ॥

इति दशमः पटलः

---

1. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

2. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

3. आप० ध० १. ३१. १.↩

4. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.

   ↩

5. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

6. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

7. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

8. आप० ध० १.३०.८.↩

9. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

10. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

11. Manu II, 35.↩

12. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

13. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

14. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

15. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

११①

३०①

01 विद्यया स्नातीत्येके④

विद्यया स्नातीत्येके १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. Some declare, that a student shall bathe after (having acquired) the knowledge of the Veda, (however long or short the time of his studentship may have been). 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विद्यया स्नातीत्येके १

प्रस्तावः⑥

'न समावृत्ता वपेरन्' (८. ७.) स्नातस्तु काल' (१०.७.) इत्यादिषु प्रसक्तस्य स्नानस्य कालमाह —

टिप्पनी⑥

वेदविद्या विद्या । तया सम्पन्नः स्नानं कुर्यादित्येके मन्यन्ते । मनुरित्याह—
2वेदानधीत्य वेदौ वा वेदं वाऽपि यथाक्रमम् ।
अविप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममावसेत् ॥ इति ॥ १॥
02 तथा व्रतेनाष्टाचत्वारिंशत्परीमाणेन

तथा व्रतेनाष्टाचत्वारिंशत्परीमाणेन २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. (He may) also (bathe) after having kept the student's vow for forty-eight, (thirty-six or twenty-four) years, (though he may not have mastered the Veda).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा व्रतेनाऽष्टाचत्वारिंशत्परीमाणेन ॥२॥

टिप्पनी⑥

परिमाणमेव परीमाणम् । छान्दसो दीर्घः । अष्टाचत्वारिंशद्ग्रहणं 3 'पादूनम्, अर्धेने'(२.१३,१४)त्यादिपूर्वोक्तस्याप्युपलक्षणम् । अष्टाचत्वारिंशदादिपरिमाणेन व्रतेन 4वा सम्पन्नः स्नायात् असम्पन्नोऽपि विद्यया ॥२॥

पादूनम् , अर्धेन, त्रिभिर्वा' इत्येतेषां पूर्वोक्तानामुपलक्षणम् । इति. क. पु.

'अथ ब्रह्मचर्यविधिः' इत्यारभ्य प्रपञ्चितेन समिदाधानभिक्षाचरणगन्धादिवर्जनादिरूपेण । अस्ति च तेषु व्रतशब्दः 'यथा व्रतेषु समर्थः स्याद्यानि वक्ष्यामः" इति । इह तु समुदायाभिप्रायमेकवचनम् । तेन वा व्रतेन सम्पन्नस्स्नायात् । असम्पन्नोऽपि विद्यया । 'चत्वारि वेदव्रतानी'त्येषां तु ग्रहणमत्र नाऽऽङ्कनीयम् । यथोक्तं विश्वरूपे । इत्यधिकः पाठो ग. पु.

03 विद्याव्रतेन चेत्येके

विद्याव्रतेन चेत्येके ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

Some declare, that the student (shall bathe) after (having acquired) the knowledge of the Veda and after (the expiration of) his vow.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विद्या व्रतेन चेत्येके ॥३॥

टिप्पनी⑥

विद्येति तृतीयैकवचनस्याकारस्य5 'सुपां सुलुक्' इत्यादिना लुक् । विद्यया व्रतेन चोभाभ्यां सम्पन्नः स्नायादित्येके मन्यते । एवं च 6'वेदमधीत्य स्नास्य'नित्यत्र वेदमधीत्येत्युपलक्षणम् । अत्र याज्ञवल्क्यः —

7वेदं व्रतानि वा पारं नीत्वा ह्युभयमेव वा ।
अविप्लुतब्रह्मचर्यो लक्षण्या स्त्रियमुद्वहेत् ॥ इति ।

- अत्र व्रतशब्देनाऽग्नीन्धनभैक्षाचरणादयो ब्रह्मचारिधर्मा उच्यते। तेषु हि कालपरिमाणस्य श्रुतत्वातू पारं नीत्वेति युज्यते । दृश्यते च तेषु व्रतशब्दः। 'यथा व्रतेषु समर्थस्स्याद्यानि वक्ष्याम इति। न तु सावित्र्यादीनि वेदव्रतान्युच्यन्ते । तेषां तत्तत्प्रदेशाध्ययनशेषतया तदभावेऽभावाद्वेदं व्रतानि वेति विकल्पानुपपत्तेः । अतः कालविशेषावच्छिन्नानि व्रतानि वेदमुभयं वा पारं नीत्वेत्यर्थः * ॥ ३ ॥

- *.एतच्चिन्हान्तर्गतो भागोऽधिकपाठतया परिगणितः ख. पुस्तके । ग. पुस्तके नास्ति पाठः । अन्यत्र तु यथायथमस्ति ।

04 तेषु सर्वेषु स्नातकवद्वृत्तिः

तेषु सर्वेषु स्नातकवद्वृत्तिः ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. To all those persons who have bathed (In accordance with any of the above rules must be shown) the honour due to a Snātaka.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषु सर्वेषु स्नातकवद्वृत्तिः ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

विद्यास्नातको व्रतस्नातक उभयस्नातक इति त्रयः स्नातका उक्ताः तेषु सर्वेषु स्नातकवत् 'तदर्हती'ति वतिः । स्नातकार्हा वृत्तिः पूजा8 'यत्राऽस्मा अपचिति'मित्यादिः कार्या । न तु व्रतस्नातके न्यूना, उभयस्नातकेऽधिकेति ॥ ४॥

05 समाधिविशेषाच्छ्रुतिविशेषाच्च पूजायाम् फलविशेषः

समाधिविशेषाच्छ्रुतिविशेषाच्च पूजायां फलविशेषः ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. The reverence (shown to a Snātaka) brings, however, different rewards according to the degree of devotion or of learning (possessed by the person honoured).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

समाधिविशेषाच्छ्रुतिविशेषाच्च पूजायां फलविशेषः ॥५॥

प्रस्तावः⑥

यद्यप्येवं तथाऽपि पूजयितुः फलविशेषोऽस्तीत्याह—

टिप्पनी⑥

कर्तव्येषु कर्मस्ववधानं समाधिः श्रुतिः श्रुतम् ॥ ५ ॥

06 अथ स्नातकव्रतानि

अथ स्नातकव्रतानि ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. Now follow the observances (chiefly to be kept) by a Snātaka.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ स्नातकव्रतानि ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

इत उत्तरं स्नातकव्रतान्यधिकृतानि वेदितव्यानि । यद्यपि वक्ष्यमाणेषु कानिचित् साधारणान्यपि भवन्ति तथाऽपि भूम्ना स्नातकव्रतान्यधिक्रियन्ते ॥६॥

07 पूर्वेण ग्रामान्निष्क्रमणप्रवेशनानि शीलयेदुत्तरेण

पूर्वेण ग्रामान् निष्क्रमण-प्रवेशनानि शीलयेद्, उत्तरेण वा ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. He shall usually enter the village and leave it by the eastern or the northern gate.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पूर्वेण ग्रामान्निष्क्रमणप्रवेशनानि शीलयेदुत्तरेण वा ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

यदा ग्रामान्निष्कामति ग्रामं वा प्रविशति तदा पूर्वेण द्वारणोत्तरेण वा कुर्यात्, न द्वारान्तरेण । शीलयेदिति वचनाद्यदृच्छया द्वारान्तरेण निष्क्रमणप्रवेशनयोरपि न प्रायश्चितम् ॥ ७ ॥

08 सन्ध्योश्च बहिर्ग्रामादासनं वाग्यतश्च

संध्योश् च बहिर्ग्रामाद् आसनं, वाग्-यतश् च ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. During the morning and evening twilights, he shall sit outside the village, and not speak anything (referring to worldly matters).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सन्ध्योश्च बहिर्ग्रामादासनं वाग्यतश्च ॥ ८ ॥

टिप्पनी⑥

अहोरात्रयोः सन्धानं सन्धिः ।
तौ च द्वौ - सायं प्रातश् च । 9
'सज्योतिष्याज्योतिषोऽदर्शनात्' इति गौतमः ।
तयोस् सन्ध्ययोर् ग्रामाद् बहिर् आसीत ।

वाग्यतश् च भवेत् । मनुः पुनराह—

> 10 'पूर्वां सन्ध्यां जपंस् तिष्ठेत्
> सावित्रीम् आर्कदर्शनात् ॥
> पश्चिमां तु समासीत
> सम्यगृक्षविभावनात् ॥'

इति

> 11तिष्ठेत् पूर्वाम् आसीतोत्तराम्

इति गौतमः। एते ब्रह्मचारि-विषये।
स्नातके आसनस्य वाङ्-निमनस्य चाऽत्र विधानात् ॥
अन्ये तु -
आसनग्रहणं स्थानस्याऽप्य् उपलक्षणम्,
वाग्यमश् च लौकिक्या वाचो निवृत्तिः,
न सावित्रीजपस्येति वर्णयन्ति ॥ ८ ॥

09 विप्रतिषेधे श्रुतिलक्षणम् बलीयः

विप्रतिषेधे श्रुतिलक्षणं *(सन्ध्याग्निहोत्रादिचोदकम्)* बलीयः ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. (But an Agnihotrī, who is occupied at home by oblations in the morning and evening, must not go out; for) in the case of a conflict (of duties), that enjoined by the Veda is the more important.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विप्रतिषेधे श्रुतिलक्षणं बलीयः ॥ ९॥

प्रस्तावः⑥

अहिताग्निविषयेऽस्याऽपवादः—

टिप्पनी⑥

विरोधो विप्रतिषेधः अग्निहोत्रिणो बहिर् आसनम् अग्निहोत्रहोमश् च विरुध्येते । तथा च श्रूयते- "समुद्रो वा एष यद् अहो-रात्रः, तस्यैते गाथे तीर्थे यत् सन्धी, तस्मात् सन्धौ होतव्यम्" इति । तत्र श्रुति-लक्षणम् अग्निहोत्रम् एव कर्तव्यम्, न स्मार्तं बाहिरासनम् । तस्य कल्प्य-मूलत्वाद् इतरस्य च , क्लृप्त-मूलत्वाद् अति । 12जैमिनिरत्याह— 13विरोधे त्वनपेक्षं स्यादसति हनुमानमिति ॥ ९॥

10 सर्वान्रागान्वाससि वर्जयेत्

सर्वान् रागान् वाससि वर्जयेत् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. He shall avoid all dyed dresses, 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वान्रागान्वाससि वर्जयेत् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

कुसुम्भादयस्सर्वे रागाः वाससि वर्जनीयाः, न केनचिद्रक्त-वासो बिभृयादिति ॥ १०॥

11 कृष्णञ् च स्वाभाविकम्

(वस्त्रं यत्) कृष्णं च स्वाभाविकम् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. And all naturally black cloth.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कृष्णं च स्वाभाविकम् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

यश् च स्वभावतः कृष्णं कम्बलादि तदपि न वसीत ॥ ११ ॥

12 अनूद्भासि वासो वसीत

अनूद्भासि वासो वसीत १२

▼

⑤

>

▼ Bühler

12. He shall wear a dress that is neither shining,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनूद्भासि वासो वसीत ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

उद्भासनशीलमुद्भासि उल्बणम् । ततोऽन्यदनूद्भासि । छान्दसो दीर्घः । एवंभूतं वासो वसीत् आच्छादयेत् ॥ १२ ॥

13 अप्रतिकृष्टञ् च शक्तिविषये

अ-प्रतिकृष्टं *(जीर्णत्वादेः)* च शक्तिविषये १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. Nor despicable, if he is able (to afford it). 15

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अप्रतिकृष्टं च शक्तिविषये ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

प्रतिकृष्टं निकृष्टं जीर्णं मलवत् स्थूलं च । तद्विपरीतमप्रतिकृष्टम् । तादृशं च वासो वसीत शक्तौ सत्याम् ॥ १३ ॥

14 दिवा च शिरसः

दिवा च शिरसः प्रावरणं वर्जयेन् - मूत्र-पुरीषयोः कर्म परिहाप्य १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. And in the day-time he shall avoid to wrap up his head, except when voiding excrements.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दिवा च शिरसः प्रावरणं वर्जयेन् - मूत्र-पुरीषयोः कर्म परिहाप्य ॥ १४॥

टिप्पनी⑥

चकारः पूर्वापेक्षया समुच्चयार्थः । दिवा शिरसः प्रावरणं पटादिना न कुर्यात् । किमविशेषेण ? नेत्याह- मूत्रपुरीषयोः कर्म क्रियां परिहाप्य वर्जयित्वा ॥ १४ ॥

15 शिरस्तु प्रावृत्य मूत्रपुरीषे

शिरस् तु प्रावृत्य मूत्र-पुरीषे कुर्याद् - भूम्यां किंचिद् *(तृणादि)* अन्तर्धाय १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. But when voiding excrements, he shall envelop his head and place some (grass or the like) on the ground. 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शिरस्तु प्रावृत्य मूत्रपुरीषे कुर्यात् भूम्यां किञ्चिदन्तर्धाय ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

दिवा रात्रौ च मूत्रपुरीषे कुर्वन् शिरः प्रावृत्त्य कुर्यात् । भूम्यां किञ्चिदन्तर्धाय तृणादिकम्, न साक्षात् भूम्यामेव । इह कामचारे प्राप्ते 'दिवा च शिरसः प्रावरणं वर्जये'दित्युक्तम् । तस्य पर्युदासः कृतः-'मूत्रपुरीषयोः कर्म परिहाप्ये'ति । तत्र मूत्रपुरीषकाले स एव कामचारः स्थितः। अत आरभ्यते-शिरस्तु प्रावृत्येति । एवं तर्हीदमेवाऽस्तु । न पूर्वः पर्युदासः। सोऽप्यवश्यं कर्तव्यः । अन्यथा 'शिरस्तु प्रावृत्ये'त्यस्य रात्रौ चरितार्थत्वात् दिवा प्रतिषेध एव स्यात् । गौतमस्त रात्रौ सदैव प्रावरणमाह17 'न प्रावृत्त्य शिरोऽहनि पर्यटेत्, प्रावृत्य रात्री, मुत्रोच्चारे चे'ति ॥ १५ ॥

16 छायायाम्मूत्रपुरीषयोः कर्म वर्जयेत्

छायायाम् मूत्रपुरीषयोः कर्म वर्जयेत् १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. He shall not void excrements in the shade (of a tree, where travellers rest).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

छायायां मूत्रपुरीषयोः कर्म वर्जयेत् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

'न चोपजीव्यच्छायास्वि'ति स्मृत्यन्तरे दर्शनात् यस्यां पथिकादयो विश्राम्यन्ति सा गृह्यते । तेन छत्रछायादेरप्रतिषेधः मेघच्छायाया अप्यप्रतिषेधः, अवर्जनीयत्वात् ॥ १६ ॥

17 स्वान् तु छायामवमेहेत्

स्वां तु छायाम् अव-मेहेत् १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. But he may discharge urine on his own shadow.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्वां तु छायामवमेहेत् ॥ १७॥

टिप्पनी⑥

छान्दसस्तुगभावः । द्वितीयाश्रुतेः प्रतिशब्दाध्याहारः । अवमेहनं मूत्रकर्म । अनुपजीव्यत्वान्नायं पूर्वस्य प्रतिषेधस्य विषय इति प्रतिप्रसवोऽयं न भवति । तेन सति सम्भवे स्वामेव छायां प्रत्यवमेढव्यम् ॥१७॥

18 न सोपानह्मूत्रपुरीषे कुर्यात्कृष्टे

न सोपानह् मूत्र-पुरीषे कुर्यात्, कृष्टे, पथ्य्, अप्सु च १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. He shall not void excrements with his shoes on, nor on a ploughed field, nor on a path, nor in water. 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

19 न सोपानन्मूत्रपुरीषे कुर्यात् ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

(अग्रिमे सूत्रे द्रष्टव्यम्)

सूत्रम्⑥

कृष्टे ॥ १९ ॥

सूत्रम्⑥

पथि ॥२०॥

सूत्रम्⑥

अप्सु च ॥२१॥

टिप्पनी⑥

स्पष्टानि चत्वारि ॥ १८-२१ ॥

19 तथा ष्ठेवनमैथुनयोः कर्माप्सु

तथा ष्ठेवन-मैथुनयोः कर्माप्सु वर्जयेत् १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. He shall also avoid to spit into, or to have connection with a woman in water. 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा21ष्ठेवनमैथुनयोः कर्माऽप्सु वर्जयेत् ॥२२॥

टिप्पनी⑥

ष्ठेवनमास्यश्लेष्मादीनामुत्सर्गः ॥ २२ ॥

20 अग्निमादित्यमपो ब्राह्मणङ् गा

अग्निम् आदित्यम् अपो ब्राह्मणं गा देवताश् चाभिमुखो मूत्र-पुरीषयोः कर्म वर्जयेत् २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. He shall not void excrements facing the fire, the sun, water, a Brāhmaṇa, cows, or (images of) the gods. 22

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अग्निमादित्यमपो ब्राह्मणं गा देवताश्चाऽभिमुखो मूत्रपुरीषयोः कर्म वर्जयेत् ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

देवताः देवता प्रतिमाः ॥२३॥

21 अश्मानं लोष्ठमार्द्राअनोषधिवनस्पतीनूर्ध्वानाच्छिद्य मूत्रपुरीषयोः

अश्मानं, लोष्ठम्,
आर्द्रान् ओषधि-वनस्पतीन्*(←पुष्पैर् विना फलन्ति)* ऊर्ध्वान् *(→वातादिभिर् अभग्नान्)* आच्छिद्य,
मूत्र-पुरीषयोः शुन्धने वर्जयेत् २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. He shall avoid to clean his body from excrements with a stone, a clod of earth, or with (boughs of) herbs or trees which he has broken off, whilst they were on the tree and full of sap.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अश्मानं लोष्टमानोषधिवनस्पतीनूर्ध्वानाच्छिद्य मूत्रपुरीषयोः शुन्धने वर्जयेत् ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

फल-पाकावसाना **ओषधयः** ।
ये पुष्पैर् विना फलन्ति ते **वनस्पतयः** ।
आर्द्रान् इति वचनात् शुष्केषु न दोषः ।
ऊर्ध्वान् इति वचनाद् वातादि-निमित्तेन भग्नेषु न दोषः। 'एतैरश्मादिभिमूत्रपुरीषयोश्शोधनं न कुर्यात् ॥

22 अग्निमपो ब्राह्मणङ् गा

अग्निम्, अपो, ब्राह्मणं, गा, देवता, द्वारं, प्रतीवातं च
शक्ति-विषये नाभिप्रसारयीत *(पादौ)*२२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. If possible, he shall not stretch out his feet towards a fire, water, a Brāhmaṇa, a cow, (iniages of) the gods, a door, or against the wind. 23

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अग्निमादित्यमपो ब्राह्मणं गा देवताद्वारं प्रति पादं च शक्तिविषये नाऽभिप्रसारयीत ॥ २५॥

टिप्पनी⑥

शक्तौ सत्यां अग्न्यादीन्प्रति पादौ न प्रसारयेत् ॥ २५ ॥

23 अथाप्युदाहरन्ति

अथाप्य् उदाहरन्ति *(ऽग्रे वक्ष्यमाणम्)* २३

▼

⑤

>

▼ Bühler

23. Now they quote also (the following verse):

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाऽप्युदाहरन्ति ॥ २६ ॥

टिप्पनी⑥

॥ इत्यापस्तम्बधर्मसूत्र प्रथमप्रश्ने त्रिंशी कण्डिका ॥ ३०॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
5. आप० ध० १.३०.८.↩
6. मनु० रमृ० २.६↩

7. गौ० ध० १. १, २↩

8. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

9. गौ० २, ११, 'सज्योतिषि' इत्यादि 'गौतम' इत्यन्तं नास्ति छ. पु.↩

10. आप० ध० १. ३१. १.↩

11. यत्किञ्चनदिङ्मुखेन इति क० पु० ।↩

12. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

13. आप० ध० १.३०.८.↩

14. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

15. Manu II, 35.↩

16. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

17. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

18. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

19. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

20. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

21. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

22. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

23. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

३१①

01 प्राङ्मुखोऽन्नानि भुञ्जीत उच्चरेद्दक्षिणामुखः④

> प्राङ्-मुखो ऽन्नानि भुञ्जीत
> उच्चरेद् दक्षिणा-मुखः ।
> उदङ्-मुखो मूत्रं कुर्यात्
> प्रत्यक्-पादावनेजनम्

इति १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. He shall eat facing the east, void fæces facing, the south, discharge urine facing the north, and wash his feet turned towards the west.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्राङ्मुखोऽन्नानि भुञ्जीत्तोच्चरेद्दक्षिणामुखः ।
उदङ्मुखो मूत्रं कुर्यात्प्रत्यक्पादावनेजनमिति ॥१॥

टिप्पनी⑥

उच्चारः पुरीषकर्म । पादावनेजनं पादप्रक्षालनम् । भोजनादिषु चतस्रो नियम्यन्ते । मनुस्तु—
1 'आयुष्यं प्राङ्मुखो भुक्ते यशस्यं दक्षिणामुखः ।
श्रियं प्रत्यङ्मुखो भुङ्क्त2 ऋतं भुङ्क्ते उदङ्मुखः' ॥ इति।
याज्ञल्क्यश्च —
3 'दिवा सन्ध्यासु कर्णस्थब्रह्मसूत्र उदङ्मुखः।
कुर्यान्मूत्रपुरीषे तु रात्री चेद्दक्षिणामुखः ॥' इति ॥ १॥
02 आराच्चावसथान्मूत्रपुरीषे कुर्याद्दक्षिणान् दिशन्

आराच् चावसथान् मूत्रपुरीषे कुर्याद्, दक्षिणां दिशं दक्षिणापरां वा २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. He shall void excrements far from his house, having gone towards the south or south-west. 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आराच्चाऽऽवसथान्मूत्रपुरीषे कुर्याद्दक्षिणां दिशं दक्षिणापरां वा ॥ २॥

टिप्पनी⑥

आवसथो गृहम् । तस्य दूरतो मूत्रपुरीषे कुर्यात्, दक्षिणां दिशम् । द्वितीयानिर्देशादभिनिष्क्रम्येति गम्यते । दक्षिणापरा नैर्ऋती ॥२॥

03 अस्तमिते च बहिर्ग्रामादारादावसथाद्वा

अस्तम् इते च
बहिर् ग्रामाद्,
आराद् आवसथाद् वा मूत्रपुरीषयोः कर्म वर्जयेत् ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. But after sunset he must not void excrements outside the village or far from his house.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अस्तमिते च बहिर्ग्रामादारादावसथान्मूमूत्रपुरीषयोः कर्म वर्जयेत् ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

अस्तमित आदित्ये बहिर्ग्रामान्मूत्रपुरीषे न कुर्यात् । तथा अन्तर्ग्रामेऽपि गृहस्य दूरतो न कुर्यात् । दृष्टार्थोऽयं प्रतिषेधश्चोरव्याघ्रादिशङ्कया । निर्भये देशे नाऽस्ति दोषः ॥ ३ ॥

04 देवताभिधानञ् चाप्रयतः

देवताभिधानं चाप्रयतः ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. And as long as he is impure he (shall avoid) to pronounce the names of the gods.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

देवताभिधानं चाऽप्रयतः॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

देवतानामन्यादीनामभिधानं चाऽप्रयतस्मन् वर्जयेत् । 5अपिधानमित्यपि पाठे एष एवार्थः ॥ ४॥

05 परुषञ् चोभयोर् देवतानां

परुषं *(वचनं)* चोभयोर् देवतानां राज्ञश् च *(वर्जयेत्)* ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. And he shall not speak evil of the gods or of the king. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

परुषं चोभयोर्देवतानां राज्ञश्च ॥५॥

टिप्पनी⑥

देवतानां राज्ञश्चेत्युभयोः । राश्यपेक्षया द्विवचनम् । परुष निन्दां वर्जयेत् ॥५॥

06 ब्राह्मणस्य गोरिति पदोपस्पर्शनं

ब्राह्मणस्य गोर् इति पदोपस्पर्शनं वर्जयेत् ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. He shall not touch with his foot a Brāhmaṇa, a cow, nor any other (venerable beings).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ब्राह्मणस्य गोरिति पदोपस्पर्शनं वर्जयेत् ॥ ६॥

टिप्पनी⑥

ब्राह्मणं गां च पादेन नोपस्पृशेत् । इतिशब्दः प्रकारे । तेन विद्यावयोवृद्धानामब्राह्मणानामपि वर्जनम् ॥ ॥६॥

07 हस्तेन चाकारणात्

हस्तेन चाकारणात् ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. (Nor shall he touch them) with his hand, except for particular reasons.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

हस्तेन चाऽकारणात् ॥ ७॥

टिप्पनी⑥

कारणमभ्यङ्गकण्डूयनादि । तेन विना हस्तेनाऽप्युपस्पर्शनं वर्जयेत् पूर्वोक्तानाम् ॥ ७॥

08 गोर्दक्षिणानाङ् कुमार्याश्च परीवादान्

गोर्, दक्षिणानां, कुमार्याश् च परीवादान् वर्जयेत् ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. He shall not mention the blemishes of a cow, of sacrificial presents, or of a girl. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गोर्दक्षिणानां कुमार्याश्च परीवादान्वर्जयेत् ॥ ८ ॥

टिप्पनी⑥

गोरदक्षिणाया अपि दक्षिणानामगवामपि हिरण्यादीनां कुमार्याः कन्यायाश्च दोषान् सतोऽपि न कथयेत् । अध्यात्मप्रकरणे योगाङ्गतया परीवादः प्रतिषिद्धः । अनन्तरं च वक्ष्यति8 'क्रोधादींश्च भूतदाहीयान् वर्जयेदिति । इदं तु वचनं गवादिषु प्रायश्चित्तातिरेकार्थम् ॥ ८ ॥

09 स्पृहतीञ् च गान्

(सस्यधान्यादिकं भक्षयन्तीं←) स्पृहतीं च गां नाचक्षीत *(तत्स्वामिने)* ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. And he shall not announce it (to the owner) if a cow does damage (by eating corn or grass in a field).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्पृहतीं च गां नाऽऽचक्षीत ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

स्पृहतीं सस्यधान्यादिकं भक्षयन्तीं गां स्वामिने न ब्रूयात् ॥ ९ ॥

10 संसृष्टाञ् च वत्सेनानिमित्ते

संसृष्टां *(गां)* च वत्सेनानिमित्ते *(नाचक्षीत तत्स्वामिने)*१०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. (Nor shall he call attention to it) if a cow is together with her calf, except for a particular reason.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

संसृष्टां च वत्सेनाऽनिमित्ते ॥१०॥

टिप्पनी⑥

या च गौर्वत्सेन संसृजते तामपि न ब्रूयादनिमित्ते-इयं ते गौर्वत्सेन पीयत इति । 'अनिमित्ते' इति वचनात्9 'यस्य हविषे वत्सा अपाकृता धयेयुरि'त्यादिके निमित्ते सति वक्तुर्नास्ति दोषः ॥ १०॥

11 नाधेनुमधेनुरिति ब्रूयात् धेनुभव्येत्येव

नाधेनुम् अधेनुर् इति ब्रूयात् - "धेनुभव्ये"त्य् एव ब्रूयात् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. And of a cow which is not a milch-cow he shall not say, 'She is not a milch-cow.' He must say, 'This is a cow which will become a milch-cow.'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽधेनुमधेनुरिति ब्रूयात् । धेनुभव्येत्येव ब्रयात् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

या च गौरधेनुः पयस्विनी भवति तामप्यधेनुरिति न ब्रूयात् ॥११॥

किं तर्हि धेनुभव्येत्येव ब्रूयात- भविष्यन्ती धेनुर्धेनुभव्या । 'धेनोर्भव्यायां (मुम् वक्तव्य) इति मुम् न भवति । च्व्यग्तत्वेनाऽव्ययत्वात् । वक्तव्यत्वे च सति शब्दनियमोऽयम् । न पुनरधेनुदर्शन एवं वक्तव्यम् ॥१२॥

12 न भद्रम्भद्रमिति ब्रूयात्

न भद्रम् "भद्रम्" इति ब्रूयात् । *(तत्-स्थाने)* "पुण्यं प्रशास्तम्" इत्येव ब्रूयात् १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. He shall not call 'lucky' that which is lucky. He shall call it 'a mercy, a blessing.' 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

11 न भद्रं भद्रमिति ब्रूयात् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

यत् भद्रं तत् भद्रमिति न ब्रूयात् ॥ १३ ॥

सूत्रम्⑥

पुण्यं प्रशास्तमित्येव ब्रूयात् ॥१४॥

प्रस्तावः⑥

किं तु?

टिप्पनी⑥

पुण्यं प्रशास्तमित्यनयोरन्यतरेण शब्देन ब्रूयात् । प्रशास्तं प्रशस्तम् । छान्दसो दीर्घः ॥ १४॥

13 वत्सतन्तीञ् च नोपरि

वत्स-तन्तीं च नोपरि गच्छेत् १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. He shall not step over a rope to which a calf (or cow) is tied. 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

13 वत्सतन्ती च नोपरि गच्छेत् ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

वत्सानां बन्धरज्जुर्वत्सतन्ती । तस्या उपरि न गच्छेत् तां न लङ्घयेत् । वत्सग्रहणं गोजातेरुपलक्षणम् ॥ १५॥

14 प्रेङ्खावन्तरेण (डोलास्तम्भौ) च

प्रेङ्खाव्*(=डोलास्तम्भौ)* अन्तरेण च नातीयात् १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. He shall not pass between the posts from which a swing is suspended. 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रेङ्खावन्तरेण च नाऽतीयात् ॥ १६॥

टिप्पनी⑥

प्रेङ्खौ डोलास्तम्भौ । तोरणस्तम्भावित्यन्ये । ताव् **अन्तरेण** नाऽतीयात्- तयोर्मध्ये न गच्छेत् ॥ १६ ॥

15 नासौ मे सपत्न

न "+असौ मे सपत्न" ब्रूयात् । यद्यसौ मे सपत्न इति ब्रूयाद्, द्विषन्तं भ्रातृव्यं जनयेत् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. (In company) he shall not say, 'This person is my enemy.' If he says, 'This person is my enemy,' he will raise for himself an enemy, who will show his hatred.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽसौ मे सपत्न इति ब्रूयात् यद्यसौ में सपत्न इति ब्रूयात् द्विषन्तं भ्रातृव्यं जनयेत् ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

असौ देवदत्तो मे सपत्न इति न ब्रूयात् सदसि । किं कारणम् ? यद्यसौ मे सपत्न इति ब्रूयात्, द्विषन्तं, क्रियाशब्दोऽयम्, विद्विषाणं भ्रातृव्यं सपत्नं जनयेत् 'व्यन् सपत्ने' इति भ्रातृशब्दे व्यन् प्रत्ययः । एवं युक्ते स मन्येत-नाऽकस्मादयं ब्रूते नूनमस्य मयि द्वेषो वर्तत इति । ततश्च तत्प्रतीकारार्थं यतमानस्सपत्न एव जायते इति ॥ १७ ॥

16 नेन्द्रधनुरिति परस्मै प्रब्रूयात्

नेन्द्र-धनुर् इति परस्मै प्रब्रूयात् १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. If he sees a rainbow, he must not say to others, 'Here is Indra's bow.' 15

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नेन्द्रधनुरिति परस्मै प्रब्रूयात् ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

इन्द्रधनुराकाशे पश्यन् परस्मै तेन शब्देन न ब्रूयात् । यद्यवश्यं वक्तव्यं मणिधनुरिति ब्रूयात् । गौतमीये 16 दर्शनात् ॥ १८ ॥

17 न पततः सञ्चक्षीतः

न पततः *(=पक्षिणः/ asteroids)* संचक्षीतः*(=गणयेत्)* १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. He shall not count (a flock of) birds. 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न पततः सञ्चक्षीत ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

पततः पक्षिणः सङ्घीभूय स्थितान्न सञ्चक्षीत न गणयेत्— इयन्त एत इति । अपर आह— 'पुण्यक्षयेण स्वर्गात्पततः सुकृतिनः परस्मै न सञ्चक्षीत-ज्योतींषि पतन्तीति न कथयेत् ॥ १९ ॥

18 उद्यन्तमस्तं यन्तञ् चादित्यन्

उद्यन्तम् अस्तं यन्तं चादित्यं दर्शने वर्जयेत् १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. He shall avoid to look at the sun when he rises or sets. 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उद्यन्तमस्तं यन्तं चाऽऽदित्यं दर्शने वर्जयेत् ॥२०॥

टिप्पनी⑥

उदयसमये अस्तमयसमये वा आदित्यं न पश्येत् ।
19मनुस्तु —

> नेक्षेतोद्यन्तम् आदित्यं
> नाऽस्तं यन्तं कदाचन ।
> नोपरक्तं न वारिस्थं
> न मध्यं नभसो गतम् ॥

इति ॥ २० ॥

19 दिवादित्यः सत्त्वानि गोपायति

दिवादित्यः सत्त्वानि गोपायति,
नक्तं चन्द्रमास्,
तस्माद् अमावास्यायां निशायां स्वाधीय*(=साधीय)* आत्मनो गुप्तिम् इच्छेत्
प्रायत्य-ब्रह्मचर्य-काले चर्यया च १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. During the day the sun protects the creatures, during the night the moon. Therefore let him eagerly strive to protect himself on the night of the new moon by purity, continence, and rites adapted for the season.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दिवाऽऽदित्यः सत्वानि गोपायति नक्तं चन्द्रमाः । तस्मादमावास्यायां निशायां स्वाधीय आत्मनो गुप्तिमिच्छेत् प्रायत्यब्रह्मचर्यकाले चर्यया च ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

दिवा अहनि । **आदित्यः** सत्वानि **गोपायति** प्राणिनो रक्षति, आलोकदानेन ।
नक्तं रात्रौ **चन्द्रमाः** ।
तस्माद् अमावास्यायां निशायां रात्रौ
स्वाधीयः । वकारश्छान्दसः । अन्तिकवाढयोर्नेदसाधौ ।
बाढतरं भृशतरं आत्मनो गुप्तिं रक्षणमिच्छेत् ।

केन प्रकारेण ?
प्रायत्य-ब्रह्मचर्याभ्यां काले चर्यया च । अयं तावदर्थानुरूपः पाठः। अधीयमानस्तु प्रमादश्छान्दसो वा । प्रयतस्य भावः प्रायत्यं नित्यप्रायत्यादधिकेन प्रायत्येन स्नानादिजेन । ब्रह्मचर्येण मैथुनत्यागेन । काले कृतया चर्यया देवार्चनजपादिकया च ॥ २१ ॥

20 सह ह्येतां रात्रिं

सह ह्य् एतां रात्रिं सूर्याचन्द्रमसौ वसतः २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. For during that night the sun and the moon dwell together.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सह ह्येतां रात्रिं सूर्याचन्द्रमसौ वसतः ॥ २२ ॥

प्रस्तावः⑥

कस्मात्पुनरस्यां रात्रौ चन्द्रमा न गोपायतीत्याह —

टिप्पनी⑥

एतां रात्रिम् । अत्यन्तसंयोगे द्वितीया । सर्वामेतां रात्रिं सूर्याचन्द्रमसौ सह वसतः । न च सूर्येण सह वसतश्चन्द्रमसः प्रकाशोऽस्ति ॥ २२ ॥

21 न कुसृत्या ग्रामम्

न कुसृत्या ग्रामं प्रविशेत् ।
यदि प्रविशेन् "नमो रुद्राय वास्तोष्पतय" इत्येताम् ऋचं जपेद् अन्यां वा रौद्रीम् २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. He shall not enter the village by a by path. If he enters it thus, he shall mutter this Ṛk-verse, 'Praise be to Rudra, the lord of the dwelling,' or some other (verse) addressed to Rudra. 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न कुसृत्या ग्रामं प्रविशेत् ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

कुसृतिः कुमार्गः । तया ग्रामं न प्रविशेत् ॥ २३॥

सूत्रम्⑥

यदि प्रविशे'न्नमो रुद्राय वास्तोष्पत्तय' इत्येतामृचं जपेदन्यां वा रौद्रीम् ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

यदि गत्यन्तराभावात् प्रविशेत21 'नमो रुद्राये'त्यादिकामृचं जपेत् । अन्यां वा रौद्रीम्22 'इमां रुद्राय तवस'इत्यादिकाम् । अत्र वाजसनेयगृह्ये— 23 वनं प्रवेक्ष्यन्ननुमन्त्रयते 'नमो रुद्राय वनसदे स्वस्ति मा सम्पारये'ति । पन्थानमारोक्ष्यन्ननुमन्त्रयते 'नमो रुद्राय पथिपदे स्वस्ति मा सम्पारये'ति । अपः प्रवेक्ष्यन्ननुमन्त्रयते— 'नमो रुद्रायाऽप्सुषदे स्वस्ति मा सम्पारयेति । तस्माद्यत्किञ्चन कर्म कुर्वन् स्यात् सर्वं 'नमो रुद्राये'त्येव कुर्यात् 'सर्वो ह्येष रुद्र' इति श्रुतेरिति । भारद्वाजगृह्येऽप्यस्मिन्विषये कियानेव भेदः ॥२४॥

22 नाब्राह्मणायोच्छिष्टम् प्रयच्छेत् यदि

नाब्राह्मणायोच्छिष्टं प्रयच्छेत् ।
यदि प्रयच्छेद् - दन्तान् स्कुप्त्वा, तस्मिन्न् अवधाय प्रयच्छेत् २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. He shall not (ordinarily) give the residue of his food to a person who is not a Brāhmaṇa. When he gives it (to such a one), he shall clean his teeth and give (the food) after having placed in it (the dirt from his teeth). 24

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽब्राह्मणायोच्छिष्टं प्रयच्छेत् ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

अब्राह्मणः शुद्रः । 25 'न शूद्रायोच्छिष्टमनुच्छिष्टं वा दद्या'दिति वासिष्ठे दर्शनात् । तस्मा उच्छिष्टं न प्रयच्छे'दित्यनाश्रितविषयम् ॥ २५ ॥

सूत्रम्⑥

यदि प्रयच्छेद्दन्तान् स्कुप्त्वा तस्मिन्नवधाय प्रयच्छेत् ॥२६॥

टिप्पनी⑥

इदमाश्रितविषयम् । दन्तान्नखेन स्कुपवा विलिख्य तन्मलं तस्मिन्नुच्छिष्टेऽवधाय प्रयच्छेत् । 'स्कुप्त्वे'ति स्कुभ्नातेः क्त्वाप्रत्यये छान्दसं भकारस्य चर्त्वम् । स्कुनोतेर्वा पकार उपजनः ॥ २६ ॥

23 क्रोधादींश्च भूतदाहीयान्दोषान्वर्जयेत्

क्रोधादींश् च भूत-दाहीयान् दोषान् वर्जयेत् २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. And let him avoid the faults that destroy the creatures, such as anger and the like. 26

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

क्रोधादींश्च भूतदाहीयान्दोषान्वर्जयेत् ॥ २७ ॥

टिप्पनी⑥

क्रोधादयो भूतदाहीया अध्यात्मपटले(२२.५) व्याख्याताः । तद्वचनं योगिविषयमित्ययोगिनोऽपि स्नातकस्य क्रोधादिनिवृत्त्यर्थमिदं वचनम् । इदमेव तर्ह्युभयार्थमस्तु-योग्यर्थमयोग्यर्थं च । एवं सिद्धे तद्वचनं क्रोधादिवर्जनस्य योगाङ्गत्वप्रतिपादनार्थम् । तेन क्रोधाद्यनुष्ठाने योगसिद्धिर्न भवति । न पुनः स्नातकव्रतलोपप्रायश्चितमिति ॥२७॥

॥ इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ प्रथमप्रश्ने एकत्रिंशी कण्डिका ॥ ३१ ॥

---

1. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

2. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

3. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

4. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
↩

5. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

6. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

7. Manu II, 35.↩

8. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

9. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

10. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

11. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

12. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

13. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

14. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

15. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

16. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

17. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

18. Manu II, 144.↩

19. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

20. Manu II, 146-148.↩

21. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

22. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

23. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

24. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

25. आप० ध० १.३०.८.↩

26. Manu II, 147.↩

३२①

01 प्रवचनयुक्तो वर्षाशरदम् मैथुनं④

प्रवचन-युक्तो वर्षा-शरदं मैथुनं वर्जयेत् १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. Let him who teaches, avoid connubial intercourse during the rainy season and in autumn. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रवचनयुक्तो वर्षाशरदं मैथुनं वर्जयेत् ॥ १॥

टिप्पनी⑥

प्रवचनमध्यापनम् । तेन युक्तो वर्षासु शरदि च मैथुनं वर्जयेत् ऋतावपि ॥१॥

02 मिथुनीभूय च न

मिथुनी-भूय च, न तया सह सर्वां रात्रिं शयीत २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. And if he has had connection (with his wife), he shall not lie with her during the whole night 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मिथुनीभूय च न तया सह सर्वां रात्रिं शयीत ॥ २॥

टिप्पनी⑥

मिथुनीभूय मैथुनं कृत्वा तया भार्यया सह तां रात्रिं सर्वां न शयीत ॥ २ ॥

03 शयानश्चाध्यापनं वर्जयेत्

शयानश् चाध्यापनं वर्जयेत् ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. He shall not teach whilst he is lying on a bed.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शयानश्चाऽध्यापनं वर्जयेत् ॥ ३॥

टिप्पनी⑥

दिवा नक्तं च शयानस्याऽध्यापनप्रतिषेधः। स्वयं तु धारणार्थमधीयानस्य न दोषः ॥ ३ ॥

04 न च तस्यां

न च तस्यां शय्यायाम् अध्यापयेद् यस्यां शयीत ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. Nor shall he teach (sitting) on that couch on which he lies (at night with his wife).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न च तस्यां शय्यायामध्यापयेद्यस्यां शयीत ॥४॥

टिप्पनी⑥

यस्या शय्यायां भार्यया सह शयीत रात्रौ तस्यां शय्यायामासीनोऽपि नाऽध्यापयेत् ॥ ४॥

05 अनाविःस्रगनुलेपणः स्यात्

अन्-आविः*(भूत)*-स्रग्-अनुलेपणः स्यात् ५

▼

⑤

>

▼ Bühler

5. He shall not show himself adorned with a garland, or anointed with ointments. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनाविःस्रगनुलेपणस्स्यात् ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

आविर्-भूते प्रकाशिते स्रगनुलेपने यस्य एवंभूतो न स्यात् । णत्वं पूर्ववत् ॥ ५ ॥

06 सदा निशायान् दारम्

सदा निशायां दारं प्रत्य् अलंकुर्वीत ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. At night he shall always adorn himself for his wife.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सदा निशायां दारं प्रत्यलङ्कुर्वीत ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

'दारं प्रतीति वचनादुपगमनार्थमलङ्करणम् । तेन भार्या अशक्त्यादिना उपगमनायोग्यत्वे नाऽयं नियमः ॥ ६ ॥

07 सशिरावमज्जनमप्सु वर्जयेत्

(नित्य-स्नाने स्नातकोचिते) सशिरा वमज्जनम् अप्सु वर्जयेत् ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. Let him not submerge his head together with his body (in bathing),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सशिरा वमज्जनमप्सु वर्जयेत ॥७॥

टिप्पनी⑥

वमज्जनम् अवमज्जनम् ।

'वष्टि वागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयो'रित्य् अकारलोपः ।
तत् **सशिरा** वर्जयेत् ।
सह शिरसा स्नानं न कुर्यात् ।

अवगाहन-विधयः सर्वे स्नातक-व्यतिरिक्ते चरितार्थाः, नैमित्तिकाश् च ।
स्नातकस्य तु नित्य-स्नानम् अवगाहन-रूपं न भवतीत्य् आचार्यस्य पक्षः ॥ ७ ॥

08 अस्तमिते च स्नानम्

अस्तम् इते च स्नानम् *(वर्जयेत्)*८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. And (let him avoid) to bathe after sunset.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अस्तमिते च स्नानम् ॥ ८ ॥

टिप्पनी⑥

अस्तमिते आदित्ये सर्वप्रकारं स्नानं वर्जयेत् ॥ ८॥

09 पालाशमासनम् पादुके दन्तप्रक्षालनमिति

पालाशम् {आसनं, पादुके, दन्त-प्रक्षालनम्} इति च वर्जयेत् ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. Let him avoid to use a seat, clogs, sticks for cleaning the teeth, (and other utensils) made of Palāśa-wood.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पालाशमासनं पादुके दन्तप्रक्षालनमिति च वर्जयेत् ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

पालाशमासनादि वर्जयेत् । दन्तप्रक्षालनं दन्तकाष्ठम् । इतिशब्दः प्रकारे। तेनाऽन्यदपि गृहोपकरणं पालाशं वर्जयेत् ॥ ६ ॥

10 स्तुतिञ् च गुरोः

स्तुतिं च गुरोः समक्षं - यथा "सुस्नातम्" इति १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. Let him avoid to praise (himself) before his teacher, saying, 'I have properly bathed or the like.'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्तुतिं च गुरोस्समक्षं यथा सुस्नातमिति ॥१०॥

टिप्पनी⑥

'सुस्नात'मित्यादिकां च स्तुतिं गुरोस्सन्निधौ वर्जयेत् ॥१०॥

11 आ निशाया जागरणम्

आ *(मध्य)*निशाया जागरणम् *(स्यात्)* ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. Let him be awake from midnight.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आ निशाया जागरणम् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

निशा रात्रेर्मध्यमो भागः । आ तस्मात् जागृयात् न स्वप्यात् ॥११॥

12 अनध्यायो निशायामन्यत्र धर्मोपदेशाच्छिष्येभ्यः

अनध्यायो निशायाम् *(=रात्रेर् मध्यभागः)* - अन्यत्र धर्मोपदेशाच् छिष्येभ्यः १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. Let him not study (or teach) in the middle of the night; but (he may point out) their duties to his pupils.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनध्यायो निशायामन्यत्र धर्मोपदेशाच्छिष्येभ्यः ॥१२॥

टिप्पनी⑥

निशायामनध्यायः अध्ययनमध्यापनं च न कुर्यात् । शिष्येभ्यस्तु धर्मोपदेशोऽनुज्ञायते ॥ १२ ॥

13 मनसा वा स्वयम्

मनसा वा स्वयम् *(अधीयीत)*॥ १३ ॥

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. Or (he may) by himself mentally (repeat the sacred texts).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मनसा वा स्वयम् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

निशायामनध्यायस्य प्रतिप्रसवः-मनसा वा स्वयं चिन्तयेदिति ॥ १३ ॥

14 ऊर्ध्वम् अर्धरात्राद् अध्यापनम्

ऊर्ध्वम् अर्धरात्राद् अध्यापनम् १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. After midnight he may teach.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ऊर्ध्वमर्धरात्रादध्यापनम् ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

अयमपि प्रतिप्रसवः । निशायामपि षोडश्या नाडिकाया आरभ्याध्यापनं भवतीति ॥१४॥

15 नापरराात्रमुत्थायानध्याय इति संविशेत्

नापरराात्रम् उत्थायानध्याय इति संविशेत् १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. When he has risen (at midnight, and taught) during the third watch of the night, let him not lie down again (saying), 'Studying is forbidden.' 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽपररात्रमुत्थायाऽनध्याय इति संविशेत् ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

रात्रेस्तृतीयो भागोऽपररात्रः । ऊर्ध्वमर्धरात्रादुत्थायाऽध्यापयन्नपररात्रे न संविशेत् न शयीत । यद्यपि तस्मिन्नष्टम्यादिरनध्यायः प्राप्तो भवति । किं पुनः स्वाध्याये । तथा च मनुः— 5'न निशान्ते परिश्रान्तो ब्रह्माऽधीत्य पुनः स्वपेत् ।' इति ॥१५॥

16 काममपश् शयीत

कामम् *(स्तम्बादिषु लीनः)* अपश्-शयीत १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. At his pleasure he may (sleep) leaning (against a post or the like).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

6काममपशयीत ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

अनेन स्तम्भाद्य्-उपाश्रयणेनाऽऽसीनस्य स्वापो ऽनुशायते । श्रिञ् सेवायाम् । तत्र रेफलोपश् छान्दसः। तथा शकारस्य द्विर्वचनम् ॥ १६ ॥

17 मनसा वाधीयीत

मनसा वाधीयीत १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. Or he may mentally repeat (the sacred texts).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मनसा वाऽधीयीत ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

अयमप्यूर्ध्वमर्धरात्रादुत्थायाऽध्यापयतोऽनध्यायप्राप्तावेवोच्यते। म नसा प्राप्तं प्रदेशमधीयीत स्वयं चिन्तयेत् । उपाश्रित्य वा स्वप्यात् ॥१७॥

18 क्षुद्रान्क्षुद्राचरितांश्च देशान्न सेवेत

क्षुद्रान्, क्षुद्राचरितांश् च देशान् न सेवेत १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. Let him not visit inferior men (such as Niṣādas), nor countries which are inhabited by them, 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

क्षुद्रान् क्षुद्राचारितांश्च देशान्न सेवेत ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

क्षुद्रानल्पकान् पुरुषान्न सेवेत । क्षुद्रैर्निषादादिभिरधिष्ठितांश्च देशान्न सेवेत ॥१८॥

19 सभाः समाजांश्च

सभाः समाजांश्*(=जनयूथं)* च १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. Nor assemblies and crowds.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सभास्समाजांश्च ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

सभास्समाजाश्च व्याख्याताः। तान्न सेवेत ॥ १९ ॥

20 समाजञ् चेद्गच्छेत् प्रदक्षिणीकृत्यापेयात्

समाजं*(=जनयूथं)* चेद् गच्छेत्, *(निर्गच्छन्)* प्रदक्षिणी-कृत्यापेयात् २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. If he has entered a crowd, he shall leave it, turning his right hand towards the crowd.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

समाजं चेद्गच्छेत्प्रदक्षिणीकृत्याऽपेयात् ॥ २०॥

टिप्पनी⑥

यद्यर्थात् समाजं गच्छेत् तं प्रदक्षिणीकृत्याऽपेयादपगच्छेत् ॥ २० ॥

21 नगरप्रवेशनानि च वर्जयेत्

नगर-प्रवेशनानि च वर्जयेत् २१

▼

⑤

>

▼ Bühler

21. Nor shall he enter towns frequently.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नगरप्रवेशनानि च वर्जयेत् ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

बहुवचननिर्देशात् बहुकृत्वो नगरं न प्रवेष्टव्यम् । यदाकदाचिद्यादृच्छिके प्रवेशे न प्रायश्चित्तम् ॥ २१ ॥

22 प्रश्नञ् च न

*(दुर्बोध्यार्थ-)*प्रश्नं*(→प्रश्नोत्तरं)* च न विब्रूयात् २२

▼

⑤

>

▼ Bühler

22. Let him not answer directly a question (that is difficult to decide).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रश्नं च न विब्रूयात् ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

विविच्य वचनं विवचनं निर्णयः । पृष्टम् अर्थं न विविच्य ब्रूयादिदमित्थमिति । दुर्निरूपार्थ-विषयम् इदम् ॥ २२ ॥

23 अथाप्युदाहरन्ति

अथाप्य् उदाहरन्ति *(वक्ष्यमाणं श्लोकम्)* २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. Now they quote also (the following verse):

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाऽप्युदाहरान्ति ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

अपि चाऽस्मिन्नर्थे श्लोकमुदाहरन्ति ॥ २३ ॥

24 मूलन् तूलं वृहति

> मूलं तूलं*(→आगामिनी सम्पत्)* वृहति*(=उत्पाटयति)*
> दुर्विवक्तुः प्रजां पशून् आयतनं हिनस्ति ।
> "धर्मप्रह्राद! न कुमालनाय *(इदं कुकर्म)*"
> रुदन् ह मृत्युर् व्य्-उवाच *(ऋषिकृतं)* प्रश्नम्
> *("केनानवधानेन पातितेन मच्छिशुर् मृत" इति)*

इति २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. (The foolish decision) of a person who decides wrongly destroys his ancestors and his future happiness, it harms his children, cattle, and house. 'Oh Dharmaprahrāda, (this deed belongs) not to Kumālana!' thus decided Death, weeping, the question (addressed to him by the Ṛṣi). 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मूलं तूलं वृहति दुर्विवक्तुः प्रजां पशुनायतनं हिनस्ति । धर्मप्रह्राद न कुमालनाय रुदन् ह मृत्युर्व्युवाच प्रश्नम् । इति ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

दुर्निरूपमर्थं सहसा निर्णीयं यो दुर्विवक्ति, अन्यथा वर्णयति स दुर्विवक्ता । तस्य **दुर्विवक्तुस्** तदेव दुर्वचनमेव मूलं तूलं च वृहति । **मूलं** पितृधनम् । **तूलम्** आगामिनी सम्पत् । तदुभयमपि **वृहति** उत्पाटयति । दन्तोष्ट्योः वकारः। किमेतावदेव ? न, **प्रजां** पुत्रादिकाम् । **पशून** गवादिकान् । **आयतनं** गृहं च **हिनस्ति** । अतो दुर्वचनसम्भवात् प्रश्नमात्रमेव न विब्रूयादिति।

अत्रेतिहासः —

कस्यचिद् ऋषेर् धर्मप्रह्रादः कुमालनश्चेति द्वौ शिष्यावास्ताम् ।
तौ कदाचिद् अरण्यान् महान्तौ समिद्-भाराव् आहृत्य श्रमाद्9 दृष्टिपूत एवाचार्यगृहे प्राक्षिपताम् ।
तयोरकेनाऽऽक्रान्त आचार्यस्य शिशुः पुत्रो मृतः ।
ततः शिष्यावाहूयाऽऽचार्यः पप्रच्छ- "केनायं मारित" इति ।

तावुभावपि न मयेत्य् ऊचतुः ।
तथा पतितस्य परित्यागम् अदुष्टस्य परिग्रहं कर्तुम् अशक्नुवन्न् ऋषिर् मुत्युम् आहूय पप्रच्छ- "केनायं व्यापादित" इति ।
ततो धर्मसङ्कटे पतितो मृत्यू रुदन्न् एव प्रश्नं **व्युवाच** विविच्य कथितवान् ।

कथम् ? **हे धर्मप्रह्लाद न कुमालनाय** । षष्ठपर्थे चतुर्थी । कुमानलस्य नेदं पतनीयम् इति । धर्मप्रह्लाद त्वयेदं कृतम् इति वक्तव्ये इतरस्य नाऽस्तीत्युक्तम् । तथापीतरस्यास्तीत्य् अर्थाद् गम्यते । इति रुदन् ह व्युवाचेति । ह-शब्द ऐतिह्यत्वद्योतनार्थः । प्रह्लादशब्दे हकारात्परो रेफश्छान्दसः ॥ २४ ॥

25 गार्दभं यानमारोहणे विषमारोहणावरोहणानि

गार्दभं यानम् आरोहणे,
विषमारोहणावरोहणानि च वर्जयेत् २५

▼

⑤

>
▼ Bühler

25. Let him not ascend a carriage yoked with asses; and let him avoid to ascend or to descend from vehicles in difficult places.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गादर्भं यानमारोहणे विषमारोहणावरोहणानि च वर्जयेत् ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

गर्दभयुक्तं यानं गार्दभं शकटादि । **आरोहणे** वर्जयेत् नाऽऽरोहेत् । तथा विषमेषु निम्नोन्नतेष्वारोहणमवरोहणं च वर्जयेत् । उन्नतेष्वारोहणं निम्नेष्ववरोहणम् ॥ २५॥

26 बाहुभ्याञ् च नदीतरम्

बाहुभ्यां च नदी-तरम् २६

▼

⑤

>

▼ Bühler

26. And (let him avoid) to cross a river swimming. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

बाहुभ्यां च नदीतरणम् ॥ २६ ॥

टिप्पनी⑥

तरण तरः । बाहुभ्यां च नद्यास्तरणं वर्जयेत् । 'बाहुभ्यां'मिति वचनात् प्लवादिना न दोषः ॥ २६ ॥

27 नावाञ् च सांशयिकीम्

नावां च सांशयिकीम् *(वर्जयेत्)*२७

▼

⑤

>
▼ Bühler

27. And (let him avoid) ships of doubtful (solidity).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नावं च सांशयिकीम् ॥ २७ ॥

टिप्पनी⑥

भिद्यते न वेति संशयमापन्ना सांशयिकी नौः । जीर्णां नावं वर्जयेत् । 'नावा'मिति षष्ठयन्तपाठे नावां मध्ये सांशयिकीं नावं वर्जयेत् ॥ २७॥

28 तृणच्छेदनलोष्टविमर्दनाष्ठेवनानि चाकारणात्

तृण-च्छेदन-लोष्ट-विमर्दनाष्ठेवनानि चाकारणात् २८

▼

⑤

>
▼ Bühler

28. He shall avoid cutting grass, crushing clods of earth, and spitting, without a particular reason, 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तृणच्छेदनलोष्टविमर्दनष्ठेवनानि चाऽकारणात् ॥ २८॥

टिप्पनी⑥

तृणच्छेदनादि नाऽकारणाद्वर्जयेत् न कुर्यात् । तृणच्छेदनस्याऽग्निज्वलनादि कारणम् । ष्ठेवनस्य कारणं प्रतिश्यायादि । इतरच्च मृग्यम् ॥

29 यच्चान्यत्परिचक्षते यच्चान्यत्परिचक्षते

यच् चान्यत् परिचक्षते, यच् चान्यत् परिचक्षते २९

▼

⑤

>

▼ Bühler

29. And whatever else they forbid.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यच्चाऽन्यत्परिचक्षते यच्चाऽन्यत्परिचक्षते ॥ २९ ॥

टिप्पनी⑥

यच्चाऽन्यदेवं युक्तमाचार्याः परिचक्षते वर्जयन्ति तदप्यक्षक्रीडादि वर्जयेत् । द्विरुक्तिः प्रश्नपरिसमाप्तिकृता ॥ २९ ॥

॥ इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ प्रथमप्रश्ने द्वात्रिंशी कण्डिका ॥ ३२ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तावुज्वलायामेकादशः पटलः ॥

॥ समाप्तः प्रथमः पश्नः ॥
॥ श्रीः ॥

इत्येकादशः पटलः

इति प्रथमोऽध्यायः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
↩
2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
3. Manu II, 35.↩
4. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
5. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
6. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
7. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

8. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

9. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

10. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

11. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

२①

০২①

०१①

01 पाणिग्रहणादधि गृहमेधिनोर्व्रतम्④

पाणिग्रहणादधि गृहमेधिनोर्व्रतम् १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. After marriage the rites prescribed for a householder and his wife (must be performed). 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पाणिग्रहणादधि गृहमेधिनोव्रतम् ॥१॥

टिप्पनी⑥

पूर्वस्मिन् प्रश्न आद्ययो' पटलयोः प्रायेण ब्रह्मचारिणो धर्मा उक्ताः। इतरेष्वष्टसु सर्वाश्रमाणाम् । एकादशे समावृत्तस्य । इदानीं पाणिग्रहणादारभ्य कर्तव्यानि कर्माण्युच्यन्ते । पाणिर्यस्मि2न्नहनि गृह्यते तत्पाणिग्रहणम्3 । अधिशब्द ऊर्ध्वार्थे वर्तते । तस्मादूर्ध्वं गृहमेहधिनोर्गृहस्थाश्रमवतोः यद्व्रतं नियतं कर्तव्यम्, जातावेकवचनम्, तदुच्यते । 'पाणिग्रहणादधी'ति वचनं4 भार्यादिरग्निर्दायादिर्वे'ति शास्त्रान्तरोक्तो विकल्पो मा भूदिति । 'गृहमेधिनो'रिति द्विवचनमन्यतरमरणे मा भूदिति5 । वैश्वदेवं तु विधुरा अपि कुर्वन्ति ॥ १॥

02 कालयोर्भोजनम्

कालयोर्भोजनम् २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. He shall eat at the two (appointed) times, (morning and evening) 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कालयोर्भोजनम् ॥ २ ॥

टिप्पनी⑥

कालयोरुभयोरपि भोजनं कर्तव्यम्-सायं प्रातश्च, नाऽन्तरेति परिसङ्ख्येयम्, भोजनस्य रागप्राप्तत्वात् । मानवे च स्पष्टमुक्तम्—
7 सायं प्रातर्द्विजातीनामशनं श्रुतिचोदितम् ।
नाऽन्तरा भोजनं कुर्यादग्निहोत्रसमो विधिः ॥' इति ।
अन्ये तु नियमं मन्यन्ते8 शक्तौ सत्यां गृहमेधिनोरुभयोरपि कालयोरवश्यं भोक्तव्यं प्राणाग्निहोत्रस्याऽलोपायेति ।

तथा च बौधायनः—
9 'गृहस्थो ब्रह्मचारी वा योऽनश्नंस्तु तपश्चरेत् ।

प्राणाग्निहोत्रलोपेन ह्यवकीर्णी भवेत्तु सः ॥ इति ।
10अन्यत्र प्रायश्चित्तात् । प्रायश्चित्ते तु तदेव विधानमिति ॥२॥

03 अतृप्तिश्चान्नस्य

अतृप्तिश्चान्नस्य ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. And he shall not eat to repletion.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अतृप्तिश्चाऽन्नस्य ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

सुहितार्थयोगे करणे षष्ठी भवति । 11'पूरणगुणसुहितार्थे'ति ज्ञापनात् । अनेन तृप्तिं न गच्छताम् । यावत्तृप्ति न भोक्तव्यम् ॥३॥

04 पर्वसु चोभयोर् उपवासः

पर्वसु चोभयोर् उपवासः ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. And both (the householder and his wife) shall fast on (the days of) the new, and full moon,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पर्वसु चोभयोरुपवासः ॥ ४॥

टिप्पनी⑥

पक्षसन्धिः पर्व । इह तु तद्युक्तमहर्गृह्यते । तेषु पर्वसूभयोर्दम्पत्योरुपवासः कर्तव्यः । उपवासो भोजनलोपः ॥ ४॥

05 औपवस्तम् एव कालान्तरे

औपवस्तम् एव कालान्तरे भोजनम् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. To eat once (on those days in the morning) that also is called fasting. 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

औपवस्तमेव कालान्तरे भोजनम् ॥ ५ ॥

प्रस्तावः⑥

जातिविशेषादुभयोरपि कालयोः प्राप्तावाह—

टिप्पनी⑥

यत्कालान्तरे एकस्मिन् काले भोजनं तदप्यौ13पवस्तमेव उपवास एव । 14 'औपवस्तं तूपवासः' इति निघण्टुः । तदपि दिवा, न रात्रौ; श्रोते तथा दर्शनात् 15 न तस्य सायमश्नीयादिति । तदिह 16 एवमत ऊर्ध्वमित्यादि गृह्ये यदुक्तं तत्रत्य उपवासो व्याख्यातः ॥ ५ ॥

06 तृप्तिश् चान्नस्य

तृप्तिश् चान्नस्य ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. And they may eat (at that meal) until they are quite satisfied.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तृप्तिश्चाऽन्नस्य ॥ ६॥

टिप्पनी⑥

पर्वसु सकृद्भुञ्जानौ यावत्तृप्ति भुजीयाताम् ॥ ६ ॥

07 यच्चैनयोः प्रियं स्यात्

यच्चैनयोः प्रियं स्यात् तद् एतस्मिन्न् अहनि भुञ्जीयाताम् ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. And on (the anniversary of) that (wedding)-day they may eat that food of which they are fond. 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यच्चैनयोः प्रियं स्यात्तदेतस्मिन्नहानि भुञ्जीयाताम् ॥७॥

टिप्पनी⑥

'एतस्मिन्नहनी'ति न वक्तव्यम् । प्रकृतत्वात् । यथा 'तृप्तिश्चान्नस्ये'ति पर्वसु भवति, एवमिदमपि भविष्यति। किं च 'पर्वस्विति बहुवचनान्तस्य प्रकृतस्य 'एतस्मिन्नहनी'त्येकवचनान्तेन प्रत्यवमर्शो नाऽतीव समञ्जसः । तस्माद्व्यवहितमपि पाणिग्रहणमहः प्रत्यवमृश्यते । एतदर्थमेव च गृह्ये 18एतदहर्विजानीयाद्यदहर्भार्यामावहत' इत्युक्तम् । एतस्मिन् पाणिग्रहणेऽहनि यदेनयोर्दम्पत्योः प्रियं तत् भुञ्जीयाताम् । न तु 'नाऽऽत्मार्थमभिरूपमन्नं पाचये'(२.७-४)दिति निषेधस्याऽय विषय इति । प्रतिसंवत्सरं चैतत्कर्तव्यम् । यथा चैत्रे मासि स्वातौ कृतविवाहस्याऽपरस्मिन्नपि संवत्सरे तस्मिन्मासे स्वातावेव कार्यम् । एवं हि तदेवाऽहरिति भवति । प्रतिमासं तु नक्षत्रागमेऽपि चैत्रादिभेदान्न तदेवेति प्रतिपत्तिः । तस्मात् प्रतिसंवत्सरमिदं विवाहनक्षत्रे कर्तव्यम् । 19यथा राज्ञामभिषेकनक्षत्रमेवं हि गृहमेधिनोर्विवाहनक्षत्रमिति ॥ ७ ॥

08 अधश्च शयीयाताम्

अधश्च शयीयाताम् ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. And (on the night of that day) they shall sleep on the ground (on a raised heap of earth). 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अधश्च शयीयाताम् ॥ ८ ॥

टिप्पनी⑥

एतस्मिन्नहनि स्थण्डिलशायिनौ स्याताम् ॥ ८॥

09 मैथुनवर्जनञ् च

मैथुनवर्जनं च ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. And they shall avoid connubial intercourse.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मैथुनवर्जनं च ॥९॥

टिप्पनी⑥

21मैथुनवर्जनं चैतस्मिन्नहनि कर्तव्यम् ॥ ९ ॥

10 श्वोभूते स्थालीपाकः

श्वोभूते स्थालीपाकः १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. And on the day after (that day) a Sthālīpāka must be offered. 22

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्वो भूते स्थालीपाकः ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

स्थालीपाकश्च कर्तव्योऽपरेद्युः ॥ १० ॥

11 तस्योपचारः पार्वणेन व्याख्यातः

तस्योपचारः पार्वणेन व्याख्यातः ११

▼

⑤

>

▼ Bühler

11. The manner in which that offering must be 23 performed has been declared by (the description of the Sthālīpāka) to be performed on the days of the new and full moon (the Pārvaṇa).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्योपचारः पार्वणेन व्याख्यातः ॥११॥

टिप्पनी⑥

तस्य स्थालीपाकस्योपचारः प्रयोगप्रकारः पार्वणेन व्याख्यातः । एतदेव ज्ञापयति-न सामयाचारिकेषु पार्वणातिदेश प्रवर्तत इति । केचित्तु सर्वमेवैतत्पर्वविषयं मन्यन्ते । तेषामुक्तो दोषः । 'पार्वणेन व्याख्यात' इति चाऽनुपपन्नम् । न हि स एव तेन व्याख्यातो भवति । 'श्वो भूते स्थालीपाक' इति च व्यर्थम् । 24 उपोषिताभ्यां पर्वसु कार्य' इति पूर्वमेवोक्तत्वात् । 'एतदहर्विजानीया'दिति चास्य प्रयोजनं तत्पक्षे चिन्त्यम्25 ॥ ११॥

12 नित्यं लोक उपदिशन्ति

नित्यं लोक उपदिशन्ति १२

▼

⑤

>

▼ Bühler

12. And they declare (that this rite which is known) amongst the people (must be performed) every (year). 26

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नित्यं लोक उपदिशन्ति ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

लोके शिष्टाचारसिद्धमेतत्कर्म नित्यं प्रतिसंवत्सरं कर्तव्यमिति शिष्टा उपदिशन्ति । अपर आह- वक्ष्यमाणं कर्म शिष्टाचारसिद्धं नित्यं सार्वत्रिकं इति शिष्टा उपदिशन्ति ॥ १२ ॥

13 यत्र क्व चाग्निमुपसमाधास्यन्स्यात्तत्र

यत्र क्व चाग्निमुपसमाधास्यन्स्यात्तत्र प्राचीरुदीचीश्च तिस्रस्तिस्रो लेखा लिखित्वाद्भिरवोक्ष्याग्निमुपसमिन्ध्यात् १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. At every (burnt-offering), when he wishes to place the fire on the altar (called Sthaṇḍila), let him draw on that (altar) three lines from west to east and three lines from south to north, and sprinkle (the altar) with water, turning the palm of the hand downwards, and let him then make the fire burn brightly by adding (fuel). 27

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यत्र क्व चाऽग्निमुपसमाधास्यन् स्यात्तत्र प्राचीरुदीचीश्च तिस्रस्तिस्रो रेखा लिखित्वाऽद्भिरवोक्ष्याऽग्निमुपसमिन्ध्यात् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

होमप्रसङ्गादिदमुच्यते- यत्र क्व च गार्ह्ये सामयाचारिके वा कर्मणि गृहेऽरण्ये वाऽग्निमुपसमाधास्यन् प्रतिष्ठापयिष्यन् स्यात्तत्र पूर्वं प्राचीः प्रागग्रास्तिस्रो रेखा विलिखेत् । तत उदीची उदगग्रास्तिस्रः। एवं तिस्रो लेखा लिखित्वाऽद्भिरवोक्षेत् । अवोक्ष्याऽग्निं श्रोत्रियागारादाहृत्य प्रतिष्ठाप्योपसमिन्ध्यादुपसमिन्धीत काष्ठैरभिज्वलयेत् । तत्र28 'पुरस्तादुदग्वोपक्रमः, तथापवर्ग' इति परिभाषितम् । उपदेशक्रमाच्च प्राच्या पूर्वं लेखा लेखनीयाः ततश्चोदीच्यः29।

30प्राची पूर्वमुदक्संस्थं दक्षिणारम्भमालिखेत् ।
अथोदीचीः पुरस्संस्थं पश्चिमारम्भमालिखेत् ॥
31अन्ये तु प्राचीरुदगारम्भं दक्षिणान्तमालिखन्ति ॥ १३ ॥

14 उत्सिच्यैतदुदकमुत्तरेण पूर्वेण वान्यदुपदध्यात्

(शिष्टम् उदकम्) उत्सिच्यैतदुदकमुत्तरेण पूर्वेण वान्यदुपदध्यात् १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. He shall pour out (the remainder of) this water used for sprinkling, to the north or to the east (of the altar), and take other (water into the vessel).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उत्सिच्यैतदुदकमुत्तरेण पूर्वेण वाऽन्यदुपदध्यात् ॥१४॥

टिप्पनी⑥

एतदवोक्षणशेषोदकमग्नेरुत्तरतः पूर्वतो वा उत्सिञ्चेत् । उसिच्याऽन्यदुदकं पात्रस्थमुपदध्यात्तत्रैव ॥ १४ ॥

15 नित्यमुदधानान्यद्भिररिक्तानि स्युर्गृहमेधिनोर्व्रतम्

नित्यमुदधानान्यद्भिररिक्तानि स्युर्गृहमेधिनोर्व्रतम् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. The water-vessels in the house shall never be empty; that is the duty to be observed by the householder and his wife. 32

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नित्यमुदधानान्यद्भिररिक्तानि स्युर्गृहमेधिनोर्व्रतम् ॥१५॥

टिप्पनी⑥

गृहे यावन्त्युदधानान्युदपात्राणि घटकरकादीनि तानि सदाऽद्भिररिक्तानि स्युः । एतदपि गृहमेधिनोर्व्रतम् । पुनः 'गृहमेधिनोरिति वचनमस्मिन् कर्मणि स्वयं कर्तृत्वमेव यथा स्यात् प्रयोजककर्तृत्वं मा भूदिति।
अन्य आह— पुन'र्गृहमेधिनो'रिति वचनात् पूर्वसूत्रं ब्रह्मचारिविषयेऽपि 'सावित्र्या समित्सहरमाध्या' (१.२६.१.)दित्यादौ भवति । पाके तु स्त्रिया न भवति । 'उपसमाधास्य'न्निति लिङ्गस्य विवक्षितत्वात् । आर्याः प्रयता' (२.३.१.) इत्यादौ भवतीति ॥१५॥

16 अहन्यसंवेशनम्

अहन्यसंवेशनम् १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. Let him not have connubial intercourse (with his wife) in the day-time.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अहन्यसंवेशनम् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

संवेशन मैथुनं तदहनि न कर्तव्यम् ॥ १६ ॥

17 ऋतौ च सन्निपातो

ऋतौ च संनिपातो दारेणानुव्रतम् १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. But let him have connection with his wife at the proper time, according to the rules (of the law). 33

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ऋतौ च सन्निपातो दारेणाऽनुव्रतम् ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

रजोदर्शनादारभ्य षोडशाऽहोरात्रा ऋतुः । तत्र च सन्निपातः संयागो दारेण सह कर्तव्यः । छान्दसमेकवचनम् । 34 नित्यं बहुवचनान्तो हि दारशब्दः । अनुव्रतं शास्त्रतो नियमो व्रतं, तदनुरोधेन । तत्र मनुः—

35 ऋतुः स्वाभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडश स्मृताः ।
चतुर्भिरितरैस्सार्धमहोभिस्सद्विगर्हितैः ॥
तासामाद्याश्चतस्त्रस्तु निन्द्या एकादशी च या ।
त्रयोदशी च शेषास्तु प्रशस्ता दश रात्रयः'॥
36 अमावास्यामष्टमीं च पौर्णमासीं चतुर्दशीम् ॥
ब्रह्मचारी भवेन्नित्यमप्यृतौ स्नातको द्विजः ।' इति ।
याज्ञवल्क्यस्तु —
37एवं गच्छन् स्त्रियं क्षामां मघां मूलं च वर्जयेत् । इति ।
आचार्यस्तु चतुर्थींप्रभृति गमनमाह-38चतुर्थिप्रभृत्याषोडषीमुत्तरामुत्तरां युग्मां प्रजानिश्रेयसमृतुगमनमित्युपदिशन्ति' इति । तदिह षोडशसु रात्रिष्वादितस्तिस्रस्सर्वथा वर्ज्याः । चतुर्थ्येकादशी त्रयोदशी चाऽऽचार्येणाऽनुज्ञाताः मनुना निषिद्धाः । इतरासु दशसु युग्मासु पुत्राः जायन्ते, स्त्रियोऽयुग्मासु । तत्र चो'त्तरामुत्तरा'मिति वचनात् षोडश्यां रात्रौ मघादियोगाभावे गच्छतस्सर्वत उत्कृष्टः पुत्रो भवति । चतुर्थ्यामवमः । मध्ये कल्प्यम् । एवं पञ्चदश्यामुत्कृष्टा दुहिता । पञ्चम्यामवमा । मध्ये कल्प्यम् । षोडशस्वेव गमनं गर्भहेतुः । तत्रापि प्रथमम् । एवं स्थिते नियमविधिरयं-योग्यत्वे सत्यृताववश्यं सन्निपतेत्, असन्निपतन् पुत्रोत्पत्तिं निरुन्धानः प्रत्यवेयादिति । तथा च दोषस्मृतिः—

39 ऋतुस्नातां तु यो भार्यां सन्निधौ नोपगच्छति ।
तस्या रजसि तं मासं पितरस्तस्य शेरते ॥' इति ।

पुत्रगुणार्थितया पूर्वां पूर्वां वर्जयतो न दोषः । अन्ये तु परिसङ्ख्यां मन्यन्ते-ऋतावेव सन्निपतेन्नाऽन्यत्रेति । तेषामृतावनियमादगमनेऽपि दोषाभावाद्दोषस्मरणमनुपपन्नं स्यात् । सर्वथा विधिर्न भवति । रागप्राप्तत्वात्सन्निपातस्य ॥ १७॥

18 अन्तरालेऽपि दार एव

अन्तरालेऽपि दार एव १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. Let him have connubial intercourse in the interval also, if his wife (desires it, observing the restrictions imposed by the law). 40

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्तरालेऽपि दार एव ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

अन्तरालं मध्यम् । ऋत्वोरन्तराले मध्येऽपि सन्निपातः स्यात् दार एवं सकामे सति । यद्यात्मनो जितेन्द्रियतया न तादृशं पारवश्यम् , तथाऽपि भार्यायामिच्छन्त्यां तद्रक्षणार्थमवश्यं सन्निपतेदिति

। वक्ष्यति च 41'अप्रमत्ता रक्षथ तन्तुमेत'(२.१३.६.)मित्यादि । अनुव्रतमित्यनुवृत्तेः प्रतिषिद्धेषु दिनेषु न भवति ॥ १८॥

19 ब्राह्मणवचनाच्च संवेशनम्

ब्राह्मणवचनाच्च संवेशनम् १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. (The duty of) connubial intercourse (follows from) the passage of a Brāhmaṇa, ('Let us dwell together until a son be born.') 42

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ब्राह्मणवचनाच्च संवेशनम् ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

यदिदमनन्तरोक्तं संवेशनं तत्र ब्राह्मणवचनं प्रमाणं 43'काममाविजनितोस्सम्भवामे'ति ॥ १९ ॥

20 स्त्रीवाससैव सन्निपातः स्यात्

स्त्रीवाससैव संनिपातः स्यात् २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. But during intercourse he shall be dressed in a particular dress kept for this purpose.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्त्रीवाससैव सन्निपातस्स्यात् ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

एवकारो भिन्नक्रमः । स्त्र्युपभोगार्थं वासः स्त्रीवासः । तेन सन्निपात एव स्यात् । न तेन सुप्रक्षालितेनाऽपि ब्रह्मयज्ञादि कर्तव्यमिति यावत् ॥२०॥

21 यावत्सन्निपातञ् चैव सहशय्या

यावत्संनिपातं चैव सहशय्या २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. And during intercourse only they shall lie together,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यावत्सन्निपातं चैव सह शय्या ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

यावत्सन्निपातमेव दम्पत्योस्सह शयनम् ॥ २१ ॥

22 ततो नाना

ततो नाना २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. Afterwards separate.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ततो नाना ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

ततः पृथक्शयीयाताम् ॥ २२ ॥

23 उदकोपस्पर्शनम्

उदकोपस्पर्शनम् २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. Then they both shall bathe;

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उदकोपस्पर्शनम् ॥२३ ॥

टिप्पनी⑥

ततो द्वयोरप्युदकोपस्पर्शन स्नानं कर्तव्यम् । इदमृतुकाले ॥ २३ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तावुज्वलायां श्रीहरदत्तविरचितायां द्वितीयप्रश्ने प्रथमा कण्डिका ॥१॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.

↩

2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

5. आप० ध० १.३०.८.↩

6. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

7. मनु० स्मृ० २.६↩

8. गौ० ध० १. १, २↩

9. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

10. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

11. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

12. Manu II, 35.↩

13. आप० ध० १.३०.८.↩

14. मनु० स्मृ० २.६↩

15. गौ० ध० १. १, २↩

16. 'मन्वादिभिरुपलभ्यते इत्यनुमीयते' इति ख. पु.↩

17. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

18. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

19. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

20. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

21. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

22. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

23. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

24. आप० ध० १.३०.८.↩

25. मनु० रमृ० २.६↩

26. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

27. Manu II, 144.↩

28. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

29. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

30. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

31. आप० ध० १.३०.८.↩

32. Manu II, 146-148.↩

33. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

34. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

35. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

36. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

37. आप० ध० १.३०.८.↩

38. मनु० रमृ० २.६↩

39. गौ० ध० १. १, २↩

40. Manu II, 147.↩

41. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

42. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

43. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

०२①

01 अपि वा लेपान्प्रक्षाल्याचम्य④

अपि वा लेपान्प्रक्षाल्याचम्य प्रोक्षणमङ्गानाम् १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. Or they shall remove the stains with earth or water, sip water, and sprinkle the body with water.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अपि वा लेपान्प्रक्षाल्याऽऽचम्य प्रोक्षणमङ्गानाम् ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

अपि वा रेतसो रजसश्च ये लेपास्तानद्भिर्मृदा च प्रक्षाल्याऽऽचम्य अङ्गानां प्रोक्षणं शिरःप्रभृतीनां कर्तव्यम्1 । रुचितो व्यवस्था । यावता प्रयतो मन्यते ॥ १॥

02 सर्ववर्णानां स्वधर्मानुष्ठाने परमपरिमितं

सर्ववर्णानां स्वधर्मानुष्ठाने परमपरिमितं सुखम् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. Men of all castes, if they fulfil their (assigned) duties, enjoy (in heaven) the highest, imperishable bliss.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्ववर्णानां स्वधर्मानुष्ठाने परमपरिमितं सुखम् ॥२॥

टिप्पनी⑥

सर्वेषामेव वर्णानां ब्राह्मणादीनां चतुर्णां ये स्वधर्मा वर्णप्रयुक्ता आश्रमप्रयुक्ता उभयप्रयुक्ता वा तेषामवैगुण्येनाऽऽन्तादनुष्ठाने सति परमुत्कृष्टं अपरिमितमक्षयं सुखं स्वर्गाख्यं भवति ॥२॥

03 ततः परिवृत्तौ कर्मफलशेषेण

ततः परिवृत्तौ कर्मफलशेषेण जातिं रूपं वर्णं बलं मेधां प्रज्ञां द्रव्याणि धर्मानुष्ठानमिति प्रतिपद्यते । तच्चक्रवदुभयोर्लोकयोः सुख एव वर्तते ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. Afterwards when (a man who has fulfilled his duties) returns to this world, he obtains, by virtue of a remainder of merit, birth in a distinguished family, beauty of form, beauty of complexion, strength, aptitude for learning, wisdom, wealth, and the gift of fulfilling the laws of his (caste and order). Therefore in both worlds he dwells in happiness, (rolling) like a wheel (from the one to the other).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ततः परिवृत्तौ कर्मफलशेषेण जातिं रूपं वर्णं बलं मेधां प्रज्ञां द्रव्याणि धर्मानुष्ठानमिति प्रतिपद्यते तच्चक्रवदुभयोर्लोकयोः सुख एव वर्तते ॥ ३ ॥

प्रस्तावः⑥

न केवलमेतावत् । किं तर्हि ?

टिप्पनी⑥

ततः सुखानुभवानन्तरं परिवृत्तिरिह लोके जन्म भवति । तस्यां च कर्मणां यः फलशेषोऽभुक्तोऽशः, तेन जातिं ब्राह्मणादिकां विशिष्टे वा कुले जन्म । रूपं कान्तिम् । वर्णं हेमादितुल्यम् । बलं प्रतिपक्षनिग्रहक्षमम् । मेधां 2 ग्रन्थधारणशक्तिम् । प्रज्ञा अर्थधारणशक्तिम् । द्रव्याणि स्वर्णादीनि । धर्मानुष्ठानम् इतिकरणाद्यच्चान्यदेवं युक्तं तत्सर्वं प्रतिपद्यते । सर्वत्र धर्मशेषो हेतुः । कर्माणि भुज्यमानानि सावशेषाणि भुज्यन्ते । ऐहिकस्य शरीरग्रहणादेरपि कर्मफलत्वात् । धर्मानुष्ठानं प्रतिपद्यत इत्युक्तम् । यदा चैवं तदा सर्ववर्णानां स्वधर्मानुष्ठान इत्यादि

प्रतिपद्यत इत्यन्तं पुनर्भवतीत्यनुक्तसिद्धम् । तत् तस्माच्चक्रवदुभयोर्लोकयोरिह चाऽमुस्मिंश्च सुख एव वर्तते न जातु चित् दुःखे वर्तते । सुखानुबन्धेनैवाऽऽवृत्तिर्भवतीत्यर्थः ॥ ३ ॥

04 यथौषधिवनस्पतीनाम् बीजस्य क्षेत्रकर्मविशेषे

यथौषधिवनस्पतीनां बीजस्य क्षेत्रकर्मविशेषे फलपरिवृद्धिरेवम् ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. As the seed of herbs (and) trees, (sown) in good and well-cultivated soil, gives manifold returns of fruit (even so it is with men who have received the various sacraments).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथौषधिवनस्पतीनां बीजस्य क्षेत्रकर्मविशेषे फलपरिवृद्धिरेवम् ॥ ४ ॥

प्रस्तावः⑥

शरीरोत्पत्तिसंस्कारा3अप्यावश्यका इति दर्शयितुं दृष्टान्तमाह—

टिप्पनी⑥

चलोपोऽत्र द्रष्टव्यः । यथा चौषधीना ब्रीह्यादीनां वनस्पतीनां चाम्रादीनां बीजस्य क्षेत्रविशेषे कर्मविशेषे संस्कारविशेषे च क्षेत्रस्य वा कृम्यादौ कर्मविशेषे फलपरिवद्धिर्भवति । त एव ब्रीह्यादय ऊषर उप्ता न रोहन्ति । कृष्यादिपरिकर्मिते तु क्षेत्रे उप्ताः स्तम्बकरयो भवन्ति । एवं पुरुषेऽपि गर्भाधानादिसंस्कारसम्पन्ने द्रष्टव्यम् ॥ ४॥

05 एतेन दोषफलपरिवृद्धिरुक्ता

एतेन दोषफलपरिवृद्धिरुक्ता ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

> 5. The increase of the results of sins has been explained hereby.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतेन दोषफलपरिवृद्धिरुक्ता ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

एतेनैव न्यायेन दुष्कर्मफलपरिवद्धिरप्युक्ता वेदितव्या । 4तत्रोहेन पठनीयम्— सर्ववर्णानां स्वधर्माननुष्ठाने परमपरिमितदुःखम् । ततः परिवृत्तौ कर्मफलशेषेण दुष्टां जात्यादिकामद्रव्यान्तामधर्मानुष्ठानमिति प्रतिपद्यते । तच्चक्रवदुभयोर्दुःख एच वर्तते। यथौषधिवनस्पतीनां बीजस्य क्षेत्रकर्मविशेषाभावे फलहानिरेवमिति ॥५॥

06 स्तेनोऽभिशस्तो ब्राह्मणो राजन्यो

स्तेनोऽभिशस्तो ब्राह्मणो राजन्यो वैश्यो वा परस्मिंल् लोके परिमिते निरये वृत्ते जायते चाण्डालो ब्राह्मणः पौल्कसो राजन्यो वैणो वैश्यः ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. Thus after having undergone a long punishment in the next world, a person who has stolen (the gold of a Brāhmaṇa) or killed a (Brāhmaṇa) is born again, in case he was a Brāhmaṇa as a Cāṇḍāla, in case he was a Kṣatriya as a Paulkasa, in case he was a Vaiśya as a Vaiṇa. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्तेनोऽभिशस्तो ब्राह्मणो राजन्यो वैश्यो वा परस्मिल्लोँकेऽपरिमिते निरये वृत्ते जायते चण्डालो ब्राह्मणः पौल्कसो राजन्यो वैणो वैश्यः ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

दोषफलपरिवृद्धावुदाहरणमाह—

टिप्पनी⑥

स्तेनः सुवर्णचोरः । अभिशस्तो ब्रह्महा स्तेनोऽभिशस्तो वा ब्राह्मणादिरमुष्मिँल्लोकेऽपरिमिते निरये दोषफलमनुभूय तस्मिन् वृत्ते परिक्षीणे ब्राह्मणश्चण्डालो जायते । शूद्रात् ब्राह्मण्यां जातश्चण्डालः, राजन्यः, पौल्कसः । शूद्राक्षत्रियायां जातः पुल्कसः । स एव पौलकसः । प्रज्ञादित्वादण् । वैश्यो, वैणो जायते6 वेणुना नर्तको वैणः ॥ ६॥

07 एतेनान्ये दोषफलैः कर्मभिः

एतेनान्ये दोषफलैः कर्मभिः परिध्वंसा दोषफलासु योनिषु जायन्ते वर्णपरिध्वंसायाम् ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. In the same manner other (sinners) who have become outcasts in consequence of their sinful actions are born again, on account of (these) sins, losing their caste, in the wombs (of various animals). 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतेनाऽन्ये दोषफलैः कर्मभिः परिध्वंसा दोषफलासु योनिषु जायन्ते वर्णपरिध्वंसायाम् ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

वर्णपरिध्वंसा वर्णेभ्यः प्रच्यवनं तस्यां वर्णपरिध्वंसायाम् । यथा ब्राह्मणादयश्चण्डालाद्या जायन्ते । एतेन प्रकारेण स्तेनाभिशस्ताभ्यां अन्येऽपि दोषफलैः कर्मभिर्दोषफलासु सूकरादिषु, योनिषु जायन्ते । परिध्वंसाः स्वजातिपरिभ्रष्टा इत्यर्थः । ते तथाऽवगन्तव्या इति ॥ ७ ॥

08 यथा चाण्डालोपस्पर्शने सम्भाषायान्

यथा चाण्डालोपस्पर्शने संभाषायां दर्शने च दोषस्तत्र प्रायश्चित्तम् ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. As it is sinful to touch a Cāṇḍāla, (so it is also sinful) to speak to him or to look at him. The penance for these (offences will be declared).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथा चण्डालोपस्पर्शने सम्भाषायां दर्शने च दोषस्तत्र प्रायश्चित्तम् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

चण्डालोपोस्पर्शने दोषो भवति । तथा सम्भाषायां दर्शने च । उपसमस्तमपि चण्डालग्रहणमभिसम्बध्यते । तत्र सर्वत्र प्रायश्चित्तं वक्ष्यते ॥८॥

09 अवगाहनमपामुपस्पर्शने सम्भाषायाम् ब्राह्मणसम्भाषा

अवगाहनमपामुपस्पर्शने संभाषायां ब्राह्मणसंभाषा दर्शने ज्योतिषां दर्शनम् ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. (The penance) for touching him is to bathe, submerging the whole body; for speaking to him to speak to a Brāhmaṇa; for looking at him to look at the lights (of heaven).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अवगाहनमपामुपस्पर्शने ॥९॥
सम्भाषायां ब्राह्मणसम्भाषा ॥ १० ॥
दर्शने ज्योतिषां दर्शनम् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

उपस्पर्शने सत्यवगाहनमपां प्रायश्चित्तम्। ऋजुनी उत्तरे द्वे सत्रे । अस्मिन् कर्मप्रशंसाप्रकरणे प्रायश्चित्ताभिधानं स्वकर्मव्युतानां निन्दार्थम् । एवंनाम निन्दितश्चण्डालः यस्य दर्शनेऽपि प्रायश्चित्तं स एव जायते स्वकर्मच्युतो ब्राह्मण इति ॥ ९-११ ॥

इत्यास्तम्बधर्मसूत्रवृत्तावुज्वलायां द्वितीयप्रश्ने द्वितीया कण्डिका ॥२॥

इति चाऽऽपस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तविरचितायामुज्ज्वलायां द्वितीयप्रश्ने प्रथमः पटलः ॥ १॥

इति प्रथमः पटलः

---

1. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

2. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

3. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

4. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

5. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.

   ↩

6. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

7. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

०२①

०३①

01 आर्याः प्रयता वैश्वदेवेऽन्नसंस्कर्तारः④

आर्याः प्रयता वैश्वदेवेऽन्नसंस्कर्तारः स्युः १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. Pure men of the first three castes shall prepare the food (of a householder which is used) at the Vaiśvadeva ceremony. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आर्याः प्रयता वैश्वदेवेऽन्नसंस्कर्तारः स्युः ॥१॥

टिप्पनी⑥

आर्यास्त्रैवर्णिकाः। 'आर्याधिष्ठिता वा शूद्रा' (२.३,४) इत्युत्तरत्र दर्शनात् । प्रयताः स्नानादिना शुद्धाः। वैश्वदेवे गृहमेधिनोर्भोजनार्थे पाके। 'गृहमेधिनो यदशनीयस्ये'(३-१२)ति दर्शनात् । अन्नसंस्कर्तारः स्युः । अन्नं भक्ष्यभोज्यपेयादिकं तत् संस्कुर्युः । न स्वयं, नाऽपि स्त्रियः ॥ १ ॥

02 भाषाङ् कासङ् क्षवयुमित्यभिमुखो

भाषां कासं क्षवयुमित्यभिमुखो ऽन्नं वर्जयेत् २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. The (cook) shall not speak, nor cough, nor sneeze, while his face is turned towards the food.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भाषां कासं क्षवधुमित्यभिमुखोऽन्नं वर्जयेत् ॥ २॥

टिप्पनी⑥

भाषा शब्दोच्चारणम् । कासः कण्ठे घुरुघुराशब्दः । क्षवधुः क्षुतम् । एतत्त्रितयमन्नाभिमुखो न कुर्यात् । 'संस्कर्तारः स्यु'रिति बहुवचने प्रकृते 'वर्जये'दित्येकवचनं प्रत्येकमुपदेशार्थम् ॥ २ ॥

03 केशानङ्गं वासश्चालभ्याप उपस्पृशेत्

केशानङ्गं वासश्चालभ्याप उपस्पृशेत् ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. He shall purify himself by touching water if he has touched his hair, his limbs, or his garment.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

केशानङ्गं वासश्चाऽऽलभ्याऽप उपस्पृशेत् ॥३॥

टिप्पनी⑥

केशादीनात्मीयानन्यदीयान्वा । आलभ्य स्पृष्ट्वा । अप उपस्पृशेत् । नेदं स्नानम् । किं तर्हि ? स्पर्शमात्रम् । केशालम्भे पूर्वमप्युपस्पर्शनं विहितम् । इदं तु तत्रोक्तं वैकल्पिकं शकृदाद्युपस्पर्शनं मा भूदिति ॥ ३ ॥

04 आर्याधिष्ठिता वा शूद्राः

आर्याधिष्ठिता वा शूद्राः संस्कर्तारः स्युः ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. Or Śūdras may prepare the food, under the superintendence of men of the first three castes.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आर्याधिष्ठिता वा शुद्रास्संकर्तारः स्युः ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

वर्णिकैर् अधिष्ठिता वा शूद्रास् संस्कर्तारः स्युः । प्रकरणादन्नस्येति गम्यते ॥४॥

05 तेषां स एवाचमनकल्पः

तेषां स एवाचमनकल्पः ५

▼

⑤

>

▼ Bühler

5. For them is prescribed the same rule of sipping water (as for their masters). 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषां स एवाऽऽचमनकल्पः ॥५॥

टिप्पनी⑥

तेषां शूद्राणामन्नसंस्कारेऽधिकृतानां स एवाऽऽचमनकल्पो वेदितव्यः, यस्याऽन्नं पचन्ति । यदि ब्राह्मणस्य, हृदयङ्गमाभिरद्भिः। यदि क्षत्रियस्य, कण्ठगाभिः । यदि वैश्यस्य, तालुगाभिः । इन्द्रियोपस्पर्शन च भवति ॥५॥

06 अधिकमहरहः केशश्मश्रुलोमनखवापनम्

अधिकमहरहः केशश्मश्रुलोमनखवापनम् ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. Besides, the (Śūdra cooks) daily shall cause to be cut the hair of their heads, their beards, the hair on their bodies, and their nails.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अधिकमहरहः केशश्मश्रुलोमनखवापनम् ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

शूद्राः पचन्तः प्रत्यहं केशादि वापयेयुः । इदमेषामधिकमार्येभ्यः ॥६॥

07 उदकोपस्पर्शनञ् च सह

उदकोपस्पर्शनं च सह वाससा ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. And they shall bathe, keeping their clothes on. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उदकोपस्पर्शनं च सह वाससा ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

सहैव वाससा स्नानं कुर्युः। आर्याणां तु परिहितं वासो निधाय कौ पीनाच्छादनमात्रेणाऽपि स्नानं भवति । शुद्राणामपि पाकादन्यत्र । तथा च मनुः —
4 न वासोभिस्सहाऽजस्रं नाऽविज्ञाते जलाशये।' इति ॥ ७॥

08 अपि वाष्टमीष्वेव पर्वसु

अपि वाष्टमीष्वेव पर्वसु वा वपेरन् ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. Or they may trim (their hair and nails) on the eighth day (of each half-month), or on the days of the full and. new moon.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अपि वाऽष्टमीष्वेव पर्वसु वा वपरेन् ॥ ८ ॥

टिप्पनी⑥

यदि वाऽष्टमीष्वेव वपरेन् केशादीन् पर्वस्वेव वा । न प्रत्यहम् । 'वपरे'न्निति अन्तर्भावितण्यर्थः । वापयेरन्नित्यर्थः । तथा च 'लोमनखवापन'मिति पूर्वत्र णिच्प्रयुक्तः ॥ ८ ॥

09 परोक्षमन्नं संस्कृतमग्नावधिश्रित्याद्भिः प्रोक्षेत्

परोक्षमन्नं संस्कृतमग्नावधिश्रित्याद्भिः प्रोक्षेत् । तद्देवपवित्रमित्याचक्षते ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. He (the householder himself) shall place on the fire that food which has been prepared (by Śūdras) without supervision, and shall sprinkle it with water. Such food also they state to be fit for the gods.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

परोक्षमन्नं संस्कृतमग्नावधिश्रित्याऽद्भिः प्रोक्षेत्तदेवपवित्रमित्याचक्षते ॥९॥

टिप्पनी⑥

यदि शुद्राः परोक्षमन्नं संस्कुर्युः आर्यैरनधिष्ठिताः । तदा तत्परोक्षमन्न संस्कृतं स्वयमग्नावधिश्रयेत् । अधिश्रित्याऽद्भिः प्रोक्षेत् । तदेवंभूतमन्नं देवपवित्रमित्याचक्षते । देवानामपि तत्पवित्रं किं पुनर्मनुष्याणामिति ॥९॥

10 सिद्धेऽन्ने तिष्ठन्भूतमिति स्वामिने

सिद्धेऽन्ने तिष्ठन्भूतमिति स्वामिने प्रब्रूयात् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. When the food is ready, (the cook) shall place himself before his master and announce it to him (saying), 'It is ready.'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सिद्धेऽन्ने तिष्ठन् भूतमिति स्वामिने प्रब्रूयात् ॥१०॥

टिप्पनी⑥

सिद्धे पक्वेऽन्ने तिष्ठन् पाचकोऽधिष्ठाता वा भूतमिति प्रब्रूयात् । कस्मै ? यस्य तदन्न तस्मै स्वामिने । भूतं निष्पन्नमित्यर्थः ॥ १०॥

11 तत्सुभूतं विराड् अन्नन्

तत्सुभूतं विराड् अन्नं तन्मा क्षायीति प्रतिवचनः ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. The answer (of the master) shall be, 'That well-prepared food is the means to obtain splendour; may it never fail!' 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्सुभूतं विराडन्नं तन्मा क्षायीति प्रतिवचनः ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

तत्सुभूतमित्यादि प्रतिवचनो मन्त्रः। तदन्नं सुभूतं सुनिष्पन्नम् । विराट् विराजः साधनम् । अन्नमशनम् । तच्च मा क्षायि क्षीणं मा भूदित्यर्थः ॥ ११ ॥

12 गृहमेधिनोर्यदशनीयस्य होमा बलयश्च

गृहमेधिनोर्यदशनीयस्य होमा बलयश्च स्वर्गपुष्टिसंयुक्ताः १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. The burnt-oblations and Bali-offerings made with the food which the husband and his wife are to eat, bring (as their reward) prosperity, (and the enjoyment of) heaven. 6

▼ हरदत्त-टीका

गृहमेधिनोर्यद## सूत्रम् गृहमेधिनो यदशनीयं तस्य होमा बलयश्च स्वर्गपुष्टिसंयुक्ताः ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

गृहमेधिनो यदशनीयं पक्वमपक्वं वा उपस्थितं तस्यैकदेशेन होमा बलयश्च वक्ष्यमाणाः कर्तव्याः । स्वर्गः पुष्टिश्च तेषां फलमिति ॥ १२ ॥

शनीयस्य होमा बलयश्च स्वर्गपुष्टिसंयुक्ताः १२

13 तेषाम् मन्त्राणामुपयोगे द्वादशाहमधःशय्या

तेषां मन्त्राणामुपयोगे द्वादशाहमधःशय्या ब्रह्मचर्यं क्षारलवणवर्जनं च १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. Whilst learning the sacred formulas (to be recited during the performance) of those (burnt oblations and Bali-offerings, a householder) shall sleep on the ground, abstain from connubial intercourse and from eating pungent condiments and salt, during twelve days. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषां मन्त्राणामुपयोगे द्वादशाहमधश्शय्या ब्रह्मचर्यं क्षारलवणवर्जनं च ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

तेषां होमानां बलीनां च ये मन्त्रास् **तेषाम् उपयोगे** ।
उपयोगो नियमपूर्वकं विद्याग्रहणम्8 ।

तत्र **द्वादशाहम् अधश्शय्या** स्थण्डिलशायित्वम् । **ब्रह्मचर्यं** मैथुनवर्जनम् ।
9क्षारलवणवर्जनं च भवति ।

उपयोक्तुर् एव व्रतम्, अध्ययनाङ्गत्वात् ।
अन्ये तु पत्न्या अपीच्छन्ति - **उपयोगः** प्रथम-योगः तत्र च पत्न्या अपि सहाऽधिकार इति वदन्तः ॥ १३ ॥

14 उत्तमस्यैकरात्रमुपवासः

उत्तमस्यैकरात्रमुपवासः १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. (When he studies the Mantras) for the last (Bali offered to the goblins), he shall fast for one (day and) night. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उत्तमस्यैकरात्रमुपवासः ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

उत्तमस्य 'उत्तमेन वैहायसम्'(२.४.८.) इति वक्ष्यमाणस्य11 'ये भूताः प्रचरन्ती'त्यस्य **एकरात्रमुपवासः** कर्तव्यः ॥ १४ ॥

15 बलीनान् तस्य तस्य

बलीनां तस्य तस्य देशे संस्कारो हस्तेन परिमृज्यावोक्ष्य न्युप्य पश्चात्परिषेचनम् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. For each Bali-offering the ground must be prepared separately. (The performer) sweeps (the ground) with his (right) hand, sprinkles it with water, turning, the palm downwards, throws down (the offering), and afterwards sprinkles water around it. 12

सूत्रम्⑥

बलीनां तस्य तस्य देशे संस्कारो हस्तेन परिमृज्याऽऽवोक्ष्य न्युप्य पश्चात्परिषेचनम् ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

बलीनां मध्ये तस्यतस्य बलेर्देशे संस्कारः कर्तव्यः। कः पुनरसौ? हस्तेन परिमार्जनमवोक्षणं च । तं कृत्वा बलिं निवपति । न्युप्य पश्चात् परिषेचनं कर्तव्यम् । उपदेशक्रमादेव सिद्धे पश्चाद्ग्रहणं मध्ये गन्धमाल्यादिदानार्थमित्याहुः। 'तस्यतस्ये'ति वचनं सत्यपि सम्भवे सकृदेव परिमार्जनमवोक्षणं च मा भूत् । एकस्मिन्देशे समवेतानामपि पृथक्पृथग्यथा स्यादिति ॥ १५ ॥

16 औपासने पचने वा

औपासने पचने वा षड्भिराद्यैः प्रतिमन्त्रं हस्तेन जुहुयात् १६

- ओम्*(इत्यनुज्ञाक्षरं)* अ॒ग्नये॒ स्वाहा॑*(हविःप्रदानार्थः)*।
- सोमा॑य॒ स्वाहा॑।*(कैश्चिन्नोच्यते मन्त्रः।)*
- विश्वे॑भ्यो दे॒वेभ्य॒स् स्वाहा॑।
- *(खे)* ध्रु॒वाय॑ भू॒माय॑*(=भूम्ने)* स्वाहा॑।

ध्रु॒व॒-क्षित॑ये॒*(←स्वरः??) (खे)* स्वाहा॑।

(विवाहे ध्रुव-दर्शन-मन्त्रेऽप्य् अयम् प्रयोगः)

अ॒च्यु॒त॒-क्षित॑ये॒*(←स्वरः??)* स्वाहा॑।

- अ॒ग्नये॑ स्विष्ट॒कृते॑ स्वाहा॑।*(=रुद्रोऽग्निस्स्विष्टकृत्)*

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. (At the Vaiśvadeva sacrifice) he shall offer the oblations with his hand, (throwing them) into the kitchen-fire or into the sacred (Gṛhya)-fire, and reciting (each time one of) the first six Mantras (prescribed in the Nārāyaṇī Upaniṣad). 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

औपासने पचने वा षड्भिराद्यैः प्रतिमन्त्रं हस्तेन जुहुयात् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

यत्र पच्यते स पचनोऽग्निः । औपासनवतामोपासने, धिधुरस्य पचन इति व्यवस्थितो विकल्पः । अन्ये तु— तुल्यविकल्पं मन्यन्ते । षड्भिराद्यैः 14'अग्नये स्वाहा, सोमाय स्वाहा, विश्वेभ्यो देवेभ्यस्स्वाहा, ध्रुवाय भौमाय स्वाहा, ध्रवक्षितये स्वाहा, अच्युतक्षिनये स्वाहेत्येतैः। एते हि मन्त्रपाठे पठिताः प्राग्विवाहमन्त्रेभ्यः विशिष्टनियमसापेक्षग्रहणत्वात्तैस्सह न गृह्यन्ते । केचित् सौविष्टकृतमपि सप्तमं जुह्वति 'अग्नये स्विष्टकृते स्वाहे'ति औषधहविष्केषु तस्य सर्वत्र प्रवृत्तिरिति वदन्तः । अन्ये तु सोमाय स्वाहेति न पठन्ति । सौविष्टकृतं षष्ठं पठन्ति । हस्तग्रहणं दर्व्यादिनिवृत्त्यर्थम् ॥ १६ ॥

17 उभयतः परिषेचनं यथा

उभयतः परिषेचनं यथा पुरस्तात् १७

अदि॒तेऽन्वंमँस्थाः। *(इति दक्षिणतः, प्राचीनम्)*

अनु॑म॒तेऽन्वंमँस्थाः। *(इति पश्चिमाद् उदीचीनम्)*

सरस्व॒ते ऽन्वंमँस्थाः। *(इति उत्तरतः प्राचीनम्)*

देवं सवित॒ः प्रासांवीः। *(इति प्रागारम्भं प्रदक्षिणं)*

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. He shall sprinkle water all around both times (before and after the oblations), as (has been declared) above. 15

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उभयतः परिषेचनं यथा पुरस्तात् ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

उभयतः । पुरस्तादुपरिष्टाच्च परिषेचनं कर्तव्यम् । कथम् ? यथा पुरस्तात् उक्तं गृह्ये16 'अदितेऽनुमन्यस्वे'त्यादि, 'अन्वमँ स्थाः प्रासावीरिति मन्त्रसन्नाम' इति च । सामयाचारिकेषु पार्वणेनातिदेशो न प्रवर्तत इति ज्ञापितत्वादप्राप्तविधिरयम् । अन्ये तु परिसङ्ख्यां मन्यन्ते- परिषेचनमेव वैश्वदेवे, नाऽन्यत्तन्त्रमिति ॥ १८ ॥

18 एवम् बलीनान् देशे

एवं बलीनां देशे देशे समवेतानां सकृत्सकृदन्ते परिषेचनम् १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. In like manner water is sprinkled around once only after the performance of those Bali-offerings that are performed in one place. 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवं बलीनां देशे देशे समवेतानां सकृत्सकृदन्ते परिषेचनम् ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

यथा षण्णामाहुतीनां परिषेचनं तन्त्रम्, विभवात् । एवं बलयोऽपि ये एकस्मिन् देशे समवेता 'उत्तरैर्ब्रह्मसदन' (४.२.४) इत्यादयस्तेषां यदन्ते परिषेचनं प्राप्तं 'पश्चात्परिषेचन'मित्यनेन विहितं तत्सर्वान्ते सकृत्कर्तव्यम्, न प्रत्येकं पृथगिति । असत्यस्मिन् सूत्रे पूर्वत्र 'तस्य तस्ये'ति वचनाद्यथा परिमार्जनमवोक्षणं च प्रत्येकं पृथक्पृथग्भवति तथा परिषेचनमपि स्यात् । अत्र चोपदेशादेव य एकदेशस्था बलयस्तेषामेव सकृदन्ते परिषेचनं, न यादृच्छिकसमवेतानाम् । तेन यद्यप्यगारस्योत्तरपूर्वदेशश्शय्यादेशः, तथापि कामलिङ्गस्य पृथकपरिषेचनं भवति ॥१९॥

19 सति सूपसंसृष्टेन कार्याः

सति सूपसंसृष्टेन कार्याः १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. (If a seasoning) has been prepared, (the Bali-offering should consist of rice) mixed with that seasoning.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सति सूपसंसृष्टेन कार्याः ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

सति सूपे तत्संसृष्टा बलयः कार्याः । अन्ये त्वन्यैरपि व्यजनैस्संसर्गमिच्छन्ति । तथा च बौधायनः — 18 'काममितरेष्वायतने'ष्विति । एष एव व्यञ्जनानां संस्कारः। 19सूत्रस्यापि— व्यञ्जनैस्सुष्ठूपसंसृष्टेनाऽन्नेन बलयः कार्यास्सति सम्भव इत्यर्थः इति ॥ १९ ॥

20 अपरेणाग्निं सप्तमाष्टमाभ्यामुदगपवर्गम्

अपरेणाग्निं सप्तमाष्टमाभ्यामुदगपवर्गम् २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. With the seventh and eighth Mantras (Balis 20 must be offered to Dharma and Adharma) behind the fire, and must be placed the one to the north of the other.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अपरेणाऽग्निं सप्तमाष्टमाभ्यामुदगपवर्गम् ॥२०॥

टिप्पनी⑥

अपरेणाऽग्निमग्नेः पश्चात् । सप्तमाष्टमाभ्यां 'धर्माय स्वाहा, अधर्माय स्वाहे'त्येताभ्यां बलिहरणx कर्तव्यम् । उदगपवर्गम् । न प्रागपवर्गम् ॥ २० ॥

21 उदधानसन्निधौ नवमेन

उदधानसंनिधौ नवमेन २१

- धर्मा॑य स्वाहा॑ । अध॑र्माय स्वाहा॑। *(अपरेणाग्निं सप्तमाष्टमाभ्यामुदगपवर्गम् २०)*
- अ॒द्भ्यस् स्वाहा॑ । *(उदधानसंनिधौ नवमेन २१)*

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. With the ninth (Mantra a Bali offered to the waters must be placed) near the water-vessel (in which the water for domestic purposes is kept). 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उधानसन्निधौ नवमेन ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

उदकं यत्र धीयते तदुदधानं22 मणिकाख्यम् । तस्य सन्निधौ नवमेन 'अद्भ्यः स्वाहेत्यनेन ॥ २१ ॥

22 मध्येऽगारस्य दशमैकादशाभ्याम् प्रागपवर्गम्

मध्येऽगारस्य दशमैकादशाभ्यां प्रागपवर्गम् २२

- ओ॒ष॒धि॒व॒न॒स्प॒तिभ्य॒स् स्वाहा॑। र॒क्षो॒दे॒व॒ज॒नेभ्य॒स् स्वाहा॑ । *(मध्येऽगारस्य दशमैकादशाभ्यां प्रागपवर्गम् २२)*

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. With the tenth and eleventh (Mantras, Balis, offered to the herbs and trees and to Rakṣodevajana, must be placed) in the centre of the house, and the one to the east of the other. 23

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मध्येऽगारस्य दशमैकादशाभ्यां प्रागपवर्गम् ॥२२ ॥

टिप्पनी⑥

दशमैकादशाभ्यां 'औषधिवनस्पतिभ्यः स्वाहा, रक्षोदेवजनेभ्यः स्वा'हेत्येताभ्यां अगारस्य मध्ये प्रागपवर्गं कर्तव्यम् ॥ २२ ॥

23 उत्तरपूर्वदेशेऽगारस्योत्तरैश्चतुर्भिः

उत्तरपूर्वदेशेऽगारस्योत्तरैश्चतुर्भिः २३

- *(वास्तुविद्याप्रसिद्धेभ्यः)* गृह्या॑भ्य॒स् स्वाहा॑। अ॒व॒साने॑भ्यस्*(=सीमाभ्यः)* स्वाहा॑ । अ॒व॒साना॑पतिभ्य॒स् स्वाहा॑ । स॒र्व॒भू॒तेभ्य॒स् स्वाहा॑ । *(उत्तरपूर्वदेशेऽगारस्योत्तरैश्चतुर्भिः २३)*

▼

⑤

>

▼ Bühler

23. With the following four (Mantras, Balis must be placed) in the north-eastern part of the house (and the one to the east of the other). 24

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उत्तरपूर्वे देशेऽगारस्योत्तरैश्चतुर्भिः ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

अगारस्य य उत्तरपूर्वो देशस्तरोत्तरैश्चतुर्भिः 'गृह्याभ्यः स्वाहा, अवसानेभ्यः स्वाहा, अवसानपतिभ्यः स्वाहा, सर्वभूतेभ्यः स्वाहेत्येतैः प्रागपवर्गमित्येव ॥२३॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने तृतीया कण्डिका ॥३॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩

2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

3. Manu II, 35.↩

4. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

5. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

6. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

7. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

8. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

9. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

10. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

11. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

12. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

13. Manu II, 144.↩

14. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

15. Manu II, 146-148.↩

16. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

17. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

18. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

19. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

20. Manu II, 147.↩

21. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

22. आप० ध० १.३०.८.↩

23. Manu II, 37.↩

24. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

०४①

01 शय्यादेशे कामलिङ्गेन④

शय्यादेशे कामलिङ्गेन १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. Near the bed (a Bali must be offered) with (a Mantra) addressed to Kāma (Cupid).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शय्यादेशे कामलिङ्गेन ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

शय्यादेशे 'कामाय स्वाहे'त्यनेन ॥ १ ॥

02 देहल्यामन्तरिक्षलिङ्गेन

देहल्यामन्तरिक्षलिङ्गेन २

- कामा॑य॒ स्वाहा॑ । *(शय्यादेशे कामलिङ्गेन)*

- अ॒न्तरि॑क्षाय॒ स्वाहा॑ । *(देहल्यामन्तरिक्षलिङ्गेन २)*

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. On the door-sill (a Bali must be placed) with (a Mantra) addressed to Antarikṣa (the air). 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

2देहल्यामन्तरिक्षलिङ्गेन ॥२॥

टिप्पनी⑥

देहली द्वारस्थाऽधस्ताद्दारु । तस्याऽधोवेदिकेत्यन्ये । अन्तर्द्वारस्य च ग्रहणम् । तत्राऽन्तरिक्षलिङ्गेन 'अन्तरिक्षाय स्वाहे'त्यनेन ॥२॥

03 उत्तरेणापिधान्याम्

उत्तरेणापिधान्याम् ३

- यद् एज॑ति*(=कम्पते)* जग॑ति यच् च॒ चेष्ट॑ति, नाम्नो॑ भा॒गो ऽयं, नाम्ने॒ स्वाहा॑।
  (उत्तरेणापिधान्याम् (अर्गले)३)

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. With (the Mantra) that follows (in the Upaniṣad, he offers a Bali) near the door. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उत्तरेणाऽपिधान्याम् ॥ ३॥

टिप्पनी⑥

येनाऽपिधीयते द्वारं साऽपिधानी कवाटम् । तदर्गलमित्यन्ये । तत्रोत्तरेण मन्त्रेण 'यदेजति जगति यच्च चेष्टति नाम्नो भागो यन्नाम्ने स्वाहे'त्यनेन ॥ ३॥

04 उत्तरैर्ब्रह्मसदने

उत्तरैर्ब्रह्मसदने ४

(उत्तरैर्ब्रह्मसदने)

- पृ॒थि॒व्यै स्वाहा॑। अ॒न्तरि॑क्षाय॒ स्वाहा॑। दि॒वे स्वाहा॑ ।
- सूर्या॑य॒ स्वाहा॑ । च॒न्द्रम॑से॒ स्वाहा॑ । नक्ष॑त्रेभ्य॒स् स्वाहा॑ ।
- इन्द्रा॑य॒ स्वाहा॑ । बृह॒स्पत॑ये॒ स्वाहा॑ । प्र॒जाप॑तये॒ स्वाहा॑ । ब्रह्म॑णे॒ स्वाहा॑।

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. With the following (ten Mantras, addressed to Earth, Air, Heaven, Sun, Moon, the Constellations, Indra, Bṛhaspati, Prajāpati, and Brahman, he offers ten Balis, each following one to the east of the preceding one), in (the part of the house called) the seat of Brahma. 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उत्तरैर्ब्रह्मसदने ॥४॥

टिप्पनी⑥

अगारस्येत्यनुवृत्तेः । तत्र यो ब्रह्मसदनाख्यो देशः वास्तुविद्याप्रसिद्धो 5मध्येऽगारस्य ।
तत्रोत्तरैर्दशभिः 'पृथिव्यै स्वाहा, अन्तरिक्षाय स्वाहा, दिवे स्वाहा, सूर्याय स्वाहा, चन्द्रमसे स्वाहा, नक्षत्रेभ्यः स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, बृहस्पतये स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहेत्येतैः प्रागपवर्गमित्येव ।
अपर आाह- ब्रह्मा यत्र सीदति गार्ह्येषु कर्मसु अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मसदनं तत्रेति ॥४॥

05 दक्षिणतः पितृलिङ्गेन प्राचीनावीत्यवाचीनपाणिः

दक्षिणतः पितृलिङ्गेन प्राचीनावीत्यवाचीनपाणिः कुर्यात् ५

- स्व॒धा पि॒तृभ्य॒स् स्वाहा॑। *(दक्षिणतः पितृलिङ्गेन प्राचीनावीत्् अवाचीन-पाणिः कुर्यात् ५)*

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. He shall offer to the south (of the Balis offered before, a Bali) with a Mantra addressed to the Manes; his sacrificial cord shall be suspended over the right shoulder, and the (palm of his right hand shall be turned upwards and) inclined to the right. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दक्षिणतः पितृलिङ्गेन प्राचीनावीत्यवाचीनपाणिः कुर्यात् ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

अनन्तराणां बलीनां दक्षिणतः पितृलिङ्गेन 'स्वधा पितृभ्य' इत्यनेन बलिं कुर्यात्, प्राचीनावीत्यवाचीनपाणिश्च भूत्वा दक्षिणं पाणिमुत्तानं कृत्वा अङ्गुष्ठतर्जन्योरन्तरालेन ॥५॥

06 रौद्र उत्तरो यथा

रौद्र उत्तरो यथा देवताभ्यः ६

- नमों रु॒द्राय॑ पशु॒पत॑ये॒ स्वाहा॑। *(रौद्र उत्तरो यथा देवताभ्यः ६ तयोर् नाना परिषेचनं धर्म-भेदात् ७)*

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. To the north (of the Bali given to the Manes, a Bali shall be offered) to Rudra, in the same manner as to the (other) gods. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

रौद्र उत्तरो यथा देवताभ्यः ॥ ६॥

टिप्पनी⑥

पितृबलेरुत्तरतो रौद्रबलिः कर्तव्यः । यथा देवताभ्यः तथा, प्राचीनावीत्यवाचीनपाणिरिति नाऽनुवर्तत इत्यर्थः । 'नमो रुद्राय पशुपतये स्वाहे'ति मन्त्रः । अत्र यद्यपि पशुपतिलिङ्गमप्यस्ति, तथापि तद्रुद्रस्यैव विशेषणमिति रौद्र इति व्यपदेशो नाऽनुपपन्नः । देवतास्मरणमपि रुद्रायत्येव कुर्वन्ति । रुद्राय पशुपतय इत्यन्ये । केचित्तु- उत्तरो मन्त्रो रौद्रः न पशुपतिदैवत्य इत्याचक्षते । तेषां देशः प्राग्वोदग्वा पित्र्यात् ॥ ६॥

07 तयोर्नाना परिषेचनन् धर्मभेदात्

तयोर्नाना परिषेचनं धर्मभेदात् ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. The sprinkling with water (which precedes and follows the oblation) of these two (Balis, takes place) separately, on account of the difference of the rule (for each case). 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तयोर्नाना परिषेचनं धर्मभेदात् ॥ ७॥

टिप्पनी⑥

तयोरनन्तरोक्तयोर्बल्योरेकस्मिन् देशे समवेतयोरपि नाना पृथक् परिषेचनं कर्त्तव्यम् । कुतः ? धर्मभेदात्। पित्र्यस्याऽप्रदक्षिणं परिषेचनं कर्तव्यम् । इतरस्य दैवत्वात्प्रदक्षिणमिति ॥ ७॥

08 नक्तमेवोत्तमेन वैहायसम्

नक्तमेवोत्तमेन वैहायसम् ८

- ये भू॒ताः प्र॒चर॑न्ति दिवा॒ /नक्तं॒
  बलि॑म् इ॒च्छन्तो॑ वि॒तुद॑स्य॒ प्रेष्याः॑ ।
  तेभ्यो॑ ब॒लिं पु॑ष्टि॒कामो॑ हरामि॒
  मयि॒ पुष्टिं॒ पुष्टि॑पतिर् दधातु॒ स्वाहा॑॥ *(नक्तमेवोत्तमेन वैहायसम् ८)*

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. At night only he shall offer (the Bali to the Goblins), throwing it in he air and reciting the last (Mantra). 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नक्तमेवोत्तमेन वैहायसम् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

उत्तमेन 'ये भूताः प्रचरन्ति नक्तं बलिमिच्छन्तो वितुदस्य प्रेष्याः । तेभ्यो बलिं पुष्टिकामो हरामि मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु स्वाहे'10त्यनेन वैहायसं बलिं दद्यात् । तच्च नक्तमेव । 'वैहायसमि'ति वचनादाकाश एव बलिरुत्क्षेप्यः, न छदिकृते देशे । तथाच बौधायनः— 11 'अथाऽऽकाश उत्क्षिपति ये भूताःप्रचरन्ती'ति ।

अपर आह- एवकारो भिन्नक्रमः । नक्तमुत्तमेनैव बलिरिति तत्र बल्यन्तराणां रात्रौ निवृत्तिः । अन्ये तु- ऊहेन दिवा बलिं हरन्ति 'दिवा बलमिच्छन्त' इति ।

आश्वलायनके तथा दर्शनात्12 दिवाचारिभ्य ने दिवा । नक्तंचारिभ्य इति (बलिमाकाशे उत्क्षिपे)न्नक्तमिति । तथा मनुः—
13 दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नक्तंचारिभ्य एव च ।' इति ॥ ८॥

09 य एतानव्यग्रो यथोपदेशङ्

य एतानव्यग्रो यथोपदेशं कुरुते नित्यः स्वर्गः पुष्टिश्च ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. He who devoutly offers those (above-described), to the rules, (obtains) Balis and Homas), according eternal bliss in heaven and prosperity.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

य एतानव्यग्रो यथोपदेशं कुरुते नित्यः स्वर्गः पुष्टिश्च ॥९॥

टिप्पनी⑥

य एताननन्तरोक्तान् होमान् बलींश्च । अव्यग्रः समाहितमना भूत्वा यथोपदेशमुपदेशानतिक्रमेण कुरुते । य इति वचनात्तस्यति पूर्वं गम्यते । तस्य नित्यः स्वर्गः पुष्टिश्च 'स्वर्गपुष्टिसंयुक्ता' इति यत् पूर्वमुक्तं तस्याऽर्थवादताशङ्का मा भूदिति पुनर्वचनम् । पुष्टिस्वर्गौ नित्यावेव भवत, न प्रबलैरपि कर्मान्तरैर्बाधनमिति ॥९॥

10 अग्रञ् च देयम्

अग्रं च देयम् १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. And (after the Balis have been performed, a portion of the food) must first be given as alms. 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अग्रं च देयम् ॥१०॥

टिप्पनी⑥

बलिहरणानन्तरं अग्रं च देयं भिक्षवे ॥१०॥

11 अतिथीनेवाग्रे भोजयेत्

अतिथीनेवाग्रे भोजयेत् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. He shall give food to his guests first, 15

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अतिथीनेवाऽग्रे भोजयेत् ॥११॥

टिप्पनी⑥

अतिथीन्वक्ष्यति । तानेवाग्रे भोजयेत् न स्वयं सह भुञ्जीत पूर्वं वा । एवमतिथिव्यतिरिक्तानन्यानपि भोजयितव्यान् पश्चादेव भोजयेत् ॥ ११ ॥

12 बलान् वृद्धान् रोगसम्बन्धान्

बालान् वृद्धान् रोग-संबन्धान् स्त्रीश् चान्तर्वत्नीः १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. And to infants, old or sick people, female (relations, and) pregnant women. 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

बालान्वृद्धान्रोगसम्बन्धास्त्रीश्चान्तर्वत्नीः ॥१२॥

टिप्पनी⑥

ये च गृहवर्तिनो बालादयः तानप्यग्र एव भोजयेत् । अन्तर्वत्नीरित्येव सिद्धे स्त्रीग्रहणं स्वस्रादीनामपि ग्रहणार्थम् । अन्तर्वत्नीग्रहणं 17सर्वत्र पूजार्थम् ॥ १२॥

13 काले स्वामिनावन्नार्थिनन् न

काले स्वामिनावन्नार्थिनं न प्रत्याचक्षीयाताम् १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. The master (of the house) and his wife shall not refuse a man who asks for food at the time (when the Vaiśvadeva offering has been performed).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

काले स्वामिनावन्नार्थिनं न प्रत्याचक्षीयाताम् ॥१३॥

टिप्पनी⑥

काले वैश्वदेवान्ते अनार्थमुपस्थितं स्वामिनौ गृहपती न प्रत्याचक्षीयाताम् अवश्यं तस्मै किञ्चिद्देयमति ॥१३॥

14 अभावे भूमिरुदकन् तृणानि

अभावे भूमिरुदकं तृणानि कल्याणी वाग् इति । एतानि वै सतोऽगारे न क्षीयन्ते कदाचनेति १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. If there is no food, earth, water, grass, and a kind word, indeed, never fall in the house of a good man. Thus (say those who know the law). 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

19अभावे भूमिरुदकं तृणानि कल्याणी वागित्येतानि वै सतोऽगारे न क्षीयन्ते कदाचनेति ॥१४॥

प्रस्तावः⑥

अभावे किं कर्तव्यम् ? तत्राह —

टिप्पनी⑥

भूमिरुपवेशनयोग्या । उदकं पादप्रक्षालनादियोग्यम् । तृणानि शयनासनयोग्यानि । कल्याणी वाक् स्वागतमायुष्मते, इहाऽऽस्यतामित्यादिका । एतानि भूम्यादीनि । सतोऽगारे सतस्सत्पुरुषस्य निर्धनस्याऽपि गृहे कदाचिदपि न क्षीयन्ते । वैशब्दः प्रसिद्धौ । अत एव तैरुपचारः कर्तव्यः । इतिशब्दप्रयोगादेवं धर्मज्ञा उपदिशन्तीति ॥ १४॥

15 एवंवृत्तावनन्तलोकौ भवतः

एवंवृत्तावनन्तलोकौ भवतः १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. Endless worlds are the portion (of those householders and wives) who act thus.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवं वृत्तावनन्तलोकौ भवतः ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

यौ गृहमेधिनौ विवाहादारभ्य आन्तादेवंवृत्तौ भवतः तयोरनन्ता लोका भवन्ति । ज्योतिष्टोमादिभ्योऽपि कतिपयदिनसाध्येभ्यो दुष्करमेतदान्ताद्व्रतम् ॥ १५ ॥

16 ब्राह्मणायानधीयानायासनमुदकमन्नमिति देयम् न

ब्राह्मणायानधीयानायासनमुदकमन्नमिति देयम् । न प्रत्युत्तिष्ठेत् १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. To a Brāhmaṇa who has not studied the Veda, a seat, water, and food must be given. But (the giver) shall not rise (to do him honour). 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ब्राह्मणायाऽनधीयानायाऽऽमनमुदकमन्नमिति देयं न प्रत्युत्तिष्ठेत् ॥१६॥

टिप्पनी⑥

यद्यनधीयानो ब्राह्मणोऽतिथिधर्मेणाऽऽगच्छेत् तदा तस्मै आसनादिकं देयम् । प्रत्युत्थानं तु न कर्तव्यम् । अस्मादेव ज्ञायते-अधीयाने प्रत्युत्थेयमिति ॥ १६ ॥

17 अभिवादनायैवोत्तिष्ठेदभिवाद्यश्चेत्

अभिवादनायैवोत्तिष्ठेदभिवाद्यश्चेत् १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. But if (such a man) is worthy of a salutation (for other reasons), he shall rise to salute him.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अभिवादनायैवोत्तिष्ठेदभिवाद्यश्चेत् ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

यदि पुनरसौ अनधीयानोऽपि 'दशवर्षं पौरसख्य'(१.१४.१२.) मित्यादिना ऽभिवाद्यो भवति तदा अभिवादनायौवात्तष्ठेत्॥ १७ ॥

18 राजन्यवैश्यौ च

राजन्यवैश्यौ च १८

▼

⑤

>

▼ Bühler

18. Nor (shall a Brāhmaṇa rise to receive) a Kṣatriya or Vaiśya (though they may be learned). 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

राजन्यवैश्यौ च ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

अधीयानावपि राजन्यवैश्यौ न प्रत्युत्तिष्ठेत् ब्राह्मणः । आसनादिकं तु देयमिति ॥ १८॥

19 शूद्रमभ्यागतङ् कर्मणि नियुञ्ज्यात्

शूद्रमभ्यागतं कर्मणि नियुञ्ज्यात् । अथास्मै दद्यात् १९

▼

⑤

>

▼ Bühler

19. If a Śūdra comes as a guest (to a Brāhmaṇa), he shall give him some work to do. He may feed him, after (that has been performed). 22

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

23शद्रमभ्यागतं कर्मणि नियुज्यात् ॥१९॥

टिप्पनी⑥

यदि शद्रो द्विजाति प्रत्यतिथिरागच्छति तदा तमुदकाहरणादौ कर्मणि नियुञ्ज्यात् नियुञ्जीत ॥ १९ ॥

सूत्रम्⑥

अथाऽस्मै दद्यात् ॥ २०॥

टिप्पनी⑥

अथ तस्मिन् कृते भोजनं दद्यात् ॥ २०॥

20 दासा वा राजकुलादाहृत्यातिथिवच्

दासा वा राजकुलादाहृत्यातिथिवच् छूद्रम् पूजयेयुः २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. Or the slaves (of the Brāhmaṇa householder) shall fetch (rice) from the royal stores, and honour the Śūdra as a guest. 24

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दासा वा राजकुलादाहृत्याऽतिथिवच्छूद्रं पूजयेयुः ॥२१॥

टिप्पनी⑥

अथवा येऽस्य गृहमधिनो दासाः ते राजकुलादाहृत्य तं शूद्रमतिथिवत्पूजयेयुः । अत एव ज्ञायते- शूद्राणामतिथीनां पूजार्थं ब्रीह्याादिकं राज्ञा ग्रामे ग्रामे स्थापयितव्यमिति ॥ २१ ॥

21 नित्यमुत्तरं वासः कार्यम्

(गृहस्थेन) नित्यमुत्तरं वासः कार्यम् २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. (A householder) must always wear his garment over (his left shoulder and under his right arm).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नित्यमुत्तरं वासः कार्यम् ॥ २२॥

टिप्पनी⑥

'उपासने गुरुणा' (१.१५.१)मित्यादिना केषुचित्कालेषु यज्ञोपवीतं विहितम् । इह तु प्रकरणात् गृहस्थस्य नित्यमुत्तरं वासो धार्यमित्युच्यते ॥

22 अपि वा सूत्रमेवोपवीतार्थे

अपि वा सूत्रमेवोपवीतार्थे २२

▼

⑤

>

▼ Bühler

22. Or he may use a cord only, slung over his left shoulder and passed under his right arm, instead of the garment.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अपि वा सूत्रमेवोपवीतार्थे ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

अपि वा सूत्रमेव सर्वेषामुपवीतकृत्ये भवति, न वास एवेति नियमः। तथा च मनुः—
25 कार्पासमुपवीतं स्याद्विप्रस्योर्ध्ववृतं त्रिवृ'दिति26 ॥ २३ ॥

23 यत्र भुज्यते तत्समूह्य

यत्र भुज्यते तत्समूह्य निर्हृत्यावोक्ष्य तं देशम्, अमत्रेभ्यो *(=पात्रेभ्यो)* लेपान्संकृष्याद्भिः संसृज्योत्तरतः शुचौ देशे रुद्राय निनयेत् । एवं वास्तु शिवं भवति २३

▼

⑤

>

▼ Bühler

23. He shall sweep together (the crumbs) on the place where he has eaten, and take them away. He shall sprinkle water on that place, turning the palm downwards, and remove the stains (of food from the cooking-vessels with a stick), wash them with water, and take their contents to a clean place to the north (of the house, offering them) to Rudra. In this manner his house will become prosperous.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यत्र भुज्यते तत्समूह्य निर्हृत्याऽवोक्ष्य तं देशममत्रेभ्यो लेपान् सङ्कृष्याद्भिः संमृज्योत्तरतः शुचौ देशे रुद्राय निनयेदेवं वास्तु शिवं भवति ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

यत्र स्थाने भुज्यते तत् समूह्य समूहन्या सत्यमुच्छिष्टादिकं राशीकृत्य निहरेदन्यतः। निर्हृत्य तं देशमवोक्षत् । अवोक्ष्य ततोऽमत्रेभ्यः येषु पाकः कृतः तान्यमत्राणि तेभ्योऽन्नलेपान् व्यञ्जनलेपांश्च संकृष्य काष्ठादिनाऽवकृष्य अद्भिसंसृजेत् । संसृज्य गृहस्योत्तरतः शुचौ देशे रुद्रायेदमस्त्'विति निनयेत् । एवं कृते वास्तु शिवं समृद्धं भवतीति ॥ २४॥

24 ब्राह्मण आचार्यः स्मर्यते

ब्राह्मण आचार्यः स्मर्यते तु २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. It is declared in the Smṛtis that a Brāhmaṇa alone should be chosen as teacher (or spiritual guide). 27

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ब्राह्मण आचार्यः स्मर्यते तु ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

तुशब्दोऽवधारणार्थो भिन्नक्रमश्च । ब्राह्मण एव सर्वेषामाचार्यः स्मर्यते धर्मशास्त्रेषु । इहाऽपि वक्ष्यति 'स्वकर्म ब्राह्मणस्ये'(२.१०.४.)त्यादि। अनुवादोऽयमापदि कल्पान्तरं वक्तुम् ॥ २५॥

25 आपदि ब्राह्मणेन राजन्ये

आपदि ब्राह्मणेन राजन्ये वैश्ये वाध्ययनम् २५

▼

⑤

>
▼ Bühler

25. In times of distress a Brāhmaṇa may study under a Kṣatriya or Vaiśya.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आपदि ब्राह्मणेन राजन्ये वैश्ये वाऽध्ययनम् ॥ २६ ॥

प्रस्तावः⑥

तदाह—

टिप्पनी⑥

कर्तव्यमित्यध्याहार्थम् । ब्राह्मणस्याऽध्यापयितुरलाभ आपत् । तत्राऽऽपदि ब्राह्मणेन राजन्ये वैश्ये वाऽध्ययनं कर्तव्यम् । न त्वनधीयानेन स्थातव्यम्। 'ब्राह्मणेने'ति वचनाद्राजन्यवैश्ययोर्नाऽयमनुकल्पः ॥ २६ ॥

26 अनुगमनञ् च पश्चात्

अनुगमनं च पश्चात् २६

▼

⑤

>

▼ Bühler

26. And (during his pupilship) he must walk behind (such a teacher).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनुगमनं च पश्चात् ॥ २७ ॥

टिप्पनी⑥

अनुगमनं च पृष्ठतः कर्तव्यं यावदध्ययनम् । पश्चाद्ग्रहणं लज्जादिना कियत्यपि पार्श्वे गतिर्मा भूदिति । सर्वशुश्रूषाप्रसङ्गे नियमः — ब्राह्मणस्याऽनुगमनमेव शुश्रूषेति । तथा च गौतमः-28 'अनुगमनं शुश्रूषे'ति ॥ २७॥

27 तत ऊर्ध्वम् ब्राह्मण

तत ऊर्ध्वं ब्राह्मण एवाग्रे गतौ स्यात् २७

▼

⑤

>

▼ Bühler

27. Afterwards the Brāhmaṇa shall take precedence before (his Kṣatriya or Vaiśya teacher).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत ऊर्ध्वं ब्राह्मण एवाऽग्रे गतौ स्यात् ॥ २८ ॥

टिप्पनी⑥

ततोऽध्ययनादूर्ध्वं समाप्तेऽध्ययने ब्राह्मण एवाग्रतो गच्छेत् ॥ २८ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तावुज्वलायां द्वितीयप्रश्ने चतुर्थी कण्डिका ॥४॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
4. Manu II, 35.↩

5. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

6. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

7. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

8. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

9. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

10. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

11. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

12. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

13. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

14. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

15. Manu II, 144.↩

16. Manu II, 146-148.↩

17. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

18. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

19. आप० ध० १.३०.८.↩

20. Manu II, 147.↩

21. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

22. Manu II, 37.↩

23. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

24. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

25. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

26. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

27. The meaning of the Sūtra is, that the initiation shall be performed as soon as the child is able to begin the study of the Veda. If it is so far developed at eight years, the ceremony must then be performed; and if it be then neglected, or, if it be neglected at any time when the capacity for learning exists, expiation prescribed in the following Sūtras must be performed. The age of sixteen in the case of Brāhmaṇas is the latest term up to which the ceremony may be deferred, in case of incapacity for study only. After the lapse of the sixteenth year, the expiation becomes also necessary. Manu II, 38; Yājñ. I, 37.↩

28. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

०५①

01 सर्वविद्यानाम् अप्य् उपनिषदाम्④

सर्व-विद्यानाम् अप्य् उपनिषदाम् उपाकृत्या ऽनध्ययनं तद्-अहः १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. On the day on which, beginning the study of the whole sacred science, the Upaniṣads (and the rest, he performs the Upākarma in the morning) he shall not study (at night). 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वविद्यानामप्युपनिषदामुपाकृत्याऽनध्ययनं तदहः ॥१॥

टिप्पनी⑥

कर्मणि षष्ठी । सर्वविद्या अङ्गविद्या अप्युपनिषद उपाकृत्याध्येतुमारभ्य वदहरनध्ययनं तस्मिन्नहन्यध्ययनं न कर्तव्यम् । उपनिषद्ग्रहणं प्राधान्यख्यापनार्थम । ब्राह्मणा आयाता, वसिष्ठोऽध्यायात इतिवत् ॥१॥

02 अधीत्य चाविक्रमणं सद्यः

अधीत्य चाविक्रमणं सद्यः २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. And he shall not leave his teacher at once after having studied (the Veda and having returned home) 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अधीत्य चाऽविप्रक्रमणं सद्यः ॥२॥

टिप्पनी⑥

अधीत्य3 'वेदमधीत्य स्नास्य'न्नित्यवसरे आचार्यसकाशात् सद्यो विप्रक्रमणं न कर्तव्यं नाऽपगन्तव्यम् । प्रायेण मकारात्परमिकारमधीयते । तत्राप्येष एवार्थः । इकारस्तु छान्दसोऽपपाठो वा4 ॥२॥

03 यदि त्वरेत गुरोः

यदि त्वरेत - गुरोः समीक्षायां स्वाध्यायम् अधीत्य कामं गच्छेत् । एवम् उभयोः शिवं भवति ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. If he is in a hurry to go, he shall perform the daily recitation of the Veda in the presence of his teacher, and then go at his pleasure. In this manner good fortune will attend both of them.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यदि त्वरेत गुरोः समीक्षायां स्वाध्यायमधीत्य कामं गच्छेदेवमुभयोः शिवं भवति ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

यदि कार्यवशात् गन्तुं त्वरेत तदा गुरोराचार्यस्य समीक्षायां सन्दर्शने संश्रये स्वाध्यायं प्रश्नावरमधीत्य यथाकामं गच्छेत् । एवं कृते उभयोः शिष्याचार्ययोः शिवं भवतीति ॥ ३॥

04 समावृत्तञ् चेदाचार्योऽभ्यागच्छेत्तमभिमुखो ऽभ्यागम्य

समावृत्तं चेदाचार्योऽभ्यागच्छेत्तमभिमुखो ऽभ्यागम्य तस्योपसंगृह्य न बीभत्समान उदकमुपस्पृशेत्पुरस्कृत्योपस्थाप्य यथोपदेशं पूजयेत् ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. If the (former) teacher visits him after he has returned home, he shall go out to meet him, embrace his (feet), and he shall not wash himself (after that act), showing disgust. He then shall let him pass first into the house, fetch (the materials necessary for a hospitable reception), and honour him according to the rule. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

समावृत्तं चेदाचार्योऽभ्यागच्छेत्तमभिमुखोऽभ्यागम्य तस्योपसङ्गृह्य न बीभत्समान उदकमुपस्पृशेत् पुरस्कृत्योपस्थाप्य यथोपदेशं पूजयेत् ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

समावृत्तं चेत् शिष्यं कृतदारमाचार्योऽभ्यागच्छेत् अतिथिधर्मेण । तमभिमुखोऽभ्यागम्य । तस्योपसंगृह्य । कर्मणि षष्ठी। तमुपसंगृह्य । यद्यपि तस्य चाण्डालादिस्पर्शः सम्भाव्यते, तथापि न बीभत्समान उदकमुपस्पृशेत् न स्नायात् । उपसंग्रहणे वा धूलिधूसरौ पादौ स्पृष्ट्वा न बीभत्समान उदकमुपस्पृशेत् । ततस्तं पुरस्कृत्य गृहप्रवेशे अग्रे कृत्वा । पूजासाधनान्युपस्थाप्य यथोपदेशं गृह्योक्तेन मार्गेण मधुपर्केण पूजयेत् । पूजाविधानं गृह्योक्तस्याऽयमनुवाद आसनादिषु विशेषं वक्तुम् ॥ ४ ॥

05 आसने शयने भक्ष्ये

आसने शयने भक्ष्ये भोज्ये वासिसि वा संनिहिते निहीनतरवृत्तिः स्यात् ५

▼

⑤

>

▼ Bühler

5. If his former teacher is) present, he himself shall use a seat, a bed, food, and garments inferior to, and lower (than those offered to the teacher.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आसने शयने भक्ष्ये वाससि वा सन्निहिते निहीनतरवृत्तिः स्यात् ॥ ५ ॥

प्रस्तावः⑥

तमाह-

टिप्पनी⑥

सन्निहित आचार्य तस्मिन्नेव गृहे अपवरकादिकं प्रविष्टे आसनादिषु निहीनतरवृत्तिः स्यात् । तरप् निर्देशात् नीच आसने गुणतोऽपि निकृष्ट आसीत । एवं शयनादिश्वपि द्रष्टव्यम् ॥ ५ ॥

06 तिष्ठन्सव्येन पाणिनानुगृह्याचार्यमाचमयेत्

तिष्ठन्सव्येन पाणिनानुगृह्याचार्यमाचमयेत् ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. Standing (with his body bent), he shall place his left hand (under the water-vessel, and bending with his other hand its mouth downwards), he shall offer to his teacher water for sipping. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तिष्ठन् सव्येन पाणिनाऽनुगृह्याऽऽचार्य7माचमयेत् ॥६॥

टिप्पनी⑥

तिष्ठन्निति प्रह्व उच्यते, स्थानयोगात् । न हि साक्षात्तिष्ठन्नाचमयितुं प्रभवति । सव्येन पाणिना करकादिकमनुगृह्याऽधस्ताद्गृहीत्वा इतरेण द्वारमवमृश्येत्यर्थसिद्धत्वादनुक्तम् । एवं कृत्वाऽऽचार्यमाचमयेत् स्वयमेव शिष्यः। एवं हि स8 सम्मतो भवति । आचार्ये प्रकृते पुनराचार्य ग्रहणमातिथ्यादन्यत्राप्याचार्यमाचमयन्नेवमेवाऽऽचमयेदिति ॥ ६॥

07 अन्यं वा समुदेतम्

अन्यं वा समुदेतम् ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. And (he shall offer water for sipping in this manner) to other guests also who possess all (good qualities) together. 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्यं वा समुदेतम् ॥ ७॥

टिप्पनी⑥

वाशब्दः समुच्चये । अन्यमप्येवमेवाचमयेत् । स चेत् समुदेतः कुलशीलवृत्तविद्यावयोभिरुपेतो भवति ॥७॥

08 स्थानासनचङ्क्रमणस्मितेष्वनुचिकीर्षन्

स्थानासनचङ्क्रमणस्मितेष्वनुचिकीर्षन् ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. He shall imitate (his teacher) in rising, sitting, walking, about, and smiling. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्थानासनचंक्रमणस्मितेष्वनुचिकीर्षन् ॥ ८ ॥

टिप्पनी⑥

व्यवहितमपि स्यादित्यपेक्ष्यते। चिकीर्षया करणं लक्ष्यते। स्थानादिष्वाचार्यस्य पश्चाद्भावी स्यात्। न पूर्वभावी। न युगपद्भावी ॥ ८॥

09 सन्निहिते मूत्रापुरीषवातकर्मोच्चैर्भाषाहासष्ठेवनदन्तस्कवननिःशृङ्खणभ्रुक्षेपणतालननिष्ठ्यानीति

संनिहिते मूत्रापुरीषवातकर्मोच्चैर्भाषाहासष्ठेवनदन्तस्कवननिःशृङ्खणभ्रुक्षेपणतालननिष्ठ्यानीति ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. In the presence (of his teacher) he shall not void excrements, discharge wind, speak aloud, laugh, spit, clean his teeth, blow his nose, frown, clap his hands, nor snap his fingers.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सन्निहिते मूत्रपुरीषवातकर्मोच्चैर्भाषाहास11ष्ठीवनदन्तस्कवननिःशृङ्खणभ्रुक्षेपणतालननिष्ठयानीति ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

वातकर्म अपानवायोरुत्सर्गः। उच्चैर्भाषा महता स्वनेन सम्भाषणं केनाऽपि। ह्वासो हसनम्। ष्ठीवनं श्लेष्मादिनिरसनम्। दन्तस्खलनं दन्तमलापकर्षणम्। परस्परघट्टनमित्यन्ये। निःशृङ्खणं नालिकामलनिस्सारणम्। भ्रुक्षेपणं भ्रूविक्षेपः। छान्दसो ह्रस्वः। तालनं हस्तयोरास्फालनम्।

निष्ठ्यमङ्गुलिस्फोटनम् । इतिशब्दादन्यदपि स्वैरासनादिकम् । वर्जयेदित्यपेक्ष्यते । एतानि मूत्रकर्मादीन्याचार्यस्य सन्निधौ न कुर्यादिति ॥९॥

10 दारे प्रजायाञ् चोपस्पर्शनभाषा

दारे प्रजायां चोपस्पर्शनभाषा विस्रम्भपूर्वाः परिवर्जयेत् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. Nor shall he tenderly embrace or address caressing words to his wife or children.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दारे प्रजायां चोपस्पर्शनभाषा विस्रम्भपूर्वाः परिवर्जयेत् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

उपस्पर्शनमालिङ्गनाघ्राणादि । भाषाः सम्भाषाश्चाटुप्रभृतयः । एता अध्याचार्ये सन्निहिते12 दारप्रजाविषये विस्रब्धं न कुर्यात् । ज्वरादिपरीक्षायां न दोषः ॥ १०॥

11 वाक्येन वाक्यस्य प्रतीघातमाचार्यस्य

वाक्येन वाक्यस्य प्रतीघातमाचार्यस्य वर्जयेत् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. He shall not contradict his teacher,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वाक्येन वाक्यस्य प्रतिघातमाचार्यस्य वर्जयेच्छ्रेयसां च ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

आचार्यवाक्यस्य समीचीनस्येतरस्य वा आत्मीयेन वाक्येन तादृशेन प्रतिघातं न कुर्यात् । श्रेयसा च अन्येषामपि प्रशस्ततराणां वाक्यं वाक्येन न प्रतिहन्यात् ॥ ११ ॥

12 श्रेयसाञ् च

श्रेयसां च १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. Nor any of his betters.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्रेयसां च ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

(पूर्वसूत्रे द्रष्टव्यम्।)

13 सर्वभूतपरीवादाक्रोशांश्च

सर्वभूतपरीवादाक्रोशांश्च १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. (He shall not) blame or revile any creature. 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वभूतपरीवादाक्रोशांश्च ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

सर्वेषां भूतानां तिरश्चामपि । परीवादान् दोषवादान् । आक्रोशान् अश्लीलवादांश्च वर्जयेत् । परीवादस्य पुनःपुनर्वचनमतिशयेन वर्जनार्थम् ॥ १२ ॥

14 विद्यया च विद्यानाम्

विद्यया च विद्यानाम् १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. (He shall not revile one branch of) sacred learning by (invidiously comparing it with) another. 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विद्यया च विद्यानाम् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

विद्यया च विद्यानां परीवादाक्रोशान् वर्जयेत् । ऋग्वेद एव श्रोत्रसुखः, अन्ये श्रवणकटुका इति परीवादाः । तैत्तिरीयकमुच्छिष्टशाखा, 15याज्ञवल्क्यादीनि ब्राह्मणानीदानींतनानि इत्याद्याक्रोश ॥ १३ ॥

15 यया विद्यया न

यया विद्यया न विरोचेत पुनराचार्यमुपेत्य नियमेन साधयेत् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. If he is not well versed in a (branch of) sacred learning (which he studied formerly), he shall again go to the (same) teacher and master it, observing the (same) rules as (during his first studentship).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यया विद्यया न विरोचेत् पुनराचार्यमुपेत्य नियमेन साधयेत् ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

यया विद्ययाऽधीतया श्रुतया वा न विरोचेत न यशस्वी स्यात् , तामित्यर्थाद्गम्यते । तां विद्यां पुनस्साधयेत् । यथा सम्यक् सिद्धा भवति तथा कुर्यात् । कथम् ? आचार्य तमेवा16न्यं वा उपेत्य उपसद्य । नियमेनाऽपूर्वाधिगमे विद्यार्थस्य यो नियम उक्तः तेन शुश्रूषादिना ॥१४॥

16 उपाकरणादोत्सर्जनादध्यापयितुर्नियमः लोमसंहरणम् मांसं

उपाकरणादोत्सर्जनादध्यापयितुर्नियमः। लोमसंहरणं मांसं श्राद्धं मैथुनमिति च वर्जयेत् १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. The restrictions (to be kept) by the teacher from the beginning of the course of teaching to its end are, to avoid cutting the hair on the body, partaking of meat or of oblations to the Manes, and connection (with a woman). 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उपाकरणाद्योत्सर्जनाध्यापयितुर्नियमो लोमसंहरणं मांसं श्राद्धं मैथुनमिति वर्जयेत् ॥ १५ ॥

प्रस्तावः⑥

अस्मिन्विषयेऽध्यापयितुर्नियमः —

टिप्पनी⑥

लोमसहरणं लोमवापनम् । इदमनाहिताग्निविषयम् । आहिताग्नेस्तु "18अप्यल्पशो लोमानि वापयत इति वाजसनेयकम्" इति ॥ १५ ॥

17 ऋत्वे वा जायाम्

ऋत्वे वा जायाम् १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. Or (he may have conjugal intercourse) with his wife at the proper season.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ऋत्वे वा जायाम् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

ऋतुकाले वा जायामुपेयात् । स्त्रीणामृतुदिनानि षोडश । तत्रभवः काल ऋत्व्यः। 19भवे छन्दसीति यत्प्रत्यये20 'ऋत्व्यवास्त्व्ये'ति सूत्रेण यणादेशो निपातितः । ऋत्व्य इति रूपसिद्धिः । अत्र यलोपश्छान्दसः। चातुर्मास्येषु प्रयुक्तम्-21 ऋत्वे वा जायाम्, नोपर्यास्ते' इति यथा ॥१६॥

18 यथागमं शिष्येभ्यो विद्यासम्प्रदाने

यथागमं शिष्येभ्यो विद्यासंप्रदाने नियमेषु च युक्तः स्यात् । एवं वर्तमानः पूर्वापरान्संबन्धानात्मानं च क्षेमे युनक्ति १८

▼

⑤

>

▼ Bühler

18. He shall be attentive in instructing his pupils in the sacred learning, in such a manner that they master it, and in

observing the restrictions (imposed upon householders during their teaching . He who acts thus, gains heavenly bliss for himself, his descendants and ancestors.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथागमं शिष्येभ्यो विद्यासम्प्रदाने नियमेषु च युक्तः स्यादेवं वर्तमानः पूर्वापरान् सम्बन्धानात्मानं च क्षेमे युनक्ति ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

येन प्रकारेणाऽऽगमः पाठार्थयोः तथैव शिष्येभ्यो निर्मत्सरेण विद्या सम्प्रदेया। एवंभूते विद्यासम्प्रदाने युक्तो22वहितः स्यात् । ये च गृहस्थस्य नियमोऽध्यापने ऽन्यत्र च, तेष्वपि युक्तः स्यात् । एवं युको वर्तमानः पूर्वान् पितृपितामहप्रपितामहान् । अपरांश्च पुत्रपौत्रनप्तॄन् । सम्बन्धान् । कर्मणि घञ् । सम्बन्धिनः पुरुषान् । आत्मानं च क्षेमे अभये स्थाने नाकस्य पृष्ठे । युनक्ति स्थापयति ॥ १७ ॥

19 मनसा वाचा प्राणेन

मनसा वाचा प्राणेन चक्षुषा श्रोत्रेण त्वक्शिश्नोदरारम्भनणानास्रावान्परिवृञ्जानो ऽमृतत्वाय कल्पते १९

▼

⑤

>

▼ Bühler

19. He who entirely avoids with mind, word, nose, eye, and ear the sensual objects (such as are) enjoyed by the touch, the

organ, or the stomach, gains immortality.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मनसा वाचा प्राणेन चक्षुषा श्रोत्रेण त्वक्छिश्नोदरारम्भणानास्रावान् परीवृञ्जानोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१८॥

टिप्पनी⑥

यैः पुरुष आस्राव्यते बहिराकृष्यते । ते आस्रावाः शब्दादयो विषयाः। ते विशेष्यन्ते त्वक्छिश्नोदरारम्भणान् आरभ्यन्ते23 आलम्ब्यन्त इत्यारम्भणाः । तत्र त्वगालम्बना स्रकचन्दनादयः शिश्नालम्बनाः स्त्र्युपभोगादयः । उदरालम्बना 24भक्ष्यभोज्यादयः। उपलक्षणं त्वगादिग्रहणम् । एवंभूतानास्रावान् मनआदिभिः पञ्चभिरिन्द्रियैः परिवृञ्जानस्सर्वतो वर्जयन् अमृतत्वाय मोक्षाय कल्पते। तत्र वागिति रसनेन्द्रियमाह । प्राण इति घ्राणम् ॥ १८॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने पञ्चमी कण्डिका ॥५॥

इति चाऽऽपस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तविरचितायामुज्ज्वलायां द्वितीयप्रश्ने द्वितीयः पटलः ॥२॥

इति द्वितीयः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
5. Manu II, 35.↩

6. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
7. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
8. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
9. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
10. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩
11. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
12. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
13. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our

times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

14. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩
15. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
16. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
17. Manu II, 144.↩
18. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
19. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
20. आप० ध० १.३०.८.↩
21. मनु० रमृ० २.६↩
22. गौ० ध० १. १, २↩
23. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
24. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

०३①

०६①

01 जात्याचारसंशये धर्मार्थमागतमग्निमुपसमाधाय जातिमाचारञ्④

जात्याचारसंशये धर्मार्थमागतमग्निमुपसमाधाय जातिमाचारं च पृच्छेत् १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. If he has any doubts regarding the caste and conduct of a person who has come to him in order to fulfil his duty (of learning the Veda), he shall kindle a fire (with the ceremonies prescribed for kindling the sacrificial fire) and ask him about his caste and conduct. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

जात्याचारसंशये धर्मार्थमागतमग्निमुपसमाधाय जातिमाचारं च पृच्छेत् ॥ १॥

टिप्पनी⑥

अविज्ञातपूर्वो यो **धर्मार्थम्** अध्ययनार्थम् **आगच्छेत्** उपसीदेत्

> 'उपसन्नोऽस्मि भगवन्,
> मैत्रेण चक्षुषा पश्य,
> शिवेन मनसाऽनुगृहाण,
> प्रसीद मामध्यापय

इति ।
तस्य **जात्याचार-संशये** सति,
अग्निम् उपसमाधाय

'यत्र क्वचाग्निमित्याद्यन्यदुपदध्याद्'(२.२.१३,१४.) इत्य्-अन्तं कृत्वा
तत्-सन्निधौ जातिम् आचारं च पृच्छेत्-
'किंगोत्रोऽसि सौम्य, किमाचारश् चासी'ति ॥१॥
02 साधुताञ् चेत्प्रतिजानीतेऽग्निरुपद्र ष्टा

साधुतां चेत्प्रतिजानीतेऽग्निरुपद्र ष्टा वायुरुपश्रोतादित्योऽनुख्याता साधुतां प्रतिजानीते साध्वस्मा अस्तु वितथ एष एनस इत्युक्त्वा शास्तुं प्रतिपद्येत २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. If he declares himself to be (of) good (family and conduct, the teacher elect) shall say,

> 'Agni who sees, Vāyu who hears, Āditya who brings to light, vouch for his goodness; may it be well with this person! He is free from sin.'

Then he shall begin to teach him.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

साधुतां चेत्प्रतिजानीतेऽग्निरुपद्रष्टा वायुरुपश्रोताऽऽदित्योऽऽनुख्याता साधुतां चेत्प्रतिजानीते साध्वस्मा अस्तु वितथ एष एनस इत्युक्त्या शास्तुं प्रतिपद्यते ॥३॥

टिप्पनी⑥

स चेत्साधुतां प्रतिजानीते-

> साधुजन्माऽस्मि,
> अमुष्य पुत्रो
> ऽमुष्य पौत्रो
> ऽमुष्य नप्ता
> साध्वाचारश् चास्मि,
> पित्रैवोपानेषि2, शिक्षिताचारश् चास्मि,
> सम्यक् चावर्तिषि,

विधिबलेन तु बाल्य एव3 स दिष्टां गतिं गतः,
एतस्मात् केवलम् अनधीत-वेद इति, ततो ऽ'ग्निरुपद्रष्टे'त्य्-आदिकं मन्त्रम् उक्त्वा **शास्तुं** शालितुम् अध्यापयितुं धर्मांश् चोपदेष्टुं **प्रतिपद्येत** उपक्रमेत ॥२॥

03 अग्निरिव ज्वलन्न् अतिथिरभ्यागच्छति

अग्निरिव ज्वलन्न् अतिथिरभ्यागच्छति ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. A guest comes to the house resembling a burning fire. 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अग्निरिव ज्वलन्नतिथिरभ्यागच्छति ॥३॥

प्रस्तावः⑥

पञ्चयज्ञान्ते 'अतिथीनेवाग्रे भोजये'दित्युक्तम् । तत्प्रकारं वक्तुं तस्याऽवश्यकर्तव्यतामनेनाऽऽह—

टिप्पनी⑥

अतिथिर्गृहानभ्यागच्छन्नग्निरिव ज्वन्नभ्यागच्छति। तस्मादसौ भोजनादिभिरवश्यं तर्पयितव्यः । निराशस्तु गतो गृहान् दहेदिति ॥ ३॥

04 धर्मेण वेदानामेकैकां शाखामधीत्य

धर्मेण वेदानामेकैकां शाखामधीत्य श्रोत्रियो भवति ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. He is called a Śrotriya who, observing the law (of studentship), has learned one recension of the Veda (which may be current in his family). 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

धर्मेण वेदानामेकैकां शाखामधीत्य श्रोत्रियो भवति ॥४॥

प्रस्तावः⑥

इदानीमतिथिलक्षणं वक्तुं तदुपयोगिश्रोत्रियलक्षणमाह —

टिप्पनी⑥

विद्यार्थस्य यो नियमः स धर्मः । तेन वेदानां यां काञ्चन शाखामधीत्य श्रोत्रियो भवति। पुरुषस्य हि प्रतिवेदमकैका शाखा भवति। या पूर्वैः परिगृहीताध्ययनानुष्ठानाभ्यां सा प्रतिवेदं स्वशाखा । तामधीत्य श्रोत्रियो भवति, न तु प्रतिवेदमैकेकामधीत्य श्रोत्रियो भवतीति। लोकविरोधात् । लोके हि यां कांचनैकां शाखामधीयानः श्रोत्रिय इति प्रसिद्धः।

05 स्वधर्मयुक्तङ् कुटुम्बिनमभ्यागच्छति धर्मपुरस्कारो

स्वधर्मयुक्तं कुटुम्बिनमभ्यागच्छति धर्मपुरस्कारो नान्यप्रयोजनः सोऽतिथिर्भवति ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. He is called a guest (who, being a Śrotriya), approaches solely for the fulfilment of his religious duties, and with no other object, a householder who lives intent on the fulfilment of his duties. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

7स्वधर्मयुक्तं कुटुम्बिनमभ्यागच्छति धर्मपुरस्कारो 8नाऽन्यप्रयोजनः सोऽतिथिर्भवति ॥५॥

प्रस्तावः⑥

अतिथिलक्षणमाह —

टिप्पनी⑥

आदितो यच्छब्दो द्रष्टव्यः । अन्ते स इति दर्शनात् । मध्ये च श्रोत्रियलक्षणोपदेशात् । तदुपजीवनेन सूत्रं योज्यम् । यः श्रोत्रियः स्वधर्मयुक्तं स्वधर्मनिरतं कुटुम्बिनं भार्यया सह वसन्तं गृहस्थम् । आश्रमान्तरनिरासार्थमिदमुक्तम् । न हि ते पचमाना भवन्ति । भिक्षवो हि ते । अभ्यागच्छति उद्दिश्याऽऽगच्छति । धर्मपुरस्कारः 9आचार्याद्यर्थं भिक्षणं धर्मः तं पुरस्करोतीति धर्मपुरस्कारः । कर्मण्यण् । धर्मप्रयोजनः नान्यप्रयोजनः । य एवंभूत एवंभूतमुद्दिष्याऽगच्छति नाऽन्येच्छया सोऽतिथिरिति । 10बौधायनस्तु श्रान्तोऽदृष्टपूर्वः केवलमन्नार्थी नाऽन्यप्रयोजनस्सोतिथिर्भवति । अथ वा सर्ववर्णानामन्यतमः काले यथोपपन्नः सर्वेषामतिथीनां श्रेष्ठोऽतिथिर्भवती"ति ॥ ५॥

06 तस्य पूजायां शान्तिः

तस्य पूजायां शान्तिः स्वर्गश्च ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. The reward for honouring (such a guest) is immunity from misfortunes, and heavenly bliss. 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्य पूजायां शान्तिः स्वर्गश्च ॥ ६॥

टिप्पनी⑥

तस्यातिथेः पूजायां कृतायां शान्तिरुपद्रवाणामिह भवति । प्रेत्य च स्वर्गलाभः ॥ ६॥

07 तमभिमुखोऽभ्यागम्य यथावयः समेत्य

तमभिमुखोऽभ्यागम्य यथावयः समेत्य तस्यासनमाहारयेत् ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. He shall go to meet such (a guest), honour him according to his age (by the formulas of salutation prescribed), and cause a seat to be given to him.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तमभिमुखोऽभ्यागम्य यथावयस्समेत्य तस्यासनमाहारयेत्॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

तमतिथिमभिमुखोऽभ्यागच्छेत् । अभ्यागम्य यथावयः वयसोऽनुरूपं प्रत्युत्थानाभिवादनादिना समेयात सङ्गच्छेत् । समेत्य च तस्यासनमाहारयेत् शिष्यादिभिः । अभावे स्वयमाहरेत् ॥ ७॥

08 शक्तिविषये नाबहुपादमासनम् भवतीत्येके

शक्तिविषये नाबहुपादमासनं भवतीत्येके ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. Some declare that, if possible, the seat should have many feet. 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शक्तिविषये नाऽबहुपादमासनं भवतीत्येक ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

शक्तौ सत्यां अबहुपादमासनं न देयम् । किं तु बहुपादमेव पीठादिकमित्येके मन्यन्ते । 13स्वमतं त्वबहुपादमपीति ॥ ८ ॥

09 तस्य पादौ प्रक्षालयेत्

तस्य पादौ प्रक्षालयेत् । शूद्र मिथुनावित्येके ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. The (householder himself) shall wash the feet of that (guest); according to some, two Śūdras shall do it.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्य पादौ प्रक्षालयेच्छूद्रमिथुनावित्येके ॥९॥

टिप्पनी⑥

द्वौ शूद्रौ तस्य पादौ प्रक्षालयेतामित्येके मन्यन्ते । दासवत इदम् ॥९॥

10 अन्यतरोऽभिषेचने स्यात्

अन्यतरोऽभिषेचने स्यात् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. One of them shall be employed in pouring water (over the guest, the other in washing his feet).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्यतरोऽभिषेचने स्यात् ॥ १० ॥

प्रस्तावः⑥

अत्र विशेषः—

टिप्पनी⑥

अभिषेचनं करकादिना जलावसेकः । तमेकः कुर्यात् । इतरः प्रक्षालनम् ॥ १०॥

11 तस्योदकमाहारयेन्मृन्मयेनेत्येके

तस्योदकमाहारयेन्मृन्मयेनेत्येके ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. Some declare that the water for the (guest) shall be brought in an earthen vessel. 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्योदकमाहारयेन्मृण्मयेनेत्येके ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

मृण्मयेन पात्रेण तस्योदकमाहर्तव्यमित्येके मन्यन्ते । 15स्वमतं तु तैजसेन ॥ ११ ॥

12 नोदकमाचारयेद् असमावृत्तः

नोदकमाचारयेद् असमावृत्तः १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. But (a guest) who has not yet returned home from his teacher shall not be a cause for fetching water. 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नोदकमाहारयेदसमावृत्तः ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

यदा असमावृत्तो ब्रह्मचारी आचार्यप्रेषितः स्वयमेव वाऽतिथिरभ्यागच्छति तदा नासावुदकमाहारयेत् नासावुदकाहरणस्य प्रयोजकः । नास्मा उदकमाहर्तव्यमिति ॥ १२ ॥

13 अध्ययनसांवृत्तिश्चात्राधिका

अध्ययनसांवृत्तिश्चात्राधिका १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. In case a (student comes, the host) shall repeat the Veda (together with him) for a longer time (than with other guests).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अध्ययनसांवृत्तिश्चात्राधिका ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

अत्र असमावृत्तेऽतिथौ अध्ययनसंवृत्तिश्चाधिका इतरस्मादतिथेः । अध्ययनस्य सह निष्पादनमध्ययनसंवृत्तिः। यः प्रदेशस्तस्याऽऽगच्छति स तेन सह कियन्तञ्चित्कालं वक्तव्य इति । प्रसिद्धे तु पाठे पूर्वपदान्तस्य समोऽकारस्य छान्दसो दीर्घः ॥ १३॥

14 सान्त्वयित्वा तर्पयेद्रसैर्भक्ष्यैरद्भिरवरार्ध्येनेति

सान्त्वयित्वा तर्पयेद्रसैर्भक्ष्यैरद्भिरवरार्ध्येनेति १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. He shall converse kindly (with his guest), and gladden him with milk or other (drinks), with eatables, or at least with water.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सान्त्वयित्वा तर्पयेद्रसैर्भक्ष्यैरद्भिरवरार्ध्येनेति ॥१४॥

टिप्पनी⑥

ततः पादप्रक्षालनस्य समध्ययनस्य वाऽनन्तरमतिथिं प्रियवचनेन सान्त्वयेत् । सान्त्वयित्वा गव्यादिभीरसैः फलादिभिश्च भक्ष्यैरन्ततोऽद्भिरपि तावत्तर्पयेत् तृप्तिं कुर्यात् । 'अवरार्थेने'ति जघन्यकल्पतां सूचयति । अप्यन्तत इत्यर्थः । इतिशब्दादेवमादिभिरन्यैरपि ॥ १४॥

15 आवसथन् दद्यादुपरिशय्यामुपस्तरणमुपधानं सावस्तरणमभ्यञ्जनञ्

आवसथं दद्यादुपरिशय्यामुपस्तरणमुपधानं सावस्तरणमभ्यञ्जनं चेति १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. He shall offer to his guest a room, a bed, a mattress, a pillow with a cover, and ointment, and what else (may be necessary). 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आवसथं दद्यादुपरिशय्यामुपस्तरणमुपधानं सावस्तरणमभ्यञ्जनं चेति ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

आवसथो विश्रामस्थानम् । उपरिशय्या खट्वा । उपस्तरणं तूलिका। उपधानमुपबर्हणम् । अवस्तरणमुपरिपटः । तत्सहितमुपधानमुपस्तरणं च । अभ्यञ्जनं पादयोः तैलं घृतं वा। एतत्सर्वं दद्यात् । भोजनात्प्रागूर्ध्वं वा अपेक्षिते काले । इतिशब्दादन्यदप्यपेक्षितम् ॥ १५ ॥

16 अन्नसंस्कर्तारमाहूय व्रीहीन्यवान्वा तदर्थान्निर्वपेत्

अन्नसंस्कर्तारमाहूय व्रीहीन्यवान्वा तदर्थान्निर्वपेत् १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. (If the dinner has been finished before the arrival of the guest), he shall call his cook and give him rice or yava for (preparing a fresh meal for) the guest. 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्नसंस्कर्तारमाहूय ब्रीहीन् यवान्वा तदर्थान्निर्वपेत् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

यः पचति तमन्नसंस्कर्तारमाहूय तदर्थानतिथ्यर्थान् ब्रीहीन्यवान्वा निर्वपेत् पृथक्कृत्य दद्यात्-अमुष्मै पचेति । ब्रीहियवग्रहणमुपलक्षणम् । इदं भुक्तवत्सु सर्वेष्वतिथावुपस्थिते द्रष्टव्यम् ॥ १६ ॥

17 उद्धृतान्यन्नान्यवेक्षेतेदम् भूया

उद्धृतान्यन्नान्यवेक्षेतेदं भूया १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. (If dinner is ready at the arrival of the guest), he himself shall portion out the food and look at it, saying (to himself), 'Is this

(portion) greater, or this?'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उद्धृतान्यन्नान्यवेक्षेतेदं भूया३इद३मिति ॥ १७ ॥

प्रस्तावः⑥

भोजनकाले त्वाह —

टिप्पनी⑥

यावन्तो भोक्तारस्तावद्वा अन्नान्युद्धृत्य पृथक्पात्रेषु कृत्वा स्वयं संविभागं कृत्वा तान्यन्नान्यवेक्षेत-किमिदं भूयः प्रभूतमिदं वेति । विचारे प्लुतः । 19पूर्वं तु भाषायामित्येतदुपेक्षितं छान्दसोऽयं 20प्रयोग इति ॥ १७॥

18 इदा३मिति भूय उद्धरेत्येव

इदा३मिति भूय उद्धरेत्येव ब्रूयात् १८

▼

⑤

>

▼ Bühler

18. He shall say, 'Take out a larger (portion for the guest).'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भूय उद्धरेत्येव ब्रूयात् ॥ १८॥

टिप्पनी⑥

एवमवेक्ष्याऽतिथ्यर्थं भूय उद्धरेत्येव ब्रूयात् ॥ १८ ॥

19 द्विषन्द्विषतो वा नान्नमश्नीयाद्दोषेण

द्विषन्द्विषतो वा नान्नमश्नीयाद्दोषेण वा मीमांसमानस्य मीमांसितस्य वा १९

▼

⑤

>

▼ Bühler

19. A guest who is at enmity (with his host) shall not eat his food, nor (shall he eat the food of a host) who hates him or accuses him of a crime, or of one who is suspected of a crime. 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

द्विषन्द्विषतो वा नान्नमश्नीयाद्दोषेण वा मीमांसमानस्य मीमांसितस्य वा ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

यं स्वयमतिथिं द्विषन्भवति यो वाऽऽत्मानं द्वेष्टि यो वाऽऽत्मानं दोषेण मीमांसते आत्मनि स्तेयादिदोषं सम्भावयति । यो वा दोषेण मीमांसितः यत्र लौकिका दोषं सम्भावयन्ति, तस्यास्य सर्वस्यान्नं नाश्नीयात् ॥१९॥

20 पाप्मानं हि स

पाप्मानं हि स तस्य भक्षयतीति विज्ञायते २०

▼

⑤

>

▼ Bühler

20. For it is declared in the Veda that he (who eats the food of such a person) eats his guilt.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पाप्मानं हि स तस्य भक्षयतीति विज्ञायते ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

यः एवंविधस्याऽन्नमश्नाति, स तस्य पाप्मानमेव भक्षयतीति विज्ञायते ॥ २० ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने षष्ठी कण्डिका ॥ ६ ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition. ↩

2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

4. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

5. Manu II, 35.↩

6. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

7. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

8. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

9. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

10. आप० ध० १.३०.८.↩

11. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

12. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

13. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

14. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

15. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

16. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

17. Manu II, 144.↩

18. Manu II, 146-148.↩

19. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

20. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

21. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

०७①

01 स एष प्राजापत्यः④

स एष प्राजापत्यः कुटुम्बिनो यज्ञो नित्यप्रततः १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. This reception of guests is an everlasting (Śrauta)-sacrifice offered by the householder to Prajāpati. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स एष प्रजापत्यः कुटुम्बिनो यज्ञो नित्यप्रततः ॥१॥

टिप्पनी⑥

स एषोऽभिहितो मनुष्ययज्ञः प्राजापत्यः प्रजापतिना दृष्टः, तद्दैवत्यो वा । कुटुम्बिनो नित्यप्रततो, यज्ञः नाऽग्निष्टोमादिवत् कादाचित्कः ॥१॥

02 योऽतिथीनामग्निः स आहवनीयो

योऽतिथीनामग्निः स आहवनीयो यः कुटुम्बे स गार्हपत्यो यस्मिन्पच्यते सोऽन्वाहार्यपचनः २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. The fire in the stomach of the guest (represents) the Āhavanīya, (the sacred fire) in the house of the host represents the Gārhapatya, the fire at which the food for the guest is cooked (represents) the fire used for cooking the sacrificial viands (the Dakṣiṇāgni). 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

योऽतिथीनामग्निः स आहवनीयो यः कुटुम्बे स गार्हपत्यो यस्मिन्पच्यते सोऽन्वाहार्यपचनः ॥२॥

टिप्पनी⑥

तस्याऽग्नीन् सम्पादयति —

टिप्पनी⑥

योऽतिथीनां जाठरोऽग्निः स आवाहनीयः, तत्र हि हूयते । यः कुटुम्बे गृहे अग्निरोपासनः स गार्हपत्यः, नित्यधार्यत्वात् । यस्मिन् पच्यते3 लौकिकाग्नौ सोऽन्वाहार्यपचनः दक्षिणाग्निः, तत्र 4ह्यन्वाहार्यं पच्यते ॥२॥

03 ऊर्जम् पुष्टिम् प्रजाम्

ऊर्जं पुष्टिं प्रजां पशूनिष्टापूर्तमिति गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. He who eats before his guest consumes the food, the prosperity, the issue, the cattle, the merit which his family acquired by sacrifices and charitable works.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ऊर्जं पुष्टिं प्रजां पशुनिष्टापूर्तमिति गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥ ३॥

टिप्पनी⑥

योऽतिथेः पूर्वमश्नाति स गृहाणां कुलस्य सम्बन्धि ऊर्गादिकमश्नाति भक्षयति विनाशयति । ऊर्गन्नम् । इष्टमग्निहोत्रादि । पूर्तं स्मार्तं कर्म5 कूपखातादि । अन्ये प्रसिद्धाः ॥३॥

04 पयोपसेचनमन्नमग्निष्टोमसम्मितं सर्पिषोक्थ्यसम्मितम् मधुनातिरात्रसम्मितम्

पयोपसेचनमन्नमग्निष्टोमसंमितं सर्पिषोक्थ्यसंमितं मधुनातिरात्रसंमितं मांसेन द्वादशाहसंमितमुदकेन प्रजावृद्धिरायुषश्च ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. Food (offered to guests) which is mixed with milk procures the reward of an Agniṣṭoma-sacrifice. Food mixed with clarified butter procures the reward of an Ukthya, food mixed with honey the reward of an Atirātra, food accompanied by meat the reward of a Dvādaśāha, (food and) water numerous offspring and long life. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पय उपसेचनमन्नमग्निष्टोमसम्मितं सर्पिषोक्थ्यसम्मितं, मधुनाऽतिरात्रसम्मितं, मांसेन द्वादशाहसम्मित, मुदकेन प्रजावृद्धिरायुषश्च ॥४॥

टिप्पनी⑥

पय उपसेचनं यस्य तदन्नम7ग्निष्टोमतुल्यम् । सर्पिषा, उपसिक्तमिति प्रकरणाद्गम्यते तदुक्थ्यतुल्यम् । मधुनोपसिक्तमन्नमतिरात्रतुल्यम् । मांसेन सह दत्तमन्नं द्वादशाहतुल्यम् । उदकेन सह दत्तेन प्रजावृद्धिर्भवति। आयुषश्च । उपसमस्तमपि वृद्धिरिति सम्बध्यते ॥४॥

05 प्रिया अप्रियाश्चातिथयः स्वर्गं

प्रिया अप्रियाश्चातिथयः स्वर्गं लोकं गमयन्तीति विज्ञायते ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. It is declared in the Veda, 'Both welcome and indifferent guests procure heaven (for their host).'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रिया अप्रियाश्चाऽतिथियः स्वर्गं लोकं गमयन्तीति विज्ञायते ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

प्रियाः प्रसिद्धाः अप्रिया उदासीनाः, द्विषतो निषिद्धत्वात् ॥ ५ ॥

06 स यत्प्रातर्मध्यन्दिने सायमिति

स यत्प्रातर्मध्यंदिने सायमिति ददाति सवनान्येव तानि भवन्ति ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. When he gives food in the morning, at noon, and in the evening, (these gifts) are the Savanas (of that sacrifice offered to Prajāpati). 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स यत्प्रातर्मध्यन्दिने सायमिति ददाति सवनान्येव तानि भवन्ति ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

त्रिषु कालेषु दीयमानान्यन्नानि अस्य यज्ञस्य 9प्रातस्सवनादीनि त्रीणि भवन्ति । तस्मात्सर्वेषु कालेषु दातव्यमिति ॥ ६ ॥

07 यदनुतिष्ठत्युदवस्यत्येव तत्

यदनुतिष्ठत्युदवस्यत्येव तत् ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. When he rises after his guest has risen (to depart), that act represents the Udavasānīyā iṣṭi (of a Vedic sacrifice). 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यदनुतिष्ठत्युदवस्यत्येव तत ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

यत् गन्तुमुत्तिष्ठन्तमतिथिमनूत्तिष्टति तदुदवस्यत्येव11 उदवसानीया साऽस्य यज्ञस्येति । प्रायेणोच्छब्दं न पठन्ति । केवलमनुशब्दमेव पठन्ति । तत्राप्यर्थः स एव ॥ ७ ॥

08 यत्सान्त्वयतति सा दक्षिणा

यत्सान्त्वयतति सा दक्षिणा प्रशंसा ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. When he addresses (the guest) kindly, that kind address (represents) the Dakṣiṇā. 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यत्सान्त्वयति सा दक्षिणा प्रशंसा ॥८॥

टिप्पनी⑥

यत् सान्त्वयति प्रशंसति सा प्रशंसा दक्षिणा ॥ ८॥

09 यत्संसाधयति ते विष्णुक्रमाः

यत्संसाधयति ते विष्णुक्रमाः ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. When he follows (his departing guest, his steps represent) the steps of Viṣṇu. 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यत्संसाधयति ते 14विष्णुक्रमाः ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

संसाधनमनुव्रजनम् ॥ ९॥

10 यदुपावर्तते सोऽवभृथः

यदुपावर्तते सोऽवभृथः १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. When he returns (after having accompanied his guest), that (act represents) the Avabhṛtha, (the final bath performed after the completion of a sacrifice.)

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यदुपावर्तते 15सोऽवभृथः ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

उपावर्तनं अनुव्रज्य प्रत्यावर्ननम् ॥ १० ॥

11 इति हि ब्राह्मणम्

इति हि ब्राह्मणम् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. Thus (a Brāhmaṇa shall treat) a Brāhmaṇa, (and a Kṣatriya and a Vaiśya their caste-fellows.)

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

इति ब्राह्मणम् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

इति ब्राह्मणमित्यस्य सर्वेण सम्बन्धः ॥ ११ ॥

12 राजानञ् चेदतिथिरभ्यागच्छेच्छ्रेयसीमस्मै पूजामात्मनः

राजानं चेदतिथिरभ्यागच्छेच्छ्रेयसीमस्मै पूजामात्मनः कारयेत् १२

▼

⑤

>

▼ Bühler

12. If a guest comes to a king, he shall make (his Purohita) honour him more than himself. 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

राजानं चेदतिथिरभ्यागच्छेच्छ्रेयसीमस्मै पूजामात्मनः कारयेत् ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

17राजा अभिषिक्तः क्षत्रियः । सोऽतिथयेऽभ्यागताय आत्मनोऽपि सकाशात् श्रेयसी पूजां कारयेत् पुरोहितेन ॥ १२ ॥

13 आहिताग्निञ् चेदतिथिरभ्यागच्छेत्स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयात्

आहिताग्निं चेदतिथिरभ्यागच्छेत्स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयात् । व्रात्य क्वावात्सीरिति । व्रात्य उदकमिति । व्रात्य तर्पयंस्त्विति १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. If a guest comes to an Agnihotrin, he himself 18 shall go to meet him and say to him: 'O faithful fulfiller of thy vows, where didst thou stay (last night)?' (Then he offers water, saying): 'O faithful fulfiller of thy vows, here is water.' (Next he offers milk or the like, saying): 'O faithful fulfiller of thy vows, may (these fluids) refresh (thee).'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आहिताग्निं चेदतिथिरभ्यागच्छेत्स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयाद्-व्रात्य क्वाऽवात्सीरिति, व्रात्योदकमिति, व्रात्य तर्पयंस्त्विति ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

यद्याहिताग्निमुद्दिश्यातिथिरागच्छेत्, तत एनमतिथिं स्वयमेवाभिमुख उपसर्पेत् । अत्र स्वयमिति वचनादनाहिताग्निरन्येन शिष्यादिना कारयन्नपि न दुष्यति । तमभ्युदेत्य ब्रूयात्-व्रात्य क्वावासीरिति कुशलप्रश्नः । व्रते साधुर्व्रत्यः स एव व्रात्य इति पूजनाभिधानम् । क्व पूर्वस्यां रात्र्यामुषितवानसीति । 'व्रात्योदक'मित्युदकदानम् । 'व्रात्य तर्पयस्त्वि'ति गोरसादिभिस्तर्पणम् । अनुस्वारसकारौ छान्दसौ । क्रियाभेदात्प्रतिमन्त्रमितिशन्दः । एतत्सर्वेषु कालेषु कर्तव्यम् ॥१३॥

14 पुराग्निहोत्रस्य होमादुपांशु जपेत्

पुराग्निहोत्रस्य होमादुपांशु जपेत् । व्रात्य यथा ते मनस्तथास्त्विति । व्रात्य यथा ते वशस्तथास्त्विति । व्रात्य यथा ते प्रियं तथास्त्विति । व्रात्य यथा ते निकामस्तथास्त्विति १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. (If the guest stays at the time of the Agnihotra, he shall make him sit down to the north of the fire and) murmur in a low voice, before offering the oblations: 'O faithful fulfiller of thy vows, may it be as thy heart desires;' 'O faithful fulfiller of thy vows, may it be as thy will is;' 'O faithful fulfiller of thy vows, may it be as thy wish is;' 'O faithful fulfiller of thy vows, may it be as thy desire is.' 19

▼ हरदत्त-टीका

टिप्पनी⑥

पुराऽग्निहोत्रस्य होमादुपांशु जपेत्-व्रात्य यथा ते मनस्तथाऽस्त्विति, व्रात्य यथा ते वशस्तथाऽस्त्विति, व्रात्य यथा ते प्रियं तथाऽस्त्विति, व्रात्य यथा ते निकामस्तथास्त्विति ॥ १४ ॥

सूत्रम्⑥

स यदि होमकालेऽप्यासीत, तदा पुरा होमादपरेणाग्निं दर्भेषु सादयित्वा 'व्रात्य तथा ते मन' इत्यादिमन्त्रानुपाशु जपेत् ब्रूयात् । तत्र प्रतिमन्त्रमितिशब्दप्रयोगादर्थभेदाच्चतुर्णां विकल्पः । समुच्चय इत्यन्ये । अत्र चाऽध्वर्युर्यजमानो वा यो20होता स जपेत् । ततो जुहुयात् ॥ १४॥

15 यस्योद्धृतेष्वहुतेष्वग्निष्वतिथिरभ्यागच्छेत्स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयात्व्रात्य अतिसृज

यस्योद्धृतेष्वहुतेष्वग्निष्वतिथिरभ्यागच्छेत्स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयात्व्रात्य अतिसृज होष्यामि । इत्यतिसृष्टेन होतव्यम् । अनतिसृष्टश्चेज्जुहुयाद्दोषं ब्राह्मणमाह १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. If a guest comes, after the fires have been placed (on the altar), but before the oblations have been offered, (the host) himself shall approach him and say to him: 'O faithful fulfiller of thy vows give me permission; I wish to sacrifice.' Then he shall sacrifice, after having received permission. A Brāhmaṇa declares that he commits a sin if he sacrifices without permission. 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यस्योदधृतेष्वहुतेष्वग्निष्वतिथिरभ्यागच्छेत्स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयात्-व्रात्याऽतिसृज होष्यामीत्यतिसृष्टेन होतव्यमनतिसृष्टश्चेज्जुहुयाद्दोषं ब्राह्मणमाह ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

उद्धृतेष्विति बहुवचनं सभ्यावसथ्यापेक्षम्। यस्य तु योऽग्नयः, तस्यापि । अहुतेष्वित्यनेन सामानाधिकरण्यात् होमोऽपि त्रिष्वपि भवति। तेनाऽऽहवनीयहोमानन्तरमतिथावागतेऽपि त्रिषु होमो न कृत इति वक्ष्यमाणो विधिर्भवत्येव । कः पुनरसौ ? स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयात् ।

व्रात्याऽतिसृज, अनुजानीहि होष्यामीति । ततो जुहुधीत्यतिसृजेत् । अतिसृष्टेन होतव्यम् । यदि पुनरनतिसृष्टोऽननुज्ञातो जुहुयात्, तस्य दोषमाथर्वणिकानां ब्राह्मणवाक्यमाह । 22तदत्र न पठितं तत्र प्रत्येतव्यम् । अत्र पक्षे स्वयं होमो नियतः ॥ १५ ॥

16 एकरात्रञ् चेदतिथीन्वासयेत्पार्थिवांल् लोकानभिजयति

एकरात्रं चेदतिथीन्वासयेत्पार्थिवांल् लोकानभिजयति द्वितीययान्तरिक्ष्यांस्तृतीयया दिव्यांश्चतुर्थ्या परावतो लोकानपरिमिताभिरपरिमितांल् लोकानभिजयतीति विज्ञायते १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. He who entertains guests for one night obtains earthly happiness, a second night gains the middle air, a third heavenly bliss, a fourth the world of unsurpassable bliss; many nights procure endless worlds. That has been declared in the Veda.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एकरात्रं चेदतिथीन्वासयेत्पार्थिवाल्ँलोकानभिजयति द्वितीययाऽऽन्तरिक्ष्यांस्तृतीयया दिव्यांश्चतुर्थ्या परावतो लोकानपरिमिताभिरपरिमिताल्ँलोकानभिजयतीति विज्ञायते ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

य23एकां रात्रिमतिथीन् गहे वासयति, स पृथिव्यां भवान् लोकानभिजयति । द्वितीयया रात्र्या आन्तरिक्ष्यान् । तृतीयया दिव्यान् । चतुर्थ्या परावतः सुखस्य परा मात्रा येषु लोकेषु तानभिजयति । अपरिमिताभीरात्रिभिरपरिमितान् लोकानिति विज्ञायते ब्राह्मणं भवति ॥ १६ ॥

17 असमुदेतश्चेदतिथिर्ब्रुवाण आगच्छेदासनमुदकमन्नं श्रोत्रियाय

असमुदेतश्चेदतिथिर्ब्रुवाण आगच्छेदासनमुदकमन्नं श्रोत्रियाय ददामीत्येव दद्यात् । एवमस्य समृद्धं भवति १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. If an unlearned person who pretends to be (worthy of the appellation) 'guest' comes to him, he shall give him a seat, water, and food, (thinking) 'I give it to a learned Brāhmaṇa.' Thus (the merit) of his (gift) becomes (as) great (as if a learned Brāhmaṇa had received it).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

असमुदेतश्चेदतिथिर्ब्रुवाण आगच्छेदासनमुदकमन्नं श्रोत्रियाय ददामीत्येव दद्यादेवमस्य समृद्धं भवति ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

विद्यादिभीरहितोऽसमुदेतः । स चेदतिथिरिति ब्रुवाण आगच्छेत्तदा तस्मै आसनादिकं श्रोत्रियायैव ददामीत्येवं मनसि कृत्वा दद्यात् । एवं ददतोऽस्य तद्दानं समृद्धं भवति श्रोत्रियायैव दत्तं भवति ॥ १७॥

इति द्वितीयप्रश्ने सप्तमी कण्डिका ॥ ७ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तमिश्रविरचितायामुज्ज्वलायां द्वितीयप्रश्ने तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥

इति तृतीयः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition. ↩
2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
3. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
4. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
5. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
6. Manu II, 35.↩
7. आप० ध० १.३०.८.↩
8. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
9. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
10. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

11. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

12. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

13. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

14. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

15. आप० ध० १.३०.८.↩

16. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

17. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

18. Manu II, 144.↩

19. Manu II, 146-148.↩

20. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

21. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

22. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

23. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

oɤ①

०८①

01 येन कृतावसथः स्यादतिथिर्न④

येन कृतावसथः *(=दत्ताश्रयः)* स्यादतिथिर्न तं प्रत्युत्तिष्ठेत्प्रत्यवरोहेद्वा पुरस्ताच्चेदभिवादितः १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. On the second and following days of the guest's stay, the host shall not rise or descend (from his couch) in order to salute his (guest), if he has been saluted before (on the first day).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

येन कृतावसथः स्यादतिथिर्न तं प्रत्युत्तिष्ठेत्प्रत्यवरोहेद्वा पुरस्ताच्चेदभिवादितः ॥ १॥

टिप्पनी⑥

येन गृहस्थेनाऽतिथिः कृतावसथः स्यात् 1कृतावासः दत्तावासः स्यात् । द्वितीययान्तरिक्ष्यानित्यादिवचनात् द्वितीयादिष्वहस्सु तं प्रति न प्रत्युत्तिष्ठेत् । नाऽप्यासनात् प्रत्यवरोहेत् । स चेत्तस्मिन्नहनि पूर्वमेवाभिवादितः । अनभिवादिते तु अभिवादनार्थं प्रत्युत्तिष्ठेत्, प्रत्यवरोहेच्च ॥१॥

02 शेषभोज्यतिथीनां स्यात्

शेषभोज्यतिथीनां स्यात् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. He shall eat after his guests. 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शेषभोज्यतिथीनां स्यात् ॥ २ ॥

टिप्पनी⑥

'अतिथीनेवाग्रे भोजये (२.४.११.)दित्येव सिद्धे वचनमिदं प्रमादाद्यन्न दत्तमतिथये, तन्न भुञ्जीतेत्येवमर्थम् ॥ २ ॥

03 न रसान्गृहे भुञ्जीतानवशेषमतिथिभ्यः

न रसान्गृहे भुञ्जीतानवशेषमतिथिभ्यः ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. He shall not consume all the flavoured liquids in the house, so as to leave nothing for guests. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न रसान् गृहे भुञ्जीताऽनवशेषमतिथिभ्यः ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

आगामिभ्योऽतिथिभ्यो यथा न किञ्चित् गृहेऽवशिष्यते, तथा गव्यादयो रसा न भोज्याः । सद्यस्सम्पादयितुमशक्यत्वाद्रसानाम् ॥३॥

04 नात्मार्थमभिरूपमन्नम् पाचयेत्

नात्मार्थमभिरूपमन्नं पाचयेत् ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. He shall not cause sweetmeats to be prepared for his own sake. 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽऽत्मार्थमभिरूपमन्नं पाचयेत् ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

आत्मानमुद्दिश्याऽभिरूपमन्न स्वाद्वपूपादि न पाचयेत् ॥ ४॥

05 गोमधुपर्कार्हो वेदाध्यायः

गोमधुपर्कार्हो वेदाध्यायः ५

▼

⑤

>

▼ Bühler

5. (A guest) who can repeat the (whole) Veda (together with the supplementary books) is worthy to receive a cow and the Madhuparka, 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गोमधुपर्कार्हो वेदाध्यायः ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

साङ्गस्य वेदस्याऽध्येता वेदाध्यायः । सोऽतिथिर्मधुपर्कमर्हति; गां च दक्षिणाम् ॥ ५ ॥

06 आचार्य ऋत्विक् स्नातको

आचार्य, ऋत्विक्, स्नातको, राजा वा धर्मयुक्तः *(मधुपर्कार्हाः)*६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. (And also) the teacher, an officiating priest, a Snātaka, and a just king (though not learned in the Veda).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आचार्यं ऋत्विक्स्नातको राजा वा धर्मयुक्तः ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

अवेदाध्याया अप्य् आचार्यादयो गो-मधु-पर्कार्हाः ।

अत एव ज्ञायते—
एकदेशाध्यायिनाव् अप्य् **ऋत्विगाचार्यौ** भवत इति ।
धर्मयुक्त इति राज्ञो विशेषणम् ।
वाशब्दः समुच्चये ॥६॥

07 आचार्यायर्त्विजे श्वशुराय राज्ञ

आचार्यायर्त्विजे श्वशुराय राज्ञ इति परिसंवत्सरादुपतिष्ठद्भ्यो गौर्मधुपर्कश्च ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. A cow and the Madhuparka (shall be offered) to the teacher, to an officiating priest, to a father-in-law, and to a king, if they come after a year has elapsed (since their former visit).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आचार्यायर्त्विजे श्वशुराय राज्ञ इति परिसंवत्सरादुपतिष्ठद्भ्यो गौर्मधुपर्कश्च ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

एतत् 6गृह्ये व्याख्यातम् । गौरत्र दक्षिणाधिका विधीयते ॥७॥

08 दधि मधुसंसृष्टम् मधुपर्कः

दधि मधुसंसृष्टं मधुपर्कः पयो वा मधुसंसृष्टम् ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. The Madhuparka shall consist of curds mixed with honey, or of milk mixed with honey. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दधि मधुसंसृष्टं मधुपर्कः पयो वा मधुसंसृष्टम् ॥ ८॥

प्रस्तावः⑥

कोऽसौ मधुपर्क इत्यत आह—

टिप्पनी⑥

8गृह्योक्तस्याऽनुवादोऽयमुत्तरविवक्षया ॥ ८ ॥

09 अभाव उदकम्

अभाव उदकम् ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. On failure (of these substances) water (mixed with honey may be used).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अभाव उदकम् ॥ ९॥

टिप्पनी⑥

दधिपयसोरलाभ उदकमपि देयम् । मधुसंसृष्टमित्येके । नेत्यन्ये, पूर्वत्र पुनर्मधुसंसृष्टग्रहणादिति ॥ ९॥

10 षडङ्गो वेदः

षडङ्गो वेदः १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. The Veda has six Aṅgas (auxiliary works). 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

षडङ्गो वेदः ॥१०॥

प्रस्तावः⑥

वेदाध्याय इत्यत्र विवक्षितं वेदमाह—

टिप्पनी⑥

षड्भिरङ्गैर्युक्तोऽत्र वेदो गृह्यत इति ॥ १० ॥

11 छन्दः कल्पो व्याकरणञ्

छन्दः कल्पो व्याकरणं ज्योतिषं निरुक्तं शीक्षा छन्दोविचितिरिति ११

▼

⑤

>

▼ Bühler

11. (The six auxiliary works are) the Kalpa (teaching the ritual) of the Veda, the treatises on grammar, astronomy, etymology, phonetics, and metrics.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

छन्दोविचितिरिति ॥ ११ ॥

प्रस्तावः⑥

कानि तान्यङ्गानीत्यत आह-~

टिप्पनी⑥

छन्दो वेदः । तत्कल्पयति प्रतिशाखं शाखान्तराधीतेन न्यायप्राप्तेन चाऽङ्गकलापेनोपेतस्य कर्मणः प्रयोगकल्पनयोपस्कुरुत इति छन्दः— कल्पः कल्पसूत्राणि । व्याकरण अर्थविशेषमाश्रित्य पदमन्वाचक्षाणं पदपदार्थप्रतिपादनेन वेदस्योपकारकं विद्यास्थानम् । सूर्यादीनि ज्योतींष्यधिकृत्य प्रवृत्तं शास्त्रं ज्योतिषम् । आदिवृद्ध्यभावे यत्नः कार्यः । तदप्यध्ययनोपयोगिनमनुष्ठानोपयोगिनं च कालविशेषं प्रतिपादयदुपकारकम् । निरुक्तमपि व्याकरणस्यैव कात्स्न्र्यम् । शीक्षा वर्णानां स्थानप्रयत्नादिकमध्ययनकाले कर्मणि च मन्त्राणामुच्चारणप्रकारं शिक्षयतीति । पृषोदरादित्वाद्दीर्घः। गायत्र्यादीनि छन्दांसि यया विचीयन्ते विविच्य ज्ञायन्ते, सा छन्दोविचितिः । एतान्यङ्गानि अङ्गसंस्तवादङ्गत्वम् ।

'मुखं व्याकरणं तस्य ज्योतिषं नेत्रमुच्यते ।
निरुक्तं श्रोत्रमुद्दिष्टं छन्दसा विचितिः पदे ।

शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य हस्तौ कल्पान् प्रचक्षते ॥ इति ।
उपकारकत्वाच ॥ ११ ॥

12 शब्दार्थारम्भणानान् तु कर्मणां

(आक्षेपः -) शब्दार्थारम्भणानां तु कर्मणां समाम्नायसमाप्तौ वेदशब्दः *(तेन कल्पोऽपि वेदशब्दवाच्यस् स्यात्)* । तत्र *(६ इति)* संख्या विप्रतिषिद्धा १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. (If any one should contend that) the term Veda (on account of its etymology, implying that which teaches duty or whereby one obtains spiritual merit) applies to the complete collection of (works which contain) rules for rites to be performed on the authority of precepts, (that, consequently, the Kalpa-sūtras form part of the Veda, and that thereby) the number (fixed above) for those (Aṅgas) is proved to be wrong, 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शब्दार्थारम्भणानां तु कर्मणां समाम्नायसमाप्तौ वेदशब्दस्तत्र सङ्ख्या विप्रतिषिद्धा ॥ १२ ॥

प्रस्तावः⑥

उक्त उपकारः, अत्र चोदयति —

टिप्पनी⑥

शब्दार्थतया यान्यारभ्यन्ते न प्रत्यक्षादिप्रमाणगोचरतया, तानि शब्दार्थारम्भणानि कर्माणि वैदिकान्यग्निहोत्रादीनि । तेषां समाम्नाय उपदेशः । तस्य समाप्तौ स यावता ग्रन्थजातेन समाप्तोऽनुष्ठानपर्यन्तो भवति, तत्र वेदशब्दो वर्तते । वेदयति धर्मं विदन्त्यनेनेति वा धर्ममिति । न च मन्त्रब्राह्मणमात्रेणाऽनुष्ठानपर्यन्त उपदेशो भवति । किं तु कल्पसूत्रैरपि सह । ततश्च तेषामपि वेदस्वरूप एवानुप्रवेशात् पञ्चैवाऽङ्गानि । तत्र षट्संख्या विप्रतिषिद्धेति ॥ १२ ॥

13 अङ्गानान् तु प्रधानैरव्यपदेश

(परिहारः -) अङ्गानां तु प्रधानैरव्यपदेश इति न्यायवित्समयः १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. (Then we answer), All those who are learned in Mīmāṃsā are agreed that (the terms Veda, Brāhmaṇa, and the like, which are applied to) the principal (works), do not include the Aṅgas (the Kalpa-sūtras and the rest). he remembers at any time during dinner,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अङ्गानां तु प्रधानैरव्यपदेश इति न्यायवित्समयः ॥१३॥

प्रस्तावः⑥

परिहरति —

टिप्पनी⑥

अङ्गान्येव कल्पसूत्राणि न वेदस्वरूपाणि । पौरुषेयतया स्मरणात् । कतिपयान्येव हि तेषु ब्राह्मणवाक्यानि, भूयिष्ठानि स्ववाक्यानि । अङ्गानां च तेषां प्रधानवाचिभिश्शब्दैः छन्दो वेदो ब्राह्मणमित्यादिभिर्व्यपदेशो न न्याय्य इति न्यायविदां सिद्धान्तः। ताविमौ पूर्वपक्षसिद्धान्तौ 11कल्पसूत्राधिकरणे स्पष्टं द्रष्टव्यौ । यत्तूक्तं न मन्त्रब्राह्मणमात्रेण पूर्ण उपदेश इति। नैष स्थाणोरपराधो यदेनमन्धो न पश्यतीति, पुरुषापराधस्स भवति । इदं तु भवानाचष्टाम्-कल्पसूत्रकाराणामियं प्रयोगकल्पना कुतस्त्यति । न्यायोपबृंहिताभ्यां मन्त्रब्राह्मणाभ्यामिति

वक्तव्यम् । नान्या गतिः । एवं सति भवानपि यततां तादृशस्यामिति । ततो मन्त्रब्राह्मणाभ्यामेव पूर्णमवभोत्स्यत इति ॥१३॥

14 अतिथिन् निराकृत्य यत्र

अतिथिं निराकृत्य यत्र गते भोजने स्मरेत्ततो विरम्योपोष्य १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. If he remembers at any time that he has refused a guest, he shall at once leave off eating and fast on that day,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अतिथिं निराकृत्य यत्र गते भोजने स्मरेत्ततो विरम्योपोष्य ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

अतिथिमागतं केनचित्प्रकारेण निराकृत्य भोजने प्रवृत्तो यत्र गते यदवस्थाप्राप्ते भोजने स्मरेत्-धिङ्गया स निराकृत इति, तत्रैव भोजनाद्विरम्य तस्मिन्नहन्युपोष्य ॥१४॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रे उज्वलोपेते द्वितीयप्रश्नेऽष्टमी कण्डिका ॥८॥

---

1. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

2. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
↩

3. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

4. Manu II, 35.↩

5. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

6. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

7. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

8. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

9. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

10. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be

understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

11. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

०९①

01 श्वोभूते यथामनसन् तर्पयित्वा④

श्वोभूते यथामनसं तर्पयित्वा संसाधयेत् १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. And on the following day (he shall search for him), feast him to his heart's content, and accompany him (on his departure). 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्वो भूते यथामानसं तर्पयित्वा संसाधयेत् ॥ १॥

टिप्पनी⑥

अपरेद्युस्तमन्विष्य यथामानसं यथेच्छं तर्पयित्वा संसाधयेत् गच्छन्तमनुव्रजेत् ॥ १ ॥

02 यानवन्तमा यानात्

यानवन्तमा यानात् २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. (If the guest) possesses a carriage, (he shall accompany him) as far as that.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यानवन्तमा यानात् ॥ २॥

प्रस्तावः⑥

आ कुत इत्यत आह—

टिप्पनी⑥

स चेदतिथिर्यानवान् भवति, तस्मा तस्याऽऽरोहणादनुव्रजेत् ॥

03 यावन्नानुजानीयादितरः

यावन्नानुजानीयादितरः ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Any other (guest he must accompany), until permission to return is given.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यावन्नाऽनुजानीयादितरः ॥३॥

टिप्पनी⑥

इतरो यानरहितो यावन्नाऽनुजानीयात् गच्छेति, तं तावदनुव्रजेत् ॥३॥

04 अप्रतीभायां सीम्नो निवर्तेत

अप्रतीभायां *(बुद्धौ न जातायाम्)* सीम्नो निवर्तेत ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. If (the guest) forgets (to give leave to depart), the (host) may return on reaching the boundary of his village.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अप्रतीभायां सीम्नो निवर्तेत ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

यदि तस्याऽन्यपरतयाऽनुज्ञायां प्रतीभा बुद्धिर्न जायते, ततस्सीम्नि प्राप्तायां ततो निवर्तेत । प्रतेदीर्घश्छान्दसः। 'संसाधये'दित्यादि सर्वातिथिसाधारणम् । न निराकृतमात्रविषयम् ॥४॥

05 सर्वान्वैश्वदेवे भागिनः कुर्वीता

सर्वान्वैश्वदेवे भागिनः कुर्वीता श्व-चाण्डालेभ्यः ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. To all (those who come for food) at (the end of) the Vaiśvadeva he shall give a portion, even to dogs and Caṇḍālas.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वान्वैश्वदेवे भागिनः कुर्वीता श्वचण्डालेभ्यः ॥५॥

टिप्पनी⑥

वैश्वदेवान्ते भोजनार्थमुपस्थितान् सर्वानेव भागिनः कुर्वीताऽऽश्वचण्डालेभ्यः । अभिविधावाकारः । तेभ्योऽपि किञ्चिद्देयम् । तथा च मनुः —
2 'शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम् ।
वयसां च क्रिमीणां च शनकैर्निर्वपेद्भुवि ॥ इति ॥५॥

06 नानर्हद्भ्यो दद्याद् इत्य्

नानर्हद्भ्यो दद्याद् इत्य् एके ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. Some declare that he shall not give anything to unworthy people (such as Caṇḍālas).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽनहट्यो दद्यादित्येके ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

अनर्हद्भ्यश्चण्डालादिभ्यो न दद्यादित्येके मन्यन्ते । तत्र दानेऽभ्युदयः । अदाने न प्रत्यवायः॥ ६ ॥

07 उपेतः स्त्रीणामनुपेतस्य चोच्छिष्टं

उपेतः स्त्रीणामनुपेतस्य चोच्छिष्टं वर्जयेत् ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. A person who has been initiated shall not eat the leavings of women or of an uninitiated person. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उपेतः स्त्रीणामनुपेतस्य चोच्छिष्टं वर्जयेत् ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

उपेतः कृतोपनयनोऽसमावृत्तः । स स्त्रीणामनुपेतस्य चोच्छिष्टं वर्जयेत् न भुजीत । एवं सति समावृत्तस्योच्छिष्टं भुञ्जानस्य न दोषः स्यात् । एवं तर्हि उपेत आन्तात् कृतदारोऽकृतदारश्च स्त्रीणामनुपेतस्य चोच्छिष्टं वर्जयत् । एवमप्युपेतस्य यस्य कस्यचिदपि यदुच्छिष्टं तद्भोजने न दोषः स्यात् । पितुर्ज्येष्ठस्य च भ्रातुरुच्छिष्टं भोक्तव्यम्-(१.४ १९) इत्येतन्नियमार्थं भविष्यति-पितुरेव भ्रातुरेवेति। यथेवं सूत्रमेवेदमनर्थकम्। तस्मादेव नियमादन्यत्राऽप्रसङ्गात् । इदं तर्हि प्रयोजनम्-यदा पिताऽनुपेतः पुत्रस्तु प्रायश्चित्तं कृत्वा कृतोपनयनः तदा तं प्रति पितुरनुपेतस्योच्छिष्टं प्रतिषिध्यते । एवं ज्येष्ठेऽपि द्रष्टव्यम् । एतदपि नास्ति प्रयोजनम् । उक्तं हि 'धर्मविप्रतिपत्तावभोज्य(१.४.१२) मिति । 'तेषामभ्यागमनं भोजनं विवाहमिति च वर्जये(१.१.३३)दिति च। तथा स्त्रीणामित्येतत् किमर्थम् १ मातुरुच्छिष्टप्रतिषेधार्थम् । कथं प्रसङ्गः ? 'भ्रातरि पितर्याचार्यवच्छुश्रूषे' (१.१४.५.)ति वचनात्, 'यदुच्छिष्टं प्राश्नाति

हविरुच्छिष्टमेव त'(१.४.१,२)दित्याचार्योच्छिष्टस्य हविष्ट्वेन संस्तवाच्च । 4 एवमपि 'पितुर्ज्येष्ठस्ये'त्यत्र पितुर्ग्रहणादेव सिद्धम् । तस्मात् केषुचिज्जनपदेषु भार्ययाऽनुपेतेन च सह भोजनमाचरन्ति । तथा च बौधायनः — 5 'यानि दक्षिणतस्तानि व्याख्यास्यामः । यथैतदनुपेतेन सह भोजनं स्त्रिया सह भोजन'मिति । तस्य दुराचारत्वमनेन प्रतिपाद्यते ॥

08 सर्वाण्युदकपूर्वाणि दानानि

सर्वाण्युदकपूर्वाणि दानानि ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. All gifts are to be preceded by (pouring out) water. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वाण्युदकपूर्वाणि दानानि ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

'सर्वाणी'ति वचनात् भिक्षाप्युदकपूर्वमेव देया ॥ ८॥

10 यथाश्रुति विहारे ९

यथाश्रुति विहारे *(=यागशालायाम्)*९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. (But gifts offered to priests) at sacrifices (are to be given) in the manner prescribed by the Veda.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथाश्रुति विहारे ॥ ९॥

टिप्पनी⑥

विहारे यज्ञकर्मणि यानि दानानि दक्षिणादीनि, तानि यथाश्रुत्येव । नोदकपूर्वाणि ॥९॥

10 ये नित्या भाक्तिकास्तेषाम्

ये नित्या भाक्तिकास्तेषामनुपरोधेन संविभागो विहितः १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. The division of the food must be made in such a manner that those who receive daily portions (slaves) do not suffer by it.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ये नित्या भाक्तिकास्तेषामनुपरोधेन संविभागो विहितः।

टिप्पनी⑥

ये नित्या भाक्तिका भक्तार्हाः कर्मकरादयः तेषामुपरोधो यथा न भवति तथा वैश्वदेवान्ते अभ्यागतेभ्यः संविभागः कर्तव्यः ॥ १० ॥

11 काममात्मानम् भार्याम् पुत्रं

काममात्मानं भार्यां पुत्रं वोपरुन्ध्यान्न त्वेव दासकर्मकरम् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. At his pleasure, he may stint himself, his wife, or his children, but by no means a slave who does his work.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

काममात्मानं भार्यां पुत्रं वोपरुन्ध्यान्न त्वेव दासकर्मकरम् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

दासो भूत्वा यः कर्म करोति स दासकर्मकरः तं आत्माशुपरोधे नापि नोपरुन्ध्यात् । किं पुनरागतार्थं तं नोपरुन्ध्यादिति7 ॥ ११ ॥

12 तथा चात्मनोऽनुपरोधङ् कुर्याद्यथा

तथा चात्मनोऽनुपरोधं कुर्याद्यथा कर्मस्वसमर्थः स्यात् १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. And he must not stint himself so much that he becomes unable to perform his duties.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा चाऽऽत्मनोऽनुपरोधं कुर्याद्यथा कर्मसु समर्थस्स्यात् ॥

टिप्पनी⑥

कर्मसु अग्निहोत्रादिषु आर्जनेषु च यथा स्वयं समर्थो भवति तथाऽऽत्मानं नोपरुन्ध्यात कुटुम्बी ॥ १२॥

13 अष्टौ ग्रासा मुनेर्भक्ष्याः

> 'अष्टौ ग्रासा मुनेर् भक्ष्याः षोडशाऽरण्य-वासिनः ।
> द्वात्रिंशतं गृहस्थस्याऽपरिमितं ब्रह्मचारिणः ॥
> आहिताग्निर् अनरड्वांश् च ब्रह्मचारी च ते त्रयः ।
> अश्नन्त एव सिध्यन्ति नैषां सिद्धिर् अनश्नताम्'

इति॥

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. Now they quote also (the following two verses):

'Eight mouthfuls are the meal of an ascetic, sixteen that of a hermit living in the woods, thirty-two that of a householder, and an unlimited quantity that of a student. An Agnihotrin, a draught-ox, and a student, those three can do their work only if they eat; without eating (much), they cannot do it.' 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

9 'अष्टौ ग्रासा मुनेर्भक्ष्याः षोडशाऽरण्यवासिनः ।
द्वात्रिंशतं गृहस्थस्याऽपरिमितं ब्रह्मचारिणः ॥
आहिताग्निरनरड्वांश्च ब्रह्मचारी च ते त्रयः ।
अश्नन्त एव सिध्यन्ति नैषां सिद्धिरनश्नता'मिति

प्रस्तावः⑥

अथाऽप्युदाहरन्ति—

टिप्पनी⑥

अवैतस्मिन्नात्मानं नोपरुन्ध्यादिति विषये 10श्लोकावुदाहरन्ति । मुनेः सन्न्यासिनः । भक्ष्या अष्टौ ग्रासाः आस्याविकारेण । अरण्यवासी वानप्रस्थः । तस्य षोडश । द्वात्रिंशत् ग्रासाः गृहस्थस्य । प्रथमार्थे द्वितीया । ब्रह्मचारिणस्तु विद्यार्थस्य नैष्ठिकस्य च ग्रासनियमो नास्ति । द्वितीयेन श्लोकेनाहिताग्निविषये 'कालयोर्भोजन'(२.१.२.)मित्ययमपि नियमो नास्तीति11 प्रतिपाद्यते । अनडुग्रहणं दृष्टान्तार्थम् । ब्रह्मचारिग्रहणं दृढार्थम् । सिध्यन्ति स्वकार्यक्षमा भवन्ति ॥ १३ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रे नवमी कण्डिका ॥
इत्यापस्तम्बधर्मसत्रवृत्तौ हरदत्तविरचितायामुज्ज्वलायां द्वितीयप्रश्ने चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
4. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
5. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
6. Manu II, 35.↩
7. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
8. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
9. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

10. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

11. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

o५①

१०①

01 भिक्षणे निमित्तमाचार्यो विवाहो④

भिक्षणे निमित्तमाचार्यो विवाहो यज्ञो मातापित्रोर्बुभूर्षार्हतश्च नियमविलोपः १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. The reasons for (which) begging (is permissible are), (the desire to collect the fee for) the teacher, (the celebration of) a wedding, (or of) a Śrauta-sacrifice, the desire to keep one's father and mother, and the (impending) interruption of ceremonies performed by a worthy man. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भिक्षणे निमित्तमाचार्यो विवाहो यज्ञो मातापित्रोर्बुभूर्षाऽर्हतश्च नियमविलोपः ॥१॥

टिप्पनी⑥

भिक्षणं याचनम् । तत्राऽऽचार्यादयो निमित्तम् । बुभूर्षा भर्तुमिच्छा। अर्हतो विद्यादिमतोऽग्निहोत्रादिनियमे योग्यस्याऽर्थस्याऽभावेन लोपः ॥१॥

02 तत्र गुणान्समीक्ष्य यथाशक्ति

तत्र गुणान्समीक्ष्य यथाशक्ति देयम् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. (The person asked for alms) must examine the qualities (of the petitioner) and give according to his power.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्र गुणान् समीक्ष्य यथाशक्ति देयम् ॥ २॥

टिप्पनी⑥

तत्रैवंभूते भिक्षणे याचतः श्रुतवृत्तादिकान् गुणान् समीक्ष्य शक्त्यनुरूपमवश्यं देयम् । अदाने 2प्रत्यवेयात् । गौतमस्तु निमित्तान्तरमप्याह— 3 'गुर्वर्थनिवेशौषधार्थवृत्तिक्षीणयक्ष्यमाणाध्ययनध्वंसयोगवैश्वजितेषु द्रव्यसंविभागो बहिर्वेदि । भिक्षमाणेषु कृतान्नमितरेष्वि'ति । 4वैश्वजितो विश्वजिद्यागस्य कर्ता सर्वस्वदक्षिणः ॥२॥

03 इन्द्रियप्रीत्यर्थस्य तु भिक्षणमनिमित्तम्

इन्द्रियप्रीत्यर्थस्य तु भिक्षणमनिमित्तम् । न तदाद्रियेत ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. But if persons ask for alms for the sake of sensual gratification, that is improper; he shall not take heed of that.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

5इन्द्रियप्रीत्यर्थस्य तु भिक्षणमनिमित्तम् ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

इन्द्रियद्वारा आत्मनः प्रीतिरिन्द्रियप्रीतिः । तामर्थयमानो यो भिक्षते स्रक्चन्दनादि तन्मूल्यं वा । तद्भिक्षणं नियमेन दानस्य निमित्तं न भवति ॥३॥

04 न तदाद्रियेत

न तदाद्रियेत

▼

⑤

>
▼ Bühler

he shall not take heed of that.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न तदाद्रियेत ॥ ४॥

टिप्पनी⑥

तस्मात् न तदाद्रियेत । अदानेऽपि न प्रत्यवायः । विवाहोऽपि द्वितीयो न निमित्तं सत्यां प्रथमायां धर्मप्रजासम्पन्नायाम् । तदर्थमिदं वचनम् । अन्यत्र प्राप्त्यभावात् ॥

05 स्वकर्म ब्राह्मणस्याऽध्ययनमध्यापनं

स्वकर्म ब्राह्मणस्याध्ययनमध्यापनम्यज्ञो याजनं दानं प्रतिग्रहणं दायाद्यं शिलोञ्छः ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. The lawful occupations of a Brāmaṇa are, 6 studying, teaching, sacrificing for himself, officiating as priest for others, giving alms, receiving alms, inheriting, and gleaning corn in the fields;

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्वकर्म ब्राह्मणस्याऽध्ययनमध्यापनं यज्ञो याजनं दानं प्रतिग्रहणं दायाद्यं सिलोञ्छः ॥ ५॥

टिप्पनी⑥

'सर्ववर्णानां स्वधर्मानुष्ठान(२.२.२) इत्युक्तम् । तेऽमी स्वधर्मा उच्यन्ते-पुत्राय दीयत इति दायः। तमादत्त इति दायादः । तस्व भावो दायाद्यम्, दायस्वीकारः । क्षेत्रादिषु पतितानि मञ्जरीभूतानि ततश्च्युतानि वा धान्यानि सिलशब्दस्याऽर्थः । तेषामुञ्छनमंगुलीभिर्नखैर्वाऽऽदानं सिलोञ्छः । एतान्यध्ययनादीन्यष्टौ ब्राह्मणस्य स्वकर्म । तेष्वध्ययनयज्ञदानानि द्विजातिसामान्येन कर्तव्यतया नियम्यन्ते । इतराण्यर्थितया द्रव्यार्जने प्रवृत्तस्योपायान्तरानिवृत्त्यर्थान्युपदिश्यन्ते- अध्यापनादिभिरेव द्रव्यमार्जयेन्न चौर्यादिभिरिति 7 ॥ ५॥

06 अन्यच्चापरिगृहीतम्

अन्यच्चापरिगृहीतम् *(यथा मूलफलादिः)*५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. And (he may live by taking) other things which belong to nobody. 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्यच्चाऽपरिगृहीतम् ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

यच्चाऽन्यत् केनाप्यपरिगृहीतमारण्यमूलफलादि तेनापि । जीवेदिति प्रकरणात् गम्यते । एतेन निधिर्व्याख्यातः ॥ ६॥

07 एतान्येव क्षत्रियस्याऽध्यापन

एतान्येव क्षत्रियस्याध्यापनयाजनप्रतिग्रहणानीति परिहाप्य दण्डयुद्धाधिकानि ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. (The lawful occupations) of a Kṣatriya are the same, with the exception of teaching, officiating as priest, and receiving alms. (But) governing and fighting must be added. 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतान्येव क्षत्रियस्याऽध्यापनयाजनप्रतिग्रहणानीति परिहाप्य दण्डयुद्धाधिकानि ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

एतान्येव क्षत्रियस्याऽपि स्वकर्म । अध्यापनादीनि त्रीणि वर्जयित्वा । दण्डलब्धं युद्धलब्धं चाऽधिकम् ॥७॥

08 क्षत्रियवद्वैश्यस्य दण्डयुद्धवर्जङ् कृषिगोरक्ष्यवाणिज्याधिकम्

क्षत्रियवद्वैश्यस्य दण्डयुद्धवर्जं कृषिगोरक्ष्यवाणिज्याधिकम् ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. (The lawful occupations) of a Vaiśya are the same as those of a Kṣatriya, with the exception of governing and fighting. (But in his case) agriculture, the tending of cattle, and trade must be added. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

क्षत्रियवद्वैश्यस्य दण्डयुद्धवर्जं कृषिगोरक्ष्य वणिज्याऽधिकम् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

गोरक्ष्यं गवां रक्षणम् । भावे ण्यत्प्रत्ययः। वणिजो भावो वणिज्या क्रयविक्रयव्यवहारः, कुसीदं च । 11 दूतवणिग्भ्यां चेति यत्प्रत्ययः ॥ ८॥

09 नाननूचानमृत्विजं वृणीते न

नाननूचानमृत्विजं वृणीते न पणमानम् ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. He (shall) not choose (for the performance of a Śrauta-sacrifice) a priest who is unlearned in the Veda, nor one who haggles (about his fee).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽनूचानमृत्विजं वृणीते न पणमाणम् ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

साङ्गस्य वेदस्याऽध्येता प्रवक्ता चाऽनूचानः । अतादृशमृत्विजं न वृणीते नाऽप्येतावद्देयमिति परिभाषमाणम् ॥९॥

10 अयाज्योऽनधीयानः

अयाज्योऽनधीयानः ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. (A priest) shall not officiate for a person unlearned in the Veda.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अयाज्योऽनधीयानः ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

अनधीतवेदं न याजयेत् तदानीमपेक्षितं मन्त्रं यथाशक्ति वाचयन् ॥ १० ॥

11 युद्धे तद्योगा यथोपायमुपदिशन्ति

युद्धे तद्योगा यथोपायमुपदिशन्ति तथा प्रतिपत्तव्यम् १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. In war (Kṣatriyas) shall act in such a manner as those order, who are learned in that (art of war).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

युद्धे तद्योगा यथोपायमुपदिशन्ति तथा प्रतिपत्तव्यम् ॥ ११ ॥

प्रस्तावः⑥

क्षत्रियस्य युद्धं स्वकर्मेत्युक्तम् । तत्कथं कर्तव्यमित्यत आह—

टिप्पनी⑥

युद्धविषये तथा प्रतिपत्तव्यं यथा तद्योगा उपायमुपदिशन्ति तस्मिन्युद्ध कर्मणि युद्धशास्त्रे वा येषामभियोगः ते तद्योगाः ॥ ११ ॥

12 न्यस्तायुधप्रकीर्णकेशप्राञ्जलिपराङ्गावृत्तानामार्या वधम् परिचक्षते

न्यस्तायुधप्रकीर्णकेशप्राञ्जलिपराङ्गावृत्तानामार्या वधं परिचक्षते ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. The Āryas forbid the slaughter of those who have laid down their arms, of those who (beg for mercy) with flying hair or joined hands, and of fugitives. 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न्यस्तायुधप्रकीर्णकेशमाञ्जलिपराङावृत्तानामार्या वधं परिचक्षते ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

न्यस्तायुधः त्यक्तायुधः । प्रकीर्णकेशः केशानपि नियन्तुमक्षमः । प्राञ्जलिः कृताञ्जलिः। पराङावृत्तः पराङ्मुखः । सर्व एते भीताः । एतेषां युद्धे वधमार्यास्सन्तो गर्हन्ते । परिगणनादन्येषां वधे न दोषः। तथा च गौतमः-13 न दोषो हिंसायामाहव' इति । न्यस्तायुधः प्रकीर्णकेशः इति विसर्जनीयं केचित्पठन्ति । सोऽपपाठः। पराङावृत्त इति ङकार छान्दसः ॥ १२॥

13 शास्त्रैरधिगतानामिन्द्रि यदौर्बल्याद्विप्रतिपन्नानां शास्ता

शास्त्रैरधिगतानामिन्द्रि यदौर्बल्याद्विप्रतिपन्नानां शास्ता निर्वेषमुपदिशेद्यथाकर्म यथोक्तम् १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. The spiritual guide shall order those who, 14 (whilst) participating according to sacred law (in the rights of their caste), have gone astray through the weakness of their senses, to perform penances proportionate to (the greatness of) their sins, according to the precepts (of the Smṛti).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शास्त्रैरधिगतानामिन्द्रियदौर्बल्याद्विप्रतिपन्नानां शास्ता निर्वेषमुपदिशेद्यथाकर्म यथोक्तम् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

यथाशास्त्रं गर्भाधानादिभिः संस्कारैः संस्कृताः शास्त्रैरधिगताः तेषामिन्द्रियदौर्बल्यात् अजितेन्द्रियतया विप्रतिपन्नानां स्वकर्मतश्च्युतानां निषिद्धेषु च प्रवृत्तानाम् । शास्ता शासिता आचार्यादिः । निर्वेषं प्रायश्चित्तमुपदिशेत् । यथाकर्म कर्मानुरूपम् । यथोक्तं धर्मशास्त्रेषु ॥ १३ ॥

14 तस्य चेच्छास्त्रमतिप्रवर्तेरन्नजानङ् गमयेत्

तस्य चेच्छास्त्रमतिप्रवर्तेरन्नजानं गमयेत् १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. If (such persons) transgress their (Ācārya's) order, he shall take them before the king.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्य चेच्छास्त्रमतिप्रवर्तेरन् राजानं गमयेत् ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

तस्य चेच्छासितुः शास्त्रं शासनं अतिप्रवर्तेरन् न तत्र तिष्ठेयुः राजानं गमयेत्- एवमसौ करोतीति ॥ १४ ॥

15 राजा पुरोहितन् धर्मार्थकुशलम्

राजा पुरोहितं धर्मार्थकुशलम् १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. The king shall (send them) to his domestic priest, who should be learned in the law and the science of governing.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

राजा पुरोहितं धर्मार्थकुशलम् ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

स राजा धर्मशास्त्रेष्वर्थशास्त्रेषु कुशलं च पुरोहितं गमयेत्-विनीयतामसाविति ॥ १५॥

16 स ब्राह्मणान्नियुञ्ज्यात्

स ब्राह्मणान्नियुञ्ज्यात् १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. He shall order (them to perform the proper penances if they are) Brāhmaṇas.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स ब्राह्मणान्नियुञ्ज्यात् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

स पुरोहितः ब्राह्मणाश्चेदतिक्रमणकारिणः प्रापिताः तान्नियुञ्ज्यात् अनुरूपेषु प्रायश्चित्तेषु नियुञ्जीत ॥ १६ ॥

17 बलविशेषेण वधदास्यवर्जन् नियमैरुपशोषयेत्

बलविशेषेण वधदास्यवर्जं नियमैरुपशोषयेत् १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. He shall reduce them (to reason) by forcible means, excepting corporal punishment and servitude. 15

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

बलविशेषेण16 वधदास्यवर्जं नियमैरुपशोषयेत ॥१७॥

प्रस्तावः⑥

अथ यदि ते तत्रापि न तिष्ठेयुः, तदा किं कर्तव्यमित्यत आह—

टिप्पनी⑥

ततस्तान्नियमैरुपवासादिभिरुपशोषयेत् । बलविशेषेण बलानुरूपम् । वधदास्यवर्जं वधस्ताडनादि, वध दास्यं च वर्जयित्वा सर्वमन्यत् बन्धनादिकं बलानुरूपं कारयेत् यावत्ते मन्येरन् चरेम प्रायश्चित्तमिति ॥१८॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्र उज्वलोपेते द्वितीयप्रश्ने दशमी कण्डिका ॥१०॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
5. आप० ध० १.३०.८.↩
6. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

7. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

8. Manu II, 35.↩

9. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

10. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

11. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

12. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

13. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

14. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our

times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

15. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

16. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

११①

01 इतरेषां वर्णानामा प्राणविप्रयोगात्समवेक्ष्य④

इतरेषां वर्णानामा प्राणविप्रयोगात्समवेक्ष्य तेषां कर्माणि राजा दण्डम्प्रणयेत् १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. In the cases of (men of) other castes, the king, after having examined their actions, may punish them even by death.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

इतरेषां वर्णानामा प्राणविप्रयोगात्समवेक्ष्य तेषां कर्माणि राजा दण्डं प्रणयेत् ॥१॥

प्रस्तावः⑥

एवं ब्राह्मणविषये उक्तम् । इतरेषामाह -

टिप्पनी⑥

इतरेषां ब्राह्मणव्यतिरिक्तानां वर्णानां राजा पुरोहितोक्तं दण्डं स्वयमेव प्रणयेत् तेषां कर्माणि समवेक्ष्य तदनुरूपमा प्राणविप्रयोगात् । अभिविधाधाकारः ॥१॥
02 न च सन्देहे

न च संदेहे दण्डं कुर्यात् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. And the king shall not punish on suspicion.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न च सन्देहे दण्डं कुर्यात् ॥ २ ॥

टिप्पनी⑥

अपराधसन्देहे राजा दण्डं न कुर्यात् ॥ २ ॥

03 सुविचितं विचित्या दैवप्रश्नेभ्यो

सुविचितं विचित्या दैवप्रश्नेभ्यो राजा दण्डाय प्रतिपद्येत ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. But having carefully investigated (the case) by means of questions (addressed to witnesses) and even of ordeals, the king may proceed to punish. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सुविचितं विचित्या देवप्रश्नेभ्यो राजा दण्डाय प्रतिपद्येत ॥ ३॥

प्रस्तावः⑥

किन्तु —

टिप्पनी⑥

आ दैवप्रश्नेभ्यः साक्षिप्रश्नादिभिः शपथान्तैः सुविचितं यथा भवति तथा विचित्य निरूप्य । राजा दण्डाय प्रतिपद्येत उपक्रमेत ॥३॥

04 एवंवृत्तो राजोभौ लोकावभिजयति

एवंवृत्तो राजोभौ लोकावभिजयति ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. A king who acts thus, gains both (this and the next) world.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवंवृत्तो राजोभौ लोकाभिजयति ॥ ४॥

प्रस्तावः⑥

एवं कुर्वतः फलमाह —

टिप्पनी⑥

एवंभूतं वृत्तं यस्य स एवंवृत्तः । अत्र मनु—
2 'अदण्ड्यान्दण्डयन् राजा दण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डयन् ।
अयशो महदाप्नोति3 प्रेत्य स्वर्गाच्च हीयते ॥' इति ॥४॥

05 राज्ञः पन्था ब्राह्मणेनासमेत्य

राज्ञः पन्था ब्राह्मणेनासमेत्य ५

▼

⑤

>

▼ Bühler

5. The road belongs to the king except if he meets a Brāhmaṇa. 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

राज्ञः पन्था ब्राह्मणेनाऽसमेत्य ॥५॥

प्रस्तावः⑥

गच्छतां प्रतिगच्छतां च पथि समवाये केन कस्मै पन्था देय इत्यःत आह—

टिप्पनी⑥

राजा अभिषिक्तः । स यदि ब्राह्मणेन समेतो न भवति, तदा तस्य पन्था दातव्यः । क्षत्रियैरप्यनभिषिक्तैः एतदर्थमेव चेदं वचनम् । अन्यत्र 'वर्णज्यायसां चे'(२.११.८)ति वक्ष्यमाणेनैव सिद्धम् ॥ ५ ॥

06 समेत्य तु ब्राह्मणस्यैव

समेत्य तु ब्राह्मणस्यैव पन्थाः ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. But if he meets a Brāhmaṇa, the road belongs to the latter. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

समेत्य तु ब्राह्मणस्यैव पन्थाः ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

आपदि शिष्यभूतब्राह्मणविषयमिदम् । शिष्यभूतेनाऽपि ब्राह्मणेन समेत्य तस्यैव राज्ञा पन्था देय इति ॥ ६॥

07 यानस्य भाराभिनिहितस्यातुरस्य स्त्रिया

यानस्य भाराभिनिहितस्यातुरस्य स्त्रिया इति सर्वैर्दातव्यः ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. All must make way for a (laden) vehicle, for a person who carries a burden, for a sick man, for a woman and others (such as old men and infants).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

6यानस्य भाराभिनिहितस्याऽऽतुरस्य स्त्रिया इति सर्वैर्दातव्यः7 ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

यानं शकटादि । भाराभिनिहितो भाराक्रान्तः । आतुरो व्याधितः । स्त्रियाः यस्याः कस्याश्चिदपि । एतेभ्यस्सर्वैरेव वर्णैः पन्था दातव्यः । इतिशब्दात् स्थविरबालकृशादिभ्यश्च ॥ ७ ॥

इति महाभारते वनपर्वणि ।

08 वर्णज्यायसाञ् चेतरेर्वर्णैः

वर्णज्यायसां चेतरेर्वर्णैः ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. And (way must be made), by the other castes, for those men who are superior by caste.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वर्णज्यायसां चेतरैर्वर्णैः ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

वर्णेनोत्कृष्टां वर्णज्यायांसः । तेषां चेतरैरपकृष्टैषणैर्ब्राह्मणैश्च दातव्यः ॥८॥

09 अशिष्टपतितमत्तोन्मत्तानामात्मस्वस्त्ययनार्थेन सर्वैरेव दातव्यः

अशिष्टपतितमत्तोन्मत्तानामात्मस्वस्त्ययनार्थेन सर्वैरेव दातव्यः ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. For their own welfare all men must make way for fools, outcasts, drunkards, and madmen.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अशिष्टपतितमत्तोन्मत्तानामात्मस्वस्त्ययनार्थेन सर्वैरेव दातव्यः ॥९॥

टिप्पनी⑥

अशिष्टो मूर्खः । अन्ये प्रसिद्धाः । एतेषां सर्वैरेवंजातीयैरुत्कृष्टैरपकृष्टैर्ब्राह्मणैश्च । आत्मस्वस्त्ययनार्थेन स्वस्त्ययनमात्मत्राणम् । तेन प्रयोजनेन तदर्थम्, न त्वष्टार्थमिति । अत्र कौटिल्येन देयस्य पथः प्रमाणमुक्तम्-8 'पञ्चारत्नी रथपथश्चत्वारो हस्तिपथो द्वौ क्षुद्रपशुमनुष्याणा'मिति ॥९॥

10 धर्मचर्यया जघन्यो वर्णः

धर्मचर्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. In successive births men of the lower castes are born in the next higher one, if they have fulfilled their duties. 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

धर्मचर्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

धर्मचर्यया स्वधर्मानुष्ठानेन जघन्यो वर्णः शूद्रादिः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते वैश्यादिकं प्राप्नोति । जातिपरिवृत्तौ जन्मनः परिवर्तने । शुद्रो वैश्यो जायते । तत्रापि स्वधर्मनिष्ठः क्षत्रियो जायते । तत्रापि स्वधर्मपरो ब्राह्मण इति। एवं क्षत्रियवैश्ययोरपि द्रष्टव्यम् ॥१०॥

11 अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णो

अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णो जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. In successive births men of the higher castes are born in the next lower one, if they neglect their duties.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अधर्मचर्यथा पूर्वो वर्णो जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

पूर्वेण गम् । महापातकव्यतिरिक्ताधर्मानुष्ठानविषयमेतत् । महापातकेषु 'स्तेनोऽभिशस्त' (२.२.६) इत्यादिना नीचजातिप्राप्तेरुक्तत्वात् ॥ ११॥

12 धर्मप्रजासम्पन्ने दारे नान्याङ्

धर्मप्रजासंपन्ने दारे नान्यां कुर्वीत १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. If he has a wife who (is willing and able) to perform (her share of) the religious duties and who bears sons, he shall not take

a second. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

धर्मप्रजासम्पन्ने दारे नाऽन्यां कुर्वीत ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

श्रौतेषु गार्ह्येषु स्मार्तेषु च कर्मसु
श्रद्धा शक्तिश्च धर्मसम्पत्तिः ।
प्रजासम्पत्तिः पुत्रवत्वम् ।
एवंभूते दारे सति नान्याम् ।
'दारे' इति प्रकृते अन्याम् इति स्त्रीलिङ्गनिर्देशाद्
अत्रार्थाद् भार्याम् इति गम्यते ।
नान्यां भार्यां कुर्वीत नोऽद्वहेत् ॥ १२ ॥

▼ विश्वास-टिप्पनी

> एवं तर्ह्य् आपस्तम्बिनो ऽस्मद्-आचार्य-ततौ वर्तमानस्य महतो विजयनगरमन्त्रिणो लक्ष्मीकुमारतातार्यस्यैकादश (तद्-अधिका वा) कथं पत्न्यः (याभिस् तुलाभारदानाद्य् अकरोद् इति प्रमाणसिद्धम्)?
> १० पत्नीष्व् एकाऽपि धर्मप्रजासम्पन्ना नेति कठिनं सम्भावयितुम् ...

अस्य परिहारः कश्चन स्फुरति - आपद्-धर्म इति।
लक्ष्मी-कुमारार्य-काले तुरुषाणाम् उपप्लवोऽधिकः, तालिकोट-युधात् परं विघटित-विजय-नगर-साम्राज्य-रक्षायै महान् प्रयासः।
तदा वीर-मृत्युभिः पुंसाम् नैयून्यम्, कन्यानां चाधिक्यं स्यात्, येनैवं विवाहेन तद्-इतरथा चानेन महता तत्-परिजन-प्रार्थनादिभिस् ताः पतिवद् आश्रिताः -
नरकासुर-मुक्त-कृष्ण-गृहीताः कन्या इव।

श्रुताव् अपि बहुपत्नीत्वं क्वचित् प्रशस्तम् -

> इ॒न्द्रि॒यवँ॑ वै सो॑मपी॒थः ।
> इ॒न्द्रि॒यम् ए॒व सो॑मपी॒थम् अव॑ रुन्धे ।
> तेने॑न्द्रि॒येण॑ द्वि॒तीयां॑ञ् जा॒याम् अ॒भ्य॑श्ञुते॥ 57
> … तस्मा॒त् ते द्वे द्वे॑ जा॒ये अ॒भ्यां॑क्षत ।
> य ए॒ववँ॑ वेद॑ -
> अ॒भि द्वि॒तीयां॑ञ् जा॒याम् अ॑श्ञुते ।

13 अन्यतराभावे कार्या प्राग्

अन्यतराभावे कार्या प्राग् अग्न्याधेयात् १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. If a wife is deficient in one of these two (qualities), he shall take another, (but) before he kindles the fires (of the Agnihotra). 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्यतराभावे कार्या प्रागग्न्याधेयात् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

धर्मप्रजयोरन्यतरस्याऽभावे कार्या उद्वाह्या । तत्रापि प्रागग्न्याधेयात् नोर्ध्वमाधानात् । एतदर्थमेवेदं वचनम् । उभयसम्पत्तौ न कार्येत्युक्ते अन्यतराभावे कार्येत्यस्यांशस्य प्राप्तत्वात् । यदा चाऽन्यतराभावे कार्या तदा का शङ्का उभयाभावे कार्येति ॥ १३॥

14 आधाने हि सती

आधाने हि सती कर्मभिः संबध्यते येषामेतदङ्गम् १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. For a wife who assists at the kindling of the fires, becomes connected with those religious rites of which that (fire-kindling) forms a part. 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आधाने हि सती कर्मभिस्संबध्यते येषामेतदङ्गम् ॥१४॥

प्रस्तावः⑥

प्रागग्न्याधेयादित्यत्र हेतुः —

टिप्पनी⑥

हि यस्मात् आधाने सती विद्यमाना सहान्विता कर्मभिस्सम्बध्यते अधिक्रियते । कैः ? येषामग्निहोत्रादीनामेत13दाधानमङ्गमुपकारकम् । तैः । अत्र 'दारे सती'ति वचनात् मृते तस्मिन्प्रागूर्ध्वं वाऽऽधानात् सत्यामपि पुत्रसम्पत्तौ धर्मसम्पत्त्यर्थं दारग्रहणं भवत्येव । तथा च मनुः

—
14"भार्यायै पूर्वमारिण्यै दत्वाऽग्नीनन्त्यकर्मणि ।
पुनर्दारक्रियां कुर्यात्पुनराधानमेव च ॥" इति ।

याज्ञवल्क्योऽपि—
15 'आहरेद्विधिवद्दारनग्नींश्चैवाऽविलम्बयन् ।' इति ।
न हि वाचनिकेऽर्थे युक्तयः क्रमन्ते । तेनैतन्न चोदनीयम्-यजमानः पूर्वमन्वारम्भणीयया संस्कृतो न तस्यायं संस्कारः पुनरापादयितुं शक्यः । या च भार्या आधानात्परमूढा सा च पूर्वमसंस्कृता, न तस्या दर्शपूर्णमासादिष्वधिकारः । स कथं तया तैर्यष्टुमर्हतीति । अन्वारम्भणीयाजन्यश्च संस्कारो यदि संयोगवद्द्वयनिष्टः तदा भार्यानाशे नश्यतीति तस्य पुनस्संस्कारोऽपि नाऽनुपपन्नः । यानि च नाऽन्वारम्भणीयामपेक्ष्यन्ते स्मार्तानि गार्ह्याणि च तैरधिकारस्तस्याऽप्यविरुद्धः ।
ननु च प्रागन्याधानात् कर्मभिस्सम्बध्यते गार्ह्यैस्स्मार्तैश्च, तत्किमुच्यते आधाने हि सती कर्मभिस्सम्बध्यत इति ? सत्यम् , अस्मादेव च हेतुनिर्देशादवसीयते-प्रागाधानात् सत्यामपि धर्मसम्पत्तौ प्रजासम्पत्तौ च रागान्धस्य कदाचिद्दारग्रहणे नाऽतीव दोष इति । अथ यस्याहिताग्नेर्भार्या सत्येव कर्मण्यश्रद्दद्धाना अशक्ता वा भवति पुत्राश्च मृता अनुत्पन्ना वा तस्य कथम् । यद्येषा युक्तिः 'धर्मप्रजासम्पन्न' इति कर्मभिस्सम्बध्यत इति च, तदा कर्तव्यो विवाहः । (न च 'प्रागग्न्याधेया'दित्यस्य विरोधः । अन्यतराभावे कार्येत्यस्यैव स शेषः । न पुनरुभयाभावे कार्येत्यस्य । भारद्वाजसूत्रे तु यद्यप्यविशेषेणाऽहिताग्नेर्दारानुज्ञा प्रतीयते-“अथ यद्याहिताग्निः पुनर्दारक्रियां कुर्वीत यद्यग्नीनोत्सृजेत् लौकिकास्सम्पद्येरन् तस्य पुनरग्न्याधेयं कुर्वीतेत्याश्मरथ्या, पुनराधनमित्यालेखनः, पुनरग्न्याधेयमित्यौडुलोमि,रिति । तथापि तस्याप्ययमेव विषयः) ॥ १४ ॥

15 सगोत्राय दुहितरन् न

सगोत्राय दुहितरं न प्रयच्छेत् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. He shall not give his daughter to a man belonging to the same family (Gotra), 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सगोत्राय दुहितरं न प्रयच्छेत् ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

कन्यागोत्रमेव गोत्रं यस्य तस्मै कन्या न देया । यथा-हारीताय हारीतीं, वात्स्याय वात्सीमित्यादि ॥ १५ ॥

16 मातुश्च योनिसम्बन्धेभ्यः

मातुश्च योनिसंबन्धेभ्यः १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. Nor to one related (within six degrees) on the mother's or (the father's) side. 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मातुश्च योनिसम्बन्धेभ्यः ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

मातुर्योनिसम्बन्धाः कन्याया मातुलादयः । चकारात् पितुरप्येवम् । तेभ्यः असगोत्रेभ्योऽपि न देया कन्यका । अत्र मनुः—

18 'असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः ।
सा प्रशस्ता द्विजातीनां 19दारकर्मण्यमैथुनी ॥

20 स्नात्वा समुद्वहेत्कन्यां सवर्णं लक्षणान्विताम् ।
यवीयसी भ्रातृमतीमसगोत्रां प्रयत्नतः ॥
मातुस्सगोत्रामप्येके नेच्छन्त्युद्वाहकर्मणि ।
जन्मनाम्नोरविज्ञाने नोद्वहेदविशङ्कितः ॥
मातुस्सपिण्डा यत्नेन वर्जनीया द्विजातिभिः ॥ इति।'

गौतमः —

21 असमानप्रवरैर्विवाहः । ऊर्ध्वं सप्तमात्पितबन्धुभ्यो बीजिनश्च । मातृबन्धुभ्यः पञ्चमात्, इति । कात्यायनः— 'प्रवर एषामविवाह इत्येतेषु प्रत्यध्यायमाहत्य वचनं येषामेव प्रवरः तेषामेवाऽविवाह' इति । कारिका च भवति —

रातीयानामविवाह एषामिति येषां सूत्रकृदब्रवीत् ।
तेषामेव विवाहः स्यात् नान्येषामिति धारणेति ॥

शङ्खः22 —

'दारानाहरेत्सदृशानसमानार्षेयानसम्बन्धानासप्तमपञ्चमात्पितृमातृबन्धुभ्यः, इति ।

वसिष्ठः —

23 गृहस्थो विनीतक्रोधहर्षों गुरुणाऽनुरज्ञातः स्नात्वाऽसमानार्षेयामस्पृष्टमैथुनामवरवयसीं भ्रातृमतीं सदृशीं भार्यां विन्देत । पञ्चमीं मातृबन्धुभ्यः सप्तमीं पितृबन्धुभ्यः' इति ।

हारीत24 —

'शिवत्री कुष्ठ्युदरी यक्ष्मामयाव्यल्पायुरनार्षेयमब्रह्म समानार्षेयमित्येतान्यपतितान्यपि कुलानि वर्जनीयानि भवन्ति । कुलानुरूपाः प्रजा भवन्तीति । आदितष्षडयझियत्वादनार्षेयम् । अवेदत्वादब्रह्म । एककुलत्वात् समानार्षेयमिति । तस्मात् सप्त पितृतः परीक्ष्य पञ्च मातृतोऽनग्निकां श्रेष्ठां भ्रातृमतीं भार्यां विन्देत ॥

पैठीनसिः—असमानायां कन्यां वरयेत् । पञ्चमातृतः परिहरेत्सप्तपितृतः त्रीन्मातृतः पञ्च पितृतो वा'।

याज्ञवल्क्यः —

25 अविप्लुतब्रह्मचर्यो लक्षण्यां स्त्रियमुद्वहेत् ।
अनन्यपूर्विकां कान्तामसपिण्डां यवीयसीम् ।
अरोगिणीं भ्रातृमतीमसमानार्षगोत्रजाम् ।
पञ्चमात्सप्तमादूर्ध्वं मातृतः पितृतस्तथा ॥'

विष्णुः—

26 असगोत्रामसमानप्रवरां भार्यां विन्देत मातृतः पञ्चमात् पितृतस्सप्तमात् ।

नारदः —
27आसप्तमात्पञ्चमाच्च बन्धुभ्यः पितृमातृतः । अविवाह्यास्सगोत्रास्स्युस्समानप्रवरास्तथा ।'

शातातपः—
28 परिणीय सगोत्रां तु समानप्रवरां तथा ।
कृत्वा तस्यास्समुत्सर्गमतिकृच्छ्रो विशोधनम् ॥
मातुलस्य सुतामूढ्वा मातृगोत्रां तथैव च ।
समानप्रवरां चैव द्विजचान्द्रायणं चरेत् ॥'

मनुः —
29पैतृष्वसेयीं भगिनीं स्वस्रीयां मातुरेव च ।
मातुश्च भ्रातुस्तनयां गत्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥
एतास्तिस्रस्तु भार्यार्थे नोपयच्छेत्तु बुद्धिमान् ।
ज्ञातित्वेनाऽनुपेयास्ताः पतति ह्युपयन्नधः ॥'

बौधायनः— 30 'सगोत्रां चेदमत्योपयच्छेत मातृवदेनां विभृयात्' । 31 सगोत्रां गत्वा चान्द्रायणमुपदिशेत् ॥ व्रते परिनिष्ठिते ब्राह्मणीं न त्यजेत् मातृवद्भगिनीवद्गर्भो न दुष्यतीति काश्यप इति विज्ञायते । अथ सान्निपात अविवाहः तदाध्यायं वर्जयेत् । बोधायनस्य तत्प्रमाणं कर्तव्यम् । मानव्यो हि प्रजा इति विज्ञायते इति ।
गोत्राणां तु सहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानि च ।
ऊनपञ्चाशदेवैषां प्रवरा ऋषिदर्शनात् ॥
एक एव ऋषिर्यावत्प्रवरेष्वनुवर्तते ।
तावत्समानगोत्रत्वमन्वद्भृग्वाङ्गिरोगणात ॥' इति ।

सुमन्तुः —
32पितृपत्न्यस्सर्वा मातरस्तद्भ्रातरो मातुलाः तत्सुता मातुलसुतास्तस्मात्ता नोपयन्तव्या' इति ॥ १६ ॥

17 ब्राह्मे विवाहे बन्धुशीलश्रुतारोग्याणि

ब्राह्मे विवाहे बन्धुशीलश्रुतारोग्याणि बुद्ध्वा प्रजासहत्वकर्मभ्यः प्रतिपादयेच्छक्तिविषयेणालंकृत्य १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. At the wedding called Brāhma, he shall give away (his daughter) for bearing children and performing the rites that must be performed together (by a husband and his wife), after having enquired regarding (the bridegroom's) family, character, learning, and health, and after having given (to the bride) ornaments according to his power. 33

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ब्राह्मे विवाहे बन्धुशीललक्षणसम्पन्नश्रुतारोग्याणि बुद्ध्वा प्रजां सहत्वकर्मभ्यः प्रतिपादयेच्छक्तिविषयेणाऽलंकृत्य ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

ब्रह्मणा इष्टो ब्राह्मः । तस्मिन् विवाहे वरस्य बन्ध्वादीन् बुद्ध्वा परीक्ष्य प्रजां दुहितरं सहत्वकर्मभ्यः सहकर्तव्यानि यानि कर्माणि तेभ्यः, तानि कर्तुम्, प्रतिपादयेत् दद्यात् । शक्तिविषयेण विभक्तिप्रतिरूपोऽयं निपातो यथाशक्तीत्यस्यार्थे द्रष्टव्यः । यथाशक्त्यलंकृत्य दद्यादित्येष ब्राह्मो विवाहः । प्रजासहत्वकर्मभ्य' इति पाठे प्रजार्थं सहत्वकर्मार्थं चेति ॥ १७॥

18 आर्षे दुहितृमते मिथुनौ

आर्षे दुहितृमते मिथुनौ गावौ देयौ १८

▼

⑤

>

▼ Bühler

18. At the wedding called Ārsha, the bridegroom shall present to the father of the bride a bull and a cow. 34

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आर्षे दुहितृमते मिथुनौ गावौ देयौ ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

ऋषिभिर्दष्टे विवाहे मिथुनौ गावौ स्त्रीगवी पुंगवश्च दुहितृमते देयौ । एष आर्षः ॥ १८ ॥

19 दैवे यज्ञतन्त्र ऋत्विजे

दैवे यज्ञतन्त्र ऋत्विजे प्रतिपादयेत् १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. At the wedding called Daiva, (the father) shall give her to an officiating priest, who is performing a Śrauta-sacrifice. 35

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दैवे यज्ञतन्त्र ऋत्विजे प्रतिपादयेत् ॥ १९॥

टिप्पनी⑥

देवैर्दृष्टे विवाहे यज्ञतन्त्रे वितते ऋत्विजे कर्म कुर्वते कन्यां दद्यात् । एष दैवो विवाहः ॥ १९॥

20 मिथः कामात्सांवर्तेते स

मिथः कामात्सांवर्तेते स गान्धर्वः २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. If a maiden and a lover unite themselves through love, that is called the Gāndharva-rite. 36

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मिथः कामात्सांवर्तेते स गान्धर्वः ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

यत्र कन्यावरौ रहसि कामात् मिथः परस्परं रागात् सांवर्तेते मिथुनी भवतः स गान्धर्वो विवाहः । समो दीर्घः पूर्ववत् । अत्र संयोगोत्तरकालं विवाहसंस्कारः कर्तव्यः ॥ २०॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने एकादशी कण्डिका ॥ ११ ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩

2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

4. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

5. Manu II, 35.↩

6. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

7. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

8. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

9. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

10. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

11. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the

commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

12. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩
13. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
14. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
15. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
16. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩
17. Manu II, 144.↩
18. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
19. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

20. यत्किञ्चनदिङ्मुखेन इति क० पु० ।↩

21. प्रतिषेध परिसंख्येत्यनर्थान्तरम् । परिसङ्ख्या वर्जनबुद्धिः । तद्विषयको विधिः परिसंख्याविधिः । स परिसंख्यापदेनाऽप्यभिधीयते इति मीमांसकाना मतम् । अत एव

    > विधिरत्यन्तमप्राप्ते नियम पाक्षिके सति ।
    > तत्र चान्यत्र च प्राप्ते परिसंख्येति गीयते ॥

    इत्येव वार्तिककारैरुक्तम् । ग्रन्थकारस्त्वयं परिसंख्या नियमविधावेवान्तर्भावयति ॥↩

22. आप० ध० १ ३१. ६.↩

23. इदं च तर्किकादिमतमनुसृत्य प्रभाकरमतञ्च । भाट्टमते तत्तत्कर्मणामेव यागदानहोमादिरूपाणां चोदनालक्षणानां धर्मत्वाङ्गीकारात् । उक्तं हि भट्टपादैः-

    > श्रेयो हि पुरुषप्रीतिस्सा द्रव्यगुणकर्मभिः ।
    > चोदनालक्षणैस्साध्या तस्मात्तेष्वेव धर्मता ॥ इति । श्लो. वा. १२. १९१.

    ↩

24. पक्षेऽप्राप्तांशस्य पूरणकरणादित्यर्थः ।↩

25. या०स्मृ० १.५२,५३.↩

26. मुद्रितश्लोकात्मकविष्णुस्मृतौ नेदं वचनमुपलभ्यते परन्तु ग्रन्थान्तरेष्वस्याविष्णुस्मृतित्वमुक्तम् ।↩

27. नार०स्मृ० व्यवहा० १२. श्लो० ७.↩

28. मुद्रितशातातपस्मृतौ लघुशतातपस्मृतौ बृद्धशातातपस्मृतौ वा नेदं वचनमुपलभ्यते ॥↩

29. म.स्मृ. ११.१७१, १७१.↩

30. बौ. ध. २.१.३८.↩

31. महाप्रवरे समाप्तिसूत्रकाण्डे । बौ० सू० (प्रवर) १३.५५.↩

32. सु० स्मृ०↩

33. Manu II, 146-148.↩

34. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

35. Manu II, 147.↩

36. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

१२①

01 शक्तिविषयेण द्र व्याणि④

शक्ति-विषयेण द्रव्याणि दत्वा वहेरन् - स आसुरः १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. If the suitor pays money (for his bride) according to his ability, and marries her (afterwards), that (marriage is called) the Āsura-rite. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शक्तिविषयेण द्रव्याणि दत्वाऽऽवहरेन् स आसुरः ॥१॥

टिप्पनी⑥

यत्र विवाहे कन्यावते यथाशक्ति द्रव्याणि दत्त्वाऽऽवहेरन् कन्यां स आसुरः । 2 'वित्तेनाऽऽनतिस्त्रीमतामासुर' इति गौतमः। तेन कन्यायै गृहक्षेत्राभरणादिदानेन विवाहो नाऽऽसुरः ॥१॥

02 दुहितृमतः प्रोथयित्वा वहेरन्स

दुहितृमतः प्रोथयित्वा वहेरन् - स राक्षसः २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. If the (bridegroom and his friends) take away (the bride), after having overcome (by force) her father (or relations), that is called the Rākṣasa-rite. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दुहितृमतः प्रोथयित्वाऽऽवहेरन् स राक्षसः ॥२॥

टिप्पनी⑥

दुहितृमतः कन्यावतः पित्रादीन् प्रोथयित्वा प्रमथ्य यत्राऽऽवहेरन् स राक्षसो विवाहः। 4 'हत्वा मित्वा च शीर्षाणि रुदतीं रुदद्भ्यो हरेत् स राक्षस' इत्याश्वलायनः । अत्रापि विवाहसंस्कारः कर्तव्यः। द्वौ चाऽपरौ विवाहौ शास्त्रान्तरेषुक्तौ । तत्राऽऽश्वलायनः-5 'सह धर्मं चरतमिति प्राजापत्यः । सुप्तां प्रमत्तां वाऽपहरेत् स पैशाच' इति । ताविह पृथङ्नोक्तौ ब्राह्मराक्षसयोरन्तर्भावादिति ॥२॥

03 तेषान् त्रय आद्याः

तेषां त्रय आद्याः प्रशस्ताः, पूर्वः पूर्वः श्रेयान् ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. The first three amongst these (marriage-rites are considered) praiseworthy; each preceding one better than the one following. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषां त्रय आद्याः प्रशस्ताः पूर्वः पूर्वः श्रेयान् ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

तेषां विवाहानां मध्ये आद्यास्त्रयो ब्राह्मार्षदैवा प्रशस्ताः । तत्रापि पूर्वः पूर्वोऽतिशयेन प्रशस्त इति ॥ ३ ॥

04 यथा युक्तो विवाहस्तथा

यथा युक्तो विवाहस् - तथा युक्ता प्रजा भवति ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. The quality of the offspring is according to the quality of the marriage-rite. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथायुक्तो विवाहस्तथा युक्ता प्रजा भवति ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

प्रशस्ते विवाहे जाता प्रजापि प्रशस्ता भवति । निन्दिते निन्दिता तत्र मनुः—
8ब्राह्माादिषु विवाहेषु चतुर्वेदानुपूर्वशः ।
ब्रह्मवर्चसिनः पुत्रा जायन्ते शिष्टसम्मताः ॥
रूपसत्त्वगुणापेता धनवन्तो यशस्विनः ।
पर्याप्तभोगा धर्मिष्ठा जीवन्ति च शतं समाः ॥
उत्तरेषु च शिष्टेषु नृशंसानृतवादिनः ।
जायन्ते दुर्विवाहेषु ब्रह्मधर्मसमुज्झिताः ॥
प्राजापत्येन सह ब्राह्माद्याश्चत्वारो ब्राह्मणस्य ।
गान्धर्वराक्षसौ क्षत्रियस्य । आसुरं तु वैश्यशूद्रयोः ।
पैशाचो न कस्यचिदपि ॥४॥

05 पाणिसमूढम् ब्राह्मणस्य नाप्रोक्षितम्

पाणि-समूढं *(भूभागम्)* ब्राह्मणस्य नाप्रोक्षितम् अभितिष्ठेत् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. He shall not step on a spot which has been touched by the hand of a Brāhmaṇa, without having sprinkled it with water.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पाणिसमूढं ब्राह्मणस्य नाऽप्रोक्षितमभितिष्ठेत् ॥ ५॥

टिप्पनी⑥

ब्राह्मणस्य पाणिना **समूढम्** उपलिप्तं सम्मृष्टं वा भूप्रदेशम् **अप्रोक्षितं नाभितिष्ठेत्** नाधितिष्ठेत् । प्राध्यैवाऽधितिष्ठेदिति ॥ ५॥

06 अग्निम् ब्राह्मणञ् चान्तरेण

अग्निं ब्राह्मणं चान्तरेण नातिक्रामेत् ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. He shall not pass between a fire and a Brāhmaṇa,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अग्निं ब्राह्मणं चाऽन्तरेण नाऽतिक्रामेत् ॥ ६॥

टिप्पनी⑥

अग्नेर्ब्राह्मणस्य च मध्ये न गच्छेत् ॥ ६ ॥

07 ब्राह्मणांश्च

ब्राह्मणांश्च ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. Nor between Brāhmaṇas.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ब्राह्मणांश्च ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

अन्तरेण नातिक्रामेदित्येव । ब्राह्मणानां च मध्ये न गच्छेत् ॥७॥

08 अनुज्ञाप्य वातिक्रामेत्

अनुज्ञाप्य वातिक्रामेत् ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. Or he may pass between them after having received permission to do so.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनुज्ञाप्य वाऽतिक्रामेत् ॥ ८ ॥

टिप्पनी⑥

स्पष्टम् ॥८॥

09 अग्निमपश्च न युगपद्धारयीत

अग्निमपश्च न युगपद्धारयीत ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. He shall not carry fire and water at the same time.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अग्निमपश्च न युगपद्धारयीत ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

अग्निमुदकञ्च न युगपद्धारयेत् ॥९॥

10 नानाग्नीनाञ् च सन्निवापं

नानाग्नीनां च संनिवापं वर्जयेत् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. He shall not carry fires (burning in) separate (places) to one (spot). 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नानाग्नीनां च सन्निपातं वर्जयेत् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

पृथगवस्थितानामग्नीनामेकत्र समावपनं वर्जयेत् न कुर्यात् । अग्नावग्निं न प्रक्षिपेदित्यन्ये10 ॥ १०॥

12 प्रतिमुखमग्निमाह्रियमाणम् नाप्रतिष्ठितम् भूमौ

प्रतिमुखमग्निमाह्रियमाणम् नाप्रतिष्ठितं भूमौ प्रदक्षिणीकुर्यात् *(प्रतिष्ठिते तु प्रदक्षिणीकुर्यात्)*११

▼

⑤

>

▼ Bühler

11. If, whilst he walks, fire is being carried towards him, he shall not walk around it with his right hand turned towards it, except after it has been placed on the ground. 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रतिमुखमग्निमाह्रियमाणं नाऽप्रतिष्ठितं भूमौ प्रदक्षिणीकुर्यात् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

यदाऽस्य गच्छतः प्रतिमुखमग्निर्ह्रियते तदा न तं प्रदक्षिणीकुर्यात् स चेद्भूमौ प्रतिष्ठितो न भवति । प्रतिष्ठिते त्वग्नौ दृष्टे प्रदक्षिणीकुर्यादिति ॥११॥

12 पृष्ठतश्चाऽऽत्मनः पाणी

पृष्ठतश्चात्मनः पाणी न संश्लेषयेत् १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. He shall not join his hands on his back.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पृष्ठतश्चाऽऽत्मनः पाणी न संश्लेषयेत् ॥१२॥

टिप्पनी⑥

स्वस्य पृष्ठभागे स्वपाणिद्वयं न सश्लेषयेन्न बध्नीयात् ॥ १२॥

13 स्वपन्न् अभिनिम्रुक्तो नाश्वान्

स्वपन्न् अभिनिम्रुक्तो *(=सूर्यास्तसमये निद्रालुः)* नाश्वान् *(=अनश्नन्)* वाग्यतो रात्रिमासीत । श्वोभूत उदकमुपस्पृश्य वाचं विसृजेत् १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. If the sun sets whilst he sleeps, he shall sit up, fasting and silent, for that night. On the following morning he shall bathe and then raise his voice (in prayer). 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्वपन्नभिनिम्रुक्तो नाश्वान् वाग्यतो रात्रिमासीत श्वोभूत उदकमुपस्पृश्य वाचं विमृजेत् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

13 सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च ।
अंशुमानभिनिम्रुक्ताभ्युदितौ तौ यथाक्रमम् ॥
स्वपन्नभिनिम्रुक्तो नाश्वानभुजानस्तूष्णीं भूतो रात्रिं सर्वामासीत न शयीत । अथाऽपरेद्युः उदकमुपस्पृश्य प्रातः स्नात्वा वाचं विसृजेत् । अयमस्य निर्वेषः ॥

14 स्वपन्न् अभ्युदितो नाश्वान्

स्वपन्न् अभ्युदितो *(नाम सूर्योदये निद्रालुः)* नाश्वान्*(=अनश्नन्)* वाग्यतोऽहस्तिष्ठेत् १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. If the sun rises whilst he is asleep, he shall stand during that day fasting and silent.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्वपन्नभ्युदितो नाश्वान्वाग्यतोऽहस्तिष्ठेत् ॥१४॥

टिप्पनी⑥

पूर्वेण गतम् । 'उदकमुपस्पृश्य वाचं विसृजेदिति चात्राऽपेक्ष्यते । तत्रास्तमिते स्नानप्रतिषेधात् सायमेव स्नात्वा वाचं विसृज्य सन्ध्यामुपासीत ॥१४॥

15 आतमितोः प्राणमायच्छेदित्येके १५

आतमितोः प्राणमायच्छेदित्येके *(तावद् वा प्राणान् आयमयेद् यावद् अङ्ग्लानिर् न स्यात्)*१५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. Some declare that he shall restrain his breath until he is tired.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आतमितोः प्राणमायच्छेदित्येके ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

यावदङ्गानां ग्लानिर्भवति तावत्प्राणमायच्छेत् प्राणवायुमाकृष्य धारयेत् । प्राणायाम कुर्यादित्येके मन्यते । शक्त्यपेक्षो विकल्पः ।
तत्र मनुः — 14सव्याहृतीं सप्रणवां गायत्रीं शिरसा सह ।
त्रिः पठेदायतप्राणः प्राणायामस्स उच्यते ॥ इति ।
एवमावर्तयेद्यावद्ग्लानिः ॥ १५॥

16 स्वप्नं वा पापकं दृष्ट्वा

स्वप्नं वा पापकं दृष्ट्वा १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. And (he shall restrain his breath until he is tired) if he has had a bad dream,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्वप्नं वा पापकं दृष्ट्वा ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

पापकस्वप्नो दुस्स्वप्नः मर्कटास्कन्दनादिः । तं च दृष्ट्वा ॥ १६ ॥

17 अर्थं वा सिषाधयिषन्

अर्थं वा सिषाधयिषन् १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. Or if he desires to accomplish some object,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अर्थं वा 15सिसाधयिषन् ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

अर्थः प्रयोजनम् । तञ्च दृष्टमदृष्टं वा साधयितुमिच्छन् ॥ १७ ॥

18 नियमातिक्रमे चान्यस्मिन्

नियमातिक्रमे चान्यस्मिन् १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. Or if he has transgressed some other rule. 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नियमातिक्रमे चाऽन्यास्मिन् ॥ १८॥

टिप्पनी⑥

नियमानां 'उदङ्मुखो मूत्रं कुर्यादि' (१.३१.१.) त्येवमादीनामतिक्रमे च आतमितो' प्राणमायच्छदिति सर्वत्र शेषः ॥ १८ ॥

19 दोषफलसंशये न तत्कर्तव्यम्

दोषफलसंशये न तत्कर्तव्यम् १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. (If he is) doubtful (whether) the result (of an action will be good or evil), he shall not do it.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दोषफलसंशये न तत् कर्तव्यम् ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

यस्मिन् कर्मणि कृते पक्षे दोषः फलं सम्भाव्यते न तत् कुर्यात, यथा सभये देशे एकाकिनो गमनमिति ॥ १९ ॥

20 एवमध्यायानध्याये

एवमध्यायानध्याये २०

▼

⑤

>

▼ Bühler

20. (He shall follow) the same principle (if he is in doubt whether he ought) to study or not.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवमध्यायानध्याये ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

संशय इत्युपसमस्तमप्यपेक्ष्यते । अध्यायोऽनध्याय इति संशयेऽप्येवं न तत् कर्तव्यमिति । 'सन्धावनुस्तनित' (१.९.२०.) इत्युदाहरणम् । पूर्वस्यैवाऽयं प्रपञ्चः ॥ २० ॥

21 न संशये प्रत्यक्षवद्ब्रूयात्

न संशये प्रत्यक्षवद्ब्रूयात् २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. He shall not talk of a doubtful matter as if it were clear. 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न संशये प्रत्यक्षवद्ब्रूयात् ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

संशयितमर्थमात्मनोऽज्ञानपरिहाराय प्रत्यक्षवत् निश्चितवन्न ब्रूयात् ॥

22 अभिनिम्रुक्ताभ्युदितकुनखिश्यावदाऽग्रदिधिषु दिधिषूपति पर्याहितपरीष्टपरिवित्तपरिविन्नपरिविविदानेषु

अभिनिम्रुक्ताभ्युदित*(=सन्ध्याशायिनौ)*-कुनखि-श्यावदा-ऽग्रदिधिषु*(=कनिष्ठाया वोढा)*--दिधिषू-पति*(अग्रदिधिषौ ज्येष्ठायाः पश्चाद् वोढा)*-पर्याहित-परीष्ट-परिवित्त*(=अकृतविवाहः कनिष्ठे कृतविवाहे)*-परिविन्न*(=कनिष्ठे भागग्राहिणि ज्येष्ठः)*-परिविविदानेषु *(=परिविन्न-भ्राता)* चोत्तरोत्तरस्मिन्न् अशुचिकर-निर्वेषो गरीयान् गरीयान् २२

▼

⑤

>

▼ Bühler

22. In the case of a person who slept at sunset, of 18 one who slept at sunrise, of one who has black nails, or black teeth, of one who married a younger sister before the elder one was married, of one who married an elder sister whose younger sister had been married already, (of a younger brother who has kindled the sacred Gṛhya-fire before his elder brother,) of one whose younger brother has kindled the sacred fire first, (of a younger brother who offers a Soma-sacrifice before his elder brother,) of an elder brother whose younger brother offered a Soma-sacrifice first, of an elder brother who marries or receives his portion of the inheritance after his younger brother, and of a younger brother who takes a wife or receives his portion of the inheritance before his elder brother,--penances ordained for crimes causing impurity, a heavier one for each succeeding case, must be performed.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अभिनिर्मुक्ताभ्युदितकुनखिश्यावदाग्रदिधिषुदिधिषूपतिपर्याहितपरीष्टपरिवित्तपरिविन्नपरिविविदानेषु चोत्तरोत्तरस्मिन्नशुचिकरनिर्वेषो गरीयान् गरीयान् ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

आद्यौ द्वौ गतौ। कुनखी कृष्णनखः । श्यावा दन्ता यस्य स श्यावदन् विवर्णदन्तः। '19विभाषा श्यावारोकाभ्यामि'ति दत्रादेशः । तस्य न लोपश्छान्दसः । ज्येष्ठायामनूढायां पूर्वं कनीयस्या वोढा अप्रदिधिषुः । पश्चादितरस्या वोढा दिधिषूपतिः । ज्येष्ठे अकृताधाने कृताधानः कनिष्ठः पर्याधाता । ज्येष्ठः पर्याहितः । ज्येष्ठे अकृतसोमयागे कृतसोमयागः कनिष्ठः परियष्टा । ज्येष्ठः परीष्टः । अकृतविवाहे ज्येष्ठे कृतविवाहः कनिष्ठः 20परिवेत्तेति प्रसिद्धः । ज्येष्ठः 21परिवित्तः । 22ज्येष्ठस्य भार्यामुपयच्छमानः परिविन्नः। यस्मिन्नगृहातभागे वा कनिष्ठो भागं गृह्णाति स ज्येष्ठः परिविन्नः । कनिष्ठः परिविविदानः । चकारः पर्याधातृप्रभृतीनां समुच्चयार्थः । एतेष्वभिनिम्रुक्तादिषु यो य उत्तरस्तस्मिंस्तस्मिन्द्वादशमासादिरशुचिकर निर्वेषो यः पूर्वमुक्तः तत्र तत्र गरीयान् भवति । पूर्वत्र पूर्वत्र लघीयान् । अभिनिम्रुताभ्युदितयोरनन्तरोक्तं प्रायश्चित्तद्वयमपि विकल्पेन भवति ॥ २२ ॥

23 तच्च लिङ्गञ् चरित्वोद्धार्यमित्येके

तच्च लिङ्गं *(=कुनखित्वादिकम्)* चरित्वोद्धार्यमित्येके २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. Some declare, that after having performed that penance, he shall remove its cause. 23

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तच्च लिङ्गं चरित्वोद्धार्यमित्येके ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

यस्मिन् कौनख्यादिके लिङ्गे यत् प्रायश्चितमुक्तं तच्चरित्वा तत् कौनख्यादिकं लिङ्गमुद्धरेदित्येके मन्यन्ते । अन्यत्राऽहिताग्निभ्य इति स्मृत्यन्तरम् ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रे द्वितीयप्रश्ने द्वादशी कण्डिका ॥१२॥

इति चापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तमिश्रविरचितायामुज्ज्वलायां द्वितीयप्रश्ने पञ्चमः पटलः ॥ ५ ॥

इति पञ्चमः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
4. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
5. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
6. Manu II, 35.↩
7. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
8. आप० ध० १.३०.८.↩
9. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially

ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

10. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

11. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

12. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

13. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

14. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

15. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

16. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

17. Manu II, 144.↩

18. Manu II, 146-148.↩

19. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

20. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

21. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

22. आप० ध० १.३०.८.↩

23. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

oξ①

१३①

01 सवर्णाऽपूर्वशास्त्रविहितायां यथर्तु गच्छतः④

सवर्णा-ऽपूर्व*(=अनन्यव्यूढा)*-शास्त्रविहितायां यथर्तु गच्छतः पुत्रास्तेषां कर्मभिः संबन्धः १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. Sons begotten by a man who approaches in the proper season a woman of equal caste, who has 1 not belonged to another man, and who has been married legally, have a right to (follow) the occupations (of their castes),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सवर्णापूर्वशास्त्रविहितायां यथर्तु गच्छतः पुत्रास्तेषां कर्मभिस्सम्बन्धः ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

सवर्णा चाऽसावपूर्वा च शास्त्रविहिता चेति कर्मधारयः । सवर्णा सजातीया, ब्राह्मणस्य ब्राह्मणीत्यादि । अपूर्वा । अनन्यपूर्वा अन्यस्मा अदत्ता, न विद्यते पूर्वः पतिरस्या इति । शास्त्रविहिता शास्त्रोक्तेन विवाहसंस्कारेण संस्कृता 'सगोत्राय दुहितरं न प्रयच्छे'(२. ११. १५) दित्यादिशास्त्रानुगुणा वा । एवम्भूतायां भार्यायां यथर्तु गृह्योक्तेन ऋतुगमनकल्पेन गच्छतो ये पुत्रा

जायन्ते तेषां 'स्वकर्म ब्राह्मणस्ये' (२.१०.४)त्यादिना पूर्वमुक्तैः कर्मभिस्सम्बन्धो भवति । (गच्छथ इति थकारोऽपपाठः) ॥१॥

- ( ) कुण्डलान्तर्गतो भागो नास्ति घ. ड. पुस्तकयोः ।

02 दायेनाव्यतिक्रमश्चोभयोः

दायेनाव्यतिक्रमश् चोभयोः *(मातापित्रोः)* २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. And to (inherit the) estate,
3. If they do not sin against either (of their parents). 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दायेन चाऽव्यतिक्रमश्चोभयोः ॥ २ ॥

टिप्पनी⑥

उभयोर्मातापित्रोर्दायेन च तेषां सम्बन्धो भवति अव्यतिक्रमश्च । च इति चेदर्थे अव्यतिक्रमश्चेत् , यदि ते मातरं पितरं च न व्यतिक्रमेयुः । व्यतिक्रमे तु दायहानिरिति ॥
अपर आह— 'उभयोरपि दायेन तेषां व्यतिक्रमो न कर्तव्यः । अवश्यं देयो दायस्तेभ्य इति ॥ २॥

03 पूर्ववत्यामसंस्कृतायां वर्णान्तरे च

पूर्ववत्याम्, असंस्कृतायां, वर्णान्तरे च मैथुने दोषः ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. If a man approaches a woman who had been married before, or was not legally married to him, or, belongs to a different caste, they both commit a sin.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पूर्ववत्यामसंस्कृतायां वर्णान्तरे च मैथुने दोषः ॥३॥

टिप्पनी⑥

अन्येन पाणिग्रहणेन तद्वती पूर्ववती । असंस्कृता विवाहसंस्काररहिता । वर्णान्तरं ब्राह्मणादेः क्षत्रियादिः । तेषु पूर्ववत्यादिषु मैथुने सति दोषो भवति । कस्य ? तयोरेव मिथुनीभवतोः ॥ ३ ॥

04 तत्रापि दोषवान्पुत्र एव

तत्रापि दोषवान्पुत्र एव ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

5. Through their (sin) their son also becomes sinful.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्राऽपि दोषवान् पुत्र एव ॥ ४॥

टिप्पनी⑥

तत्रेति सप्तम्यास्त्रल्3 'इतराभ्योऽपि दृश्यन्त' इति । ताभ्यामुभाभ्यामपि पुत्र एवाऽतिशयेन दोषवान् । तत्र पूर्ववत्यामुत्पन्नौ कुण्डगोलकौ 4 'पत्यौ जीवति कुण्डस्स्यान्मृते भर्तरि गोलक' इति ।
असंस्कृतायामुत्पन्नस्य नामान्तरं नास्ति । किं तु दुष्टत्वमेव ।

वर्णान्तरे तु जात्यन्तरम् । तत्र गौतमः —
5 अनुलोमाः पुनरनन्तरैकान्तरद्व्यन्तरासु जातास्सवर्णाम्बष्टोग्र निषाददौष्यन्तपारशवाः ।
प्रतिलोमास्तु सूतमागधायोगवक्षत्तृवैदेहकचण्डाला' इति । एवकारो दुहितृनिवृत्यर्थः । तथा च वसिष्ठः —
6 'पतितेनोत्पादितः पतितो भवत्यन्यत्र स्त्रियास्सा हि परगामिनी तामरिक्थामुपेयादिति । [^2३] स्त्रीरत्नं दुकुलादपी'ति मनुः ॥ ४ ॥

05 उत्पादयितुः पुत्र इति

उत्पादयितुः पुत्र इति हि ब्राह्मणम् ५

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. A Brāhmaṇa (says), 'The son belongs to the begetter.' 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उत्पादयितुः पुत्र इति हि ब्राह्मणम् ॥ ५॥

प्रस्तावः⑥

पुत्रेभ्यो दायभागं वक्ष्यन् अन्यस्य भार्यायामन्येनोत्पादितः किमुत्पादयितुः ? अहोस्वित् क्षेत्रिण इति विचारे निर्णयमाह —

टिप्पनी⑥

न केवलं ब्राह्मणमेव । वैदिकगाथा अप्यत्रोदाहरन्तीत्याह—

06 अथाप्युदाहरन्ति इदानीमेवाहञ् जनक

अथाप्युदाहरन्ति ।
इदानीमेवाहं जनक स्त्रीणामीर्ष्यामि नो पुरा ।
यदा यमस्य सादने जनयितुः पुत्रमब्रुवन् ६-१

रेतोधाः पुत्रं नयति परेत्य यमसादने ।
तस्माद्भार्यां रक्षन्ति बिभ्यन्तः पररेतसः ६-२

अप्रमत्ता रक्षथ तन्तुमेतं
मा वः क्षेत्रे परबीजानि वाप्सुः ।
जनयितुः पुत्रो भवति सांपराये
मोघं वेत्ता कुरुते तन्तुमेतम् ६ इति।

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. Now they quote also (the following Gāthā from the Veda): '(Having considered myself) formerly a father, I shall not now allow (any longer) my wives (to be approached by other men), since they have declared that a son belongs to the begetter in the world of Yama. The giver of the seed carries off the son after death in Yama's world; therefore they guard 8 their wives, fearing the seed of strangers. Carefully watch over (the procreation of) your children, lest stranger seed be sown on your soil. In the next world the son belongs to the begetter, an (imprudent) husband makes the (begetting of) children vain (for himself).'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाप्युदाहरन्ति —
इदानीमेवाहं 9जनकः स्त्रीणामीर्ष्यामि नो पुरा।
यदा यमस्य सादने जनयितुः पुत्रमब्रुवन् ।
रेतोधाः पुत्रं नयति परेत्य यमसादने ।
तस्माद्भार्यां रक्षन्ति बिभ्यन्तः पररेतसः ।
अप्रमत्ता रक्षथ तन्तुमेतं
मा वः क्षेत्रे परबीजानि वाप्सुः ।
जनयितुः पुत्रो भवति साम्पराये
मोघं वेत्ता कुरुते तन्तुमेतमिति ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

जनयितुः पुत्रः क्षत्रिणो वेति विवादे पराजितस्य क्षेत्रिणो वचनम् एतावन्तं कालमहं जनको मन्यमानः इदानीमेव स्त्रीणामीर्ष्यामि परपुरुषसंसर्गं न सहे । कदा इदानीम् ? यदा यमस्य सादने पितृलोके जनयितुः पुत्रो भवति पुत्रकृत्यं परलोकगतस्य जनयितुरेव न क्षेत्रिण इत्यब्रुवन् धर्मज्ञाः । उक्त एवार्थः किञ्चिद्विशेषेणोच्यते-रेतोधा बीजप्रदः पुत्रं नयति पुत्रदत्तं पिण्डादिकमात्मानं नयति प्रापयति । परेत्य मृत्वा । यमसादने यमलोके । तस्मात्कारणात् भार्यां रक्षन्ति पररेतसो बिभ्यन्तः । बिभ्यतः छान्दसो नुम् । अतो यूयमप्यप्रमत्ता अवहिता भूत्वा एतं तन्तुं प्रजासन्तानं रक्षथ । लोडर्थे लट् । रक्षतेत्यर्थः । किमर्थम् ? वः युष्माकम् क्षेत्रे परबीजानि पररेतांति मा वाप्सुः । व्यत्ययेनाऽयं कर्मणि कर्तृप्रत्ययः। मा वाप्सत उप्तानि मा भूवन् । मोप्येरन् ।

कथमिति ? (अपर आह-परशब्दाज्जसो लुक् । परे पुरुषाः वः क्षेत्रे बीजानि मा वाप्सुरिति ।) यस्मात् साम्पराये परलोके जनयितुरेव पुत्रफलं भवति वेत्ता 10परिणेता क्षेत्री तु एतं तन्तुं मोघं निष्प्रयोजनं कुरुते आत्मसात्करोति। इतिशब्दो गाथासमाप्तौ । एतच्च क्षेत्रिणोऽनुज्ञातमन्तरेण पुत्रोत्पादनविषयम् । यदा तु क्षेत्री वन्ध्यो रुग्णो वा प्रार्थयते मम क्षेत्रे पुत्रमुत्पादयति, यदा वा सन्तानक्षये विधवां नियुञ्जते यथा विचित्रवीर्यस्य क्षेत्रे सत्यवतीं व्यासेन । तदुत्पन्नः पुत्र उभयोरपि पुत्रो भवति— बीजिनः क्षेत्रिणश्च । द्व्यामुष्यायणश्च स भवति । तथाचाचार्य एवाह — 11 'यदि द्विपिता स्यादेकैकस्मिन् पिण्डे द्वौ द्वावुपलक्षये'दिति । याज्ञवल्क्योऽप्याह—
12 'अपुत्रेण परक्षेत्रे नियोगोत्पादितः सुतः ।
उभयोरप्यसौ रिक्थो पिण्डदाता च धर्मतः ॥ इति ।
नारदोऽपि—
13द्व्यामुष्यायणको दद्याद्वाभ्यां पिण्डोदके पृथक् ।
रिक्थादर्धं समादद्याद्बीजक्षेत्रवतोस्तथा ॥' इति ॥६॥

- () एतत्कुण्डान्तर्गतोभागः ख च पुस्तकयोरेवास्ति । तत्र 'कथमिति' इति नास्ति ।

07 दृष्टो धर्मव्यतिक्रमस् साहसम्

दृष्टो धर्मव्यतिक्रमः साहसं च पूर्वेषाम् ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. Transgression of the law and violence are found amongst the ancient (sages).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दृष्टो धर्मव्यतिक्रमस् साहसं च पूर्वेषाम् ॥ ७ ॥

प्रस्तावः⑥

यदि पूर्ववत्यादिषु मैथुने दोषः कथं तर्हि 14 उचथ्यभारद्वाजौ व्यत्यस्य भार्ये जग्मतुः15 वसिष्ठश्चण्डालीमक्षमालाम् । 16प्रजापतिश्च स्वां दुहितरम् । तत्राऽऽह—

टिप्पनी⑥

सत्यं दृष्टोऽयमाचारः पूर्वेषाम् । स तु धर्मव्यतिक्रमः, न धर्मः, गृह्यमाणकारणत्वात् । न चैतावदेव, साहसं च पूर्वेषां दृष्टम् । यथा17 जामदग्न्येन रामेण पितृवचनादविचोरण मातुश्शिरश्छिन्नम् ॥७॥

08 तेषान् तेजोविशेषेण प्रत्यवायो

तेषां तेजोविशेषेण प्रत्यवायो न विद्यते ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. They committed no sin on account of the greatness of their lustre.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

18तेषां तेजोविशेषेण प्रत्यवायो न विद्यते ॥ ८॥

प्रस्तावः⑥

किमिदानी तेषामपि दोषः ? नेत्याह—

टिप्पनी⑥

तादृश हि तेषां तेजः यदेवंविधैरपि पाप्मभिर्न प्रत्यवयन्ति । 19 'तद्यथैषीकातूलमग्नौ प्रोतं प्रदूयेत एवं हाऽस्य पाप्मानः प्रदूयन्ते इति 20श्रुतेः ॥ ८॥

09 तदन्वीक्ष्य प्रयुञ्जानः सीदत्यवरः

तदन्वीक्ष्य प्रयुञ्जानः सीदत्यवरः ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. A man of later times who seeing their (deeds) follows them, falls.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तदन्वीक्ष्य प्रयुञ्जानस्सीदत्यवरः ॥ ९॥

प्रस्तावः⑥

न चैतावता ऽर्वाचीनानामपि तथा प्रसङ्ग इत्याह—

टिप्पनी⑥

तदिति21 'नपुंसकमनपुंसकेने'त्येकशेष एकवद्भावश्च । तं व्यतिक्रमं तच्च साहसमन्वीक्ष्य दृष्ट्वा स्वयमपि तथा प्रयुञ्जानोऽवर इदानीन्तनः सीदति प्रत्यवैति । न ह्यग्निः सर्वं दहतीत्यस्माकमपि तथा शक्तिरिति ॥९॥

10 दानङ् क्रयधर्मश्चापत्यस्य न

दानं क्रयधर्मश्चापत्यस्य न विद्यते १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

11. The gift (or acceptance of a child) and the right to sell (or buy) a child are not recognised. 22

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दानं क्रयधर्मश्चाऽपत्यस्य न विद्यते ॥ १० ॥

प्रस्तावः⑥

पुत्रप्रसङ्गेनाऽऽह—

टिप्पनी⑥

दानग्रहणेन विक्रयोऽपि गृह्यते, त्यागसामान्यात् । क्रयधर्म इति च प्रतिग्रहस्याऽपि ग्रहणम् । धर्मग्रहणात् स्वीकारसामान्याच्च । अपत्यस्य दानप्रतिग्रहक्रयविक्रया न कर्तव्याः । द्वादशविधेषु पुत्रेषु दत्तक्रीतयोरपि पुत्रयोर्मन्वादिभिः पठितवान्नाऽयं समान्येन प्रतिषेधः । किं तर्हि ? ज्येष्ठपुत्रविषयः, एकपुत्रविषयः, स्त्रीविषयो वा । तथा च वसिष्ठः —
23न ज्येष्ठं पुत्रं दद्यात्प्रतिगृह्णीयाद्वा । न त्वेकं पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वा स हि सन्तानाय पूर्वेषाम् । न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वा अन्यत्राऽनुशानाद्भर्तुः । पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् बन्धूनाहूय राज्ञे निवेद्य निवेशनस्य मध्ये अग्निमुपसमाधाय सम्परिस्तीर्य व्याहृतीभिर्हुत्वाऽदूर बान्धवं सन्निकृष्टमेव प्रतिगृह्णीया'दिति । विश्वजिति च सर्वस्वदाने गवादिवदपत्यं न देयमिति । विक्रयस्तु सर्वत्र निषिद्धः । तत्र उपपात

केषु याज्ञवल्क्य आह —
24 'नास्तिक्यं व्रतलोपश्च सुतानां चैव विक्रयः ।' इति ।
बह्वृचब्राह्मणेऽपि शुनश्शेपाख्याने दृश्यते-25 स ज्येष्ठपुत्रं निगृह्णान उवाचे'त्यादि । पुत्रप्रकरणे अपत्यशब्दोपादानमपि ज्येष्ठपुत्रविषयत्वस्य लिङ्गम् । न पतन्त्यनेनेत्यपत्यमिति ।
26ऋणमस्मिन् सन्नयत्यनृतत्वं च गच्छति ।
पिता पुत्रस्य जातत्य पश्येच्चेज्जीवतो मुखम् ॥" इति ॥१०॥

12 विवाहे दुहितृमते दानङ्

विवाहे दुहितृमते दानं काम्यं धर्मार्थं श्रूयते तस्माद्दुहितृमतेऽधिरथं शतं देयं तन्मिथुया कुर्यादिति ११-१

तस्यां क्रयशब्दः संस्तुतिमात्रम् । धर्माद्धि संबन्धः ११-२

▼

⑤

>

▼ Bühler

12. It is declared in the Veda that at the time of marriage a gift, for (the fulfilment of) his wishes, should be made (by the bridegroom) to the father 27 of the bride, in order to fulfil the law. 'Therefore he should give a hundred (cows) besides a chariot; that (gift) he should make bootless (by returning it to the giver).' In reference to those (marriage-rites), the word 'sale' (which occurs in some Smṛtis is only used as) a metaphorical expression; for the union (of the husband and wife) is effected through the law.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विवाहे दुहितृमते दानं काम्यं धर्मार्थं श्रूयते तस्माद्दुहितृमतेऽतिरथं शतं देयं तन्मिथुयाकुर्यादिति तस्यां क्रयशब्दस्संस्तुतिमात्रं धर्माद्धि सम्बन्धः ॥१२॥

टिप्पनी⑥

आर्षे विवाहे दुहितृमते दानं क्वचिद्वेदे श्रूयते । तस्माद्दुहितृमते रथेनाधिकं गवां शत देयम् । तच्च दुहितृमान् मिथुया कुर्यात् । मिथ्या कुर्यात् । 28मा देवानां मिथुयाऽकर्भागधेय"मिति दृश्यते । मिथुया कुर्यादिति कोऽर्थः वरायैव पुनर्दद्यादिति । तद्दानं काम्यं कामनिमित्तम् । 'यथा युक्तो विवाहस्तथायुक्ता प्रजा भवतीति (२.१०.४) ऋषितुल्याः पुत्राः यथा स्युरिति ततश्च धमार्थं न प्रजार्थम्, विक्रयार्थम् । यस्तु तस्यां विवाहक्रियायां क्रयशब्दः क्वचित् स्मृतौ दृश्यते, स संस्तुतिमात्रम् द्रव्यप्रसादसाम्यातू । न मुख्यक्रयत्वप्रतिपादनार्थम् । कुतः ? हि यस्मात् धर्मादेव हेतोः सम्बन्धो दम्पत्योरिति । आर्षे दुहितृमते मिथुनौ गावौ देयावित्यत्राप्येष एव न्यायः ।
अत्र मनुः — 29 यासां नाऽऽददत्ते शुल्कं ज्ञातयो न स विक्रयः ।
अर्हणं तत्कुमारीणामानृशंस्यं च केवलम् ॥' इति ।
एतच्च सर्वं 'दानं क्रयधर्मश्चाऽपत्यस्य न विद्यत' इत्यस्य व्यभिचारनिवृत्यर्थं कर्तव्यमित्युक्तम् ॥ ११॥

12 एकधनेन ज्येष्ठं तोषयित्वा

एकधनेन ज्येष्ठं तोषयित्वा १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. After having gladdened the eldest son by some (choice portion of his) wealth,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एकधनेन ज्येष्ठं तोषयित्वा ॥ १२ ॥

प्रस्तावः⑥

अथ दायविभागः —

टिप्पनी⑥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रे द्वितीयप्रश्न त्रयोदशी कण्डिका ॥ १३ ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
↩
2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
3. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
4. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
5. आप० ध० १. ३१. १.↩
6. यत्किञ्चनदिड्मुखेन इति क० पु० ।↩
7. Manu II, 35.↩
8. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
9. आप० ध० १.३०.८.↩
10. आप० ध० १. ३१. १.↩
11. यत्किञ्चनदिड्मुखेन इति क० पु० ।↩
12. प्रतिषेध परिसंख्येत्यनर्थान्तरम् । परिसङ्ख्या वर्जनबुद्धिः । तद्विषयको विधिः परिसंख्याविधिः । स परिसंख्यापदेनाऽप्यभिधीयते इति मीमांसकाना मतम् । अत एव

    > विधिरत्यन्तमप्राप्ते नियम पाक्षिके सति ।
    > तत्र चान्यत्र च प्राप्ते परिसंख्येति गीयते ॥

इत्येव वार्तिककारैरुक्तम् । ग्रन्थकारस्त्वयं परिसंख्या नियमविधावेवान्तर्भावयति ॥↩

13. आप० ध० १ ३१. ६.↩
14. मनु० रमृ० २.६↩
15. गौ० ध० १. १, २↩
16. 'मन्वादिभिरुपलभ्यते इत्यनुमीयते' इति ख. पु.↩
17. आप० ध० १ १२.१०.↩
18. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
19. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
20. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
21. आप० ध० १.३०.८.↩
22. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
23. मनु० रमृ० २.६↩
24. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
25. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
26. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
27. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This

repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

28. आप० ध० १.३०.८.↩

29. मनु० स्मृ० २.६↩

१४①

01 जीवन्पुत्रेभ्यो दायं विभजेत्समङ्④

जीवन्पुत्रेभ्यो दायं विभजेत्समं क्लीबमुन्मत्तं पतितं च परिहाप्य १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. He should, during his lifetime, divide his wealth equally amongst his sons, excepting the eunuch, the mad man, and the outcast. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

जीवन् पुत्रेभ्यो दायं विभजेत् समं क्लीबमुन्मत्तं पतितं च परिहाय ॥१॥

प्रस्तावः⑥

अथ दायविभागः —

टिप्पनी⑥

एकेन प्रधानेन केनचिद्धनेन गवादिना ज्येष्ठं पुत्रं तोषयित्वा तृप्तं कृत्वा जीवन्नेव पुत्रेभ्यो दायं विभजेत् । सममात्मना परस्परं च तेषाम् । सामान्याभिधानात् क्रमागतं स्वयमार्जिनं च क्लीबादीन् वर्जयित्वा । क्लीबादिग्रहणं जात्यन्धादीनामप्युपलक्षणम् । यथाह मनुः —
2 'अनंशी क्लीबपतितौ जात्यन्धबधिरौ तथा ।
उन्मत्तजडमूकाश्च ये च केचिनिरिन्द्रियाः ॥ इति ।
अन्धादीनां पुत्रसद्भावे तेऽप्यंशहराः। एवमुन्मत्तपतितौ3 निवृत्ते निमित्ते क्लीबादयस्तु न भर्तव्याः । अत्र विभागकालः स्मृत्यन्तरवशाद्ग्राह्यः । तत्र नारदः —
4 मातुर्निवृत्ते रजसि प्रत्तासु भगिनीषु च ।
निवृत्ते चापि मरणात्पितर्युपरतस्पृहे ॥' इति ।
यदा पुत्राणां पृथक्पृथक् धर्मानुष्ठाने शक्तिश्रद्धे भवतः सोऽपि कालः । 'तस्माद्धर्म्या पृथविक्रये'ति5 दर्शनादिति । 'जीवन्नितिवचनं जीवन्नेवाऽवश्यं पुत्रान् विभजेत् एष धर्म इति प्रतिपादनाय । अन्यथा तदनर्थकम् । अजीवतोऽप्रसङ्गात् । स्मृत्यन्तरेषु स्वयमार्जित पितुरिच्छया विषमविभागो दर्शितः । न स धर्म्य इत्याचार्यस्य पक्षः । भार्याया अप्यंशो न दर्शितः । आत्मनः एवांशस्तस्या अपीति मन्यते । वक्ष्यति च 'जायापत्योर्न विभागो विद्यते' (२. १४.१६) इति । कोचित्तु पितुर्द्वावंशावित्याहुः । 'द्वावंशौ प्रतिपद्येत विभजनात्मनः पिते'ति दर्शनात् । अयमप्याचार्यस्य पक्षो न भवति । यथा पुत्राणामेकैक एवांशस्सभार्याणां तथा पितुरपीति । यद्वा पुत्राणामेवांशसाम्यं आत्मनस्त्वाधिक्येऽपि न दोषः। तत्र हारीतः —
'पिता ह्याग्रयणः पुत्रा इतरे ग्रहाः यद्याग्रयणः स्कन्देदुपदस्येद्वा इतरेभ्यो गृह्णीयादिति विभागादूर्ध्वं पित्रोर्जीवनाभावे पुत्रभागेभ्यो ग्राह्यमित्युक्तं भवति । इति जीवद्विभागः ॥१॥
02 पुत्राभावे यः प्रत्यासन्नः

पुत्राभावे यः प्रत्यासन्नः सपिण्डः २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. On failure of sons the nearest Sapiṇḍa (takes the inheritance). 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पुत्राभावे यः प्रत्यासन्नः सपिण्डः ॥२॥

प्रस्तावः⑥

अथ मृते कुटुम्बिनि तद्धनस्य गतिमाह—

टिप्पनी⑥

'पुत्राभावे' इति वचनात् सत्सु पुत्रेषु त एव गृह्णीयुरविशेषात्समम् । तत्र नारदीये विशेषः —
7 यच्छिष्टं प्रीतिदायेभ्यो दत्वार्णं पैतृकं च यत् ।
भ्रातृभिस्तद्विभक्तव्यमृणी स्यादन्यथा पिता ॥ इति ॥

कात्यायनस्तु—
8भ्रात्रा पितृव्यमातृभ्यां कुटुम्बार्थमृणं कृतम् ।
विभागकाले देयं तद्रिक्थिभिस्सर्वमेव तु ॥ इति ।

अत्र याज्ञवल्क्यः —
9 'पितुरुर्ध्वं विभजतां माताऽप्यंशं समं हरे'दिति ।
तदत्र नोक्तं पुत्रैरेव सह वृत्तिरस्या इति ।

तथा च मनुः —
10 पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने ।
पुत्रस्तु स्थविरीभावे न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥ इति ।
एवं मातुरप्यभावे तद्धनं भर्तृकुललब्धं स्वयमार्जितं च तत्पुत्रा अप्रत्ताश्च दुहितरस्समं गृह्णीयुः ।
11स्त्रीधनं तदपत्यानां दुहिता च तदंशिनी ।
अप्रत्ता चेत्समूढा तु लभते 12मानमात्रकम् ॥ इति बृहस्पतिः । पितृकुललब्धं चाऽप्रत्ता एव दुहितरः ।

13"मातुस्तु यौतकं यत्स्यात् कुमारीभाग एव सः ।" इति मनुः।

अथाऽप्रत्ता दुहितरः पुत्राश्च जननी तदा ।
14जनन्या संस्थितायां तु समं सर्वे सहोदराः ॥
भजेरन्मातृकं रिक्थं भगिन्यश्च सनाभयः । इति मानवमेव ।

अत्र व्यासः —
15 असंस्कृतास्तु ये तत्र पैतृकादेव ते धनात् ।
संस्कार्या भ्रातृभिर्ज्येष्ठैः कन्यकाश्च यथाविधि ॥' इति ।
अत्र क्रमविवाहे बृहस्पतिः —
16 ब्रह्मक्षत्रियविट्छूद्रा विप्रोत्पन्नास्त्वनुक्रमात् ।
चतुस्त्रिद्व्येकभागेन भजेयुस्ते यथाक्रमम् ॥
क्षत्रजास्त्रिद्व्येकभागा विड्जौ तु द्व्येकभागिनौ ।' इति ।
मानवे च स्पष्टमुक्तम् —
17 सर्वं वा रिक्थजातं तद्दशधा प्रविभज्य तु ।
धर्म्यं विभागं कुर्वीत विधिनाऽनेन धर्मवित ॥
चतुरोऽशान् हरेद्विप्रः त्रीनंशान् क्षत्रियासुतः ।
वैश्यापुत्रो हरेद्द्व्यंशमशं शूद्रासुतो हरेत् ॥ इति ।
यस्य तु ब्राह्मणी वन्ध्या मृता वा तत्र क्षत्रियादिसुतास्त्रिद्व्येकभागाः । यस्य त्वेकस्यामेव पुत्रस्सा सर्वं हरेत् शूद्रापुत्रवर्जम् ।

यथाह देवलः —
18आनुलोम्येकपुत्रस्तु पितुस्सर्वस्वभाग्भवेत् ।
निषाद एकपुत्रस्तु विप्रत्वस्य तृतीयभाक् ॥
द्वौ सपिण्डस्सकुल्यो वा स्वधादाता तु तं हरेत्' इति ।
निषादः पारशवः । क्षेत्रविषये बृहस्पतिः —
19न प्रतिग्रहभूर्देया क्षत्रियादिसुताय वै ।
यद्यप्यस्य पिता दद्यान्मृते विप्रासुतो हरेत् ॥
शुद्र्यां द्विजातिभिर्जातो न भूमेर्भागमर्हति ।
सजातावाप्नुयात्सर्वमिति धर्मो व्यवस्थितः ॥ इति ॥

याज्ञवल्क्य —
20जातो हि दास्यां शूद्रेण कामतोऽशहरो भवेत् ।
मृते पितरि कुर्युस्तं भ्रातरस्त्वर्धभागिनम् ॥' इति ।

भार्याविषये विष्णुः —
21मातरः पुत्रभागानुसारतो भागहारिण्य' इति । अत्र, औरसः पुत्रिकाबीजक्षेत्रजौ पुत्रिकासुतः ।

पुनर्भवश्च कानीनस्सहोढो गूढसम्भवः ।
दत्तः क्रीतस्स्वयंदत्तः कृत्रिमश्चाऽपविद्धकः ।
यत्र क्वचोत्पादितश्च पुत्राख्या दश पञ्च च ।
अनेनैव क्रमेणैषां पूर्वाभावे परः परः ।
पिण्डदोंऽशहरश्चेति प्रायेण स्मृतिषु स्थिताः ।
औरसो धर्मपत्नीजः । 'सवर्णापूर्वशास्त्रविहिताया'मिति पूर्वमुक्तः । गौतमः22-
"पितोत्सृजेत्पुत्रिकामनपत्योऽग्नि प्रजापतिं चेष्ट्वास्मदर्थमपत्यमति संवाद्ये'ति ।

बृहस्पतिः—
'एक एवौरसः पित्र्ये धने स्वामी प्रकीर्तितः ।
तत्तुल्या पुत्रिका प्रोक्ता भर्तव्यास्त्वपरे स्मृताः॥' इति ।
मनुः —
23पुत्रिकायां कृतायां तु यदि पुत्रोऽनुजायते ।
समस्तत्र विभागः स्यात् ज्येष्ठाता नास्ति हि स्त्रियाः ॥ इति ।

याज्ञवल्क्यः —
24अपुत्रेण परक्षेत्रे नियोगोत्पादितः सुतः ।
उभयोरप्यसौ रिक्थी पिण्डदाता च धर्मतः ॥ इति ।
अयमेक एवोत्पादयितुर्बीजजः, क्षेत्रजस्तु क्षेत्रिणः ।

बृहस्पतिः —
'पुत्रोऽथ पुत्रिकापुत्रस्स्वर्गप्राप्तिकरावुभौ ।
रिक्थे पिण्डाम्बुदाने च समौ सम्परिकीर्तितौ ॥ इति ।

काश्यपः —
'सप्त पौनर्भवाः कन्याः वर्जनीयाः कुलाधमाः ।
वाचा दत्ता मनोदत्ता कृतकौतुकमङ्गला ॥
उदकं स्पर्शिता या च या च पाणिगृहीतिका ।
अग्निं परिगता या च पुनर्भूप्रसवा च या'॥

कात्यायनः—
क्लीबं विहाय पतितं या पुनर्लभते पतिम् ।
तस्यां पौनर्भवो जातः व्यक्तमुत्पादकस्य सः ॥ इति ।

मनुः —
25पितृवेश्मनि कन्या तु यं पुत्रं जनयेद्रहः ।
तं कानीनं वदेनाम्ना वोढुः कन्यासमुद्भवः ॥ इति ।

नारदः —
26कानीनश्च सहोढश्च गूढायां यश्च जायते ।
तेषां वोढा पिता ज्ञेयस्ते च भागहराः पितुः।' इति ॥

वसिष्ठः—
27'अप्रत्ता दुहिता यस्य पुत्रं विन्देत तुल्यतः ।
पौत्री मातामहस्तेन दद्यात्पिण्डं हरेद्धनम् ॥' इति ।
अनूढायामेव मृतायां मातरि मातामहस्य पुत्रः । अन्यथा वोढुः । मनुः —
28 'या गर्भिणी संस्क्रियते ज्ञाताऽज्ञातापि वा सती ।
वोढुस्स गर्भो भवति सहोढ इति चोच्यते ।

29उत्पद्यते गृहे यस्य न च ज्ञायेत कस्यचित् ।
स गृहे गूढ उत्पन्नस्तस्य स्याद्यस्य तल्पजः ॥
दत्तः पूर्वमेवोक्तः । पैठीनसिः—'अथ दत्तक्रीतकृत्रिमपुत्रिकापुत्राः परपरिग्रहेण द्व्यार्ष्येण जाताः ते असंगतकुलीनाद्व्यामुष्यायणा भवन्तीति ।

मनुः —
30भ्रातृणामेकजातानामेकश्चेत्पुत्रवान् भवेत् ।
सर्वे ते तेन पुत्रेण पुत्रिणो मनुरब्रवीत् ॥
31क्रीणीयाद्यस्त्वपत्यार्थे मातापित्रोर्यमन्तिकात् ।
स क्रीतकस्सुतस्तस्य सदृशोऽसदृशोऽपि वा ।
32मातापितृविहीनो यस्त्यक्तो वा स्यादकारणात् ।
आत्मानं स्पर्शयेद्यस्य स्वयं दत्तस्तु स स्मृतः ॥ इति ।
33सदृशं तु प्रकुर्यातां गुणदोषविवर्जितम् ।
पुत्रं पुत्रगुणैर्युक्तं स विज्ञेयस्तु कृत्रिमः ॥
34मातापितृभ्यामुत्सृष्ट तयोरन्यतरेण वा ।
यं पुत्रं प्रतिगृह्णीयादपविद्धः स उच्यते ॥ इति ।
सर्व एते समानजातीयाः,
35सजातीयेष्वयं प्रोक्तस्तनयेषु मया विधिः ॥ इति याज्ञवल्क्यवचनात् ।

विष्णुः—
'यत्र क्वचनोत्पादितस्तु द्वादशः, इति ।
याज्ञवल्क्यः —
36 'पिण्डदोंऽशहरश्चैषां पूर्वाभावे परः परः ।' इति 37

मनुः—
श्रेयसः श्रेयसोऽभावे पापीयान् रिक्थमर्हति ।' इति ।
'क्रमादेते प्रवर्तन्ते मृते पितरि तद्धने ।
नारदः—
38'ज्यायसो ज्यायसोऽभावे जघन्यस्तदवाप्नुयात् ॥' इति ।

देवलः —
'सर्वे ह्यनौरसस्यैते पुत्रा दायहराः स्मृताः ।
औरसे पुनरुत्पन्ने तेषु ज्येष्ठ्यं न तिष्ठति ॥
तेषां सवर्णा ये पुत्रास्ते तृतीयांशभागिनः ।
शेषास्तमुपजीवेयुर्ग्रासाच्छादनसम्भृताः ॥' इति ।

मनुः —
39 षष्ठं तु क्षेत्रजस्यांशं प्रदद्यात्पैतृकाद्धनात् ।
औरसो विभजन् दायं पित्र्यं पञ्चममेव वा ॥ इति ।

बृहस्पतिः —
"क्षेत्रजाद्यास्सुतास्त्वन्ये पञ्चषट्सप्तभागिन;' इति ।

हारीतः—
'विभाजिष्यमाण एकविंशं कानीनाय दद्याद्विंशं पौनर्भवायैकोनविंशं द्व्यामुष्यायणायाऽष्टादशं क्षेत्रजाय सप्तदशं पुत्रिकापुत्रायेतरानौरसाये'ति ।

वसिष्ठः—
40 'पुत्रं प्रतिग्रहीष्य'न्निति प्रक्रम्य 'तस्मिश्चेत्प्रतिगृहीते औरस उत्पद्यते चतुर्थभागभागि'ति ॥

एवमेतेषु शास्त्रेषु विद्यमानेषु यदाचार्येण पूर्वमुक्तं 'तेषां कर्मभिस्सम्बन्धो दायेनाऽव्यतिक्रमश्चोभयो'रिति तद्धर्मपत्नीजे पुत्रे सति क्षेत्रप्रजादीनां समांशहरत्वप्रतिषेधपरं वेदितव्यम् ।

अथाविभाज्यम् ।
अत्र मनुः —
41 अनुपघ्नन् पितृद्रव्यं श्रमेण यदुपार्जयेत् ।
स्वयमर्हति लब्धं तन्नाऽकामो दातुमर्हतीति ।

कात्यायनः —
'नाऽविद्यानां तु वैद्येन देय विद्याधनात् क्वचित् ।
समं विद्याधनानां तु देयं वैद्येन तद्धनम् ॥
परभक्तप्रदानेन प्राप्तविद्यो यदाऽन्यतः।
तया प्राप्ते तु विधिना विद्याप्राप्तं तदुच्यते ॥ इति ।

व्यासः —
पितामहपितृभ्यां च दत्तं मात्रा च यद्भवेत् ।
तस्य तन्नाऽपहर्तव्यं42 शौर्यहार्यं तथैव च ॥ इति ।

याज्ञवल्क्यः —
43"क्रमादभ्यागतं द्रव्यं हृतमप्युद्धरेत् यः ।
दायादेभ्यो न तद्दद्याद्विद्यया लब्धमेव च ॥
पत्यौ जीवति यस्त्रीभिरलङ्कारो धृतो भवेत् ।
न तं भजेरन् दायादा भजमानाः पतन्ति ते ॥'

व्यासः —
'साधारणं समाश्रित्य यत्किश्चिद्वाहनायुधम् ।
शौर्यादिनाप्नोति धनं भ्रातरस्तत्र भागिनः ॥
तस्य भागद्वयं देयं शेषास्तु समभागिनः ॥"

इति पुत्रदायविभागः । तदभावे तु मृतस्य यः प्रत्यासन्नः सपिण्डः, स किम्? 'दायं हरेते'ति (१४. ५.) वक्ष्यमाणेन सम्बन्धः ।

44 लेपभाजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिण्डभागिनः ।
सप्तमः पिण्डदातैषा सापिण्ड्यं साप्तपूरुषम् ॥
इति सपिण्डलक्षणम् । तेषु यो यः प्रत्यासन्नस्स स गृह्णीयादिति । भार्यां तु
रिक्थग्राहिणस्सपिण्डाद्या रक्षेयुः, न तु दायग्रहणमित्याचार्यस्य पक्षः । श्रूयते हि-45'तस्मात्
स्त्रियो निरिन्द्रिया अदायादीः' इति । मनुरपि —
46'अनिन्द्रिया अदायादाः स्त्रियो नित्यमिति श्रुति'रिति ।
अत्र सपिण्डाद्यभावे बृहस्पतिः—
'अन्यत्र ब्राह्मणात्किं तु राजा धर्मपरायणः ।

तत्स्त्रीणां जीवनं दद्यादेष दायविधिस्स्मृतः ॥
अन्नार्थं तण्डुलप्रस्थमपराह्णे तु सेन्धनम् ।
वसनं त्रिपणक्रीतं देवमेकं त्रिमासतः ॥
एतावदेव साध्वीनां चोदितं विधवाधनम् ।
वसनस्याऽशनस्यैव तथैव रजकस्य च ॥
धनं व्यपोह्य तच्छिष्टं दायादानां प्रकल्पयेत् ।
47धूमावसानिकं ग्राह्यं समायां स्नानतः पुरा ।
वसनाशनवासांसि विगणय्य धवे मृते ॥ इति ।

व्यासः—
'द्विषाहस्रः परो दायः स्त्रियै देयो धनस्य तु ।
यच्च भर्त्रा धनं दत्तं सा यथाकाममाप्नुयात् ॥' इति ।
पणानां द्वे सहस्रे परिमाणमस्य द्विषाहस्रः । एष परो दायः स्त्रिया नाधिक इति । एतत् प्रभूते धने, ज्ञातयश्च न रक्षेयुरिति शङ्कायाम् । एवं 48 'पत्नी दुहितरश्चे'त्यादीनि यानि पत्न्या दायप्राप्तिपराणि तान्येवमेव द्रष्टव्यानि । गौतमस्तु पुत्राभावे पत्न्यास्सपिण्डादिभिस्समांशमाह—
49 'पिण्डगोत्रर्षिसम्बन्धा रिक्थं भजेरन् । स्त्री चाऽनपत्यस्ये'ति। अस्यार्थः-अनपत्यस्य रिक्थं पिण्डसम्बन्धात्सपिण्डाः प्रत्यासतिक्रमेण भजेरन् । तदभावे गोत्रसम्बन्धास्सगोत्राः । तदभावे ऋषिसम्बन्धास्समानप्रवराः स्त्री च पत्नी च । (अत्र स्त्रियाः पृथङ्निर्देशात् च शब्दाच्च यदा सपिण्डा भजेरन् तदा स्त्री सह तैरेकमंशं गृह्णीयात् । ततश्च 'पितुरूर्ध्वं विभजतां माताप्यंशं समं हरे"दिति सपिण्डादिभिस्सहग्रहणमुक्तमिति । वयमप्येतमेव पक्षं रोचयामहे)। अत्र पितरि भ्रातरि सोदर्ये च जीवति सोदर्यो भ्राता गृह्णीयादित्येके मन्यन्ते ।
तथा च शङ्ख—
'अपुत्रस्य स्वर्यातस्य द्रव्यं भ्रातृगामि, तदभावे मातापितरौ लभेयातां, पत्नी वा ज्येष्ठे'ति । देवलः —
'ततो दायमपुत्रस्य विभजरेन् सहोदराः।
कुल्या दुहितरो वापि ध्रियमाणः पिताऽपि च ॥
सवर्णा भ्रातरो माता भार्या चेति यथाक्रमम् ॥ इति ।

- ( ) कुण्डलान्तर्गतो भागः च पुस्तकेऽधिकपाठतया परिगणितः ।

याज्ञवल्क्यः —
50संसृष्टिनस्तु ससृष्टी सोदर्यस्य तु सोदरः।
दद्याच्चाऽपहरेच्चांश जातस्य च मृतस्य च ॥
अन्योदर्यस्तु संसृष्टी नाऽन्योदर्यधनं हरेत् ।
असंसृष्ट्यापि चाऽऽदद्यात्सोदर्यो नान्यमातृजः ॥ इति ।

अत्र सोदर्य इति विशेषवचनात् 'पत्नी दुहितरश्चे'त्यत्र भ्रातृग्रहणं भिन्नोदरविषयमिति । प्रत्यासत्त्यतिशयात51 पितैवेत्याचार्यस्य पक्षः। तदभावे सोदर्यः, तदभावे तत्पुत्रः, तदभावे भिन्नोदराः, तदभावे पितृव्य इत्यादि द्रष्टव्यम् । मात्रादयोऽपि स्त्रियो जीवनमात्रं लभेरन्निति ॥२॥

03 तदभाव आचार्य आचार्याभावेऽन्तेवासी

तदभाव आचार्य आचार्याभावेऽन्तेवासी हृत्वा तदर्थेषु धर्मकृत्येषु वोपयोजयेत् ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. On failure of them the spiritual teacher (inherits); on failure of the spiritual teacher a pupil shall take (the deceased's wealth), and use it for religious works for the (deceased's) benefit, or (he himself may enjoy it);

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तदभाव आचार्य आचार्याभावेऽन्तेवासी हृत्वा तदर्थेषु धर्मकृत्येषु वोपयोजयेत् ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

सपिण्डाभावे आचार्यो दायं हरेत् । तस्याऽप्यभावे अन्तेवासी हरेत् । हृत्वा तदर्थेषु धर्मकृत्येषु तडागखननादिषूपयोजयेत् । वाशब्दात् स्वयं वा उपयुञ्जीत ॥३॥

04 दुहिता वा

दुहिता वा ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. Or the daughter (may take the inheritance). 52

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दुहिता वा ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

दुहिता वा दायं हरेत् । पुत्राभाव इत्येके । अनन्तरोक्ते विषय इत्यन्ये ॥४॥

05 सर्वाभावे राजा दायं

सर्वाभावे राजा दायं हरेत ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. On failure of all (relations) let the king take the inheritance. 53

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वाभावे राजा दायं हरेत् ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

सर्वग्रहणात् बन्धूनां सगोत्राणां चाऽप्यभावे ॥५॥

06 ज्येष्ठो दायाद इत्येके

ज्येष्ठो दायाद इत्येके ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. Some declare, that the eldest son alone inherits. 54

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ज्येष्ठो दायाद इत्येके ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

एके मन्यन्ते ज्येष्ठ एव पुत्रो दायहरः । इतरे तु तमुपजीवेयुः । सोऽपि तान् पितेव परिपालयेदिति । तथा च गौतमः 55 'सर्वं वा पूर्वजस्येतरान् बिभृयात्पितृवदिति ॥ ६ ॥

07 देशविशेषे सुवर्णम्कृष्णा गावः

देशविशेषे सुवर्णङ्कृष्णा गावः कृष्णं भौमं ज्येष्ठस्य ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. In some countries gold, (or) black cattle, (or) black produce of the earth is the share of the eldest. 56

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

देशविशेषे सुवर्णं कृष्णा गावः कृष्णं भौमं ज्येष्ठस्य ॥७॥

टिप्पनी⑥

क्वचिद्देशे सुवर्णादि ज्येष्ठस्य भाग इत्याहुः । भूमौ जातं भौमं धान्यं कृष्णं माषादि कृष्णायसमित्यन्ये ॥ ७॥

08 रथः पितुः परीभाण्डञ्

रथः पितुः परीभाण्डं च गृहे ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. The chariot and the furniture in the house are the father's (share). 57

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

रथः पितुः परिभाण्डं च गृहे ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

रथः पितुरंशः 58 गृहे च यत् परिभाण्डमुपकरणं पीठादि तदपि ॥ ८॥

09 अलङ्कारो भार्याया ज्ञातिधनञ्

अलंकारो भार्याया ज्ञातिधनं चेत्येके ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. According to some, the share of the wife consists of her ornaments, and the wealth (which she may have received) from her relations. 59

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अलङ्कारो भार्यायाः ज्ञातिधनं चेत्येके ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

भार्यायास्तु धृतोऽलङ्कारोऽशः, ज्ञातिभ्यः पित्रादिभ्यश्च यल्लब्धं धनं तच्चेत्येवमेके मन्यते ॥९॥*

- ◦ एतचिह्नानन्तरं यतोऽपि नानुवादः। ॥ ११॥ स्पष्टम् ॥ इत्यधिकपाठो दृश्यते छ. पुस्तके।

10 तच्छास्त्रैर्विप्रतिषिद्धम्

तच्छास्त्रैर्विप्रतिषिद्धम् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. That (preference of the eldest son) is forbidden by the Śāstras. 60

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तच्छास्त्रैविप्रतिषिद्धम् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

ज्येष्ठो दायद इति यदुक्तं तच्छास्त्रैर्विरुद्धम् ॥ १० ॥

11 मनुः पुत्रेभ्यो दायं

मनुः पुत्रेभ्यो दायं व्यभजदित्यविशेषेण श्रूयते ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. For it is declared in the Veda, without (marking) a difference (in the treatment of the sons): Manu divided his wealth amongst his sons. 61

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

62"मनुः पुत्रेभ्यो दायं व्यभज"दित्यविशेषेण श्रूयते ॥११॥

प्रस्तावः⑥

येन विरुद्धं तदर्शयति—

टिप्पनी⑥

पुत्रेभ्य इति बहुवचननिर्देशादविशेषेण श्रवणम् ॥११॥

12 अथापि तस्माद्ज्येष्ठम् पुत्रन्

अथापि तस्माद्ज्येष्ठं पुत्रं धनेन निरवसाययन्तीत्येकवच्छ्रुयते १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. Now the Veda declares also in conformity with (the rule in favour of the eldest son) alone: They distinguish the eldest by (a larger share of) the heritage. 63

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथापि64 "तस्माज्ज्येष्ठं पुत्रं धनेन निरवसाययन्ती" त्येकवच्छ्रूयते ॥ १२ ॥

प्रस्तावः⑥

अत्र चोद्यम्—

टिप्पनी⑥

अथापि ननु चेत्यर्थः । ज्येष्ठं पुत्रं धनेन निरवसाययन्ति पृथक्कुर्वन्तीत्येकवदपि श्रूयते । यथा एक एव ज्येष्ठो दायादः तदनुरूपमपि श्रूयते इति ॥१२॥

13 अथापि नित्यानुवादमविधिमाहुर्न्यायविदो, यथा

(समाधानम् -) अथापि नित्यानुवादमविधिमाहुर्न्यायविदो, यथा - "तस्मादजावयः पशूनां सह चरन्तीति" "तस्मात्स्नातकस्य मुखं रेभायतीव" "तस्माद्बस्तश्च श्रोत्रियश्चस्त्रीकामतमाविति" १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. (But to this plea in favour of the eldest I answer): Now those who are acquainted with the interpretation of the law declare a statement of facts not to be a rule, as for instance (the following): 'Therefore amongst cattle, goats and sheep walk together;' (or the following), 'Therefore the face of a learned Brāhmaṇa (a Snātaka) is, as it were, resplendent;' (or), 'A Brāhmaṇa who has studied the Vedas (a Śrotriya) and a he-goat evince the strongest sexual desires.' 65

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथापि नित्यानुवादमविधिमाहुर्न्यायविदो यथा तस्मादजावयः पशूनां सहचरन्तीति । तस्मात् स्नातकस्य मुखं रेफायतीव । तस्मात् वस्तश्च श्रोत्रियश्च स्त्रीकामतमाविति ॥ १३ ॥

प्रस्तावः⑥

परिहरति —

टिप्पनी⑥

अथापीति परिहारोपक्रमे । पशूनां मध्ये अजाश्चाऽवयवश्च जातिभेदेऽपि सह चरन्ति । रेफा शोभा । इह तु तद्वत्यभेदोपचारः। ततः क्यप् । स्नातकस्य मुखं कुण्डलादिना शोभते । इवशब्दो वाक्यालङ्कारे । श्रोत्रियस्य स्त्रीकामतमत्वमाचार्यकुले चिरकालं ब्रह्मचारिवासात्। यथैतानि वाक्यानि दृष्टान्तमात्रमनुवदन्ति न किञ्चिाद्विदधति तस्मात् 'ज्येष्ठं पुत्र'मित्यादिकमप्यविधिरिति न्यायविद आहुः । न केवलमयमेवानुवादः, किं तर्हि 'मनुः पुत्रेभ्य' इत्ययमप्यनुवाद एव ॥ १३ ॥

14 सर्वे हि धर्मयुक्ता

सर्वे हि धर्मयुक्ता भागिनः १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. Therefore all (sons) who are virtuous inherit.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वे हि धर्मयुक्ता भागिनः ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

हिशब्दो हेतौ। यस्मादेवाऽनुवादौ न कस्यचिद्विधायकौ तस्माद्ये धर्मयुक्ताः पुत्रास्सर्व एते भागिनः ॥ १४ ॥

15 यस्त्वधर्मेण द्रव्याणि प्रतिपादयति

यस्त्वधर्मेण द्रव्याणि प्रतिपादयति *(=व्ययीकरोति)* ज्येष्ठोऽपि तमभागं कुर्वीत १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. But him who expends money unrighteously, he shall disinherit, though he be the eldest son. 66

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यस्त्वधर्मेण द्रव्याणि प्रतिपादयति ज्येष्ठोऽपि तमभागं कुर्वीत ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

यस्तु ज्येष्ठोऽप्यधर्मेण द्रव्याणि प्रतिपादयति विनियुङ्क्ते तमभागं कुर्वीत जीवद्विभागे पिता भागं न दद्यात् । ऊर्ध्वं विभागे67 पितुर्भ्रातरः । अपिशब्दात् किमुतान्यमिति ज्येष्ठस्य प्राधान्यं ख्याप्यते ॥ १५ ॥

16 जायापत्योर् न विभागो

जाया-पत्योर् न विभागो विद्यते १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. No division takes place between husband and wife. 68

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

जायापत्योर्न विभागो विद्यते ॥ १६ ॥

प्रस्तावः⑥

जीवन् पुत्रेभ्य69इत्यनेन दम्पत्योस्सहभावो दर्शितः । तत्र कारणमाह —

टिप्पनी⑥

स्पष्टम् ॥ १६॥

17 पाणिग्रहणाद्धि सहत्वङ् कर्मसु

पाणिग्रहणाद्धि सहत्वं कर्मसु १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. For, from the time of marriage, they are united in religious ceremonies,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पाणिग्रहणाद्धि सहत्वं कर्मसु ॥ १७॥

प्रस्तावः⑥

कस्मात् ?

टिप्पनी⑥

कर्मार्थं द्रव्यम् । जायायाश्च न पृथक्कर्मस्वधिकारः । किं तर्हि ? सहभावेन-'यस्त्वया धर्मश्च कर्तव्यस्सोऽनया सहति वचनात् । तत्र किं पृथक् द्रव्येणेति ॥ १७ ॥

18 तथा पुण्यफलेषु

तथा पुण्यफलेषु १८

▼

⑤

>

▼ Bühler

18. Likewise also as regards the rewards for works by which spiritual merit is acquired,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

70तथा पुण्यफलेषु ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

पुण्यफलेषु स्वर्गादिष्वपि तथा सहत्वमेव । 71'दिवि ज्योतिरजरमारभेता'मित्यादिभ्यो मन्त्रलिङ्गेभ्यः ॥ १८ ॥

19 द्रव्यपरिग्रहेषु च

द्रव्यपरिग्रहेषु च १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. And with respect to the acquisition of property.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

द्रव्यपरिग्रहेषु च ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

द्रव्यपरिग्रहेषु च द्रव्यार्जनेष्वपि तथा सहत्वमेव । तत्र पतिरार्जयति, जाया गृहे निर्वहतीति योगक्षेमावुभयायत्ताविति द्रव्यपरिग्रहेऽपि सहत्वम् ॥ १९ ॥

20 न हि भर्तुर्विप्रवासे

न हि भर्तुर्विप्रवासे नैमित्तिके दाने स्तेयमुपदिशन्ति २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. For they declare that it is not a theft if a wife spends money on occasions (of necessity) during her husband's absence. 72

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न हि भर्तुर्विप्रवासे नैमित्तिके दान स्तेयमुपदिशन्ति ॥२०॥

प्रस्तावः⑥

एतदेवोपपादयति—

टिप्पनी⑥

हि यस्मात् भर्तुर्विप्रवासे सति नैमित्तिके 'छिन्दत्पाणि दद्यादि'त्यादिके दाने कृते भार्याया न स्तेयमुपदिशन्ति धर्मज्ञाः । यदि भर्तुरेव द्रव्यं स्यात् स्यादेव स्तेयम् । नैमित्तिके दानं इति वचनात् व्ययान्तरे स्तेयं भवत्येव । एतदेव द्रव्यसाधारण्येऽपि दम्पत्योर्वैषम्यं— यत् पतिर्यथेष्टं विनियुङ्क्ते जाया त्वेतावदेवेति । न च पत्युस्स्वयमार्जितस्य विनियोगे जायाया अनुमत्यपेक्षा, स्वतन्त्रत्वात् । स्वतन्त्रो ह्यसौ गृहे, यथा राजा राष्ट्रे । अत एव भार्यायास्स्तेयशङ्का, न भर्तुः ॥ २० ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने चतुर्दशी कण्डिका ॥ १४ ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩

2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

5. आप० ध० १.३०.८.↩

6. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

7. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

8. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

9. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

10. आप० ध० १.३०.८.↩

11. मनु० रमृ० २.६↩

12. गौ० ध० १. १, २↩

13. 'मन्वादिभिरुपलभ्यते इत्यनुमीयते' इति ख. पु.↩

14. आप० ध० १ १२.१०.↩

15. आप० ध० १. ३१. १.↩

16. यत्किञ्चनदिङ्मुखेन इति क० पु० ।↩

17. प्रतिषेध परिसंख्येत्यनर्थान्तरम् । परिसङ्ख्या वर्जनबुद्धिः । तद्विषयको विधिः परिसंख्याविधिः । स परिसंख्यापदेनाऽप्यभिधीयते इति मीमांसकाना मतम् । अत एव

   > विधिरत्यन्तमप्राप्ते नियम पाक्षिके सति ।
   > तत्र चान्यत्र च प्राप्ते परिसंख्येति गीयते ॥

   इत्येव वार्तिककारैरुक्तम् । ग्रन्थकारस्त्वयं परिसंख्या नियमविधावेवान्तर्भावयति ॥↩

18. आप० ध० १ ३१. ६.↩

19. इदं च तर्किकादिमतमनुसृत्य प्रभाकरमतञ्च । भाट्टमते तत्तत्कर्मणामेव यागदानहोमादिरूपाणां चोदनालक्षणानां धर्मत्वाङ्गीकारात् । उक्तं हि भट्टपादैः-

> श्रेयो हि पुरुषप्रीतिस्सा द्रव्यगुणकर्मभिः ।
> चोदनालक्षणैस्साध्या तस्मात्तेष्वेव धर्मता ॥ इति । श्लो. वा. १२. १९१.

↩

20. पक्षेऽप्राप्तांशस्य पूरणकरणादित्यर्थः ।↩
21. तत्तन्निषेध्यक्रियाप्रागभावपरिपालनादिति यावत् ।↩
22. या०स्मृ० १.५२,५३.↩
23. मुद्रितश्लोकात्मकविष्णुस्मृतौ नेदं वचनमुपलभ्यते परन्तु ग्रन्थान्तरेष्वस्याविष्णुस्मृतित्वमुक्तम् ।↩
24. नार०स्मृ० व्यवहा० १२. श्लो० ७.↩
25. मुद्रितशातातपस्मृतौ लघुशतातपस्मृतौ बृद्धशातातपस्मृतौ वा नेदं वचनमुपलभ्यते ॥↩
26. सु० स्मृ०↩
27. व० स्मृ० १७. २५↩
28. म० स्मृ० ९. १७३.↩
29. म० स्मृ० ९. १७०.↩
30. म० स्मृ० ९ १८२.↩
31. म० स्मृ० ९. १७४.↩
32. म० स्मृ० ९. १७७.↩
33. म० स्मृ० ९. १६९.↩
34. म० स्मृ० १. १७१.↩
35. तै० ब्रा० १. १ २.↩
36. या० स्मृ० २. १३२.↩
37. म० स्मृ० १. १८४.↩
38. ना० स्मृ० १३. ४९.↩

39. म० स्मृ० ९. १३४.↩

40. व० ध० १५. ६. ९.↩

41. म० स्मृ० ९. २०८.↩

42. शौर्य विद्याधनं तथा इति. घ. पु. शौर्यं भार्याधनं तथा इति. ङ. पु.↩

43. या० स्मृ० २. १९९.↩

44. मत्स्यपु० अ० १८ श्लो० २९.↩

45. तै०सं० ६, ५.८.↩

46. म० स्मृ० ९. १८. निरिन्द्रिया ह्यमन्त्राश्च स्त्रियोऽनृतमिति श्रुतिः, इति मुद्रितपुस्तकपाठः । बोधायनसूत्रे तु प्रायस्संवदति (३. २. ४७.) पाठः ।↩

47. धूमावसानिकं श्रान्यं सन्ध्यायां स्नानतत्परा । इति ङ. भूमावसनिकं इति. घ. पु.↩

48. या०स्मृ० २. १३८.↩

49. गो०ध० २८, २१, २२.↩

50. या० स्मृ० २. १३८, १३९,↩

51. पितैवेति वयम् इति च. पु.↩

52. Manu II, 35.↩

53. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

54. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

55. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

56. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in

case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

57. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

58. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

59. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

60. Manu II, 144.↩

61. Manu II, 146-148.↩

62. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

63. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

64. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

65. Manu II, 147.↩

66. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

67. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

68. Manu II, 37.↩

69. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

70. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

71. आप० ध० १.३०.८.↩

72. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

१५①

01 एतेन देशकुलधर्मा व्याख्याताः④

एतेन देशकुलधर्मा *(=शास्त्राऽविरुद्धा एव)* व्याख्याताः १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. By this (discussion) the law of custom, which is observed in (particular) countries or families, has been disposed of. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतेन देशकुलधर्मा व्याख्याताः ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

'ज्येष्ठो दायाद' (२. १४. १६.) इत्यादिकं शास्त्रविप्रतिषेधादप्रमाणमित्युक्तम् । एतेन देशधर्माः कुलधर्माश्च व्याख्याताः । शास्त्रविप्रतिषिद्धा मातुलसुतापरिणयनादयोऽप्रमाणं विपरीताः प्रमाणमिति ।
गौतमोऽप्याह—
2 'देशकुलधर्माश्चाऽऽम्नायैरविरुद्धाः प्रमाण'मिति ॥ १॥

02 मातुश् च योनिसम्बन्धेभ्यः

मातुश् च योनि-संबन्धेभ्यः पितुश् *(स्वेन साकं)* चासप्तमात् पुरुषाद्
यावता वा संबन्धो ज्ञायते
तेषां प्रेतेषूदकोपस्पर्शनं
(मृतान्) गर्भान्*(=बालान्)* परिहाप्यापरिसंवत्सरान् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. On account of the blood relations of his mother and (on account of those) of his father within six degrees, or, as far as the relationship is traceable, he shall bathe if they die, excepting children that have not completed their first year. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मातुश्च योनिसम्बन्धेभ्यः पितुश्चाऽऽसप्तमाद्यावता वा सम्बन्धो ज्ञायते तेषां प्रेतेषूदकोपस्पर्शनं गर्भान् परिहाप्याऽऽपरिसंवत्सरान् ॥ २॥

टिप्पनी⑥

मातुर् योनि-सम्बन्धा मातुलादयः ,
पितुश् चासप्तमात् पुरुषात् सम्बन्धास् सपिण्डादयः पैतृ-ष्वस्रेयादयश् च,
तेभ्य आरभ्याऽऽसप्तमाद् इत्य् अन्वय ।

यावता वा ऽन्तरेण **सम्बन्धो ज्ञायते** स्मर्यते जन्मना नाम्ना वा "ऽमुष्याऽयम् अस्मत्-कूटस्थस्य वंश्य एवंनामे"ति ।

तथा च मनुः —4

> सपिण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते।
> समानोदकभावस्तु जन्मनाम्नोरवेदने ॥ इति ।

य एवंभूताः पुरुषास् **तेषां प्रेतेषु** मृतेषु उदकोपस्पर्शनं मरण-निमित्तं स्नानं कर्त्तव्यम् ।
गर्भान् बालान् **अपरि-संवत्सरान्** अपरिपूर्णसंवत्सरान् परिहाप्य वर्जयित्वा ।
बालेषु मृतेषु स्नानं न कर्तव्यम् इति ॥ २॥

03 मातापितराव् एव तेषु

माता-पितराव् एव तेषु *(मृतापरिसंवत्सरेषु गर्भेषु)* ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. On account of the death of the latter the parents alone bathe,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मातापितरावेव तेषु ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

बालेषु मृतेषु मातापितरावेवोदकस्पर्शनं कुर्याताम् ॥ ३ ॥

04 हर्तारश् च

हर्तारश् च ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. And those who bury them. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

हतारश्च ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

ये च तान् बालान् मृतान् हरन्ति तेऽप्युदकोपस्पर्शनं कुर्युरिति । एवमाचार्यस्य पक्षः ॥ ४॥

05 भार्यायाम् परमगुरुसंस्थायाञ् चाकालम्

भार्यायां परम-गुरु*(=आचार्य-मातृ-पितृ)*-संस्थायां *(=मरणे)* च *(परेद्युर्)* +आकालम् *(२४ होराणाम्)* अभोजनम् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. If a wife or one of the chief Gurus (a father or Ācārya) die, besides, fasting (is ordained from the time at which they die) up to the same time (on the following day). 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भार्यायां परमगुरुसंस्थायां चाकालभोजनम् ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

भार्या पत्नी । परमगुरवः आचार्यमातापितरः। संस्था मरणम् । भार्यायां संस्थितायां परमगुरूणां च संस्थायां सत्यां न केवलमुदकोपस्पर्शन, किं तर्हि ? अपरेद्युः आ तस्मात्कालातं अभोजन च ॥ ५ ॥

06 आतुरव्यञ्जनानि कुर्वीरन्

आतुर*(=शोक)*व्यञ्जनानि कुर्वीरन् ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. (In that case) they shall also show the (following) signs of mourning:

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आतुरव्यञ्जनानि कुर्वीरन् ॥ ६॥

प्रस्तावः⑥

किं च—

टिप्पनी⑥

आतुरत्व व्यज्यते यैस्तानि च कुर्वीरन् भार्यादिमरणे ॥ ६ ॥

07 केशान् प्रकीर्य पांसूना,

केशान् प्रकीर्य पांसूना, *(केशान्)* उप्य, एक-वाससो दक्षिणा-मुखाः सकृद्-उपमज्ज्योत्तीर्योपविशन्ति ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. Dishevelling their hair and covering themselves with dust (they go outside the village), and, clothed with one garment, their faces turned to the south, stepping into the river they throw up water for the dead once, and then, ascending (the bank), they sit down. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

केशान्प्रकीर्य पासूनोप्यैकवाससो दक्षिणामुखास्सकृदुपमज्ज्योत्तीर्योपविशन्त्येवं त्रिः ॥ ७ ॥

प्रस्तावः⑥

कानि पुनस्तानि?

टिप्पनी⑥

प्रकीर्य केशान् पासूना ऽऽवपन्ति ।
ओप्य **एकवासस** अनुत्तरीयाः।
दक्षिणामुखाः दक्षिणां दिशं निरीक्षमाणाः
सकृद् उपमज्ज्य उदकादुत्तीर्य तीरे उपविशन्ति दक्षिणामुखा एव ॥ ७ ॥

08 एवन् त्रिः

एवं त्रिः ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. This (they repeat) thrice.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवं त्रिः ॥८॥

टिप्पनी⑥

एवम् उक्तप्रकारेण त्रिरुपमज्ज्योपविशेयुः ॥ ८ ॥

09 तत्प्रत्ययम् उदकमुत्सिच्याप्रतीक्षा ग्रामम्

("मह्यम् उदकं दत्तम्" इति) तत्*(→प्रेत)*-प्रत्ययम् उदकम् उत्सिच्य
+अ-प्रतीक्षा ग्रामम् एत्य
यत् स्त्रिय आहुस् तत् कुर्वन्ति ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. They pour out water consecrated in such a manner that the dead will know it (to be given to them). Then they return to the village without looking back, and perform those rites for the dead which (pious) women declare to be necessary.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्प्रत्ययमुदकमुत्सिच्याऽप्रतीक्षा ग्राममेत्य यस्त्रिय आहुस्तत्कुर्वन्ति ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

ततः **तत्प्रत्ययं** तेषां मृतानां भार्यादीनां यथा प्रत्ययो भवति— "मह्यम् उदकं दत्तम्" इति, तथोदकम् उत्सिञ्चन्ति ।
त्रिर् इत्यनुवृत्तेस् त्रिः । आचारात्पित्र्यत्वाच्च वाससा तिलमिदं हस्ताभ्यां । भारद्वाजाय यज्ञशर्मणे एतत्तिलोदकं ददामीति प्रयोगः । उत्सिच्या प्रतीक्षाः पृष्ठतोऽनिरीक्षमाणा ग्राममेत्य गृहं प्रविश्य । अनेन बहिरिदं कर्मेति गम्यते । यत्तत्र मृतविषये स्त्रियः कर्तव्यमित्याहुः तत्कुर्वन्ति अग्न्युपस्पर्शनगवालम्भनादीनि । एतत्प्रथमेऽहनि ।
द्वितीयादि8ष्वहरहरञ्जलिनैकोत्तरवृद्धिरैकादशाहरिति पितृमेध उक्तं द्रष्टव्यम् ॥९॥

10 इतरेषु चैतदेवैक उपदिशन्ति

इतरेषु चैतद् एवैक उपदिशन्ति १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. Some declare, that these same (observances) shall also be kept in the case (of the death) of other (Sapiṇḍas).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

इतरेषु चैतदेवैक उपदिशन्ति ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

'आकालमभोजन' (२. १५, १)मित्यादि यदुक्तं तदितरेषु भार्यादिभ्योऽन्येष्वपि सपिण्डेषु मृतेषु कर्तव्यमित्येके आचार्या उपदिशन्ति ॥१०॥*

- - एतदन्तर—
    ब्राह्मणश्चैतस्मिन् कालेऽमात्यान् केशश्मश्रूणि वा वापयते ॥ ११ ॥
    अमात्याः प्रधानाः । स्पष्टमन्यत् ॥ ११॥ समावृत्ता न वापेरन् ॥ १२ ॥
    पूर्वापवादोऽयम् । अमात्येष्वपि गुरुकुलात् समावृत्ताः स्नातकाः न केशादि वापयेरन् ॥ १२ ॥
    न विहारिण इत्यन्ये ॥ १३ ॥
    विहारिणो बालाः । तेऽपि न ॥ १३ ॥ इत्यधिकं० घ० पुस्तके०

11 शुचीन् मन्त्रवतः सर्वकृत्येषु

शुचीन् मन्त्रवतः सर्व-कृत्येषु भोजयेत् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. At all religious ceremonies, he shall feed Brāhmaṇas who are pure and who have (studied and remember) the Veda. 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शुचीन्मन्त्रवतस्सर्वकृत्येषु भोजयेत् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

एकान्तेऽपि विधिप्रतिषेधानुसारिणः शुचयः, तान् । मन्त्रवतः 10अधीतवेदान् सर्वकृत्येषु श्रौतेषु गार्ह्येषु स्मार्तेषु च कर्मसु दैवेषु पित्र्येषु मानुषेषु च भोजयेत् । 11अन्ते 'ततो ब्राह्मणभोजन'मिति स्मृत्यन्तरे दर्शनात् ॥ ११ ॥

12 देशतः कालतः शौचतः

देशतः *(→तीर्थस्थानेषु)* कालतः *(→ग्रहणादौ)* शौचतः *(→कृच्छ्रादेर् अन्ते)* सम्यक् प्रतिग्रहीतृत इति दानानि प्रतिपादयति १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. He shall distribute his gifts at the proper places, at the proper times, at the occasion of purificatory rites, and to proper recipients. 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

देशतः कालतः शौचतः सम्यक्प्रतिग्रहीतृत इति दानानि प्रतिपादयति ॥ १२॥

टिप्पनी⑥

सप्तम्यर्थे तसिल् । देशः प्रयागादिः । कालः सूर्यग्रहणादिः । 13शौचं कृच्छ्रादिपरिसमाप्तिः। सम्यक् समीचीनः प्रतिग्रहीता 'तुल्यगुणेषु वयोवृद्धश्श्रेया'नित्यादि । एतेषु दानानि देयान्यवश्यं प्रतिपादयति दद्यादिति ॥ १२ ॥

13 यस्याग्नौ न क्रियते

यस्याग्नौ न क्रियते यस्य चाग्रं न दीयते न तद्भोक्तव्यम् १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. That food must not be eaten of which (no portion) is offered in the fire, and of which no portion is first given (to guests).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यस्याऽग्नौ न क्रियते यस्य चाऽयं न दीयते न तभोक्तव्यम् ॥१३॥

टिप्पनी⑥

यस्याऽनस्यैकदेशः अग्नौ न क्रियते न हूयते 14यस्माद्वोद्धृत्याऽयं न दीयते न तद्भोक्तव्यम् ॥ १३॥

14 न क्षारलवणहोमो विद्यते

न क्षारलवणहोमो विद्यते १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. No food mixed with pungent condiments or salt can be offered as a burnt-offering. 15

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न क्षारलवणहोमो विद्यते ॥ १४॥

टिप्पनी⑥

यत् भक्ष्यमाणं पश्यतो लालोत्पद्यते तत् क्षारं गुड16मरीचिलिकुचादि । 17क्षारलवण संसृष्टं न होतव्यम् ॥ १४ ॥

15 तथावरान्न संसृष्टस्य च

तथावरान्न संसृष्टस्य च १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. Nor (can food) mixed with bad food (be used for a burnt-oblation). 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथाऽवरान्नसंसृष्टस्य च ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

अवरान्नं कुलुत्थादि । तत्संसृष्टस्याप्यन्नस्य होमो न विद्यते ॥ १५ ॥

16 अहविष्यस्य होम उदीचीनमुष्णम्

अहविष्यस्य होम उदीचीनमुष्णं भस्मापोह्य तस्मिञ्जुह्यात्तद्धुतमहुतं चाग्नौ भवति १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. If (he is obliged to offer) a burnt-offering of food unfit for that purpose, he shall take hot ashes from the northern part of his fire and offer the food in that. That oblation is no oblation in the fire.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अहविष्यस्य होम उदीचीनमुष्णं भस्माऽपोह्य तस्मिञ्जुहुयात्तद्धुतमहुतं चाग्नौ भवति ॥ १६ ॥

प्रस्तावः⑥

अथ यस्यैवंविधमेव भोज्यमुपस्थितं 19तस्य कथं होमः ? तत्राह —

टिप्पनी⑥

औपासनात् पचनाद्वा ऽग्नेरुदीचीनमुष्णं भस्माऽपोह्य तस्मिन् भस्मनि जुहुयात् वैश्वदेवमन्त्रैः । एषोऽहविष्यस्य होमः। तदेवं क्रियमाणं हुतं च भवति हवनार्थनिर्वृत्तेः । अहुतं चाऽग्नौ भवति । भस्ममात्रत्वादिति । अत्र बोधायनः —
20अथ यद्येतदेवान्नं स्यादुत्तरतो भस्ममिश्रानङ्गारान्निरूह्य तेषु जुहुयादिति ।
21अपर आह-यान्यहविष्याणि व्यञ्जनान्यहरहर्भोज्यानि तेषामेष संस्कारस्सकृच्च होमोऽमन्त्रक इति ॥ १६ ॥

17 न स्त्री जुहुयात्

न स्त्री जुहुयात् १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. A female shall not offer any burnt-oblation, 22

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न स्त्री जुहुयात् ॥ १७॥

प्रस्तावः⑥

उत्तरे द्वे सूत्रे स्पष्टे —

18 नानुपेतः

नानुपेतः १८

▼

⑤

>

▼ Bühler

18. Nor a child, that has not been initiated. 23

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽनुपेतः॥ १८॥

19 आन्नप्राशनाद्गर्भा नाप्रयता भवन्ति

आऽन्न-प्राशनाद् गर्भा नाप्रयता भवन्ति १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. Infants do not become impure before they receive the sacrament called Annaprāśana (the first feeding).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आन्नप्राशनाद् गर्भा नाऽप्रयता भवन्ति ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

अन्नप्राशनात्प्राक् गर्भा बाला नाऽप्रयता भवन्ति रजस्वलादिस्पर्शनेऽपि । गौतमस्तु अपां मार्जनादिकमिच्छति । यथाह 24 'अन्यत्राऽपां मार्जनप्रधानावोक्षणेभ्यः' ॥ १९॥

20 आ परिसंवत्सराद् इत्येके

आ परिसंवत्सराद् इत्येके २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. Some (declare, that they cannot become impure) until they have completed their first year,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

परिसंवत्सरादित्यके ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

यावत् संवत्सरो न परिपूर्यते तावन्नाप्रयता गर्भा इत्यके मन्यते ॥२३॥

21 यावता या दिशो

यावता या दिशो न प्रजानीयुः २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. Or, as long as they cannot distinguish the points of the horizon.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

याचता वा दिशो न प्रजानीयुः ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

यावद्दिग्विभागज्ञानं नाऽस्ति तावताऽप्रयता भवन्ति ॥ २१ ॥

22 ओपनयनाद् इत्य् अपरम्

ओपनयनाद् इत्य् अपरम् २२

▼

⑤

>

▼ Bühler

22. The best (opinion is, that they cannot be defiled) until the initiation has been performed.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

25ओपनयनादित्यपरम् ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

उपयनादर्वाक् नाऽप्रयता गर्भा 26इत्यपरदर्शनम् ॥ २२॥

23 अत्र ह्यधिकारः शास्त्रैर्

अत्र ह्य् अधिकारः *(कर्मसु)* शास्त्रैर् *(दत्ता)* भवति २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. For at that (time a child) according to the rules of the Veda obtains the right (to perform the various religious ceremonies).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अत्र ह्यधिकारश्शास्त्रैर्भवति ॥ २३ ॥

प्रस्तावः⑥

अत्रोपपत्तिः—

टिप्पनी⑥

हि यस्मादत्रोपनयने सति विधिनिषेधशास्त्रैरधिकारो भवति ॥२३॥

24 सा निष्ठा

सा *(=उपनयनम्)* निष्ठा *(=कर्माधिकार-प्रारम्भः)*२४

▼

⑤

>

▼ Bühler

24. That ceremony is the limit (from which the capacity to fulfil the law begins).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सा निष्ठा ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

उपनयनमपि परामृशतस्तच्छब्दस्य निष्ठाशब्दसमानाधिकरण्यात् स्त्रीलिङ्गता । सा निष्ठा तदुपनयनमवसानमधिकारस्येति ॥२४॥

25 स्मृतिश्च

स्मृतिश्च *(एवं विद्यते)* २५

▼

⑤

>

▼ Bühler

25. And the Smṛti (agrees with this opinion). 27

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्मृतिश्च ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

अस्मिन्नर्थे स्मृतिरपि भवति-28उताऽब्रह्मचारी यथोपपादमुत्रपुरीषो भवति नाऽस्याऽचमकल्पो विद्यते इति 29 प्रागुपनयनात्कामचारवादभक्ष' इति गौतमः ॥ २५॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रे द्वितीयप्रश्ने पञ्चदशी कण्डिका ॥१५॥

इति चापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तमिश्रविरचितायामुज्ज्वलायां द्वितीयप्रश्ने षष्ठः पटलः ॥ ६॥

इति षष्ठः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
4. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

5. Manu II, 35.↩

6. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

7. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

8. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

9. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

10. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

11. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

12. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by

paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

13. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

14. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

15. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

16. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

17. आप० ध० १.३०.८.↩

18. Manu II, 144.↩

19. मनु० रमृ० २.६↩

20. गौ० ध० १. १, २↩

21. 'मन्वादिभिरुपलभ्यते इत्यनुमीयते' इति ख. पु.↩

22. Manu II, 146-148.↩

23. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

24. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

25. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

26. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

27. Manu II, 147.↩

28. आप० ध० १.३०.८.↩

29. मनु० स्मृ० २.६↩

໑໒①

१६①

01 सह देवमनुष्या अस्मिंल्④

सह देवमनुष्या अस्मिंल् लोके पुरा बभूवुः ।
अथ देवाः कर्मभिर् दिवं जग्मुर्,
अहीयन्त मनुष्याः ।
तेषां ये तथा कर्माण्य् आरभन्ते
सह देवैर् ब्रह्मणा चामुष्मिंल् लोके भवन्ति ।
अथैतन् मनुः श्राद्ध-शब्दं कर्म प्रोवाच १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. Formerly men and gods lived together in this world. Then the gods in reward of their sacrifices went to heaven, but men were left behind. Those men who perform sacrifices in the same manner as the gods did, dwell (after death) with the gods and Brahman in heaven. Now (seeing men left behind), Manu revealed this ceremony, which is designated by the word Śrāddha (a funeral-oblation). 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सह देवमनुष्या अस्मिंल्लोके पुरा बभूवुः । अथ देवाः कर्मभिर्दिवं जग्मुरहीयन्त मनुष्याः । तेषां ये तथा कर्माण्यारभन्ते सह देवैर्ब्रह्मणा चाऽमुष्मिन् लोके भवन्ति । अथैतन्मनुः श्राद्धशब्दं कर्म

प्रोवाच । 2प्रजानिश्श्रेयसाय च ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

3श्राद्धविधित्सया तस्य प्ररोचनार्थोऽयमर्थवादः ।
पुरा किल देवाश्च मनुष्याश्चाऽस्मिन्नेव लोके सहैव बभूवुः ।
अथ तं सहभावम् असहमाना **देवाः**
कर्मभिः श्रौतैस् स्मार्तैर् गार्ह्यैश् च
यथावद् अनुष्ठितैर् **दिवं जग्मुः**
मनुष्यास् तु
तथा कर्तुम् असमर्था **अहीयन्त**,
हीना अभवन् इहैव लोके स्थिताः ।
यत एवं कर्मणां सामर्थ्यम्
अत इदानीम् अपि
तेषां मनुष्याणां मध्ये **ये तथा कर्माण्य् आरभन्ते** कुर्वन्ति
यथारभन्त देवाः,
ते देवैः ब्रह्मणा च सहामुष्मिन् लोके भवन्ति त्रिविष्टपे मोदन्ते4 ।

अथैवं हीनान् मनुष्यान् दृष्ट्वा
मनुर् वैवस्वतः श्राद्ध-शब्दं श्राद्धम् इति शब्द्यमानम् एतत् कर्म प्रोवाच ।
किमर्थम् ?
प्रजानिःश्रेयसाय, तादर्थ्ये चतुर्थी ।
प्रजानां निःश्रेयसार्थम् ।
निश्श्रेयसा चेति पाठे
छान्दसो यकारस्य चकारः।
अपर आह- छान्दसो लिङ्गव्यत्ययः ।
प्रजा-निश्श्रेयसं चाऽस्य कर्मणः फलम् इति ॥१॥
02 प्रजानिःश्रेयसा च

प्रजानिःश्रेयसाय(च) २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. And (thus this rite has been revealed) for the salvation of mankind. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

6प्रजानिश्श्रेयसाय च ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

(पूर्वसूत्रे व्याख्यातम् ।)

03 तत्र पितरो देवता

तत्र पितरो देवता
ब्राह्मणास् त्वाहवनीयार्थे ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. At that (rite) the Manes (of one's father, grandfather, and great-grand father) are the deities (to whom the sacrifice is offered). But the Brāhmaṇas, (who are fed,) represent the Āhavanīya-fire. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्र पितरो देवता ब्राह्मणास्त्वाहवनीयार्थे ॥२॥

टिप्पनी⑥

तत्र श्राद्धकर्मणि
पितरः पितृपितामहप्रपितामहाः **देवताः** ।
ब्राह्मणास् तु भुञ्जाना **आहवनीयार्थे** आहवनीयकृत्ये वेदितव्याः।
त्रीणि श्राद्ध-करणानि- होमो, ब्राह्मण-भोजनं, पिण्ड-दानं चेति ।
अत्र भोजनस्य8 प्रधानत्व-ख्यापनार्थो ऽयम् अर्थवादः ॥ २ ॥

04 मासि मासि कार्यम्

मासि मासि कार्यम् *(यावज्जीवम्)* ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. That rite must be performed in each month. 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मासि मासि कार्यम् ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

तद् इदं कर्म
मासे मासे कर्त्तव्यम् ।
वीप्सा-वचनाद् यावज्-जीविको ऽभ्यासः।

05 अपरपक्षस्यापराह्णः श्रेयान्

अपर-पक्षस्यापराह्णः श्रेयान् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. The afternoon of (a day of) the latter half is preferable (for it). 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अपरपक्षस्याऽपराह्णः श्रेयान् ॥ ४॥

टिप्पनी⑥

अपरपक्षस्य यान्य् अहानि
तेष्व् अपराह्णः प्रशस्ततरः ॥४॥

06 तथापरपक्षस्य जघन्यान्यहानि

तथा ऽपरपक्षस्य जघन्यान्य् अहानि ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. The last days of the latter half (of the month) likewise are (preferable to the first days).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथाऽपरपक्षस्य जघन्यान्यहानि ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

यस्यैव पक्षस्य यान्य् अहानि पञ्चदश[11]
तेषाम् उत्तरम् उत्तरं प्रशस्ततरम् ॥ ५॥

07 सर्वेष्वेवापरपक्षस्याहस्सु क्रियमाणे पितॄन्प्रीणाति

सर्वेष्व् एवापर-पक्षस्याहस्सु क्रियमाणे
पितॄन् प्रीणाति ।
कर्तुस्तु *(प्रतिपद्येव द्वितीयायाम् एवेत्यादि)* कालाभिनियमात् फल-विशेषः ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. (A funeral-oblation) offered on any day of the latter half of the month gladdens the Manes. But it procures different rewards for the sacrificer according to the time observed. 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वेष्वेवाऽपरपक्षस्याऽहस्सु क्रियमाणे पितॄन् प्रीणाति । कर्तुस्तु कालाभिनियमात्फलविशेषः ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

सर्वेष्व् एवाहस्सु पितॄणां तृप्तिर् अविशिष्टा ।
यस्तु कर्ता प्रतिपदादिके काले नियमेन श्राद्धं करोति सर्वेषु मासेषु
प्रतिपद्येव द्वितीयायाम् एवेत्यादि
तस्य कर्तुस् तस्मात् **कालाभिनियमात् फल-विशेषो** भवति ॥६॥

08 प्रथमेऽहनि क्रियमाणे स्त्रीप्रायमपत्ये

प्रथमेऽहनि क्रियमाणे स्त्री-प्रायम् अपत्ये जायते ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. If it be performed on the first day of the half-month, the issue (of the sacrificer) will chiefly consist of females.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रथमेऽहनि क्रियमाणे स्त्रीप्रायमपत्ये जायते ॥७॥

प्रस्तावः⑥

कोऽसावित्याह—

टिप्पनी⑥

यः प्रतिपदि नियमेन श्राद्धं करोति,
तस्यापत्ये प्रजासन्ताने स्त्रीप्रायं जायते ।
प्रायेण स्त्रियो जायन्ते ॥ ७ ॥

09 द्वितीये ऽस्तेनाः

द्वितीये ऽस्तेनाः ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. (Performed on the second day it procures) children who are free from thievish propensities.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

द्वितीये स्तेनाः ॥ ८ ॥

टिप्पनी⑥

जायन्ते *(ऽ)*चोराः पुत्राः ॥ ८॥

10 तृतीये ब्रह्मवर्चसिनः

तृतीये ब्रह्मवर्चसिनः १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. (If it is performed) on the third day children will be born to him who will fulfil the various vows for studying (portions of the Veda).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

13तृतीये ब्रह्मवर्चसिनः ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

14व्रताध्ययन-सम्पत्तिर् **ब्रह्म-वर्चसम्** ॥ ९ ॥

11 चतुर्थे क्षुद्र पशुमान्

चतुर्थे क्षुद्र-पशुमान् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. (The sacrificer who performs it) on the fourth day becomes rich in small domestic animals.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

चतुर्थे क्षुद्रपशुमान् ॥१०॥

टिप्पनी⑥

क्षुद्राः पशवोऽजाव्यादयः तद्वान् कर्ता भवति । उत्तरत्राप्येकवचने15 कर्तुर्वादो द्रष्टव्यः ॥ १०॥

12 पञ्चमे पुमांसः बह्वपत्यो

पञ्चमे पुमांसः ।
बह्व्-अपत्यो,
न चानपत्यः प्रमीयते १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. (If he performs it) on the fifth day, sons (will be born to him). He will have numerous and distinguished offspring, and he will not die childless. 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पञ्चमे पुमांसो बह्वपत्यो न चाऽनपत्यः प्रमीयते ॥११॥

टिप्पनी⑥

पुमास एव भवन्ति, 17 बहवश्च भवन्ति, न चाऽनपत्यः प्रमीयते जीवत्स्वेव पुत्रेषु सन्निहितेषु च स्वयं म्रियते । न तेषु मृतेषु, न देशान्तरं गतेषु, नाऽपि स्वयं देशान्तरं गत इति ॥ ११ ॥

13 षष्ठेऽध्वशीलोऽक्षशीलश्च

षष्ठे ऽध्व-शीलो ऽक्ष-शीलश् च १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. (If he performs it) on the sixth day, he will become a great traveller and gambler.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

षष्ठेऽध्वशीलोऽक्षशीलश्च ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

अध्वशीलः पान्थः । अक्षशीलः कितवः ॥ १२ ॥

14 सप्तमे कर्षे राद्धिः

सप्तमे *(भू-)*कर्षे राद्धिः*(=सिद्धिः)* १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. (The reward of a funeral-oblation performed) on the seventh day is success in agriculture.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सप्तमे कर्षे राद्धिः ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

कर्षः कृषिः । **राद्धिः**, सिद्धिः ॥ १३ ॥

15 अष्टमे पुष्टिः

अष्टमे पुष्टिः १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. (If he performs it) on the eighth day (its reward is) prosperity

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अष्टमे पुष्टिः ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

स्पष्टम् ॥ १४॥

16 नवम एकखुराः

नवम एक-खुराः *(अश्वादयः)* १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. (If he performs it) on the ninth day (its reward consists in) one-hoofed animals.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नवम एकखुराः ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

अश्वादयः ॥ १५ ॥

17 दशमे व्यवहारे राद्धिः

दशमे व्यवहारे राद्धिः*(=सिद्धिः)* १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. (If he performs it) on the tenth day (its reward is) success in trade.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दशमे व्यवहारे राद्धिः ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

व्यवहारो वाणिज्यम्, शास्त्रपरिज्ञानं वा ॥ १६ ॥

18 एकादशे कृष्णायसन् त्रपुसीसम्

एकादशे कृष्णायसं त्रपु-सीसम् १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. (If he performs it) on the eleventh day (its reward is) black iron, tin, and lead.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एकादशे कृष्णायसं त्रपुसीसम् ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

कृष्णमयः कृष्णायसम् । त्रपुसीसे लोहविशेषौ ॥ १७ ॥

19 द्वादशे पशुमान्

द्वादशे पशु-मान् १९

▼

⑤

>

▼ Bühler

19. (If he performs a funeral-oblation) on the twelfth day, he will become rich in cattle.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

द्वादशे पशुमान् ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

द्वादश्यां बहवः पशवो भवन्ति ॥ १८ ॥

20 त्रयोदशे बहुपुत्रो बहुमित्रो

त्रयोदशे बहु-पुत्रो बहु-मित्रो दर्शनीयापत्यः । युव-मारिणस् तु भवन्ति २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. (If he performs it) on the thirteenth day, he will have many sons (and) many friends, (and) his offspring will be beautiful. But his (sons) will die young. 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

त्रयोदशे बहुपुत्रो बहुमित्रो दर्शनीयापत्यो युवमारिणस्तु भवन्ति ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

त्रयोदश्यां बहवः पुत्रा मित्राणि च भवन्ति । अपत्यानि च दर्शनीयानि भवन्ति । किं तु ते पुत्रा युवमारिणः युवान एव म्रियन्ते19 ॥ १९ ॥

21 चतुर्दश आयुधे राद्धिः

चतुर्दश आयुधे राद्धिः(=सिद्धिः) २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. (If he performs it) on the fourteenth day (its reward is) success in battle. 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

चतुर्दश आयुधे राद्धिः ॥२०॥

टिप्पनी⑥

संग्रामे जयः ॥२०॥

22 पञ्चदशे पुष्टिः

पञ्चदशे पुष्टिः २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. (If he performs it) on the fifteenth day (its reward is) prosperity.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पञ्चदशे पुष्टिः ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

स्पष्टम् ॥ २१ ॥

23 तत्र द्रव्याणि तिलमाषा

तत्र द्रव्याणि तिल-माषा व्रीहि-यवा आपो मूल-फलानि २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. The substances (to be offered) at these (sacrifices) are sesamum, māṣa, rice, yava, water, roots, and fruits. 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्र द्रव्याणि तिलमाषा व्रीहियवा आपो मूलफलानि च ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

तत्र श्राद्धे तिलादीनि द्रव्याणि यथायथमवश्यमुपयोज्यानि ॥ २२ ॥

24 स्नेहवति त्वेवान्ने तीव्रतरा

स्नेहवति त्व् एवान्ने तीव्रतरा पितृणां प्रीतिर्द्राघीयांसं च कालम् २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. But, if food mixed with fat (is offered), the satisfaction of the Manes is greater, and (lasts) a longer time,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्नेहवति त्वेवाऽन्ने तीव्रतरा पितृणां प्रीतिर्द्राघीयांसं च कालम् ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

यद्वा तद्वा अन्नं भवतु स्नेहवति तु तस्मिन्नाज्यादिभिरुपसिक्ते पितॄणां तीव्रतरा प्रकृष्टतरा प्रीतिर्भवति । सा च द्राघीयांसं च कालमनुवर्तते ॥२३॥

25 तथा धर्माहृतेन द्रव्येण

तथा धर्माहृतेन द्रव्येण तीर्थे *(=सत्पात्रे)* प्रतिपन्नेन २५

▼

⑤

>

▼ Bühler

25. Likewise, if money, lawfully acquired, is given to worthy (persons).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा धर्माहृतेन द्रव्येण तीर्थे प्रतिपन्नेन ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

धर्मार्जितं यद्द्रव्यं पात्रे च प्रतिपादितं तेनाऽपि तथा तीव्रतरा पितॄणां प्रीतिर्द्राघीयांसं च कालमिति ॥ २४ ॥

26 संवत्सरङ् गव्येन प्रीतिः

संवत्सरं गव्येन *(मांसेन)* प्रीतिः २६

▼

⑤

>

▼ Bühler

26. Beef satisfies (the Manes) for a year, 22

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

संवत्सरं गव्येन प्रीतिः ॥ २५ ॥

टिप्पनी⑥

उत्तरत्र मांसग्रहणाद् इहापि मांसस्य ग्रहणम् ।
गव्येन मांसेन संवत्सरं पितॄणां प्रीतिर्भवति ॥ २५ ॥

27 भूयांसमतो माहिषेण

भूयांसम् अतो माहिषेण २७

▼

⑤

>

▼ Bühler

27. Buffalo's (meat) for a longer (time) than that.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भूयांसमतो माहिषेण ॥ २६ ॥

टिप्पनी⑥

माहिषेण मांसेन, अतः सम्वत्सरात् भूयांसं बहुतरं कालं पितॄणां प्रीतिर्भवति ॥ २६ ॥

28 एतेन ग्राम्यारण्यानाम् पशूनाम्

एतेन *(माहिष-शब्देन)* ग्राम्यारण्यानां पशूनां मांसं *(श्राद्धे)* मेध्यं व्याख्यातम् २८

▼

⑤

>

▼ Bühler

28. By this (permission of the use of buffalo's meat) it has been declared that the meat of (other) tame and wild animals is fit to be offered.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतेन ग्राम्यारण्यानां पशूनां मांसं मेध्यं व्याख्यातम् ॥२७॥

टिप्पनी⑥

एतेन माहिषेण मांसेनाऽन्येषामपि **ग्राम्याणाम्** अजादीनामारण्यानां च शशादीनां मांसं **मेध्यं** व्याख्यातम्-
पितॄणां प्रीतिकरमिति । **मेध्य**-ग्रहणं प्रतिषिद्धानां मा भूदिति ॥ २७ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसुत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने षोडशी कण्डिका ॥ १६ ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition. ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
5. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
6. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
7. Manu II, 35.↩
8. आप० ध० १.३०.८.↩
9. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

10. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

11. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

12. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

13. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

14. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

15. आप० ध० १.३०.८.↩

16. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must

not study the same branch of science under any other teacher.↩

17. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

18. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

19. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

20. Manu II, 144.↩

21. Manu II, 146-148.↩

22. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

१७①

01 खड्गोपस्तरणे खड्गमांसेनानन्त्यङ् कालम्④

खड्गोपस्तरणे खड्ग-मांसेनानन्त्यं कालम् *(पितृप्रीतिः)* १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. (If) rhinoceros' meat (is given to Brāhmaṇas seated) on (seats covered with) the skin of a rhinoceros, (the Manes are satisfied) for a very long time. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

खड्गोपस्तरणे खड्गमांसेनाऽऽनन्त्यं कालम् ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

खड्गचर्मोपस्तरणेष्वासनेषूपविष्टेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दत्तेन खड्गमांसेनाऽनन्तं कालं प्रीतिभवति । आनन्त्यमिनि पाठे स्वार्थ ष्यञ् ॥ १॥

02 तथा शतबलेर्मत्स्यस्य मांसेन

तथा शत-बलेर्(=बहु-शल्यस्य रोहितस्य) मत्स्यस्य मांसेन २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. (The same effect is obtained) by (offering the) flesh (of the fish called) Śatabali, 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा शतबलेर्मत्स्यस्य मांसेन ॥२॥

टिप्पनी⑥

शतबलिर् बहुशल्यको रोहिताख्यः ॥ २ ॥

03 वार्ध्राणसस्य च

वार्ध्राणसस्य (क्रौञ्चनिभस्य) च ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. And by (offering the) meat of the (crane called) Vārdhrāṇasa.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वार्ध्राणस्य च ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

व्याख्यातो वार्ध्राणसः । तस्य मांसेनाऽऽनन्त्यं कालं प्रीतिर्भवति ॥३॥

04 प्रयतः प्रसन्नमनाः सृष्टो

प्रयतः प्रसन्न-मनाः सृष्टो*(=उत्साहवान्)* भोजयेद्
ब्राह्मणान् ब्रह्म-विदो योनि-गोत्र-मन्त्रान्तेवास्य्-असंबन्धान् ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. Pure, with composed mind and full of ardour, he shall feed Brāhmaṇas who know the Vedas, and who are not connected with him by marriage, blood relationship, by the relationship of sacrificial priest and sacrificer, or by the relationship of (teacher and) pupil. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रयतः प्रसन्नमनास् सृष्टो भोजयेद् ब्राह्मणान् ब्रह्मविदो योनिगोत्रमन्त्रान्तेवास्यसम्बन्धान् ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

प्रयतः स्नानाचमनादिना शुद्धः । प्रसन्नमनाः अव्याकुलमनाः । **सृष्टः** उत्साहवान् । 4 'सृष्टश्चेद्ब्राह्मणवधे हत्वाऽपी'तिदर्शनात् । 5 वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः' इत्यत्र च सर्ग उत्साहः । एवंभूतो ब्राह्मणान् भोजयेत् । कीदृशान् ? ब्रह्मविदः आत्मविदः । योन्यादिभिरसम्बन्धान् योनिसम्बन्धा मातुलादयः । गोत्रसम्बन्धा सगोत्राः । मन्त्रसम्बन्धा ऋत्विजो याज्याश्च । अन्तेवासिसम्बन्धाश्शिष्या आचार्याश्च ॥ ४॥

05 गुणहान्यान् तु परेषां

गुणहान्यां तु
परेषां समुदेतः सोदर्योऽपि भोजयितव्यः ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. If strangers are deficient in the (requisite) good qualities, even a full brother who possesses them, may be fed (at a Śrāddha).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गुणहान्यां तु परेषां समुदेतः सोदर्योऽपि भोजयितव्यः ॥५॥

टिप्पनी⑥

यदि परे योनिगोत्रादिभिरसम्बन्धा वृत्तादिगुणहीना एव लभ्यन्ते, तदा समुदेतो विद्यावृत्तादिभिर्युक्तः सोदर्योऽपि भोजयितव्यः किमुत मातुलादयः इत्यपिशब्दस्याऽर्थः ॥ ५॥

06 एतेनान्तेवासिनो व्याख्याताः

एतेनान्तेवासिनो व्याख्याताः *(अन्यालाभे भोजनीया इति)* ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. (The admissibility of) pupils (and the rest) has been declared hereby.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतेनाऽन्तेवासिनो व्याख्याताः ॥ ६॥

टिप्पनी⑥

एतेन सोदर्येण अन्तेवासिनः बहुवचननिर्देशात् पूर्वत्र निर्दिष्टा योन्यादिभिस्सम्बन्धास्सर्व एव व्याख्याताः-अन्येषामभावे समुदेता भोजयितव्या इति।
अत्र मनुः—

6 एष वै प्रथमः कल्पः प्रदाने हव्यकव्ययोः।
अनुकल्पस्तु विज्ञेयः सदा सद्भिरनुष्ठितः ॥

7मातामहं मातुलं च
स्वस्रीयं श्वशुरं गुरुम् ।
दौहित्रं8 विट्पतिं बन्धुम्
ऋत्विग्याज्यौ च भोजयेत् ॥

इति ॥६॥

07 अथाप्युदाहरन्ति

अथाप्य् उदाहरन्ति ... ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. Now they quote also (in regard to this matter the following verse):

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाप्युदाहरन्ति ॥७॥

टिप्पनी⑥

सम्बन्धिनो न भोज्या इत्यस्मिन्नर्थे धर्मज्ञा वचनमुदाहरन्ति ॥ ७ ॥

08 सम्भोजनी नाम पिशाचभिक्षा

संभोजनी *(=परस्पर-धर्म-भोजनम्)* नाम पिशाच-भिक्षा
नैषा पितॄन् गच्छति नोत देवान् ।
इहैव सा चरति क्षीण-पुण्या
शालान्तरे गौर् इव नष्ट-वत्सा ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. The food eaten (at a sacrifice) by persons related to the giver is, indeed, a gift offered to the goblins. It reaches neither the Manes nor the 9 gods. Losing its power (to procure heaven), it errs about in this world as a cow that has lost its calf runs into a strange stable.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सम्भोजनी नाम पिशाचभिक्षा
नैषा पितॄन् गच्छति नोऽथ देवान् ।
इहैव सा चरति क्षीणपुण्या
शालान्तरे गौरिव नष्टवत्सा ॥८॥

टिप्पनी⑥

परस्परं भुञ्जतेऽस्यामिति सम्भोजनी । अधिकरणे ल्युट् । नामेदमस्याः पिशाचभिक्षायाः । नैषा पितॄन् गच्छति नाऽपि देवान् । किं तु क्षीणपुण्या परलोकप्रयोजनरहिता सती इहैव चरति लोके यथा गौर्मृतवत्सा गृहाभ्यन्तर एव चरति न बहिर्गच्छति तद्वदेतत् ॥८॥

09 इहैव सम्भुञ्जती दक्षिणा

"इहैव संभुञ्जती दक्षिणा कुलात् कुलं विनश्यती"ति ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. The meaning (of the verse) is, that gifts which are eaten (and offered) mutually by relations, (and thus go) from one house to the other, perish in this world.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

इहैव सम्भुञ्जतीति दक्षिणा कुलात् कुलं विनश्यति ॥९॥

प्रस्तावः⑥

तद्व्याचष्टे—

टिप्पनी⑥

सम्भुञ्जती परस्परभोजनस्य निमित्तभूता दक्षिणा श्राद्धे दानक्रिया गृहात् गृहं गत्वा इहैव लोके नश्यतीत्यर्थः ॥९॥

10 तुल्यगुणेषु वयोवृद्धः श्रेयान्,

तुल्य-गुणेषु वयो-वृद्धः श्रेयान्,
द्रव्य-कृशश् चेप्सन् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. If the good qualities (of several persons who might be invited) are equal, old men and (amongst these) poor ones, who wish to come, have the preference.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तुल्यगुणेषु वयोवृद्धः श्रेयान्, द्रव्यकृशश् चेप्सन् ॥ १० ॥

प्रस्तावः⑥

अथ बहुषु तुल्यगुणेषूपस्थितेषु कः परिग्राह्यः ?

टिप्पनी⑥

यो वयसा वृद्धस्स तावद्ग्राह्यः । तत्रापि यो द्रव्येण कृशः ईप्सन् लिप्समानश्च भवति स ग्राह्यः10 । अद्रव्यकृशोऽपि अवृद्धोऽपि, द्वयोस्तु समवाये यथारुचीति ॥ १०॥

11 पूर्वेद्युर्निवेदनम्

पूर्वेद्युर् निवेदनम् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. On the day before (the ceremony) the (first) invitation (must be issued). 11

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पूर्वेद्युर्निवेदनम् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

श्राद्धदिनात्पूर्वेद्युरेव ब्राह्मणेभ्यो निवेदयितव्यम्-श्वः श्राद्धं भविता तत्र भवताऽऽहवनीयार्थे प्रसादः कर्तव्य इति ॥ ११ ॥

12 अपरेद्युर्द्वितीयम्

अपरेद्युर् द्वितीयम् १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. On the following day the second invitation takes place. 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अपरेद्युर्द्वितीयम् ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

अपरेद्युः श्राद्धदिने द्वितीयं निवेदनं कर्तव्यमद्य श्राद्धमिति ॥ १२ ॥

13 तृतीयमामन्त्रणम्

तृतीयम् आमन्त्रणम् *(= अगारं प्रत्यानयनम्)* १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. (On the same day also takes place) the third invitation (which consists in the call to dinner). 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तृतीयमामन्त्रणम् ॥ १३॥

टिप्पनी⑥

आमन्त्रणमाह्वानं भोजनकाले सिद्धमागम्यतामिति तत्तृतीयं भवति ॥१३॥

14 त्रिःप्रायमेके श्राद्धमुपदिशन्ति

त्रिःप्रायम् एके श्राद्धम् उपदिशन्ति ... १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. Some declare, that every act at a funeral sacrifice must be repeated three times.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

त्रिःप्रायमेके श्राद्धमुपदिशन्ति ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

न केवलं निवेदनमेव त्रिर्भवति । किं तर्हि यच्च यावच्च श्राद्धे तत्सर्वं त्रिरावर्त्यमित्येके मन्यन्ते । अत्र पक्षे होमभोजनपिण्डानाम् अप्यावृत्तिस् तस्मिन्न् एवा ऽपराह्णे ॥ १४ ॥

15 यथा प्रथममेवन् द्वितीयन्

यथा प्रथमम्, एवं द्वितीयं, तृतीयं च १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. As (the acts are performed) the first time, so they must be repeated) the second and the third times.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथाप्रथमम् एवं द्वितीयं तृतीयं च ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

येन प्रकारेण प्रथमश्राद्धं तथैव द्वितीयं तृतीयं च कर्तव्यम् ॥ १५ ॥

16 सर्वेषु वृत्तेषु सर्वतः

(उक्तेषु त्रिषु) सर्वेषु वृत्तेषु,
सर्वतः समवदाय
शेषस्य ग्रासावरार्ध्यं प्राश्नीयाद् यथोक्तम् १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. When all (the three oblations) have been 14 offered, he shall take a portion of the food of all (three), and shall eat a small mouthful of the remainder in the manner described (in the Gṛhya-sūtra).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वेषु वृत्तेषु सर्वतस् समवदाय शेषस्य ग्रासं वरार्ध्यं प्राश्नीयाद् यथोक्तम् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

सर्वेषु श्राद्धेषु त्रिष्वपि वृत्तेषु समाप्तेषु सर्वतस्त्रयाणां श्राद्धानां य ओदनशेषस्ततस्समवदाय ग्रासवरार्ध्यं प्राश्नीयात् यथोकं गृह्ये15 'उत्तरेण यजुषा शेषस्य ग्रासवरार्ध्यं प्राश्नीया'दिति। तत्र प्रयोगः16पूर्वेद्युर्निवेदनम् । तद्वत् परेद्युः प्रातर्भोजनकाले आमन्त्रणं-सिद्धमागम्यतामिति । ततो होमादिपिण्डनिधानान्तमेकैकमपवृज्य ततः सर्वतस्समवदाय ग्रासावरार्ध्यस्य17 प्राणे निविष्टे'ति प्राशनमिति ॥ १६॥

17 उदीच्यवृत्तिस्त्वासनगतानां हस्तेषूदपात्रानयनम्

उदीच्य-वृत्तिस् त्व् - आसन-गतानां हस्तेषूदपात्रानयनम् *("अर्घ्यम्" इति)* १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. But the custom of the Northerners is to pour into the hands of the Brāhmaṇas, when they are seated on their seats, (water which has been taken from the water-vessel.) 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उदीच्यवृत्तिस्त्वासनगतानां हस्तेषूदपात्रानयनम् ॥१७॥

टिप्पनी⑥

प्रागुदञ्चौ विभजते हंसः क्षीरोदकं यथा ।
विदुषां शब्दसिद्ध्यर्थं सा नः पातु शरावती ॥'
इति वैयाकरणाः । तस्याः शरावत्या उदक्तीरवर्तिन उदीच्याः । तेषां वृत्तिराचार आसनेषुपविष्टानां ब्राह्मणानां हस्तेषूदपात्रादर्घ्यपात्रादादायाऽर्घ्यदानमिति । 19पितरिदं तेऽर्घ्यम्, पितामहेदं तेऽर्घ्यं, प्रपितामहेदं तेऽर्घ्यमिति मन्त्रा आश्वलायनके20 । यद्यप्युदीच्यवृत्तिरित्युक्तं, तथापि प्रकरणसामर्थ्यात् सर्वेषामपि भवति ॥ १७ ॥

18 उद्ध्रियतामग्नौ च क्रियतामित्यामन्त्रयते

"उद्ध्रियताम् अग्नौ च क्रियताम्"
इत्य् आमन्त्रयते १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. (At the time of the burnt-offering which is offered at the beginning of the dinner) he addresses the Brāhmaṇas with this Mantra: 'Let it be taken out, and let it be offered in the fire.' 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

'उध्रियतामग्नौ च क्रियता'मित्यामन्त्रयते ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

होमकाल उद्ध्रियतामग्नौ च क्रियतामित्यनेन मन्त्रेण ब्राह्मणानामन्त्रयते । मन्त्रे22 'अधीष्टे चे'ति लोट्प्रत्ययः ॥ १८ ॥

19 काममुद्ध्रियताङ् काममग्नौ क्रियतामित्यत्तिसृष्ट

> कामम् उद्ध्रियतां,
> कामम् अग्नौ क्रियताम्

इत्य् अतिसृष्ट
उद्धरेद् जुहुयाच् च १९

▼

⑤

>

▼ Bühler

19. (They shall give their permission with this Mantra): 'Let it be taken out at thy pleasure, let it be offered in the fire at thy pleasure.' Having received this permission, he shall take out (some of the prepared food) and offer it.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

'काममुध्रियतां काममग्नौ च क्रियता'मित्यतिसृष्ट उद्धरेज्जुहुयाच्च ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

अथ ब्राह्मणाः काममुध्रियतां काममग्नौ च क्रियतामित्यतिसृजेयुः अनुजानीयुः । तश्चातिसृष्ट उद्धरेज्जुहुयाच्च । उद्धरणं नाम ब्राह्मणार्थं पक्वादन्नादन्यस्मिन् पात्रे पृथक्करणम् । तत्सूत्रकारेण ज्ञापितमष्टकाश्राद्धे ॥१९॥

20 श्वभिरपपात्रैश्च श्राद्धस्य दर्शनम्

श्वभिर् अपपात्रैश् च
श्राद्धस्य दर्शनं परिचक्षते २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. They blame it, if dogs and Apapātras are allowed to see the performance of a funeral-sacrifice.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्वभिरपपात्रैश्च श्राद्धस्य दर्शनं परिचक्षते ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

(श्वभिरिति बहुवचनात् ग्रामसूकरादीनां तादृशानां ग्रहणम्।) अपपात्राः पतितादयः, प्रतिलोमादयश्च । तैः श्राद्धस्य दर्शनं परिचक्षते गर्हन्ते शिष्टाः । अतो यथा ते न पश्येयुस्तथा23परिश्रिते कर्तव्यमिति ॥२०॥

- () कुण्डलान्तर्गतो भागः घ. पुस्तके एवास्ति ।

21 श्वित्रः शिपिविष्टः परतल्पगाम्यायुधीयपुत्रः

श्वित्रः *(=श्वेतकुष्टः)* शिपि-विष्टः*(=खल्वाटः)* परतल्प-गाम्य् आयुधीय-पुत्रः, शूद्रोत्पन्नो ब्राह्मण्याम्

इत्य् एते श्राद्धे भुञ्जानाः
पङ्क्ति-दूषणा भवन्ति २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. The following persons defile the company if they are invited to a funeral-sacrifice, viz. a leper, a bald man, the violator of another man's bed, the son of a Brāhmaṇa who follows the profession of a Kṣatriya, and the son of (a Brāhmaṇa who by marrying first a Śūdra wife had himself become) a Śūdra, born from a Brāhmaṇa woman. 24

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्वित्रशिपिविष्टः परतल्पगाम्यायुधीयपुत्रश्शूद्रोत्पन्नो ब्राह्मण्यामित्येते श्राद्धे भुञ्जानाः पङ्क्तिदूषणा भवन्ति ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

25श्वित्र-श्वित्री श्वेतकुष्ठी । शिपिविष्टः खलतिः। विवृतशेफ इत्यन्ये । परतल्पगामी यः परतल्पं गत्वा अकृतप्रायश्चित्तः तस्य ग्रहणम् । आयुधीयपुत्रः क्षत्रियवृत्तिमाश्रितो य आयुधेन जीवति ब्राह्मणः, तस्य पुत्रः। शूद्रेण ब्राह्मण्यामुत्पन्नश्चण्डालः । न तस्य प्रसङ्गः । 'ब्राह्मणान् ब्रह्मविद' इत्युक्तत्वाद् । तस्मादेवं व्याख्येयम्-क्रमविवाहे यः शुद्रायां पूर्वमुत्पाद्य पश्चात् ब्राह्मण्यामुत्पादयति तस्य पुत्रः शूद्रोत्पन्नो ब्राह्मण्यामिति । स हि पिता शुद्रः सम्पन्नः । श्रूयते हि26 'तज्जाया जाया भवति यदस्यां जायते पुनरि'ति । स्मर्यते च—
27 यदुच्यते द्विजातीनां शूद्राद्दारपरिग्रहः ।
न तन्मम मतं यस्मात्तत्राऽयं जायते स्वयम् ॥' इति ।

28एते श्वित्र्यादयः श्राद्धे भुञ्जानाः पङ्क्तिं दूषयन्ति । अतस्ते न भोज्या इति ॥ २१ ॥

22 त्रिमधुस्त्रिसुपर्णस्त्रिणाचिकेतश्चतुर्मेधः पञ्चाग्निर्ज्येष्ठसामगो वेदाध्याय्यनूचानपुत्रः

त्रिमधुस् त्रिसुपर्णस् त्रिणाचिकेतश् चतुर्मेधः पञ्चाग्निर् ज्येष्ठसामिको वेदाध्याय्य् अनूचानपुत्रः श्रोत्रिय इत्येते
श्राद्धे भुञ्जानाः पङ्क्ति-पावना भवन्ति २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. The following persons sanctify the company if they eat at a funeral-sacrifice, viz. one who has studied the three verses of the Veda containing the word 'Madhu,' each three times; one who has studied the part of the Veda containing the word 'Suparṇa' three times; a Triṇāciketa; one who has studied the Mantras required for the four sacrifices (called Aśvamedha, Puruṣamedha, Sarvamedha, and Pitṛmedha); one who keeps five fires; one who knows the Sāman called Jyeṣṭha; one who fulfils the duty of daily study; the son of one who has studied and is able to teach the whole Veda with its Aṅgas, and a Śrotriya. 29

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

त्रिमधुस् त्रिसुपर्णस् त्रिणाचिकेतश् चतुर्मेधः पञ्चाग्निर् ज्येष्ठसामिको वेदाध्याय्य् अनूचानपुत्रः श्रोत्रिय इत्येते
श्राद्धे भुञ्जानाः पङ्क्तिपावना भवन्ति ॥२२॥

टिप्पनी⑥

'मधुवाता ऋतायत' इत्येष तृचः30त्रिमधुः । तत्र हि प्रत्यृचं त्रयो मधुशब्दाः । इह तु तदध्यायी पुरुषस्त्रिमधुः । त्रिसुपर्णः 31 'चतुष्कपर्दा युवतिः सुपेशा' इत्यादिकस्तृचो बाह्वृचः । अन्ये तु तैत्तिरीयके32 ब्रह्ममेतु मा'मित्यादयः त्रयोऽनुवाका इत्याहुः । तत्र हि 'य इमं त्रिसुपर्णमयाचितं ब्राह्मणाय दद्यादि'ति श्रूयते 'आसहस्रात् पङ्क्ति पुनन्ती'ति च । पूर्ववत्पुरुषे वृत्तिः ।

त्रिणाचिकेतः नाचिकेताऽग्निर्बह्वीषु शखासु विधीयते 33तैत्तिरीयके, कठवल्लीषु, शतपथे च । तं यो वेद मन्त्रबाह्मणेन सह स त्रिनाचिकेत 34नाचिकेताग्नेस्त्रिश्चेतेत्यन्ये । विरजानुवाकाध्यायीत्यन्ये, 35प्राणापानेत्यदि । चतुर्मेधः अश्वमेधः, सर्वमेधः, पुरुषमेधाः, पितृमेध, इति चत्वारो मेधाः । तदध्यायी चतुर्मेधः । चतुर्णां यज्ञानामाहर्तेत्यन्ये ।

पञ्चाग्निः सभ्यावसभ्याभ्यां सह । 36पञ्चानां काठकाग्नीनामध्येता वा ज्येष्ठसाम तलवकारिणां प्रसिद्धं उदु त्यं, चित्रमित्येतयोर्गीतम् । तद्गायतीति ज्येष्ठसमागः । ज्येष्ठसामिक इति पाठे व्रीह्यादित्वात् ठन् । वेदाध्यायी स्वाध्यायपरः । अनूचानपुत्रः त्रैविद्यपुत्रः । श्रोत्रिय इत्यपि पठन्ति । तदादरार्थं द्रष्टव्यम् । एते श्राद्धे भुञ्जानाः पङ्क्तिं शोधयन्ति । वेदाध्यायीत्यस्याऽनन्तरमितिशब्दं पठन्ति । सोऽपपाठः । एतेन पञ्चाग्नीत्यविभक्तिकपाठो व्याख्यातः ॥२२॥

23 न च नक्तं

न च नक्तं श्राद्धं कुर्वीत २३

▼

⑤

>

▼ Bühler

23. He shall not perform (any part of) a funeral sacrifice at night. 37

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न च नक्तं श्राद्धं कुर्वीत ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

श्राद्धकर्मण्यारब्धे कारणाद्विलम्बे मध्ये यदादित्योऽस्तमियात् तदा श्राद्धशेषं न कुर्वीत, अपरेद्युर्दिवैव कुर्वीतेति ॥ २३ ॥

24 आरब्धे चाभोजनमा समापनात्

आरब्धे चाभोजनम् - आ समापनात् २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. After having begun (a funeral-sacrifice), he shall not eat until he has finished it. 38

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आरब्धे चाऽभोजनमासमापनात् (अन्यत्र राहुदर्शनात्) ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

पूर्वेद्युर्निवेदनप्रभृत्यापिण्डनिधानान्मध्ये कर्तुर्भोजनप्रतिषेधः ।

अनन्तरमन्यत्र राहुदर्शनादिति पठन्ति ।

'न च नक्त'मित्यस्यापवादः राहुदर्शने नक्तमपि कुर्वीतेति ।
उदीच्यास् त्व् एतत् प्रायेण न पठन्ति । तथा च पूर्वैर्न व्याख्यातम् । प्रत्युत 'न च नक्त'मित्येतत् सोमग्रहणविषयम् इति व्याख्यातम् ।

पठ्यमानं तु न च नक्तमित्यस्यानन्तरं पठितुं युक्तम् ॥२४॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने सप्तदशी कण्डिका ॥ १७ ॥

इति चापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तमिश्रविरचितायामुज्ज्वलायां द्वितीयप्रश्ने सप्तमः पटलः ॥७॥

25 अन्यत्र राहुदर्शनात्

अन्यत्र राहु-दर्शनात् *(यदा नक्तम् अपि कुर्वीत)* २५

▼ विश्वास-टिप्पनी

"उदीच्यास् त्व् एतत् प्रायेण न पठन्ति । तथा च पूर्वैर्न व्याख्यातम् ।" इति हरदत्तः।

▼

⑤

>
▼ Bühler

25. (He shall not perform a funeral-sacrifice at 39 night), except if an eclipse of the moon takes place.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्यत्र राहुदर्शनात् ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

(पूर्वसूत्रे द्रष्टव्यम्।)

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
↩
2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
3. Manu II, 35.↩
4. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
5. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
6. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
7. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
8. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
9. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
10. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
11. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
12. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which,

according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

13. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩
14. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩
15. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
16. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
17. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
18. Manu II, 144.↩
19. आप० ध० १.३०.८.↩
20. मनु० रमृ० २.६↩
21. Manu II, 146-148.↩

22. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

23. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

24. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩

25. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

26. आप० ध० १.३०.८.↩

27. मनु० स्मृ० २.६↩

28. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

29. Manu II, 147.↩

30. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

31. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

32. आप० ध० १.३०.८.↩

33. मनु० स्मृ० २.६↩

34. गौ० ध० १. १, २↩

35. 'मन्वादिभिरुपलभ्यते इत्यनुमीयते' इति ख. पु.↩

36. आप० ध० १. ३१. १.↩

37. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩

38. Manu II, 37.↩

39. -26. Āśv. Gṛ. Sū. I, 19, 5, 7; Weber, Ind. Stud. X, 21.↩

oᒪ①

१८①

01 विलयनम् मथितम् पिण्याकम्④

विलयनं *(=नवनीत-मलम्)*, मथितं, पिण्याकं, *(=तैलोत्पादनावशेषः)* मधु, मांसं च वर्जयेत् १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. He shall avoid butter, butter-milk, oil-cake, honey, meat. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विलयनं मथितं पिण्याकं मधु मांसं च वर्जयेत् ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

विलयनं नवनीतमलम् । यस्य दध्नो हस्तादिना मन्थनमात्रं न जलेन मिश्रणं तन्मथितम् । तथा च नैघण्टुकाः—
2 तक्रं ह्युदश्विन्मथितं पादाम्ब्वर्धाम्बु निर्जलमिति।
यन्त्रपीडितानां तिलानां कल्कः पिण्याकम् । मधुमासे प्रसिद्धे मांसमप्रतिषिद्धमपि । एतद्विलयनादिकं वर्जयेत् ॥ १ ॥

02 कृष्णधान्यं शूद्रान्नं ये

कृष्ण-धान्यं, शूद्रान्नं, ये चान्ये नाश्य-संमताः २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. And black grain (Such as kulittha), food given by Śūdras, or by other persons, whose food is not considered fit to be eaten.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कृष्णधान्यं शूद्रान्नं ये चान्येऽनाश्यसम्मताः ॥ २ ॥

टिप्पनी⑥

कृष्णधान्य3माषादिः । न कृष्णा व्रीहयः । शूद्रान्न पक्वमपक्वं च। ये चान्येऽनाश्यत्वेनाभोज्यत्वेन सम्मताः तांश्च वर्जयेत् ॥ २ ॥

03 अहविष्यमनृतङ् क्रोधं येन

अहविष्यम्, अनृतं, क्रोधं,
येन च क्रोधयेत् ।
स्मृतिम् इच्छन् यशो मेधां स्वर्गं पुष्टिं द्वादशैतानि *(प्राक्तनसूत्रोक्त-सहितानि)* वर्जयेत् ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. And food unfit for oblations, speaking an untruth, anger, and (acts or words) by which he might excite anger. He who desires a (good) memory, fame, wisdom, heavenly bliss, and prosperity, shall avoid these twelve (things and acts);

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

4अहविष्यमनृतं क्रोधं येन च क्रोधयेत् ॥ ३॥

टिप्पनी⑥

अहविष्य कोद्रवादि । अनृतं मिथ्यावचनम् । क्रोधः कोपः येन च कृतेनोक्तेन वा परं क्रोधयेत्, तच्च वर्जयेत् ॥३॥

सूत्रम्⑥

स्मृतिमिच्छन् यशो मेधां स्वर्गं पुष्टिं द्वादशैतानि वर्जयेत् ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

स्मृतिरधिगतस्य स्मरणम् । यशः ख्यातिः । मेधा प्रज्ञा । द्वादशैतानि विलयनादीनि वर्जयेत् स्मृत्यादिकमिच्छन् । पुनर्वर्जयेदिति गुणार्थोऽनुवादः स्मृत्यादिकं फलं विधातुम् । द्वादशैतानीति वचनं विलयनादेरपि परिग्रहार्थम्, अहविष्यादिकमेवानन्तरोक्तं मा ग्राहीदिति ॥४॥

04 अधोनाभ्युपरिजान्वाच्छाद्य त्रिषवणमुदकमुपस्पृशन्न् अनग्निपक्ववृत्तिरच्छायोपगः

अधो-नाभ्य्--उपरि-जान्व्-आच्छाद्य त्रि-षवणम् उदकम् उपस्पृशन्न्
अनग्नि-पक्व-वृत्तिर् अच्छायोपगः स्थानासनिकः संवत्सरम् एतद् व्रतं चरेत् ।
एतद् अष्टा-चत्वारिंशत् संमितम् इत्य् आचक्षते ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. Wearing a dress that reaches from the navel to the knees, bathing morning, noon, and evening, living on food that has not been cooked at a fire, never seeking the shade, standing (during the day), and sitting (during the night), he shall keep this vow for one year. They declare, that (its merit) is equal to that of a studentship continued for forty-eight years.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अधोनाभ्युपरि जान्वाच्छाद्य
त्रिषवणमुदकमुपस्पृशन्ननग्निपक्ववृत्तिरच्छायोपगतस्थानासनिकस्संवत्सरमेतद्व्रतं
चरेदेतदष्टाचत्वारिंशत्सम्मितमित्याचक्षते ॥ ५॥

टिप्पनी⑥

अधोनाभ्युपरि जान्वाच्छाद्येति व्याख्यातम् (१.२४.११) त्रिषवणं त्रिषु सवनेषु प्रातर्मध्यन्दिने सायमिति उदकमुपस्पृशन् स्नानं कुर्वन् । अनग्निपक्ववृत्तिः, वृत्तिः शरीरयात्रा, सा अग्निपक्वेन

न कार्या । अग्निग्रहणात् कालपक्वस्याऽऽम्रादेरदोषः । अच्छायोपगतः छायामनुपगच्छन् । स्थानासनिकः स्थानासनवान् । दिवास्थानं रात्रावासनं न कदाचिच्छयनम् । एतत् 'विलयनं मथित'मित्यारभ्याऽनन्तरमुक्तं संवत्सरं व्रतं चरेत् । एतद्व्रतमष्टाचत्वारिंशद्वर्षसाध्येन ब्रह्मचारिव्रतेन सम्मितं सदृशं यावत्तस्य फलं तावदस्यापीत्याचक्षते धर्मज्ञाः । न केवलं स्मृत्यादिकमेव प्रयोजनमिति।
अपर आह- 'विलयनं मथित'मित्यादिकं व्रतान्तरं स्मृत्यादिकामस्य। 'अधोनाभी'त्यादिकं तु सम्मितं व्रतमिति । एतच्च ब्रह्मचारिणो गृहस्थस्य च भवति ।
तथा च बौधायनः 5 'अष्टाचत्वारिंशत्सम्मितमित्याचक्षते तस्य सक्षेपः संवत्सरः। तं संवत्सरमनुव्याख्यास्यामः-स यदि ब्रह्मचारी स्यान्नियमेव प्रतिपद्येत । अथ यद्यपि ब्रह्मचारी स्यात् केशाश्मश्रुलोमनखानि वापयित्वा तीर्थं गत्वा स्नात्वे'त्यादि ॥ ५ ॥

05 नित्यश्राद्धम्

नित्य-श्राद्धम् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

> 5. (Now follows) the daily funeral-oblation. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नित्यश्राद्धम् ॥ ६॥

टिप्पनी⑥

अथाऽहरहः कर्तव्यं श्राद्धमुच्यते । तस्य नित्यश्राद्धमिति नाम ॥ ६ ॥

06 बहिर्ग्रामाच्छुचयः शुचौ देशे

बहिर्ग्रामाच् छुचयः शुचौ देशे संस्कुर्वन्ति ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. Outside the village pure (men shall) prepare (the food for that rite) in a pure place. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

बहिर्ग्रामाच्छुचयः शुचौ देशे संस्कुर्वन्ति ॥ ७॥

टिप्पनी⑥

तन्नित्यश्राद्धं बहिर्ग्रामात्कर्तव्यं तस्याऽन्नसंस्कारः शुचौ देशे अन्नं संस्कुर्वन्ति । शुचय इति वचनमाधिक्यार्थम् । आर्याः प्रयता इति पूर्व मेव प्रायत्यस्य विहितत्वात् ॥ ७॥

07 तत्र नवानि द्रव्याणि

तत्र नवानि द्रव्याणि *(=वक्ष्यमाणानि भाण्डादीनि)* ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. New vessels are, used for that, 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्र नवानि द्रव्याणि ॥ ८ ॥

टिप्पनी⑥

तत्र नित्यश्राद्धे द्रव्याणि नवान्येव ग्राह्याणि ॥ ८॥

08 यैरन्नं संस्क्रियते येषु

यैर् अन्नं संस्क्रियते येषु च भुज्यते ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. In which the food is prepared, and out of which it is eaten.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यैरन्नं संस्क्रियते येषु च भुज्यते ॥९॥

प्रस्तावः⑥

कानि पुनस्तानि ?

टिप्पनी⑥

यैर्भाण्डैरत्नं संस्क्रियते येषु च कांस्यादिषु भुज्यते तानि नवानीति ॥९॥

09 तानि च भुक्तवद्भ्यो

तानि च भुक्तवद्भ्यो दद्यात् ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. And those (vessels) he shall present to the (Brāhmaṇas) who have been fed.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तानि च भुक्तवद्भ्यो दद्यात् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

तानि भाण्डानि कांस्यादीनि च भुक्तवद्भ्यो ब्राह्मणेभ्यो दद्यात् । एवं प्रत्यहम् ॥१०॥

10 समुदेतांश्च भोजयेत्

समुदेतांश् च भोजयेत् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. And he shall feed (Brāhmaṇas) possessed of all (good qualities).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

समुदेतांश्च भोजयेत् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

समुदेतवचनं गुणाधिक्यार्थम् ॥ ११ ॥

11 न चातद्गुणायोच्छिष्टम् प्रयच्छेत्

न चातद्गुणायोच्छिष्टं प्रयच्छेत् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. And he shall hot give the residue (of that funeral-dinner) to one who is inferior to them in good qualities.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न चाऽतद्गुणायोच्छिष्टं प्रयच्छेत् ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

भाण्डेषु यत भुक्तशिष्टं तदिहोच्छिष्टम् । तदप्यतद्गुणाय भुक्तवतां ये गुणास्तद्रहिताय न दद्यात् तद्गुणायैव दद्यादिति9 ॥ १२ ॥

12 एवं संवत्सरम्

एवं संवत्सरम् १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. Thus (he shall act every day) during a year.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवं संवत्सरम् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

एवमेतन्नित्यश्राद्धं सवत्सरं कर्तव्यमहरहः ॥ १३ ॥

13 तेषामुत्तमं लोहेनाजेन कार्यम्

तेषाम् उत्तमं लोहेनाजेन कार्यम् १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. The last of these (funeral-oblations) he shall perform, offering a red goat. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषामुत्तमं लोहेनाजेन कार्यम् ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

तेषां संवत्सरस्याऽह्नां उत्तममहस्समाप्तिदिनम् । लोहेन लोहितवर्णन अजेन श्राद्धं कर्तव्यम् । दृश्यते चाप्यन्यत्राऽस्मिन्नर्थे लोहशब्दः-11 'लोहस्तूपरो भवत्यप्यतूपरः कृष्णसारङ्गो लोहितसारङ्गो वेति । चमकेषु च भवति 12 'श्यामं च मे लोहं च म' इति ॥ १४ ॥

14 मानञ् च कारयेत्प्रतिच्छन्नम्

मानं *(=वेदीं)* च कारयेत् प्रतिच्छन्नम् १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. And let him cause an altar to be built, concealed (by a covering and outside the village).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मानं च कारयेत्प्रतिच्छन्नम् ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

मानं धिष्ण्वं वेदिका । दृश्यते हि मिनोतेरस्मिन्नर्थे प्रयोगः अग्रेणाऽऽग्नीध्रं चतुर उपस्नावं विमितं विमिन्वन्ति पुरस्तादुन्नतं पश्चान्निनुतमि'ति । स एवायमुपसर्गरहितस्य प्रयोगः । तं मानं कारयेत् कर्मकरैः, प्रतिच्छन्नं च तद्भवति तिरस्करिण्यादिना । इदमपि ग्रामाद्बहिरेव ॥

15 तस्योत्तरार्धे ब्राह्मणान्भोजयेत्

तस्योत्तरार्धे ब्राह्मणान्भोजयेत् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. Let him feed the Brāhmaṇas on the northern half of that.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्योत्तरार्धे ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

तस्य मानस्योत्तरस्मिन्नर्धे ब्राह्मणा भोजयितव्याः ॥ १६ ॥

16 उभयान्पश्यति ब्राह्मणांश्च भुञ्जानान्माने

> उभयान् पश्यति - ब्राह्मणांश् च भुञ्जानान्, माने च पितॄन्

इत्य् उपदिशन्ति १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. They declare, that (then) he sees both the Brāhmaṇas who eat and the Manes sitting on the altar.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उभयान्पश्यति ब्राह्मणांश्च भुञ्जानान् माने च पितॄन्नित्युपदिशन्ति ॥१७॥

टिप्पनी⑥

तस्यैवं कृतस्य कर्मणो महिम्ना उभयान् पश्यति, कांश्च कांश्च ब्राह्मणान्भुञ्जानान् तस्मिन्नेव च माने पितॄन् यथा ब्राह्मणान् भुजानान् प्रत्यक्षेण पश्यति तथा माने समागतान् पितॄनपि प्रत्यक्षेण पश्यतीत्युपदिशन्ति धर्मज्ञाः ॥ १७॥

17 कृताकृतमत ऊर्ध्वम्

कृताकृतम् अत ऊर्ध्वम् १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. After that he may offer (a funeral-sacrifice once a month) or stop altogether.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कृताकृनम् अत ऊर्ध्वम् ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

अत ऊर्ध्वं मासिश्राद्धं क्रियताम्, मा वा कारि । अकरणेऽपि न प्रत्यवाय इति ॥ १८॥

18 श्राद्धेन हि तृप्तिं

श्राद्धेन हि तृप्तिं वेदयन्ते पितरः १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. For (by appearing on the altar) the Manes signify that they are satisfied by the funeral offering.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्राद्धेन तृप्तिं निवेदयन्ते पितरः ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

हि यस्मादन्त्येऽहनि यद्दर्शनमुपगच्छन्ति, तच्छ्राद्धेन तृप्तिं हि वेदयन्ते ज्ञापयन्ति कर्तारम् । तस्मात् तत् कृताकृतमिति ॥ १९ ॥

19 तिष्येण पुष्टिकामः

तिष्येण पुष्टि-कामः १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. Under the constellation Tiṣya he who desires prosperity,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तिष्येण पुष्टिकामः ॥ २० ॥

प्रस्तावः⑥

अथ पुष्टिकामस्य प्रयोगस्तिष्येणेत्यादिरुच्छिष्टं दद्युरित्यन्त एकः ।

टिप्पनी⑥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रे द्वितीयप्रश्नेऽष्टादशी कण्डिका ॥ १८ ॥

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition. ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
5. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
6. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
7. Manu II, 35.↩
8. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
9. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
10. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
11. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
12. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

१९①

01 गौरसर्षपाणाञ् चूर्णानि कारयित्वा④

गौर-सर्षपाणां चूर्णानि कारयित्वा
तैः पाणि-पादं प्रक्षाल्य
मुखं कर्णौ प्राश्य च
यद्-वातो नातिवाति तद्-आसनो
ऽजिनं बस्तस्य *(=अजस्य)* प्रथमः कल्पो
वाग्यतो दक्षिणा-मुखो भुञ्जीत १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. Shall cause to be prepared powder of white mustard-seeds, cause his hands, feet, ears, and mouth to be rubbed with that, and shall eat (the remainder). If the wind does not blow too violently, he shall eat sitting, silent and his face turned towards the south, on a seat (facing the) same (direction)the first alternative is the skin of a he-goat. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गौरसर्षपाणां चूर्णानि कारयित्वा तैः पाणिपादं प्रक्षाल्य मुखं कर्णौ प्राश्य च यद्वातो नातिवाति तदा सनोऽजिनं वस्तस्य प्रथमः कल्पो वाग्यतो दक्षिणामुखो भुञ्जीत ॥ १॥

टिप्पनी⑥

पुष्टिकामः पुरुषो वक्ष्यमाणं प्रयोगं कुर्यात् । तिष्येण2 "नक्षत्रे च लुपी"त्यधिकरणे तृतीया । तिष्ये नक्षत्रे गौराणां सर्षपाणां चूर्णानि कर्मकरैः कारयेत् । कारयित्वा तच्चूर्णैः पाणी पादौ प्रक्षाल्य मुखं कर्णौ च प्रक्षाल्य चूर्णशेषं प्राश्नीयात् । प्रास्येदिति पाठे प्रास्येत् विकिरेत् । एतावत् प्रतितिष्यं विशेषकृत्यम् । परं तु प्रत्यहं कर्तव्यम् । प्राश्य च यदासनं वातो नातिवाति अधो नातीत्य वाति तदासनस्तादृशासनः भुञ्जीतेति वक्ष्यमाणेन सम्बन्धः। तत्र वस्ताजिनमासनं स्यादिति मुख्य कल्पः । वाग्यतो दक्षिणां दिशमभिमुखो भुञ्जीत ॥ १॥
02 अनायुष्यन् त्वेवम्मुखस्य भोजनम्

> अनायुष्यं त्व् एवं-मुखस्य भोजनं मातुर्

इत्य् उपदिशन्ति *(येन जीवन्-मातृको नैतत् कुर्यात्)* २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. But they declare, that the life of the mother of that person who eats at this ceremony, his face turned in that direction, will be shortened. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनायुष्यं त्वैवंमुखस्य भोजनं मातुरित्युपदिशन्ति ॥२॥

टिप्पनी⑥

यदेवंमुखस्य दक्षिणामुखस्य भोजनं तत् भोक्तुर्या माता तस्या अनायुष्यमनायुष्यकरमिति धर्मज्ञा उपदिशन्ति । तस्मान्मातृमता नैतद्व्रतं कार्यमिति ॥२॥

03 औदुम्बरश्चमसः सुवर्णनाभः प्रशास्तः

औदुम्बरश् चमसः सुवर्ण-नाभः प्रशास्तः ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. A vessel of brass, the centre of which is gilt, is best (for this occasion).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

औदुम्बरश्चमसः सुवर्णनाभः प्रशास्तः ॥३॥

टिप्पनी⑥

चमु भक्षणे । यत्र चम्यते स चमसो भोजनपात्रम् । औदुम्बरस्ताम्रमयः सुवर्णेन मध्येऽलंकृतस्स प्रशास्तः प्रशस्तो भोजने ॥३॥

04 न चान्येनापि भोक्तव्यः

न चान्येनापि भोक्तव्यः ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. And nobody else shall eat out of that vessel. 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नचाऽन्येनाऽपि भोक्तव्यम् ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

नचान्येनापि कर्तुः पित्रापि तत्र पात्रे भोक्तव्यम् । अपिर्धात्वार्थानुवादी । भोक्तव्य इति पुंलिङ्गपाठेऽप्येष एवार्थः ॥ ४ ॥

05 यावद्ग्रासं सन्नयन्

यावद्-ग्रासं संनयन् ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. He shall make a lump of as much (food) as he can swallow (at once). 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यावद्ग्रासं सन्नयन्

टिप्पनी⑥

(अग्रे व्याख्यातम्।)

06 अस्कन्दयन्

अस्कन्दयन् ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. (And he shall) not scatter anything (on the ground).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अस्कन्दयन् ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

(अग्रे व्याख्यातम्।)

07 नापजहीत

नापजहीत *(सव्य-पाणिना पात्रम्)* ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

> 7. He shall not let go the vessel (with his left hand);

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नापजहीत *(=सव्यपाणिना न विमुञ्चेत्)* ७

टिप्पनी⑥

(अग्रे व्याख्यातम्।)

08 अपजहीत वा

अपजहीत वा *(प्राणाहुत्य्-ऊर्ध्वम्)*८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. Or he may let it go. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अपजहीत वा ८

टिप्पनी⑥

(अग्रे व्याख्यातम्।)

09 कृत्स्नङ् ग्रासङ् ग्रसीत

कृत्स्नं ग्रासं ग्रसीत सहाङ्गुष्ठम् ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. He shall swallow the whole mouthful at once, introducing it, together with the thumb, (into the mouth.)

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कृत्स्नं ग्रासं ग्रसीत सहाङ्गुष्ठम् ९

टिप्पनी⑥

यावदेव सकृत् ग्रसितुं शक्यं तावदेव सन्नयन् पिण्डीकुर्वन् । अस्कन्दयन् भूमावन्नलेपानपातयन् कृत्स्नं ग्रासं ग्रसीतेन्यन्वयः । सहाङ्गुष्ठम् आस्येऽपि ग्रासप्रवेशे यथाङगुष्ठोऽप्यनुप्रविशति तथा सर्वानेव ग्रासानुक्तेन प्रकारेण ग्रसति ग्रसतो मध्ये क्रियान्तरविधिः-नाऽपजिहीत भोजन पात्रं सव्येन पाणिना न विमुञ्चेत् । अपजिहीत वा विमुञ्चेद्वा । किमर्थमिदम् यावता न प्रकारान्तरं सम्भवति, सत्यं, 'प्रकमात्तु नियम्यत' इति न्यायेन य एव प्रकारः प्रथमे भोजने स एवाऽऽन्तादनुष्ठातव्य इत्येवर्थमिदम् ॥ ५॥

10 न च मुखशब्दङ्

न च मुख-शब्दं कुर्यात् १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. He shall make no noise with his mouth (whilst eating).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न च मुखशब्दं कुर्यात् ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

भोजनदशायामिदम् । एवमुत्तरम् ॥ ६॥

11 पाणिञ् च नावधूनुयात्

पाणिं च नावधूनुयात् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. And he shall not shake his right hand (whilst eating).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पाणिं च नाऽवधूनुयात् ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

पाणिरत्र दक्षिणः ॥७॥

12 आचम्य चोर्ध्वौ पाणी

आचम्य चोर्ध्वौ पाणी धारयेद् आ प्रोदकी-भावात् *(=शुष्कभावात्)* १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. After he (has eaten and) sipped water, he shall raise his hands, until the water has run off (and they have become dry).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आचम्य चोर्ध्वौ पाणी धारयेदाप्रोदकीभावात् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

भुक्त्वाऽऽचम्य पाणी ऊर्ध्वौ धारयेत् यावत् प्रगतोदकौ शुष्कोदकौ भवतः ॥ ८॥

13 ततो ऽग्निमुपस्पृशेत्

ततो ऽग्निम् उपस्पृशेत् १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. After that he shall touch fire.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ततोऽग्निमुपस्पृशेत् ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

भुक्त्वा नियमेनाग्निरुपस्प्रष्टव्यः ॥ ९॥

14 दिवा च न

दिवा च न भुञ्जीतान्यन् मूलफलेभ्यः १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. And (during this ceremony) he shall not eat in the day-time anything but roots and fruit.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दिवाच न भुञ्जीताऽन्यन्मूलफलेभ्यः ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

मूलानि कन्दाः । फलान्याम्रादीनि । तेभ्योऽन्यद्दिवा न भुञ्जीत । तद्भक्षणे न दोषः ॥ १०॥

15 स्थालीपाकानुदेश्यानि च वर्जयेत्

स्थालीपाक*(दान-)*+अनुदेश्यानि *(=देवपितृभ्यः सङ्कल्पितानि)* च वर्जयेत् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. And let him avoid Sthālīpāka-offerings, and food offered to the Manes or to the Gods.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्थालीपाकानुदेश्यानि च वर्जयेत् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

7'तेन सर्पिष्मता ब्राह्मणं भोजये'दित्यादौ ब्राह्मणो भूत्वा न भुञ्जीत अनुदेश्यानि च पितृभ्यो देवताभ्यश्च सङ्कलिपनानि च न भुञ्जीत ॥११॥

१. आप०गृ० ७. १५.

16 सोत्तराच्छादनश्चैव यज्ञोपवीती भुञ्जीत

सोत्तराच्छादनश् चैव यज्ञोपवीती *(=उत्तरीयं यज्ञोपवीतवत् कृत्वा)* भुञ्जीत १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. He shall eat wearing his upper garment over his left shoulder and under his right arm. 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सोत्तराच्छादनश्चैव यज्ञोपवीती भुञ्जीत ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

उत्तराच्छादनमुपरिवासः । तेन यज्ञोपवीतेन यज्ञोपवीतं कृत्वा भुञ्जीत । नाऽस्य भोजने "अपि वा सूत्रमेवोपवीतार्थ" इत्ययं कल्पो भवतीत्येके । समुच्चय इत्यन्ये ॥ १२ ॥

17 नैय्यमिकन् तु श्राद्धं

नैय्यमिकं *(→मासि मासि क्रियमाणं)* तु श्राद्धं स्नेहवद्
एव दद्यात् १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. At the (monthly) Śrāddha which must necessarily be performed, he must use (food) mixed with fat.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नैयमिकं तु श्राद्धं स्नेहवदेव दद्यात् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

यन्नियमेन कर्तव्यं मासि श्राद्धं, तत् स्नेहद्रव्ययुक्तमेव दद्यात् । न शुष्कम् ॥ १३ ॥

18 सर्पिर्मांसमिति प्रथमः कल्पः

सर्पिर् मांसम् इति प्रथमः कल्पः १८

▼

⑤

>

▼ Bühler

18. The first (and preferable) alternative (is to employ) clarified butter and meat.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्पिर्मांसमिति प्रथमः कल्पः ॥ १४ ॥

प्रस्तावः⑥

तत्र विशेषः—

टिप्पनी⑥

स्पष्टम् ॥ १४ ॥

19 अभावे तैलं शाकमिति

अभावे तैलं शाकम् इति १९

▼

⑤

>

▼ Bühler

19. On failure (of these), oil of sesamum, vegetables, and (similar materials may be used).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अभावे तैलं शाकमिति ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

सर्पिषोऽभावे तैलं मांसस्याऽभावे शाकम् । इतिशब्दाद्यच्चान्यदेवं युक्तम् ॥ १५ ॥

20 मघासु चाधिकं श्राद्धकल्पेन

मघासु चाधिकं श्राद्ध-कल्पेन
सर्पिर् ब्राह्मणान् भोजयेत् २०

▼

⑤

>

▼ Bühler

20. And under the asterism Maghā he shall feed the Brāhmaṇas more (than at other times) with (food mixed with) clarified butter, according to the rule of the Śrāddha.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मघासु चाधिकं श्राद्धकल्पेन सर्पिर् ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥१६॥

टिप्पनी⑥

मघासु पूर्वपक्षेऽपि श्राद्धविधानेन सर्पिर्मिश्रमन्नं ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥१६॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने एकोनविंशी काण्डिका ॥ १९ ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
4. Manu II, 35.↩
5. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
6. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
7. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
8. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which,

according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

२०①

01 मासिश्राद्धे तिलानान् द्रोणन्④

मासि-श्राद्धे
तिलानां द्रोणं द्रोणं येनोपायेन *(= अभ्यङ्ग-पाकादौ)* शक्नुयात्
तेनोपयोजयेत् १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. At every monthly Śrāddha he shall use, in whatever manner he may be able, one droṇa of sesamum. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

मासि श्राद्धे तिलानां द्रोणंद्रोणं येनोपायेन शक्नुयात् तेनोपयोजयेत् ॥ १॥

टिप्पनी⑥

येनोपायेनोपयोजयितुं शक्नुयात् अभ्यङ्गे, उद्वर्तने, भक्ष्ये, भोज्ये चेति तेनोपायेन मासिश्राद्धे तिलानां द्रोणं द्रोणमुपयोजयेत् । तत्रैकैकस्य ब्राह्मणस्य तिलानां द्रोणं द्रोणमुपयोजयितुमशक्यत्वात् समुदितानुपयोजयेत् । द्रोणंद्रोणमिति वीप्सावचनं तु

प्रतिमासिश्राद्धमुपयोजनार्थमिति केचित् । अन्ये तु एवंभूताः प्रबलाः प्रयत्नेनान्विष्य भोजयितव्या इति ॥ १ ॥
02 समुदेतांश्च भोजयेन्न चातद्गुणायोच्छिष्टन्

समुदेतांश्च भोजयेन्, न चातद्गुणायोच्छिष्टं दद्युः २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. And he shall feed Brāhmaṇas endowed with all (good qualities), and they shall not give the fragments (of the food) to a person who does not possess the same good qualities (as the Brāhmaṇas).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

समुदेतांश्च भोजयेन्न चाऽतद्गुणायोच्छिष्टं दद्युः ॥२॥

टिप्पनी⑥

व्याख्यातमिदम् । दद्युरिति बहुवचनं तथाविधकर्तृबहुत्वापेक्षम् । वचनव्यत्ययो वा ॥२॥

03 उदगयन आपूर्यमाणपक्षस्यैकरात्रमवरार्ध्यमुपोष्य तिष्येण

उदगयन आपूर्यमाण-पक्षस्यैकरात्रम् अवरार्ध्यम् उपोष्य
तिष्येण पुष्टिकामः स्थालीपाकं श्रपयित्वा

महाराजम्*(=कुबेरम्)* इष्ट्वा
तेन सर्पिष्मता ब्राह्मणं भोजयित्वा
पुष्ट्य्-अर्थेन सिद्धिं वाचयीत ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. He who desires prosperity shall fast in the half of the year when the sun goes to the north, under the constellation Tiṣya, in the first half of the month, for (a day and) a night at least, prepare a Sthālīpāka-offering, offer burnt-oblations to Kubera (the god of riches), feed a Brāhmaṇa with that (food prepared for the Sthālīpāka) mixed with clarified butter, and make him wish prosperity with (a Mantra) implying prosperity. 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

उदगयन आपूर्यमाणपक्षस्यैकरात्रमवरार्ध्यमुपोष्य तिष्येण पुष्टिकामः स्थालीपाकं श्रपयित्वा महाराजमिष्ट्वा तेन सर्पिष्मता ब्राह्मणं भोजयित्वा पुष्ट्यर्थेन सिद्धिं वाचयीत ॥३॥

प्रस्तावः⑥

अथ पुष्टिकामस्यैवाऽपरः प्रयोग आ पटलसमाप्तेः —

टिप्पनी⑥

पुष्टिकामः पुरुष एकरात्रावरमुपवासं कृत्वा उदगयनं आपूर्यमाणपक्षस्य पूर्वपक्षस्य सम्बन्धिना तिष्येण तस्मिन्नक्षत्रे स्थालीपाकं श्रपयित्वा 3महाराजं वैश्रवणं यजेत । आज्यभागान्ते महाराजाय स्वाहेति प्रधानहोमः । स्विष्टकृदादिजयादयः । परिषेचनान्ते तेन सर्पिष्मता स्थालीपाकेन ब्राह्मणं भोजयेत् । उत्तरविवक्षयेदं वचनम् । भोजयित्वा सिद्धिं वाचयीत पुष्टिरस्त्विति ॥ ३ ॥

04 एवमहरहरा परस्मात्तिष्यात्

एवम् अहर् अहर् आ परस्मात् तिष्यात् ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. This (rite he shall repeat) daily until the next Tiṣya(-day).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवमहरहरापरस्मात्तिष्यात् ॥ ४॥

टिप्पनी⑥

एवमिदं स्थालीपाकश्रपणादिसिद्धिवाचनान्तमहरहः कर्तव्यमापरस्मातिष्यात् यावदपरस्तिष्य आगच्छति ॥ ४ ॥

05 द्वौ द्वितीये

द्वौ द्वितीये ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. On the second (Tiṣya-day and during the second month he shall feed) two (Brāhmaṇas).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

द्वौ द्वितीये ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

द्वितीये तिष्ये प्राप्ते द्वौ भोजयेत् । अन्यत्समानम् । एवमातृतीयात् ॥५॥

06 त्रींस्तृतीये

त्रींस्तृतीये ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. On the third (Tiṣya-day and during the third month he shall feed) three (Brāhmaṇas).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

श्रीस्तृतीये ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

तृतीये तिष्ये त्रीन् भोजयेदाचतुर्थात् ॥ ६ ॥

07 एवं संवत्सरमभ्युच्चयेन

एवं संवत्सरम् अभ्युच्चयेन ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. In this manner (the Tiṣya-rite is to be performed) for a year, with a (monthly) increase (of the number of Brāhmaṇas fed).}

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवं संवत्सरमभ्युच्चयेन ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

एवमेतत्कर्म यावत्संवत्सरः पूर्यते तावत् कर्तव्यम् । ब्राह्मणभोजनं चाऽभ्युच्चयेन भवति । चतुर्थीप्रभृति चत्वारः, पञ्चमप्रभृति पञ्चेत्यादि ॥७॥

08 महान्तम् पोषम् पुष्यति

महान्तं पोषं पुष्यति ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. (Thus) he obtains great prosperity.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

महान्तं पोषं पुष्यति ॥ ८॥

प्रस्तावः⑥

एवं कृते फलमाह—

टिप्पनी⑥

महत्या पुष्टया युक्तो भवति ॥ ८ ॥

09 आदित एवोपवासः

आदित एवोपवासः ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. But the fasting takes place on the first (Tiṣya-day) only.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आदित एवोपवासः ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

उपवासस्त्वादित एव पुष्ये भवति । न प्रतिपुष्यम् ॥९॥

10 आत्ततेजसाम् भोजनं वर्जयेत्

आत्त-तेजसां भोजनं वर्जयेत् १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. He shall avoid to eat those things which have lost their strength (as butter-milk, curds, and whey).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आत्ततेजसा भोजनं वर्जयेत् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

आत्ततेजांसि तक्रवाजिनादीनि । तानि नोपभुञ्जीत ॥ १०॥

11 भस्मतुषाधिष्ठानम्

भस्म-तुषाधिष्ठानम् ११

▼

⑤

>

▼ Bühler

11. He shall avoid to tread on ashes or husks of grain. 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भस्मतुषाधिष्ठानम् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

वर्जयेदित्येव । भस्मतुषांश्च नाऽधितिष्ठेत् नाऽऽक्रामेत् ॥ ११ ॥

12 पदा पादस्य प्रक्षालनमधिष्ठानञ्

पदा पादस्य प्रक्षालनम् अधिष्ठानं च वर्जयेत् १२

▼

⑤

>

▼ Bühler

12. To wash one foot with the other, or to place one foot on the other,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पदा पादस्य प्रक्षालनमधिष्ठानं च वर्जयेत् ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

एकेन पादेन पादान्तरस्य प्रक्षालनं अधिष्ठानं च वर्जयेत् न कुर्यात् ॥१२॥

13 प्रेङ्खोलनञ् च पादयोः

प्रेङ्खोलनं च पादयोः १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. And to swing his feet,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रेङ्खोलनं च पादयोः ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

प्रेङ्खोलनं दोलनमितस्ततश्चालनम् ॥ १३ ॥

14 जानुनि चात्याधानञ् जङ्घायाः

जानुनि चात्याधानं जङ्घायाः १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. And to place one leg crosswise over the knee (of the other),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

जानुनि चाऽत्याधानं जङ्घायाः ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

एकस्मिन् जानुनि इतरस्या जङ्घायाः अत्याधानमवस्थापनं च वर्जयेत् ॥ १४ ॥

15 नखैश्च नखवादनम्

नखैश् च नखवादनम् १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. And to make his nails

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नखैश्च नखवादनः ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

स्पष्टम् ॥ १५॥

16 स्फोटनानि चाकारणात्

स्फोटनानि चाकारणात् १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. Or to make (his finger-joints) crack without a (good) reason, 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्फोटनानि चाऽकारणात् ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

पर्वसन्धीनां स्फोटनानि वर्जयेत् अकारणात्, कारणं श्रमवातादि । वादनस्फोटनानीति समासपाठेऽप्येष एवार्थः ॥ १६ ॥

17 यच्चान्यत्परिचक्षते

यच् चान्यत् परिचक्षते १७

▼

⑤

>
▼ Bühler

17. And all other (acts) which they blame.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यच्चान्यत्परिचक्षते ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

यच्चान्यदेवं उक्तव्यतिरिक्तं तृणच्छेदनादि शिष्टाः परिचक्षते गर्हन्ते तदपि वर्जयेत् ॥ १७ ॥

18 योक्ता च धर्मयुक्तेषु

योक्ता च धर्म-युक्तेषु द्रव्य-परिग्रहेषु च १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. And let him acquire money in all ways that are lawful.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

योक्ता च धर्मयुक्तेष्ठ द्रव्यपरिग्रहेषु च ॥ १८ ॥

टिप्पनी⑥

एकश्चशब्दोऽनर्थकः । केचिन्नैव पठन्ति । धर्माविरुद्धा ये द्रव्यपरिग्रहास्तेषु च योक्ता उत्पादयिता स्यान्निरीहस्स्यात् ॥ १८ ॥

19 प्रतिपादयिता च तीर्थे

प्रतिपादयिता च तीर्थे १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. And let him spend money on worthy (persons or objects). 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रतिपादयिता च तीर्थे ॥ १९॥

टिप्पनी⑥

तीर्थं गुणवत् पात्रं, यज्ञो वा । तत्र द्रव्यस्याऽर्जितस्य प्रतिपादयिता स्यात् ॥ १९ ॥

20 यन्ता चातीर्थे यतो

*(दानस्य नि)*यन्ता चातीर्थे - यतो न भयं स्यात् २०

▼

⑤

>

▼ Bühler

20. And let him not give anything to an unworthy (person), of whom he does not stand in fear.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यन्ता चाऽतीर्थे यतो न भयं स्यात् ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

यन्ता नियन्ता अप्रदाता अतीर्थे अप्रदाता च स्यात् । यतः पुरुषादप्रदानेऽपि न भयं स्यात् । भयसम्भवे तु पिशुनादिभ्यो देयम् ॥ २० ॥

21 सङ्ग्रहीता च मनुष्यान्

संग्रहीता च मनुष्यान् *(हितवचनादिभिः)* २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. And let him conciliate men (by gifts or kindness).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सङ्ग्रहीता च मनुष्यान् ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

अर्थप्रदानप्रियवचनानुसरणादिभिर् मनुष्याणां सङ्ग्रहणशीलस् स्यात् ॥ २१ ॥

22 भोक्ता च धर्माविप्रतिषिद्धान्भोगान्

भोक्ता च धर्माविप्रतिषिद्धान् भोगान् *(5)*२२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. And he may enjoy the pleasures which are not forbidden by the holy law.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भोक्ता च धर्माविप्रतिषिद्धान् भोगान् ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

धर्माविरुद्धा ये भोगाः स्रक्चन्दनस्वभार्यासेवनादयः, तेषां च भोगशीलस्स्यात् ॥ २२ ॥

23 एवमुभौ लोका वभिजयति

एवम् उभौ लोका वभिजयति २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. (Acting) thus he conquers both worlds.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवमुभौ लोकावभिजयति ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

एवं महत्या पुष्टया युक्त उक्तप्रकारमनुतिष्ठन्नुभौ लोकावभिजयति भोगेनेमं लोकं, तीर्थे प्रतिपादनेन चाऽमुं लोकमिति ॥ २३ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रे द्वितीयप्रश्ने विंशी कण्डिका ॥ २० ॥

इति चापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तमिश्रविरचितायामुज्ज्वलायां द्वितीयप्रश्नेऽष्टमः पटलः ॥ ८॥

इत्यष्टमः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
3. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
4. Manu II, 35.↩
5. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
6. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially

ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

०९①

२१①

01 चत्वार आश्रमा गार्हस्थ्यमाचार्यकुलम्④

चत्वार आश्रमा गार्हस्थ्यम् आचार्यकुलं मौनं *(=मुनिता/ सन्यासः)* वानप्रस्थ्यम् इति १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. There are four orders, viz. the order of householders, the order of students, the order of ascetics, and the order of hermits in the woods. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

चत्वार आश्रमा गार्हस्थ्य, माचार्यकुलं, मौनं, वानप्रस्थ्यमिति ॥१॥

प्रस्तावः⑥

'सर्वाश्रमाणां समयपदानी'त्युक्तं पुरस्तात् । के पुनस्ते आश्रमाः? इत्यत आह—

टिप्पनी⑥

आश्राम्यन्त्येषु श्रेयोऽर्थिनः पुरुषा इत्याश्रमाः । एषा सामान्यसंज्ञा । गृहे तिष्ठति कुटुम्बरक्षणपर इति गृहस्थः । तस्य भावो गार्हस्थ्यम् । स एक आश्रमः । आचार्यकुलं तत्र वासो लक्षणया सोऽप्येकः। 'मनु अवबोधन' मनुत इति मुनिर्ज्ञानपरः । तस्य भावो मौनम् । सोऽपरः। वनं प्रतिष्ठत इति वनप्रस्थः। स एव वानप्रस्थः। प्रज्ञादित्वादण् । तस्य भावो वानप्रस्थ्यम् । इतिशब्दः परिसमाप्त्यर्थः । एतावन्त एवाऽऽश्रमा इति । चतुर्णामेवोपदेशेऽपि चत्वार इति वचनं "2ऐकाश्रम्यं त्वाचार्याः प्रत्यक्षविधानात् गार्हस्थ्यस्ये"ति स्मृत्यन्तरोक्तं मा ग्राहीदिति ॥ १॥
02 तेषु सर्वेषु यथोपदेशमव्यग्रो

तेषु सर्वेषु यथोपदेशम् अव्यग्रो वर्तमानः क्षेमं गच्छति २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. If he lives in all these four according to the rules (of the law), without allowing himself to be disturbed (by anything), he will obtain salvation. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषु सर्वेषु यथोपदेशमव्यग्रो वर्तमानः क्षेमं गच्छति ॥

टिप्पनी⑥

तेष्वाश्रमेषु चतुर्ष्वपि यथाशास्त्रमव्यग्रस्समाहितमना भूत्वा यो वर्तते, स क्षेममभयं पदं गच्छति । अनेनाऽऽश्रमविकल्प उक्तो वेदितव्यः निःश्रेयसार्थिनाऽन्यतमस्मिन्नाश्रमे यथाशास्त्रमवहितेन वर्तितव्यमिति । तथा च गौतमः-4 'तस्याऽश्रमविकल्पमेके ब्रुवत' इति ॥ २ ॥

03 सर्वेषामुपनयनप्रभृति समान आचार्यकुले

सर्वेषाम् उपनयन-प्रभृति समान आचार्य-कुले वासः ३

▼

⑤

>

▼ Bühler

3. The duty to live in the teacher's house after the initiation is common to all of them. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वेषामुपनयनप्रभृति समान आचार्यकुले वासः ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

उपनयनप्रभृति य आचार्यकुले वासोऽष्टाचत्वारिंशद्वर्षादीनामन्यतमस्स सर्वेषामाश्रमाणां समानः ॥३॥

04 सर्वेषामनूत्सर्गो विद्यायाः

सर्वेषाम् अनूत्सर्गो विद्यायाः ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. Not to abandon sacred learning (is a duty common) to all.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वेषामनूत्सर्गो विद्यायाः ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

अनूत्सर्गः छान्दसो दीर्घः । विद्याया अनूत्सर्गोऽपि सर्वेषामाश्रमाणां समानः । तस्मादाचार्यकुले वासस्समान इति ॥ ४॥

05 बुद्ध्वा कर्माणि यत्कामयेत

बुद्ध्वा कर्माणि यत् कामयेत तद् आरभेत ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. Having learnt the rites (that are to be performed in each order), he may perform what he wishes.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

बुद्ध्वा कर्माणि यत्कामयते तदारभेत ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

प्रत्याश्रमं यानि कर्माणि विहितानि, तानि बुद्ध्वा गृहस्थस्यैतानि कर्तव्यानि । एषामननुष्ठाने प्रत्यवायः । फलं चेदमेषाम्, एतानि शक्यान्यनुष्ठातुं, नैतानीत्याचार्यादुपश्रुत्य यत्कर्म फलं वा कामयेत तदारभेत तमाश्रमं प्रतिपद्यतेति ॥५॥

06 यथा विद्यार्थस्य नियम

यथा विद्यार्थस्य नियम,
एतेनैवान्तम् अनूपसीदत*(ः= उपसदनतः)*
आचार्य-कुले शरीर-न्यासो ब्रह्मचारिणः *(नैष्ठिकस्य)*६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. Worshipping until death (and living) according to the rule of a (temporary) student, a (professed) student may leave his body in the house of his teacher.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथा विद्यार्थस्य नियम एतेनैवान्तमनूपसीदत आचार्यकुले शरीरन्यासो ब्रह्मचारिणः ॥६॥

प्रस्तावः⑥

तत्र गार्हस्थ्यस्य पूर्वमेव प्रपञ्चितत्वाद्
अध्ययनानन्तरं प्रतिपित्सितस्याऽऽचार्यकुलस्य स्वरूपम् आह—

टिप्पनी⑥

यथा विद्यार्थस्य उपकुर्वाणस्य ब्रह्मचारिणः
'अथ ब्रह्मचर्यविधि'र् इत्य् आरभ्याऽग्नीन्धनादिनियम उक्तः,
अतस्तेनैव नियमेनाऽऽन्तम् आशरीरपाताद्
अनूपसीदतः उपसदनम् एवानूपसीदनं तत्कुर्वतः
आचार्य-कुले शरीर-न्यासः परित्यागो भवति ब्रह्मचारिणो नैष्ठिकस्य । तत्रैवाऽऽमरणात्तिष्ठेत्,
नाऽऽश्रमान्तरं गच्छेत् । यदि तमेवाश्रममात्मनः क्षेमं मन्येतेति मनुः—
6 आचार्ये तु खलु प्रेते गुरुपुत्रे गुणान्विते ।
गुरुदारे सपिण्डे वा गुरुवद्वृत्तिमाचरेत् ॥
एषु त्वविद्यमानेषु स्थानासनविहारवान् ।
प्रयुञ्जानोऽग्निशुश्रूषां साधयेद्देहमात्मनः ॥
एवं चरति यो विप्रो ब्रह्मचर्यमविप्लुतः। स गच्छत्युत्तमं स्थानं न चेहाऽऽजायते पुनः ॥' इति ॥६॥

07 अथ परिव्राजः

अथ परिव्राजः ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. Now (follow the rules) regarding the ascetic (Saṃnyāsin).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ परिव्राजः ॥ ७ ॥

टिप्पनी⑥

अथाऽनन्तरं परिव्राजो धर्म उच्यते । दृष्टादृष्टार्थान् सर्वानेवाऽऽरम्भान् परित्यज्याऽऽत्मलाभाय सन्यासाश्रमं परिव्रजतीति परिव्राट् सन्यासी ॥७॥

08 अत एव ब्रह्मचर्यवान्प्रव्रजति

अत एव ब्रह्मचर्यवान्प्रव्रजति ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. Only after (having fulfilled) the duties of that (order of students) he shall go forth (as an ascetic), remaining chaste. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अत एव ब्रह्मचर्यवान् प्रव्रजति ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

अत एव ब्रह्मचर्याश्रमादेव ब्रह्मचर्यवानविप्लुतब्रह्मचर्यः प्रव्रजति परिव्रज्यां कुर्याद्यदि तथैव पक्वकषायो भवति । श्रूयते च8 'ब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजेत् गृहाद्वा वनाद्वेति, 'यदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेदि'ति च । अत्र केचिदाहुः-'अत एवे'ति वचनात् गृहाश्रमं प्रविष्टस्य तत्परित्यागेनाश्रमान्तरप्राप्तिराचार्यस्याऽनभिमतैवेति लक्ष्यते । तत्रायमभिप्रायः– दारपरिग्रहे सति 'यावज्जीवमग्निहोत्रं जुहुयादि'ति श्रुत्या विरुध्यते।

स कथं प्रव्रजेदिति । तस्मात्सत्यपि वैराग्ये काम्यस्य कर्मणः परित्यागेन नित्यानि नैमित्तिकानि च कर्माणि कुर्वन् प्रतिषिद्धानि वर्जयन् गृहस्थ एव मुच्यत इति । तथाऽऽह याज्ञवल्क्यः—
9 'न्यायार्जितधनस्तत्वज्ञाननिष्ठोऽतिथिप्रियः ।
श्राद्धकृत्सत्यवादी च गृहस्थोऽपि विमुच्यते ॥' इति ।
अथ योऽनाहिताग्निस्तेस्य विरक्तस्य मुन्याश्रमप्रवेशे को विरोधः? ऋणश्रुतिविरोधः—'10जायमानो वै ब्राह्मणस्त्रिभिर्ऋणवा जायते ब्रह्मचर्येणर्षिभ्यो यज्ञेन देवेभ्यः प्रजया पितृभ्य' इति । मनुरपि—
11 ऋणानि त्रीण्यपाकृत्य मनो मोक्षे निवेशयेत् ।
अनपाकृत्य मोक्षं तु सेवमानो व्रजत्यधः॥ इति ।
मोक्षो मोक्षाश्रमः। नन्वेवं ब्रह्मचर्यादपि प्रव्रज्या नोपपद्यते । अथ तत्र12 'यदहरेव विरजेदि'ति श्रुत्या युक्तं प्रव्रजितुं तदा विरक्तस्य, 13गार्हस्थ्यादपि भविष्यति । स्मर्यते च—
14 प्राजापत्यां निरूपयेष्टिं सर्ववेदसदक्षिणाम् ।
आत्मन्यग्नीन् समारोप्य ब्राह्मणः प्रव्रजेत् गृहादिति ॥
तथा यो गृहस्थो वृद्धो मृतभार्यः पुनर्दारक्रियायामसमर्थः, तस्यापि युज्यते प्रव्रज्या। तस्मा'द्यदहरेव विरजे'दि15त्येषएव कालः प्रव्रज्यायाः, सर्वमन्यदविरक्तस्येति युक्तम् । एवकारस्तु सूत्रे श्रुत्यनुसारेण प्रयुक्तः । यथा 'गृहाद्वा वनाद्वे'ति ब्रुवाणैव श्रुतिब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजेदित्याह, तथेति ॥८॥

09 तस्योपदिशन्ति

तस्योपदिशन्ति ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. For him (the Saṃnyāsin) they prescribe the following rules).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्योपदिशन्ति ॥ ९॥

टिप्पनी⑥

तस्य परिव्राजः कर्तव्यमुपदिशन्ति धर्मज्ञाः ॥९॥

10 अनग्निरनिकेतः स्यादशर्माशरणो मुनिः

अनग्निर् अनिकेतः स्याद्
अशर्माशरणो मुनिः
स्वाध्यायैवोत्सृजमानो वाचं
ग्रामे प्राण-वृत्तिं प्रतिलभ्य
+अनिहो ऽनमुत्रश् चरेत् १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. He shall live without a fire, without a house, Without pleasures, without protection. Remaining silent and uttering

speech only on the occasion of the daily recitation of the Veda, begging so much food only in the village as will sustain his life, he shall wander about neither caring for this world nor for heaven. 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनग्निरनिकेतस्स्यादशर्माऽशरणो मुनिःस्वाध्याय एवोत्सृजमानो वाचं ग्रामे प्राणवृत्तिं प्रतिलभ्याऽनिहोऽनमुत्रश्चरेत् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

ब्रह्मचारिणस्समिदाधानाद्यग्निकार्यं गृहस्थस्यौपासनाद्यग्निहोत्रादि वानप्रस्थस्य17 'श्रामणकेनाग्निमाधाये'ति विहितेऽग्नौ होमादि । तस्य तु नैवंविधं किञ्चिदग्निकार्यमस्तीत्यनग्निः । निकेतो निवासस्थानं स्वभूतं तदभावादनिकेतः । शर्म सुखं वैषयिकं तदस्य नास्तीत्यशर्मा । किञ्चिदपि शरणं न प्रतिपन्नः नवा कस्यचिच्छरणभूत इत्यशरण । स्वाध्यायः प्रणवादिपवित्राणां जपः ।

अत्र बौधायनः —
'वृक्षमूलिको वेद सन्न्यासी वेदो वृक्षस्तस्य मूलं प्रणवः प्रणवात्मको वेदः प्रणवो ब्रह्मभूयाय कल्पत इति होवाच प्रजापति'रिति । तत्रैव वाचं विसृजेत् । अन्यत्र मौनव्रतः स्यात् । यावता प्राणा ध्रियन्ते सा प्राणवृत्तिः । तावतीं भिक्षां ग्रामे प्रतिलभ्य । एतावानस्य ग्रामे प्रवेशः। अन्यदा बहिर्वासः । इहार्थाः कृष्यादयः परलोकार्थाश्च जपहोमादयो यस्य न सन्ति सोऽनिहोऽनमुत्र इत्युक्तः। एवंभूतश्चरेत् । नैकस्मिन् ग्रामे द्व्यहमपि वसेत् । अत्र गौतमः— 18'न द्वितीयामपर्तु रात्रिं ग्रामे वसेदि'ति 19वर्षासु ध्रुवशील'इति च ॥ १०॥

11 तस्य मुक्तम् आच्छादनं

तस्य मुक्तम् *(=त्यक्तम्)* आच्छादनं विहितम् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. It is ordained that he shall wear clothes thrown away (by others as useless).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्य मुक्तमाच्छादनं विहितम् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

यत् परैर्मुक्तं परित्यक्तमयोग्यतया, तत् तस्य विहितमाच्छादनं, तद्वास आच्छादयेत् । निर्णिज्येति गौतमः ॥ ११ ॥

12 सर्वतः परिमोक्षमेके

सर्वतः *(विधितो निषेधतश्च)* परिमोक्षम् एके १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. Some declare that he shall go naked. 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वतः परिमोक्षमेके ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

सवैरेव वासोभिः परिमोक्षमेक उपादिशन्ति । न किञ्चिदपि वासो बिभृयात् । नग्न एव चरेदिति ।
अपर आह—
सर्वतो विधितो निषेधतश्चाऽस्य परिमोक्षमेके ब्रुवते ।
न किञ्चिदस्य कृत्यं न किञ्चिदस्य वर्ज्यमिति ॥ १२ ॥

13 सत्यानृते सुखदुःखे वेदानिमं

सत्यानृते सुखदुःखे वेदानिमं लोकममुं च परित्यज्यात्मानम् अन्विच्छेत् १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. Abandoning truth and falsehood, pleasure and pain, the Vedas, this world and the next, he shall seek the Ātman. 21

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सत्यानृते सुखदु:खे वेदानिमं लोकममुं च परित्यज्याऽऽत्मानमन्विच्छेत् ॥ १३ ॥

प्रस्तावः⑥

एतदेवोदाहरणैः प्रपञ्चयति—

टिप्पनी⑥

सत्यं वक्तव्यमिति योऽयं नियमस्तं परित्यज्य तथा तत्र वक्तव्यमनृतं 22"तद्धि सत्याद्विशिष्यत" इत्यादिके विषये अनृतं वक्तव्यमिति योऽयं नियमस्तं च परित्यज्य । सुखं मृष्टभोजनादिजन्यम् । दु:खं शीतवातादिजन्यम् । वेदान् स्वाध्यायाध्ययनम् । इमं लोकं ऐहलौकिकं काम्यं कर्म । अमुं च लोकं पारलौकिकं काम्यं कर्म । सर्वमेतत् परित्यज्य आत्मानमध्यात्मपटलो(१-२२.२३)क्तमन्विच्छेत् उपासीतेति। तदेवं ज्ञानबलावलम्बनेन हतविधिनिषेधा ये स्वैरं प्रवर्तन्ते सिद्धाः तेषां मतमुपन्यस्तम् ॥ १३॥

14 बुद्धे क्षेमप्रापणम्

बुद्धे क्षेम-प्रापणम् १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. (Some say that) he obtains salvation if he knows (the Ātman).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

बुद्धे क्षेमप्रापणम् ॥ १४ ॥

प्रस्तावः⑥

अथैतेषामेव स्वैरचारिणां23 किं तत्र प्रमाणम् ? तत्राह—

टिप्पनी⑥

आत्मनि बुद्धेऽवगते सति तदेव ज्ञानं सर्वमशुभं प्रक्षाल्य क्षेमं प्रापयति । श्रयते हि—
24 न कर्मणा वर्धते नो कनीयान् । तस्यैवात्मा पदवित्तं विदित्वा । न कर्मणा लिप्यते पापकेने'ति25 'तद्यथेषीकातृलमग्नौ प्रोतं प्रदूयेत एवं हास्य सर्वे पाप्मान प्रदूयन्ते' इति च ॥
स्मर्यते च—
26यथैधांसि समिद्धोऽग्निभस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ॥
ज्ञानाग्निस्सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ॥ इति ॥ १४ ॥

15 तच्छास्त्रैर्विप्रतिषिद्धम्

तच् छास्त्रैर् विप्रतिषिद्धम् १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. (But) that (opinion) is opposed to the Śāstras. 27

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तच्छास्त्रैर्विप्रतिषिद्धम् ॥१५॥

प्रस्तावः⑥

तदिदं निराकरोति—

टिप्पनी⑥

यानि यतेर् एव कर्तव्यप्रतिपादनपराणि शास्त्राणि,
तैर् एव तद्विप्रतिषिद्धम् । तत्र मनुः—

28क्रुध्यन्तं न प्रतिक्रुध्येदाक्रुष्टः कुशलं वदेत् ।
सप्तद्वारावकीर्णां च न वाचमनृतां वदेत् ॥
न चोत्पातनिमित्ताभ्यां न नक्षत्राङ्गविद्यया ।
नानुशासनवादाभ्यां भिक्षां लिप्सेत कर्हिचित् ॥ इति
अतो यतिमेव प्रकृत्य यानि विहितानि कर्माणि तानि कर्तव्यानि । यानि च निषिद्धानि तानि च वर्जनीयानि ॥ १५ ॥

16 बुद्धे चेत्क्षेमप्रापणमिहैव न

बुद्धे चेत्क्षेमप्रापणम्
इहैव न दुःखम् उपलभेत १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

16. (For) if salvation were obtained by the knowledge of the Ātman alone, then he ought not to feel any pain even in this

(world).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

बुद्धे चेत्क्षेमप्रापणमिहैव न दुःखमुपलभेत ॥ १६ ॥

प्रस्तावः⑥

'बुद्धे क्षेमप्रापण'मित्येतत् प्रत्यक्षविरुद्धमित्याह—

टिप्पनी⑥

आत्मबोधमात्रेण चेत् क्षेमं प्राप्यते, तदा इहैव शरीरे दुःखं नोपलभेत ज्ञानी । न चैतदस्ति । न हि ज्ञानिनां मूर्धाभिषिक्तंमन्योऽपि क्षुधादुःखमेव तावत् क्षणमात्रमपि सोढुं प्रभवति ॥ १६ ॥

17 एतेन परं व्याख्यातम्

एतेन परं *(=पारलौकिकं [दुःखं])* व्याख्यातम् *(न स्वैरचारिणां निवर्तत इति)*१७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. Thereby that which follows has been declared. 29

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतेन परं व्याख्यातम् ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

परलोके भवमपि दुःखमेतेन व्याख्यातं-न स्वैरचारिणां निवर्तत इति । तस्मात् कर्मभिः परिपक्वकषाय एव श्रवणमनननिदिध्यासनैः साक्षात्कृतात्मस्वरूपः प्रतिषिद्धेषु कटाक्षमप्यनिक्षिपन्नष्टाङ्गयोगनिरतो मुच्यत इति* । अत्र बोधायनः30—'एकदण्डी त्रिदण्डी वेति । गौतम 31-'मुण्डशिखी वे'ति ॥ १७ ॥

- *.एतच्चिह्नानन्तरं अत्र यदुदाहृतं 'ज्ञानेन सर्व दह्यत' इति तत्र ज्ञानदशायाः प्रागर्जितानि कर्माणि प्रायश्चित्तेन ज्ञानेन वा दह्यन्त इत्युच्यते, न पुनर्ज्ञानदशायां स्वैरचारोऽनुज्ञायते। यस्य हि स्वशरीरेऽपि वीभत्सा स कथं पश्वादिभिरविशेषस्त्रीसङ्गमादौ प्रवर्तत" इति भागः क. पुस्तक एवास्ति अधिकपाठतया परिगणितः च. पुस्तके टिप्पण्याम्

18 अथ वानप्रस्थः

अथ वानप्रस्थः १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. Now (follow the rules regarding) the hermit living in the woods.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ वानप्रस्थः ॥ १८॥

टिप्पनी⑥

अनन्तरं वानप्रस्थाश्रम उच्यते ॥ १८॥

19 अत एव ब्रह्मचर्यवान्प्रव्रजति

अत एव ब्रह्मचर्यवान्प्रव्रजति १९

▼

⑤

>

▼ Bühler

19. Only after (completing) that (studentship) he shall go forth, remaining chaste.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अत एव ब्रह्मचर्यवान् प्रव्रजति ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

प्रव्रजति प्रकर्षण व्रजति अपुनःप्रवेशाय वनं प्रतिष्ठित इति । तथा च गौतमः32— 'ग्रामं च न प्रविशेदि'ति । गतमन्यत् , उत्तरं च ॥१९॥

20 तस्योपदिशन्ति

तस्योपदिशन्ति २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. For him they give (the following rules):

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्योपदिशन्त्येकाग्निरनिकेतस्स्यादशर्माऽशरणो मुनिःस्वाध्याय एवोत्सृजमानो वाचम् ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

कः पुनरेकोऽग्निः ? न तावदौपासनः, ब्रह्मचारित्वात् । तस्माल्लौकिकेऽग्नौ यथापूर्वं सायंप्रातस्समिध आदध्यादित्यर्थो विवक्षितः।
अपरं आह-' श्रामणकेनाग्निमाधाये'ति गौतमः । अस्यार्थः-श्रामणकं नाम वैखानससूत्रम् । तदुक्तेन प्रकारेण एकोऽग्निराधेयः । तस्मिन् सांयप्रातरग्निकार्यमिति । 33तथा च बौधायनः —'वानप्रस्थो वैखानसशास्त्रसमुदाचारो, वैखानसो वने मूलफलाशी तपस्शीलस्सवनेषूदकमुपस्पृशन् श्रामणकेनाऽग्निमुपसमाधाये'त्यादि । अन्यद्गतम् ॥२०॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने एकविंशी कण्डिका ॥ २१ ॥

21 एकाग्निरनिकेतः स्यादशर्माशरणो मुनिः

एकाग्निर् अनिकेतः स्याद्
अशर्माशरणो मुनिः २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. he shall keep one fire only, have no house, enjoy no pleasures, have no protector, observe silence,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एकाग्निरनिकेतः स्यादशर्माशरणो मुनिः २१

टिप्पनी⑥

(पूर्वसूत्रे द्रष्टव्यम्।)

22 स्वाध्याय एवोत्सृजमानो वाचम्

स्वाध्याय एवोत्सृजमानो वाचम् २१

▼

⑤

>

▼ Bühler

uttering speech on the occasion of the daily recitation of the Veda only. 34

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्वाध्याय एवोत्सृजमानो वाचम् २१

टिप्पनी⑥

(पूर्वसूत्रे द्रष्टव्यम्।)

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
4. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
5. Manu II, 35.↩
6. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

7. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
8. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
9. आप० ध० १. ३१. १.↩
10. यत्किञ्चनदिङ्मुखेन इति क० पु० ।↩
11. प्रतिषेध परिसंख्येत्यनर्थान्तरम् । परिसङ्ख्या वर्जनबुद्धिः । तद्विषयको विधिः परिसंख्याविधिः । स परिसंख्यापदेनाऽप्यभिधीयते इति मीमांसकाना मतम् । अत एव

> विधिरत्यन्तमप्राप्ते नियम पाक्षिके सति ।
> तत्र चान्यत्र च प्राप्ते परिसंख्येति गीयते ॥

 इत्येव वार्तिककारैरुक्तम् । ग्रन्थकारस्त्वयं परिसंख्या नियमविधावेवान्तर्भावयति ॥↩
12. आप० ध० १ ३१. ६.↩
13. इदं च तर्किकादिमतमनुसृत्य प्रभाकरमतञ्च । भाट्टमते तत्तत्कर्मणामेव यागदानहोमादिरूपाणां चोदनालक्षणानां धर्मत्वाङ्गीकारात् । उक्तं हि भट्टपादैः-

> श्रेयो हि पुरुषप्रीतिस्सा द्रव्यगुणकर्मभिः ।
> चोदनालक्षणैस्साध्या तस्मात्तेष्वेव धर्मता ॥ इति । श्लो. वा. १२. १९१.

 ↩
14. पक्षेऽप्राप्तांशस्य पूरणकरणादित्यर्थः ।↩
15. तत्तन्निषेध्यक्रियाप्रागभावपरिपालनादिति यावत् ।↩
16. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
17. आप० ध० १ १२.१०.↩
18. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

19. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

20. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

21. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

22. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

23. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

24. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

25. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

26. आप० ध० १.३०.८.↩

27. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

28. मनु० रमृ० २.६↩

29. Manu II, 144.↩

30. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

31. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

32. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

33. आप० ध० १.३०.८.↩

34. Manu II, 146-148.↩

२२①

01 तस्यारण्यमाच्छादनं विहितम्④

तस्यारण्यम् आच्छादनं विहितम् १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. A dress of materials procured in the woods (skins or bark) is ordained for him. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्याऽऽरण्यमाच्छादनं विहितम् ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

अरण्ये भवमारण्यमजिनवल्कलादि ॥१॥

02 ततो मूलैः फलैः

ततो मूलैः फलैः पर्णैस् तृणैर् इति वर्तयंश् चरेत् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. Then he shall wander about, sustaining his life by roots, fruits, leaves, and grass. 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ततो मूलैः फलैः पर्णैस्तृणैरिति वर्तयंश्चरेत् ॥ २ ॥

टिप्पनी⑥

ततो मूलादिभिर्वर्तयन् वृत्तिः प्राणयात्रा तां कुर्वंश्चरेच्चरणशीलः स्यात् ॥ २॥

03 अन्ततः प्रवृत्तानि

अन्ततः प्रवृत्तानि *(= स्वयम् पतितानि)* ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. In the end (he shall live on) what has become detached spontaneously.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्ततः प्रवृत्तानि ॥३॥

टिप्पनी⑥

मूलादिभिः स्वयंगृहीतैः कञ्चित्कालं वर्तयित्वा अन्ततः अन्ते प्रवृत्तानि स्वयमेव पतितानि अभिनिश्रयेदिति वक्ष्यमाणेन सम्बन्धः । तान्यभिनिश्रित्य तैर्वतयेदिति ॥ ३॥

04 ततोऽपो वायुमाकाशमित्यभिनिश्रयेत्

ततोऽपो वायुम् आकाशम् इत्य् अभिनिश्रयेत् ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. Next he shall live on water, (then) on air, then on ether. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ततोऽपो वायुमाकाशमित्यभिनिश्रयेत् ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

ततः कियन्तञ्चित्कालमब्भक्षः ततो वायुभक्षः तत आकाशमभिनिश्रयेत् न किञ्चित् भक्षयेदिति । अभिनिश्रयणं सेवनम् ॥४॥

05 तेषामुत्तर उत्तरः संयोगः

तेषाम् उत्तर उत्तरः संयोगः फलतो विशिष्टः ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. Each following one of these modes of subsistence is distinguished by a (greater) reward.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषामुत्तर उत्तरस्संयोगः फलतो विशिष्टः ॥५॥

टिप्पनी⑥

संयुज्यते संश्रयत इति संयोगः । तेषां मूलादीनां मध्ये उत्तरमुत्तरं समाश्रयणं फलतो विशिष्टमिति द्रष्टव्यम् ॥ ५॥

06 अथ वानप्रस्थस्यैवानुपूर्व्यमेक उपदिशन्ति

अथ वानप्रस्थस्यैवानुपूर्व्यम् एक उपदिशन्ति ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. Now some (teachers) enjoin for the hermit the successive performance (of the acts prescribed for the several orders). 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ वानप्रस्थस्यैवाऽऽनुपूर्व्यमेक उपदिशन्ति ॥६॥

टिप्पनी⑥

अथेति पक्षान्तरोपन्यासे । पूर्वं ब्रह्मचर्यादेव वनप्रवेश उक्तः । एके वाचार्यास्तस्यैव वानप्रस्थस्याऽऽनुपूर्व्यं कर्मोपदिशन्ति ॥६॥

07 विद्यां समाप्य दारङ्

विद्यां समाप्य
दारं कृत्वाग्नीन् आधाय
कर्माण्य् आरभते, सोमावरार्ध्यानि यानि श्रूयन्ते ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. After having finished the. study of the Veda, having taken a wife and kindled the sacred fires, he shall begin the rites, which end with the Soma-sacrifices, (performing) as many as are prescribed in the revealed texts.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विद्यां समाप्य दारं कृत्वाऽग्नीनाधाय कर्माण्यरभते सोमावरार्ध्यानि यानि श्रूयन्ते ॥ ७ ॥

प्रस्तावः⑥

कथम्? —

टिप्पनी⑥

ब्रह्मचर्ये स्थितो विद्यां समाप्य गृहस्थश्च भूत्वाऽग्नीनाधाय कर्माणि कुर्यात् । कानि ? सोमावरार्ध्यानि अवरार्धं पश्चार्धं तत्र भवोऽवरार्ध्यः सोमः अवरार्ध्यो येषां तानि सोमावरार्ध्यानि सोमान्तानि हविर्यज्ञाख्यानि चातुर्मास्यादीन् हविर्यज्ञान् सोमं चेत्यर्थः । यानि श्रूयन्ते श्रुतौ विहितानि ॥७॥

08 गृहान्कृत्वा सदारः सप्रजः

गृहान् कृत्वा सदारः सप्रजः सहाग्निभिर् बहिर्ग्रामाद् वसेत् ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. (Afterwards) he shall build a dwelling, and dwell outside the village with his wife, his children, and his fires, 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गृहान् कृत्वा सदारस्सप्रजस्सहाग्निभिर्बहिर्ग्रामाद्वसेत् ॥ ८ ॥

टिप्पनी⑥

अथ ग्रामाद्बहिररण्ये गृहान् कृत्वा सकुटुम्बस्सहैव चाग्निभिर्ग्रामाद्बहिर्वसेत् । अस्मिन्पक्षे प्रागुक्तमेकाग्निरित्येतन्नाऽस्ति ॥ ८ ॥

09 एको वा

एको वा ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. Or (he may live) alone.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एको वा ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

अथवा पुत्रेषु भार्यां निक्षिप्य स्वयमेक एव वसेत्। अस्मिन् पक्षे 'प्राजापत्यां निरुप्येष्ट'मिति परिव्राज उक्तेन न्यायेन श्रौतानग्नीनात्मनि समारोप्य श्रामणकेनाऽग्निमाधाय एकाग्निर्भवेत् ॥ ९॥

10 शिलोञ्छेन वर्तयेत्

शिलोञ्छेन+++(=उपात्तशस्यात् क्षेत्रात् शेषावचयनेन)+++ वर्तयेत् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. He shall support himself by gleaning corn. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सिलोञ्छेन वर्तयेत् ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

व्याख्यातः शिलोञ्छः+++(=उपात्तशस्यात् क्षेत्रात् शेषावचयनम्)+++ । तेन वर्तयेत् प्राणयात्रां कुर्यात् । इदं सकुटुम्बस्य एकाकिनश्च साधारणम् । एकाकिन एवेत्यन्ये ॥ १० ॥

11 न चात ऊर्ध्वम्

न चात ऊर्ध्वं प्रतिगृह्णीयात् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. And after that he shall not any longer take presents.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न चाऽत ऊर्ध्वं प्रतिगृह्णीयात् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

यदा सिलोञ्छेन वृत्तिर्जाता अत ऊर्ध्वं न कुतश्चिदपि प्रतिगृह्णीयात् ॥११॥

12 अभिषिक्तश्च जुहुयात्

अभिषिक्तश् च जुहुयात् १२

▼

⑤

>

▼ Bühler

12. And he shall sacrifice (only) after having bathed (in the following manner):

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अभिषिक्तश्च जुहुयात् ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

यदा जुहुयात्तदा अभिषिक्तः स्नातः। अनुवादोऽयं स्नाने विशेषं विधातुम् ॥ १२ ॥

13 शनैरपोऽभ्यवेयादभिघ्नन्न् अभिमुखमादित्यमुदकमुपस्पृशेत्

शनैर् अपोऽभ्यवेयाद्
अभिघ्नन्न्
अभिमुखम् आदित्यम्
उदकम् उपस्पृशेत् *(=स्नायात्)* १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. He shall enter the water slowly, and bathe without*(??)* beating it (with his hand), his face turned towards the sun.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शनैरपोऽभ्युपेयादभिघ्नन्नभिमुख आदित्यमुदकमुपस्पृशेत् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

शनैरवेगेन जलाशयं प्रविशेत् । प्रविश्य चाऽभिघ्नन् हस्तेनोदकं ताडयन् उदकमुपस्पृशेत् स्नायात् आदित्याभिमुखः ॥ १३ ॥

14 इति सर्वत्रोदकोपस्पर्शनविधिः

इति सर्वत्रोदकोपस्पर्शन-विधिः १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. This rule of bathing is valid for all (castes and orders).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

7इति सर्वत्रोदकोपस्पर्शनविधिः ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

सर्ववर्णाश्रमसाधारणमेतत् । तथाचोत्तरत्र तस्य ग्रहणम् ॥ १४ ॥

15 तस्य द्वन्द्वन् द्र

तस्य द्वन्द्वं द्रव्याणाम् एक उपदिशन्ति -
पाकार्थ-भोजनार्थ-
वासि*(=chisel)*-परशु-दात्र*(=असिद)*-काजानाम्*(=mallet)* १५

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. Some enjoin (that he shall prepare) two sets of utensils for cooking and eating, (and) of choppers, hatchets, sickles, and mallets. 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्य द्वन्द्वद्रव्याणामेक उपदिशन्ति पाकार्थं भोजनार्थं वासिपरशुदात्रकाजानाम् ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

यानि पाकार्थानि ताम्रभाण्डादीनि । यानि च भोजनार्थानि कांस्यादीनि । वासिर्दर्व्यादि । तेषां सर्वेषां वास्यादीनां चतुर्णा9मेकैकस्य द्वे द्वे द्रव्ये उत्पाद्ये इत्येक उपदिशन्ति । काजमपि वास्यादिवदुपकरणविशेषो दारुमयः ॥ १५॥

16 द्वन्द्वानामेकैकमादायेतराणि दत्वारण्यमवतिष्ठेत

द्वंद्वानाम् एकैकम् आदायेतराणि *(भार्यायै)* दत्वा ऽरण्यम् अवतिष्ठेत १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. He shall take one of each pair (of instruments), give the others (to his wife), and (then) go into the forest.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

द्वन्दानामेकैकमादायेतराणि दत्वाऽरण्यमवतिष्ठेत ॥१६॥

टिप्पनी⑥

तेषां पाकादिसाधनानां द्रव्याणामेकैकं द्रव्यं स्वयमादायेतराणि भार्यायै दत्वा अरण्यमवतिष्ठेत उपतिष्ठेत् आश्रयेदिति ॥ १६ ॥

17 तस्यारण्येनैवात ऊर्ध्वं होमो

तस्यारण्येनैवात ऊर्ध्वं होमो, वृत्तिः, *(अतिथि-)*प्रतीक्षा, ऽऽच्छादनं च १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. After that time (he shall perform) the burnt-oblations, (sustain) his life, (feed) his guests, and (prepare) his clothes with materials produced in the forest. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्याऽऽरण्येनैवाऽत ऊर्ध्वं होमो वृत्तिः प्रतीक्षाच्छादनं च ॥१७॥

टिप्पनी⑥

तस्य वानप्रस्थस्याऽतोऽरण्यप्रवेशादूर्ध्वं आरण्येनैव नीवारादिना होमः वृत्तिः प्राणयात्रा प्रतीक्षा अतिथिपूजा च आच्छादनं वल्कलादिना ॥ १७ ॥

18 येषु कर्मसु पुरोडाशाश्चरवस्तेषु

येषु कर्मसु पुरोडाशश् चरवस्
तेषु कार्याः १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. Rice must be used for those sacrifices for which cakes mixed with meat (are employed by the householder).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

येषु कर्मसु पुरोडाशाश्चरवस्तेषु कार्याः ॥१८॥

टिप्पनी⑥

येषु दर्शपूर्णमासादिषु पुरोडाशा विहिताः गृहस्थस्य, तेष्वस्य तत्स्थाने 11चरवः कार्याः ॥ १८ ॥

19 सर्वञ् चोपांशु सह

सर्वं चोपांशु - सह स्वाध्यायेन १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. And all (the Mantras), as well as the daily portion of the Veda, (must be recited) inaudibly.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वं चोपांशु सह स्वाध्यायेन ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

सर्वं च कर्मकाण्डं साङ्गं प्रधानमुपांशु भवति पारायणब्रह्मयज्ञाध्ययनेन सह । तदप्युपांशु कर्तव्यमिति ॥ १९ ॥

20 नारण्यमभ्याश्रावयेत्

नारण्यम् अभ्याश्रावयेत् २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. He shall not make the inhabitants of the forest hear (his recitation). 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽऽरण्यमभ्याश्रावयेत् ॥ २०॥

टिप्पनी⑥

उपांशुवचनादेव सिद्धे वचनमाभिमुख्यप्रतिषेधार्थम् । तेनाऽरण्यस्था यथा नाऽऽभिमुख्येन शृणुयुः तावदुपांश्विति ॥ २० ॥

21 अग्न्यर्थं शरणम्

अग्न्य्-अर्थं शरणम् *(=गृहम्)* २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

21. (He shall have) a house for his fire (only).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अग्न्यर्थं शरणम् ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

शरणं गृहं तदग्न्यर्थमेव ॥ २१ ॥

22 आकाशे स्वयम्

आकाशे स्वयम् *(न गृहे)* २२

▼

⑤

>
▼ Bühler

22. He himself (shall live) in the open air.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आकाशे स्वयम् ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

स्वयं चाऽऽकाश एव वसेत् ॥ २२ ॥

23 अनुपस्तीर्णे शय्यासने

अनुपस्तीर्णे शय्य्-आसने

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. His couch and seat, must not be covered (with mats).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनुपस्तीर्णे शय्यासने ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

शयनं चाऽऽसनं चाऽनुपस्तीर्णे देशे कुर्यात् न तु किञ्चिदुपस्तीर्य ॥२३॥

24 नवे सस्ये प्राप्ते

नवे सस्ये प्राप्ते पुराणम् अनुजानीयात् *(विसर्जनाय)* २४

▼

⑤

>

▼ Bühler

24. If he obtains fresh grain, he shall throw away the old (store). 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नवे सस्ये प्राप्ते पुराणमनुजानीयात् ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

नवे धान्ये श्यामाकनीवारादौ प्राप्ते जाते पुराणं पूर्वसञ्चितं सस्यमनुजानीयात् परित्यजेत् । तत्र मनुः —
14 'त्यजेदाश्वयुजे मासि मुन्यन्नं पूर्वसञ्चितम् ।
जीर्णानि चैव वासांसि पुष्पमूलफलानि च ॥' इति ॥ २४ ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition. ↩
2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
3. Manu II, 35.↩
4. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
5. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
6. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩
7. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
8. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have

begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

9. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
10. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩
11. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
12. Manu II, 144.↩
13. Manu II, 146-148.↩
14. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

२३①

01 भूयांसं वा नियममिच्छन्न्④

भूयांसं वा नियमम् इच्छन्न्
अन्वहम् एव पात्रेण सायं प्रातर् अर्थम् आहरेत् १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. If he desires (to perform) very great austerities, he (shall not make a hoard of grain, but) collect food every day only, morning and evening, in his vessel. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भूयांसं वा नियममिच्छन्नन्वहमेव पात्रेण सायंप्रातरर्थमाहरेत् ॥ १ ॥

टिप्पनी⑥

इदमेकाकिनो वानप्रस्थस्य । भूयासं नियममिच्छन्न सस्यं सञ्चिनुयात् । किं तर्हि ? अन्वहमेव पात्रेण येनकेनचित् सायंप्रातश्चाऽर्थमशनीयमात्रमाहरेत् वानप्रस्थेभ्य एव ॥१॥

02 ततो मूलैः फलैः

ततो मूलैः फलैः पर्णैस् तृणैर् इति वर्तयंश् चरेद्
अन्ततः प्रवृत्तानि *(=स्वयम्पतितानि)*,
ततोऽपो वायुम् आकाशम्
इत्य् अभिनिश्रयेत्।
तेषामुत्तर उत्तरः संयोगः फलतो विशिष्टः २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. Afterwards he shall wander about, sustaining his life with roots, fruits, leaves, and grass (which he 2 collects). Finally (he shall content himself with) what has become detached spontaneously. Then he shall live on water, then on air, (and finally) upon ether. Each succeeding mode of subsistence procures greater rewards.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ततो मूलैः फलैः पर्णैस्तृणैरिति वर्तयंश्चरेदन्ततः प्रवृत्तानि ततोऽपो वायुमाकाशमित्यभिनिश्रयेत् । तेषामुत्तर उत्तरस्संयोगः फलतो विशिष्टः ॥२॥

प्रस्तावः⑥

एवं कियन्तचित्कालं वर्तयित्वा—

टिप्पनी⑥

सर्वं गतम् ॥२॥

03 अथ पुराणे श्लोकावुदाहरन्ति

अथ पुराणे श्लोकाव् उदाहरन्ति ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Now they quote (the following) two verses from a Purāṇa: 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ पुराणे श्लोकावुदाहरन्ति–
अष्टाशीतिसहस्राणि ये प्रजामीषिर ऋषयः ।
दक्षिणेनाऽर्यम्णः पन्थानं ते श्मशानानि भेजिरे ॥३॥

प्रस्तावः⑥

निरूपिता आश्रमाः। अथेदानीं पक्षप्रतिपक्षरूपेण तेषामेव प्राधान्यमप्राधान्यं च निरूप्यते—

टिप्पनी⑥

अष्टाशीतिसहस्राणि ये गृहस्था ऋषयः प्रजामीषिरे प्रजातिमभ्यनन्दन् ते अर्यम्णो यो दक्षिणेन पन्थाः दक्षिणायनमार्गः तं प्राप्य छान्दोग्योक्तेन 4धूमादिमार्गेण गत्वा पुनरपि सम्भूय श्मशानानि भेजिरे मरणं प्रतिपेदिरे। जायस्व म्रियस्वेत्याजीवं जीवभावमापेदिर इति गृहस्थानां निन्दा ॥३॥

04 अष्टाशीतिसहस्राणि ये प्रजामीशिर

अष्टाशीति-सहस्राणि ये
प्रजाम् ईशिर *(=अभ्यनन्दन्)* ऋर्षयः ।
दक्षिणेनार्यम्णः पन्थानं
ते श्मशानानि भेजिरे ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. Those eighty thousand sages who desired offspring passed to the south by Aryaman's road and obtained burial-grounds. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अष्टाशीतिसहस्राणि ये प्रजां नेषिर ऋषयः ।
उत्तरेणाऽर्यम्णः पन्थानं तेऽमृतत्वं हि कल्पते ॥ ४॥

टिप्पनी⑥

ये6तु प्रजातिं नाभ्यनन्दन् ते उत्तरायणमार्गेण7 अर्चिरादिमार्गेण गत्वा अमृतत्त्वं विभक्तिव्यत्ययः, अमृतत्वाय कल्पते वचनव्यत्ययः कल्पन्ते समर्थास्सम्पद्यन्ते ॥४॥

05 अष्टाशीतिसहस्राणि ये प्रजान्

अष्टाशीतिसहस्राणि ये प्रजां नेषिरर्षयः ।
उत्तरेणार्यम्णः पन्थानं तेऽमृतत्वं हि कल्पते ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. Those eighty thousand sages who desired no offspring passed by Aryaman's road to the north and obtained immortality.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

इत्यूर्ध्वरेतसां प्रशंसा ॥५॥

टिप्पनी⑥

गृहस्थादन्ये त्रयोऽपि ऊर्ध्वरेतसः। तेषामेषा प्रशंसेति ॥ ५ ॥

06 इत्यूर्ध्वरेतसाम् प्रशंसा

इत्यूर्ध्वरेतसां *(=गृहस्थेतरेषाम्)* प्रशंसा ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. Thus are praised those who keep the vow of chastity.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

इत्यूर्ध्वरेतसां प्रशंसा ॥५॥

टिप्पनी⑥

गृहस्थादन्ये त्रयोऽपि ऊर्ध्वरेतसः। तेषामेषा प्रशंसेति ॥ ५ ॥

07 अथापि सङ्कल्पसिद्ध्यो भवन्ति

अथापि संकल्प-सिद्ध्यो *(=सङ्कल्पत एव सिद्धिः)* भवन्ति ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. Now they accomplish also their wishes merely by conceiving them,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाऽपि सङ्कल्पसिद्धयो भवन्ति ॥ ६॥

प्रस्तावः⑥

पुनरपि तेषामेव प्रकारान्तरेण प्रशंसा—

टिप्पनी⑥

अथाऽपि अपि च सङ्कल्पादेव सिद्धयो भवन्ति तेषामूर्ध्वरेतसाम् ॥६॥

08 यथा वर्षम् प्रजादानन्

यथा वर्षं, प्रजा-दानं,
दूरे दर्शनं, मनो-जवता,
यच्चान्यद् एवं युक्तम् ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. For instance, (the desire to procure) rain, to bestow children, second-sight, to move quick as thought, and other (desires) of this description.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यथा वर्षं प्रजा दानं दूरदर्शनं मनोजवता यच्चान्यदेवंयुक्तम् ॥ ७ ॥

प्रस्तावः⑥

तत्रोदाहरणम् -

टिप्पनी⑥

यदि महत्यामनावृष्टौ8 सत्यां 'वर्षतु देव' इति ते कामयेरन् तदा कामवर्षी पर्जन्यो भवति । यदि वा कश्चिदपुत्रमनुगृह्णीयुः-पुत्रोऽस्य जायतामिति स पुत्रवानेव भवति । यदि वा 9चोलेष्ववस्थितास्तदैव हिमवन्तं दिदृक्षेरन् तथैव तद्भवति। मनस इव जवो येषां ते मनोजवा तेषां भावो मनोजवता । यदि कामयेरन् अमुं देशमियत्यामेव कालकलायां प्राप्नुयामेति, ततो यावता कालेन मनस्तं देशं प्राप्नोति तावता तं देशं प्राप्नुयुरिति । यच्चान्यदेवंयुक्तम् रोगिणामारोग्यादि तदपि सङ्कल्पादेव तथा भवति ॥ ७॥

09 तस्माच्छ्रुतितः प्रत्यक्षफलत्वाच्च विशिष्टानाश्रमानेतानेके

तस्माच् छ्रुतितः, प्रत्यक्ष-फलत्वाच् च
विशिष्टान् आश्रमान् एतान् एके ब्रुवते ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. Therefore on account of (passages) of the revealed texts, and on account of the visible results, some declare these orders

(of men keeping the vow of chastity to be) the most excellent.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यस्मादेवम्—
तस्माच्छ्रुतितः प्रत्यक्षफलत्वाच्च विशिष्टानाश्रमानेतानेके ब्रुवते ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

तस्माच्छ्रुतितः 'यदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेदि'त्यादिश्रुत्यनुगतत्वादुक्तेन प्रकारेण प्रत्यक्षफलत्वाच्च एतानूर्ध्वरेतसामाश्रमान् विशिष्टान् गार्हस्थ्यादुत्कृष्टानेके ब्रुवत इति ॥ ८॥

10 त्रैविद्यवृद्धानान् तु वेदाः

त्रैविद्य-वृद्धानां तु
वेदाः प्रमाणम्
इति निष्ठा।
तत्र यानि श्रूयन्ते
व्रीहि-यव-पश्व्-आज्य-पयः-कपाल-पत्नी-संबन्धान्य्
उच्चैर् नीचैः कार्यम् इति
तैर् विरुद्ध आचारो ऽप्रमाणम् इति मन्यन्ते १०

▼

⑤

>

▼ Bühler

10. But (to this we answer): It is the firm opinion of those who are well versed in the threefold sacred learning, that the Vedas

are the highest authority. They consider that the (rites) which are ordered there to be performed with rice, yava, animals, clarified butter, milk, potsherds, (in conjunction) with a wife, (and accompanied) by loud or muttered (Mantras), must be performed, and that (hence) a rule of conduct which is opposed to these (rites) is of no authority.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

त्रैवृद्यवृद्धानां तु वेदाः प्रमाणमिति निष्ठा तत्र यानि श्रूयन्ते व्रीहियवपश्वाज्यपयःकपालपत्नीसम्बन्धान्युच्चैर्नीचैः कार्यमिति तैर्विरुद्ध आचारोऽप्रमाणमिति मन्यन्ते ॥ ९॥

प्रस्तावः⑥

तदिदं गार्हस्थ्योत्कर्षप्रतिपादनेन निराकरोति—

टिप्पनी⑥

त्र्यवयवा विद्या **त्रिविद्या** त्रयो वेदाः ।
तां ये पाठतश्चाऽर्थतश्च विदन्ति ते **त्रैविद्याः**।
तेषु पक्व-ज्ञानास् **त्रैविद्यवृद्धाः** ।
तेषां 10वेदशास्त्रविदां वेदा एव **प्रमाणम्** अतीन्द्रियेऽर्थ **इति, निष्ठा** निर्णयः ।
यथाह भगवान् जैमिनिः— 11'चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः, इति12 प्रत्यक्षमनिमित्तमि'ति च ।
ततश् च **तत्र** वेदे **यानि** कर्माणि श्रूयन्ते,
किंलक्षणानि ? व्रीहियवादिभिस् सम्बद्धानि
"उच्चैः ऋचा क्रियते, उपांशु यजुषे"त्येवंप्रकाराणि
तैर् विरुद्ध आचारः प्रमाणं न भवतीति मन्यन्ते ।
एतदुक्तं भवति— सर्वेषु वेदेषु सर्वासु च शाखासु अग्निहोत्रादीनि13 विश्वसृजामयनपर्यन्तानि

कर्माण्येव तात्पर्यतया विधीयन्ते ।
अतो गार्हस्थ्यम् एव श्रेष्ठम् ।
ऊर्ध्वरेतसां त्वाश्रमास् तद्विरुद्धा
नैवाऽऽश्रयणीयाः यदि वेदाः प्रमाणम् इति ।
तथा च गौतमः-'ऐकाश्रम्यं त्वाचार्याः प्रत्यक्षविधानात् गार्हस्थ्यस्ये'ति । एवं गार्हस्थ्यं प्रशस्यते ॥ ९॥

11 यत्तु श्मशानमुच्यते नानाकर्मणामेषोऽन्ते

यत् तु श्मशानम् उच्यते

("दक्षिणेनार्यम्णः पन्थानं ते श्मशानानि भेजिरे" इत्यस्मिन्)
नाना-कर्मणाम् एषोऽन्ते पुरुष-संस्कारो विधीयते ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. But by the term burial-ground (in the text above given) it is intended to ordain the last rites for those who have performed many sacrifices, (and not to mean that dead householders become demons and haunt burial-grounds.) 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यत्तु श्मशानमुच्यते नानाकर्मणामेषोऽन्ते पुरुषसंस्कारो विधीयते ॥ १० ॥

प्रस्तावः⑥

श्मशानानि भेजिर इति निन्दां परिहरति—

टिप्पनी⑥

यत्तु गृहस्थानां श्मशान श्रूयते स एष नानाकर्मणामग्निहोत्रादीनामन्ते पितृमेधाख्यः पुरुषसंस्कारो विधीयते । न तु पिशाचा भूत्वा श्मशानमेव सेवन्त इति ॥ १०॥

12 ततः परमनन्त्यम् फलं

ततः परम् अनन्त्यं फलं स्वर्ग्य-शब्दं श्रूयते १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. The revealed texts declare that after (the burial follows) a reward without end, which is designated by the term 'heavenly bliss.'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ततः परमनन्त्यं फलं स्वर्ग्यशब्दं श्रूयते ॥१२॥

प्रस्तावः⑥

कुत इत्याह—

टिप्पनी⑥

ततः परं श्मशानकर्मणोऽनन्तरम्, अनन्त्यमपरिमितं स्वर्गशब्दवाच्यं फलं श्रूयते-'स एष यज्ञायुधी यजमानोऽञ्जसा स्वर्गं लोकमेती'ति । अनन्त्यं स्वर्ग्यमिति15 यकारश्छान्दसः उपजनः अपपाठो वा ॥१२॥

इत्यापस्तम्बधर्ममूत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने त्रयोविंशी कण्डिका ॥२३॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩

2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

3. Manu II, 35.↩

4. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

5. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

6. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

7. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

8. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

9. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

10. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

11. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

12. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

13. आप० ध० १.३०.८.↩

14. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

15. मनु० रमृ० २.६↩

२४①

01 अथाप्यस्य प्रजातिम् अमृतम्④

अथाप्यस्य प्रजातिम्
अमृतम् आम्नाय आह । प्रजामनु प्रजायसे तदु ते मर्त्यामृतमिति १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. Now the Veda declares also one's offspring to be immortality (in this verse): 'In thy offspring thou art born again, that, mortal, is thy immortality.'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाप्यस्य प्रजातिममृतमानाय आह—
प्रजामनु प्रजायसे तदु ते मत्र्थोऽमृतामिति ॥ १ ॥

प्रस्तावः⑥

पुनरपि गार्हस्थ्यमेव प्रकारान्तरेण स्तौति—

टिप्पनी⑥

अथाऽपि अपि च अस्य गृहस्थस्य प्रजापतिं प्रजासन्तानम् अमृतम् अमरमणम् आम्नायो वेद आह हे मर्त्य मरणधर्मन् ! प्रजां जायमानामनु त्वं प्रजायसे त्वमेव प्रजारूपेण जायसे । तदेव ते मरणधर्मिणः अमृतममरणमिति । न त्वं म्रियसे, यतस्त्वं प्रजारूपेण तिष्ठसीति ॥ १॥
02 अथापि स एवायं

अथापि - स एवायं विरूढः पृथक् प्रत्यक्षेणोपलभ्यते दृश्यते चापि सारूप्यं देहत्वमेवान्यत् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. Now it can also be perceived by the senses that the (father) has been reproduced separately (in the son); for the likeness (of a father and of a son) is even visible, only (their) bodies are different.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाऽपि स एवाऽयं विरूढः पृथक्प्रत्यक्षेणोपलभ्यते दृश्यते चाऽपि सारूप्यं देहत्वमेवाऽन्यत् ॥ २ ॥

प्रस्तावः⑥

उपपन्नं चैतदित्याह—

टिप्पनी⑥

अपि च स एवाऽय पृथग्विरूढः प्रत्यक्षेणोपलभ्यते । स एव द्विधाभूत इव लक्ष्यते । दृश्यते हि सारूप्यं द्वयोः । देहमात्रं तु भिन्नम् । देहत्वमिति स्वार्थिकस्त्वः ॥ २॥

03 ते शिष्टेषु कर्मसु

ते शिष्टेषु कर्मसु वर्तमानाः पूर्वेषां सांपरायेण कीर्तिं स्वर्गं च वर्धयन्ति ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. 'These (sons) who live, fulfilling the rites taught (in the Veda), increase the fame and heavenly bliss of their departed ancestors.'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ते शिष्टेषु कर्मसु वर्तमानाः पूर्वेषां साम्परायेण कीर्तिं स्वर्गं च वर्धयन्ति ॥ ३ ॥

प्रस्तावः⑥

यदि पुत्ररूपेणाऽवस्थानं, किमेतावतेत्याह—

टिप्पनी⑥

ते पुत्राश्शिष्टेषु चोदितेषु कर्मसु वर्तमाना अवस्थिताः पूर्वेषां पितृपितामहादीनां साम्परायेण परलोकेन सम्बद्धानां कीर्तिं स्वर्गं च वर्धयन्ति— अस्याऽयं पुत्र एवं कर्मा, अस्याऽयं पौत्र इति । स्वर्गं च वर्धयन्ति । कीर्तिमतां हि स्वर्गवासश्श्रूयते ॥ ३ ॥

04 एवमवरोऽवरः परेषाम्

एवमवरोऽवरः परेषाम् *(=पूर्विकाणाम्)* ४

▼

⑤

>

▼ Bühler

4. 'In this manner each succeeding (generation increases the fame and heavenly bliss) of the preceding ones.'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवमवरोऽवरः परेषाम् ॥ ४॥

टिप्पनी⑥

एवमनेन प्रकारेण अवरोऽवर परेषां कीर्तिं स्वर्गं च वर्धयति ॥ ४॥

05 आ भूतसम्प्लवात् ते

आ भूतसंप्लवात् ते स्वर्गजितः ५

▼

⑤

>

▼ Bühler

5. 'They (the ancestors) live in heaven until the (next) general destruction of created things.'

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आभूतसम्प्लवात्ते स्वर्गजितः ॥५॥

टिप्पनी⑥

भूतसम्प्लवो महाप्रलयः । आ तस्मात्ते पुत्रिणस्स्वर्गजितो भवन्ति ते च ५

06 पुनः सर्गे बीजार्था

पुनः सर्गे बीजार्था भवन्तीति भविष्यत्पुराणे ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. At the new creation (of, the world) they become the seed. That has been declared in the Bhaviṣyatpurāṇa. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पुनस्सर्गे बीजार्था भवन्तीति भविष्यत्पुराणे ॥६॥

टिप्पनी⑥

प्रलयानन्तरं सर्गः, तत्र संसारस्य बीजार्थाः प्रजार्थाः प्रजापतयो भवन्तीति भविष्यत्पुराणे श्रूयते ॥ ६ ॥

07 अथापि प्रजापतेर्वचनम्

अथापि प्रजापतेर्वचनम् ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. Now Prajāpati also says,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथाऽपि प्रजापतेर्वचनम् ॥ ७॥

टिप्पनी⑥

अपि च प्रजापतेरपि वाक्यमस्मिन्नर्थे भवति । गार्हस्थ्यमेव वरिष्ठमिति ॥७॥

08 त्रयीं विद्याम् ब्रह्मचर्यम्

त्रयीं विद्यां ब्रह्मचर्यं प्रजातिं श्रद्धां तपो यज्ञमनुप्रदानम् । य एतानि कुर्वते तैरित् सह *(वयम् प्रजापतयः)* स्मो, रजो भूत्वा ध्वंसते ऽन्यत् प्रशंसन्न् इति ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. 'Those dwell with us who fulfil the following (duties): the study of the three Vedas, the studentship, the procreation of children, faith, religious austerities, sacrifices, and the giving of gifts. He who praises other (duties), becomes dust and peṛṣes.' 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

त्रयीं विद्यां ब्रह्मचर्यं प्रजातिं श्रद्धां तपो यज्ञमनुप्रदानम् । य एतानि कुर्वते तैरित्सह स्मो रजो भूत्वा ध्वंसतेऽन्यत्प्रशंसन्निति ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

त्रयीं विद्यां त्रयाणां वेदानामध्ययनम् । ब्रह्मचर्यमष्टाचत्वारिंशदादिकम् । प्रजातिं प्रजोत्पादनम् । श्रद्धामास्तिक्यम् । तप उपवासादि । यज्ञमग्निहोत्रादिकं सोमयागान्तम् । अनुप्रदानं अन्तर्वेदि बहिर्वेदि च दानम् । य एतानि कर्माणि कुर्वते, तैरित् तैरेव सह वयं स्मः त एवाऽस्माकं सहायाः। अन्यत्तु ऊर्ध्वरेतसामाश्रमादिकं प्रशंसन् पुरुषो रजः पांसुर्भूत्वा ध्वंसते नश्यति । इतिशब्दो व वनसमाप्त्यर्थः । यथैवं तर्हि शिष्टेषु वर्तमानाः पुत्राः पूर्वेषां कीर्तिं स्वर्गं च वर्धयन्ति, तथा प्रतिषिद्धेषु वर्तमानां अकीर्तिं नरकं च वर्धयेयुः॥८॥

09 तत्र ये पापकृतस्त

तत्र ये पापकृतस्त एव ध्वंसन्ति यथा पर्णं वनस्पतेर्न परान्हिंसन्ति ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. Those among these (sons) who commit sin, peṛṣ alone, just as the leaf of a tree (which has been attacked by worms falls without injuring its branch or tree). They do not hurt their ancestors.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्र ये पापकृतस्त एवं ध्वंसन्ति यथा पर्णं वनस्पतेर्न परान् हिंसन्ति ॥ ९॥

प्रस्तावः⑥

तत्राऽऽह—

टिप्पनी⑥

तत्र प्रजासन्ताने ये पापस्य कर्तारः, त एव ध्वंसन्ते न परान् पित्रादीन् हिंसन्ति । यथा यदेव पर्णं वनस्पतेः कीटादिभिर्दूषितं तदेव पतति, न वनस्पतिं शाखान्तरं वा पातयति तद्वत् ॥९॥

10 नास्यास्मिंल् लोके कर्मभिः

नास्यास्मिंल् लोके कर्मभिः संबन्धो विद्यते तथा परस्मिन्कर्मफलैः १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. (For) the (ancestor) has no connection with the acts committed (by his descendant) in this world, nor with their results in the next.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाऽस्याऽस्मिल्ँलोके कर्मभिस्सम्बन्धो विद्यते तथा परस्मिन् कर्मफलैः ॥१०॥

प्रस्तावः⑥

एतदेवोपपादयति—

टिप्पनी⑥

अस्येति सामान्यापेक्षमेकवचनम् । अस्य पित्रादेः पूर्वपुरुषस्य आस्मिन् लोके पुत्रकृतैः कर्मभिः सम्बन्धो न विद्यते । दृष्टान्तोऽयम् । यथा पुत्रकृतेषु कर्मसु पित्रादेः कर्तृत्वं नाऽस्ति, तथा परस्मिन्नपि लोके कर्मफलैरपि सम्बन्धो नाऽस्तीत्यर्थः॥ १० ॥

11 तदेतेन वेदितव्यम्

तदेतेन वेदितव्यम् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. (The truth of) that may be known by the following (reason):

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तदेतेन वेदितव्यम् ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

यदुक्तं ये पापकृतस्त एव ध्वंसन्ति न परान् हिंसन्तीति तदर्थरूपमेतेन वक्ष्यमाणेन हेतुना वेदितव्यम् ॥ ११ ॥

12 प्रजापतेर्ऋषीणामिति सर्गोऽयम्

प्रजापतेर्ऋषीणामिति सर्गोऽयम् १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. This creation (is the work) of Prajāpati and of the sages.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रजापतेर्ऋषीणामिति सर्गोऽयम् ॥१२॥

टिप्पनी⑥

प्रजापतेर्हिरण्यगर्भस्य ऋषीणां च मरीच्यादीनामयं सर्गो देवादिस्तिर्यगन्तः । ते चाऽध्वस्ता एच स्वे स्वे पदे वर्तन्ते । यदि च पुत्राः पापकृतः स्वयं ध्वंसमानाः परानपि ध्वंसयेयुः, सदैतन्नोपपद्यते— पुण्यकृतः सुखेनाऽद्यापि वर्तन्ते इति ॥ १२॥

13 तत्र ये पुण्यकृतस्तेषाम्

तत्र ये पुण्यकृतस् तेषां प्रकृतयः परा ज्वलन्त्य *(= तारारूपेण)* उपलभ्यन्ते १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. The bodies of those (sages) who stay there (in heaven) on account of their merits appear visibly most excellent and brilliant (as, for instance, the constellation of the seven Ṛṣis). 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्र ये पुण्यकृतस्तेषां प्रकृतयःपरा ज्वलन्त्य उपलभ्यन्ते ॥ १३ ॥

प्रस्तावः⑥

अत्रोदाहरणमाह—

टिप्पनी⑥

तत्र स्वर्गे ये पुण्यकृतो वसिष्ठादयस्तेषां प्रकृतयश्शरीराणि परा उत्कृष्टाः ज्वलन्त्यः दीप्यमाना उपलभ्यन्ते, दिवि यथा सप्तर्षिमण्डलम् । श्रूयते च4 'सुकृतां वा एतानि ज्योतींषि, यन्नक्षत्राणी'ति । इदमपि प्रमाणं न पुत्राणां ध्वंसे पूर्वेषां प्रध्वंस इति ॥ १३ ॥

14 स्यात्तु कर्मावयवेन तपसा

स्यात् तु कर्मावयवेन तपसा वा कश्चित् सशरीरो ऽन्वन्तं लोकं जयति, सङ्कल्पसिद्धिश् च स्यान् - न तु तज् ज्यैष्ठ्यम् आश्रमाणाम् १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. But even though some (ascetic), whilst still 5 in the body, may gain heaven through a portion of (the merit acquired by his former) works or through austerities, and though he may. accomplish (his objects) by his mere wish, still this is no reason to place one order before the other.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्यात्तु कर्मावयवेन तपसा वा कश्चित्सशरीरोऽन्तवन्तं लोकं जयति सङ्कल्पसिद्धिश्च स्यान्न तु तज्ज्यैष्ठ्यमाश्रमाणाम् ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

कर्मावयवेन पूर्वार्जितानां कर्मणामेकदेशेन भुक्तशेषेण तपसा वा तीव्रेण कश्चिदूर्ध्वरेतास्सहशरीरेणाऽन्तवन्तं लोकं जयतीति यत्तत् स्यात् सम्भवेदपि । यश्च सङ्कल्पादेव सिद्धिस्स्यादिति, तदपि स्यात् न तु तदाश्रमाणां ज्यैष्ठ्यकारणमिति । तदेव "मैकाश्रम्यं त्वाचार्या' इत्ययमेव पक्षः स्थापितः । अन्ये मन्यन्ते-सर्वे आश्रमा दूषिताः भूषिताश्च । ततस्तेषु सर्वेषु यथोपेदेशमव्यग्रो वर्तमानः क्षेमं गच्छतीत्येतदेव स्थितमिति ॥ १४ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने चतुर्विंशी कण्डिका॥ १७ ॥

इति चापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तमिश्रविरचितायां उज्ज्वलायां द्वितीयप्रश्ने नवमः पटलः ॥९॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩

2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

3. Manu II, 35.↩

4. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

5. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

२५①

01 व्याख्याताः सर्ववर्णानां साधारणवैशेषिका④

व्याख्याताः सर्ववर्णानां साधारणवैशेषिका धर्माः । राज्ञस्तु विशेषाद्वक्ष्यामः १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. The general and special duties of all castes have been explained. But we will now declare those of a king in particular.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

व्याख्यातास्सर्ववर्णानां साधारणवैशेषिका धर्मा राज्ञस्तु विशेषाद्वक्ष्यामः ॥ १॥

टिप्पनी⑥

उक्तवक्ष्यमाणसङ्कीर्तनं श्रोतृबुद्धिसमाधानार्थम् । अहिंसासत्यास्तेयादयः सर्ववर्णानां साधारणधर्माः । अध्ययनादयस्त्रयाणाम् । अध्यापनादयो ब्राह्मणस्य । युद्धादयः क्षत्रियस्य । कृष्यादयो वैश्यस्य । शुश्रूषा शूद्रस्य । राजाऽत्राभिषिक्तो विविक्षितः। तस्यैव हि वक्ष्यमाणं धर्मजातं सम्भवति । तस्य विशेषाद्विशेषतो यद्वक्तव्यं तद्वक्ष्यामः । विशेषानिति द्वितीयान्तपाठस्तु युक्तः॥१॥

02 दक्षिणाद्वारं वेश्म पुरञ्

दक्षिणाद्वारं वेश्म पुरं च मापयेत् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. He shall cause to be built a town and a palace, the gates of both of which (must look) towards the south.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दक्षिणाद्वारं वेश्म पुरं च मापयेत् ॥ २॥

टिप्पनी⑥

वेश्म गृहं पुरं नगरं तदुभयमपि दक्षिणाद्वारं मापयेत् कारयेत् स्थपत्यादिभिः । दक्षिणपार्श्वे द्वारं यस्य तत्तथोक्तम् ॥ २ ॥

03 अन्तरस्याम् पुरि वेश्म

अन्तरस्यां पुरि वेश्म ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. The palace (shall stand) in the heart of the town. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्तरस्यां पुरि वेश्म ॥ ३ ॥

टिप्पनी⑥

सर्वेषामेव प्राकाराणां मध्ये या पुस्तस्यामन्तरस्यां पुरि वेश्म मापयेदात्मनः ॥३॥

04 तस्य पुरस्तादावसथस्तदामन्त्रणमित्याचक्षते

तस्य पुरस्तादावसथस्तदामन्त्रणमित्याचक्षते ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. In front of that (there shall be) a hall. That is called the hall of invitation.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तस्य पुरस्तादावसथस्तदामन्त्रणमित्याचक्षते ॥ ४॥

टिप्पनी⑥

तस्य वेश्मनः पुरस्तादावसथः कारयितव्यः । एत्य वसन्त्यस्मिन्नित्यावसथः आस्थानमण्डपः। तस्यामन्त्रणमिति संज्ञा2 ॥४॥

05 दक्षिणेन पुरं सभा

दक्षिणेन पुरं सभा दक्षिणोदग्द्वारा यथोभयं संदृश्येत बहिरन्तरं चेति ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. (At a little distance) from the town to the south, (he shall cause to be built) an assembly-house with doors on the south and on the north sides, so that one can see what passes inside and outside.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दक्षिणेन पुरं सभा दक्षिणोदग्द्वारा यथोभयं सन्दृश्येत बहिरन्तरं चेति ॥५॥

टिप्पनी⑥

दक्षिणेनेत्येनबन्तम् । पुरमिति3 'एनपा द्वितीये'ति द्वितीयान्तम् । पुरस्य दक्षिणतः अदूरे सभा कारयितव्या। दक्षिणोदग्द्वारा दक्षिणस्यामुत्तरस्यां च दिशि द्वारं यस्यास्सा तथोक्ता। किमर्थमुभयत्र द्वारमिति चेत् । यद्बहिर्वृत्तं यच्चाऽभ्यन्तर तदुभयमपि यथा सन्दश्येतेत्येवमर्थमिति । सैषा द्यूतसभा । तस्यां धूतार्थिनः प्रविशन्तीति तदायस्थानं राज्ञः ॥ ५॥

06 सर्वेष्वेवाजस्रा अग्नयः स्युः

सर्वेष्वेवाजस्रा अग्नयः स्युः ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. In all (these three places) fires shall burn constantly. 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वेष्वेवाऽजस्रा अग्नयस्स्युः ॥६॥

टिप्पनी⑥

वेश्मन्यावसथे सभायामित्येतेषु सर्वेष्वेव स्थानेषु लौकिका अग्नयोऽजस्राः स्युः । अविच्छेदेन धार्याः ॥ ६॥

07 अग्निपूजा च नित्या

अग्निपूजा च नित्या यथा गृहमेधे ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. And oblations must be offered in these fires daily, just as at the daily sacrifice of a householder. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अग्निपूजा च नित्या यथा गृहमेधे ॥ ७॥

टिप्पनी⑥

तेषु चाग्निषु नित्यमग्निपूजा कार्या। यथा गृहमेधे औपासने सायंप्रातर्होम इत्यर्थः । मन्त्रावपि तावेव, द्रव्यमपि तदेव ॥ ७॥

08 आवसथे श्रोत्रियावराध्यानतिथीन्वासयेत्

आवसथे श्रोत्रियावराध्यानतिथीन्वासयेत् ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. In the hall he shall put up his guests, at least those who are learned in the Vedas. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आवसथे श्रोत्रियावरार्ध्यानतिथीन् वासयेत् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

आवसथाख्ये स्थाने अतिथीन् वासयेत् । ते विशेष्यन्ते श्रोत्रियावरार्ध्यानिति । अवरपर्यायोऽवरार्ध्यशब्दः । यदि सर्वान्वासयितुं न शक्नोति श्रोत्रियानपि तावद्वासयेदिति ॥ ८॥

09 तेषां यथागुणमावसथाः शय्यान्नपानञ्

तेषां यथागुणमावसथाः शय्यान्नपानं च विदेयम् ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. Rooms, a couch, food and drink should be given to them according to their good qualities.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषां यथागुणमावसथाः शय्याऽन्नपानं च विदेयम् ॥९॥

टिप्पनी⑥

तेषामतिथीनां यथागुणं विद्यावृत्तानुगुणमावसथादि विदेयं विशेषेण देयम् । आवसथा अपवरकादयः । शय्या खट्वादयः । अन्नमोदनादि। पान7 तक्रादि ॥९॥

१. तक्रसूपादि इति च. पु. तक्रादिसूपादि इति क. पु.

10 गुरूनमात्यांश्च नातिजीवेत्

गुरूनमात्यांश्च नातिजीवेत् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. Let him not live better than his Gurus or ministers. 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

गुरूनमात्यांश्च नातिजीवेत् ॥१०॥

टिप्पनी⑥

गुरवः पित्रादयः । अमात्या मन्त्रिणः । तान्नाऽतिजीवेत् भक्ष्यभोज्याच्छादनादिषु तान्नाऽतिशयीत ॥ १० ॥

11 न चास्य विषये

न चास्य विषये क्षुधा रोगेण हिमातपाभ्यां वावसीदेदभावाद्बुद्धिपूर्वं वा कश्चित् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. And in his realm no (Brāhmaṇa) should suffer hunger, sickness, cold, or heat, be it through want, or intentionally. 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

न चास्य विषये क्षुधा रोगेण हिमातपाभ्यां वाऽवसीदेदभावाद्बुद्धिपूर्वं वा कश्चित् ॥११॥

टिप्पनी⑥

अस्य राज्ञो विषये राष्ट्रे क्षुधा आहाराभावेन बुभुक्षया रोगेण व्याधिना हिमेन नीहारेण वर्षादीनामप्युपलक्षणमेतत् । आतपः आदित्यरश्मितापः। एतैः प्रकारैरभावात् बुद्धिपूर्वं वा न कश्चिदब्राह्मणोऽप्यवसीदेत् अवसन्नो न स्यात् । राज्ञो हयमपराधो यदाहाराद्यभावेन कश्चिदवसन्नः

स्यात् । बुद्धिपूर्वं वेत्यत्रोदाहरणम् — यदा कश्चित् करमृणं वा दाप्यो भवति, तदा नाऽसौ हिमातपयोरुपनिवेशयितव्यः भोजनाद्वा निरोद्धव्यः। तथा कुर्वाणं राजा दण्डयेदिति ॥ ११ ॥

12 सभाया मध्ये ऽधिदेवनमुद्धत्या

सभाया मध्ये ऽधिदेवनमुद्धत्या ऽऽवोक्ष्या ऽऽक्षान् निवपेद् युग्मान् वैभीतकान्यथार्थान् १२

▼

⑤

>

▼ Bühler

12. In the midst of the assembly-house, (the superintendent of the house) shall raise a play-table and sprinkle it with water, turning his hand downwards, and place on it dice in even numbers, made of Vibhītaka (wood), as many as are wanted.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सभाया मध्येऽधिदेवनमुद्धत्याऽवोक्ष्याऽक्षान्निवपेद्युग्मान् वैभीतकान् यथार्थान् ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

पूर्वोक्तायाः सभाया मध्ये अधिदेवनं यस्योपरि कितवा अक्षैर्दीव्यन्ति तत्स्थानमधिदेवनम् । तत् पूर्वं काष्ठादिना उद्धन्ति उद्धत्यावोक्षति । अवोक्ष्य तत्राऽक्षान् युग्मसङ्ख्याकान्वैभीतकान् विभीतकवृक्षस्य विकारभूतान् यथार्थान् यावद्भिर्द्यूतं निर्वर्तते, तावतो निवपति । कः ? यस्तत्र राज्ञा नियुक्तः सभिको नाम ॥ १२॥

13 आर्याः शुचयः सत्यशीला

आर्याः शुचयः सत्यशीला दीवितारः स्युः १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. Men of the first three castes, who are pure and truthful, may be allowed to play there. 10

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आर्याः शुचयस्सत्यशीला दीवितारस्स्युः ॥ १३॥

टिप्पनी⑥

आर्याः द्विजातयः । 11शुचयोऽर्थशुद्धाः । सत्यशीलास्सत्यवादिनः । एवंभूता एव पुरुषास्तत्र दीवितारः देवितारः स्युः। त एव तत्र दीव्येयुरित्यर्थः । ते च तत्र देवित्वा यथाभाषितं पणं सभिकाय दत्वा गच्छेयुः। स च राज्ञे तमायमहरहः प्रतिमासं प्रतिसंवत्सरं वा दद्यात् । स एव च स्थानान्तरे दीव्यतो दण्डयेत्, सभास्थाने च कलहकारान् । तत्र याज्ञवल्क्यः—
12 'ग्लहे शतिकवृद्धस्तु सभिकः पञ्चकं शतम् ।
गृह्णीयाद्धूर्तकितवादितराद्दशकं शतम् ॥
स सम्यक्पालितो दद्याद्राज्ञे भागं यथाकृतम् ।
जितमुद्ग्राहयेज्जैत्रं दद्यात्सत्यं वचः क्षमी ॥ इति ॥ १३॥

14 आयुधग्रहणन् नृत्तगीतवादित्राणीति राजाधीनेभ्योऽन्यत्र

आयुधग्रहणं नृत्तगीतवादित्राणीति राजाधीनेभ्योऽन्यत्र न विद्येरन् १४

▼

⑤

>

▼ Bühler

14. Assaults of arms, dancing, singing, music, and the like (performances) shall be held only (in the houses) of the king's servants. 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आयुधग्रहणे नृत्तगीतवादित्राणीति राजाधीनेभ्योऽन्यत्र न विद्येरन् ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

आयुधग्रहणादीनि राजाधीनेभ्यो राजाश्रया ये पुरुषास्तेभ्योऽन्यत्र न विद्येरन् न भवेयुः । उत्सवादिष्वन्यत्रापि भवतीत्याचारः ॥ १४ ॥

15 क्षेमकृद्राजा यस्य विषये

क्षेमकृद्राजा यस्य विषये ग्रामेऽरण्ये वा तस्करभयं न विद्यते १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. That king only takes care of the welfare of his subjects in whose dominions, be it in villages or forests, there is no danger from thieves. 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

क्षेमकृद्राजा यस्य विषये ग्रामेऽरण्ये वा तस्करभयं न विद्यते ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

यस्य राज्ञो विषये ग्रामेऽरण्ये च चोरभयं नास्ति स एव राजा क्षेमकृत् क्षेमङ्करः । न त्वन्यः शतं तुभ्यं शतं तुभ्यमिति ददानोऽपि ॥ १५ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने पञ्चविंशी काण्डिका ॥ २५ ॥

इति नवमः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩

2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

4. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

5. Manu II, 35.↩

6. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
7. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
8. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩
9. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩
10. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

11. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

12. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

13. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

14. Manu II, 144.↩

१०①

२६①

01 भृत्यानामनुपरोधेन क्षेत्रं वित्तञ्④

भृत्यानामनुपरोधेन क्षेत्रं वित्तं च दददब्राह्मणेभ्यो यथार्हमनन्तांल् लोकाभिजयति १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. A (king) who, without detriment to his servants, gives land and money to Brāhmaṇas according to their deserts gains endless worlds. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

भृत्यानामनुपरोधेन क्षेत्रं वित्तं च दददब्राह्मणेभ्यो यथार्हमनन्तालँल्लोकानभिजयति ॥ १॥

टिप्पनी⑥

भृत्यानामनुपरोधेन भृत्यवर्गस्य यथोपरोधो न भवति तथा ब्राह्मणेभ्यो यथार्हं विद्यावृत्ताद्यनुरूपं क्षेत्रं वित्तं च दद्यात् । एवं दददनन्तालँल्लोकानभिजयति ॥१॥

02 ब्राह्मणस्वान्यपजिगीषमाणो राजा यो

ब्राह्मणस्वान्यपजिगीषमाणो राजा यो हन्यते तमाहुरात्मयूपो यज्ञोऽनन्तदक्षिण इति २

▼

⑤

>

▼ Bühler

2. They say (that) a king, who is slain in attempting to recover the property of Brāhmaṇas, (performs) a sacrifice where his body takes the place of the sacrificial post, and at which an unlimited fee is given. 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ब्राह्मणस्वान्यपजिगीषमाणो राजा यो हन्यते तमाहुरात्मयूपो यज्ञोऽनन्तदक्षिण इति ॥२॥

टिप्पनी⑥

ब्राह्मणस्वानि चोरादिभिरपहृतानि अपजिगीषमाणः ब्राह्मणेभ्यो दानायापजित्य ग्रहीतुमिच्छन् यो राजा युद्धे चोरैर्हन्यते तमात्मयूपोऽनन्तदक्षिणो यज्ञ इत्याहुर्धर्मज्ञाः । सङ्ग्रामो यज्ञः। तस्य आत्मा यूपस्थानीयः आत्मेति शरीरमाह । अन्तरात्मा तु पशुस्थानीयः । प्रत्यानिनीषितं तु द्रव्यं दक्षिणा । सूत्रे तु 'तं यज्ञ इत्याहुरि'ति गौणो वादः ॥२॥

03 एतेनान्ये शूरा व्याख्याताः

एतेनान्ये शूरा व्याख्याताः प्रयोजने युध्यमानास्तनुत्यजः ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Hereby have been declared (the rewards of) other heroes, who fall fighting for a (worthy) cause. 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एतेनाऽन्ये शूरा व्याख्याताः प्रयोजने युध्यमानास्तनुत्यजः ॥३॥

टिप्पनी⑥

प्रयोजनं चोरादिभिरपहृतानां ब्राह्मणस्वानां प्रत्यानयनादि, तदर्थं युध्यमाना ये शूरास्तनुत्यजो भवन्ति तेऽप्येतेन राज्ञा व्याख्याता आत्मयूपा यज्ञा अनन्तदक्षिणा इति ॥ ३ ॥

04 ग्रामेषु नगरेषु चार्यान्शुचीन्सत्यशीलान्प्रजागुप्तये

ग्रामेषु नगरेषु चार्यान्शुचीन्सत्यशीलान्प्रजागुप्तये निदध्यात् ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. He shall appoint men of the first three castes, who are pure and truthful, over villages and towns for the protection of the

people. 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ग्रामेषु नगरेषु चाऽऽर्याञ्छुचीन् सत्यशीलान् प्रजागुप्तये निदध्यात् ॥४॥

टिप्पनी⑥

आर्याञ्छुचीन् सत्यशीलानिति व्याख्यातम् । एवंभूतान् पुरुषानू ग्रामेषु नगरेषु च प्रजानां रक्षणार्थं निदध्यात् नियुञ्जति ॥ ४॥

05 तेषाम् पुरुषास्तथागुणा एव

तेषां पुरुषास्तथागुणा एव स्युः ५

▼

⑤

>

▼ Bühler

5. Their servants shall possess the same qualities.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तेषां पुरुषास्तथागुणा एव स्युः॥ ५॥

टिप्पनी⑥

तेषां नियुक्तानां ये पुरुषा नियोज्याः तेऽपि तथागुणा आर्यादिगुणा एव स्युः ॥५॥

06 सर्वतो योजनन् नगरन्

सर्वतो योजनं नगरं तस्करेभ्यो रक्ष्यम् ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. They must protect a town from thieves in every direction to the distance of one yojana. 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्वतो योजनं नगरं तस्करेभ्यो रक्ष्यम् ॥ ६॥

टिप्पनी⑥

सर्वतः सर्वासु दिक्षु योजनमात्रं नगरं तस्करेभ्यो रक्षणीयम् । रक्ष्यन्नित्यपपाठः ॥६॥

07 क्रोशो ग्रामेभ्यः

क्रोशो ग्रामेभ्यः ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. (They must protect the country to the distance of) one krośa from each village. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

क्रोशो ग्रामेभ्यः ॥७॥

टिप्पनी⑥

ग्रामेभ्यस्तु सर्वासु दिक्षु क्रोशो रक्ष्यः। ग्रामेभ्यः इति7 'यतश्चाऽध्वकालपरिमाणं तत्र पञ्चमी वक्तव्ये'ति पञ्चमी ॥ ७॥

08 तत्र यन्मुष्यते तैस्तत्प्रतिदाप्यम्

तत्र यन्मुष्यते तैस्तत्प्रतिदाप्यम् ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. They must be made to repay what is stolen within these (boundaries). 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्र यन्मुष्यते तैस्तत्प्रतिदाप्यम् ॥ ८ ॥

टिप्पनी⑥

तत्र योजनमाने क्रोशमात्रे वा यन्मुष्यते चोर्यते ते नियुक्ताः स्वामिभ्यस्तत्प्रतिदद्यू राज्ञा तैस्तत् प्रतिदाप्यम् राजा तैः प्रतिदापयेदिति प्रायेण दन्त्योष्ठयं वकारं पठन्ति ॥ ८॥

09 धार्म्यं शुल्कमवहारयेत्

धार्म्यं शुल्कमवहारयेत् ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. The (king) shall make them collect the lawful taxes (śulka). 9

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

धार्म्यं शुल्कमवहारयेत् ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

तत्र गौतमः—
10'विंशतिभागश्शुल्कः पण्ये' इति । यद्वणिग्भिर्विक्रीयते हिङ्ग्वादि, तस्य विंशतितमं भागं राजा गृह्णीयात् । तस्य शुल्क इति संज्ञा। एष धार्म्यः धर्म्यश्शुल्कः। तमधिकृतैरेवाऽवहारयेत् ग्राहयेदिति। मूलादिषु विशेषस्तेनैवोक्तः—
11 मूलफलपुष्पौषधिमधुमांसतृणेन्धनानां षाष्टिक्य'मिति ॥ ९ ॥

10 अकरः श्रोत्रियः

अकरः श्रोत्रियः १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. A learned Brāhmaṇa is free from taxes, 12

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अकरः श्रोत्रियः ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

श्रोत्रियः करं न दाप्यः । अन्ये दाप्याः ॥१०॥

11 सर्ववर्णानाञ् च स्त्रियः

सर्ववर्णानां च स्त्रियः ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. And the women of all castes, 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सर्ववर्णानां च स्त्रियः ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

अकराः । वर्णग्रहणात् प्रतिलोमादिस्त्रियो दाप्याः ॥११॥

12 कुमाराश्च प्राग् व्यञ्जनेभ्यः

कुमाराश्च प्राग् व्यञ्जनेभ्यः १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. And male children before the marks (of puberty appear),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कुमाराश्च प्राक् व्यञ्जनेभ्यः ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

व्यञ्जनानि श्मश्र्वादीनि । यावत्तानि नोत्पद्यन्ते तावदकराः ॥ १२ ॥

13 ये च विद्यार्थी

ये च विद्यार्थी वसन्ति १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. And those who live (with a teacher) in order to study,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ये च विद्यार्था वसन्ति ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

विद्यामुद्दिश्य ये गुरुषु वसन्ति ते जातव्यञ्जना अप्यसमाप्तवेदा अकराः ॥ १३ ॥

14 तपस्विनश्च ये धर्मपराः

तपस्विनश्च ये धर्मपराः १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. And those who perform austerities, being intent on fulfilling the sacred law, 14

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तपस्विनश्च ये धर्मपराः ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

तपस्विनः कृच्छ्रचान्द्रायणादिप्रवृत्ताः। धर्मपरा , अफलाकाङ्क्षिणः नित्यनैमित्तिकधर्मनिरताः। धर्मपरा इति किम् ? ये अभिचारकामा मन्त्रासिद्धये तपस्तप्यन्ते ते अकरा मा भूवन्निति ॥१४॥

15 शूद्रश्च पादावनेक्ता

शूद्रश्च पादावनेक्ता *(= पादधावनजीवी)* १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. And a Śūdra who lives by washing the feet,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

शुद्रश्च पादावनेक्ता ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

यस्त्रैवर्णिकानां पादावनेक्ता स शूद्रोऽप्यकरः ॥१५॥

16 अन्धमूकबधिररोगविष्टाश्च

अन्धमूकबधिररोगविष्टाश्च १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. Also blind, dumb, deaf, and diseased persons (as long as their infirmities last),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अन्धमूकबधिररोगाविष्टाश्च ॥१६॥

टिप्पनी⑥

एतेऽप्यकराः यावदान्ध्यादि ॥ १६ ॥

17 ये व्यर्था द्रव्यपरिग्रहैः

ये व्यर्था *(=मुक्ताश् शास्त्रैः)* द्रव्यपरिग्रहैः १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. And those to whom the acquisition of property is forbidden (as Sannyāsins).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

ये व्यर्था द्रव्यपरिग्रहैः ॥ १७॥

टिप्पनी⑥

ये च परिव्राजकादयः द्रव्यपरिग्रहैर्व्यर्था निष्प्रयोजनाः शास्त्रतो येषां द्रव्यपरिग्रहः प्रतिषिद्धः तेऽप्यकराः।
तथा च वसिष्ठः—
15"अकरः श्रोत्रियो राजा पुमाननाथः प्रव्रजितो बालवृद्धतरुणप्रशान्ता" इति ॥ १७॥

18 अबुद्धिपूर्वमलङ्कृतो युवा परदारमनुप्रविशन्कुमारीं

अबुद्धिपूर्वमलंकृतो युवा परदारमनुप्रविशन्कुमारीं वा वाचा बाध्यः १८

▼

⑤

>
▼ Bühler

18. A young man who, decked with ornaments, enters unintentionally (a place where) a married woman or a (marriageable) damsel (sits), must be reprimanded. 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अबुद्धिपूर्वमलङ्कृतो युवा परदारमनुप्रविशन् कुमारीं वा वाचा बाध्यः ॥१८॥

टिप्पनी⑥

यत्र परदारा आसते कुमारी वा पतिंवरा, तत्र युवा अलङ्कृतः अबुद्धिपूर्वमज्ञानादनुप्रविशन् वाचा बाध्यः-अत्रेयमास्ते,माऽत्र प्रविशेति ॥१८॥

19 बुद्धिपूर्वन् तु दुष्टभावो

बुद्धिपूर्वं तु दुष्टभावो दण्ड्यः १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. But he does it intentionally with a bad purpose, he must be fined. 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

बुद्धिपूर्वं तु दुष्टभावो दण्ड्यः ॥ १९ ॥

टिप्पनी⑥

यस्तु जानन्नेव दुष्टभावः प्रलोभनार्थी प्रविशति स दण्ड्यो द्रव्यानुरूपमपराधानुरूपं च । दुष्टभावग्रहणमाचार्यादिप्रेषितस्य प्रवेशे दण्डो मा भूदिति ॥१९॥

20 सन्निपाते वृत्ते शिश्नच्छेदनं

संनिपाते वृत्ते शिश्नच्छेदनं सवृषणस्य २०

▼

⑤

>

▼ Bühler

20. If he has actually committed adultery, his organ shall be cut off together with the testicles.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सन्निपाते वृत्ते शिश्नच्छेदनं सवृषणस्य ॥ २० ॥

टिप्पनी⑥

सन्निपातो मैथुनं, तस्मिन् वृत्ते शिश्नच्छेदनं दण्डः । सवृषणस्येत्युपसर्जनस्यापि शिश्नस्य विशेषणम् । सवृषणस्य शिश्नस्य च्छेदनमिति ॥२०॥

21 कुमार्यान् तु स्वान्यादाय

कुमार्यां तु स्वान्यादाय नाश्यः २१

▼

⑤

>

▼ Bühler

21. But (if he has had intercourse) with a (marriageable) girl, his property shall be confiscated and he shall be banished.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कुमार्यां तु स्वान्यादाय नाश्यः ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

कुमार्यां तु सन्निपाते वृत्ते सर्वस्वहरणं कृत्वा देशान्निर्वास्यः, न शिश्नच्छेदः ॥ २१ ॥

22 अथ भृत्ये राज्ञा

अथ *(परदार-कुमार्यौ)* भृत्ये राज्ञा २२

▼

⑤

>

▼ Bühler

22. Afterwards the king must support (such women and damsels),

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अथ भृत्ये राज्ञा ॥ २२ ॥

टिप्पनी⑥

अथ सन्निपानात्प्रभृति ते परदारकुमार्यौ राज्ञा भृत्ये ग्रासाच्छादनप्रदानेन भर्तव्ये ॥ २२ ॥

23 रक्ष्ये चात ऊर्ध्वम्

रक्ष्ये चात ऊर्ध्वं मैथुनात् २३

▼

⑤

>
▼ Bühler

23. And protect them from defilement.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

रक्ष्ये चाऽत ऊर्ध्वं मैथुनात् ॥ २३ ॥

टिप्पनी⑥

अतः प्रथमात् सन्निपातात् ऊर्ध्वं मैथुनाच्च रक्ष्ये यथा पुनः मैथुनं नाचरतस्तथा कार्ये ॥ २३ ॥

24 निर्वेषाभ्युपाये तु स्वामिभ्योऽवसृजेत्

निर्वेषाभ्युपाये तु स्वामिभ्योऽवसृजेत् २४

▼

⑤

>
▼ Bühler

24. If they agree to undergo the (prescribed) penance, he shall make them over to their (lawful) guardians. 18

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

निर्वेषाभ्युपाये तु स्वामिभ्योऽवसृजेत् ॥ २४ ॥

टिप्पनी⑥

यदि ते एवं निरुद्धे निर्वेषणमभ्युपेतः अभ्युपगच्छत्तः तदा निर्वेषाभ्युपाये तु स्वामिहस्ते अवसृजेत् दद्यात् । परदारं भर्त्रे श्वशुराय वा, कुमारीं पित्रे भ्रात्रे वा। अनभ्युपगमे तु प्रायश्चित्तस्य यावज्जीवं निरोधः ॥ २१ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रे द्वितीयप्रश्ने षड्विंशी कण्डिका ॥ २६ ॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.

↩

2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

3. Manu II, 35.↩

4. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

5. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

6. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

7. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

8. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in

order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

9. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩
10. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
11. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
12. Manu II, 144.↩
13. Manu II, 146-148.↩
14. 'Because it procures heavenly bliss and final liberation.'--Haradatta.↩
15. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
16. Manu II, 147.↩
17. Yājñ. I, 14; Manu II, 36; Āśvakāyana Gṛ. Sū. I, 19, 1, 4: Weber, Ind. Stud. X, 20 seq.↩
18. Manu II, 37.↩

२७①

01 चरिते यथापुरं, धर्माद्धि④

चरिते यथापुरं, *(यतः)* धर्माद्धि संबन्धः १

▼

⑤

>

▼ Bühler

1. If (adulteresses) have performed (the prescribed penance), they are to be treated as before (their fault). For the connection (of husband and wife) takes place through the law.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

चरिते यथापुरं धर्माद्धि सम्बन्धः ॥१॥

टिप्पनी⑥

चरिते तु निर्वेषे यथापुरं यथापूर्वं धर्मात् , तृतीयार्थे पञ्चमी । धर्मेण सम्बन्धो भवति । हिशब्दो हेतौ । यस्मादेवं तम्मात् अवश्यं प्रायश्चित्तं कारयितव्ये । ततो यज्ञविवाहादौ न कश्चिद्दोष इति ॥ १॥

02 सगोत्रस्थानीयान् न परेभ्यः

सगोत्रस्थानीयां न परेभ्यः समाचक्षीत २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. (A husband) shall not make over his (wife), who occupies the position of a 'gentilis,' to others (than to his 'gentiles'), in order to cause children to be begot for himself. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सगोत्रस्थानीयां न परेभ्यस्समाचक्षीत ॥ २॥

प्रस्तावः⑥

परदारप्रसङ्गादुच्यते—

टिप्पनी⑥

योऽनपत्यः आत्मनश्शक्त्यभावं निश्चित्य क्षेत्रजं पुत्रमिच्छन् भार्यां 2परत्र नियुङ्क्ते, मृते वा तस्मिन् तत्पित्रादयस्सन्तानकाङ्क्षिणः, तद्विषयमेतत । कुलान्तरप्रविष्टा सगोत्रस्थानीया। सा हि पूर्वं पितृगोत्रा सती3 भर्तृगोत्रधर्मैरधिक्रियेत । अतः भर्तृपक्ष्याणां सगोत्रस्थानीया भवति । भर्ता तु

साक्षात्सगोत्रः। तां सगोत्रस्थानीयां न परेभ्योऽसगोत्रेभ्यस्समाचक्षीत-इयमनपत्या, अस्यामपत्यमुत्पाद्यतामिति । सगोत्रायैव तु समाचक्षीत, तत्रापि देवराय, तदभाव4 सपिण्डेभ्यः॥

03 कुलाय हि स्त्री

कुलाय हि स्त्री प्रदीयत इत्युपदिशन्ति ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. For they declare, that a bride is given to the family (of her husband, and not to the husband alone).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कुलाय हि स्त्री प्रदीयत इत्युपदिशन्ति ॥३॥

प्रस्तावः⑥

कः पुनस्सगोत्रस्य विशेषः ? तमाह—

टिप्पनी⑥

हि यस्मात् स्त्री कन्या प्रदीयमाना कुलायैव प्रदीयत इत्युपदिशन्ति धर्मज्ञाः । तस्मात् सगोत्रायैव समाचक्षीततति5 ॥३॥

04 तदिन्द्रि यदौर्बल्याद्विप्रतिपन्नम्

तदिन्द्रि यदौर्बल्याद्विप्रतिपन्नम् ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. That is (at present) forbidden on account of the weakness of (men's) senses. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तदिन्द्रियदौर्बल्याद्विप्रतिपन्नम् ॥ ४ ॥

प्रस्तावः⑥

तमिमं नियोगं दूषयति—

टिप्पनी⑥

यद्यप्येवं पूर्वे कृतवन्तः, तथाऽपि तदद्यत्वे विप्रतिपन्नं विप्रतिषिद्धम् । कुतः ? इन्द्रियदौर्बल्यात् । दुर्बलेन्द्रिया ह्यद्यत्वे मनुष्याः। ततश्च शास्त्रव्याजेनापि भर्तृव्यतिक्रमेऽतिप्रसङ्गस्स्यादिति ॥ ४॥

05 अविशिष्टं हि परत्वम्

अविशिष्टं हि परत्वं पाणेः ५

▼

⑤

>

▼ Bühler

5. The hand (of a gentilis is considered in law to be) that of a stranger, and so is (that of any other person except the husband).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अविशिष्टं हि परत्वं पाणेः ॥ ५ ॥

प्रस्तावः⑥

सगोत्रविषयेऽपि यो विशेषस्सोऽपि नास्तीत्याह—

टिप्पनी⑥

येन पाणिना पूर्वमग्निसाक्षिकं पाणिर्गृहीतः कन्यायाः, तस्मात् पाणेरन्यो भवति सगोत्रस्यापि पाणिः । यस्मादेवं पाणेः परत्वमविशिष्टं समानम् ? तस्मादविशेष इति । अविशिष्टमित्यपपाठः ॥ ५ ॥

06 तद्व्यतिक्रमे खलु पुनरुभयोर्नरकः

तद्व्यतिक्रमे खलु पुनरुभयोर्नरकः ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. If the (marriage vow) is transgressed, both (husband and wife) certainly go to hell.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तद्व्यतिक्रमे खलु पुनरुभयोर्नरकः ॥६॥

प्रस्तावः⑥

पाणिरन्यो भवतु, को दोषः ?

टिप्पनी⑥

तस्य पाणेर्व्यतिक्रमे उभयोर्दम्पत्योः नरको भवति । खलु पुनरिति प्रसिद्धिद्योतकौ निपातौ । अतः पत्याऽपि न स पाणिस्त्याज्यः यः पूर्वं गृहीतः । भार्ययापि न स पाणिस्त्याज्यो येन पूर्वमात्मानः पाणिर्गृहीतः॥६॥

07 नियमारम्भणो हि वर्षीयान्

नियमारम्भणो हि वर्षीयान् *(=गरीयान्)* अभ्युदय एवमारम्भणादपत्यात् ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. The reward (in the next world) resulting from obeying the restrictions of the law is preferable to offspring obtained in this manner (by means of Niyoga).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नियमारम्भणो हि वर्षीयानभ्युदय एवमारम्भणादपत्यात् ॥ ७॥

टिप्पनी⑥

आरभ्यतऽनेनेत्यारम्भणः योऽयं दम्पत्योः परस्परनियमः, स आरम्भणो यस्य स नियमारम्भणः । एवंभूतो योऽभ्युदयस्स एवं वर्षीयान् । वृद्धतरः । कस्मात् वर्षीयान् ? एवमुक्तप्रकारेण नियोगलक्षणेन यदपत्यमारभ्यते तस्मादेवमारम्भणादपत्याद्वर्षीयानिति । अपत्यादिति पाठः । आपत्यादिति प्रायेण पठन्ति ॥ ७॥

08 नाश्य आर्यः शूद्रायाम्

नाश्य आर्यः शूद्रायाम् ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. A man of one of the first three castes (who commits adultery) with a woman of the Śūdra caste shall be banished.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नाश्य आर्यश्शूद्रायाम् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

आर्यस्त्रैवर्णिकः, शूद्रायां परभार्यायां प्रसक्तो राज्ञा राष्ट्रान्नाश्यः निर्वास्यः ॥८॥

09 वध्यः शूद्र आर्यायाम्

वध्यः शूद्र आर्यायाम् ९

▼

⑤

>

▼ Bühler

9. A Śūdra (who commits adultery) with a woman of one of the first three castes shall suffer capital punishment. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वध्यश्शुद्र आर्यायाम् ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

शूद्रस्तु त्रैवर्णिकस्त्रियां प्रसक्तो वध्यः । एतच्च योऽन्तःपुरादिष्वधिकृतो रक्षकस्सन् स्वयं गच्छति, तस्य भवति । अन्यस्य तु पूर्वोक्तं शिश्नच्छेदनमेव । तथा च शूद्राधिकारे गौतमः8— 'आर्यस्त्र्यभिगमने लिङ्गोद्धारः स्वहरणं च । गोप्ता चेद्वधोऽधिक' इति । याज्ञवल्क्येन प्रातिलोम्येन गमनमात्रे वध उक्तः —

"9सजातावुत्तमो दण्डः आनुलोम्ये तु मध्यमः ।
प्रातिलोम्ये वधः10 पुंसां स्त्रीणां नासादिकृन्तनम् ॥ इति ।

सोऽनुबन्धाभ्यासाद्यपेक्षो द्रष्टव्यः । तथा 'नाश्य आर्यश्शूद्रायामि' त्याचार्यवचनमप्यभ्यासापेक्षम्, ब्राह्मणादेः क्रमविवाहे या शूद्रा, तद्विषयं वा द्रष्टव्यम् ॥९॥

10 दारञ् चास्य कर्शयेत्

दारं चास्य कर्शयेत् १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. And he shall emaciate a woman who has committed adultery with a (Śūdra, by making her undergo penances and fasts, in case she had no child).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

दारं चाऽस्य कर्शयेत् ॥१०॥

टिप्पनी⑥

अस्य शूद्रस्य या दारभूता तेन भुक्ता त्रैवर्णिकस्त्री तां च कर्शयेत व्रतनियमोपवासैः । या प्रजाता न भवति तद्विषयमेतत् ।
11 "ब्राह्मणक्षत्रियविशां स्त्रियः शूद्रेण सङ्गताः।
अप्रजाता विशुध्यन्ति प्रायश्चित्तेन नेतराः ॥" इति स्मरणात् ॥ १०॥

11 सवर्णायामन्यपूर्वायां सकृत्सन्निपाते पादः

सवर्णायामन्यपूर्वायां सकृत्संनिपाते पादः पततीत्युपदिशन्ति *(अतः पतितप्रायश्चित्तस्य पादस् तस्मै)* ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. They declare, that (a Brāhmaṇa) who has 12 once committed adultery with a married woman of equal class, she perform one-fourth of the penance prescribed for an outcast.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सवर्णायामन्यपूर्वायां सकृत्सन्निपाते पादः पततीत्युपदिशन्ति ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

अन्यः पूर्वः पतिः यस्यास्सा अन्यपूर्वा परभार्या, तस्यां सवर्णायां सकृद्गमने पादः पतति । पतितस्य द्वादशवार्षिकं प्रायश्चित्तम् । तस्य तुर्योऽशस्त्रीणि वर्षाणि प्राकृतं ब्रह्मचर्यमस्य प्रायश्चित्तम् । एतच्च श्रोत्रियभार्यायामृतुकाले कामतः प्रथम13दूषकस्य । तत्र गौतमः14-'द्वे परदारे । त्रीणि श्रोत्रियस्ये'ति ॥ ११ ॥

12 एवमभ्यासे पादः पादः

एवमभ्यासे पादः पादः १२

▼

⑤

>

▼ Bühler

12. In like manner for every repetition (of the crime), one-fourth of the penance (must be added).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

एवमभ्यासे पादः पादः ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

एवमभ्यासे प्रत्यभ्यासं पादः पादः पतति ॥ १२॥

13 चतुर्थे सर्वम्

चतुर्थे सर्वम् १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. (If the offence be committed) for the fourth time, the whole (penance of twelve years must be performed).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

चतुर्थे सर्वम् ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

अतः- चतुर्थे सन्निपाते सर्वमेव पतति । ततश्च पूर्णद्वादशवार्षिकं कर्तव्यम् । तृतीयं नव वर्षाणि । द्वितीये षड्वर्षाणि । एतच प्रतियोगं स्त्रीभेदेन प्रथमदूषकस्य । एकस्यामेव त्वभ्यासे कल्प्यम् । तत्र—
15 यत् पुंसः परदारेषु तच्चैनां चारयेद्व्रतम् , इति स्मरणात् स्त्रिया अपि प्रतियोगं पादः पादः पतति । तदनुरोधेन कल्प्यम् ॥ १३ ॥

14 जिह्वाच्छेदनं शूद्र स्यार्यन्

जिह्वाच्छेदनं शूद्र स्यार्यं धार्मिकमाक्रोशतः १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. The tongue of a Śūdra who speaks evil of a virtuous person, belonging to one of the first three castes, shall be cut out.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

जिह्वाच्छेदनं शुद्रस्याऽऽर्यं धार्मिकमाक्रोशतः ॥१४॥

टिप्पनी⑥

शूद्रो द्विजातीनामन्यतमं धार्मिके16स्वकर्मस्थं यद्याक्रोशति निन्दति गर्हते, तदा तस्य जिह्वा छेत्तव्येति । मनुस्तु सामान्येनाह—
17 येनाङ्गेनावरो वर्णो ब्राह्मणस्याऽपराध्नुयात् ।
तदा तस्य छेत्तव्यं तन्मनोरनुशासनम् इति ॥

गौतमस्तु—18 'शूद्रो द्विजातीनतिसन्धायाऽभिहत्य च वाग्दण्डपारुष्याभ्यामङ्गं मोच्यो येनोपहन्या'दिति ॥१४॥

16 वाचि पथि शय्यायामासन

वाचि पथि शय्यायाम् आसन इति समीभवतो दण्डताडनम् *(शूद्रस्य)*१५

पुरुषवधे स्तेये भूम्यादान इति स्वान्यादाय वध्यः १६

▼

⑤

>
▼ Bühler

15. A Śūdra who assumes a position equal (to that of a member of one of the first three castes), in conversation, on the road, on a couch, in sitting (and on similar occasions), shall be flogged. 19

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

वाचि पथि शय्यायामासन इति समीभवतो दण्डताडनम् ॥ १५ ॥

टिप्पनी⑥

यस्तु शुद्रो वागादिष्वार्यैस्समीभवति, न तु न्यग्भूतः, तस्य दण्डेन ताडनं कर्तव्यम् । स दण्डेन ताडयितव्यः । अयमस्य दण्डः ॥ १५ ॥

16 पुरुषवधे स्तेये

पुरुषवधे स्तेये भूम्यादान इति स्वान्यादाय वध्यः १६

▼

⑤

>

▼ Bühler

16. In case (a Śūdra) commits homicide or theft, appropriates land (or commits similar heinous crimes), his property shall be confiscated and he himself shall suffer capital punishment.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पुरुषवधे स्तेये भूम्यादान इति स्वान्यादाय वध्यः ॥१६॥

टिप्पनी⑥

भूम्यादानं परक्षेत्रस्य बलात्स्वीकारः, पुरुषवधादिषु निमित्तेषु शूद्रस्सर्वस्वहरणं कृत्वा पश्चाद्वध्यः मारयितव्यः ॥ १६ ॥

17 चक्षुनिरोधस्त्वेतेषु ब्राह्मणस्य

चक्षुनिरोधस्त्वेतेषु ब्राह्मणस्य १७

▼

⑤

>

▼ Bühler

17. But if these (offences be committed) by a Brāhmaṇa, he shall be made blind (by tying a cloth over his eyes). 20

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

चक्षुनिरोधस्त्वेतेषु ब्राह्मणस्य ॥ १७ ॥

टिप्पनी⑥

ब्राह्मणस्य त्वेतेषु निमित्तेषु चक्षुषो निरोधः कर्तव्यः । पट्टबन्धादिना चक्षुषी निरोद्धव्ये, यथा यावज्जीवं न पश्यति । न तूत्पाटयितव्ये 21'न शारीरो ब्राह्मणदण्डः। अक्षतो ब्राह्मणो व्रजे'दिति स्मरणात् । 'चक्षुनिरोध' इति रेफलोपश्छान्दसः ॥ १७ ॥

18 नियमातिक्रमणमन्यं वा रहसि

नियमातिक्रमणमन्यं वा रहसि बन्धयेत् १८

▼

⑤

>

▼ Bühler

18. He shall keep in secret confinement him who violates the rules (of his caste or order), or any other sinner,

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नियमातिक्रमिणमन्यं वा रहसि बन्धयेत् ॥१८॥

टिप्पनी⑥

यो वर्णाश्रमप्रयुक्तानियमानतिक्रामति तं नियमातिक्रमिणमन्यं वा प्रतिषिद्धानां कर्तारं रहसि बन्धयेत् निगलितं निरुन्ध्यात् ॥ १८ ॥

19 आ समापत्तेः

आ समापत्तेः १९

▼

⑤

>
▼ Bühler

until (he promises) amendment.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आसमापत्तेः ॥ १९॥

टिप्पनी⑥

यावदसौ नियमान् प्रतिपत्स्ये प्रतिषिद्धेभ्यो निवर्तिष्य इति ब्रूयात् ॥ १९ ॥

20 असमापत्तौ नाश्यः

असमापत्तौ नाश्यः २०

▼

⑤

>
▼ Bühler

19. If he does not amend, he shall be banished.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

असमापत्तौ नाश्यः ॥२०॥

टिप्पनी⑥

यद्यसौ दीर्घकालं निरुद्धोऽपि न समापद्येत, ततो नाश्यः निर्वास्यः ॥२०॥

21 आचार्य ऋत्विक् स्नातको

आचार्य, ऋत्विक्, स्नातको, राजेति त्राणं *(=दण्डन-ह्रासनम् "अहं वारयामीमम्" इति)* स्युर् - अन्यत्र वध्यात् २१

▼

⑤

>
▼ Bühler

20. A spiritual teacher, an officiating priest, a 22 Snātaka, and a prince shall be able to protect (a criminal from punishment by their intercession), except in case of a capital offence.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आचार्य ऋत्विक्स्नातको राजेति त्राणं स्युरन्यत्र वध्यात् ॥ २१ ॥

टिप्पनी⑥

यदि दण्डे प्रवृत्तं राजानम् **आचार्यो** ब्रूयात- "अहमेनम् अतः परं वारयिष्यामि मुच्यताम् अयम्" इति,
अतोऽङ्गदण्डे प्राप्ते ऽर्थदण्डम्,
अर्थदण्डे प्राते ताडनम् ,
ताडने प्राप्ते धिग्-दण्डम्
इति कृत्वा तद्-वशे विसृजेत् ।

एवम् ऋत्विजि । **ऋत्विग्**-आचार्यौ राज्ञस् स्व-भूतौ न दण्ड्यस्य ।
स्नातको विद्या-व्रताभ्याम् ।
राजा अनन्तरादिः ।

सर्व एते राज्ञस् सम्मान्याः ।
अतस् ते दण्ड्यस्य त्राणं स्युः ।
उक्तेन प्रकारेण रक्षका भवेयुः । नान्यः कश्चित् ।

तेऽप्य् **अन्यत्र वध्यात्** यस्य वधानुगुणो ऽपराधः, न तस्याऽचार्यादयो ऽपि त्राणम् ; हन्तव्य एव स इति ॥ २१ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने सप्तविंशी कण्डिका ॥ २७ ॥

इति चाऽऽपस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ हरदत्तमिश्रविरचितायामुज्ज्वलायां द्वितीयप्रश्ने दशमः पटलः ॥ १०॥

इति दशमः पटलः

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
↩
2. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
3. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
4. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
5. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
6. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
7. Manu II, 35.↩
8. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
9. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩
10. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩
11. आप० ध० १.३०.८.↩
12. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

13. मनु० रमृ० २.६↩

14. गौ० ध० १. १, २↩

15. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

16. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

17. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

18. आप० ध० १.३०.८.↩

19. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

20. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

21. मनु० रमृ० २.६↩

22. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not

be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

११①

२८①

01 क्षेत्रम् परिगृह्योत्थानाभावात्फलाभावे यः④

क्षेत्रं परिगृह्योत्थानाभावात्फलाभावे यः समृद्धः स भावि तदपहार्यः १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. If a person who has taken (a lease of) land (for cultivation) does not exert himself, and hence (the land) bears no crop, he shall, if he is rich, be made to pay (to the owner of the land the value of the crop) that ought to have grown. 1

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

क्षेत्रं परिगृह्योत्थानाभावात्फलाभावे यस्समृद्धस्स भावि तदपहार्यः ॥ १॥

टिप्पनी⑥

वैश्यो वैश्यवृत्तिर्वा परस्य क्षेत्रं कृष्यर्थं परिगृह्य यदि उत्थानं कृषिविषयं यत्नं न कुर्यात्, तदभावाच्च फलं न स्यात् , तत एतस्मिन्निमित्ते स कर्षकस्समृद्धश्चेत्तस्मिन् भोगे यद्भावि फलं तदपहार्यः अपहारयितव्यः । राज्ञा क्षेत्रस्वामिने दाप्यः ॥१॥

02 अवशिनः कीनाशस्य कर्मन्यासे

अवशिनः कीनाशस्य कर्मन्यासे दण्डताडनम् २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. A servant in tillage who abandons his work shall be flogged. 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अवशिनः कीनाशस्य कर्मन्यासे दण्डताडनम् ॥२॥

टिप्पनी⑥

कीनाशः कर्षकः। तस्याऽवशिनः अस्वतन्त्रस्य निर्धनस्थ कर्मन्यासे स चेत् कृषिकर्म न्यसेत् विच्छिन्द्यात् तस्य दण्डेन ताडनं कर्तव्यं स दण्डेन ताडयितव्यः । अर्थाभावान्नाऽर्थदण्डः ॥

अपर आह- अवशी अवश्यः अविधेयः यः क्षेत्रं परिगृह्याऽवशिनः कीनाशस्य कृषिकर्म न्यसेत् न स्वयं कुर्यात् , तदा स परिग्राहको दण्डेन ताडयितव्य इति। यदि वा अवशिन इति बहुव्रीहिः । यस्य कीनाशस्य वशी स्वतन्त्रः क्षेत्रवान्नास्ति, स यदि पूर्वकृष्टस्य क्षेत्रस्य कृषिकर्म न्यसेत् न कुर्यात्, तस्य दण्डताडनं दण्ड इति राजपुरुषस्योपदेशः ॥२॥

03 तथा पशुपस्य

तथा पशुपस्य ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. The same (punishment shall be awarded) to a herdsman (who leaves his work);

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तथा पशुपस्य ॥३॥

टिप्पनी⑥

पशुपो गोपालः तस्याऽपि कर्मन्यासे पालनस्याऽकरणे दण्डेन ताडनं दण्डः ॥३॥

04 अवरोधनञ् चास्य पशूनाम्

अवरोधनं चास्य पशूनाम् ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. And the flock (entrusted) to him shall be taken away (and be given to some other herdsman).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अवरोधनं चाऽस्य पशूनाम् ॥ ४॥

टिप्पनी⑥

ये चास्य पशवो रक्षणाय समर्पितास्तेषां चाऽवेराधनमपहरणं कर्तव्यमन्यस्य गोपस्य समर्पणीया इति ॥४॥

05 हित्वा व्रजमादिनः कर्शयेत्पशून्

हित्वा व्रजमादिनः कर्शयेत्पशून्। नातिपातयेत्। ५

▼

⑤

>

▼ Bühler

5. If cattle, leaving their stable, eat (the crops of other persons, then the owner of the crops, or the king's servants), may make them lean (by impounding them); (but) he shall not exceed (in such punishment). 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

हित्वा व्रजमादिनः कर्शयेत्पशून् ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

ये पशवो व्रजे गोष्ठे निरुद्धास्तं व्रजं हित्वा आदिनस्सस्यादेर्भक्षयितारो भवन्ति; तान् कर्शयेत् बन्धनादिना कृशान् कुर्यात् । कः? यत् भक्षितं तद्वान्, राजपुरुषो वा ॥५॥

सूत्रम्⑥

नाऽतिपातयेत् ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

नाऽतिनिरोधं कुर्यात् न ताडयेद्वेति ॥ ६ ॥

06 अवरुध्य पशून्मारणे नाशने

अवरुध्य पशून्मारणे नाशने वा स्वामिभ्योऽवसृजेत् ६

▼

⑤

>

▼ Bühler

6. If (a herdsman) who has taken cattle under his care, allows them to peṛṣ, or loses (them by theft, through his negligence), he shall replace them (or pay their value) to the owners. 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अवरुध्य5 पशुन्मारणे नाशने वा स्वामिभ्योऽवसृजेत् ॥७॥

टिप्पनी⑥

यदि पशुपः पशूनवरुध्य पालयितुं गृहीत्वा सभयस्थाने विसृज्योपेक्षया मारयेत् नाशयेद्वा । नाशनं चारादिभिरपहरणम् । स स्वामिभ्यः पशूनवसृजेत् प्रत्यर्पयेत् पश्वभावे मूल्यम् ॥ ७ ॥

07 प्रमादादरण्ये पशूनुत्सृष्टान्दृष्ट्वा ग्राममानीय

प्रमादादरण्ये पशूनुत्सृष्टान्दृष्ट्वा ग्राममानीय स्वामिभ्योऽवसृजेत् ७

▼

⑤

>

▼ Bühler

7. If (the king's forester) sees cattle that have been sent into the forest through negligence (without a herdsman), he shall lead them back to the village and make them over to the owners.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रमादादरण्ये पशूनुत्सृष्टान् दृष्ट्वा ग्राममानीय स्वामिभ्योऽवसृजेत् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

यदि स्वामिनः प्रमादादरण्ये पशूनुत्सृजेयुः विना पालकेन ततस्तान् दृष्ट्वा ग्राममानीय स्वामिभ्यः अर्पयेत् । कः ? यस्तत्र रक्षकत्वेन राज्ञा नियुक्तः ॥८॥

08 पुनः प्रमादे सकृदवरुध्य

पुनः प्रमादे सकृदवरुध्य ८

▼

⑤

>
▼ Bühler

8. If the same negligence (occur) again, he shall once impound them (and afterwards give them back).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पुनः प्रमादे सकृदवरुध्य ॥ ९ ॥

टिप्पनी⑥

पुनः प्रमादादुत्सृष्टेषु सकृदवरुध्य स्वामिभ्योऽवसृजेत् ॥९॥

09 तत ऊर्ध्वन् न

तत ऊर्ध्वं न सूर्क्षेत् ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. (If the same fault be committed again) after that (second time), he shall not take care (of them).

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत ऊर्ध्वं न सूर्क्षेत् ॥१०॥

टिप्पनी⑥

ततो द्वितीयात् प्रयोगादूर्ध्वं 'ग्राममानीये'त्यादि यदुक्तं तन्न सूर्क्षेत् नाद्रियेत तस्मिन् विषये उपेक्षेत ॥१०॥

10 परपरिग्रहमविद्वानाददान एधोदके मूले

परपरिग्रहमविद्वानाददान एधोदके मूले पुष्पे फले गन्धे ग्रासे शाक इति वाचा बाध्यः १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. He who has taken unintentionally the property of another shall be reprimanded, in case (the property be) fuel, water, roots, flowers, fruits, perfumes, fodder, or vegetables.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

परपरिग्रहमविद्वानाददान एधोदके मूले पुष्पे फले गन्धे ग्रासे शाक इति वाचा बाध्यः ॥ ११ ॥

टिप्पनी⑥

एधाश्चोदकं च एधोदकम् । ग्रासो गवाद्यर्थो यवसादिः । सर्वत्र विषयसप्तमी । यः परपरिग्रहोऽयमित्यविद्वानजानन् एधादिकमादत्ते गृह्णाति, स तस्मिन्विषये तत्र नियुक्तेन राजपुरुषेण निष्ठुरया वाचा बाध्यः निवार्यः ॥ ११ ॥

11 विदुषो वाससः परिमोषणम्

विदुषो वाससः परिमोषणम् ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. (If he takes the above-mentioned kinds of property) intentionally, his garment shall be taken away.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विदुषो वाससः6 परिमोषणम् ॥ १२॥

टिप्पनी⑥

यस्तु विद्वानेवाऽऽदत्ते तस्य वाससोऽपहारः कर्तव्यः ॥ १२ ॥

12 अदण्ड्यः कामकृते तथा

अदण्ड्यः कामकृते तथा प्राणसंशये भोजनमाददानः १२

▼

⑤

>

▼ Bühler

12. He who takes intentionally food when he is in danger of his life shall not be punished.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अदण्ड्यः कामकृते तथा प्राणसंशये भोजनमाददानः ॥१३॥

टिप्पनी⑥

तथाशब्दस्य भोजनमित्यनेन सम्बन्धः । प्राणसंशयदशायामेधोदकादेरादाने कामकृतेऽप्यदण्ड्यः । तथा भोजनमप्याददानः प्राणसंशये न दण्ड्य इति ॥ १३ ॥

13 प्राप्तनिमित्ते दण्डाकर्मणि राजानमेनः

प्राप्तनिमित्ते दण्डाकर्मणि राजानमेनः स्पृशति १३

▼

⑤

>

▼ Bühler

13. If the king does not punish a punishable offence, the guilt falls upon him. 7

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्राप्तनिमित्ते दण्डाकर्मणि राजानमेनस्स्पृशति ॥ १४ ॥

टिप्पनी⑥

प्राप्त दण्डनिमित्तं यस्य तस्मिन् पुरुषे दण्डाकर्मणि दण्डस्याऽक्रियायां यदि दययाऽर्थलोभेन वा प्राप्तदण्डं न कुर्यात् तदा तदेनो राजान मेव स्पृशति ॥ १४ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसुत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने ऽष्टाविंशी कण्डिका ॥२८॥

---

1. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.
   ↩

2. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩

3. Manu II, 35.↩

4. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩

5. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

6. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

7. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

२९①

01 प्रयोजयिता मन्ता कर्तेति④

प्रयोजयिता मन्ता कर्तेति स्वर्गनरकफलेषु कर्मसु भागिनः १

▼

⑤

>
▼ Bühler

1. He who instigates to, he who assists in, and he who commits (an act, these three) share its rewards in heaven and its punishments in hell.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

प्रयोजयिता मन्ता कर्तेति स्वर्गनरकफलेषु कर्मसु भागिनः ॥१॥

प्रस्तावः⑥

ननु1 शास्त्रफलं प्रयोक्तरि, तत्कथमन्यकृतमेनोऽन्यं स्पृशतीति, बहुविधत्वात् कर्तृभेदस्येत्याह—

टिप्पनी⑥

धर्ममधर्मं वा प्रकुर्वाणं यः प्रयुंक्ते-इदमित्थं कुर्विति, स प्रयोजयिता । स चाऽनेकप्रकारः-आज्ञापकोऽभ्यर्थयिता अनुग्राहक इति । भृत्यादेर्निकृष्टस्य प्रवर्तना आज्ञा । गुर्वादेराराध्यस्य प्रवर्तनाऽभ्यर्थना । अनुग्रहो द्विविधा-उपदेशस्तत्सधर्माचरणं चेति । तत्र य इत्थमर्थमुपदिशति त्वं शत्रुमित्थं व्यापादय, धर्मार्जनेऽयं तेऽभ्युपाय इति स उपदेष्टा । यः पुनः केनचिज्जिघांसितं पलायमानं वा निरुणद्धि निरुद्धश्च हन्यते स निरोद्धाऽनुग्राहकः । मन्ता अनुमन्ता यस्याऽनुमतिमन्तरेणार्थो न निवर्तते स राजादिको धर्माधर्मयोरनुमन्ता । कर्ता साक्षाक्रियाया निर्वर्तकः । एते त्रयोऽपि स्वर्गफलेषु नरकफलेषु च कर्मसु धर्मेष्वधर्मेषु च भागिनः फलस्यांशभागिनः अंशभाजः । सर्वेषां च यथाकथंचित् कर्तृत्वम् ॥ १॥
02 यो भूय आरभते

यो भूय आरभते तस्मिन्फलविशेषः २

▼

⑤

>
▼ Bühler

2. He amongst these who contributes most to the accomplishment (of the act obtains) a greater share of the result.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

यो भूय आरभते तस्मिन् फलविशेषः ॥२॥

टिप्पनी⑥

तेषु प्रयोजकादिषु यो भूय आरभते यस्य व्यापारोऽर्थनिवृत्तावधिकमुपयुज्यते तस्मिन् फलविशेषो भवति ॥ २॥

03 कुटुम्बिनौ धनस्येशते

कुटुम्बिनौ धनस्येशते ३

▼

⑤

>
▼ Bühler

3. Both the wife and the husband have power over (their) common property. 2

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कुटुम्बिनौ धनस्येशाते ॥३॥

प्रस्तावः⑥

यद्यप्येवम्—

टिप्पनी⑥

कुटुम्बिनौ दम्पती। तौ धनस्य परिग्रहे विनियोगे च ईणाते । यद्यप्येवं, तथापि भर्तुरनुशया विना स्त्री न विनियोक्तुं प्रभवति । भर्ता तु प्रभवति । तदेतेन वेदितव्यं 'न हि भर्तुर्विप्रवासे नैमित्तिके दाने स्तेयमुपदिशन्ती'ति (२.१४. २०) ॥ ३॥

04 तयोरनुमतेऽन्येऽपि तद्धितेषु वर्तेरन्

तयोरनुमतेऽन्येऽपि तद्धितेषु वर्तेरन् ४

▼

⑤

>
▼ Bühler

4. By their permission, others also may act for their good (in this and the next world, even by spending money). 3

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तयोरनुमतेऽन्येऽपि तद्धितेषु वर्तेरन् ॥ ४ ॥

टिप्पनी⑥

तयोर्दम्पत्योरनुमतेऽनुमतौ सत्यामन्येऽपि पुत्रादयः तयोरैहिकेष्वामुष्मिकेषु च हितेषु वर्तेरन् द्रव्यविनियोगेनाऽपि ॥४॥

05 विवादे विद्याभिजनसम्पन्ना वृद्धा

विवादे विद्याभिजनसंपन्ना वृद्धा मेधाविनो धर्मेष्वविनिपातिनः ५

▼

⑤

>
▼ Bühler

5. Men of learning and pure descent, who are aged, clever in reasoning, and careful in fulfilling the duties (of their caste and order, shall be the judges) in lawsuits. 4

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

विवादे विद्याभिजनसम्पन्ना वृद्धा मेधाविनो धर्मेष्वविनिपातिनः ॥ ५ ॥

टिप्पनी⑥

अर्थिप्रत्यर्थिनोर्विप्रतिषिद्धो वादो विवादः । तत्र विद्यादिगुणसंयुक्ता निर्णेतारस्स्युरिति वाक्यशेषः । विद्या अध्ययनसम्पत्, अध्ययनसहितं शास्त्रज्ञानं वा । अभिजनः कुलशुद्धिः । वृद्धाः परिणतवयसः । मेधाविनः ऊहापोहकुशलाः । धर्मेषु वर्णाश्रमप्रयुक्तेषु अविनिपातिनः, विनिपातः प्रमादः तद्रहिताः ॥५॥

06 सन्देहे लिङ्गतो दैवेनेति

संदेहे लिङ्गतो *(=अनुमानेन)* दैवेनेति विचित्य ६

▼

⑤

>
▼ Bühler

6. In doubtful cases (they shall give their decision) after having ascertained (the truth) by inference, ordeals, and the like (means). 5

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सन्देहे लिङ्गतो देवेनेति विचित्य ॥ ६ ॥

टिप्पनी⑥

ते च निर्णयन्तस्सन्देहस्थलेषु लिङ्गतोऽतुमानेन दैवेन तप्तमाषादिना इतिशब्दः प्रकारे । यच्चान्यदेवंयुक्तं वचनव्याघातादि तेन च विचित्यार्थस्थितिमन्विष्य निर्णेतारस्स्युरित्यध्याहृतेन वाक्यपरिसमाप्तिः ॥६॥

07 पुण्याहे प्रातरग्नाविद्धे ऽपामन्ते

पुण्याहे प्रातरग्नाविद्धे ऽपामन्ते राजवत्य् उभयतः *(उभयपक्षाभ्याम्)* समाख्याप्य सर्वानुमते मुख्यः सत्यं प्रश्नं ब्रूयात् ७

▼

⑤

>
▼ Bühler

7. A person who is possessed of good qualities (may be called as a witness, and) shall answer the questions put to him according to the truth on an auspicious day, in the morning, before a kindled fire, standing near (a jar full of) water, in the presence of the king, and with the consent of all (of both parties and of the assessors), after having been exhorted (by the judge) to be fair to both sides. 6

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

पुण्याहे प्रातरग्नाविद्धेऽपामन्ते राजवत्युभयतस्समाख्याप्य सर्वानुमते मुख्यस्सत्यं प्रश्नं ब्रूयात् ॥ ७॥

प्रस्तावः⑥

अथ साक्ष्यविधिः—

टिप्पनी⑥

पुण्याहो देवनक्षत्रम् , प्रातर्मध्याह्नादिषु अग्नाविद्धे अग्निमिध्वा तत्समीपे अपामन्ते उदकमुपनिधाय तत्समीपे राजवति राजाधिष्ठिते सदसि । राजग्रहणं प्राड्विवाकादेरुपलक्षणम् । उभयत उभयोरर्थिप्रत्यर्थिनोस्समाख्याप्य किमहं युवयोः प्रमाणभूतः साक्षीत्यात्मानं ख्यापयित्वा । यदि वा उभयतः उभयोरपि पक्षयोस्सत्यवचने च असत्यवचने च साक्षिणो यद्भावि फलं तत्—
सत्यं ब्रूह्यनृतं त्यक्त्वा सत्येन स्वर्गमेष्यसि ।
7अनृतेन महाघोरं नरकं प्रतिपस्यसे ॥

इत्यादिना प्रकारेण समाख्याप्य प्राड्विवाकादिभिः पृष्ट इति शेषः । सर्वानुमते अर्थिप्रत्यर्थिनोस्सभ्यानां चाऽनुमतौ सत्यां सभ्यो मुख्यः साक्षिगुणैरुपेतो दोषैश्च वर्जितस्साक्षी प्रश्नं पृष्टमर्थं सत्यं यथाऽऽत्मना ज्ञातं तथा ब्रूयात् ॥ ७ ॥

08 अनृते राजा दण्डम्

अनृते राजा दण्डं प्रणयेत् ८

▼

⑤

>

▼ Bühler

8. If (he is found out speaking) an untruth, the king shall punish him. 8

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

अनृते राजा दण्डं प्रणयेत् ॥ ८॥

टिप्पनी⑥

साक्षिणाऽनृतमुक्तमिति प्रतिपन्ने राजा9 दण्डं प्रणयेत् ।

अत्र मनुः—
"10यस्य दृश्येत् सप्ताहा11दुक्तसाक्ष्यस्य साक्षिणः ।
रोगोऽग्निर्ज्ञातिमरणं 12दाप्यो दण्ड च तत्समम् ॥” इति ॥ ८॥

09 नरकश्चात्राधिकः साम्पराये

नरकश्चात्राधिकः सांपराये ९

▼

⑤

>
▼ Bühler

9. Besides, in that case, after death, hell (will be his punishment). 13

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

नरकश्चाऽत्राधिकः साम्पराये ॥ ९॥

प्रस्तावः⑥

न केवलमसत्यवचने राजदण्डः, किं तर्हि ?

टिप्पनी⑥

साम्परायः परलोकः, तत्र नरकश्च भवति, न तु,
14 राजभिर्धृतदण्डास्तु कृत्वा पापानि मानवाः ।
निर्मलास्स्वर्गमायान्ति सन्तस्सुकृतिनो यथा ॥
इत्यस्यायं विषय इति ॥९॥

10 सत्ये स्वर्गः सर्वभूतप्रशंसा

सत्ये स्वर्गः सर्वभूतप्रशंसा च १०

▼

⑤

>
▼ Bühler

10. If he speaks the truth, (his reward will be) heaven and the approbation of all created beings. 15

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सत्ये स्वर्गस्सर्वभूतप्रशंसा च ॥ १० ॥

टिप्पनी⑥

सत्य उक्ते स्वर्गो भवति । सर्वाणि च भूतान्येनं प्रशसन्ति अपि देवाः ॥१०॥

11 सा निष्ठा या

सा निष्ठा या विद्या स्त्रीषु शूद्रेषु च ११

▼

⑤

>
▼ Bühler

11. The knowledge which Śūdras and women possess is the completion (of all study). 16

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

सा निष्ठा या विद्या स्त्रीषु शुद्रेषु च ॥११॥

टिप्पनी⑥

स्त्रीषु शूद्रेषु च या विद्या सा निष्ठा समाप्तिस्तस्यामप्यधिगतायां विद्याकर्म परितिष्ठतीति ॥ ११ ॥

12 आथर्वणस्य वेदस्य शेष

आथर्वणस्य वेदस्य शेष इत्युपदिशन्ति १२

▼

⑤

>
▼ Bühler

12. They declare, that (this knowledge) is a supplement of the Atharva-Veda.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

आथर्वणस्य वेदस्य शेष इत्युपदिशन्ति ॥ १२ ॥

टिप्पनी⑥

अथर्वणा प्रोक्तमधीयते ये ते आथर्वणिकाः । वसन्तादिभ्यष्ठक् । तेषां समाम्नायः । "आथर्वणिकस्येकलोपश्च" आथर्वणः । तस्य वेदस्य शेष इत्युपदिशन्ति धर्मज्ञाः-या विद्या स्त्रीषु शूद्रेषु चेति ॥ १२॥

13 कृच्छ्रा धर्मसमाप्तिः समाम्नातेन

कृच्छ्रा धर्मसमाप्तिः समाम्नातेन । लक्षणकर्मणात्तु समाप्यते १३

▼

⑤

>
▼ Bühler

13. It is difficult to learn the sacred law from (the letter of) the Vedas (only); but by following the indications it is easily accomplished.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

कृच्छ्रा धर्मसमाप्तिस्समाम्नानेन लक्षणकर्मणा तु समाप्यते ॥ १३ ॥

टिप्पनी⑥

समाम्नानं प्रतिपदपाठः । तेन धर्मसमाप्तिः कृच्छ्रा न शक्या कर्तुम् । किं तु लक्षणकर्मणा समाप्यते येन सामान्येन भिन्नानामध्यधिगमो भवति तल्लक्षणं, तस्य कर्मणा करणेन समाप्यते ।

कर्मणात्त्विति द्वितकारपाठोऽयमार्षः । आदिति वा निपातस्य प्रश्लेषः । स च सद्य इत्यस्यार्थे द्रष्टव्यः ॥ १३ ॥

14 तत्र लक्षणम् सर्वजनपदेष्वेकान्तसमाहितमार्याणां

तत्र लक्षणम् । सर्वजनपदेष्वेकान्तसमाहितमार्याणां वृत्तं सम्यग्विनीतानां वृद्धानामात्मवतामलोलुपानामदाम्भिकानां वृत्तसादृश्यं भजेत । एवमुभौ लोकावभिजयति १४

▼

⑤

>
▼ Bühler

14. The indications for these (doubtful cases are), 'He shall regulate his course of action according to the conduct which is unanimously recognised in all countries by men of the three twice-born castes, who have been properly obedient (to their teachers), who are aged, of subdued senses, neither given to avarice, nor hypocrites. Acting thus he will gain both worlds.' 17

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

तत्र लक्षणम् ॥ १४॥

सूत्रम्⑥

सर्वजनपदेष्वेकान्तसमाहितमार्याणां वृत्तं सम्यग्विनीतानां वृद्धानामात्मवतामलोलुपानामदाम्भिकानां वृत्तसादृश्यं भजेत एवमुभौ लोकावभिजयति ॥ १५॥

टिप्पनी⑥

पूर्वेण गतम् ॥ १५ ॥

15 स्त्रीभ्यः सर्ववर्णेभ्यश्च धर्मशेषान्प्रतीयादित्येक

स्त्रीभ्यः सर्ववर्णेभ्यश्च धर्मशेषान्प्रतीयादित्येक इत्येके १५

▼

⑤

>

▼ Bühler

15. Some declare, that the remaining duties (which have not been taught here) must be learnt from women and men of all castes.

▼ हरदत्त-टीका

सूत्रम्⑥

स्त्रीभ्यस्सर्ववर्णेभ्यश्च धर्म शेषान्प्रतीयादित्येक इत्येके ॥ १६ ॥

टिप्पनी⑥

उक्तव्यतिरिक्ता ये धर्मास्ते धर्मशेषास्तान् स्त्र्यादीनामपि सकाशात् प्रतायादित्येके मन्यन्ते । ते च प्रतिजनपदं प्रतिकुलं च भिन्नास्तथैव प्रतिपत्तव्याः । तत्र द्राविडाः कन्यामेषस्थे सवितर्यादित्यपूजामाचरन्ति भूमौ मण्डलमालिख्य, इत्यादीन्युदाहरणानि । द्विरुक्तिरध्यायपरिसमाप्त्यर्था ॥ १६ ॥

इत्यापस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ द्वितीयप्रश्ने एकोनविंशी कण्डिका ॥ २९॥

इति चाऽऽपस्तम्बधर्मसूत्रवृत्तौ श्रीहरदत्तमिश्रविरचितायामुज्ज्वलायां द्वितीयप्रश्ने एकादशः पटलः ॥ ११ ॥

समाप्तो द्वितीयः प्रश्नः ॥

समाप्तमिदमुज्वलोज्वलितमापस्तम्बधर्मसूत्रम् ॥

इत्येकादशः पटलः

इति द्वितीयोऽध्यायः

समाप्तं चेदमापस्तम्बीयधर्मसूत्रम्

---

1. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩
2. 1. Samaya, 'agreement, decision,' is threefold. It includes injunction, restriction, and prohibition.

   ↩
3. Manu II, 6, 12 Yājñ. I, 7; Gautama I, 1.↩
4. Manu II, 35.↩
5. Manu 1, 91, VIII, 410; and IX, 334; Yājñ. I, 120.↩
6. The use of the masculine in the text excludes women. For though women may have occasion to use such texts as 'O fire, of the dwelling' &c. at the Agnihotra, still it is specially ordained that they shall be taught this and similar verses only just before the rite is to be performed.↩

7. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

8. The object of the Sūtra is to remove a doubt whether the ceremony of initiation ought to be repeated for each Veda, in case a man desires to study more than one Veda. This repetition is declared to be unnecessary, except, as the commentator adds, in the case of the Atharva-veda, for which, according to a passage of a Brāhmaṇa, a fresh initiation is necessary. The latter rule is given in the Vaitāna-sūtra I, 1, 5.↩

9. मातामहमहाशैलम् महस्तदपितामहम् । कारणं जगतो वन्दे कण्ठादुपरि वारणम् ॥१॥ इत्यधिक पाठ• क० पु० ।↩

10. दक्षस्मृ० अ० २ श्लो २९ 'यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाक्भवेत् । इति तस्योत्तरार्धम् ।↩

11. गौ० ध० २१. ४."अशुचेर्द्विजाती"ति. घ. पु↩

12. आप० ध० १.३०.८.↩

13. Haradatta: 'But this (latter rule regarding the taking of p. 3 another teacher) does not hold good for those who have begun to study, solemnly, binding themselves, to their teacher. How so? As he (the pupil) shall consider a person who initiates and instructs him his Ācarya, and a pupil who has been once initiated cannot be initiated again, how can another man instruct him? For this reason it must be understood that the study begun with one teacher may not be completed with another, if the first die.' Compare also Haradatta on I, 2, 7, 26, and the rule given I, 1, 4, 26. In our times also pupils, who have bound themselves to a teacher by paying their respects to him and presenting a cocoa-nut, in order to learn from him a particular branch of science, must not study the same branch of science under any other teacher.↩

14. मनु० स्मृ० २.६↩

15. Manu II, 69; Yājñ. I, 15.↩

16. Manu II, 144.↩

17. Manu II, 146-148.↩

Appendix - +Dyugangā द्युगङ्गा①

Goals ध्येयानि②

Dyugangā (https://rebrand.ly/dyuganga) is a work group dedicated to the promotion of ever-victorious Hindu ideals and arts. It's current focus is in presenting important texts for easy study.

The texts may be presented as

- audio files (eg: MahAbhArata audio book project),
- as web pages (eg: Apastamba-gRhya-sUtra, Apastamba-dharma-sUtra, EkAgnikANDa commentary, manu-smRti, raghuvaMsha, more kalpa-texts, tattva-texts, universal subhAShita DB),
- as dictionaries (eg: stardict)
- ebooks distributed on various platforms (eg: book-pub, amazon, google play).

You may subscribe to mail-streams for past and future announcements (dg, hv, san).

The choice of material heavily depends on the special interests of its current lead (vedas, kalpa, purANa-s).

संस्कृतानुवादः③

द्युगङ्गा नाम कार्यसंस्था ऽजेयानां भारतीयपुरुषार्थपरिकल्पनानाञ्च हिन्दुककलानाञ्च प्रसारणाय वर्तते। तदीयस् स्थूलोद्देशोऽधुना प्रमुखग्रन्थानाम् अध्ययनसौकर्याय प्रस्तुतिः। ततो ग्रन्थसङ्कलनकेन्द्रम् इति वक्तुमलम्।

ग्रन्थानाम् प्रस्तुतिर् ध्वनिसञ्चिकाभिस् स्यात् (यथा महाभारतपारायणप्रसारणे), जालक्षेत्रपृष्ठैर् वा (यथा विश्वासस्य मन्त्रटिप्पनीषु, एकाग्निकाण्डटीका), शब्दकोशैर् वाऽपि (stardict)।

सद्यश्च ग्रन्थाः संस्थाग्रण्या रुचिविशेषम् अनुसृत्य चिताः - वेदाः, इतिहासपुराणानि, कल्पवेदाङ्गग्रन्थाश् चेति।

Contribution दानम्③

Donations and sponsorship are welcome (use contact page) - they help offset operating costs (worker payments mainly ~1L/mo) and plan further projects. Project-specific sponsorship opportunities are occasionally advertised on our social media accounts and on certain mailing lists.